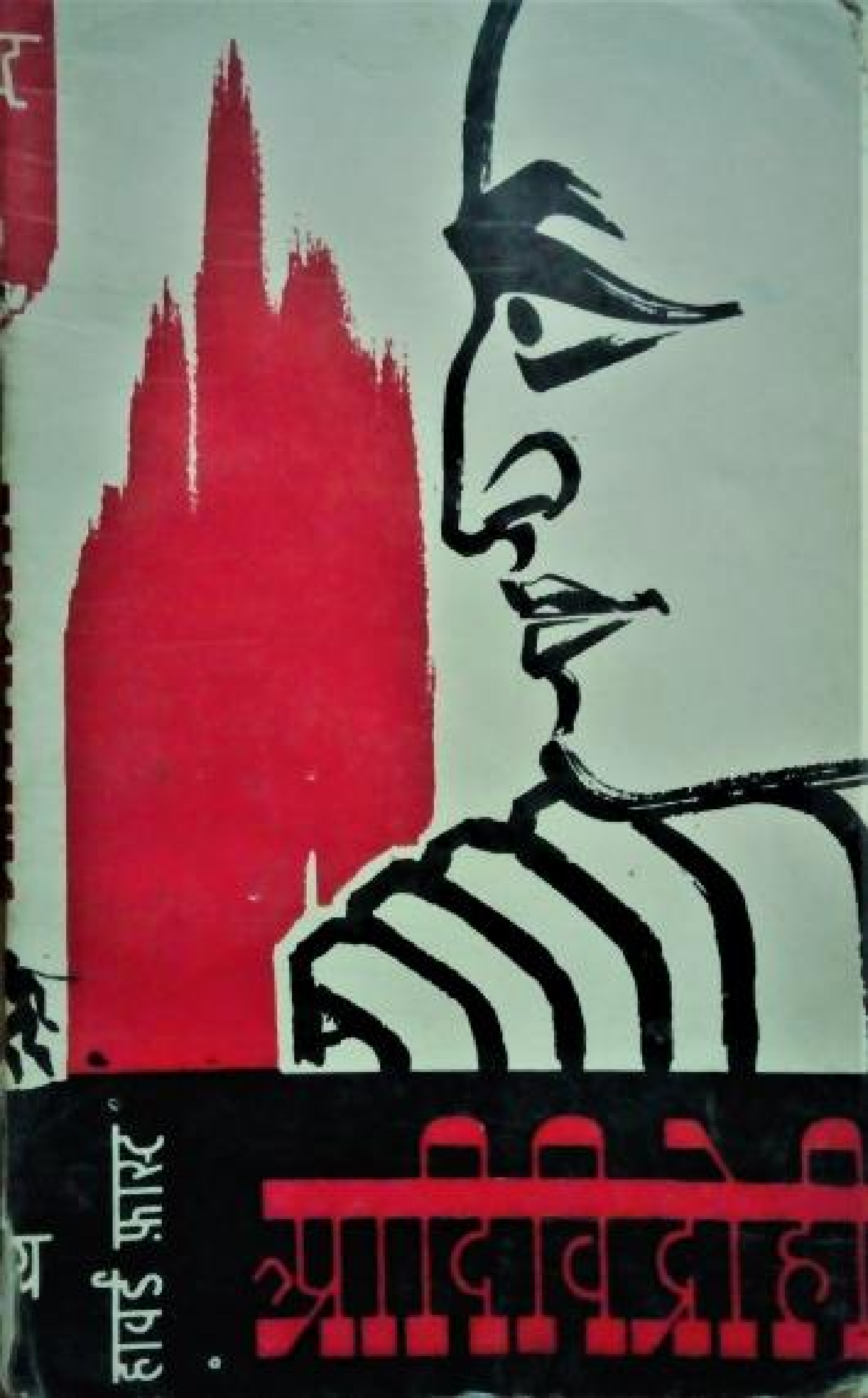

हावर्ड फ़ास्ट
आदिविद्रोही



हावर्ड फ़ास्ट की अमर कृति

आदिविद्रोही

(ग़ुलाम स्पार्टकस की जीवन-कथा)

अमृतराय

द्वारा अनूदित

हंस प्रकाशन

इलाहाबाद

प्रकाशक :
अमृतराय
हंस प्रकाशन
इलाहाबाद
*
मुद्रक :
भार्गव प्रेस
इलाहाबाद
*
आवरण सज्जा :
सुप्रभात नन्दन
*
प्रथम संस्करण
दिसम्बर १९५५
*
मूल्य साढ़े छः रुपया

यह किताब मेरी बेटी राशेल और मेरे बेटे जानथन के लिए है। यह बहादुर मर्दों और औरतों की कहानी है जो बहुत पहले रहा करते थे और जिनके नाम लोग कभी नहीं भूले। इस कहानी के नायक आज़ादी को, मनुष्य के स्वाभिमान को दुनिया की सब चीजों से ज़्यादा प्यार करते थे और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी को अच्छी तरह जिया, जैसे कि उसे जीना चाहिए—हिम्मत के साथ, आन-बान के साथ। मैंने यह कहानी इसलिए लिखी कि मेरे बच्चे और दूसरों के, जो भी इसे पढ़ें, हमारे अपने उद्विग्न भविष्य के लिये इससे ताक़त पायें और अन्याय और अत्याचार के खि़लाफ़ लड़ें, ताकि स्पार्टकस का सपना हमारे समय में सच हो सके।

अनुवादक की ओर से

विश्व के आधुनिक साहित्यकारों में हावर्ड फ़ास्ट एक बड़ा नाम है। अब तक उसकी सत्ताइस कृतियाँ निकल चुकी हैं जिनमें चौदह उपन्यास हैं, तीन कहानी संग्रह हैं, दो इतिहास ग्रन्थ हैं, एक नाटक है, एक आलोचना पुस्तक है, चार किशोरोपयोगी कथा कृतियाँ हैं और दो सम्पादित ग्रन्थ हैं।

फ़ास्ट की अधिकांश पुस्तकें संसार की अनेक भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। हमारी भाषा में अब तक सम्भवतः दो ही आ पाई हैं—'मुक्ति-मार्ग' और 'पीक-स्किल'। 'मुक्ति-मार्ग' ऐतिहासिक उपन्यास है और 'पीक-स्किल' समसामयिक इतिहास की एक घटना का कथात्मक विवरण, तथापि विषय वस्तु दोनों की एक है, नीग्रो जाति के स्वत्वों का संघर्ष। और बात केवल नीग्रो जाति की नहीं है। जो भी पददलित है, जिस पर भी अन्याय और अत्याचार होता है उसके साथ इस लेखक की सक्रिय सहानुभूति है, वह व्यक्ति या समूह कहीं का हो, कोई हो, किसी वर्ण का, किसी जाति का, किसी देश का, किसी युग का। लेखक की यह सहानुभूति कितनी सच्ची कितनी सक्रिय है इसका सबसे सबल प्रमाण तो 'पीक-स्किल' की वही ऐतिहासिक घटना है जिसमें गोरी चमड़ी के अन्य सद्विवेकशील व्यक्तियों के साथ-साथ फास्ट ने भी अपने नीग्रो बन्धुओं के कन्धे-से-कन्धा मिला कर, सचमुच उनके हाथ-में-हाथ देकर, अपने प्राणों की बाजी लगाकर उन संगठित, प्रतिगामी, नीग्रो विरोधी शक्तियों से युद्ध किया जिनकी आज भी 'सभ्य' अमरीका में तूती बोलती है, जो नीग्रो को कुत्ता समझते हैं, जिनकी दृष्टि में एक नीग्रो के प्राण का मूल्य कुत्ते से भी कम होता है और जिनको नीग्रो के स्वा-

भिमान अथवा स्वत्वों की बात कान में पिघला सीसा उँडेलने जैसी जान पड़ती है।

उत्पीड़ित के प्रति लेखक की इस सक्रिय संवेदना का रहस्य क्या है? यह रहस्य और कुछ नहीं है, केवल इतना कि उसकी त्वचा का रंग चाहे जो हो, वह स्वयं भी उसी ग़रीब उत्पीड़ित वर्ग से आया है। सबसे पहले उसका अपना जीवन-अनुभव और फिर उसकी जीवन-दृष्टि उसको सभी उत्पीड़ितों की ओर अपना बन्धुत्व का हाथ बढ़ाने के लिये प्रेरित करती है।

फ़ास्ट ने एक स्थान पर अपने जीवन के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। फ़ास्ट की मनोरचना और उसके साहित्य को ठीक से समझने में निश्चय ही उससे सहायता मिलेगी। वह लिखता है—

—मेरा जन्म न्यूयार्क शहर में ११ नवम्बर १९१४ को एक मज़दूर परिवार में हुआ। मेरे पिता पहले एक लोहे के कारखाने में काम करते थे, फिर बस कन्डक्टर हुए और सबसे अन्त में एक रेडीमेड कपड़ों के कारखाने में काम करने लगे। मैं जब आठ वर्ष का था मेरी मां मर गई और मैं अपने दो भाइयों के साथ न्यूयार्क शहर की एक गन्दी बस्ती में भयानक ग़रीबी में पला और बढ़ा।

—मुझे ग्यारह साल की उम्र से ही जीविका कमाने में लग जाना पड़ा इसलिए स्वभावतः मैं पढ़ न सका। सोलह साल की उम्र में मैंने हाई स्कूल की परीक्षा पास की। उसके बाद फिर कभी मैंने स्कूल का मुँह नहीं देखा सिवाय उस एक साल के जब मैंने छात्रवृत्ति से एक चित्रकला अकादमी में शिक्षा ली। लेकिन वह चीज भी चल न सकी क्योंकि जो समय वहाँ जाता था उसको जीविकोपार्जन में लगाना जरूरी था।

—ग्यारह से लेकर इक्कीस साल की उम्र तक मैंने जीविकोपार्जन के

लिए बहुत तरह के काम किये—अख़बार बाँटे, सिगार के कारखाने में फ़र्श की सफ़ाई की, तामीरी कामों में साधारण कुली का काम किया और होते-होते अन्त में मैं भी न्यूयार्क के एक रेडीमेड कपड़ों के कारखाने में काम करने लगा।

—मैं स्वयं-शिक्षित व्यक्ति हूँ। सोलह का होते होते मैं लिखने लगा था। मैंने लिखते-लिखते लिखना सीखा। हो सकता है साहित्य-रचना की कुछ नैसर्गिक क्षमता भी मेरे अन्दर रही हो। मेरी पहली किताब लगभग तेईस वर्ष पहले छपी थी। यह एक प्रेम कहानी थी जिसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध न था। इस किताब से मुझको कुल सौ डालर की आमदनी हुई थी। जब मैं इक्कीस का था मैंने 'द चिल्ड्रेन' लिखी जो एक प्रसिद्ध कहानी पत्रिका में छपी। इसके भी मुझको सौ डालर मिले लेकिन अब मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि मैं लिखकर अपनी जीविका चला सकता हूँ। पचीस साल की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते मुझको अपनी कहानियों के लिए अच्छा पारिश्रमिक मिल लगा था और मेरी किताबें भी बिकने लगी थीं। 'लास्ट फ्रॉन्टियर' से मुझको पहली उल्लेखनीय ख्याति मिली। यह पुस्तक १९४१ में प्रकाशित हुई थी। 'सिटिज़ेन टॉम पेन' का प्रकाशन होते ही मेरी किताबों की बिक्री लाखों में होने लगी और मेरा नाम काफ़ी फैल गया। १९४६ तक सब कुछ ठीक से चला मगर उसी वर्ष से सरकारी आतंक ने देश को बुरी तरह जकड़ लिया और मेरी किताबों की व्यापक बिक्री में रुकावट पैदा होने लगी। तब तक अमरीका में मेरी एक करोड़ से ज्यादा किताबें बिक चुकी थीं....

इसके बाद वह स्थिति आई जब कि प्रस्तुत पुस्तक छापने के लिए अमरीका का कोई प्रकाशक तैयार न था और फ़ास्ट को स्वयं अपने साहित्य-रसिक मित्रों की सहायता से इसको छापने की व्यवस्था करनी पड़ी।

हमारे इस विक्षुब्ध युग में दो विरोधी विचार-धाराओं और समाज व्यव-स्थाओं का जो शीत युद्ध निरन्तर चल रहा है, यह घटना भी उसी का एक प्रतिफलन है। सम्प्रति अमरीका के कुछ प्रभावशाली हलके अपने देश के इस महान् लेखक का नाम लेने से घबराते हैं और चाहते हैं कि किसी उपाय से उसकी स्मृति भी मिट जाय। लेकिन वे भूल जाते हैं कि हावर्ड फ़ास्ट, वाल्ट ह्विटमैन और मार्क ट्वेन को जीवन्त और संघर्षशील मानवतावादी परम्परा का लेखक है, जिस परम्परा का सूत्रपात टॉम पेन, जेफरसन और अब्राहम लिंकन जैसे लोगों ने किया था, जो परम्परा अमरीकी राष्ट्र की आधार-शिला है, जिस परम्परा का स्वर स्वयं उनके स्वाधीनता के घोषणापत्र में गूँज रहा है—

—और जो आज डालरों की झनकार में, आणविक ब्रह्मास्त्रों के तुमुल घोष में डूब गया है, खो गया है।

मनुष्य मात्र की स्वाधीनता, साम्य, और मुक्त विवेक की इसी खोई हुई, बिसराई हुई अमरीकी परम्परा को फिर से खोजने, जोड़ने और समझने की कोशिश इस अमरीकन यहूदी लेखक ने अपनी अनेक कृतियों में की है। कन्सीव्ड इन लिबर्टी, द लास्ट फ्रॉन्टियर, दि अनवैनाक्विश्ड, सिटिज़ेन टॉम पेन, फ्रीडम रोड, दि अमेरिकन, द प्राउड ऐण्ड द फ्री, द पैशन ऑफ सैको ऐन्ड वैनज़ेटी और साइलस टिम्बरमैन नामक उपन्यासों, प्रायः डेढ़ दर्जन कहानियों, थर्टी पीसेज़ ऑफ सिलवर नामक नाटक और पीकस्किल नामक कथात्मक इतिवृत्त, सबमें यही एक ही मूल भावना मिलती है।

इतिहास हावर्ड फ़ास्ट का प्रिय विषय है, अपने देश का इतिहास, अपनी जाति का इतिहास, संसार का इतिहास; और इतिहास उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में राजा-रानी की प्रणय-कथा इतिहास होती है या लड़ाई में किसी राजा की हार-जीत इतिहास होती है या राजमहल

में चलनेवाले षड्यंत्र इतिहास होते हैं बल्कि इतिहास वह जो अपना स्रोत कोटि-कोटि साधारण जनों की क्रिया-शक्ति में पाता है, जिसकी दृष्टि राजा से अधिक प्रजा पर होती है और जो उन सामाजिक शक्तियों को समझने का प्रयत्न करता है जिनके अन्तस्संघर्ष से जीवन में प्रगति होती है। हावर्ड फ़ास्ट के पास ऐसी ही तीक्ष्ण ऐतिहासिक दृष्टि है—और व्यापक भी, जो स्थान, काल, किसी का कोई भेद नहीं मानती, जिसके लिए दुनिया एक और अखंड है और यह सब भौगोलिक और राजनीतिक सीमाएँ झूठी हैं और समय एक निरन्तर बहती हुई नदी है जिसमें भूत-भविष्यत् वर्तमान नाम के काल-खंड केवल समझने-बूझने की सुविधा के लिए बनाये गए हैं।

ऐसे एक और अखंड जगत् में, एक और अविच्छिन्न कालप्रवाह में वह प्राणी रहता है जिसका नाम मनुष्य है, जो सर्वंसहा, मूर्त क्षमा पृथ्वी का पुत्र है, तेजः पुंज, दृढ़व्रती, धीमान्, सत्याश्रयी, अक्रोधी, अशेष धैर्यवान्, जो सब जानता है, सब समझता है, सब सहता है, और सीमा का अतिक्रमण होने पर फिर एक रोज़ फूट पड़ता है। उसी को भूकम्प कहते हैं।

ऐसे ही भूकम्पों की, विद्रोहों की कहानी हावर्ड फ़ास्ट ने कही है। उसके लिए इतिहास न्याय के संघर्ष की गाथा है। और जहाँ भी न्याय के लिए संघर्ष होता है, खून गिरता है वहाँ लेखक खड़ा है, कोई भी देश हो कोई भी काल हो। जहाँ 'साइलस टिम्बरमैन' में लेखक आज के अमरीका की कहानी कहता है वहाँ 'आदिविद्रोही' में वह ईसा से ७३ वर्ष पूर्व के रोम की कहानी कहता है जब गुलामी की प्रथा अपने शिखर पर थी और उन्हीं गुलामों में से एक ने उस पाशविक प्रथा को चुनौती देने का विवेक और साहस अपने आप में पाया था। 'माई ग्लोरियस ब्रदर्स' में लेखक ईसा से डेढ़ दो सौ वर्ष पूर्व के इज़रायल में पहुँच जाता है और उन पाँच

भाइयों की कहानी कहता है जिनके नेतृत्व में वहाँ के ग़रीब किसानों ने तीस वर्ष तक अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा के लिए मृत्युंजय संघर्ष किया था।

फ़ास्ट की कृतियों में बहुत बार यह संघर्ष स्थूल भौतिक दृष्टि से पराजित होता है, विद्रोह असफल रहता है और उसके नायक गोली से उड़ा दिये जाते हैं, सलीब पर टाँग दिये जाते हैं, मैदान में खेत रहते हैं। तब भी उन विद्रोही संघर्षकारियों, योद्धाओं की अन्तिम विजय में हमारी आस्था कभी नहीं खोती और पुस्तक समाप्त करने पर मन जहाँ गहरी उदासी से भरा होता है वहाँ उस उदासी में और सब कुछ हो पर निराशा का रंग नहीं होता। साहित्य की कीमियागरी शायद यही है जो हार को जीत में परिणत कर देती है। संघर्ष की असल पराजय आत्मा की पराजय है और सभी श्रेष्ठ मानवतावादी कलाकारों की भाँति हावर्ड फ़ास्ट के यहाँ भी आत्मा कभी पराजित नहीं होती, उसका अजेय स्वर कभी मन्द नहीं पड़ता।

शिल्प की दृष्टि से भी फ़ास्ट के इन ऐतिहासिक उपन्यासों का असाधारण महत्व है। बहुधा देखा जाता है कि ऐतिहासिक उपन्यास या तो प्रेम कहानी बन कर रह जाते हैं या इतिहास के आँकड़ों में ऐसे उलझ जाते हैं कि उपन्यास उपन्यास न होकर इतिहास का ग्रन्थ बन जाता है। फ़ास्ट के ऐतिहासिक उपन्यास इन दोनों दोषों से मुक्त हैं। एक ओर जहाँ वे युग विशेष के जीवन का समग्र, सम्पूर्ण चित्र देते हैं और इतिहास की दिशा का संकेत करते हैं वहाँ दूसरी ओर उनकी औपन्यासिकता में रत्ती भर कमी नहीं आने पाती। कथावस्तु की रोचकता, वातावरण की चित्रमय सृष्टि, रक्त मांस के सजीव, अत्यन्त सजीव, पात्र—ये सभी बातें अपने श्रेष्ठतम रूप में फ़ास्ट की कृतियों में मिलती हैं। विशेषतः

'आदिविद्रोही' में जो कि शायद लेखक की सबसे महान् कृति है।

पुस्तक की असाधारण रूप से गठी हुई शैली अनुवादक के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती थी, इसमें सन्देह नहीं। अनुवाद सफल हुआ या नहीं, इसका निर्णय भी पाठक ही कर सकेगा। पर तो भी अनुवादक के नाते मुझे इस बात का सन्तोष है कि मैंने पूरी निष्ठा के साथ काम किया है। मेरा यह भी विश्वास है कि अनुवाद की सारी कठिनाइयों—और अक्षमताओं—के बावजूद मैं मूल ग्रन्थ की आत्मा की रक्षा काफ़ी हद तक कर सका हूँ। इस अनुवाद-कार्य में मुझको जो सुख मिला, उसको मैं व्यक्त नहीं कर सकता। केवल इतना कहना चाहता हूँ कि विश्व साहित्य की यह अमर कृति हिन्दी में प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

कविता के टुकड़ों का अनुवाद मेरे आत्मीय श्री बालकृष्ण राव ने किया है जिसके लिए मैं हृदय से उनका कृतज्ञ हूँ।

—अमृत राय

आदिविद्रोही

यह कहानी ७१ ई० पूर्व में शुरू होती है।

भाग १। कैसे केयस क्रैसस ने मई के महीने में, रोम से कापुआ जानेवाले राजमार्ग पर यात्रा की।

इसका उल्लेख मिलता है कि मार्च का महीना आधा बीतते-बीतते अमर नगरी रोम और कापुआ के बीच का राजमार्ग एक बार फिर सब के आने जाने के लिए खोल दिया गया था। कापुआ रोम से कुछ छोटा तो जरूर था लेकिन सुन्दर कम नहीं। रोम और कापुआ के बीच का मार्ग खुल गया था लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इस मार्ग पर आना-जाना तत्काल विधिवत् होने लगा। और यों तो फिर पिछले चार सालों में रोमन प्रजातन्त्र के किसी मार्ग ने यात्रियों और वाणिज्य-व्यवसाय का वह शान्तिपूर्ण, समृद्धिकालीन, सहज प्रवाह नहीं जाना था जिसकी अपेक्षा रोम के किसी मार्ग से हो सकती थी। थोड़ी बहुत अव्यवस्था सब जगह मिलती थी और यह कहना ग़लत न होगा कि रोम और कापुआ के बीच का मार्ग इस अव्यवस्था का प्रतीक बन गया था। किसी ने बहुत अच्छी बात कही थी कि रोम की स्थिति का पता उसके मार्ग देते हैं। अगर मार्गों को शान्ति और समृद्धि उपलब्ध हो तो समझना चाहिए कि नगर को भी शान्ति और समृद्धि उपलब्ध है।

नगर में चारों ओर डुग्गी पिटवा दी गई थी कि अगर किसी स्वतन्त्र नागरिक को कापुआ में कोई काम हो तो वह उस काम के लिए वहाँ जा सकता है। लेकिन फ़िलहाल केवल मनोरञ्जन के लिए उस सुन्दर नगर की यात्रा करनेवालों को प्रोत्साहित नहीं किया गया। परन्तु जैसे-जैसे समय बीता और मीठा सुकुमार मधुमास इटली की भूमि पर उतरा, वैसे वैसे सारे प्रतिबन्ध उठा लिये गये और एक बार फिर कापुआ के सुन्दर-सुन्दर भवन और रमणीक प्राकृतिक दृश्य रोमनों को अपने पास बुलाने लगे।

जिन लोगों को अच्छे-अच्छे इत्रों का मज़ा तो मालूम था लेकिन जो उनकी चढ़ी हुई कीमतों से घबराते थे उन्हें कापुआ में कम्पानिया के ग्रामीण

प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ही नहीं आर्थिक लाभ भी मिलता था। वहाँ पर इत्र के बड़े-बड़े कारखाने खड़े थे जिनका सारी दुनिया में कोई जवाब नहीं था, और कापुआ में सारी दुनिया से खुशबूदार तेल और खुशबुओं के नायाब सत्त जहाजों से पहुँचते रहते थे। उनमें एक से एक मादक और सुकुमार सुगन्धियां होती थीं जैसे मिस्र का गुलाब का तेल, शीबा की लिली और गेलिली के पोस्तों का सत्त, ऐमबरग्रिस का तेल और नीबू और संतरे के छिलके, माज और पुदीने की पत्तियाँ, गुलाब और चन्दन की छालें और इसी तरह की और भी न जाने क्या-क्या चीज़ें। कापुआ में ख़रीदार रोम के आधे से भी कम दाम में इत्र खरीद सकता था और अगर इस बात को ध्यान में रक्खा जाय कि उन दिनों पुरुषों और स्त्रियों दोनों के ही बीच इत्र कितने लोकप्रिय होते जा रहे थे, और जरूरी भी, तो यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि अगर और किसी कारण से नहीं तो कम से कम इन इत्रों के लिए ही एक बार कापुआ की यात्रा लाभप्रद हो सकती थी।

२

राजमार्ग मार्च में खोला गया और दो महीने बाद, मई के मध्य में, केयस क्रैसस और उसकी बहन हेलेना और हेलेना की सहेली क्लोदिया मारियस कापुआ में अपने सम्बन्धियों के संग एक सप्ताह बिताने के लिए रवाना हुए। रोम से वे लोग एक साफ़ दिन को सबेरे रवाना हुए जब आसमान में बादल नहीं थे और सूरज की रोशनी चारों ओर फैली हुई थी और हवा में बहुत दिलकश ठंडक थी। सफ़र के लिए यह एक ऐसा दिन था जिससे अच्छा कोई दूसरा दिन न हो सकता था। सफ़र करनेवाले सब नौजवान थे, उनकी आँखों में चमक थी और उनका मन यात्रा में मिलनेवाले आनन्द की प्रत्याशा से भरा हुआ था। उनके इस आनन्द में स्वभावतः रोमाञ्चकारी अनुभवों का आनन्द भी मिला हुआ था। उनको इस बात का पक्का विश्वास था कि रोमांचकारी अनुभवों से उनका सामना जरूर होगा। केयस क्रैसस पच्चीस वर्ष का नवयुवक था, उसके काले-काले, घने बालों की मुलायम लटें झूल रही थीं, उसका नाक-नक्शा सुडौल था जिसके कारण उसने अपनी सुन्दरता और कुलीनता दोनों ही बातों के लिए प्रसिद्धि पा ली थी। वह एक सफ़ेद खूबसूरत अरबी घोड़े पर सवार था जो उसके पिता ने दो बरस पहले उसके जन्म दिन पर उसे भेंट किया था और उसके साथ की दोनों लड़कियाँ खुली पालकियों में चल रही थीं। दोनों को चार चार गुलाम ढो रहे थे जिन्हें पैदल चलने का खूब अभ्यास था और जो बिना सुस्ताये दस दस मील तक मज़े में दौड़ते

चले जा सकते थे। उनका विचार था कि पाँच दिन रास्ते में गुजारेंगे, हर रोज़ शाम को गाँव में किसी दोस्त या रिश्तेदार के घर पर ठहर जाया करेंगे और इसी तरह बड़े आराम के साथ, मज़े में कापुआ पहुँच जायँगे। चलने के पहले ही उनको मालूम हो गया था कि रास्ते में उन्हें सलीबों पर लटके हुए सज़ायाफ़्ता आदमी मिलेंगे मगर उन्होंने सोचा कि शायद वे इतने ज्यादा न होंगे कि उनका मज़ा किरकिरा हो। सच बात यह है कि लड़कियों ने जो वर्णन सुने थे उनसे उनके मन में उस चीज़ को देखने की बड़ी उत्कण्ठा जाग गयी थी और जहाँ तक स्वयं केयस की बात थी ऐसी चीजों को देखकर उसके भीतर एक विचित्र सी, ऐन्द्रिक भोग की सी प्रतिक्रिया होती थी। इसके साथ ही उसे इस बात का गर्व भी था कि ऐसे दृश्यों को देखकर उसका मन कुछ खास खराब नहीं होता और कहना ही होगा कि इस मामले में उसकी पाचन शक्ति अच्छी थी।

उसने उन लड़कियों से दलील करते हुए कहा—कुछ भी कहो इतना तो पक्का है कि उन सलीबों को देखना उन पर टंगने से बेहतर है।

हेलेना ने कहा—हमारी निगाह बस सामने की तरफ़ होगी, न दायें न बायें।

वह देखने में क्लॉदिया से अधिक सुन्दर थी। क्लॉदिया गोरी तो थी मगर कुछ अजीब बेजान सी। उसकी जिल्द ज़र्द थी, उसकी आँखें भी ज़र्द और उसके चारों तरफ़ एक थकान की सी फ़िज़ा थी जिसे वह सेती रहती थी। उसका शरीर अच्छा भरा हुआ और मोहक था। मगर केयस को वह बड़ी बेवक़ूफ़ सी मालूम होती थी और उसकी समझ में नहीं आता था कि उसकी बहन हेलेना को क्लॉदिया के अन्दर क्या बात मिलती है। अपनी इस यात्रा में केयस ने इस समस्या को हल करने का निश्चय किया था। इसके पहले उसने कई बार अपनी बहन की इस सहेली को अपने जाल में फँसाने का संकल्प किया था और हर बार उसकी थकी हुई उदासीनता के सम्मुख उसका संकल्प टूट गया था। उसकी यह उदासीनता ख़ास केयस के प्रति हो ऐसी भी बात न थी। वही उसका स्वभाव था। वह थकी और ऊबी हुई रहती थी और केयस को इस बात का पूरा यक़ीन था कि अपनी उस थकन और ऊब के कारण ही क्लॉदिया में कुछ एक बात पैदा हो गयी थी जिससे दूसरे को उसके संग उकताहट न मालूम होती थी वरना तो शायद साथ बैठना भी दूभर हो जाता। केयस की बहन और ही चीज़ थी। अपनी बहन के प्रति केयस अपने मन में कुछ एक ऐसा भाव पाता था जिससे उसको काफ़ी परेशानी मालूम होती थी। हेलेना अपने भाई के बराबर लम्बी थी और देखने में भी बहुत कुछ वैसी ही थी—कुछ

अधिक ही सुन्दर, और ऐसे लोग जो उसकी पुरुषोचित शक्तिमत्ता और संकल्पशीलता से डरकर पहले ही न भाग जाते थे वे उसे काफ़ी खूबसूरत समझते थे। अपनी बहन को देखकर केयस के मन में एक विचित्र सा आवेग उत्पन्न होता था और वह समझ रहा था कि कापुआ की यात्रा की योजना बनाते समय उसके मन में कहीं यह आशा भी थी कि वह इस बार अपनी बहन के प्रति अपने मनोभाव को समझने में सफल हो सकेगा। उसकी बहन और क्लोंदिया का जोड़ा खासा बेढंगा मगर तब भी काफ़ी संतोषजनक था और केयस आस लगाये था कि रास्ते में उसे बड़ी-बड़ी दिलचस्पियाँ हाथ लगेंगी।

रोम के बाहर कुछ ही मील पर सलीबों और उन पर लटकती हुई लाशों का सिलसिला शुरू हो गया। एक जगह पर सड़क रेत और चट्टान के एक छोटे से, दो चार एकड़ खेत के बीहड़ टुकड़े को काटती थी और उस आदमी ने जो वहां पर नियुक्त था उस दृश्य को और भी प्रभावशाली बनाने के विचार से पहले सलीब के लिए इसी जगह को चुना था। चीड़ की नई ताज़ी लकड़ी को काटकर जिससे अब भी रस चू रहा था, यह सलीब बनाया गया था और चूँकि उसके पीछे की ज़मीन धसक गयी थी इसलिए अब उस सलीब के पीछे केवल सुबह के आकाश का विस्तार था और सलीब की वह टिकटी नंगी, नुकीली, कंकाल जैसी खड़ी थी, इतनी बड़ी और दिल को दहलानेवाली— और नाप से ज़रा ज़्यादा ही बड़ी क्योंकि वही पहली टिकटी थी—कि देखने वाले का ध्यान उस पर झूलते हुए आदमी के नंगे शरीर की ओर जाता ही न था। वह ज़रा सी झुकी हुई खड़ी थी, जैसा कि अक्सर उन सभी टिकटियों के संग होता है जिनका ऊपरी हिस्सा ज्यादा भारी होता है, और इस बात ने उसकी वीभत्स पैशाचिकता को और भी बढ़ा दिया था। केयस ने अपने घोड़े की रास खींची और उसे धीरे-धीरे सलीब की तरफ़ ले गया और हेलेना ने भी अपने हाथ का नफ़ीस चाबुक फटकार कर अपने पालकी ढोनेवाले गुलामों को केयस के पीछे-पीछे चलने का आदेश दिया। सलीब के पास पहुँचकर रुकते हुए हेलेना की पालकी ढोनेवालों के चौधरी ने बहुत धीरे से कहा—स्वामिनी, थोड़ा सुस्ता लें हम? आज्ञा है स्वामिनी? वह स्पेन का रहनेवाला था और बहुत अटक-अटक कर, संभल-संभल कर, टूटी-फूटी लैटिन बोल लेता था।

—ज़रूर, हेलेना ने कहा। अभी उसकी उम्र सिर्फ़ तेइस साल की थी मगर अभी से अपने काल की दूसरी स्त्रियों के समान वह भी हर बात में अपना दृढ़ मत रखती थी और उसे जानवरों के प्रति, जिनमें उसके गुलाम भी शामिल थे, अकारण क्रूरता पसन्द नहीं थी।

स्वामिनी की आज्ञा पाकर पालकी ढोनेवालों ने बहुत सँभालकर

गालकिया धीरे से ज़मीन पर उतार दीं और बड़े कृतज्ञ भाव से उनके पास ही पलथी मारकर बैठ गये।

सलीब के सामने कुछ गज़ की दूरी पर बेंत की एक कुरसी रक्खी थी जिस पर एक छोटे से छज्जे का साया था। कुर्सी पर एक मोटा सा हँसमुख आदमी बैठा हुआ था जो देखने में अभिजात भी था और दरिद्र भी। उसका आभिजात्य उसकी ठुड्डी के थुलथुल मांस से, जिसके कारण उसकी एक के बदले कई ठुड्डियाँ नज़र आती थीं, और उसकी बड़ी भारी तोंद से पता चलता था और उसकी दरिद्रता, जिसमें आलस्य का भी अंश था, उसके फटे-पुराने गंदे कपड़ों से, गंदे नाखूनों और बढ़ी हुई दाढ़ी से स्पष्ट थी। उसका वह हँसमुखपन तो असल में पेशेवर राजनीतिज्ञ का लगाया हुआ चेहरा था और उसको एक नज़र देखकर ही भांपा जा सकता था कि इस आदमी ने वर्षों फोरम और सेनेट और वार्ड में झाड़ू लगाई है और उस सब के बाद अब वह इस जगह पर आ पहुँचा था। इसके बाद तो बस भिखारी बन जाना शेष था जो किसी रोमन सराय में पड़ा रहता है और जिसके पास अपना कहने को बस एक चटाई होती है। मगर तब भी उसकी आवाज़ में वही कड़क थी जो मेले में अपने माल की हांक लगानेवाले किसी दूकानदार की आवाज़ में होती है। उसने सब को कह रक्खा था कि इसी तरह लड़ाई में किस्मत का हेर-फेर होता है। कुछ लोगों में बड़ी विलक्षण मेधा होती है और वे अनायास अपने लिए ठीक दल चुन लेते हैं। जहाँ तक उसकी अपनी बात थी उसने हमेशा गलत दल ही चुना था और यह कहना बेसूद है कि बुनियादी तौर पर दोनों में कोई ख़ास फर्क नहीं होता। तत्व की बात बस इतनी है कि वही चीज़ उसको उस जगह पर ले आयी थी और फिर यों तो उससे अच्छे लोगों का हाल उससे ज़्यादा खराब था।

—मुझे माफ़ करें सरकार, मैं उठकर आपका स्वागत नहीं कर सकूँगा। दिल, जी हाँ मेरे दिल में तकलीफ़ है—कहते हुए उसने अपनी विशाल तोंद के पूरे विस्तार पर हाथ फेरा—आप लोग काफ़ी सवेरे निकल पड़े हैं और ठीक भी तो है, यात्रा के लिए जल्दी ही निकलना ठीक होता है। तो आप कापुआ जा रहे हैं न?

—हाँ कापुआ, केयस ने कहा।

—क्यों नहीं क्यों नहीं, कापुआ नहीं तो और कहाँ जायेंगे आप......वाह-वाह क्या कहने हैं, बड़ा प्यारा शहर है कापुआ, बड़ा हसीन बड़ा दिलकश, शहरों में एक शहर, शहरों का सरताज, हीरा। रिश्तेदारों से मिलने जा रहे होंगे, है न?

—आप बिल्कुल ठीक कहते हैं, केयस ने जवाब दिया। दोनों लड़कियाँ

मुस्करा रही थीं। वह आदमी खुशदिल था और सबको खुश करना चाहता था, मगर था वह एक विदूषक ही, निरा भाड़। उसमें अब कोई आत्मसम्मान शेष न था। इन नौजवानों के लिए थोड़ी देर को विदूषक बन जाने में भी कोई बुराई नहीं है। केयस ने समझ लिया कि इन कार्रवाइयों में ज़रूर कहीं पर पैसे का भी दखल है मगर इसकी उसे फ़िक्र न थी। एक तो इसलिए कि उसे कभी अपनी किसी ज़रूरत या सनक के लिए पैसे की कमी न हुई थी और दूसरे यह कि वह उन लड़कियों पर अपनी सांसारिक व्यवहार कुशलता की धाक जमाना चाहता था और उसके लिए इस भारी-भरकम मोटे विदूषक से अच्छा दूसरा कौन माध्यम हो सकता था।

—आप मुझे देखिए, मैं गाइड हूँ, कहानी कहता हूँ, इतिहास जो न्याय करता है सज़ाएँ देता है उसका एक छोटा सा दर्शक हूँ। मगर न्यायाधीश भी इससे ज्यादा क्या करता है। मेरी स्थिति भिन्न है लेकिन मैं सोचता हूँ कि भीख मांगने से अच्छा है कुछ काम करके किसी से एक दीनार ले लेना, भले उसमें कुछ अपमान ही क्यों न होता हो।

लड़कियाँ सलीब पर लटकते हुए मुर्दा आदमी की तरफ़ आँख उठाये बिना न रह सकीं। अब वह मुर्दा इन लोगों के ठीक सामने टीले पर था और दोनों लड़कियाँ बार-बार उसके नंगे, धूप से स्याह और चील-कौवे के नोचे हुए शरीर को देख रही थीं। कौवे चौकन्ने होकर उसके चारों ओर मंडरा रहे थे। चमड़ी पर मक्खियाँ रेंग रही थीं। सलीब पर झूलता हुआ, सामने की ओर झुका हुआ वह शरीर देखने में ऐसा लगता था कि जैसे गिर रहा हो, बराबर गिर रहा हो, कि जैसे उसमें गति हो, निरन्तर गति, मुर्दे की वह विरूप वीभत्स गति। उसका सिर सामने को लटक गया था और उसके लम्बे-लम्बे, धूल में अटे हुए बाल उस दर्द और ऐंठन को ढँके हुए थे जो कि शायद उस चेहरे पर रही होगी।

केयस ने उस भारी भरकम आदमी को एक सिक्का दिया। सिक्का पाकर उस आदमी ने सिक्के के अनुरूप धन्यवाद दिया। पालकी ढोनेवाले ज़मीन पर आंखें गड़ाये चुपचाप बैठे थे और एक बार भी सलीब की तरफ़ न ताकते थे। वे अपना काम जानते थे और जिन्दगी को ढोकर ले चलने का सबक उन्होंने सीख लिया था।

उस मोटे आदमी ने कहा—कह सकते हैं कि यह जो आप देख रही हैं एक प्रकार का प्रतीक है। सरकार इसे यों न देखें कि जैसे यह कोई इन्सानी करिश्मा है या बहुत भयानक करिश्मा है। रोम देता है और रोम ही ले लेता है और, कुछ कम या कुछ ज्यादा, दंड अपराध के अनुकूल ही होता है। यह आदमी यहाँ पर अकेला खड़ा है और आपका ध्यान उन चीजों की ओर

खींच रहा है जो इसी रास्ते पर आगे आनेवाली हैं। सरकार को मालूम है यहाँ और कापुआ के बीच ऐसी कितनी लाशें—

उन्हें मालूम था मगर वे खामोश रहे क्योंकि वे चाहते थे कि वही मोटा अपने मुँह से कहे। इस मोटे थुलथुल मस्त आदमी को हर बात तोला माशा नाप तोल कर कहने की आदत थी। यहाँ तक कि यह आसानी से न कही जा सकनेवाली बात भी वह अपने उसी खास अन्दाज़ में कह रहा था। जैसे इस बात का प्रमाण दे रहा हो कि जो बात वह कह रहा था वह ऐसी न थी कि कही न जा सके बल्कि एक बहुत मामूली सी और स्वाभाविक सी बात हो। उसने मन ही मन कहा कि वह उन्हें बिल्कुल नपी-तुली संख्या बतलायेगा। भले वह संख्या सही न हो मगर होगी एकदम नपी-तुली।

और उसने कहा—छः हजार चार सौ बहत्तर।

चार छः पालकी ढोनेवाले एक बार काँप गये। वे सुस्ता थोड़े ही रहे थे. वे तो बस बैठे थे, बिना हिले डुले, निर्जीव से कि मानों अकड़ गये हों। अगर किसी ने उन्हें गौर से देखा होता तो यह बात उसे दिख जाती मगर किसी ने उन्हें नहीं देखा।

—छः हजार चार सौ बहत्तर, मोटे ने दुबारा कहा। उस पर केयस ने एकदम ठीक टिप्पणी की, इतनी लकड़ी की बरबादी! हेलेना जानती थी कि यह झूठ बात है मगर उस मोटे ने बात की दाद देते हुए सिर हिलाया। अब उन लोगों में बातचीत का सिलसिला कायम हो गया था। मोटे ने अपने चोगे की परतों में से एक छड़ी निकाली और टिकटी की तरफ़ इशारा किया।

—वह देखिये वह तो केवल एक प्रतीक है। जो आगे निरन्तर आपको मिलेंगी उनका एक प्रतीक।

क्लॉदिया परेशान और घबरायी हुई सी हँसी हँसी।

—मगर तब भी बहुत रोचक और महत्वपूर्ण। कैसी सूझ-बूझ से अलग-थलग कायम की गई है यह चीज़। सूझ-बूझ ही रोम है और रोम ही सूझ-बूझ! उसको सूक्तियों में बात करना अच्छा मालूम होता था।

—क्या वह स्पार्टकस है? क्लॉदिया ने मूर्ख की तरह प्रश्न किया मगर उस मोटे ने धीरज से उसकी बात सुनी। वह जिस तरह अपने ओंठों को चाट रहा था उससे सिद्ध था कि उसके पितृवत् भाव में वासना बिल्कुल न हो ऐसा नहीं कहा जा सकता और केयस ने सोचा—बुड्ढा खूसट कामुक पशु।

—नहीं, वह स्पार्टकस नहीं, मेरी बच्ची।

—उसकी लाश मिली ही नहीं, केयस ने अधीरता से कहा।

उस मोटे ने बड़ी बात कहने के अन्दाज़ में खासे रोबीले ढंग से

कहा—उसकी बोटी-बोटी अलग कर दी गई। हाँ बेटी, मैं ठीक कहता हूँ उसकी बोटी-बोटी अलग कर दी गई। तुम्हारे कोमल दिमाग़ ऐसे भयानक विचारों के लिए नहीं बने हैं, वे शायद सह भी न पायें ऐसी बातों को मगर बात मैं सच कहता हूँ।

क्लॉदिया काँप उठी मगर बड़ी बाँकी अदा के साथ, और केयस ने उसकी आँखों में एक रोशनी देखी जो उसने पहले कभी न देखी थी। ऊपरी बातों के आधार पर कभी कोई फैसला न करना, उसके पिता ने एक बार उससे कहा था और गोकि यह बात कहते समय उनके मन में स्त्रियों की नाप-जोख से ज्यादा गम्भीर मसले थे मगर तब भी बात तो सही थी और यहाँ भी लागू होती थी। क्लॉदिया इस वक्त उस मोटे आदमी को जिस तरह देख रही थी उस तरह उसने कभी केयस को नहीं देखा था। और उस मोटे आदमी ने अपनी बात जारी रक्खी—

एकदम सच। और अब व कहते हैं कि स्पार्टकस कभी था ही नहीं। हा हा! क्या मैं हूँ? क्या आप हैं? मैं पूछता हूँ ऐपियन मार्ग पर यहाँ से लेकर कापुआ तक छः हजार चार सौ बहत्तर लाशें टिकटियों पर झूल रही हैं या नहीं? आप बताइये हैं या नहीं? हैं तो। और तब, मेरे नौजवान दोस्तो, एक और सवाल पैदा होता है, इतनी ज्यादा लाशें क्यों? दूसरों को नसीहत देने के लिए तो एक दो आदमियों को सज़ा दी जाती है। मगर छः हजार चार सौ बहत्तर, इतने क्यों?

—वे कुत्ते इसी के योग्य थे, हेलेना ने धीरे से जवाब दिया।

—थे क्या? उस मोटे आदमी ने बड़ी नफ़ासत से नज़र उठाई। उसने यह बात उनके नज़दीक साफ़ कर दी कि वह दुनियादार आदमी है और उसे दुनिया में चलना आता है और भले वे लोग सामाजिक स्थिति में उससे ऊँचे हों मगर तब भी उम्र में इतने कम हैं कि उसकी बात को यों ही टाल देना उनके लिए सम्भव नहीं—शायद वे कुत्ते इसी के योग्य थे। लेकिन इतने जानवर हलाल ही क्यों किये जायँ, अगर तुम उतना सब गोश्त नहीं खा सकते? मैं तुम्हें बतलाता हूँ। इससे दाम चढ़ा रहता है। व्यवस्था बनी रहती है। और सबसे बड़ी बात तो यह कि मालिकाने के कुछ बड़े नाजुक सवाल इससे हल हो जाते हैं। और एक शब्द में यही उस सवाल का जवाब है। अब ज़रा इसे देखो—उसने अपनी छड़ी से इशारा किया—इसे अच्छी तरह देखो। यह फ़ेयरट्रेक्स है, वही गॉल, सबसे महत्वपूर्ण आदमी था यह, सबसे महत्वपूर्ण। यह स्पार्टकस का बहुत अन्तरंग था, हाँ बहुत। और मैंने उसे मरते हुए देखा था। ठीक इसी जगह पर बैठे-बैठे मैंने उसे मरते देखा। चार दिन लगे। साँड़ की तरह मज़बूत था वह। तुमसे कैसे कहूँ, तुम कभी विश्वास भी न कर

सकोगी कि आदमी मे इतनी शक्ति हो सकती है। मैं जानता हूँ कि तुम विश्वास नहीं कर सकोगी। तुम यह देखो मेरी कुर्सी, यह तीसरे वार्ड के सेक्स्टस की कुर्सी है। तुम उसे जानती हो ? बड़ा सज्जन व्यक्ति है और मुझ पर उसकी कृपा है। तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा कि कितने लोग इस दृश्य को देखने के लिए आये और सचमुच यह देखने योग्य दृश्य था। यह नहीं कि मैं उनसे इसके लिए कोई उचित मूल्य ले सका—मगर इसमें छिपाना क्या, लोग देते ही हैं अगर तुम बदले में उनको कोई ढंग की चीज़ दो। यह तो बराबरी का सौदा है, इस हाथ दे उस हाथ ले। मैंने खुद ही इन चीज़ों की जानकारी हासिल की। तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा कि स्पार्टकस के युद्धों के बारे में यहाँ-वहाँ कितना अज्ञान है। यहीं देखो, इस कुलीन युवती को, यह मुझसे पूछती है कि क्या वह स्पार्टकस है ? प्रश्न स्वाभाविक है लेकिन अगर सचमुच ऐसा होता तो क्या वह बहुत ही अस्वाभाविक बात न होती। आप बड़े लोग अपनी छोटी सी सुरक्षित दुनिया में रहते हैं, आप की ज़िन्दगी के इर्द गिर्द एक बड़ा भारी सा कवच रहता है वर्ना इस युवती को यह बात मालूम होती कि स्पार्टकस की बोटी-बोटी अलग कर दी गयी थी, ऐसी कि किसी को उसका बाल तक नहीं मिला। इस आदमी के संग बात कुछ और थी—उसे पकड़ लिया गया था। यह सच है कि थोड़े बहुत घाव इसको भी लगे—यहाँ देखो—

अपनी छड़ी से उसने उस लाश के पहलू में लगे एक बड़े घाव को दिखलाया।

—इस तरह के बहुत से घाव हैं और उन सब में एक बात बड़े मज़े की है। सभी घाव या तो बग़ल में हैं या सामने हैं। पीठ में एक भी घाव नहीं है। गुलामों के बारे में कौन इस बात का ध्यान देता है कि उन्हें कहाँ घाव लगा है, ऐसी तफ़सीली बातों पर ज़ोर देने का जी भी तो नहीं चाहता मगर मैं आपको बतलाऊँ, सच्चाई यह है कि—

पालकी ढोनेवाले अब गौर से उसकी ओर ताक रहे थे और उसकी बात सुन रहे थे। उनके सिर के बाल लम्बे और उलझे हुए थे और उनकी आँखें चमक रही थीं।

—इटली की धरती पर इनसे अच्छे सैनिक कभी नहीं हुए। यह सोचने की बात है कि ऐसा क्यों हुआ। अब ज़रा आओ हम अपने इस दोस्त के बारे में बात करें जो यहाँ इस टिकटी पर टंगा हुआ है। इसे मरने में चार रोज़ लगे और शायद इससे भी कहीं ज़्यादा लग सकते थे अगर उन्होंने उसकी एक रग न काट दी होती और काफ़ी खून न निकल गया होता। अब चाहे आपको यह बात न मालूम हो मगर जब आप उनको सलीब पर चढ़ाते हैं उस वक़्त तो जानना ही होता है। या तो आप उनका खून निकाल

दीजिए या वे गुब्बारे की तरह फूलते ही चले जाते हैं। और अगर उनका खून ठीक से निकाल दिया जाय तो फिर वे क़ायदे से सूख जाते हैं और तब चाहे आप उन्हें महीने भर ही क्यों न टंगा रहने दीजिए आपको कुछ ज़्यादा परेशानी नहीं उठानी पड़ती सिवाय इसके कि कुछ बदबू आती है। ठीक उसी तरह जैसे हम अपने घरों में गोश्त को सुखाते हैं और उसमें भी तो काफी धूप की ज़रूरत पड़ती है। हाँ, तो मैं इस आदमी की बात कर रहा था। यह बड़ा भयानक आदमी था इसमें शक नहीं, गर्वीला, उद्धत, मगर वह हार गया। पहले रोज़ वहाँ पर टंगे-टंगे वह दिन भर हर उस भले नागरिक को गाली देता रहा जो उसको देखने के लिए वहाँ पर आता। बड़ी असभ्य गन्दी ज़बान वह बोल रहा था, ऐसी कि आप कभी न चाहेंगे कि आप के घर की औरतों के कान में भी पड़े। जो ऊँचे कुल में नहीं पैदा हुआ उससे आप और आशा भी क्या कर सकते हैं और आखिर को गुलाम गुलाम है। मगर मेरे मन में उसके खिलाफ़ कोई द्वेष नहीं था। यहाँ मैं था वहाँ वो और बीच-बीच में मैं उससे कहता था, तुम्हारा दुर्भाग्य मेरा सौभाग्य है और अगर तुम्हारा यह मरने का ढंग बहुत सुविधाजनक नहीं है तो मैं अपने को जिन्दा रखने के लिए जैसे जीविकोपार्जन करता हूँ वह भी तो बहुत सुविधाजनक नहीं है। और फिर मैं कमाता भी कितना हूँ! आखिर को इसी तरह कुछ-न-कुछ बात तो करनी ही पड़ती है। मेरी बात का उस पर कुछ खास असर, किसी भी तरह का, नहीं हुआ मगर दूसरे रोज़ शाम होते-होते उसका मुँह बन्द हो गया। एकदम जकड़ गया जैसे शिकंजे में। आपको मालूम है उसने आखिरी बात क्या कही थी?

क्लोदिया ने धीरे से पूछा—क्या!

—मैं लौटूँगा और तब मैं एक नहीं एक करोड़ बन कर आऊँगा, यह कहा उसने। ज़रा सोचो तो, है न हवाई बात?

केयस हलकी-सी हैरानी के स्वर में पूछ बैठा—उसका क्या मतलब था? न चाहते हुए भी उस मोटे ने केयस के ऊपर जैसे जादू-सा कर दिया था।

—हाँ, तो आप पूछते हैं कि उसका क्या मतलब था, हुजूर यही जानना चाहते हैं न? मुझको भी उतना ही मालूम है जितना कि आपको और फिर उसके बाद उसने दूसरा शब्द भी तो नहीं कहा। अगले रोज़ मैंने उसको कुछ कुरेदा भी मगर उसने एक शब्द भी नहीं कहा। बस अपनी उन लाल-लाल आँखों से मुझे घूरता रहा, उन आँखों से जिनमें खून उतर आया मालूम होता था और ऐसे घूरता रहा जैसे अगर उसका बस चलता तो वहीं मुझे मार डालता मगर उसे मारकाट पसन्द नहीं थी। और फिर क्लोदिया को सम्बोधित करते हुए बोला—हाँ तो बेटी, वह स्पार्टकस नहीं था मगर हाँ उसका एक

सेनापति ज़रूर था और वह कठोर आदमी था। मगर स्पार्टकस के बराबर नहीं। स्पार्टकस सचमुच बहुत कठोर आदमी था। तुम कभी उससे यहाँ इस राजमार्ग पर मिलना न पसन्द करतीं मगर खैर अब तो उसका डर ही नहीं क्योंकि वह मर गया और सड़ रहा होगा। हाँ, तो आप और क्या जानना चाहेंगे?

केयस को खेद हो रहा था कि उसने वह दीनार क्यों दिया। वह बोला—नहीं, काफ़ी हो गया। अब हमें चलना चाहिए।

३

उन दिनों रोम एक हृदय की भाँति था जो अपनी मार्ग-रूपी शिराओं से संसार के कोने-कोने में रक्त पहुँचाता था। कोई दूसरा राष्ट्र होता तो उसने एक हज़ार साल में एक रद्दी सी सड़क बनायी होती जो शायद उसके बड़े-बड़े नगरों को जोड़ देती। मगर रोम की बात और थी। सेनेट ने आदेश दिया, हमें एक सड़क बनाकर दो!—उनके पास योग्यता थी। इन्जीनियरों ने योजना बनायी, ठेके दे दिये गये, मेटों ने काम को हाथ में ले लिया और मज़दूरों ने तीर की तरह सीधी सड़क बनाकर रख दी, जिधर भी जाना हो उधर के लिए। अगर रास्ते में पहाड़ खड़ा हो तो उसको हटा दिया जाता है, गहरी घाटी हो तो उस पर पुल बिछा दिया जाता है, नदी हो तो उस पर भी पुल बना दिया जाता है। रोम को कोई भी चीज़ रोक न सकती थी। उसी तरह रोम की सड़कों को भी कोई चीज़ न रोक सकती थी।

यह राजमार्ग जिस पर ये तीन प्रसन्नचित्त तरुण-तरुणी दक्खिन को बढ़ते हुए रोम से कापुआ जा रहे थे, ऐपियन मार्ग कहलाता था। यह एक बहुत अच्छी बनी हुई चौड़ी सड़क थी जिसे बजरी पर ज्वालामुखी की राख और फिर उस पर बजरी और फिर राख डालकर बनाया गया था और फिर सबके बाद पत्थर जमा दिया गया था। वह बनी ही ऐसी थी कि कुछ दिन टिके। जब रोमन कोई सड़क बनाते थे तो एक दो साल के लिए नहीं, सदियों के लिए। ऐपियन मार्ग भी इसी तरह बना था। वह मानवता की प्रगति, रोम की उत्पादनशीलता और संगठन के लिए रोमन जाति की हमेशा से चली आती हुई क्षमता का प्रतीक था। वह साफ़-साफ़ इस बात की घोषणा करता था कि मानवजाति ने अपने संचालन के लिए अपने समस्त इतिहास में जितनी व्यवस्थाएँ कीं उनमें रोमन व्यवस्था श्रेष्ठतम थी क्योंकि वह न्याय और बुद्धि और अनुशासन पर आधारित थी। बुद्धि और अनुशासन के प्रमाण सब जगह मिलते थे और वे लोग जो सड़कों पर यात्रा करते थे उसको ऐसा स्वयंसिद्ध माने हुए थे कि उनका इस बात पर ध्यान भी न जाता था।

उदाहरण के लिए फ़ासला ठीक-ठीक लिखा रहता था, उसमें अनुमान क कोई बात न होती थी। हर मील पर एक पत्थर लगा हुआ था। हर मील के पत्थर पर वे सारी बातें लिखी हुई थीं जिनकी किसी यात्री को ज़रूर पड़ सकती थी। हर जगह पर तुमको यह बात मालूम रहती थी कि तुम उ वक्त उस मुकाम पर रोम से या फ़र्मियाई से या कापुआ से ठीक ठीक कितन दूरी पर हो। हर पाँच मील पर एक सराय और अस्तबलें थीं जहाँ घोड़े मि सकते थे और जलपान और अगर जरूरत हो तो रात का विश्राम! बहुत स सरायें काफ़ी शानदार थीं, उनके आगे चौड़े चौड़े बरामदे थे जिनमें शरा और खाने पेश किये जाते थे। कुछ में हम्माम भी थे जिनमें थके हुए यात्र अपने को फिर से तरोताज़ा कर सकते थे और कुछ सरायें थीं जिनमें सोने के कमरे बड़े अच्छे और आरामदेह थे। इनमें जो नयी सरायें थीं वे यूनानी मन्दिरों की शैली पर बनी थीं और उनके कारण रास्ते भर में प्राकृति दृश्य की सुन्दरता में वृद्धि होती चलती थी।

जहाँ पर ज़मीन समतल थी, चाहे वह मैदान हो चाहे दलदल, सड़क आसपास के गाँवों से दस पन्द्रह फ़ीट ऊपर एक छत की तरह बनी होती थ जिस पर से सब को गुज़रने का हक़ होता था। जहाँ पर ज़मीन ऊबड़-खाब होती या पहाड़ी होती, सड़क या तो उनके बीच से अपना रास्ता काटक बनाती या पत्थर की मेहराबों के ऊपर से नीचे की घाटियों को पार करती।

वह सड़क स्थायित्व की घोषणा थी और उस सड़क की सतह पर रोम के स्थायित्व के सभी तत्व बढ़ते रहते थे। उस सड़क पर मार्च करते हुए सैनि एक दिन में तीस मील की मंज़िल तै कर सकते थे और इसी तरह हर रोज़ तीस मील कर सकते थे। सामान की गाड़ियाँ जिनमें रोमन प्रजातन्त्र क जरूरत की चीजें भरी रहती थीं जैसे गेहूँ और जौ और कच्चा लोहा औ कटी हुई लकड़ी और कपड़ा और ऊन और तेल और फल और पनीर औ गोश्त—इन सभी सामानों से लदी हुई गाड़ियाँ उन सड़कों पर पानी की तर बहती रहती थीं। सड़कों पर नागरिक होते थे जिनके वैसे ही, सब नागरिकों जैसे न्यायोचित काम होते थे, व्यस्तताएँ होती थीं; अपने गाँव के स्थानों को जाते य वहाँ से आते हुए भद्र जन, व्यापार के लिए यात्रा करने वाले और मनोरञ्ज के लिए यात्रा करनेवाले, हाट को जाते या हाट से लौटते गुलामों के कारवाँ सभी देशों और सभी राष्ट्रों के लोग और दूसरे सब इस तरह रोम के शास की दृढ़ता और सुव्यवस्था का मज़ा लेते थे।

और इसी समय सड़क के किनारे-किनारे थोड़ी-थोड़ी दूर पर एक सलीब गड़ा हुआ था और हर सलीब पर एक मुर्दा आदमी झूल रहा था।

सुबह केयस की उम्मीद से ज़्यादा गर्म निकली और कुछ देर बाद मुर्दों की बदबू काफ़ी असह्य हो गयी। लड़कियों ने अपनी रूमालें इत्र में डुबो लीं और बराबर उनको सूंघती जाती थीं मगर उससे उस अजीब मीठी-मीठी-सी, मितली पैदा करनेवाली बदबू के बफारे न बन्द हुए जो सड़क पर पूरे रास्ते मंडरा रही थी और न वे इत्र इस बदबू की प्रतिक्रिया को ही रोक सके। लड़कियों को मितली मालूम हो रही थी और केयस को भी आख़िरकार पीछे रुककर और सड़क के किनारे जाकर कै करनी पड़ी। सुबह तो एक तरह से बर्बाद हो ही गयी।

सौभाग्य से जहाँ वे दिन का खाना खाने के लिए ठहरे थे उस सराय के आध मील के घेरे में कोई सलीब न था और गो उनकी भूख अब तक मर चुकी थी तब भी ख़ैर इतना तो हुआ कि उनकी मितली दूर होने लगी। सड़क के किनारे की यह सराय यूनानी शैली में बनी थी। यह इकमंज़िला इमारत थी, जिसके सामने बहुत अच्छा सा बरामदा था। बरामदे में मेज़ें लगी हुई थीं। बरामदा एक छोटी-सी घाटी के ऊपर बना हुआ था जिसके बीच से एक नाला बहता था और उसके सामने जो गुफ़ा पड़ती थी वह चारों ओर खुशबूदार चीड़ के पेड़ों से घिरी हुई थी। इस जगह पर चीड़ की गन्ध को छोड़ कर दूसरी कोई गन्ध न थी, बस वही पेड़ों की गीली-गीली मीठी सी खुशबू, और न यहाँ पर दूसरी कोई आवाज़ थी सिवाय खाना खानेवालों की सुसंस्कृत बातचीत की हलकी-सी भुनभुनाहट और पहाड़ी नाले के संगीत के।

—कैसी प्यारी जगह है, क्लॉदिया ने कहा और केयस ने, जो यहाँ पर एक दफ़ा पहले रह चुका था, उन लोगों के लिए एक मेज़ ढूँढ़ ली और बड़े रोब-दाब से खाना लाने का आदेश देने लगा। उस सराय की वह खास चमकती हुई, अम्बर के रंग की, खुश्क और तबीयत को ताज़ा करनेवाली शराब उन लोगों के सामने फ़ौरन रक्खी गयी और उसकी चुस्कियाँ लेते-लेते ही उनकी भूख लौट आयी। वे लोग मकान के पीछेवाले हिस्से में थे। सामनेवाले हिस्से में सैनिक और ठेला चलानेवाले और परदेशी खाना खाते थे। सामने और पीछे वाले हिस्सों के बीच एक बड़ा कमरा था। पीछेवाला हिस्सा ठण्डा और सायेदार था और गो कभी इस बात का साफ़-साफ़ खुलासा नहीं किया गया और न इस पर उतना ज़ोर ही दिया गया तब भी यह बात एक प्रकार से स्वीकृत ही थी कि सिर्फ़ बड़े-बड़े सरदारों और अमीर-उमरा को ही यहाँ पर खाना खिलवाया जाता है। इस कारण वह जगह और भरी रहती थी। वहाँ पर लोगों के कम होने की बात तो अलग ही ठहरी, क्योंकि बहुत से सरदार व्यापारी थे

और अपने व्यापार के सिलसिले में सफर किया करते थे। वे कारखानेदार थे, सौदागर थे, कमीशन के व्यापारी थे और गुलामों का रोज़गार करते थे और उन सब के लिए वही जगह थी, मगर यह तो अपना घर नहीं, एक सराय थी। इसके साथ ही यह भी था कि कुछ दिनों से ये सरदार लोग उच्चकुलवालों के तौर तरीक़ों की नकल करने लगे थे और कम शोर मचाते थे, लोगों को कम हैरान करते थे और ख़ामोश होकर बैठते थे।

केयस ने भुनी हुई ठण्डी बतख़ और बर्फ़ पड़ा हुआ सन्तरे का रस लाने का आदेश दिया और जितनी देर मे खाना आया उतनी देर वह उस नाटक के बारे में बात करता रहा जिसका हाल में ही रोम में उद्घाटन हुआ था। यह यूनानियों की भद्दी नक़ल पर, दूसरे बहुत से नाटकों की तरह एक बड़ा कृत्रिम सा सुखान्त नाटक था।

इसके कथानक का सम्बन्ध एक कुरूप, कुत्सित स्त्री से था जिसने देवताओं से यह समझौता किया था कि अगर वे उसको एक दिन के लिए सुन्दरी बना दें तो वह उन्हें अपने पति का हृदय ला देगी। पति किसी देवताओं की स्त्री के संग सो रहा था और इस उलझे हुए भोंडे कथानक का आधार प्रतिशोध की भावना था। कम-से-कम हेलेना का उसके सम्बन्ध में यही विचार था मगर केयस इससे सहमत न था। उसका विचार था कि अपने छिछलेपन के बावजूद नाटक के कुछ स्थल अच्छे बन पड़े थे।

क्लॉदिया ने सिर्फ़ इतना कहा—मुझे नाटक अच्छा लगा।

केयस मुस्कराया और बोला—मै समझता हूँ हमारे संग गड़बड़ी यह है कि हम इस चीज़ के बारे में ज़्यादा परेशान रहते हैं कि नाटक क्या कहना चाहता है और यह नहीं कि कैसे कहता है। जहाँ तक मेरी बात है मैं तो मनो-रञ्जन के लिए थियेटर देखने जाता हूँ, इसलिए मेरी दृष्टि तो इस पर रहती है कि काम में पटुता है या नहीं। अगर जीवन और मृत्यु का नाटक देखना हो तो एरीना में जाना चाहिए और वहाँ दो ग्लैडिएटरों को एक दूसरे का काम तमाम करते देखना चाहिए। मगर मैंने देखा है कि इन तमाशों में जानेवाले लोग अक्सर कुछ ख़ास अक्लवाले या गम्भीर नहीं होते।

हेलेना ने आपत्ति करते हुए कहा—तुम बुरी रचना की सफ़ाई दे रहे हो।

—ज़रा भी नहीं। मेरा तो यह कहना है कि थियेटर में इस बात का विशेष महत्व ही नहीं कि रचना किस कोटि की है। किसी यूनानी लेखक को भाड़े पर रख लेना पालकी ढोनेवाले को रखने से भी ज़्यादा सस्ता है और मैं उन लोगों में नहीं जो यूनानियों के कसीदे गाते हैं।

अपनी यह आख़िरी बात कहते समय केयस को मेज़ के पास खड़े हुए एक आदमी का ध्यान आया। बाक़ी मेज़ें भर चुकी थीं और यह व्यक्ति, जो शायद

किसी चीज़ का व्यापारी था, कुछ परेशान सा खड़ा था कि बाक़ी लोगों के साथ खाने में शरीक हो या न हो।

उसने कहा—मैं बस दो-एक निवाले खाऊँगा और चलूँगा। आपको मेरे बैठने पर आपत्ति तो नहीं?

वह एक लम्बा-तगड़ा गठीले बदन का आदमी था और स्पष्ट ही समृद्ध भी था क्योंकि उसके कपड़े क़ीमती थे, और वह किसी के प्रति कोई सम्मान भी न दिखलाता था और इन लोगों के प्रति उसका आचरण जो कुछ-कुछ संभ्रमपूर्ण था, उसके पीछे स्पष्ट ही इन नौजवानों के खान्दान और रुतबे का हाथ था। पुराने ज़माने में सेना के सरदारों का जागीरदारों के प्रति ऐसा दृष्टिकोण न था, यह तो जब वे श्रेणी के रूप मे बहुत धनाढ्य हो गये तब उन्हें पता चला कि कुलीनता ही एक ऐसी चीज़ है जिसको मोल लेना बहुत कठिन होता है और तब उस चीज़ की क़ीमत बढ़ गयी। अपने बहुत से मित्रों की तरह केयस भी अक्सर कहा करता था कि देखो ये लोग जनता की बातें तो बहुत बढ़-बढ़कर करते हैं मगर श्रेणी के रूप मे उनकी वासना सदा ऊपर उठने की होती है।

—मेरा नाम केयस मार्कस सेन्वियस है—सरदार ने कहा—आपत्ति हो तो कहने में कोई संकोच न करें।

हेलेना ने उत्तर दिया—बैठ जाइए।

केयस ने अपना और उन लड़कियों का परिचय दिया और उस व्यक्ति पर इसकी जो प्रतिक्रिया हुई, उसको देखकर केयस को खुशी हुई।

—आपके परिवार से मेरा कुछ लेन-देन रहा है, सरदार ने कहा।

—लेन-देन ?

—हाँ, यही कुछ मवेशियों का। मेरा सॉसेज बनाने का कारखाना है। मेरा एक कारख़ाना रोम मे है और दूसरा तारासीना में, जहाँ से मैं अभी चला आ रहा हूँ। अगर आपने सॉसेज खाया है तो समझ लीजिए कि वह मेरा बनाया हुआ सॉसेज था।

केयस मुस्कराया। वह सोच रहा था, मुझे पूरा यक़ीन है कि इसे मुझसे घृणा है। ज़रा इसकी शकल तो देखो। इसे मुझसे घृणा है मगर तब भी यहाँ बैठना इसे अच्छा लग रहा है। कैसे सुअर होते हैं ये लोग!

सेन्वियस ने जैसे उसके मन के भाव को पढ़ लिया। बोला—सुअरों का लेन-देन।

—हमें आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई और हम आपकी शुभाकांक्षाएँ अपने पिता के पास पहुँचा देंगे, हेलेना ने कोमल स्वर में कहा। वह बड़े मीठे ढंग से सेन्वियस को देखकर मुस्करायी और उसने भी हेलेना को कुछ नयी आँखों

से देखा, मानों कह रहा हो—हाँ तो प्रिय, मूलतः हो तुम भी स्त्री ही. ऊँचा कुल तो बाद की बात है। केयस ने इस चीज़ को यों पढ़ा—अरे कुतिया, कैसा लगेगा तुझे मेरे संग सोना ? दोनों एक दूसरे को देखकर मुस्कराये और उस वक्त केयस को ऐसा लगा कि जैसे वह उस आदमी का क़त्ल कर सकता है मगर उससे भी ज़्यादा नफरत उसे ख़ुद अपनी बहन पर आ रही थी।

सेन्वियस ने कहा—मैं आपकी बातचीत में विघ्न नहीं डालना चाहता था। आप आज़ादी से अपनी बातचीत जारी रक्खें।

—हम लोग एक ऊबा देनेवाले नाटक के बारे में ऊबा देनेवाली बातें कर रहे थे।

फिर खाना आया और वे लोग खाने लगे। एकाएक क्लॉदिया बतख का एक टुकड़ा अपने मुंह के पास आधे रास्ते ले जाकर रुक गयी और उसने एक बात कही जो आगे चलकर केयस को बहुत आश्चर्यजनक लगी।

—उन निशानियों को देखकर आप काफ़ी परेशान हुए होंगे ?

—निशानियाँ ? कैसी निशानियाँ ?

—वही टिकटियाँ।

—मगर मैं क्यों परेशान होने लगा ?

—इतने ढेर से ताज़े गोश्त की ऐसी बर्बादी, क्लॉदिया ने बहुत सीधे-सादे शांत ढंग से बात कही, कुछ ऐसे नहीं कि जैसे कोई बड़े मार्के की बात कह रही हो बल्कि यों ही, बड़े शान्त भाव से और फिर अपनी बतख़ खाने लगी। केयस को अपने ऊपर बड़ा ज़ोर लगाना पड़ा वर्ना उसे तो इतनी ज़ोर से हँसी आ रही थी कि कुछ न पूछो और सेन्वियस का चेहरा तो पहले लाल और फिर सफ़ेद हो गया। मगर क्लॉदिया तो अपने खाने में लगी रही, उसे इस बात का ख़याल ही नहीं आया कि उसने क्या कर डाला है। हेलेना को अलबत्ता ऐसा महसूस हुआ कि उस सासेजवाले में साधारण से अधिक कठोर कोई चीज़ है और उसके जवाब की प्रत्याशा में उसका बदन चुनचुनाने लगा। वह चाहती थी कि वह आदमी पलटकर वार करे और उसे खुशी हुई जबकि उसने ऐसा ही किया।

सेन्वियस ने कहा—परेशान ठीक शब्द नहीं है। मुझे बर्बादी नापसन्द है।

क्लॉदिया ने बर्फ़ में रक्खी हुई नारंगी को तोड़ते और उसकी फांकों को बड़ी नज़ाकत से अपने ओठों में दबाते हुए कहा—बर्बादी !

क्लॉदिया की बात से कुछ लोगों के मन में करुणा जगी और थोड़े से लोगों के मन में क्रोध। उससे आगे देख सकने के लिए असाधारण मेधावी व्यक्ति की ज़रूरत थी।

मार्कस सेन्वियस ने अपनी बात साफ़ करते हुए कहा—स्पार्टकस के वे आदमी अच्छे कसीले लोग थे, काफ़ी हृष्ट-पुष्ट, और खाने को भी उन्हें अच्छा मिलता था। मान लीजिए कि प्रत्येक का औसत वज़न एक सौ पचास पौण्ड था। ऐसे छः हज़ार से ज़्यादा लोग भुस भरी हुई चिड़ियों की तरह इन टिकटियों पर टँगे हुए हैं। इसका मतलब हुआ नौ लाख पौण्ड ताज़ा गोश्त—अब न सही पर तब तो ताज़ा था।

उसकी बात सुनकर हेलेना ने सोचा—अरे नहीं, उसका यह मतलब हरगिज़ नहीं हो सकता। उसके सारे शरीर में अब चुनचुनाहट सी हो रही थी मगर क्लॉदिया, जो बदस्तूर बर्फ़ में रखी हुई नारंगी खाये जा रही थी, जानती थी कि उस आदमी का मतलब ठीक यही था और केयस ने पूछा—आपने बोली दी क्यों नहीं ?

—मैंने दी थी।

—तो क्या वे बेचना न चाहते थे ?

—मैंने ढाई लाख पौण्ड तो ख़रीदा भी।

केयस की समझ में नहीं आया कि वह आदमी क्या कहना चाहता है और वह सोचने लगा—वह सिर्फ़ हमें चौंकाना चाहता है। क्लॉदिया ने जो बात कही थी उसका वह अपने गन्दे वीभत्स ढंग से बदला चुका रहा है। बहरहाल उसकी बात में सच्चाई का जो अंश था उसको हेलेना ने देखा और केयस को यह जानकर सन्तोष हुआ कि आख़िरकार कोई बात उसको लगी तो, वर्ना उसकी तो ऐसी मोटी खाल थी कि उस पर किसी चीज़ का कोई असर ही नहीं पड़ता था।

क्लॉदिया ने धीरे से कहा—ढाई लाख पौण्ड, आदमी का ?

—नहीं, औज़ारों का, उस ज़ोरदार नौजवान दार्शनिक सिसेरो के शब्दों में औज़ारों का, सॉसेज के कारखानेवाले ने ठीक-ठीक, साफ़-साफ़ बात कही—बेकार औज़ार। मैंने उन्हें भूना, उनका क़ीमा बनाया और सुअर के गोश्त, मसाले और नमक के साथ मिला दिया। आधा चला गया गॉल, आधा मिस्र और दाम बिलकुल ठीक।

—मेरा ख़याल है आपका मज़ाक़ किसी को जमा नहीं, केयस ने बुदबुदाकर कहा। वह अभी बहुत कच्ची उम्र का नौजवान था और उस सॉसेज के कारखानेवाले के अच्छी तरह पके हुए, प्रौढ़ तीखेपन को पचा सकना उसके लिए मुश्किल था। वह सरदार जिन्दगी भर क्लॉदिया की ओर से आये हुए अपमान को न भूलेगा और इसके लिए वह केयस को दोषी ठहरायेगा क्योंकि उसने वहाँ उपस्थित रहने की भूल की थी।

सेन्वियस ने बहुत साधारण ढंग से कहा जैसे कोई ख़ास बात न हो—मैं

मज़ाक़ करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। इन देवीजी ने एक प्रश्न किया और मैंने उसका उत्तर दिया। मैंने साँसेज बनाने के लिए ढाई लाख पौण्ड गुलाम ख़रीदे।

हेलेना ने कहा—मैंने अपनी ज़िन्दगी में यही सबसे भयानक और घिनौनी बात सुनी। महाशय, आपकी स्वाभाविक असभ्यता ने कुछ अजीब ही रंग पकड़ लिया है!

सरदार उठा और उसने बारी-बारी से उन लोगों को देखा और बोला—मुझे माफ़ कीजिएगा, और केयस से कहा, अपने चचा सीलियस से पूछिएगा, यह सौदा उन्हीं के ज़रिये हुआ था और इसमें उन्होंने अपने लिए भी अच्छे ख़ासे दो पैसे बनाये थे!

फिर वह चला गया। क्लॉदिया अपनी बर्फ़ में रक्खी हुई नारंगी इत्मीनान से खाती रही, सिर्फ़ इतना कहने के लिए वह एक बार रुकी—कैसा बेहूदा आदमी निकला!

—मगर तब भी बात वह सच कह रहा था, हेलेना ने कहा।

—क्या?

—सच तो कह ही रहा था। तुम क्यों इस बात से इतना चौंक रही हो।

केयस ने कहा—हमीं लोगों को सुनाने के लिए उसने यह भद्दा झूठ गढ़ा था।

हेलेना ने कहा—प्यारे भाई, हम दोनों में बस यह अन्तर है कि मैं समझ जाती हूँ कि कब कोई आदमी सच बात कह रहा है।

क्लॉदिया हमेशा से ज़्यादा सफ़ेद हो गयी। वह उठी, लोगों से इजाज़त ली और राजसी शान से विश्राम-कक्ष की ओर चली। हेलेना जैसे मन-ही-मन थोड़ा सा मुस्करायी और केयस ने कहा—तुमको क्या कभी किसी बात से चोट नहीं लगती हेलेना!

—क्यों लगे! चोट लगने की इसमें कौन सी बात है!

—इसके बाद कम से कम मैं तो फिर कभी सॉसेज न खा सकूँगा।

—मैंने कभी खाया ही नहीं, हेलेना ने कहा।

५

उसी रोज़ तीसरे पहर जब वे लोग सड़क पर बढ़े जा रहे थे उनकी मुलाक़ात सिरिया के रहनेवाले, अम्बर के एक सौदागर से हुई जिसका नाम मुज़ेल शबाल था। उसकी क़रीने से फेरी गयी दाढ़ी खुशबूदार तेल से चमक रही थी और उसका लम्बा बेलबूटेदार चोग़ा उसके बाँके सफ़ेद घोड़े के दोनों ओर झूल रहा था और उसकी उँगलियों पर बहुमूल्य हीरे-जवाहरात चमक

रहे थे। उसके पीछे एक दर्जन गुलाम दुलकी चाल से चले आ रहे थे। उनमें मिस्री भी थे और बद्दू भी और उनमें से हर एक के सिर पर एक बड़ा सा गट्ठर था। रोम के सारे इलाक़े में सड़क एक ऐसी चीज़ थी जो सब लोगों को बराबरी की सतह पर लाकर खड़ा कर देती थी। लिहाज़ा केयस ने अपने आपको इस दुनियादार सौदागर से एकतरफ़ा बातचीत में लगा हुआ पाया, एकतरफ़ा इसलिए कि यह नौजवान बातचीत में केवल इतना योग दे रहा था कि बीच-बीच में सिर हिला देता था। शबाल किसी भी रोमन से मिलकर अपने को बहुत सम्मानित अनुभव करता था क्योंकि वह रोमनों का, यों तो सभी रोमनों का मगर विशेषकर केयस जैसे अभिजात कुलोत्पन्न प्रतिष्ठित रोमनों का बहुत बड़ा प्रशंसक था। कुछ पूरब वाले थे जो रोमनों की कई बातों को समझ न पाते थे। उदाहरण के लिए उनकी स्त्रियाँ जिस आज़ादी से घूमती-फिरती थीं, वह उनकी समझ में न आता था। मगर शबाल ऐसे लोगों में न था। किसी रोमन को अगर खरोंचो तो लोहे की एक रग निकल आयेगी और उसका प्रमाण थीं रास्ते भर में लगी हुई ये निशानियां और सौदागर को इस बात की बड़ी खुशी थी कि उसके गुलाम रास्ते के उन सलीबों को देखकर आप-से-आप कुछ सबक़ सीखे जा रहे थे।

मुज़ेल शबाल ने अपनी धाराप्रवाह मगर कुछ विचित्र से उच्चारण की लैटिन में कहा—श्रीमान्, आपको शायद विश्वास भी न आयेगा कि मेरे देश में ऐसे लोग थे जिन्हें इस बात की पूरी उम्मीद थी कि रोम स्पार्टकस के हाथ में चला जायगा और इसी का परिणाम था कि खुद हमारे गुलामों ने एक छोटा-मोटा विद्रोह किया था जिसे हमको सख्त कार्रवाई से कुचलना पड़ा। मैंने उनसे कहा, तुम लोग रोम को ज़रा भी नहीं जानते। तुम रोम को पिछले ज़माने के संग या जो कुछ तुम अपने इर्द-गिर्द देखते हो उसके संग बराबरी में बिठालकर देखते हो। तुम भूल जाते हो कि रोम इस पृथ्वी के लिए एक नयी चीज़ है। आप ही कहें मैं रोम का वर्णन उनसे कैसे करूं? उदाहरण के लिए मैं एक शब्द कहता हूँ ग्रैविटास। अब इसको वे लोग क्या समझें? और वही क्या, जिसने भी रोम को खुद अपनी आँखों से नहीं देखा और रोम के नागरिकों से मिलने और उनसे बात करने का जिसे सौभाग्य नहीं हुआ, वह उस शब्द का मतलब नहीं समझ सकता। ग्रैविटास—यानी गम्भीर दायित्वपूर्ण लोग, गम्भीर होना और जीवन में गम्भीर उद्देश्य रखना। लेविटास का मतलब हम समझते हैं, यही तो हमारा अभिशाप है, हम चीज़ों के संग खिलवाड़ करते हैं, इन्द्रिय भोग के भूखे रहते हैं। रोमन इस क़िस्म का कोई खिलवाड़ नहीं करता, वह सद्गुणों का अन्वेषक होता है। उद्योग, अनुशासन, मितव्ययिता, दया—ये शब्द ही मेरे लिए रोम हैं। रोम की सड़कों

और रोम के शासन की शक्ति और व्यवस्था का यही रहस्य है। किन्तु श्रीमान् ऐसा क्यों होता है ? जहाँ तक मेरी बात है मैं दण्ड की इन निशानियों को बहुत गम्भीर सन्तोष की दृष्टि से देखता हूँ। रोम कभी किसी बात में कोई खिलवाड़ नहीं करता। उसके पास अपराध के योग्य दण्ड की व्यवस्था है। और वही तो रोम का न्याय है। यह स्पार्टकस की धृष्ठता थी कि उसने उस सब को चुनौती दी जो रोम के अन्दर श्रेष्ठतम था। उसने रोम को लूटपाट, हत्या और अराजकता देनी चाही और रोम तो व्यवस्था और अनुशासन का नाम है। फलतः रोम ने स्पार्टकस को अस्वीकार कर दिया....

केयस सुनता रहा, सुनता रहा और आखिरकार उसकी उकताहट और वितृष्णा कुछ-न-कुछ व्यक्त हो ही गयी। और तब सिरिया के उस सौदागर ने बहुत बार झुक-झुककर माफ़ी मागी और हेलेना और क्लॉदिया दोनों को एक-एक अम्बर का हार भेंट किया। उसने उनको, उनके परिवारों को और उनके जितने परिचित व्यापारी हो सकते थे सब को अपना सलाम दिया और वहाँ से चल पड़ा।

केयस ने कहा—खुदा का शुक्र।

हेलेना मुस्करायी—काम का आदमी है !

६

उसी रोज़ तीसरे पहर ज़रा और देर से जब कि वे लोग ऐपियन मार्ग से मुड़कर उस छोटी सड़क में दाखिल होने ही वाले थे जो कि गाँव की उस हवेली को जाता था जहाँ उनको रात गुज़ारनी तभी एक ऐसी घटना घटी जिसने उनकी यात्रा की एकरसता को भंग किया। तीसरी सेना का एक दस्ता जिसका काम सड़क की गश्त लगाना था, रास्ते की एक चौकी में आराम कर रहा था। स्कूटा, पीला और कैसिस गालीई छोटे-छोटे तिकोने तम्बुओं की कतारों मे भरे हुए थे। उनके साथ-ही-साथ छोटे-छोटे भालों से लगी हुई बड़ी-बड़ी ढालें भी रक्खी हुई थीं और हर ढेर में से लोहे के तीन फ़ौजी टोप झांक रहे थे। उनको देखकर बिल्कुल ऐसा लगता था कि जैसे बखार मे अनाज के पूले रक्खे हों। सब सैनिक छप्पर की छाया में घुस-पिलकर बैठे हुए थे और बराबर बियर के गिलास पर गिलास चढ़ाये जा रहे थे। वे लकड़ी के तसलानुमा अधसेरे कटोरों से बियर पी रहे थे। वे अच्छे तगड़े, देखने में कठोर, कांसे के से बने शरीरों के लोग थे जिनके पसीने से भीगे हुए चमड़े के पैण्टों और जर्किनों से तेज़ बू निकल रही थी। उनकी आवाज़ें बुलन्द थीं और मुँह में गालियाँ ही गालियाँ भरी

हुई थीं और इस बात का उन्हें खूब खयाल था कि राजमार्ग पर झूलती हुई वे दण्ड की निशानियाँ उनका सबसे ताज़ा कारनामा हैं।

केयस और उसके संग की वे लड़कियाँ उनको देखने के लिए रुकीं तो कप्तान एक हाथ में शराब का प्याला लिये और दूसरे हाथ से केयस का अभिवादन करते हुए तम्बू से बाहर आ गया। उसके अभिवादन में और ज़्यादा उत्सुकता इसलिए थी कि केयस के संग दो बड़ी सुन्दर युवतियाँ थीं।

वह केयस का एक बहुत पुराना मित्र था। नौजवान आदमी था, नाम सेलस क्विण्टियस ब्रूटस; वह पेशेवर सिपाही था और देखने में बहुत ही बाँका, छबीला, गबरू जवान। हेलेना को वह पहले ही से जानता था और क्लॉदिया से मिलकर उसे बड़ी खुशी हुई और उसने बिना झिझके आनन-फानन उन लोगों से पूछ लिया कि हमारे जवानों के बारे में आप का क्या खयाल है?

केयस ने कहा—कितने ज़ोर-ज़ोर से बोलते हैं सब और गन्दे भी कितने हैं!

—सो तो हैं, मगर अच्छे हैं।

क्लॉदिया ने कहा—ये लोग साफ़ हों तो मुझे फिर किसी चीज़ का कोई डर नहीं, मगर दूसरे लोग नहीं, यही।

—और अब ये लोग आप के गुलाम हैं और आपके साथ रहेंगे। कहाँ जा रही हैं? ब्रूटस ने बहुत बांकपन से जवाब दिया।

केयस ने कहा—आज रात हम लोग विला सलारिया में ठहर रहे हैं और अगर तुम्हें याद हो, यह सड़क यहाँ से क़रीब दो मील पर फूटती है।

—तब दो मील तक तुमको दुनिया में किसी चीज़ का डर न होना चाहिए, ब्रूटस ज़ोर से बोला और फिर उसने हेलेना से पूछा, क्या आपने कभी फ़ौजी गार्ड आफ़ ऑनर के साथ मार्च किया है?

—मैं न आज इतनी महत्वपूर्ण हूँ और न पहले कभी रही।

—इसीलिए तो आप मेरे लिए इतनी महत्वपूर्ण हैं, उस जवान अफ़सर ने कहा, बस मुझे एक मौक़ा दीजिए और देखिए मैं उन्हें आपके पैरों में डाल दूँगा। इसे आप अपनी ही कम्पनी समझें।

—वे आख़िरी चीज़ होंगे जिन्हें मैं अपने पैरों में पड़ा देखने की कामना करूंगी, हेलेना ने आपत्ति की।

ब्रूसट ने अपनी शराब ख़तम की और प्याला दरवाज़े पर खड़े हुए गुलाम की तरफ़ फेंक दिया और अपने गले में पड़ी हुई छोटी सी चाँदी की सीटी बजायी। एक अजीब भयानक और तेज़ आवाज़ हुई जिसे सुनकर सिपाहियों ने जल्दी-जल्दी अपनी बियर गले के नीचे उतारी, मुँह ही-मुँह में कुछ भुनभुनाये और उधर को दौड़े जहाँ उनके भाले, ढालें और सिर के टोप रक्खे हुए थे। ब्रूटस बराबर सीटी बजाये जा रहा था और ऐसा लगता था कि जैसे सीटी का स्वर

एक लड़ी में गुँथ गया हो तीक्ष्ण और आदेशपूर्ण। सीटी बजने की फ़ौजी दस्ते के लोगों में ऐसी तत्काल और सीधी प्रतिक्रिया होती थी कि जैसे उनके स्नायुओं पर ही वे स्वर बजाये जा रहे हों। वे टोलियों में बँटकर क़तार में खड़े हुए, घूमे और फिर अलग हुए और फिर सड़क के अग़ल-बग़ल दो सफ़ों में खड़े हो गये। जिस अनुशासित ढंग से उन्होंने ये सारे काम किये उसे देखकर आश्चर्य होता था। लड़कियाँ प्रशंसा में ताली बजाने लगीं और केयस को भी उस कम्पनी के अनुशासन और व्यवस्था की प्रशंसा करनी ही पड़ी, बावजूद इसके कि वह अपने दोस्त की हरकतों से काफ़ी खीझा हुआ था।

उसने पूछा—क्या वे लड़ने में भी ऐसे ही तेज़ हैं....?

—स्पार्टकस से पूछो, ब्रूटस ने कहा और क्लॉदिया चिल्लायी, हुआ था। बहुत खूब!

ब्रूटस ने झुककर क्लॉदिया को सलाम किया और वह हँसने लगी। क्लॉदिया के लिए ऐसा करना कुछ अनोखी सी ही बात थी मगर आज केयस को उसके अन्दर बहुत सी अनोखी बातें दिखलायी दे रही थीं। उसके गालों पर रंग की दमक थी, उसकी आँखें फ़ौजी दस्ते की कवायद को देखकर उल्लास से चमक रही थीं। जिस तरह वह ब्रूटस से बात करने लगी उसको देखकर केयस को उतनी जलन न हुई जितना कि आश्चर्य। उस वक़्त ब्रूटस दोनों पालकियों के बीच में खड़ा हो गया था और सारे जुलूस का संचालन कर रहा था।

—इसके अलावा वे और क्या कर सकते हैं? क्लॉदिया ने पूछा।

—वे मार्च कर सकते हैं, लड़ सकते हैं, गाली बक सकते हैं—

—जान भी ले सकते हैं?

—हाँ, क्यों नहीं। खूनी तो वे हैं ही। क्यों, देखने में नहीं लगते क्या?

क्लॉदिया ने कहा—मुझे तो ऐसे ही अच्छे लगते हैं।

ब्रूटस ने बहुत शान्ति से उसके चेहरे का अध्ययन किया और फिर धीरे से जवाब दिया—झूठ नहीं कहतीं तुम, मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ कि तुम उनको पसन्द करती हो।

—इसके अलावा और भी कुछ?

ब्रूटस ने पूछा—इसके अलावा आप और चाहती क्या हैं? आप उनका गाना सुनना चाहती हैं? फिर उसने चीख़कर आदेश दिया—गाने की लय पर मार्च करो! और सिपाहियों की गहरी भारी आवाज़ें गाने लगीं—

गगन, धरा, पथ, शिलाफलक!
लोहा काटे हड्डी तक!

यह तुकबन्दी उनके कण्ठों से अजीब भर्रायी हुई और मोटी भद्दी आवाज़

में निकल रही थी और उनके शब्दों को समझना कठिन था।—इसका मतलब क्या है?—हेलेना ने जानना चाहा।

—कुछ ख़ास नहीं। बस यह समझिए कि मार्च करने की एक लय है। और भी सैकड़ों हैं और किसी का कोई मतलब नहीं। गगन धरा पथ शिलाफलक—कोई ख़ास बात नहीं मगर हाँ, इससे वे मार्च अच्छा करते हैं। यह लय गुलाम युद्ध में से निकली थी। उनमें कुछ ऐसी भी हैं जो स्त्रियों के कानों के लिए नहीं बनी हैं।

—मेरे कानों के लिए बनी हैं, क्लॉदिया ने कहा।

—उन्हें मैं तुम्हारे कान में कह दूँगा, कहकर वह जवान अफ़सर मुस्कराया और चलते-चलते उसकी ओर झुका। फिर वह सीधे तनकर खड़ा हो गया और क्लॉदिया ने सिर घुमाकर निगाह जमाकर उसको देखा। एक बार फिर सड़क पर सलीबों की क़तारें ही रह गयीं। और उन पर लटके हुए शरीर जो देखने में ऐसे लगते थे जैसे किसी ने उन्हें मनकों की तरह एक माला में पिरो दिया हो। ब्रूटस ने उनकी ओर इशारा करके हाथ हिलाया और कहा—आप क्या चाहती थीं कि यह काम बहुत नज़ाकत से हो? यह उन लोगों का काम है। मेरे दस्ते ने उनमें से आठ सौ को इन्हीं पर लटकाया। मेरे आदमियों में नफ़ासत नहीं है, वो तो मज़बूत हैं, सख़्त हैं, क़ातिल हैं।

—और क्या इसी से वे और अच्छे सिपाही हो जाते हैं?—हेलेना ने पूछा।

—लोगों का कहना तो यही है, क्लॉदिया ने कहा, उनमें से एक को यहाँ बुलाओ।

—क्यों?

—क्योंकि मैं चाहती हूँ।

—बहुत अच्छा, उसने कन्धा उचकाया और चीख़ा, सेक्सटस यहाँ आओ!

एक सैनिक क़तार में से निकलकर डबल मार्च करता हुआ पालकियों के सामने और उनके बीच में से होता हुआ आया और सलूट करके अफ़सर के सामने खड़ा हो गया। क्लॉदिया उठ बैठी। उसने अपनी बाँहें मोड़ लीं और ग़ौर से सैनिक को देखने लगी। वह एक मझोले क़द का, ताँबे के रंग का तगड़ा आदमी था जिसके बदन भर में मांसपेशियाँ मछलियों की तरह निकली हुई थीं। उसकी नंगी बाँहें, गर्दन, गला और चेहरा इन सब का रंग धूप से झँवा गया था। उसका चेहरा नुकीला और गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। उसके चेहरे की जिल्द अच्छी कसी हुई थी और चेहरा पसीने से नम हो रहा था। वह लोहे का टोप लगाये था और उसकी बड़ी सी, चार

.फ़ुट लम्बी ढाल उसकी पीठ पर पड़े फ़ौजी थैले से लगी झूल रही थी। उसके एक हाथ में पिलम था। पिलम लकड़ी का बना छः फ़ुटा बल्लम होता है, दो इञ्च मोटा, और उसके एक सिरे पर मोटा सा अठारह इञ्च लम्बा, डरावना सा तिकोना फल लगा होता है। वह एक छोटी मगर भारी स्पेनिश तलवार भी लगाये हुए था और उसकी चमड़े की जर्किन के ऊपर उसके सीने पर लोहे के तीन पत्तर बंधे हुए थे और दोनों कन्धों पर भी वैसे ही तीन-तीन पत्तर। इनके अलावा लोहे के तीन और पत्तर उसकी कमर से लटक रहे थे और उसके चलते वक़्त झूलते थे और आ आकर उसकी टाँगों से टकराते थे। वह चमड़े के पैण्ट और ऊँचे-ऊँचे चमड़े के जूते पहने हुए था और लोहे और लकड़ी के उस ज़बर्दस्त वज़न के बावजूद वह बड़े आराम से चल रहा था और उसे देखकर कोई न कह सकता था कि इसे ज़रा भी ज़ोर लगाना पड़ रहा है। जो लोहा वह ढो रहा था उसमें अच्छी तरह तेल दिया हुआ था, उसी तरह जैसे उसका ज़िरह बख़्तर भी अच्छी तरह तेल दिया हुआ था, और इस तरह तेल पसीने और चमड़े की अलग-अलग बदबू मिलकर एक बदबू हो गयी थी जो कि एक व्यवसाय की बदबू थी, एक शक्ति की, एक यन्त्र की।

केयस उन लोगों के पीछे-पीछे घोड़े पर चला आ रहा था और अपनी जगह से उसे क्लोदिया के चेहरे की पार्श्वछवि दिखलाई दे रही थी, ओंठ खुले हुए, ज़बान ओंठों से टकराती हुई और आँखें उस सैनिक पर गड़ी हुई।

क्लादिया ने ब्रूटस से धीरे से कहा—मैं चाहती हूँ कि यह आदमी मेरी पालकी के साथ चले।

ब्रूटस ने कन्धे उचकाकर अपनी सहमति व्यक्त की और उस सैनिक को कोई आदेश दिया। आदेश पाकर एक बहुत हलकी सी मुस्कराहट सैनिक के चेहरे पर आयी और वह वहीं रुककर क्लोदिया के बग़ल-बग़ल चलने लगा। केवल एक बार उसकी आँखें क्लोदिया पर ठहरीं और फिर बस वह आगे की ओर आँख जमाये देखता रहा। क्लादिया ने हाथ बढ़ाकर उसकी जाँघ को छुआ, बस छुआ, उस जगह पर जहाँ चमड़े के नीचे जाँघ की मांसपेशियाँ सिमटी हुई थीं, और फिर ब्रूटस से बोली—इससे कहो कि यहाँ से चला जाय। बदबू करता है। बहुत गन्दा है।

हेलेना का चेहरा एकदम काठ हो रहा था। ब्रूटस ने फिर अपने कन्धे उचकाये और सैनिक को आदेश दिया कि वह जाकर अपनी क़तार में मिल जाय।

७

विला सलारिया कुछ व्यंग्यात्मक सा ही नाम था क्योंकि वह उस समय की याद दिलाता था जब रोम के दक्षिण में उतनी ज़मीन नमक का एक

दलदल थी जिसमें मलेरिया ने अपना घर बना लिया था। मगर दलदल का यह हिस्सा काफ़ी दिन से ठीकठाक करके उपयोग में ले लिया गया था और वह निजी सड़क जो ऐपियन मार्ग से फूटती थी और बिला सलारिया को ले जाती थी, लगभग उतनी ही अच्छी बनी हुई थी जितना कि वह राजमार्ग। उस जागीर का मालिक ऐएटोनियस केयस, केयस और हेलेना की माँ की तरफ़ से उनका सम्बन्धी था, और यद्यपि गाँव का यह मकान उतना ठाठदार नहीं था जितने कि कुछ दूसरे मकान जो कि शहर के ज़्यादा क़रीब पड़ते थे मगर तब भी वह एक बड़ी जायदाद समझा जाता था और तमाम जागीरों में उसका एक ऊँचा स्थान था।

केयस और दोनों लड़कियाँ जब ऐपियन मार्ग से विला सलारिया वाली निजी सड़क पर आ गयीं तब भी अभी मकान तक पहुँचने से लिए उनको चार मील का रास्ता तय करना था। अन्तर उन्हें तत्काल पता चल गया, वहाँ की ज़मीन के चप्पे चप्पे की ज़बर्दस्त निगरानी और देखभाल की गयी थी। जंगल को काटकर पार्क की शकल दे दी गयी थी। पहाड़ के ढलवानों पर सीढ़ीनुमा खेत बने थे। उनमें से कुछ में अंगूर की बेलें लगी हुई थीं जिनकी अब इस बसन्त ऋतु में पहली-पहली कोपलें फूट ही रही थीं। दूसरे खेतों में जौ बोयी हुई थी और उसके अलावा और भी खेत थे जिनमें जैतून के पेड़ों की अनन्त क़तारें दिखायी दे रही थीं। जहाँ तक जौ की खेती की बात है उसका चलन अब रोज़बरोज़ कम होता जा रहा था और उसमें मुनाफ़ा भी अब उतना न रह गया था क्योंकि किसानों की छोटी-छोटी काश्तों की जगह अब बड़ी-बड़ी जागीरें लिये ले रही थीं। चारों तरफ़ खेतों को जिस तरह बिछाया गया था और जिस तरह संवार-निखारकर अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग चीजें उगायी गयी थीं, वह सिर्फ़ ऐसी ही हालत में मुमकिन भी था जब कि काम करनेवाले गुलामों की कभी कोई कमी न हो। और बार-बार ये तीनों नौजवान उन बनायी हुई खूबसूरत हरी-भरी ठण्डी गुफाओं को देखते थे जिनमें यूनानी मन्दिरों की छोटी-छोटी आकृतियाँ रक्खी हुई थीं। उनके अलावा उस जगह पर संगमरमर की बेञ्चें, स्वच्छ संगमरमर के फौवारे और सफेद पत्थर के रास्ते बने हुए थे जो उन छायाकुञ्जों को एक दूसरे से जोड़ते थे। इस समय गोधूलि की ठण्डी बेला थी और सूरज नीची-नीची पहाड़ियों के पीछे डूब रहा था और उस समय वहाँ का दृश्य परियों के देश का सा हो रहा था और क्लॉदिया, जो वहाँ पहले कभी नहीं आयी थी, मुग्ध होकर बार बार चिल्ला पड़ती थी। यह चीज़ 'नयी क्लॉदिया' के अनुरूप ही थी और केयस सोच रहा था कि कैसे एक नाज़ुक बल्कि रोगी सी युवती

दण्ड की उन निशानियों, उन सलीबों और उनसे झूलती हुई लाशों को देखकर एकाएक ऐसी फूल जैसी खिल उठी है।

इस वक्त मवेशी चरागाहों से वापिस घर ले आये जा रहे थे और गायों के गले में बंधी हुई घण्टियों की आवाज और ग्वाले की सिंगी की उदास पुकार बार-बार सुनायी देती थी। भेड़ चरानेवाले नौजवान थ्रेसियन और आर्मीनियन जो अपने गुप्तांगों को चमड़े से ढँकने के अलावा बाकी नंगे थे, जङ्गल में भागते हुए जानवरों को 'लगे लगे' कहते हुए दौड़ रहे थे। और उनको देखकर केयस हैरान था कि दोनों में से आदमियों के ज्यादा क़रीब कौन है, भेड़-बकरियाँ या ये गुलाम। और अनेकों बार की तरह इस वक्त भी केयस अपने मामा की इस सम्पत्ति के बारे में सोचने लगा। क़ानूनन् इन पुराने खान्दानी जागीरदारों के लिए कोई भी व्यवसाय मना था मगर ऐण्टोनियस केयस अपने बहुत से समकालीनों की तरह क़ानून को जञ्जीर के रूप में नहीं बल्कि एक लम्बे चोग़े के रूप में देखता था जिसके नीचे बहुत सी चीज़ें छिपाई जा सकती हैं और सचमुच उनके लिए क़ानून की स्थिति ऐसे एक चोग़े की सी ही थी। उसके बारे में मशहूर था कि उसने अपने दलालों के ज़रिये एक करोड़ से ज़्यादा सेस्टर्स सूद पर चला रक्खे थे और यह सूद बहुत बार सौ फ़ीसदी होता था। उसके बारे में यह भी बात मशहूर थी कि मिस्र के चौदह व्यापारी फ़र्मों में उसका हिस्सा था और उसी की तूती बोलती थी। इसके अलावा स्पेन की चाँदी की एक सबसे बड़ी खान के आधे हिस्से का भी वह मालिक था। गो कि यह बात सच है कि प्यूनिक युद्धों के बाद जो बड़ी बड़ी कम्पनियाँ उठ खड़ी हुई थीं उनके बोर्डों में केवल बड़े-बड़े सरदार और सेनापति ही बैठते थे तो भी ऐण्टोनियस केयस की इच्छाओं का पालन ये बोर्ड भी किया करते थे।

यह कहना मुश्किल था कि वह कितना अमीर है और गो कि विला सलारिया एक बहुत सुन्दर और सुरुचिपूर्ण जगह थी और उससे लगी हुई दस हज़ार एकड़ ज़मीन थी, जिस पर खेत थे, जंगल थे, तब भी उसी किसे भी तरह जागीरदारों की हवेलियों में सबसे बड़ी या सबसे शानदार हवेली नहीं कहा जा सकता था। पिछले कुछ दिनों से ये खान्दानी जागीरदार अपने ऐश्वर्य का बहुत प्रदर्शन करने लगे थे जैसे एरीना में लड़नेवालों के बड़े बड़े दंगल कराना, पचीसों तरह के खाने मेज़ पर लगाना और पूर्वी देशों के ढंग पर मनोरञ्जन की व्यवस्था करना। मगर ऐण्टोनियस केयस इस सबमें भी बहुत न रहता था। ऐण्टोनियस का दस्तरख़्वान अच्छा होता था और खाने की चीज़ें उस पर बहुत सी हुआ करती थीं मगर इस तरह के नफ़ीस खाने जैसे मोर का सीना, फुलसुंघनी की जीभ या लिबिया के चूहों की आंतें,

इनको अब भी यहाँ बुरी नज़र से देखा जाता था और परिवार की प्रणय-कथाओं का प्रदर्शन न होता था। स्वयं ऐण्टोनियस पुराने ढंग की आन-बान वाला रोमन था और केयस—जो अपने मामा का आदर तो करता था मगर विशेष पसंद न करता था—कभी उनकी मौजूदगी में आराम या इतमीनान न महसूस करता था।

कुछ अंशों में तो यह उन मामा के व्यक्तित्व के कारण था क्योंकि ऐंटोनियस केयस बहुत मिलनसार व्यक्ति न था। मगर इससे भी बड़ा कारण यह था कि अपने मामा से मिलने पर केयस को सदा यह अनुभव होता था कि जैसे वे अपने भांजे को तराजू में रखकर तौल रहे हों और जैसे इंगित से उसे बतला रहे हों कि उसमें और एक आदर्श रोमन युवक में कितना अन्तर है। उस समय रोमन युवक का यह आदर्श प्रस्तुत किया जाता था कि उसे सच्चरित्र होना चाहिए, आडम्बर से एकदम बचकर रहना चाहिए, अपने आपको नागरिक कर्तव्य के लिए समर्पित कर देना चाहिए, वीर सैनिक होना चाहिए और इसी प्रकार क्रमशः उन्नति करते रहना चाहिए, किसी साध्वी रोमन कन्या से विवाह करना चाहिए, ग्रैकस परिवार की तरह अच्छी बड़ी संख्या में सन्तानोत्पादन करना चाहिए और निःस्वार्थ भाव से योग्यतापूर्वक राज्य की सेवा करते हुए एक पद से दूसरे पद पर पहुँचते पहुँचते अन्ततः राजदूत बन जाना चाहिए जिसका आदर और सम्मान साधारण जनों से लेकर बड़े-बड़े धनी और कुलीन लोग तक करते हैं, और अपने आचार में सदा नीतियुक्त और न्याय-परायण रहना चाहिए—केयस सोचता था कि इस बात में बहुत सचाई नहीं है और पहले चाहे थोड़ी बहुत रही भी हो, अब तो उतनी भी नहीं है और जहाँ तक केयस की अपनी बात थी वह इस कसौटी पर खरे उतरनेवाले एक भी रोमन युवक को न जानता था। रोम के सामाजिक जीवन में केयस जिन नवयुवकों से घिरा हुआ था उनकी दिलचस्पियाँ और थीं। उनमें से कुछ ने अनगिनत नवयुवतियों पर विजय प्राप्त करने को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया था और दूसरे थे जो कच्ची उम्र में ही रुपये-पैसे के मर्ज में गिरफ़ार हो गये थे और बीस-पचीस साल की उम्र में ही तरह तरह के अवैध व्यवसायों में लगे हुए थे। इनके अलावा कुछ थे जो नगरपालिका के चक्कर लगाने में दक्षता प्राप्त कर रहे थे यानी वोट ख़रीदने और बेचने में, घूस देने में और इस धन्धे की सब भीतरी बातों को सीखने में, जिसे उनके पूर्वज इतनी योग्यतापूर्वक करते चले आये थे। इनके अलावा कुछ थे जिन्होंने भोजन को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया था, जो खूब खाते थे और जिन्हें अच्छे नफ़ीस खाने की बहुत अच्छी पहचान थी। इनके बाद बहुत ही थोड़े लोग बच जाते थे जो सेना में

जाते थे क्योंकि कुलीन घरानों के नवयुवकों के जीवन-लक्ष्य के रूप में सेना की लोकप्रियता दिनों-दिन घटती जा रही थी। केयस उस सबसे बड़े दल का ही एक सदस्य था जिसके जीवन का ध्येय अधिक से अधिक आराम और मस्ती में दिन काटना था। अतः केयस अपने आपको उस महान् प्रजातन्त्र का अगर अनिवार्य नहीं तो कम से कम एक निरीह नागरिक समझता था और इसलिए अपने मामा ऐंटोनियस की ओर से अपने प्रति जो एक मूक अभियोग बार-बार पाता था, वह उसको बुरा मालूम होता था। जहाँ तक केयस की बात थी, 'जियो और जीने दो' उसके समीप एक सभ्य और व्यावहारिक जीवन दर्शन था।

विला के चारों तरफ़ फैले हुए विराट् बाग़ और घास के मैदान में प्रवेश करते समय ये बातें उसके विचार में आयीं। बड़े-बड़े खलिहान, मवेशियों के बाड़े और गुलामों के रहने की खोलियाँ, जो सब कृषि के औद्योगिक आधार थे, सभी हवेली से अलग थे और उनका कोई भी संकेत, कुरूपता या संघर्ष का कोई हलका सा भी इंगित उस मकान की परिमार्जित शान्ति को न भंग कर सकता था। विला एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर बना हुआ था। वह एक बहुत बड़ा सा चौकोर मकान था जिसके बीच में एक आँगन और तालाब था। वह सफ़ेद पुता हुआ था और उस पर मौसम की मार खाये हुए लाल-लाल खपरे की छत पड़ी हुई थी। वह देखने में स्वयं भी असुन्दर न था। और उसकी सीधी-सीधी रेखाओं की कठोरता को हवेली के चारों तरफ लगे हुए ऊँचे-ऊँचे देवदार और झाऊ के पेड़ों की सुरुचिपूर्ण योजना भंग करती थी। उस स्थान की प्राकृतिक सजावट यूनानी शैली में की गयी थी। वहाँ पर बहुत सी फूल देनेवाली झाड़ियाँ लगी थीं जिन्हें छाँटकर तरह-तरह की शक्लें दे दी गयी थीं, दूब का चिकना सा फर्श बिछा था, रंगीन संगमरमर के ग्रीष्म-निकुञ्ज थे, मछलियों के लिए सफ़ेद संगमरमर के बड़े-बड़े तसले थे और परम्परा से चली आती हुई वन-वीथियाँ थीं जिनमें अप्सराओं और गन्धर्वों और मृगशावकों और देव-शिशुओं की मूर्तियाँ सुशोभित हो रही थीं। रोम के बाज़ारों में जहाँ भी यूनानी मूर्तिकारों और चित्रकारों की कलाकृतियाँ बिकती थीं, वहाँ ऐंटोनियस केयस ने उन्हें ऊँचे से ऊँचे दाम पर खरीदने का स्थायी निर्देश अपने आदमियों को दे रक्खा था। इस बात में वह कोई कृपणता न करता था—यद्यपि कहा यह जाता था कि उसके पास स्वयं अपनी कोई रुचि नहीं है और वह केवल पत्नी अपनी जूलिया के आदेश का पालन करता है। केयस भी इस बात को मानता था क्योंकि वह स्वयं सुरुचि सम्पन्न था और अपने मामा में उसको यह चीज़ न मिलती थी। इसमें सन्देह नहीं कि वहाँ पर विला सलारिया से अधिक वैभवपूर्ण भवन थे, उनमें कुछ एशियाई-मिस्री बादशाहों के जैसे

महल थे, लेकिन तब भी केयस को विला सलारिया से अधिक सुरुचिपूर्ण या सुन्दर परिवेशवाला कोई भी भवन वहाँ न दिखायी देता था। क्लोदिया उसकी इस बात से सहमत थी। जब वे फाटक में दाखिल होकर घर तक पहुँचनेवाले ईंट के बने मार्ग पर आये तो क्लोदिया ने आश्चर्य से एक लम्बी साँस खींची और हेलेना से कहा—यह तो ऐसी चीज़ है जिसकी मैंने कल्पना भी न की थी ! कि जैसे सीधे यूनानी पुराणों से उठाकर इसे यहाँ पर बिठाल दिया गयी हो।

हेलेना ने अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा—बड़ी सुशोभन जगह है।

ऐंटोनियस केयस की दोनों छोटी-छोटी लड़कियों ने इन लोगों को सबसे पहले देखा और इनका स्वागत करने के लिए दूब के फ़र्श पर होकर दौड़ीं। उनके पीछे-पीछे धीरे-धीरे, उचित गाम्भीर्य के साथ उनकी माँ जूलिया चली आ रही थी। जूलिया देखने में अच्छी, कुछ कम गोरी और स्थूल सी स्त्री थी। स्वयं ऐंटोनियस क्षण भर बाद घर के बाहर निकला। उसके पीछे पीछे तीन और लोग थे। अपने आचरण में वह अदब-कायदे का विशेष ध्यान रखता था और दूसरों से भी इसी बात की अपेक्षा रखता था और उसने अपने भांजे और भांजी और उसकी सहेली का स्वागत गाम्भीर्यपूर्ण शिष्टाचार से किया और फिर अपने अतिथियों का परिचय उनसे कराया। उनमें से दो को केयस अच्छी तरह जानता था, एक तो लेएटेलस ग्रैकस जो कि एक चतुर सफल राजनीतिज्ञ था और दूसरा लिसिनियस क्रैसस, सेनापति, जिसने गुलाम युद्ध में बहुत नाम कमाया था और जिसके बारे में शहर के सारे लोग बात कर रहे थे और पिछले एक वर्ष से करते आ रहे थे। उनमें जो तीसरा व्यक्ति था वह केयस के लिए अपरिचित था। उसकी उम्र दूसरों से कम थी और वह प्रायः केयस का समवयस्क था। उसके आचरण में एक सूक्ष्म सा संकोच था जो अभिजात कुल में न उत्पन्न होनेवाले व्यक्ति का संकोच था। मगर इस संकोच के साथ ही उसके भीतर एक अहंभाव था जो कि उतना सूक्ष्म न था और जो एक बुद्धिजीवी रोमन का अहंभाव था। वह आगन्तुकों को अपनी निगाहों से तौलने की कोशिश कर रहा था और देखने में बुरा न था। उसका नाम मार्कस तुलियस सिसेरो था और उसने केयस और उन दो सुन्दरी युवतियों के संग अपने परिचय का जवाब अत्यन्त विनयशीलता से दिया, जैसे उसका कहीं अस्तित्व ही न हो। पर वह अपनी उद्विग्न उत्कण्ठा को न मिटा सका और केयस ने भी, जिसकी दृष्टि सबसे कम पैनी थी, महसूस किया कि सिसेरो आँखों ही आँखों में उनकी परीक्षा ले रहा है, उन्हें तौल रहा है, उनकी पृष्ठभूमि की नाप-जोख कर

रहा है और पता लगाना चाह रहा है कि उनके पास खानदानी जायदाद कितनी है और समाज में उनका प्रभाव कितना है।

इस बीच क्लॉदिया ऐंटोनियस केयस के बारे में सोच रही थी कि इस व्यक्ति से अच्छा पुरुष दूसरा नहीं हो सकता जो इस शानदार हवेली और इस अनन्त भूमि का मौलिक है। उसको राजनीति का ज्ञान नामचार को ही था और युद्ध के बारे में भी उसके विचार बहुत धुंधले से थे। इसलिए वह ग्रैकस या क्रैसस से विशेष प्रभावित न हुई और जहाँ तक सिसेरो की बात थी, वह न केवल अपरिचित था—जो कि क्लॉदिया के समीप एक महत्वहीन बात थी—बल्कि स्पष्ट ही वह उस पैसा खसोटनेवाली जाति का था जिससे घृणा करना उसको सिखाया गया था। जूलिया केयस के समीप से समीपतर पहुँचने की कोशिश कर रही थी क्योंकि केयस उसका प्रिय था और उसके प्रति उसका आचरण कुछ वैसा ही था जैसा किसी बड़ी सी भद्दी सी बिल्ली का अपने प्रिय जन के प्रति होता है, और क्लॉदिया ऐंटोनियस का इतना सूक्ष्म मूल्यांकन कर रही थी जितना केयस ने कभी न किया था। उसने उस लम्बे-चौड़े, नुकीली नाक और तगड़ी मांसपेशियोंवाले ज़मीन्दार को दमित इच्छाओं और अतृप्त वासनाओं की एक गाँठ के रूप में देखा। उसने ऐंटोनियस के उस कठोर नैष्ठिक बहिरंग के पीछे छिपी हुई कामुकता को अनुभव किया और क्लॉदिया को ऐसे लोग पसन्द थे जो बयकवक़्त ताक़तवर और कमज़ोर होते हैं। ऐंटोनियस केयस कभी कोई जल्दबाज़ी की या चिढ़ानेवाली बात न करेगा। ये सारी बातें क्लॉदिया ने ऊपर से लापरवाह दिखायी पड़नेवाली अपनी मुसकराहट से उसको बतला दीं।

सभी लोग अब घर पहुँच गये थे। केयस पहले ही घोड़े से उतर पड़ा था और घर का एक मिस्री गुलाम उसके घोड़े को लेकर चला जा चुका था। उन तमाम मीलों के सफ़र से थके हुए पालकी ढोनेवाले अपने बोझों के पास सहमे-सिमटे खड़े थे और शाम की ठण्डक मे काँप रहे थे और उनके शरीर से पसीना जारी था। इस वक़्त अपनी उस थकान में उनके दुबले-पतले शरीर बिलकुल जानवरों जैसे हो रहे थे और उनकी मांस-पेशियाँ थकान के दर्द से उसी तरह काँप रही थीं जिस तरह किसी जानवर की काँपती हैं। किसी ने उनको नहीं देखा, किसी ने उनकी हालत पर ग़ौर करने की ज़रूरत न समझी, किसी ने उनकी ओर कोई ध्यान न दिया। वे पाँच पुरुष, तीन स्त्रियाँ और दो बच्चे, मकान के अन्दर चले गये और पालकी ढोनेवाले तब भी, इन्तज़ार करते हुए, अपनी पालकियों के पास सहमे-सिमटे खड़े रहे। और तभी उनमें से एक, जिसकी उम्र बीस से ज्यादा हरगिज़ न थी, सिसकियाँ लेने लगा और उसकी सिसकियाँ बढ़ती गयीं जैसे उन पर उसका कोई बस न

हो मगर दूसरों ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया। वे लोग वहाँ पर कम से कम बीस मिनट तक ठहरे रहे जब कि एक गुलाम उनके पास आया और उन्हें उस बारक में ले गया जहाँ उन्हें खाना और रात का आराम मिलनेवाला था।

८

केयस और लिसिनियस क्रैसस का स्नानागार एक ही था और केयस को यह जानकर इतमीनान हुआ कि वह महान् व्यक्ति उन लोगों में न था जो आज के कुलीन घराने में उत्पन्न युवकों की कमज़ोरियों के लिए स्वयं केयस को बुरा-भला कहते थे। क्रैसस उसे मीठे और मिलनसार स्वभाव का आदमी मालूम हुआ और उसके आचरण में दूसरे को अपना बना लेने वाली एक बात यह थी कि वह सबसे राय लेता था भले वह व्यक्ति महत्वपूर्ण हो या न हो। स्नानागार में दोनों बड़े मज़े से क्रीड़ा कर रहे थे, पानी उछाल रहे थे और उस पर बहते हुए कभी आगे जाते थे कभी पीछे आते थे और इस तरह उस हलके गर्म खुशबूदार पानी का पूरा आनन्द लूट रहे थे जिसमें बहुत से सुगन्धित द्रव्य मिले हुए थे। क्रैसस का शरीर गठा हुआ था, वैसा ढीला-ढाला नहीं जैसा कि अधेड़ उम्र में हो जाता है बल्कि खूब कसा हुआ और सख्त और नौजवानों की-सी चुस्ती से भरा हुआ। उसने केयस से जानना चाहा कि क्या वे सड़क के रास्ते रोम से आये हैं।

—हाँ, और कल हम लोग कापुआ जा रहे हैं।

—तुम लोगों ने सड़क के किनारे खड़े हुए सलीब नहीं देखे?

केयस ने जवाब दिया—उन्हें देखकर हमें बड़ा कुतूहल हुआ। नहीं, सच बात यह है कि हमने उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। यहाँ-वहाँ एकाध शरीर दिख जाता था जिसे चिड़ियों ने नोच डाला था और वह बुरा ही लगता था, ख़ासकर अगर हवा अपनी तरफ़ आ रही हो। मगर उसका कोई इलाज नहीं है और लड़कियों ने तो पर्दे खींच लिये थे। लेकिन हाँ, पालकी ढोनेवालों पर ज़रूर उसका असर हुआ। कभी कभी उनकी तबियत ख़राब हो जाती थी।

—मेरा ख़याल है वे उन लोगों को पहचान रहे होंगे, सेनापति ने मुसकराते हुए कहा।

—हो सकता है। क्या आप सोचते हैं गुलामों में ऐसी भावना है? हमारे पालकी ढोनेवाले ज़्यादातर अस्तबल में पैदा हुए लोग हैं और उनमें से अधिकांश को बचपन में ही ऐपियस मुण्डेलियस के स्कूल में कोड़े मारकर ठीक कर दिया गया है और जब तक उनके शरीर में ताक़त है उनको और जानवरों को

एक ही समझो, कुछ खास फ़र्क़ नहीं दोनों में। क्या ऐसे लोग उनको पहचानेंगे? मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता कि गुलामों के अन्दर समान रूप से यह गुण मिल सकते हैं। मगर आप ज़्यादा जानते होंगे। क्या आप ऐसा सोचते हैं कि सभी गुलामों के दिल में स्पार्टकस के लिए दर्द था?

—मैं तो ऐसा ही सोचता हूँ।

—सच? यह तो काफ़ी परेशान करनेवाली बात है।

—अगर ऐसी बात न होती तो मैंने यह सलीब न खड़े करवाये होते, मुझे यह चीज़ पसन्द नहीं—क्रैसस ने अपनी बात साफ़ करते हुए कहा—इसमें खामखाह बरबादी होती है और मुझे बरबादी के लिए बरबादी पसन्द नहीं। इतना ही नहीं, मैं यह भी सोचता हूँ कि जान लेने का, बहुत ज़्यादा जान लेने का बुरा असर पड़ता है। मैं सोचता हूँ कि बाद में इसका हमारे ऊपर बुरा असर पड़ सकता है, हमको इससे चोट पहुँच सकती है।

—मगर गुलाम?—केयस ने प्रतिवाद किया।

—सिसेरो अक्सर कहता है कि गुलाम भी एक औज़ार ही होता है जैसे जानवर या काम करने का दूसरा कोई बेजान औज़ार, उनमें फ़र्क़ बस इतना होता है कि गुलाम बोल सकता है, जानवर कम बोल सकता है और बेजान औज़ार बिलकुल नहीं बोल सकता। बात को कहने का यह ढंग बहुत अनूठा है और मुझे विश्वास है कि सिसेरो बड़ा बुद्धिमान व्यक्ति है मगर सिसेरो को स्पार्टकस से लड़ना नहीं पड़ा, सिसेरो को स्पार्टकस की तार्किक क्षमता का मूल्यांकन करने की कोई ज़रूरत नहीं हुई क्योंकि उसे रात की रात मेरी तरह, इस बात का अनुमान लगाते हुए जागते नहीं रहना पड़ता था कि स्पार्टकस क्या सोच रहा होगा। जब तुम इन गुलामों के खिलाफ़ लड़ते हो तब एकाएक तुम्हारी समझ में यह बात आती है कि यह गुलाम सिर्फ़ बोलनेवाले औज़ार नहीं हैं बल्कि उससे भी ज़्यादा कुछ हैं।

—आप उसे जानते थे—मेरा मतलब, व्यक्तिगत रूप से?

—उसे किसे?

—मेरा मतलब स्पार्टकस से है।

सेनापति किसी विचार में डूबते-उतराते रहे। फिर अपने शब्दों को तौलते हुए बोले—नहीं, यह कहना तो शायद ठीक न होगा। मैंने इस-उस चीज़ को मिलाकर अपने मन में खुद ही उसकी एक तसवीर खड़ी कर ली लेकिन मुझे नहीं मालूम कि कोई भी ऐसा आदमी होगा जो उसे जानता रहा हो। कोई उसे जान भी कैसे सकता था? अगर तुम्हारा चहेता कुत्ता अचानक पागल हो जाय और अपनी अक्ल की तेज़ी दिखलाने लग जाय तो भी वह रहेगा तो कुत्ता ही, कि नहीं? कहना मुश्किल है। मैंने स्पार्टकस की अपनी

एक तसवीर ज़रूर खड़ी की ; लेकिन मैं यह धृष्ठता न करूँगा कि उसका जीवन चरित्र लिखूँ। मेरा ख़याल है कोई भी नहीं लिख सकता। जो लोग लिख सकते थे वे ऐपियन मार्ग पर सलीबों पर झूल रहे हैं और वह आदमी खुद एक सपना बन चुका है। हम लोग एक बार फिर उसके अन्दर प्राण-प्रतिष्ठा करके उसे गुलाम की शकल दे देंगे।

—जो कि वह था, केयस ने कहा।

—हाँ, तुम शायद ठीक कहते हो।

केयस के लिए इस बात को अब और आगे बढ़ाना कठिन हो गया। इसका कारण यह न था कि उसे युद्ध का अनुभव इतना थोड़ा था बल्कि सच बात यह थी कि उसे युद्ध में कोई रुचि न थी; मगर तब भी युद्ध उसकी जाति उसके वर्ग उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा का दायित्व था। क्रैसस उसके बारे में क्या सोचता है? क्या इस शिष्ट नम्रता और समादर में कोई सच्चाई है? जो भी हो, केयस के परिवार की न तो उपेक्षा ही की जा सकती थी और न उसका मूल्य ही कम किया जा सकता था, और क्रैसस को मित्रों की आवश्यकता थी क्योंकि यह एक अजीब बात थी कि इस सेनापति को जिसने समूचे रोमन इतिहास की सबसे भीषण लड़ाई लड़ी उसका कोई गौरव नहीं मिला। उसने गुलामों से लड़ाई लड़ी थी—और उनको हराया था उस वक़्त जब उन गुलामों ने रोम को लगभग परास्त कर दिया था। इस पूरी चीज़ में अजीब-अजीब असंगतियाँ थीं और क्रैसस की विनयशीलता कौन जाने सच्ची हो। क्रैसस के बारे में कोई दन्तकथाएँ न बनेंगी और न गाने ही गाये जायेंगे। उस समूचे युद्ध को भूल जाने की आवश्यकता बराबर उसकी विजय के महत्व को कम करती जायगी।

वे दोनों कूदकर हम्माम से बाहर आये और वहाँ पर खड़ी हुई गुलाम औरतों ने उन्हें गरम-गरम तौलियों से ढँक दिया। ऐंटोनियस केयस के घर से ज़्यादा तड़क-भड़क वाली जगहें और भी थीं लेकिन उनमें कहीं पर मेह-मान की ज़रूरतों को समझने और पूरा करने की ऐसी अच्छी व्यवस्था न थी—ऐसी तो क्या इसकी आधी अच्छी भी न थी। जिस वक़्त तौलिए से रगड़कर उसका बदन सुखाया जा रहा था केयस ने यह बात सोची। उसे सिखाया गया था कि पुराने ज़माने में दुनिया में बहुत से छोटे-छोटे राजे होते थे, उनकी छोटी-छोटी रियासतें और जागीरें होतीं थीं मगर उनमें शायद ही कोई ऐसा रहा हो जो ऐंटोनियस केयस की तरह रह सकता हो या अतिथि-सत्कार कर सकता हो, गो कि ऐंटोनियस केयस कोई बहुत शक्तिशाली या महत्वपूर्ण जागीरदार न था और प्रजातन्त्र का एक साधारण नागरिक था।

कुछ भी कहो, रोमनों की ही जीवन शैली में उन लोगों का प्रतिबिम्ब मिलता था जो शासन में सबसे सुयोग्य और सक्षम थे।

क्रैसस ने कहा—मुझे आज तक औरतों के हाथ से कपड़े पहनने या छुए जाने की आदत नहीं पड़ी। तुम्हें अच्छा लगता है?

—मैंने इसके बारे में कभी नहीं सोचा, केयस ने जवाब दिया, जो कि बिलकुल सच न था क्योंकि गुलाम औरतों के हाथ से सेवा पाने में निश्चय ही एक विशेष आनन्द और उद्दीपन था। खुद उसके पिता को यह चीज़ पसन्द न थी और कुछ हलकों में इसे बुरी निगाह से देखा जाता था; मगर पिछले पाँच-छः सालों में गुलामों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण काफ़ी बदल गया था और केयस ने भी अपने बहुत से मित्रों की तरह, उन्हें मनुष्यता के अधिकांश तत्वों से वंचित कर दिया था। यह मन का एक बड़ा सूक्ष्म सँस्कार था। इस वक़्त उसने कोई ध्यान इस बात पर न दिया था कि वे तीनों परिचारिकाएँ देखने में कैसी थीं और अगर कोई उससे एकाएक पूछ लेता तो वह निश्चय ही उनका वर्णन न कर सकता। सेनापति के प्रश्न ने उसे उनकी ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। वे स्पेन के किसी कबीले की स्त्रियाँ थीं, जवान, हड्डियाँ छोटी, दुबली-पतली और अपने उस ख़ामोश राज़-भरे ढग में बदसूरत भी नहीं। वे नंगे पैर थीं और उन्होंने छोटे-छोटे सादे ट्यूनिक पहन रक्खे थे और उनके कपड़े हम्माम की भाप से नम थे और उन पर उनके पसीने के दाग़ थे। उनको देखकर उसे थोड़ी सी उद्विग्नता हुई और वह भी इसलिए कि वह खुद नंगा था मगर क्रैसस ने उनमें से एक को अपनी तरफ़ खींचा और जंगली हूश की तरह उसे अपनी बाँहों में भरकर छेड़ने लगा और मुस्कराता भी जाता और वह गुलाम औरत सहमी हुई खड़ी थी मगर कोई विरोध न कर रही थी।

केयस को इस चीज़ से बड़ी उलझन महसूस हुई। एकाएक उसके दिल में इस महान् सेनापति के प्रति जो हम्माम की एक छोटी सी छोकरी से छेड़-छाड़ कर रहा था, घृणा उमड़ पड़ी। यह चीज़ उसको बहुत ओछी और गन्दी मालूम हुई और उसको लगा कि उससे क्रैसस की मर्यादा भंग होती है और केयस ने यह भी महसूस किया कि आगे चलकर जब क्रैसस इस बात को याद करेगा तो अपने मन में वह केयस को इस बात के लिए बुरा-भला कहेगा कि वह क्यों ऐसे अवसर पर उपस्थित रहा आया।

वह मालिश करने की मेज़ पर जाकर लेट गया और क्षण भर बाद क्रैसस भी वहीं आ गया।—छोकरी बुरी नहीं है, क्रैसस ने कहा। केयस सोचने लगा कि क्या यह आदमी औरतों के मामले में बिलकुल गधा है? मगर क्रैसस को कोई चिन्ता न थी। उसने बातचीत के सूत्र को पुनः पकड़ते

हुए कहा—स्पार्टकस मेरे लिए भी वैसा ही रहस्य है जैसा कि तुम्हारे लिए। मैंने उसे कभी नहीं देखा—बावजूद उस सब नाच के जो उसने मुझे नचाया।

—आपने उसे कभी नहीं देखा?

—नहीं, कभी नहीं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि मैं उसे जानता नहीं। एक-एक टुकड़ा जोड़कर मैंने उसका रूप खड़ा कर लिया। मुझे ऐसा करना अच्छा लगता है। दूसरे लोग संगीत की, कला की रचना करते हैं। मैंने स्पार्टकस के चित्र की रचना की।

क्रैसस मेज़ पर आराम से लेटा हुआ था और मालिश करनेवाली की सधी हुई उँगलियाँ उसके शरीर को जैसे गूँध रही थीं। एक स्त्री सुगन्धित तेल की एक छोटी सी सुराही लिये खड़ी थी और उससे बराबर तेल गिराती जा रही थी और मालिश करनेवाली एक के बाद दूसरी मांस-पेशी का तनाव दूर करके उसे आराम पहुँचा रही थी। आनन्द के अतिरेक से लम्बी साँस खींचते हुए क्रैसस उसी प्रकार अपने शरीर को तोड़-मरोड़ रहा था जैसे थपथपाये जाने पर बिल्ला करता है।

केयस ने पूछा—वह कैसा था—यानी आपकी तसवीर के मुताबिक़?

क्रैसस ने उपेक्षापूर्ण मुसकराहट के साथ जवाब दिया—मैं अक्सर सोचता हूँ कि उसने अपने मन में मेरी क्या तसवीर बनायी होगी। अन्त समय उसने मुझको पुकारा था। लोग तो यही कहते हैं। मैं कसम खाकर यह तो नहीं कह सकता कि मैंने उसकी आवाज़ सुनी मगर लोगों का कहना है कि उसने खिंची हुई आवाज़ में पुकारकर कहा था, दोगले क्रैसस! अभी मैं तेरे पास पहुँचता हूँ! यह या ऐसी ही कोई बात उसने कही थी। वह मुझसे चालीस-पचास गज़ से ज़्यादा दूर न रहा होगा। और वह लड़नेवालों की भीड़ में लोगों को काटता-चीरता हुआ मेरे पास पहुँचने लगा। यह एक अद्‌भुत चीज़ थी। वह बहुत लम्बा-चौड़ा न था और न बहुत ताक़तवर ही। लेकिन हाँ, उसके अन्दर एक गुस्सा था, एक जोश। हाँ, उस चीज़ के लिए यही ठीक शब्द है। वह जब खुद लड़ाई में उतरता था उसके अन्दर यह गुस्सा, यह प्रचण्ड रोष होता था। और वह सचमुच लोगों को चीरता हुआ मेरे पास आधी दूर तक पहुँच भी गया था। अपने उस अन्तिम हिंस्र उन्माद में उसने कम-से-कम दस-ग्यारह आदमियों को मारा होगा और वह तभी रुका जब हमने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

—तो यह सच है कि उसका शरीर कभी नहीं मिला?—केयस ने पूछा।

—हाँ, यही बात है। उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया और फिर पाने के लिए कुछ बचा ही नहीं। तुम जानते हो लड़ाई का मैदान कैसा होता है? वहाँ पर गोश्त होता है और खून होता है और यह कहना मुश्किल होता है

कि किसका गोश्त और किसका खून। इसलिए वह जैसे आया था वैसे ही चला गया, शून्य से शून्य में, एरीना से क़साई की दूकान में। हम तलवार ही से जीते हैं और तलवार ही से मरते हैं। ऐसा था स्पार्टकस। मैं उसे सलाम करता हूँ।

सेनापति ने जो कुछ कहा उससे केयस को सॉसेज बनानेवाले के संग अपनी बातचीत की याद हो आयी और वह सवाल उसकी ज़बान पर आकर रह गया, क़रीब था कि उसने पूछ लिया होता। मगर फिर न जाने क्या सोचकर रुक गया और एक दूसरा प्रश्न किया—आप को उससे नफ़रत नहीं है?

—क्यों? वह एक अच्छा सैनिक था और उतना ही बदज़ात गन्दा गुलाम। मुझे खास तौर पर उससे नफ़रत क्यों हो? वह मर चुका है और मैं ज़िन्दा हूँ। मुझे यह चीज़ अच्छी लगती है—मालिश करनेवाली की उँगली तले उसने जैसे बड़े कृतज्ञ भाव से अँगड़ायी ली और यह बात कही मगर यह कहते समय भी उसने पहले से जैसे यह बात मान ली कि उसके शब्दों का कोई सम्बन्ध उस गुलाम स्त्री से नहीं है और वे शब्द उसके परे हैं।—लेकिन मेरा अनुभव सीमित है। हो सकता है तुम ऐसा न सोचते हो मगर तुम्हारी पीढ़ी के लोग चीज़ों को कुछ और ही ढंग से देखते हैं। मेरा मतलब गन्दी बाज़ारू औरतों से नहीं बल्कि इस जैसी खूबसूरत छोकरियों से है। इसके सग कितनी दूर तक जाया जा सकता है केयस?

नौजवान केयस की समझ में पहले तो यह बात न आयी कि सेनापति जी कहना क्या चाहते हैं और इसलिए उसने अपने आसपास कुतूहल से दृष्टि दौड़ायी। क्रैसस की गर्दन पर की माँसपेशियाँ वासना के आवेग से फूल रही थीं और यह आवेग तो अब उसके पूरे शरीर में दौड़ रहा था। केयस को से परेशानी मालूम हुई, और थोड़ा डर भी, और उसका जी हुआ कि जल्दी से कमरे के बाहर चला जाय मगर सवाल यही था कि इस चीज़ को खूबसूरती के सग कैसे करे। उसकी परेशानी का कारण यह न था कि वहाँ अब क्या होगा बल्कि यह कि अगर वह रहा आया तो उसकी आँख के सामने होगा।

—आप उससे पूछ लें, केयस ने कहा।

—पूछ लूँ? तुम्हारा ख़याल है यह कुतिया लैटिन बोलती होगी!

—वे सब थोड़ा थोड़ा बोल लेती हैं।

—तुम्हारा कहने का मतलब है मैं उससे सीधे-सीधे पूछूँ?

—क्यों नहीं?—केयस ने मुँह ही मुँह में कहा और फिर पलटकर पेट के बल लेट गया और आँखें मूँद लीं।

६

जब केयस और क्रसस स्नानागार में थे और सूर्यास्त के पहले गोधूलि की अन्तिम बेला में सुनहरा प्रकाश खेतों और विला सलारिया के बाग़ पर फैला हुआ था तब एँटोनियस केयस अपनी भांजी की सहेली को साथ लेकर उधर को घूमने निकल गया जिधर घोड़े को दौड़ाने के लिए मैदान बना हुआ था। एँटोनियस केयस को वैभव का ऐसा प्रदर्शन पसन्द न था जैसे कि घुड़दौड़ के लिए अपना निजी मैदान या एरीना रखना। उनके पास अपना एक सिद्धान्त था कि अपने वैभव को बनाये रखकर जीवित रहने के लिए ज़रूरी है कि उसका प्रदर्शन बहुत समझदारी से किया जाय और समाज में उनकी स्थिति यों ही इतनी काफ़ी जमी हुई थी कि उन्हें अपनी तड़क-भड़क का सिक्का जमाने की ज़रूरत न थी जैसा कि रोमन प्रजातन्त्र में पैदा होता हुआ व्यापारियों का नया सामाजिक वर्ग अक्सर किया करता था। मगर अपने और दोस्तों की तरह एँटोनियस केयस को भी घोड़ों से प्रेम था और वह अच्छी नस्ल के घोड़ों के लिए बड़ी-बड़ी रक़में खर्च करता था और अपने अस्तबल को देखकर उसे बहुत खुशी हासिल होती थी। इस समय एक अच्छे घोड़े की क़ीमत एक अच्छे गुलाम की क़ीमत से कम से कम पँचगुनी थी—मगर इसका तर्क यह था कि कभी-कभी एक घोड़े की मुनासिब देखभाल के लिए पाँच गुलामों की ज़रूरत पड़ती है।

घोड़े के दौड़ने का मैदान एक लम्बी-चौड़ी चरागाह पर बनाया गया था और उसके लिए बाड़ियाँ खड़ी कर दी गयी थीं। अस्तबल और बाड़े एक एक सिरे पर थे और वहाँ से कुछ दूर पर पत्थर की एक आरामदेह गैलरी थी जिसमें पचास आदमी तक बैठ सकते थे और वहाँ से अस्तबल और दौड़ने का मैदान दोनों नज़र आते थे।

अस्तबल के पास पहुँचने पर उन्हें एक घोड़े की तेज़ और कुछ तलब करती हुई चीख़ सुनायी दी जिसमें आग्रह और आवेश का एक ऐसा स्वर था जो क्लॉदिया के लिए नया था, जिससे रोमांच भी होता था और डर भी मालूम होता था।

उसने एँटोनियस केयस से पूछा—यह कैसी आवाज़ है?

—घोड़ा मस्त हो रहा है। मैंने दो ही हफ्ते पहले उसे हाट में खरीदा था। उसकी नस्ल में थ्रेस का खून है, हड्डियाँ खूब चौड़ी हैं, बहुत बिगड़ैल है मगर खूबसूरत इतना है कि देखते ही बनता है। तुम उसे देखना चाहोगी?

क्लॉदिया ने कहा—मुझे घोड़े बहुत प्यारे हैं, ज़रूर दिखलाइए, बड़ी मेहरबानी होगी।

वे टहलते हुए अस्तबल पहुँचे और ऐंटोनियस ने साईस से जो कि एक मिस्र का दुबला पतला सूखा-सा गुलाम था, कहा कि घोड़े को बाहर बाड़े में लाकर खड़ा कर दे। फिर वे दोनों उस गैलरी में पहुँचे और जाकर आराम से गद्देदार कुर्सियों पर बैठ गये जो एक गुलाम ने उन लोगों के लिए ठीक कर दी थीं। क्लॉदिया का ध्यान इस बात पर भला कैसे न जाता कि ऐंटोनियस केयस के खिदमतगार बहुत ही लिखे-पढ़े और समझदार थे और अपने मालिक की हर इच्छा को पहले ही से भांप लेते थे और उसकी हर निगाह का मतलब समझते थे। वह गुलामों के बीच में बड़ी हुई थी और उसे पता था कि उनके संग कभी-कभी कैसी-कैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जब उसने इसका ज़िक्र ऐंटोनियस से किया तो उसने जवाब दिया—मैं अपने गुलामों को कोड़े नहीं लगाता। जब कोई गड़बड़ी होती है तो मैं बस यह करता हूँ कि एक को जान से मार देता हूँ। इससे उन्हें आज्ञा पालन की शिक्षा मिलती है और उनका उत्साह भी नहीं भंग होता।

—मैं समझती हूँ कि उनके अन्दर ग़ज़ब का उत्साह है, क्लॉदिया ने अपनी सहमति व्यक्ति की।

—गुलामों से काम लेना आसान नहीं है, न गुलामों से न घोड़ों से। आदमी से काम लेना सबसे आसान है।

घोड़ा अब तक बाड़े के अन्दर आ चुका था। वह एक बहुत ऊँचा-पूरा ज़र्द रंग का जानवर था जिसकी लाल-लाल आँखें थीं और मुँह से फेन छूट रहा था। उसको बस में करने के लिए उसके सिर पर चाबुक लगाये जा रहे थे मगर दोनों गुलाम जो उसकी रास पकड़कर लटके हुए थे, घोड़े को बस में न कर पा रहे थे और वह रह-रहकर दो पाँवों पर खड़ा हो जाता था या पिछली टाँगें उठाकर अगला हिस्सा ज़ोर से आगे को डालता था और इसी तरह ज़मीन को खूँदकर रखे दे रहा था। वह उन्हें घसीटकर बाड़े की आधी दूरी तक ले गया और जब उन्होंने उसे छोड़ दिया और अपनी जान बचाने के लिए भागे तो वह अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हुआ और अगली दुलत्तियाँ फटकारीं। क्लॉदिया हँस पड़ी और आनन्द-विभोर होकर तालियाँ बजाने लगी।

—वाह, क्या शानदार जानवर है, वह चिल्लायी, मगर वह ऐसा क्यों हो रहा है—इतना गुस्सा और इतनी नफ़रत, यह किस लिए?

—तुम समझीं नहीं?

—मैं तो समझती हूँ कि यहाँ पर प्यार होना चाहिए था, नफ़रत नहीं।

—दोनों चीजें एक में मिल गयी हैं। वह हमसे नफ़रत करता है क्योंकि हम उसे वह चीज़ नहीं लेने देते जिसकी उसे भूख है। तुम देखना चाहोगी?

क्लॉदिया ने सिर हिलाकर अपनी सहमति जतलायी। ऐंटोनियस ने पास ही खड़े हुए गुलाम से कुछ कहा और वह आदमी अस्तबल दौड़ गया। घोड़ी का रंग सुर्खी मायल भूरा था। उसका बदन लचकदार था और वह बेचैन हो रही थी। वह तेज़ी से दौड़कर बाड़े को पार कर गयी और घोड़े ने घूमकर उसे जा पकड़ा। मगर ऐंटोनियस केयस घोड़ी को नहीं देख रहा था। उसकी आँखें क्लॉदिया पर जमी हुई थीं जो अपनी आँख के सामने होते हुए दृश्य को देखकर आनन्द-विभोर हो रही थी।

१०

नहा-धोकर, दाढ़ी बनाकर, इत्रों से सुवासित होकर, बालों में थोड़ा सा तेल डालकर और उन्हें नज़ाकत से फेरकर और रात के खाने के लिए साफ़ ताज़े कपड़े पहनकर केयस खाने के पहले शराब का एक जाम पीने के लिए फ़र्न वाले कमरे में गया। विला सलारिया के इस कमरे में गुलाबी रंग के फ़िनीशियन खपरों का मेल हल्के जर्द रंग के शीशे की छत से किया गया था। दिन के इस पहर में इस चीज़ से एक विलक्षण छटा फैल रही थी. डूबते हुए सूरज की नर्म मद्धिम रोशनी गहरे हरे रंग के फ़र्नों और दूसरी घनी पत्तियों वाले पौदों को कल्पना-लोक का-सा अद्भुत सौन्दर्य प्रदान कर रही थी। केयस जब वहाँ दाख़िल हुआ तो उसने जूलिया को पहले ही से वहाँ बैठे पाया। जूलिया सफ़ेद संगमरमर की एक बेन्च पर बैठी हुई थी और उसकी दोनों छोटी-छोटी लड़कियाँ अग़ल-बग़ल बैठी हुई थीं और डूबते हुए सूरज की रोशनी उनके चेहरों को एक नर्मी देकर उनकी ख़ूबसूरती को बढ़ा रही थीं। अपना लम्बा सफ़ेद गाउन पहने, काले-काले बाल सुरुचिपूर्वक सिर पर बाँधे, और अपने दोनों बच्चों के गले में बाँह डाले उस समय वह एक आदर्श रोमन माता का चित्र बनी हुई थी, सुन्दर, शान्त, गरिमापूर्ण। और अगर इस समय उसकी मुद्रा इतनी खुली हुई और बचकानी सी न होती तो उसे देखकर केयस को स्वभावतः कभी भी देखे हुए ग्राकी की हर माँ के चित्र का ध्यान हो आता था। उसके मन में बहुत ज़ोर से यह बात आयी कि ताली बजाये और कहे, 'वाह जूलिया, खूब।' लेकिन वह अपने को रोक गया। जूलिया को ख़त्म करना बहुत आसान था क्योंकि उसके अभिनय को देखकर सदा मन में दया आती थी क्रोध नहीं।

बनावटी आश्चर्य और सच्चे उल्लास को एक में मिलाते हुए जूलिया ने मुसकराकर केयस का अभिवादन किया।

केयस ने क्षमा-सी मांगते हुए कहा—मुझे पता न था कि तुम यहाँ होगी, जूलिया।

—कोई बात नहीं, मगर तुम रुको तो। आओ बैठो, मैं तुम्हें शराब का गिलास देती हूँ।

—बहुत अच्छा, वह राज़ी हो गया और जब जूलिया लड़कियों को वहाँ से भगाने लगी तो प्रतिवाद करते हुए बोला—क्यों भगाती हो, अगर वे यहाँ रहना चाहती हैं—

—बात यह है कि उनके खाने का वक्त हो गया है। बच्चे जब चले गये तो उसने कहा, यहाँ आओ और मेरी बग़ल में बैठो केयस। नहीं नहीं, यह न होगा। तुम यहाँ मेरी बग़ल में बैठो, मैं कहती हूँ, बैठो। वह बैठ गया और जूलिया ने दोनों के लिए शराब निकाली। उसने अपना गिलास केयस की गिलास से छुलाया और उसके चेहरे पर आँख जमाये हुए शराब पीने लगी—केयस, तुम इतने सुन्दर हो कि हो नहीं सकता नेक भी हो!

—मुझे नेक बनने की कोई इच्छा नहीं है जूलिया।

—तुम्हारी कोई इच्छा है केयस? अगर है तो क्या?

—आनन्द, विहार, उसने स्पष्ट उत्तर दिया।

—और तुम्हारे लिए, तुम जो अभी इतने कमउम्र हो, यह चीज़ रोज़-ब-रोज़ मुश्किल होती जाती है, कि झूठ कहती हूँ केयस?

—सच कहो जूलिया, मेरा चेहरा क्या बहुत उदास दिखायी देता है?

—यों कहो, बहुत सुखी।

—शाश्वत कौमार्य की भूमिका मुझे बहुत शोभा नहीं देती जूलिया।

—तुम मुझसे कहीं अधिक चतुर, कहीं अधिक योग्य हो केयस। मैं तुम्हारे समान निर्मम नहीं हो सकती।

—मैं निर्मम नहीं होना चाहता जूलिया।

—तुम क्या मुझे चूमकर यह बात प्रमाणित करोगे?

—यहीं?

—ऐंटोनियस यहाँ नहीं आयेगा। इस समय वह तुम्हारे संग की उस गोरी सुन्दरी के आनन्द के लिए घोड़े और घोड़ी की काम क्रीड़ा का आयोजन करने में व्यस्त है।

—क्या कहा! क्लॉदिया के लिए? नहीं नहीं, ऐसा न होगा। केयस मन-ही-मन इस बात का आनन्द लेने लगा।

—तुम कितने बदमाश हो। मुझे चूमोगे नहीं!

केयस ने हलके से जूलिया के ओठों को चूम लिया।

—बस, इतना ही! आज रात, केयस—!

—सच कहती हो जूलिया—

जूलिया ने उसकी बात काटते हुए कहा—मुझे ना मत करना, किसी

हालत में नहीं, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। आज रात तुमको अपनी क्लॉदिया तो मिलेगी नहीं, मैं अपने पति को अच्छी तरह जानती हूँ।

—यह मेरी क्लॉदिया नहीं है और आज रात मुझे उसकी ज़रूरत भी नहीं है।

—तो फिर—

—बहुत अच्छा, उसने कहा, ठीक है जूलिया। इसके बारे में अब हम लोग बात नहीं करेंगे।

—तुम चाहते नहीं—

—बात यह नहीं है जूलिया कि मैं चाहता हूँ या नहीं चाहता। मैं इस चीज़ के बारे में अब और बात नहीं करना चाहता।

११

उस घर के दूसरे तौर-तरीक़ों की तरह विला सलारिया के रात के खाने से ही यह बात सिद्ध थी कि विश्वनगरी रोम में जो परिवर्तन आ चुके थे उनको भी स्वीकार करने में यहाँ कुछ आपत्ति थी। जहाँ तक ऐंटोनियस केयस की बात थी इसका कारण उसके भीतर का कोई रूढ़िवादी कट्टरपन नहीं बल्कि यह था कि वह धनाढ्य व्यापारियों के नये वर्ग से जिन्होंने युद्ध, समुद्री डकैती, खनिज और व्यापार से अपनी सम्पत्ति बटोरी थी और जो यूनान और मिस्र की हर नयी बात को लपककर पकड़ते थे, उनसे वह अपना पार्थक्य बनाये रखना चाहता था। जहाँ तक खाने की बात थी ऐंटोनियस केयस को गद्देदार कुर्सी पर लेटकर खाने में मज़ा न आता था। इससे उसका पेट ख़राब हो जाता था और उसका ध्यान असली खाने से हटकर उन छोटी-मोटी, खट्टी-मीठी, नाजुक चीज़ों पर चला जाता था जिनका आजकल रिवाज बहुत बढ़ गया था। उसके मेहमान मेज़ से लगकर बैठते थे और मेज़ से चीजें लेकर खाते थे और जहाँ यह सच है कि ऐंटोनियस उनके सामने एक-से-एक अच्छे गोश्त और पेस्ट्रियाँ, बेहतरीन शोरबा और एक-से-एक रसदार फल पेश करता था वहाँ यह भी बात सच है कि उनमें वह अजीब-अजीब चीजें न होती थीं जो इन दिनों बहुत से रोमन जागीरदारों की मेज़ों पर दिखायी देने लगी थीं। ऐंटोनियस को खाने के वक़्त संगीत और नृत्य भी पसन्द न था। बस अच्छा खाना और अच्छी शराब और अच्छी बातचीत। उसके पिता और पितामह दोनों अच्छी तरह लिख पढ़ सकते थे; अपने आपको वह शिक्षित समझता था और जहाँ उसके पितामह अपने गुलामों के साथ जाकर उनके संग-संग खेत में काम किया करते थे वहाँ ऐंटोनियस केयस अपनी विशाल जागीर पर बहुत कुछ उसी तरह राज करता था जैसे पूर्वी देशों का कोई राज-कुमार अपने छोटे से साम्राज्य पर राज करता है। वह ख़ैर जो भी हो

ऐंटोनियस केयस अपने आपको एक सुसंकृत शासक समझता था और इस विचार से उसे आनन्द मिलता था, के यूनान इतिहास दर्शन और नाट्य साहित्य से परिचित, यूनानी आयुर्वेद के ज्ञान के युक्त और राजनीतिक मामलों में भी गति रखने वाला। ऐंटोनियस की सुरुचिसम्पन्नता की छाया उसके मेहमानों में दिखायी दे रही थी, और जब वे खाना खाने के बाद अपनी कुर्सियों में आराम से लुढ़क गये और शराब की चुसकियाँ लेने लगे और स्त्रियाँ थोड़ी देर के लिए फ़र्न वाले कमरे में चली गयीं, तब केयस ने उन मेहमानों और अपने मेज़बान में उस गुण का सार तत्व पाया जिसने रोम का निर्माण किया था और जो इतनी दृढ़ता और इतनी योग्यता से रोम पर शासन कर रहा था।

केयस इस चीज़ की कुछ खास प्रशंसा न करता था। हाँ, वह उसे समझता ज़रूर था ; इस दिशा में स्वयं उसकी कोई महत्वाकांक्षाएँ न थीं। उनकी राय में केयस का कोई विशेष मूल्य या महत्व न था, वह बस एक ऊँचे परिवार का एक निखट्टू नौजवान था जिसकी योग्यता केवल आहार-विहार की दिशा में थी, जो कि किसी मतलब में एक नयी दिशा थी, जिसका जन्म पिछली एक-दो पीढ़ी में ही हुआ था लेकिन इतना होते हुए भी उसका कुछ महत्व था; उसके पारिवारिक सम्बन्ध बड़े-बड़े लोगों से थे और यह एक स्पर्द्धा की चीज़ थी; अपने पिता के मरने पर वह बहुत सम्पत्तिशाली हो जायगा और यह भी सम्भव है कि भाग्यचक्र उसे राजनीतिक महत्व का व्यक्ति भी बना दे। इसलिए लोगों का दृष्टिकोण उसकी तरफ़ केवल इतना न था कि उसकी उपस्थिति को किसी प्रकार सह लिया जाय। उसकी तरफ़ लोगों का बर्ताव भी इससे अच्छा था जितना कि किसी अज्ञात कुलशील नवयुवक की ओर होता जो देखने में सुन्दर है और तड़क-भड़क से रहता है, जिसके बालों में तेल है और जो अक़्ल के नाम पर शून्य है।

और केयस को उनसे डर मालूम होता था। उनके भीतर रोग था अवश्य लेकिन वह उनको कमज़ोर करता नहीं जान पड़ता था। अपने अच्छे-अच्छे खाने खाकर, अपनी अच्छी पकी हुई शराब की चुसकियाँ लेते हुए वे लोग यहाँ पर बैठे थे और वे दूसरे लोग जिन्होंने उनकी सत्ता को चुनौती दी थी ऐपियन मार्ग पर मीलों तक सलीबों पर लटके हुए थे। स्पार्टकस गोश्त था, सिर्फ़ गोश्त, वैसा ही गोश्त जैसा क़साई की दूकान में होता है और इतना काफ़ी भी नहीं कि उसे सलीब पर चढ़ाया जा सके। मगर ऐंटोनियस केयस को कभी कोई सलीब पर नहीं चढ़ाएगा—इस आदमी को जो इतनी शान्ति और इतने विश्वास के साथ यहाँ खाने की मेज़ पर बैठा हुआ था और घोड़ों की बात कर रहा था और इतनी युक्तिसंगत बात कह रहा था कि खेत में हल चलाने के लिए एक घोड़ा

रखने के बजाय दो गुलाम रखना ज़्यादा अच्छा है क्योंकि ऐसा घोड़ा नहीं मिलेगा जो उस हैवानी सलूक को बर्दाश्त कर सके जो गुलामों के साथ किया जाता है !

सिसेरो भी बातचीत सुनता हुआ बैठा था और उसके चेहरे पर एक हलकी सी मुसकराहट थी। औरों से ज़्यादा सिसेरो को देखकर केयस को परेशानी होती थी। भला कोई कैसे सिसेरो को पसन्द कर सकता है ? क्या वह सिसेरो को पसन्द करना चाहता है ? एक बार सिसेरो ने उसकी ओर निगाह उठायी थी, जैसे कह रहा हो, अरे बच्चू, मैं तुम्हें खूब जानता हूँ, भीतर-बाहर, ऊपर-नीचे, अच्छी तरह। वह सोचने लगा क्या दूसरे भी इसी तरह सिसेरो से भय खाते होंगे ? उसने अपने मन में कहा, सिसेरो से दूर रहना ही ठीक है, खुदा उसे जहन्नुम रसीद करे। क्रैसस शिष्टाचारपूर्वक उस बातचीत में रुचि ले रहा था। यह शिष्टाचार क्रैसस के लिए जरूरी था। वह एक रोमन सेनानी की जीती-जागती तसवीर था, एकदम तन कर बैटा हुआ, चौकोर चेहरा, दृढ़ कठोर आकृति, रंग ताँबे का-सा, अच्छे काले बाल और तभी केयस को हम्माम वाली उसकी बात याद हो आयी और उसका मुँह कड़ुवा हो गया। ऐसा कैसे कह सका वह ! जहाँ केयस बैठा था उसके ठीक सामने मेज़ के दूसरी तरफ़ बैठा हुआ था राजनीतिज्ञ ग्रैकस जिसका शरीर भारी-भरकम और आवाज़ गहरी और गूँजती हुई थी। उसका सिर मांस की परतों के भीतर जैसे डूबा जा रहा था। उसके बड़े-बड़े हाथ बहुत मोटे और थुलथुल थे और उसके हाथ की हर उँगली पर एक अंगूठी थी। हर पेशेवर राजनीतिज्ञ के समान उसकी प्रतिक्रियाएं लम्बे अभ्यास के अनुशासन में होती थीं। उसकी हँसी बहुत ज़ोरदार थी, उसकी सहमति बहुत प्रबल लेकिन असहमति सदा सापेक्ष होती थी। उसके वक्तव्य बहुत भारी-भरकम होते थे मगर मूर्खतापूर्ण कभी नहीं।

ग्रैकस ने ऐंटोनियस केयस की बात पर अपनी अनास्था व्यक्त की। उसके बाद सिसेरो ने कहा—इसमें सन्देह नहीं कि हल चलाने के लिए गुलाम ज़्यादा अच्छे रहेंगे। वह जानवर जो सोच सकता है निश्चय ही उस जानवर से कुछ ज़्यादा काम का होगा जो नहीं सोच सकता। यह तो मामूली समझ की बात है। इतना ही नहीं, घोड़ा क़ीमती चीज़ है। घोड़ों के ऐसे कोई क़बीले नहीं हैं जिनके ख़िलाफ़ आप युद्ध कर सकें और जिन्हें डेढ़ लाख की संख्या में लाकर नीलाम पर लगा सकें। और अगर आप घोड़ों का इस्तेमाल करते हैं तो गुलाम उन्हें बर्बाद कर देंगे।

—मेरी समझ में यह बात नहीं आती, ग्रैकस ने कहा।

—अपने मेज़बान से पूछिए।

ऍंटोनियस ने अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा—यह बात बिलकुल ठीक है। गुलाम लोग घोड़े को मार डालेंगे। वे अपने मालिक की किसी चीज़ का आदर करना नहीं जानते, अपने आपको छोड़कर। उसने अपने गिलास में और शराब भर ली। क्या आज हम सब सिर्फ़ गुलामों के बारे में बात करेंगे?

सिसेरो ने अपने विचार में खोये-खोये कहा—क्यों नहीं! क्या बुराई है इसमें! वे सदा हमारे बीच मौजूद रहते हैं और हम गुलामों की और गुलामी की प्रथा की एक अनोखी उपज हैं। सार की बात यह है कि यही वह चीज़ है जो हमको रोमन बनाती है। हमारे यह मेज़बान एक हज़ार गुलामों की कृपा से अपनी इस विशाल जागीर पर रहते हैं जिसके लिए मुझे उनसे ईर्ष्या है। क्रैसस का नाम रोम के बच्चे-बच्चे की ज़बान पर है और वह किसलिए? इसलिए कि उन्होंने गुलाम विद्रोह को कुचला और जहाँ तक ग्रैकस की बात है गुलामों की बिक्री से उन्हें इतनी आमदनी है कि मैं उसका अन्दाज़ा नहीं लगा सकता। और जहाँ तक इस नौजवान की बात है—उसने केयस की ओर इशारा करते और मुसकराते हुए कहा—जहाँ तक इस नौजवान की बात है मैं सोचता हूँ कि यह तो और भी ज़्यादा गुलामों ही के हाथ की उपज है क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उन्हीं ने इसे पाला पोसा, दूध पिलाया, बड़ा किया, हवा खिलायी, इलाज किया और....

केयस का चेहरा रक्तिम हो उठा मगर ग्रैकस ज़ोर से हँस पड़ा और बोला—और तुम खुद सिसेरो!

—मेरे लिए वे एक समस्या थे। आजकल रोम में ढंग के साथ रहने के लिए कम-से-कम दस गुलाम चाहिए। और उनको ख़रीदना, खिलाना और रहने के लिए जगह देना—यही मेरी समस्या है।

ग्रैकस हँसता रहा मगर क्रैसस ने कहा—मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ सिसेरो कि गुलामों ही के दम से हम रोमन लोग रोमन हैं। ग्रैकस की गूँजती हुई हँसी बदस्तूर चलती रही। उसने बहुत सी शराब पेट के अन्दर डाल ली और एक गुलाम लड़की की कहानी कहने लगा जिसे उसने पिछले महीने बाज़ार में ख़रीदा था। शराब और अपनी बात के असर से उसका चेहरा सुर्ख़ हो रहा था और उसके भीतर से फूटती हुई हँसी गूँजती हुई बाहर आती थी और उसके शब्दों के साथ लिपटकर उन्हें गडमड कर देती थी। उसने बड़े विस्तार से अपनी ख़रीदी हुई लड़की का वर्णन किया। केयस को वह कहानी बेमानी और गन्दी मालूम हुई मगर ऍंटोनियस बहुत अक्लमंद आदमी की तरह सिर हिलाता रहा और क्रैसस उस मोटे आदमी के वर्णन

की स्थूल ऐन्द्रिकता के बहाव में बह गया। सिसेरो कहानी चलते समय कुछ सोचते हुए हलके-हलके मुसकराता रहा।

—मगर मैं फिर सिसेरो की बात को लेना चाहता हूँ, क्रैसस ने हठपूर्वक कहा।

—क्या मेरी बात से आपको चोट लगी?—सिसेरो ने कहा।

—यहाँ किसी की बात से किसीको चोट नहीं लगती, ऐंटोनियस ने कहा, यहाँ हम सभी सभ्य लोग हैं।

क्रैसस ने कहा—नहीं, नहीं, चोट लगने की कोई बात नहीं है। बस इतना है कि तुम्हारी बात से मुझे हैरानी होती है।

सिसेरो ने कहा—कैसी विचित्र बात है कि हम अपने चारों ओर एक बात के सभी प्रमाण पाकर भी उस बात की तर्कसंगत निष्पत्ति से मुँह चुराते हैं। यूनानी ऐसे नहीं हैं। उन्हें तर्कशास्त्र का ऐसा मोह है कि वे उसके साथ चलते चले जाते हैं चाहे वह फिर उन्हें कहीं ले जाय मगर हमारे चरित्र का आभूषण तो हठ है। मगर आइए ज़रा हम अपने चारों तरफ़ देखें—मेज़ के पास ही खड़े हुए एक गुलाम ने शराब की खाली सुराहियों की जगह भरी हुई सुराहियाँ रख दीं और दूसरा लोगों को फल और मेवे देने लगा—हमारी ज़िन्दगी का सत क्या है? हम लोग कोई ऐसे-वैसे लोग तो नहीं हैं, हम रोमन लोग हैं और हम रोमन इसीलिए हैं कि हमने सबसे पहले गुलाम के इस्तेमाल को पूरी तरह समझा।

—मगर रोम के जन्म के पहले भी तो गुलाम थे, ऐंटोनियस ने आपत्ति की।

—हाँ, थे ज़रूर। यहाँ वहाँ दो-एक। यह सच है कि यूनानी लोगों के पास भी जागीरें थीं—और कार्थेज के पास भी तो थीं। मगर हमने ग्रीस को भी ख़त्म कर दिया और कार्थेज को भी खत्म कर दिया ताकि हमारी अपनी जागीरों के लिए जगह निकल आये और जागीर और गुलाम एक ही चीज़ के दो नाम हैं। जहाँ दूसरों के पास एक गुलाम था हमारे पास बीस गुलाम हैं—और अब हम गुलामों के देश में रह रहे हैं और हमारी सबसे बड़ी सिद्धि स्पार्टकस है। इसके बारे में तुम्हें क्या कहना है क्रैसस? तुम स्पार्टकस को बहुत पास से जानते थे। क्या रोम के अलावा दूसरा कोई राष्ट्र उसे जन्म दे सकता था?

क्रैसस सोचने लगा—क्या हमने स्पार्टकस को जन्म दिया? सेनापति का मन अस्थिर हो गया। केयस ने अनुमान लगाया कि सेनापति को किन्हीं भी परिस्थितियों में गहराई के साथ सोचने में कष्ट होता है—और ख़ासकर ऐसी सूरत में जब उसका मुक़ाबिला सिसेरो जैसे आदमी के दिमाग़ से हो। दोनों

के बीच सचमुच कोई मिलने की जमीन न थी।—मेरा ख़याल है कि स्पार्टकस को जहन्नुम ने पैदा किया, क्रैसस ने कहा।

—शायद नहीं।

अविचलित भाव से ग्रैकस आराम के साथ गटागट शराब पीता रहा और जैसे कुछ क्षमा-सी माँगते हुए सिसेरो से बोला—अच्छा रोमन होने के नाते मैं, ग्रैकस, दर्शनशास्त्र में बहुत कच्चा हूँ। मगर वह ख़ैर जो भी हो यह रोम है और यहाँ पर गुलाम हैं तो अब किया क्या जाय, इसके बारे में सिसेरो को क्या कहना है?

—बात को समझना है, सिसेरो ने जवाब दिया।

—क्यों?—ऐंटोनियस केयस ने जवाब तलब किया।

—क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करते तो वे हमें नष्ट कर देंगे।

क्रैसस हँस पड़ा। और उसी समय उसकी निगाह केयस की निगाह से मिली। उन दोनों के बीच यही पहला सच्चा आदान-प्रदान था और नौजवान केयस ने आवेग के कारण अपनी रीढ़ में एक कंपकंपी-सी महसूस की। क्रैसस डटकर शराब पिये जा रहा था मगर केयस को ऐसी मनःस्थिति में शराब की इच्छा न होती।

—तुम क्या सड़क सड़क आये हो?—क्रैसस ने पूछा।

सिसेरो ने सिर हिलाया। सेना के आदमी को यह समझाना कभी बहुत सरल नहीं होता कि सारी बातों का फ़ैसला तलवार के ज़ोर से नहीं हुआ करता। मैं कसाई की दूकान के उस सहज तर्क की बात नहीं करता। यहाँ पर मैं एक प्रक्रिया देख रहा हूँ। यहाँ हमारे पूर्वजों की इस भूमि पर कभी तीन हज़ार किसान परिवार थे। अगर आप एक परिवार पीछे पाँच आदमी भी रख लें तो इसका मतलब हुआ पन्द्रह हज़ार लोग और वे किसान बहुत ही अच्छे सैनिक थे। इसके बारे में तुम्हें क्या कहना है क्रैसस?

—वे अच्छे सैनिक थे। काश कि उनकी संख्या और बड़ी होती।

—और वे अच्छे किसान थे, सिसेरो से अपनी बात जारी रक्खी, दूब के मैदानों और खूबसूरत बागों के लिए ही नहीं बल्कि जैसे जौ ले लो। छोटी चीज़ है जौ—मगर इसी जौ के बल पर रोमन सैनिक मार्च करता है। आज क्या तुम्हारे पास ऐसी एक भी एकड़ ज़मीन है ऐंटोनियस, जिसमें उसका आधा जौ भी पैदा होता हो जितना कि एक मेहनती किसान उसके अन्दर से पैदा किया करता था?

ऐंटोनियस केयस ने उसकी बात मानते हुए कहा—एक चौथाई भी नहीं।

यह सारी बातचीत अब केयस को बहुत उकतानेवाली जान पड़ने लगी

थी। वह अपने मन के घोड़ों पर सवार था और उसका चेहरा तमतमाया हुआ और गर्म था। उसकी रगों में जोश लहरें मार रहा था और उसने अपने मन में सोचा कि लड़ाई में जाते समय सैनिक के मन की यही स्थिति होती होगी। इसके बाद फिर सिसेरो की बात उसके कान में पड़कर भी नहीं पड़ी। वह बीच-बीच में क्रैसस की ओर देख लेता था और अपने मन में सोच रहा था कि क्यों सिसेरो इस उकतानेवाली बात के पीछे पड़ा हुआ है।

सिसेरो जवाब तलब कर रहा था—क्यों ? ऐसा क्यों ? तुम्हारे गुलाम अन्न नहीं उपजा पाते ? जवाब बहुत आसान है।

—क्योंकि वे चाहते नहीं, ऐंटोनियस ने बहुत सपाट ढंग से अपनी बात कही।

—बिलकुल ठीक, बिलकुल यही बात है—वे उपजाना चाहते नहीं। और क्यों चाहें ? जब तुम किसी मालिक के लिए काम करते हो तो तुम्हारी अकेली सफलता यह होती है कि तुम काम को बिगाड़ो। उनके हल की फाल को तेज़ करने से कोई फ़ायदा न होगा, वे फिर उसे फ़ौरन भोंथा कर देंगे। वे हँसिये तोड़ डालते हैं, मुँगरियाँ तोड़ डालते हैं और चीज़ की बर्बादी करना ही उनका नियम बन जाता है। यही वह शैतान है जिसे हमने खुद अपने लिए पैदा किया है। कभी यहाँ इसी दस हज़ार एकड़ ज़मीन पर पन्द्रह हज़ार लोग रहते थे और अब एक हज़ार गुलाम रहते हैं और ऐंटोनियस केयस का खानदान रहता है और वे किसान रोम की गन्दी बस्तियों और गलियों में सड़ते हैं। हमें इस बात को समझना ही होगा। वह एक दूसरी बात थी और छोटी बात थी जब किसान लड़ाई पर से लौटता था और उसके खेत में तमाम झाड़-झंखाड़ उग रही होती थी और उसकी बीबी किसी और के संग सो रही होती थी और उसके अपने बच्चे उसे नहीं पहचानते थे—उस वक्त उसे अपनी ज़मीन के लिए मुट्ठी भर चाँदी के टुकड़े देकर विदा कर देना आसान था ताकि वह रोम चला जाय और वहाँ जाकर सड़कों पर रहे। मगर उसका नतीजा यह है कि अब हम गुलामों के देश में रहते हैं और वही हमारी ज़िन्दगी का आधार और अभिप्राय है—और हमारी आज़ादी का सवाल, इन्सान की आज़ादी का सवाल, प्रजातन्त्र का सवाल और सभ्यता के भविष्य का सवाल सब कुछ इस बात से तय होगा कि गुलामों के प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या है। वे इन्सान नहीं हैं, इस बात को हमें अच्छी तरह समझ लेना है और यूनानी लोग जो सब चलने-फिरने वालों और बात करने वालों की बराबरी की बात करते हैं, उस बकवास से अपना पिण्ड छुड़ा लेना है। गुलाम बस पैदावार का एक बोल सकनेवाला साधन है, एक औज़ार। ऐसे छः हज़ार औज़ार आज सड़क के दोनों ओर सलीबों पर झूल

रहे हैं : यह बर्बादी नहीं है, यह एक ज़रूरी चीज़ है ! मैं स्पार्टकस की, उसकी बहादुरी की और हाँ, उसके चरित्र की ऊँचाई की बात सुनते-सुनते तंग आ गया हूँ। एक ऐसे कुत्ते में जो अपने ही मालिक की एड़ी को काटने के लिए दौड़ता है कोई बहादुरी और कोई चरित्र की ऊँचाई नहीं हो सकती।

सिसेरो के अन्दर जो एक ठण्डापन, एक उदासीनता थी वह छूटी नहीं थी : उसने बस क्रोध का रूप ले लिया था जो क्रोध भी उतना ही ठण्डा था मगर जिसके आगे उसके सभी श्रोताओं की घिग्घी सी बँध गयी थी और जिसने उसको, सिसेरो को, उनका स्वामी बना दिया था और इसीलिए वे सब कुछ सम्मोहित से और कुछ डरे हुए से उसकी ओर एकटक देख रहे थे।

केवल उन गुलामों में किसी क़िस्म की कोई प्रतिक्रिया न थी और वे उसी तरह मेज़ के आसपास फिर रहे थे और मेहमानों को फल और मेवे और मिठाइयाँ पेश कर रहे थे और शराब की खाली सुराहियों में दुबारा और तिबारा शराब ला लाकर दे रहे थे। केयस ने इस बात को लक्ष्य किया क्यों कि उसकी चेतना पूरी तरह जगी हुई थी और दुनिया उसे बदली हुई नज़र आ रही थी और वह आवेशों और सहज प्रतिक्रियाओं का जीव था। उसने देखा कि कैसे उन गुलामों के चेहरे बिलकुल नहीं बदले, उनका भाव वैसा ही लकड़ी के पटरे जैसा सपाट और ठस और उनका घूमना फिरना, उनका अंग-संचालन वैसा ही धीमा और आलस्य भरा हुआ रहा आया। तो सिसेरो ने ठीक ही कहा कि उन्हें केवल इसलिए इन्सान नहीं माना जा सकता कि वे भी चलते-फिरते हैं और बात करते हैं। पता नहीं क्यों उसे इस बात से कुछ सान्त्वना मिली मगर मिली अवश्य।

१२

अभी वहाँ पीने का और बातचीत का दौर चल ही रहा था कि केयस उन लोगों की इजाज़त लेकर वहाँ से उठ गया। उसके पेट में मरोड़ हो रही थी, अजीब एक ऐंठन सी और उसने महसूस किया कि अगर उसे वहाँ पर और देर बैठना पड़ेगा और उनकी बातचीत सुननी पड़ेगी तो वह पागल हो जायगा। उसने यह कहकर छुट्टी ली कि मैं सफ़र से बहुत थक गया हूँ। मगर जब वह खाने के कमरे से बाहर आया तो उसने महसूस किया कि उसे थोड़ी सी ताज़ी हवा खाने की सख़्त ज़रूरत है और वह मकान के पिछले दरवाज़े से बाहर पक्के चबूतरे पर निकल गया जो मकान के पिछवाड़े था, एकदम सफ़ेद संगमरमर और बीच में एक छोटा सा तालाब। तालाब के बीचोंबीच समुद्री साँपों के झुंड के बीच से एक जलपरी उठती हुई दिखायी गयी थी। जलपरी के हाथ में एक बड़ा सा शंख था जिसमें से पानी की धार गिर रही

थी जो चाँद की रोशनी में चमकती और नाचती सी नज़र आती थी। यहाँ-वहाँ चबूतरे पर सफ़ेद संगमर्मर और हरे ज्वालामुखी पत्थर की बेंचें रक्खी हुई थीं और उन बेंचों को सबसे अलग करके एकान्त वातावरण देने के लिए काले लावा के बड़े-बड़े गमलों में लगाये हुए सरो के पेड़ों का पर्दा खड़ा कर दिया गया था। यह चबूतरा जिसकी चौड़ाई उस विशाल भवन की पूरी चौड़ाई के बराबर थी और जो घर के पीछे पचास फ़ीट की लम्बाई में फैला हुआ था उसके चारों ओर संगमर्मर की रेलिंग थी, सिवाय बीच के हिस्से को छोड़कर जहाँ पर नीचे के मामूली-से, रोज़ उठने-बैठने के बाग़ीचे में जाने के लिए चौड़ी सफ़ेद सीढ़ियाँ थीं। अपने वैभव के इस प्रदर्शन को घर के पिछवाड़े छिपा रखना थोड़ी असाधारण सी बात थी लेकिन एँटोनियस केयस को यही पसन्द था और केयस भी पत्थर और पत्थर की बनी हुई मूर्त्तियों वग़ैरह पर होने वाले खर्च को देखने का अब इतना आदी हो गया था कि उसने इस जगह को और बारीकी से देखने के लिए दुबारा उस पर निगाह डालने की ज़रूरत भी नहीं समझी। शायद सिसेरो ने पत्थर के इस उपयोग के पीछे एक राष्ट्र की प्रतिभा को देखा होता और सोचा होता कि ऐसी झूठी शान के लिए सजावट पर इतना ध्यान देना यह मान कर चलने के बराबर है कि जैसे यह चीज़ सदा बनी रहेगी। लेकिन केयस के मन में ऐसा कोई विचार नहीं आया।

साधारण रूप से ही उसके मन में शायद ही कभी कोई मौलिक विचार आता हो और अगर कभी ऐसा कोई विचार आता था तो उसका सम्बन्ध खाने-पीने और काम-क्रीड़ा से ही होता था। यह बात न थी कि केयस में कल्पना शक्ति न थी या कि वह मूर्ख था: बात बस इतनी थी कि अपने जीवन में उसे कभी कल्पना शक्ति या मौलिक विचार की जरूरत ही न पड़ती थी और उस समय उसके सामने अकेली समस्या यह थी कि उस दृष्टि के पूरे-पूरे अभिप्राय को अच्छी तरह समझे जो क्रैसस ने खाने के कमरे से बाहर जाते समय उस पर डाली थी। चाँदनी में डूबे हुए खेतों के ढलवानों को एकटक निहारता हुआ वह इसी चीज़ के बारे में सोच रहा था जब कि एक आवाज़ ने उसके ध्यान को भंग किया।

—केयस !

दुनिया में अगर कोई ऐसा व्यक्ति था जिसके संग वहाँ उस छत पर अकेले रहना उसे सबसे कम अच्छा लगता तो वह जूलिया थी।

—केयस, मुझे बड़ी खुशी है कि मैं यहाँ बाहर आ गयी।

केयस ने कोई जवाब न दिया और केवल अपने कन्धे उचका दिये

जूलिया उसके पास गयी, उसकी दोनों बाँहों पर अपना एक-एक हाथ रक्खा और उसके चेहरे को देखने लगी।

उसने कहा—मेरे संग शराफ़त से पेश आओ केयस।

—यह अपना रोना-गिड़गिड़ाना बन्द क्यों नहीं करती, उसने अपने मन में कहा।

—केयस, तुम मुझे जो कुछ देते हो वह कितना थोड़ा है तुम्हें। उसके लिए कोई क़ीमत नहीं देनी पड़ती। और तुमसे वह चीज़ माँगने के लिए मुझे बहुत बड़ी क़ीमत अदा करनी पड़ती है तुम क्या यह बात न समझोगे?

उसने कहा—मैं बहुत थका हुआ हूँ जूलिया और सो जाना चाहता हूँ।

—मैं शायद इसी के योग्य हूँ, उसने धीरे से बुदबुदा कर कहा।

—इस बात को इस रूप में न लो जूलिया।

—तब फिर किस रूप में लूँ?

—यही कि मैं थका हुआ हूँ—इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

—नहीं, यही सब कुछ नहीं है केयस। मैं तुमको देखती हूँ और हैरान होकर सोचती हूँ कि तुम क्या हो और खुद अपने आप से नफ़रत करने लगती हूँ। तुम इतने खूबसूरत हो—और इतने सड़े हुए—

केयस ने उसकी बात में कोई बाधा न दी। उसे सब कुछ कह लेने दो, उतनी ही जल्दी वह यहाँ से दफ़ा हो जायगी और मुझे उससे छुट्टी मिलेगी।

वह अपनी बात कहती रही—नहीं, जैसे और होते हैं शायद वैसे ही तुम हो, उतने ही सड़े हुए, उतने ही ख़राब, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। बस यह है कि तुम्हारे साथ मैं होती हूँ तो इस बात को कह देती हूँ। मगर हम सब सड़े हुए हैं, हम सब बीमार हैं, रोग ने हमारे शरीर के अन्दर घर कर रक्खा है, मौत हमारे अन्दर भरी हुई है, हम सब मौत की गठरियाँ हैं—हमें मौत से प्यार है। क्या तुम्हें मौत से प्यार नहीं है केयस? है तभी तो तुम उस रास्ते से आये जहाँ तुम सलीबों पर लटकी हुई उन लाशों को देख सकते थे जिन्हें बतौर सजा के वहाँ पर टाँगा गया था। सज़ा! झूठ बात, हम ऐसा इसलिए करते हैं कि हमें इस चीज़ से प्यार है—आदमी को जो बात अच्छी लगती है उसी को वह करता है। तुम जानते हो यहाँ बाहर की इस चाँदनी में तुम कितने खूबसूरत नज़र आ रहे हो? एक नौजवान रोमन, खूबसूरती और जवानी से भरपूर एक नौजवान रोमन जिससे बढ़कर दुनिया में कोई दूसरा नहीं—और तुम्हारे पास एक बुढ़िया के लिए कोई वक़्त नहीं है। मैं भी उतनी ही सड़ी हुई हूँ जितने कि तुम मगर मैं तुमसे उतनी ही नफ़रत करती हूँ जितना कि प्यार करती हूँ। मैं कितना चाहती हूँ कि तुम मर जाते, कोई

तुम्हें मार डालता और कलेजा चीर कर तुम्हारा यह टुच्चा दिल बाहर निकाल लेता।

इसके बाद पल भर को शान्ति रही जो बड़ी लम्बी जान पड़ी, तब केयस ने बड़े शान्त अविचलित स्वर में पूछा—बस जूलिया, कि और कुछ कहना है ?

—नहीं, नहीं, इतने ही से बस नहीं है। मैं चाहती हूँ कि मैं ही मर जाती।

केयस ने कहा—तुम्हारी यह दोनों ही इच्छाएँ ऐसी हैं कि पूरी की जा सकती हैं।

—ज़लील—

—अच्छा नमस्ते जूलिया—केयस ने तीखे स्वर में कहा और वहाँ से चला गया। उसका यह संकल्प कि किसी बात से नहीं चिढ़ेगा, टूट गया था और उसे अपनी मामी के इस बेमानी .गुस्से और बकने-झकने पर गुस्सा आ रहा था। अगर उसे ज़रा भी समझ होती तो वह देख लेती कि अपनी उस घटिया, सस्ती भावुकता की बातों से वह अपने आप को कितना उपहासास्पद बना रही है। मगर जूलिया में यह समझ कभी न थी और शायद इसीलिए ऐंटोनियस को उसके संग निर्वाह करना कठिन मालूम होता था।

केयस वहाँ से सीधे अपने कमरे में गया। लैम्प जल रहा था और दो गुलाम उसकी सेवा-टहल के लिए वहाँ पर मौजूद थे। यह दोनों मिस्र के थे और ऐंटोनियस को उनसे ख़िदमतगार का काम लेना पसन्द था। केयस ने उन्हें छुट्टी दे दी और तब कुछ लजाते और कांपते हुए अपने कपड़े उतारे। उसने अपने शरीर में भीनी खुशबू का कोई इत्र मला, शरीर भर में यहाँ-वहाँ पाउडर लगाया, ढीला-ढाला सूती कुर्ता पहना, फूँक मार कर लैम्प को बुझा दिया और बिस्तर पर लेट गया। अंधेरे की अभ्यस्त हो जाने पर उसकी आँखें काफ़ी अच्छी तरह चीज़ों को देखने लगीं क्योंकि खुली हुई खिड़की में से चाँद की रोशनी आ रही थी। कमरे में खुशगवार ठंडक थी और इत्रों और बाग़ की बसन्ती झाड़ियों की खुशबू भरी हुई थी।

केयस को बिस्तर पर लेटकर इन्तज़ार करते अभी कुछ मिनट ही गुज़रे थे मगर वे कुछ मिनट उसे कुछ घण्टों की तरह लम्बे मालूम हुए। और तभी दरवाज़े पर एक हलकी सी दस्तक पड़ी।

—अन्दर चले आओ, केयस ने कहा।

क्रैसस दरवाज़े को बन्द करता हुआ अन्दर आ गया और पलंग के पास खड़े होकर मुसकराते हुए उस नौजवान को देखने लगा जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उस महान् सेनापति में इस समय जो पौरुष दिखायी दे रहा था उतना पहले शायद ही कभी दिखायी दिया हो।

१३

चाँद की रोशनी अपनी जगह से सरक गयी थी और केयस इस समय अपने आपको थका हुआ मगर तृप्त अनुभव कर रहा था वैसे ही जैसे मैथुन के बाद बिल्ला। अपने लिए यही उपमा उसे पसन्द आती थी। और तभी बिना किसी सन्दर्भ के वह बोल पड़ा—मैं सिसेरो से नफ़रत करता हूँ।

उसके प्रति क्रैसस का बर्ताव पितृवत् था और क्रैसस आह्लाद से भरा हुआ था और उसका अन्दर-बाहर स्निग्ध हो रहा था और उसने पूछा—तुम सिसेरो से, न्यायप्रेमी सिसेरो से क्यों नफ़रत करते हो? हाँ बताओ, क्यों करते हो?

—मैं नहीं जानता कि मैं क्यों उससे नफ़रत करता हूँ। क्या यह जानना ज़रूरी है कि मैं किसी से क्यों नफ़रत करता हूँ? कुछ को मैं प्यार करता हूँ और कुछ से नफ़रत करता हूँ।

—तुम्हें यह बात मालूम है कि यह सिसेरो का विचार था—एकदम उसी का नहीं मगर बहुत कुछ उसी का—कि ऐपियन मार्ग पर वह छः हज़ार सलीबें खड़ी की जायँ? दण्ड के प्रतीकों की यह व्यवस्था उसी की है। क्या इस बात के लिए तुम उससे नफ़रत करते हो?

—नहीं।

—उन सलीबों को देखकर तुम्हें कैसा लगा?—सेनापति ने पूछा।

—कभी-कभी तो उन्हें देखकर मेरे मन में थोड़ी सी उत्तेजना हुई मगर अधिकतर कुछ भी नहीं। हाँ, लड़कियों को अलबत्ता उन्हें देखकर ज़्यादा उत्तेजना हुई।

—सच?

—मगर कल मैं कुछ दूसरी ही तरह से महसूस करने लगूँगा, केयस ने मुसकराकर कहा।

—क्यों?

—क्योंकि तुमने उनकी व्यवस्था की है।

—नहीं, यह बात तो नहीं, वह तो सिसेरो और दूसरों ने किया। मैं उदासीन था, चाहे जो हो।

—मगर स्पार्टकस को तुमने नष्ट किया।

—उससे क्या?

—उसके कारण मैं तुमसे प्यार करता हूँ—मैं स्पार्टकस से घृणा करता हूँ।

—स्पार्टकस से?

—हाँ स्पार्टकस से।

—मगर तुम तो उसे जानते भी न थे।

—उससे क्या। मैं उससे नफ़रत करता हूँ—सिसेरो से भी ज़्यादा। सिसेरो की मुझे परवाह नहीं है। मगर स्पार्टकस से, उस गुलाम से मुझे नफ़रत है। काश कि अपने हाथों से मैंने उसे ख़त्म किया होता! काश कि तुम उसे मेरे पास ले आते और कहते, लो केयस, छाती चीरकर इसका कलेजा बाहर निकाल लो! काश कि तुम—

—अब तुम बच्चों जैसी बातें कर रहे हो—सेनापति ने अनुग्रहपूर्वक कहा।

—नहीं तो! और अगर करता भी हूँ तो इसमें बुराई क्या है?—केयस ने कुछ याचना भरे स्वर में कहा, मैं अगर बच्चा बना रहना चाहता हूँ तो इसमें क्या बुराई है? वयस्क हो जाने में क्या कोई विशेष लाभ है?

—मगर जब तुमने स्पार्टकस को कभी देखा ही नहीं तो उससे इतनी घृणा क्यों करते हो?

—हो सकता है मैंने उसे देखा हो। बात यह है कि मैं चार साल पहले कापुआ गया था। तब मैं बहुत छोटा था। मेरी उमर तब कुल इक्कीस साल थी।

—तुम अब भी बहुत छोटे हो।

—नहीं, अब मैं अपने आपको इतना छोटा नहीं महसूस करता। मगर उस वक़्त मैं छोटा था। हम पाँच-छः लड़के गये थे। मारियस ब्राकस मुझे अपने संग ले गया था, वह मुझे बहुत चाहता था।—केयस ने यह बात सेनापति के ऊपर असर डालने के लिए जान-बूझकर कही थी। मारियस ब्राकस गुलाम युद्ध में मारा गया था इसलिए अब उसमें इस वक़्त कोई उलझाव न था मगर क्रैसस को यह बतला देना ज़रूरी था कि उसको चाहनेवाला वह अकेला आदमी नहीं है और पहला आदमी भी नहीं। सेनापति का रुख कुछ कड़ा हो गया मगर वह बोला नहीं और केयस ने अपनी बात जारी रक्खी, हाँ, उस वक़्त हम लोग इतने लोग साथ थे, मारियस ब्राकस और मैं और एक पुरुष और एक स्त्री, ब्राकस के मित्र, और दो लोग और जिनके नाम अब मैं भूल गया हूँ और मारियस ब्राकस उस वक़्त बहुत शान-शौकत से सब कुछ कर रहा था—हाँ, खूब ही शान-शौकत से।

—तुम उसे बहुत पसन्द करते थे?

केयस ने कन्धे उचकाकर कहा—मुझे उसके मरने का दुःख हुआ, और सेनापति सोचने लगा, कैसा कुत्ते का पिल्ला है तू भी। जानवर।

—हाँ, तो हम लोग कापुआ गये और ब्राकस ने हम लोगों को सरकस का एक ख़ास शो दिखाने का वादा किया जो कि उन दिनों आज से ज़्यादा

महँगा था। उन दिनों कापुश्रा में यह चीज़ करने के लिए आदमी के पास काफ़ी पैसा होना ज़रूरी था।

—उन दिनों वहाँ पर लेग्टुलस बाटियाटस का स्कूल था न ?—क्रैसस ने पूछा।

—हाँ, उसी का, और वह सारे इटली में सबसे अच्छा स्कूल समझा जाता था। सबसे अच्छा और सबसे महँगा और उसके यहाँ के दो योद्धाओं की लड़ाई देखने के लिए जितना पैसा खर्च होता था उतने में एक हाथी खरीदा जा सकता था। लोगों का कहना है इस चीज़ से उसने लाखों कमाया मगर वह खैर जो भी हो वह था सुअर। तुम उसे जानते थे ?

क्रैसस ने सिर हिलाया—मुझे उसके बारे में बतलाओ, मैं बहुत दिलचस्पी से सुन रहा हूँ। यह स्पार्टकस के उसके यहाँ से भागने के पहले की बात है न ?

—मेरा खयाल है आठ रोज़ पहले की। हाँ, बाटियाटस ने अपने लिए काफ़ी नाम कमा लिया था क्योंकि वह अपने यहाँ गुलाम औरतों का बाक़ायदा एक हरम रखता था और लोगों को यह चीज़ पसन्द नहीं। खुले आम ऐसी बात करना। कमरे के अन्दर दरवाज़े बन्द करके यह काम करना तो ठीक है, उसकी बात और है, मगर इस तरह से खुले आम सड़क पर, यह तो निश्चय ही भद्दी बात है। और वह बहुत कुछ यही करता था। इतना ही नहीं वह अपने खिलाड़ियों का इस्तेमाल साँड़ों की तरह और औरतों का इस्तेमाल अच्छी नस्ल की औलादें जनने के लिए करता था जो कि मैं समझता हूँ अपनी जगह पर ठीक ही है मगर उसको कोई काम नफ़ासत से करना न आता था। वह बड़ा भारी-भरकम आदमी था, बैल ही समझो, काले बाल, काली दाढ़ी, और मुझे अच्छी तरह याद है उसके कपड़े भी बहुत गन्दे रहते थे। उन पर ऊपर से नीचे तक खाने के दाग़ ही दाग़ होते थे। जिस वक्त वह हमसे बात कर रहा था उसकी ट्यूनिक पर ठीक सामने की तरफ़ दाहिने को अण्डे का, एक ताजे अण्डे का दाग़ था।

सेनापति ने मुसकराकर कहा—क्या-क्या बातें याद रखते हो तुम भी।

—मुझे अच्छी तरह से उसकी याद है। मैं ब्राकस के संग उससे मिलने गया था और ब्राकस दो जोड़ों की ऐसी लड़ाई देखना चाहता था जिसका ख़ात्मा एक खिलाड़ी की मौत से ही हो। मगर बाटियाटस को इसमें आपत्ति थी। बाटियाटस ने कहा कि अगर रोम का हर रईस और जिन्दगी से ऊबा हुआ आदमी आकर अपने लिए ख़ास सरकस कराने लग जाये तो फिर लड़ने की शैली या हाथ की सफ़ाई इस सबका विकास करने में कोई तुक नहीं रह जाती। मगर ब्राकस के पास थैली थी और रुपया बोलता है।

सेनापति ने कहा—उस तरह के लोगों के संग ज़रूर बोलता है। ये सारे अखाड़े के मालिक बहुत ज़लील होते हैं मगर यह बाटियाटस तो बिल्कुल सुअर था। तुम्हें मालूम है वह रोम के तीन सबसे बड़े मकानों का मालिक है और एक चौथा मकान भी था जो पिछले साल गिर गया और जिसके आधे असामी मलबे के नीचे दबकर मर गये। पैसे के लिए वह कुछ भी कर सकता था।

—मुझे नहीं मालूम था कि तुम उसे जानते हो।

—मैंने उससे बात की है। उसे स्पार्टकस के बारे में न जाने कितनी बातें मालूम थीं—मेरा खयाल है वह अकेला आदमी है जो सचमुच स्पार्टकस के बारे में जानता था।

—मुझे बताओ, केयस ने लम्बी सांस खींचकर कहा।

—तुम मुझे बतला रहे थे कि शायद तुमने स्पार्टकस को देखा था।

—मुझे बताओ, केयस ने नन्हें बच्चे की तरह हठ करते हुए कहा।

सेनापति ने मुसकराकर कहा—तुम कभी-कभी बिलकुल लड़की बन जाते हो।

—यह मत कहो। ऐसी बात फिर कभी मुझसे न कहना—बिल्ले की तरह केयस का शरीर तन उठा और शरीर के बाल जैसे खड़े हो गये।

सेनापति ने जैसे उस पर मरहम लगाते हुए कहा—भला बताओ मैंने ऐसा क्या कह दिया जो तुम इतना गुस्सा किये जा रहे हो? तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें बाटियाटस के बारे में बतलाऊँ? उसमें कोई खास दिलचस्पी की बात नहीं है लेकिन अगर तुम चाहते ही हो तो मैं तुम्हें बतलाऊँगा। मेरा खयाल है यह लगभग साल भर पहले की बात है और उस वक्त ये गुलाम लोग बुरी तरह हमें नोचे डाल रहे थे। इसलिए मैं इस स्पार्टकस के बारे में मालूम करना चाहता था। तुम अगर किसी आदमी को जान लो तो फिर उसे हराना आसान हो जाता है....

केयस सेनापति की बात सुनते-सुनते मुसकराता रहा। वह खुद पूरी तरह नहीं जानता था कि वह क्यों स्पार्टकस से इतनी घृणा करता है मगर यह सच है कि कभी उसे प्रेम से ज़्यादा गहरा सन्तोष घृणा में मिलता था।

———

भाग २ । वह कहानी जो महान् सेनापति क्रैसस ने केयस क्रैसस को सुनायी और जिसका सम्बन्ध कापुआ में ग्लेडिएटरों का अखाड़ा रखने वाले लेण्टुलस बाटियाटस की उस मुलाक़ात से है जो उसने सेनापति से उनके शिविर में जाकर की ।

(नौजवान केयस के बग़ल में लेटे हुए क्रैसस ने कहा—हाँ तो यह उस समय की बात है जब मुझे हाल ही में लड़ाई की कमान मिली थी—जो एक ऐसा सम्मान था जिसे लेकर तुम जल्दी ही अपनी क़ब्र में पहुँच सकते थे। उन गुलामों ने हमारी सेनाओं की धज्जियाँ उड़ा दी थीं और सही मानी में इटली पर उन्हीं का राज था। इसी चीज़ का मुक़ाबला करने के लिए उन्होंने मुझसे कहा। उन्होंने कहा कि तुम जाओ और गुलामों को हराओ। मेरे जानी से जानी दुश्मन भी मेरा सम्मान करते थे। मैंने अपनी सेनाओं का पड़ाव उस समय सिस-ऐलपाइन गॉल में डाला था और मैंने तुम्हारे मोटे थुलथुल दोस्त लेण्टुलस बाटियाटस को सन्देश भेजा कि मुझसे आकर मिले।)

और उस वक़्त जब लेण्टुलस बाटियाटस क्रैसस के शिविर के पास पहुँचा तब हलकी हलकी बारिश हो रही थी। उस वक़्त प्रकृति का सारा दृश्य बड़ा मनहूस और उजड़ा-उजड़ा लग रहा था और वह खुद भी बहुत उजड़ा-उजड़ा महसूस कर रहा था क्योंकि वह अपने घर से और कापुआ की अच्छी खुशगवार धूप से बहुत दूर था। उसे पालकी पर चढ़कर आने का आराम भी मयस्सर न था, वह एक दुबले पतले ज़र्द रंग के घोड़े पर सवार था और सोच रहा था —

जब राज-काज सेना के लोगों के हाथ में चला जाता है तो ईमानदार लोग कठपुतलियों की तरह उनके इशारे पर नाचने लगते हैं। तब तुम्हारी ज़िन्दगी अपनी आज़ाद ज़िन्दगी नहीं रह जाती। लोग मुझसे ईर्ष्या करते हैं

क्योंकि मेरे पास थोड़ा सा पैसा है। अगर तुम सरदार हो और तुम्हारे पास पैसा हो तब तो ठीक। अगर तुम ऊँचे कुल में पैदा हुए हो और तुम्हारे पास पैसा हो तो और भी ठीक। लेकिन अगर तुम इन दोनों में से कुछ भी नहीं हो और महज़ एक ईमानदार आदमी हो जिसने ईमानदारी से अपना पैसा कमाया है तो तुम कभी चैन की नींद नहीं सो सकते। तब तो तुम्हारी ज़िन्दगी रिश्वत देते ही बीतती है। कभी इन्स्पेक्टर को और अगर इन्स्पेक्टर नहीं तो कोतवाली के जमादार को और अगर इन दोनों से जान बच गयी तो नगर-पालिका तो है ही जिसे रिश्वत देनी ही पड़ती है। और हर बार जब तुम सोकर उठते हो तो तुम्हें आश्चर्य होता है कि कैसे तुम्हें किसी ने सोते में ही छुरा नहीं मार दिया। और अब यह एक हरामजादा सेनापति मेरा यह सम्मान करता है कि मुझे आधी इटली का रास्ता तय करके अपने पास घसीट बुलाता है—और काहे के लिए, कुछ बातें पूछने के लिए। अगर मेरा नाम क्रैसस या ग्रैकस या सिलेनस या मेनियस होता तो बिलकुल दूसरी ही बात होती। रोम के प्रजातन्त्र का रोमन न्याय और रोमन समता यही है।

और तब लेण्टुलस बाटियाटस के मन में रोमन न्याय और किसी एक रोमन सेनापति के बारे में बहुत से बुरे विचार आये। शिविर के सामने खड़े हुए सन्तरियों के एक तेज़ तीखे सवाल ने उसके विचारों में बाधा दी। उसने आज्ञाकारी की भाँति घोड़े को रोक लिया और उस मज़ेदार ठण्डी बारिश में अपने घोड़े पर बैठा रहा जब दो सन्तरियों ने आगे बढ़कर उसकी तलाशी ली। और चूँकि उन्हें तो हर हालत में पहरा देने के लिए बारिश में खड़े रहना ही था, इसलिए उन्हें इस आदमी को जल्दी छुट्टी देने की कोई जल्दी न थी। उन्होंने बहुत रूखे और नागवार ढंग से उसका मुआइना किया और पूछा कि उसका नाम क्या है।

—मेरा नाम लेण्टुलस बाटियाटस है।

क्योंकि वे जाहिल किसान थे उन्होंने इस नाम को नहीं पहचाना और जानना चाहा कि वह कहाँ जा रहा है।

—यह रास्ता शिविर को जा रहा है न?

—हाँ, यह रास्ता शिविर को जाता है।

—तो मैं शिविर में ही जा रहा हूँ।

—किस बात के लिए?

—सेनापति से बात करने के लिए।

—बस? तुम क्या बेच रहे हो?

हरामज़ादे, दोग़लों की औलाद—बाटियाटस ने सोचा मगर उसने काफ़ी धीरज के साथ कहा—मैं कुछ बेच नहीं रहा हूँ। मुझे बुलाया गया है।

—किसने बुलाया है ?

—सेनापति ने। और उसने अपने बटुए में हाथ डालकर वह खत निकाला जो क्रैसस ने उसके पास भेजा था।

वे पढ़ न सकते थे मगर उस आदमी को गुज़रने देने के लिए कागज़ का एक टुकड़ा भी काफ़ी था और उन्होंने अपने ज़र्द घोड़े पर सवार बाटियाटस को शिविर को जाने वाले फ़ौजी रास्ते पर आगे बढ़ने की इजाज़त दे दी। उस समय के बहुत से दूसरे उन्नति करते हुए नागरिकों की भाँति बाटियाटस भी हर चीज़ की क़ीमत रुपयों में आँकता था और आगे बढ़ते समय बार-बार उसे यह ध्यान आ रहा था कि इस तरह की सड़क बनाने में कितना रुपया लगेगा— ऐसी एक मामूली वक़्ती सड़क जो शिविर की सुविधा के लिए यहाँ पर बना दी गयी मगर इतने पर भी वह सड़क उससे अच्छी थी जैसी कि उसने कापुआ में अपने स्कूल के पास तक पहुँचने के लिए बनायी थी। धूल और बजरी मिलाकर वहाँ पर डाल दी गयी थी और उस पर रेतीले पत्थर के बराबर कटे हुए टुकड़े बिछा दिये गये थे। यह रास्ता एक मील लम्बा था और तीर की तरह सीधे शिविर को जाता था।

—अगर यह मर्दूद जर्नल लड़ने के बारे में ज़्यादा सोचा करे और सड़कों के बारे में कम तो हमारी हालत ज़्यादा ठीक रहे, उसने सोचा। लेकिन इसके साथ ही उसका चेहरा गर्व से थोड़ा चमकने भी लगा। यह मानना ही पड़ता था कि इस तरह की गन्दी, ज़लील, बारिश से लथपथ ज़मीन में भी रोमन सभ्यता अपना अस्तित्व प्रमाणित कर ही देती है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

अब वह शिविर के पास पहुँच रहा था। जैसा कि सदा होता था, सेनाओं के ठहरने की स्थायी जगह भी नगर की भाँति होती थी। जहाँ सेनाएँ जाती थीं वहाँ सभ्यता जाती थी और जहाँ सेनाएँ पड़ाव डालती थीं, चाहे एक रात के ही लिए, वहाँ सभ्यता उठ खड़ी होती थी। यह कोई आध मील लम्बी-चौड़ी बड़ी शानदार जगह थी जो चारों तरफ़ दीवारों से घिरी हुई थी और जिसको बसाते समय वही बारीकी बरती गयी थी जो नक़शा बनाने वाला अपना नक़शा बनाते समय बरतता है। सबसे पहले एक खाई थी, १२ फ़ीट चौड़ी और १२ फ़ीट गहरी। इस खाई के पीछे लकड़ी का एक १२ फ़ीट ऊँचा भारी जँगला था। सड़क खाई को पार करके प्रवेश द्वार तक पहुँचती थी। उसके वहाँ पहुँचने पर लकड़ी के भारी फाटक खुले, एक बिगुल बजाने वाले ने उसके अन्दर आने पर अपना बिगुल बजाया और अन्दर आते ही सैनिकों का एक दस्ता उसके चारों ओर घूमने लगा। यह कोई ख़ास उसका सम्मान न था बल्कि अनुशासन के लिए अनुशासन था। यह कोई डींग न थी कि संसार के इतिहास में इसके पहले कभी इतने अनुशासनपूर्ण सैनिक न देखे गये थे।

यहाँ तक कि बाटियाटस भी जिसे खुद लोगों को लड़ाने और उनका खून बहाने में इतना आनन्द मिलता है—जिसके कारण ही उसके मन में फ़ौज के जवान के लिए एक सहज घृणा थी—ऐसा बाटियाटस भी सेना से सम्बन्ध रखने वाली हर चीज़ की मशीन-जैसी सुघर और पक्की व्यवस्था से प्रभावित हुए बिना न रहा।

बात सिर्फ़ सड़क या उस लकड़ी के जंगले या उस दो मील लम्बी खाई या उस जगह की चौड़ी-चौड़ी सड़कों या गन्दगी को बाहर निकालने वाली नालियों या सड़कों के बीचोंबीच बने हुए रेतीले पत्थर के चबूतरे की या तीस हज़ार लोगों के इस रोमन शिविर के उस समस्त जीवन या गति या अनुशासन की न थी बल्कि यह बात थी कि मनुष्य की बुद्धि और उद्योग से उत्पन्न यह विशाल चीज़ सेनाओं ने रातोंरात अपने सफ़र के रास्ते में यों ही बना डाली थी। किसी ने यह बात यों ही नहीं कही थी कि बर्बर लोग किसी रोमन सेना को रात में पड़ाव डाले देखकर ज़्यादा जल्दी हार जाते थे बनिस्बत उनके ख़िलाफ़ लड़ाई में उतरने के।

जैसे ही बाटियाटस घोड़े से उतरा और अपने मोटे थुलथुल शरीर की उस जगह को हाथ से मलने लगा जो घोड़े की ज़ीन से सबसे लम्बे और सबसे निकट सम्पर्क में रही थी, वैसे ही एक नौजवान अफ़सर आया और उसने पूछा कि तुम कौन हो और क्या करने आये हो?

—मैं कापुआ का रहने वाला लेण्टुलस बाटियाटस हूँ।

—अरे हाँ, हाँ, उस नौजवान ने अपने स्वर को खींचते हुए कहा। वह मुश्किल से बीस साल का रहा होगा, खूबसूरत लड़कियों जैसी शकल थी और जैसे सबसे ऊँचे घरानों के लड़के होते हैं वैसा ही वह भी खूब बना-संवरा और इत्र में बसा हुआ था। ऐसे लोगों से बाटियाटस को सबसे ज़्यादा नफ़रत थी। उस नौजवान ने कहा—हाँ, कापुआ के लेण्टुलस बाटियाटस। वह जानता था। वह कापुआ के लेण्टुलस बाटियाटस के बारे में सब कुछ जानता था कि वह कौन है और क्या है और क्यों क्रैसस ने उसे यहाँ पर बुलाया है।

बाटियाटस सोचने लगा—अच्छा तो तुम मुझसे नफ़रत करते हो, ज़रूर करते हो, कुतिया का बच्चा कहीं का, और घृणा से मुझे देखते हुए खड़े हो। मगर तुम मेरे पास आते हो और गिड़गिड़ाते हो और मुझसे माल ख़रीदते हो और तुम जैसे लोगों के ही कारण मैं वह हूँ जो कि आज हूँ। मगर तुम अपने आपको इतना पवित्र समझते हो कि मेरे पास आते डरते हो कि कहीं मेरी साँस तुमको ख़राब न कर दे। हरामज़ादा कहीं का!—यह चीज़ उसने अपने मन में सोची मगर बोला कुछ नहीं और केवल अपना सिर हिला दिया।

उस नौजवान ने कहा—हाँ, कमाण्डर साहब आपकी राह देख रहे हैं।

मुझे मालूम है। उनकी इच्छा है कि आप फ़ौरन ही चलकर उनसे मिल लें। मेरे साथ आइए।

—मैं थोड़ा आराम करना चाहता हूँ—कुछ खाना चाहता हूँ।

—कमाण्डर साहब उसकी व्यवस्था कर देंगे। वह हर बात का बहुत ख़याल रखते हैं—उस नौजवान अफ़सर ने मुसकराकर कहा और फिर एक सिपाही को हुकुम दिया—आपका घोड़ा ले लो और उसे पानी पिला दो और खाना खिला दो और सुला दो।

बाटियाटस ने कहा—मैंने सबेरे के नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया है और मैं सोचता हूँ कि आपके कमाण्डर साहब ने जैसे इतनी देर मेरा इंतज़ार किया है वैसे ही और थोड़ी देर कर सकते हैं।

उस नवयुवक की आँखें छोटी हो गयीं मगर उसने अपनी आवाज़ को मधुर और संयत बनाये रक्खा और कहा—यह तो उनके कहने की बात है।

—आप घोड़े को पहले खिलायेंगे ?

नौजवान अफ़सर मुसकराया और सिर हिलाकर हामी भरी और बोला, चले आइए।

—आपने समझ क्या रक्खा है, मैं आपकी फ़ौज में नहीं हूँ।

—आप फ़ौजी शिविर में हैं।

दोनों क्षण भर तक एक दूसरे को घूरते रहे। फिर बाटियाटस ने मन-ही-मन यह फ़ैसला किया कि यहाँ इस तरह खड़े-खड़े बहस करने में कोई तुक नहीं है जब कि बरसते पानी की सुइयाँ सी चुभ रही हैं। यह सोचकर बाटियाटस ने कन्धा डाल दिया और अपना गीला लबादा अपने चारों ओर अच्छी तरह लपेट लिया और ऊँचे कुल में उत्पन्न उस हरामज़ादे नकचपटे अफ़सर के पीछे-पीछे चला—लेकिन उस नवयुवक के लिए यह विशेषण उसने मन-ही-मन प्रयोग किये थे मगर बाटियाटस यह भी सोच रहा था कि और चाहे जो हो मैंने एक-एक रोज़ में, किसी भी दिन तीसरे पहर, इतना खून बहते देखा है जितना इन साहबजादे ने जिनके ओठों पर अभी अपनी माँ का दूध भी नहीं सूखा है, अपनी समूची फौजी ज़िन्दगी में न देखा होगा। मगर सोचने को वह चाहे जो सोचे इस मोटे आदमी की स्थिति वही थी जो कि बूचड़खाने में किसी छोटे से बूचड़ की होती है—उसको सन्तोष बस इस बात का था कि वह भी उन शक्तियों से नितान्त पृथक् नहीं है जो आज इन शक्तियों को यहाँ पर खींच लायी हैं।

वह शिविर के बीचोंबीच बने हुए चौड़े केन्द्रीय रास्ते पर उस नौजवान के पीछे-पीछे चला और दोनों ओर के उन गन्दे कीचड़ लगे तम्बुओं को बड़े कुतूहल से देखता जाता था, उन तम्बुओं को जो छत की हैसियत से काफ़ी

अच्छे थे मगर सामने से खुले हुए थे और देखता जाता था उन सैनिकों को जो अपने घास के बिछौनों पर लेटे हुए गप-शप कर रहे थे, गालियाँ बक रहे थे, गा रहे थे और पाँसे फेंक रहे थे। वे लोग अधिकतर बहुत कसीले और अच्छी तरह से हजामत बनाये हुए, जैतूनी रंग की चमड़ी के इटालियन किसान थे। उनमें से कुछ तम्बुओं में गर्मी पहुँचाने के लिए छोटी-छोटी अंगीठियाँ थी मगर साधारणतः वे सर्दी को भी उसी तरह झेल लेते थे जैसे गर्मी को, जैसे उस कभी न ख़त्म होने वाली कवायद और निर्मम अनुशासन को, इस तरह कि उनमें जो कमज़ोर होते थे वे जल्दी मर जाते थे और जो मज़बूत होते थे वे और भी मज़बूत होते चले जाते थे जैसे इस्पात और ह्वेल की हड्डी, जिनके पास एक छोटी सी मगर बहुत कारगर छुरी है, जो कि जनसंहार का एक सबसे भीषण अस्त्र तब तक बन चुकी थी।

शिविर के बीचोंबीच जहाँ पर चारों ओर के रास्ते आकर मिलते थे, वहाँ जनैल साहब का शिविर था। उसमें कोई ख़ास बात न थी, वह केवल एक और भी बड़ा ख़ेमा था जो दो हिस्सों या कमरों में बँटा हुआ था। इस ख़ेमे के दरवाज़े पर परदा पड़ा हुआ था और दोनों ओर एक एक सन्तरी खड़ा था और उन दोनों के हाथ में पहले के उस भारी-भरकम ख़ूनी पिलम के बदले एक-एक लम्बा पतला भाला था और पहले की प्रचलित भारी-भरकम ढाल और स्पेन वालों जैसी छोटी तलवार के बदले एक हलकी सी गोल ढाल और थ्रेस वालों के ढंग की मुड़ी हुई छुरी थी। वे ऊन के सफ़ेद लबादे पहने हुए थे जो बारिश से बुरी तरह भीग गये थे और इस तरह खड़े थे जैसे पत्थर की मूर्तियाँ और पानी उनके लोहे के टोप से और उनके कपड़ों से और उनके हथियारों से चू रहा था। बाटियाटस ने अब तक जो कुछ देखा था, न जाने क्यों उसमें इस चीज़ ने उसे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया। उसे खुशी होती थी जब मनुष्य का शरीर ऐसा कुछ करता था जिसकी आशा मनुष्य के शरीर से नहीं की जाती और इसीलिए उसे खुशी हुई।

उनके पास पहुँचने पर सन्तरियों ने उन्हें सलूट किया और खेमे का पर्दा हटा दिया। बाटियाटस और वह जवान अफ़सर दोनों उसके अन्दर होकर ख़ेमे की मद्धिम रोशनी में पहुँचे और बाटियाटस ने अपने आपको एक चालीस फ़ीट चौड़े और क़रीब बीस फ़ीट लम्बे कमरे में पाया जो कि उस ख़ेमे का सामने वाला आधा हिस्सा था। उस कमरे में सिर्फ़ एक लम्बी सी लकड़ी की मेज़ थी जिसके चारों तरफ़ एक दर्जन मोड़े जा सकने वाले स्टूल रक्खे हुए थे। मेज़ के एक सिरे पर मेज़ पर कुहनी रक्खे, अपने सामने रक्खे हुए नक्शे पर आँख गड़ाये प्रधान सेनापति मार्कस लिसीनियस क्रैसस बैठा था।

बाटियाटस और उस अफ़सर के दाख़िल होने पर क्रैसस उठा और इस

मोटे आदमी को यह देखकर खुशी हुई कि जर्नैल साहब कितनी तत्परता से उसकी ओर आगे बढ़े और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ाया।

—आप कापुआ के लेण्टुलस बाटियाटस हैं न ?

बाटियाटस ने हामी भरी और हाथ मिलाया। यह जर्नैल सचमुच देखने में बड़ा प्रभावशाली था। उसका चेहरा एक अच्छे तगड़े मर्द का चेहरा था और उसके बर्ताव में कोई उपेक्षा का भाव न था। बाटियाटस ने कहा, मुझे आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई।

—आप बहुत दूर से आये हैं और यह आपकी बड़ी शराफ़त थी कि आप आये और मैं समझता हूँ कि आप भीग गये होंगे और भूखे होंगे और थके हुए होंगे।

उसने यह बात उसका लिहाज़ करते हुए और कुछ फ़िक्र दिखलाते हुए कही जो कि बाटियाटस को बहुत अच्छी मालूम हुई। मगर वह नौजवान अफ़सर अब भी पहले की तरह उसी उपेक्षा के भाव से इस मोटे आदमी को देखता रहा। अगर बाटियाटस थोड़ा और भावप्रवण होता तो उसने समझ लिया होता कि ये दोनों ही रुख़ एक-से सार्थक हैं। जर्नैल साहब के सामने कोई कार्यक्रम था और वह नौजवान अफ़सर बाटियाटस के साथ वही रुख़ अपनाये हुए था जो एक अच्छे कुलीन आदमी को बाटियाटस जैसे आदमी के प्रति अपनाना चाहिए।

बाटियाटस ने जवाब दिया—जी हाँ, मैं वह सब कुछ हूँ जो आपने कहा। भीगा हुआ भी हूँ और थका भी हूँ मगर उस सबसे ज़्यादा, मुझे बड़ी सख़्त भूख लगी है। मैंने इस नौजवान से पूछा कि क्या मैं खाना खा लूँ मगर इसका यह ख़याल था कि मेरी यह माँग अनुचित है।

क्रैसस ने कहा—हम कुछ ऐसे बन जाते हैं कि अक्षरशः आदेशों का पालन करते हैं। मेरा आदेश था कि आप जैसे ही आयें वैसे ही आपको मेरे पास ले आया जाय। मगर ख़ैर, अब आपकी हर इच्छा को पूरा करने की ज़िम्मेदारी मेरी है और मुझे इसमें ख़ुशी होगी। मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि आपको सफ़र में कितनी तकलीफ़ हुई होगी। आपको सूखे कपड़े चाहिए, है न—अभी लीजिए। गुस्ल करना चाहेंगे ?

—गुस्ल रुक सकता है। सबसे पहले मैं पेट में कुछ डालना चाहता हूँ।

वह नौजवान अफ़सर मुसकराता हुआ ख़ेमे के बाहर निकल गया।

२

भुनी हुई मछली और उबले अण्डे ख़तम करने के बाद बाटियाटस अब

मुर्ग़ खा रहा था, एक-एक हड्डी को अच्छी तरह साफ़ करके। उसके साथ-ही साथ वह लकड़ी के कटोरे में से बराबर दलिया लेता जा रहा था और शीशे के गिलास से शराब की बड़ी-बड़ी घूँटें लेकर खाने को भीतर ढकेलता जा रहा था। मुर्ग़ और दलिया और शराब सब उसके मुँह में पुते हुए थे और क्रैसस ने उसे जो सफ़ेद ट्यूनिक दी थी उस पर खाने के तमाम दाग़ लग चुके थे और उसके हाथ मुर्ग़ की चरबी से चिकने हो रहे थे।

क्रैसस बड़ी दिलचस्पी से उसका खाना देख रहा था। अपने वर्ग और अपनी पीढ़ी के दूसरे तमाम रोमनों की तरह उसे लानिस्ता के प्रति यानी उस आदमी के प्रति जो लड़ने के लिए ग्लैडिएटरों को तैयार करता है, उन्हें खरीदता है और बेचता है और अपने अखाड़े के लिए किराये पर लेता है, एक विशेष प्रकार की सामाजिक घृणा थी। यह अभी पिछले बीस बरस की ही बात थी कि यह लानिस्ता लाग रोम के अन्दर एक शक्ति बन गये थे, एक राजनीतिक और आर्थिक शक्ति और उनमें से बहुतेरे बड़े धनाढ्य लोग होते थे जैसे यह मोटा भद्दा आदमी जो उसके संग मेज़ पर बैठा हुआ था। केवल एक पीढ़ी पहले अखाड़े की यह लड़ाई महज़ कभी-कभी होने वाली एक चीज़ थी और समाज का कोई विशेष महत्वपूर्ण अंग न थी। यों उसका अस्तित्व सदा से था। कुछ लोग उसे ज़्यादा पसन्द करते थे और कुछ लोग कम। मगर फिर एकाएक रोम के सभी लोग उसके पीछे जैसे पागल से हो गये। सभी जगह अखाड़े बन गये। छोटे-से-छोटे कस्बे के पास भी लकड़ी के बने अखाड़े थे जिनमें लड़ाइयाँ होती थीं। और फिर एक जोड़ की लड़ाई एक सौ जोड़ों की लड़ाई में बदल गयी और तब इन खेलों का एक सिलसिला महीने भर तक चलता। और जहाँ तक इस चीज़ के लिए लोगों की भूख का सम्बन्ध था, वह जैसे मिटने के बजाय बराबर बढ़ती ही जा रही थी, जैसे उसका कोई अन्त ही न हो।

सम्भ्रान्त और सुसंस्कृत महिलाओं से लेकर सड़कों पर घूमने वाले आवारों तक सब इन खेलों में बराबर दिलचस्पी लेते थे। इन खेलों की अपनी एक नयी भाषा बन गयी थी। फ़ौज के पुराने सैनिकों को बस दो चीज़ों का इन्तजार रहता था, जनता से मिलने वाली आर्थिक सहायता का और इन खेलों का और दस हज़ार ऐसे नागरिक जिनके पास न तो कोई काम था और न अपना कोई घर केवल इसलिए जिन्दा रहते थे कि अखाड़े की इन लड़ाइयों को देखें। एकाएक अखाड़े में लड़नेवाले उन ग्लैडिएटरों की क़ीमत बहुत चढ़ गयी और उनके मुँह माँगे दाम मिलने लगे और तब उनके ये स्कूल क़ायम हुए जहाँ उन्हें इस चीज़ की शिक्षा दी जाती थी। कापुआ वाला स्कूल, जिसका मालिक लेण्टुलस बाटियाटस था, सबसे बड़े और सबसे समृद्ध

स्कूलों में से एक था। जिस तरह किन्हीं ख़ास जागीरों से आये हुए मवेशियों की कद्र सभी बाजारों हाटों में सबसे ज़्यादा होती थी, उसी तरह सभी अखाड़ों में कापुआ के ग्लैडिएटरों की सबसे ज्यादा क़दर होती थी और सब उन्हीं को चाहते थे। और इस तरह बाटियाटस नगरपालिका के एक मामूली कर्मचारी से एक धनाढ्य व्यक्ति बन गया था और समूचे इटली में ग्लैडिएटरों के सबसे महत्वपूर्ण शिक्षकों में उसका नाम लिया जाता था।

क्रैसस ने उसको देखते हुए अपने मन में कहा—लेकिन तब भी, अभी भी है वह एक छोटा ही आदमी, वैसा ही चालाक, घृणित और धूर्त जानवर जैसा कि पहले था। ज़रा देखो खाता कैसे है। क्रैसस की समझ में यह बात कभी न आती थी कि कैसे बहुत से ग़रीब घरों में पैदा हुए और संस्कारहीन व्यक्तियों के पास इतना पैसा इकट्ठा हो जाता था जितने की आशा भी उसके बहुत से मित्र कभी न कर सकते थे। यह तो मानना ही होगा कि वे इस भद्दे आदमी से कम योग्य न होते थे। मुझी को लो। मैं जानता हूँ कि फ़ौज के आदमी की शकल में मेरी क्या कीमत है। मेरे अन्दर काम को पक्की तरह से करने की वह लगन और दृढ़ता है जो रोमनों का अपना ख़ास गुण है और मैं फ़ौजी दाव-पेंच को अनायास ही पकड़ में आ जानेवालों चीज़ नहीं समझता। जितनी भी लड़ाइयों के इतिवृत्त मिलते हैं मैंने वे सब पढ़े हैं। और सभी अच्छे-से-अच्छे यूनानी इतिहासकारों को पढ़ा है। और न मैंने स्पार्टकस की ताक़त को कम करके आँकने की भूल ही की है जैसी कि इस लड़ाई में मेरे पहले के सभी सेनापतियों ने की थी। और तब भी खाने की मेज़ पर इस जघन्य व्यक्ति के सामने बैठे हुए वह अपने आपको न जाने क्यों हीन सा अनुभव कर रहा था।

उसने अपने कन्धे उचकाये और बाटियाटस से कहा—आप इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि जहाँ तक स्पार्टकस से आपका सम्बन्ध रहा है उसके बारे मे या ग्लैडिएटरों की लड़ाई के बारे में मेरे मन में कोई भाव नहीं है। मैं कोई नीति और सदाचार का उपदेशक नहीं हूँ। मुझे आपसे बात इसलिए करनी थी कि आप मुझे ऐसी कुछ बातें बतला सकेंगे जो दूसरा कोइ न बतला सकेगा।

—और वह क्या?—बाटियाटस ने पूछा।

—मेरे शत्रु का स्वभाव।

—उस मोटे आदमी ने अपने लिए और शराब ढाली और अपनी एक आँख बन्द करके सेनापति को देखा। एक सन्तरी ख़ेमे में आया और दो जले हुए लैम्प मेज़ पर रख गया। शाम हो चुकी थी।

लैम्प की रोशनी में लेएटुलस बाटियाटस कुछ दूसरा ही आदमी नज़र आता था। गोधूलि की बेला उस पर कृपालु थी। अब रोशनी उसके चेहरे

पर नाच रही थी, वह एक रूमाल से अपने चेहरे को मल रहा था जिससे उसके गोश्त की मोटी-मोटी तहों पर पड़ती हुई परछाइयाँ इधर-उधर हो रही थीं। उसकी बड़ी सी चपटी नाक बराबर एक अजीब ढंग से फड़क रही थी और धीरे-धीरे उस पर नशा चढ़ रहा था। उसकी आँखों की उस ठण्डी चमक से क्रैसस ने समझ लिया कि इस आदमी को ग़लत समझने की भूल न करनी चाहिए। यह कोई बौड़म आदमी नहीं है, सीधा सादा खुशमिज़ाज बौड़म आदमी। नहीं, हरगिज़ नहीं।

—मैं आपके शत्रु के बारे में क्या जानूँ?

बाहर बिगुल बज रहे थे। शाम की कवायद ख़त्म हो गयी थी और दौड़ते हुए सिपाहियों के बूटों की गूँज से ख़ेमा काँप रहा था।

—मेरा केवल एक शत्रु है। स्पार्टकस मेरा शत्रु है, क्रैसस ने अपनी बात को तौलते हुए सावधानी से कहा।

उस मोटे आदमी ने रूमाल में अपनी नाक साफ़ की।

—और तुम स्पार्टकस को जानते हो—क्रैसस ने कहा।

—जानता तो हूँ, इससे इनकार कैसे करूँ।

—दूसरा कोई नहीं जानता। बस तुम जानते हो। जो लोग स्पार्टकस से लड़े उनमें से कोई उसको न जानता था। वे गुलामों से लड़ने के लिए गये थे। उनका ख़याल था कि वे अपने बिगुल बजायेंगे, नगाड़े पीटेंगे, अपने भारी पिलम फेकेंगे और गुलाम भाग जायँगे। न जाने कितनी बार उनकी फ़ौजों के चिथड़े हो गये मगर तब भी उन्हें यह उम्मीद बनी रही। और जो सच्चाई थी वह अपनी जगह पर बनी रही और इसीलिए रोम आज आख़िरी बार उससे लोहा लेने की कोशिश कर रहा है और अगर अपनी कोशिश में वह नाकाम रहता है तो फिर रोम का नाम-निशान मिट जायगा। मेरी ही तरह तुम भी इस बात को अच्छी तरह जानते हो।

वह मोटा आदमी ज़ोर से हँसा। उसने अपना पेट पकड़ लिया और हँसता हुआ वापस अपने स्टूल पर बैठ गया।

—तुम्हें यह बात बहुत मज़ाक की मालूम हो रही है—क्रैसस ने पूछा।

—सच्चाई हमेशा मज़ाक से भरी होती है।

क्रैसस को गुस्सा आया मगर वह अपने ऊपर ज़ब्त कर गया और हँसी के थमने का इन्तज़ार करने लगा।

—रोम न रह जायगा; बस स्पार्टकस रह जायगा। उस मोटे आदमी का क़हक़हा अब धीमी हँसी में बदल गया था और उसको देखते हुए क्रैसस सोचने लगा कि यह शराब का नशा ही है या इस आदमी के दिमाग़ में कोई फ़ितूर है। देश में कैसी-कैसी चीज़ें पैदा होती हैं। इस लानिस्ता को देखो

जो गुलामों को ख़रीदता और उन्हें लड़ने की ट्रेनिंग देता है। निश्चय ही वह इसी बात पर हँस रहा है। मैं, क्रैसस, भी तो लोगों को लड़ने की ट्रेनिंग देता हूँ।

—आपको चाहिए कि मुझे फाँसी पर लटका दें। आपको इस तरह मुझे खिलाना-पिलाना न चाहिए, बाटियाटस ने धीमे से फुसफुसाकर बहुत आजिज़ी से यह बात कही और अपने लिए गिलास में और शराब ढाली।

सेनापति ने बातचीत के रुख को फिर अपनी ज़रूरतों की तरफ़ मोड़ते हुए कहा—मुझे स्वप्न आया करता था, एक प्रकार का दुःस्वप्न। कुछ वैसा सपना जैसा कि आदमी को बार-बार आता है—

बाटियाटस ने बात को समझते हुए सिर हिलाया।

—और इस सपने में मैं आँखों पर पट्टी बाँधकर लड़ रहा होता। यह बात बहुत भयानक है मगर है युक्तिसंगत। देखिए, मैं इस बात को नहीं मानता कि सभी सपने आगे आनेवाली घटनाओं की पूर्व सूचना देनेवाले होते हैं; बहुत से सपने केवल उन समस्याओं की छाया होते हैं जिनका सामना व्यक्ति जागते में करता है। स्पार्टकस एक अज्ञात सत्ता है। अगर मैं उससे लड़ने के लिए जाता हूँ तो इसका मतलब होता है कि मेरी आँखों पर पट्टी बंधी होती है। दूसरी परिस्थितियों में यह बात नहीं होती। मैं जानता हूँ कि गॉल क्यों लड़ते हैं। मैं जानता हूँ कि यूनानी और स्पेनी और जर्मन लोग क्यों लड़ते हैं। वे थोड़े बहुत स्वाभाविक हेर-फेर के साथ बहुत कुछ उन्हीं कारणों से लड़ते हैं जिनसे कि मैं लड़ता हूँ। मगर मैं नहीं समझ पाता कि यह गुलाम क्यों लड़ता है। मैं नहीं समझ पाता कि कैसे वह दुनिया भर के कूड़े-करकट को लेकर, एक भीड़ को लेकर आगे बढ़ता है और उनकी मदद से ऐसी सेनाओं का सफ़ाया कर देता है जिनसे अच्छी सेना संसार ने आज तक नहीं देखी। हमारे एक रोमन सैनिक के निर्माण में पाँच बरस लगते हैं—उसको यह समझाने में पाँच बरस लगता है कि उसके अपने जीवन का कोई मूल्य नहीं है, कि मूल्य केवल उसकी सेना का है और वही सर्वोपरि है, कि आदेश का पालन होना ही चाहिए, चाहे वह कैसा ही आदेश क्यों न हो। हर रोज़, दिन में दस घण्टे और इस तरह के पाँच बरसों की ट्रेनिंग और उसके बाद तुम उन्हें पहाड़ की चोटी पर ले जाकर अगर सामने की तरफ़ महाशून्य में, जिसके नीचे केवल खाई है, पैर बढ़ाने को कहो तो भी वे तुम्हारे आदेश का पालन करेंगे। और तब भी इन गुलामों ने रोम की सबसे अच्छी सेनाओं का सफ़ाया कर दिया।

—इसीलिए मैंने आपको कापुआ से बुलाया ताकि आप मुझे स्पार्टकस

के बारे में बतलायें। ताकि मैं अपनी आँख पर बंधी हुई पट्टी को अलग कर सकूँ।

बाटियाटस ने गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाया। अब वह मुलायम पड़ा। बड़े-बड़े सेनापति भी उससे अपनी राज़ की बातें कहते हैं और वह उन्हें सलाह देता है और यही तो होना चाहिए, यही तो ठीक बात है।

क्रैसस ने कहा—सबसे पहले तो खुद वह आदमी। मुझे उस आदमी के बारे में बतलाओ। देखने में वह कैसा है? तुमने उसे कहाँ पाया?

—आदमी दीखता कुछ है, होता कुछ है।

—सच, बहुत सच, और जब यह बात तुमने समझ ली तो इसका मतलब है कि तुमको आदमी की पहचान है। बाटियाटस को खुश करने के लिए इससे अच्छी दूसरी बात न हो सकती थी।

—उसका स्वभाव नर्म था, बहुत नर्म, इतना कि उसे विनयी भी कहा जा सकता है और वह थ्रेस का रहने वाला है। उसके बारे में इतनी ही बात सच है। बाटियाटस ने अपनी एक उँगली शराब में डुबोयी और मेज़ पर उसको बूँद-बूँद टपकाते हुए अपनी बात कहने लगा—लोग कहते हैं कि देखने में वह बहुत लहीम-शहीम है; मगर नहीं, नहीं, ज़रा भी नहीं। वह कुछ ख़ास लम्बा भी नहीं। उसकी लम्बाई भी मैं समझता हूँ कि आप ही के बराबर होगी। मद्धिम रंग, घुँघराले बाल, गहरी भूरी आँखें। उसकी नाक टूट गयी थी वर्ना मैं समझता हूँ कि उसको खूबसूरत भी कहा जा सकता था। मगर उस टूटी हुई नाक के कारण उसके चेहरे का भाव कुछ भेड़ जैसा हो गया था। उसका चेहरा चौड़ा और खुला हुआ और बहुत सीधा सादा-सा था और इन्हीं सब बातों से उसको देखकर धोखा हो सकता था। अगर किसी दूसरे ने वह हरकतें की होतीं जो उसने कीं तो मैंने उसे मार डाला होता।

—कैसी हरकतें? क्रैसस ने पूछा।

—आह...

—मैं चाहता हूँ कि तुम साफ़-साफ़ दिल खोलकर बात करो क्योंकि मैं उस आदमी की सही तसवीर पाना चाहता हूँ, क्रैसस ने धीरे-धीरे कहा, मैं इस बात का तुम्हें यक़ीन दिलाना चाहता हूँ कि तुम जो कुछ मुझसे कहोगे वह किसी दूसरे को मालूम नहीं होने पायेगा।—उसने थोड़ी देर के लिए उस विशेष घटना के प्रति आग्रह नहीं दिखलाया जिसके लिए बाटियाटस ने स्पार्टकस को मार डालने की बात कही थी और बोला—मैं उसकी पृष्ठभूमि भी जानना चाहता हूँ; तुमने उसको कहाँ ख़रीदा और वह क्या था?

—वह क्या था? ग्लैडिएटर के बारे में यह सवाल ही कहाँ उठता है?

बाटियाटस ने मुस्कराकर कहा और हाथ फैला दिये—वह निरा गुलाम तो होता नहीं, आप जानते ही हैं; कम-से-कम कापुआ के ग्लैडिएटर कोई मेरे गुलाम नहीं होते। वह एक ख़ास तरह के लोग होते हैं। अगर तुमको कुत्ते लड़ाने का शौक़ है तो तुम नन्हीं-नन्हीं लड़कियों के हाथों पले हुए घर के अन्दर रहनेवाले नाज़ुक कुत्ते तो ख़रीदते नहीं। उसी तरह अगर तुम आदमियों को लड़ाते हो तो तुम्हें ऐसे आदमियों की ज़रूरत होती है जो लड़ सकते हैं, ऐसे आदमी जो गुस्सा करना जानते हैं, जो नफ़रत कर सकते हैं, जिनके भीतर पित्त का तीखा ज़हर है। इसलिए मैं अपने दलालों को बतला देता हूँ कि मैं ऐसे आदमियों की ख़रीद करने के लिए आया हूँ जिनके अन्दर यह तीखा ज़हर है। इस तरह के लोग घर के भीतर ख़िदमतगारी के काम के नहीं होते और न ही खेतों के काम के होते हैं कि उन्हें जागीरों पर लगाया जा सके।

—उन्हें जागीरों पर क्यों नहीं लगाया जा सकता ? क्रैसस ने पूछा।

—क्योंकि अगर आदमी भीतर से टूट चुका है तो मुझे उसकी ज़रूरत नहीं और अगर तुम उस को तोड़ नहीं सकते तो तुम उसको चाहे मार ही डालो मगर उससे काम नहीं ले सकते। वह काम को ख़राब कर देता है। वह दूसरों को भी ख़राब कर देता है जो कि काम करते हैं। उसे एक रोग समझो।

—तब फिर वह लड़ता क्यों है ?

—हाँ, यही तो सवाल है और अगर तुम इस सवाल का जवाब नहीं दे सकते तो ग्लैडिएटरों के संग काम नहीं कर सकते। पुराने ज़माने में अखाड़े में लड़नेवाले इन लोगों को बुस्तुआराई कहा जाता था। वे लोग लड़ते थे क्योंकि उन्हें लड़ना अच्छा लगता था और उनके दिमाग़ में एक पागलपन रहता था और ऐसे लोग बहुत थोड़े होते थे और वे गुलाम न होते थे। —उसने अर्थपूर्ण ढंग से अपने सिर को छुआ और कहा—जब तक किसी के दिमाग़ में इस जगह पर कोई ख़राबी न हो वह ऐसे नहीं लड़ सकता कि खून से लथपथ हो जाय। किसी को यह चीज़ अच्छी नहीं मालूम होती। ग्लैडिएटर को भी लड़ना अच्छा नहीं मालूम होता। वह लड़ता इसलिए है कि तुम उसके हाथ में एक हथियार थमा देते हो और उसकी जंजीरें खोल देते हो। और उसके हाथ में जब हथियार होता है तब वह कल्पना करने लगता है कि वह आज़ाद है; और यही वह चीज़ है जिसकी कि उसे चाह है, यही कि उसके हाथ में हथियार हो और वह कल्पना करे कि वह आज़ाद है। और तब फिर उसकी अक्ल से तुम्हारी अक्ल की टक्कर होती है और चूँकि वह बहुत बदमाश होता है इसलिए तुमको भी उसके संग बदमाश बनना पड़ता है।

—और ऐसे आदमी तुम्हें मिलने कहाँ हैं ? क्रैसस ने पूछा। इस आदमी ने जो अपने व्यवसाय को समझता था जिस सीधे-सादे सपाट ढंग से अपनी बात कही थी उससे क्रैसस को काफ़ी हैरानी भी हुई थी और गहरी दिलचस्पी भी मालूम हुई थी।

—सिर्फ़ एक जगह है जहाँ इस तरह के आदमी मिल सकते हैं जिन की मुझे ज़रूरत होती है। सिर्फ़ एक जगह। खानों में। केवल खानों में और कहीं नहीं। उन्हें ऐसी जगह से आना होगा जिसके मुकाबले में सेना भी स्वर्ग है, जागीर पर काम करना भी स्वर्ग है और यहाँ तक कि फाँसी भी मुक्ति है। यही वह जगह है जहाँ मेरे दलाल उनको पाते हैं। उसी जगह उन्होंने स्पार्टकस को भी पाया। और वह कोरू था। आप समझते हैं इस शब्द का क्या मतलब है ? मेरा ख़याल है कि यह मिस्री भाषा का शब्द है।

क्रैसस ने सिर हिलाकर इनकार किया।

—इसका मतलब होता है तीन पीढ़ियों का गुलाम। गुलाम के बेटे का बेटा। मिस्री ज़बान में इस लफ़्ज का मतलब एक तरह का ग़लीज़ जानवर भी होता है। पेट के बल घिसटनेवाला एक जानवर। एक ऐसा जानवर जिसे दूसरे जानवर भी नहीं छूते। कोरू का यही मतलब है। आप पूछ सकते हैं कि मिस्र में यह चीज़ क्यों शुरू हुई। मैं आपको बतलाता हूँ, दुनिया में लानिस्ता से, अखाड़े के मालिक से भी गयी-गुज़री चीज़ें हैं। मैं जब आपके इस ख़ेमे में आया तो आपके अफ़सरों ने बार-बार मुझे देखा। क्यों ? क्यों ? इसीलिए न कि हम सब बूचड़ हैं और गोश्त के टुकड़ों का सौदा करते हैं अगर यह बात न थी तो और क्या बात थी ?

वह शराब के नशे में चूर था। ग्लैडिएटरों का वह उस्ताद जो कापुआ में अपना स्कूल चलाता था, वह मोटा आदमी, इस वक़्त उसे अपने ऊपर बहुत दया आ रही थी। इस वक़्त उसकी आत्मा बोल रही थी। गन्दे मोटे सुअर के पास भी जो ग़लाज़त पर ही जीता है आत्मा होती है।

—और स्पार्टकस कोरू था, क्रैसस ने धीमे से कहा, क्या स्पार्टकस मिस्र से आया था ?

बाटियाटस ने हामी भरी। वह थ्रेस का रहने वाला था मगर मिस्र से आया था। मिस्र की सोने की खानों के मालिक एथेन्स से, गुलाम ख़रीदते हैं और जहाँ तक होता है, कोरू लोगों को ख़रीदते हैं और थ्रेस के गुलाम ख़ास अच्छे समझे जाते हैं।

—क्यों ?

—कहा जाता है कि वे लोग ज़मीन के नीचे काम करने में अच्छे होते हैं।

—अच्छा यह बात है। मगर तब फिर यह क्यों कहा जाता है कि स्पार्टकस को यूनान में खरीदा गया ?

—मैं क्या जानूँ कि क्या-क्या बातें कही जाती हैं और क्यों कही जाती हैं ? मगर मैं जानता हूँ कि उसे कहाँ ख़रीदा गया क्योंकि मैंने ही उसे खरीदा। तीब्ज़ में। आप मुझ पर सन्देह करते हैं ? क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ? क्या इसलिए कि मैं मोटा-ताज़ा लानिस्ता हूँ और गॉल में इस गन्दी बारिश में अकेले आदमी की तरह बैठा हुआ हूँ जिसके आगे-पीछे कोई नहीं है ? आख़िर क्यों अकेलापन ही मेरा साथी है ? आपको मुझे नीची निगाह से देखने का क्या हक़ है ? आप की ज़िन्दगी आपकी है और मेरी ज़िन्दगी मेरी

—आप मेरे सम्मानित अतिथि हैं। मैं आपको नीची निगाह से नहीं देखता—क्रैसस ने कहा।

बाटियाटस मुस्कराया और उसकी ओर झुका—आप जानते हैं मुझे क्या चाहिए ! आप जानते हैं मुझे किस चीज़ की ज़रूरत है ! हम दोनों दुनियावी आदमी हैं। मुझे एक औरत चाहिए। आज रात।—उसकी आवाज़ फटी हुई थी मगर नर्म थी और उसमें याचना का स्वर था, मुझे औरत क्यों चाहिए ! वासना के कारण नहीं, अपने अकेलेपन के कारण। ताकि मैं अपने ज़ख्मों पर मरहम रख सकूँ। आपके पास औरतें हैं। आदमी अपने आपको औरतों से काटकर अलग नहीं करते।

क्रैसस ने कहा—पहले तुम मुझे स्पार्टकस और मिस्र के बारे में बतलाओ। उसके बाद हम लोग औरतों के बारे में बात करेंगे।

२

और इस तरह देखने में आया कि इसके पहले कि किताबों और धार्मिक उपदेशों में नरक की बात आयी और शायद बाद में भी धरती पर एक नरक था जिसे लोगों ने देखा और गौर से देखा और खूब अच्छी तरह पहचाना। क्योंकि यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह उन्हीं नरकों के बारे में लिख सकता है जिनकी वह पहले रचना कर लेता है।

जुलाई के भयानक सूखे महीने में नील नदी से तीब्ज़ को जाओ। सिर्फ पहले प्रपात तक जाओ और वहाँ पहुँचकर ही तुम शैतान के अपने राज में पहुँच जाते हो। जरा देखो कि नदी किनारे की हरियाली कैसी सूख गयी है, सिकुड़ गयी है। तुम देखोगे कि रेगिस्तान की पहाड़ियाँ और टीले बारीक से भी बारीक बालू में तबदील हो गये हैं। धुआँ और बारूद। हवा उसे छूती है और यहाँ उसका विस्फोट होता है और वहाँ दूर-दूर तक उसके पंजे पहुँच जाते

हैं। गरमी के दिनों में नदी जहाँ धीरे-धीरे बहती है उसके ऊपर सफेद धूल की एक तह होती है। हवा में भी धूल होती है और अभी से गरमी बहुत तेज हो चुकी रहती है।

मगर इस जगह पर कम-से-कम कुछ हवा तो होती है। अब तुम पहले प्रपात को पार कर आये हो और तुम्हें नूबियन रेगिस्तान में दाखिल होना है जो कि दक्खिन में और पूरब में फैला हुआ है। इस रेगिस्तान में तुम इतनी दूर तक चले जाओ कि नदी पर की वह थोड़ी सी हवा भी बाकी न रहे मगर इतनी दूर नहीं कि लाल सागर से आती हुई हवा का एक हल्का सा झोंका भी मिल सके। और तब तुम दक्खिन की ओर बढ़ो।

एकाएक, वहाँ पहुँचकर, तेज हवा रुक जाती है और धरती मर जाती है। वहाँ बस फिर साँस लेने की हवा रह जाती है और वह भी जैसे गरमी से कलप की हुई, गरमी से काँपती हुई और वहाँ मनुष्य की इन्द्रियाँ भी अयोग्य हो जाती हैं क्योंकि जो चीज जैसी है वैसी दिखायी नहीं देती और सभी कुछ गरमी से ऐंठ जाता है, बरर जाता है और रेगिस्तान भी अब पहले जैसा नहीं रह जाता। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि रेगिस्तान सब जगह एक सा होता है, यह उनका भ्रम है। क्योंकि रेगिस्तान का मतलब होता है पानी की कमी और पानी की कमी कहीं कैसी है और कहीं कैसी। इसलिए रेगिस्तान भी उस जगह के प्राकृतिक दृश्य और भूमि के स्वभाव के अनुसार बदलता चलता है। चट्टानी रेगिस्तान और पहाड़ी रेगिस्तान और रेतीला रेगिस्तान और सफेद नमक का रेगिस्तान और ज्वालामुखी के लावे का रेगिस्तान और इन सब के ऊपर सफेद धूल के बगूले का वह भयानक रेगिस्तान जिस पर मौत के अपने दस्तखत होते हैं।

यहाँ एक भी चीज नहीं पैदा होती। चट्टानी रेगिस्तान की वह सूखी, ऐंठी हुई, सख्त, चीमड़ झाड़ियाँ भी नहीं, रेतीले रेगिस्तान की वह अकेली खड़ी हुई उदास सरपत भी नहीं। कुछ भी नहीं।

इस रेगिस्तान के अन्दर घुसो। सफेद धुस्से में होकर अपने थके हुए पैर लिए घुसो और उस वक्त महसूस करो कि कैसे भयानक गरमी की लहरें आकर तुम्हारी पीठ से टकराती हैं। इतनी गर्म, इतनी गर्म जितनी कि हो सकती हैं मगर तब भी इतनी नहीं कि आदमी मर जाये और छुट्टी पाये। नहीं, जिये और भोगे। ऐसा है यहाँ पर। इस तपते हुए डरावने रेगिस्तान के बीच से रास्ता बनाओ। और तब समय अनन्त हो जाता है और स्थान दुःस्वप्न की एक विभीषिका। मगर तब भी तुम हो कि चलते जाते हो, चलते जाते हो, चलते जाते हो, चलते जाते हो। नरक और क्या है ? नरक वहाँ आरम्भ होता है जहाँ जीवन के सीधे-सादे आवश्यक व्यापार भी यन्त्रणा बन

जाते हैं और यह ज्ञान युग-युगान्तर से चले आते उन सभी लोगों के हिस्से में पड़ा है जिन्होंने इस धरती पर खुद इन्सान के बनाये हुए नरक का स्वाद जाना है। अब तो चलने में, साँस लेने में, देखने में, सोचने में हर बात में डर मालूम होता है। मगर यह चीज सदा नहीं रहती। एकाएक धुन्ध छँटती है और नरक की अगली मंजिलें दिखायी देने लगती हैं। तुम्हें अपनी आँखों के सामने पहाड़ की काली चोटियाँ नजर आती हैं, अजीबो गरीब, किसी डरावने सपने में देखी हुई सी काली चोटियाँ। यह काले पत्थर की चट्टानी दीवार है। तुम काले पत्थर की ओर बढ़ते हो और तब तुम्हें दिखायी देता है कि उस काले पत्थर के बीच चमकते हुए सफेद संगमरमर की तमाम लरें ही लरें हैं। ओह ओह, कितना उज्ज्वल है संगमरमर, कितना श्वेत! वाह रे, कैसा दब-दब चमक रहा है, कैसी स्वर्गिक दीप्ति है और उचित ही तो है क्योंकि स्वर्ग के मार्ग में सोने की ईंटें बिछी हुई हैं और इस सफेद संगमरमर में अद्भुत सोना है। इसीलिए लोग यहाँ पर आये और इसीलिए तो तुम भी यहाँ पर आ रहे हो क्योंकि संगमरमर के गर्भ में अकूत सोना है। और पास जाकर देखो। यह बहुत पुरानी बात है कि मिस्र के फरऊनों ने इस काली चट्टान को तलाश किया था; मगर तब उनके पास सिर्फ ताँबे और काँसे के औजार थे और इसलिए वे सिर्फ़ ऊपर-ही-ऊपर छील और खुरच पाते थे। मगर बहुत पीढ़ियों तक ऊपर-ही-ऊपर खुरचते-खुरचते सोना खत्म हो गया और इस बात की ज़रूरत हुई कि काली चट्टान के भीतर पैठा जाय और सफ़ेद संगमरमर को काटा जाय। अब यह बात सम्भव थी क्योंकि ताँबे का युग खत्म हो गया था और लोहे का युग आ गया था और अब लोग कुदालियों और लोहे के पच्चरों और नौसेरे हथौड़ों से संगमरमर की खुदाई कर सकते थे।

मगर अब एक नये तरह के आदमी की ज़रूरत थी। वह गरमी और धूल और शरीर की वह तोड़-मरोड़ जो सोना वहन करने वाली उन टेढ़ी-मेढ़ी लरों के पीछे-पीछे चलते हुए चट्टान के भीतर पैठने के लिए ज़रूरी थी, उनके कारण इथियोपिया या मिस्र के किसानों को काम पर लगाना असम्भव हो गया था और जो साधारण गुलामों की बात कहो तो एक तो उनके दाम बहुत थे और दूसरे उनको मरने में भी देर न लगती थी। इसलिए इस जगह पर ले आये गये लड़ाई की आग में तपे हुए सिपाही जो कि गुलाम बना लिये गये थे और ले आये गये तीन पीढ़ियों से गुलाम बच्चे जो कि कोरू थे, गुलाम की औलाद की औलाद, जिनका जन्म और पालन-पोषण एक ऐसी प्रणाली में हुआ था जिसमें केवल वही बच पाते थे जो मज़बूत और सख्तजान होते थे। और बच्चों की ज़रूरत तो जैसे थी ही

क्योंकि काली चट्टान की दीवार के भीतर जहाँ वे तहें संकरी हो जाती थीं वहाँ बस बच्चा ही काम कर सकता था। फ़रऊनों का वह पुराना वैभव और उनकी वह ताकत खत्म हो गयी थी और मिस्र के यूनानी बादशाहों की थैलियाँ छीज गयी थीं : उनके ऊपर अब रोम का हाथ पड़ गया था और गुलामों के रोमन व्यापारियों ने खानें अपने हाथों में ले ली थीं। कुछ भी कहो, गुलामों से अच्छी तरह काम लेना बस रोमनों को आता था।

और इस तरह तुम खान पर पहुँचते हो, वैसे ही जैसे स्पार्टकस पहुँचा था, एक सौ बाईस थ्रेसियन जो एक लम्बी क़तार में चल रहे थे, जिन सब की गर्दनों में लोहे की एक ही जंजीर थी जो उन्हें बाँधे हुए थी। उन्होंने अपनी जलती हुई गर्म जंजीरों को ढोते हुए पहले प्रपात से अपना सफर शुरू करके पूरे रेगिस्तान को पार किया। उस क़तार में सामने की तरफ़ से बारहवाँ आदमी स्पार्टकस है। वह प्रायः नग्न है और थोड़ी देर में बिलकुल नंगा हो जायगा। वह एक छोटी सी लंगोटी लगाये है और उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई है, उसी तरह जैसे उस क़तार में सभी के बाल लम्बे हैं और सभी की दाढ़ी बढ़ी हुई है। उसकी चप्पल एकदम घिस गयी है लेकिन जो भी राहत उनसे मिल सके उन्हीं की ख़ातिर वह उस चप्पल को पहने है क्योंकि यद्यपि उसके पैर की खाल चौथाई इञ्च मोटी और चमड़े की तरह सख्त है, तब भी वह रेगिस्तान की जलती हुई रेत से उसकी रक्षा करने में असमर्थ है।

कैसा है यह आदमी स्पार्टकस ? वहाँ रेगिस्तान में अपने गले की भारी जंजीर को ढोते हुए इस स्पार्टकस की उम्र तेईस साल है : मगर उसकी उम्र की कोई निशानी उसके ऊपर नहीं है, वह तो उन लोगों में है जिन्हें उनका कड़े श्रम का जीवन ही एक प्रकार से वयसातीत बना देता है, जो न कभी किशोर होते हैं, न युवा और न वृद्ध, जो सदा एक से रहते हैं, हाँ वयसातीत। सिर से पैर तक वह रेत की सफ़ेद धूल से ढँक गया है और वह धूल उसके बालों में और दाढ़ी में और चेहरे में समा गयी है मगर उस रेत के नीचे उसके शरीर की खाल पकी हुई जली हुई मिट्टी के रंग की हो गयी है, वैसी ही जैसी उसकी वे काली काली, गहरी और पैनी आँखें जो उसके मुर्दों जैसे चेहरे पर हिंस्र घृणा के लाल अंगारों की तरह चमक रही हैं। उसके जैसे लोगों के लिए वह पकी हुई मिट्टी के रंग की खाल जिन्दगी की एक ज़रूरी शर्त है, गोरी चमड़ी और पीले बालोंवाले उत्तरी-भूमि के गुलाम खानों में काम नहीं कर सकते : सूरज उन्हें भून कर रख देता है और वे मर जाते हैं, बड़ी तकलीफ़ से मर जाते हैं।

कहना कठिन है कि स्पार्टकस लम्बा है या नाटा क्योंकि जंजीरों में जकड़े हुए लोग पीठ सीधी करके नहीं चला करते और उनका शरीर खूब बटी हुई

मज़बूत कोड़े की रस्सी का सा चीमड़ और नमक लगा लगाकर धूप में सुखाये हुए गोश्त के टुकड़े के समान जो खुश्क तो है, जिसमें पानी ज़रा भी नहीं बचा है मगर जिसमें मांस अभी बाकी है। न जाने कितनी पीढ़ियों तक छाँटने की, पछोरने की यह क्रिया चलती रही और थ्रेस के पथरीले पहाड़ों पर जिन्दगी कभी आसान न थी, इसलिए जो चीज़ उस इम्तहान में से बचकर निकलती थी वह सख्त होती थी और ज़िन्दगी पर उसकी पकड़ मज़बूत होती थी। वह मुट्ठी भर गेहूँ जो उसकी रोज़ की खूराक है, जौ की वह सख्त सपाट लिट्टियाँ ऐसी हैं कि उनमें शरीर को पुष्टि देनेवाली एक चीज़ नहीं है मगर शरीर इतना जवान है कि स्वयं अपने को पुष्टि दे लेता है। उसकी गर्दन मोटी और तगड़ी है मगर जिस जगह पर काँसे का पट्टा पड़ा है वहाँ पर घावों के नासूर बन गये हैं। उसके कन्धों पर अच्छे कसे हुए गोश्त की तहें हैं और उसके शरीर का अनुपात इतना सम है कि वह आदमी अपनी लम्बाई से कम लम्बा नज़र आता है। उसका चेहरा चौड़ा है और चूँकि कभी किसी दारोगा के डण्डे ने उसकी नाक तोड़ दी थी, इसलिए उसका चेहरा जितना सपाट है उससे ज़्यादा सपाट दिखायी देता है और चूँकि उसकी काली आँखें एक दूसरे से काफ़ी दूर हैं, इसलिए उनमें भेड़ों जैसा एक भोलापन है। धूल की तहों और दाढ़ी से ढँका हुआ उसका मुँह बड़ा और ओंठ भरे-भरे हैं, रागवान और संवेदनशील और उसके ओंठ जब पीछे हटते हैं, मुस्कराहट में नहीं दर्द की टीस में—तो तुम्हें दिखायी देता है कि उसके दांत सफ़ेद और बराबर से जड़े हुए हैं। उसके हाथ बड़े और चौकोर और खूबसूरत हैं: सच बात यह है कि उसके शरीर में अगर कोई खूबसूरत चीज़ है तो यही हाथ।

हाँ, तो यही स्पार्टकस है, वह थ्रेसियन गुलाम। गुलाम के बेटे का बेटा। कोई उसके भाग्य को नहीं जानता और भविष्य ऐसी किताब नहीं जिसे खोल-कर कोई पढ़ ले और अतीत भी—जब कि वह अतीत कड़ी-से-कड़ी मेहनत को छोड़कर और कुछ न हो—नाना प्रकार की पीड़ाओं के कुहासे में डूब जाता है। हाँ, तो यही स्पार्टकस है जो भविष्य को नहीं जानता और अतीत को याद करने के लिए जिसके पास कोई कारण नहीं है और कभी उसके मन में यह विचार नहीं आया है कि वे जो मशक्कत करते हैं कभी और कुछ भी करेंगे और न यही बात उसके मन में आयी है कि कभी ऐसा भी समय आयेगा जब मेहनत से चूर आदमियों की पीठ पर कोड़े नहीं बरसेंगे।

उस गर्म रेत में अपने थके हुए पैर लिये धीरे-धीरे चलते हुए वह क्या सोच रहा है? तो उस सम्बन्ध में यह जानना जरूरी है कि जब लोगों के गले में जंजीर होती है तो सोचने के लिए उनके पास कुछ खास नहीं रहता और

तब यही सोचना काफी होता है और इससे ज्यादा कुछ न सोचना ही ठीक होता है कि अब फिर मैं कब खाऊँगा, अब पिऊँगा, कब सोऊँगा। इसलिए स्पार्टकस के दिमाग में या उसके उन थ्रेसियन साथियों के दिमाग में जो उसके साथ जंजीर में बंधे हुए चल रहे हैं, कोई पेचीदा खयाल नहीं है। इन्सानों को जब तुमने जानवर बना दिया तब फिर वे फरिश्तों की बात नहीं सोच सकते।

मगर अब दिन खत्म होने आ रहा है और दृश्य बदल रहा है और ऐसी जिन्दगी में बँधे हुए लोग छोटी-छोटी उत्तेजनाओं और मनबहलाव को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं। स्पार्टकस आँख उठाता है और उसे चट्टानी दीवार की वह काली पट्टी दिखाई देती है। गुलामों के पास अपना भूगोल होता है और गो कि वे समुद्रों के आकार, पहाड़ों की ऊँचाई और नदियों की दिशा के बारे में नहीं जानते तो भी स्पेन की चाँदी की खानों और अरब की सोने की खानों और उत्तरी अफ्रीका की लोहे की खानों और काकेशस की ताँबे की खानों और गॉल की टीन की खानों के बारे में खूब जानते हैं। उनके पास विभीषिका का अपना शब्दकोष होता है, वे इस ज्ञान से सान्त्वना पा लेते हैं कि जहाँ पर वे हैं उससे भी बुरी कोई और जगह है : मगर सच बात यह है कि नूबिया की उन काली चट्टानों से बुरी जगह समूचे संसार में नहीं है।

स्पार्टकस उस चट्टानी दीवार को देखता है, दूसरे उसको देखते हैं और उस पूरी कतार की थकी हुई, दर्द में डूबी हुई गति थम जाती है और पानी और गेहूँ का बोझ उठाये ऊँट भी थम जाते हैं और वे दारोगा भी रुक जाते हैं जिनके हाथों में कोड़े हैं और बल्लम हैं। सभी नरक की इस काली पट्टी को देखते हैं। और वह कतार फिर चल पड़ती है।

जब वे उस काली चट्टान के पास पहुँचते हैं तब सूरज उस चट्टान के पीछे डूब रहा होता है और उस वक्त वह चट्टान और भी काली, और भी बर्बर, और भी मनहूस हो जाती है। यह दिन के काम का अन्त है और गुलामों की टोलियाँ खान में से बाहर आ रही हैं।

स्पार्टकस सोचता है, ये क्या हैं, ये क्या हैं !

और उसके पीछे वाला आदमी धीरे से बुदबुदाता है, भगवान मेरी मदद कर !

मगर भगवान यहाँ उसकी मदद नहीं करेगा। भगवान यहाँ नहीं है, भगवान का यहाँ क्या काम ! और तब स्पार्टकस की समझ में आता है कि ये चीजें जिन्हें वह देख रहा है रेगिस्तान के कोई विशेष जन्तु नहीं हैं बल्कि उसके जैसे ही आदमी हैं और बच्चे हैं जैसा कि वह भी कभी था। यही हैं वे। मगर उनके अन्दर जो अन्तर आया है वह बाहर से भी आया है और भीतर से भी। और बाहर की जिन शक्तियों ने उन्हें यह रूप दिया है जो

कि मनुष्य का रूप नहीं है, उन शक्तियों को इन लोगों के भीतर से भी मदद मिली है, इस रूप में कि उनके भीतर से आदमी बनने की आकांक्षा या चेतना ही मिट गयी है। देखो, ज़रा उन्हें देखो तो। स्पार्टकस का हृदय जो इन वर्षों में पत्थर हो गया है, भय से और पीड़ा से मसोस उठता है। उसके भीतर के करुणा के स्रोत, जिन्हें वह समझता था कि सूख गये, वे फिर गीले हो जाते हैं और वह देखता है कि उसका सूखा हुआ शरीर, जिसमें पानी की एक बूँद न बची थी, अब भी आँसू बहा सकता है। वह उनको देखता है। उसको आगे बढ़ाने के लिए उसकी पीठ पर कोड़ा पड़ता है मगर तब भी वह खड़ा खड़ा उनको देखता है।

खान के भीतर वे पेट के बल घिसटते रहे हैं और अब बाहर आ जाने पर भी वे वैसे ही जानवरों की तरह पेट के बल घिसट रहे हैं। जब से वे यहाँ आये हैं, उन्होंने नहाया नहीं है और न फिर कभी नहायेंगे। उनकी चमड़ी काली मिट्टी और बादामी रंग की धूल का एक पँचमेल है। उनके बाल लम्बे और उलझे हुए हैं और वे या तो बच्चे हैं या उनके दाढ़ियाँ हैं। उनमें कुछ काले हैं और कुछ गोरे मगर दोनों में फर्क अब इतना कम है कि उस पर निगाह नहीं जाती। उनके घुटनों और कुहनियों पर बदनुमा घट्टे हैं और वे नंगे हैं, बिलकुल नंगे। और क्यों न हों? क्या कपड़े उनकी जिन्दगी बढ़ा देंगे! खान का लक्ष्य केवल एक है और वह है रोमन व्यापारियों को मुनाफा पहुँचाना और गन्दे चीथड़ों की भी कुछ तो कीमत होती ही है।

मगर एक चीज है जो सब पहने हैं। सब की गर्दन में काँसे या लोहे का एक पट्टा है और जब वे हाथों या पैरों के बल घिसटते हुए उस काली चट्टान से नीचे आते हैं तो दारोगा हर पट्टे को एक लम्बी जंजीर में जोड़ देता है और जब एक जंजीर में बीस लोग हो जाते हैं तो वे धीरे-धीरे थके-थके अपने क्वार्टरों की तरफ़ चल पड़ते हैं। यह गौर करने की बात है कि कभी कोई नूबिया की खानों से भागा नहीं : भागना असम्भव था। इस खान में एक साल काम करने के बाद फिर कोई कैसे मनुष्यों के संसार का प्राणी बना रह सकता था? वह जंजीर आवश्यकता से अधिक एक प्रतीक थी।

स्पार्टकस आँख गड़ाकर उन्हें देखता है और अपनी जाति के, मानव जाति के लोगों को खोजता है जो कि अकेली जाति बच जाती है जबकि आदमी गुलाम है। वह अपने मन में कहता है, बात करो, एक दूसरे से बात करो मगर वे बात नहीं करते। वे मौत की तरह खामोश हैं। वह अपने से कहता है, मुस्कराओ, मगर कोई नहीं मुस्कराता।

वे हाथों में अपने औजार लिये हैं। लोहे की कुदालियाँ और छेनियाँ और डण्डे। उनमें से बहुतों के सिर पर बदनुमा लैम्प फीते से बंधे हैं। मकड़ियों-

की तरह दुबले-पतले बच्चों के चेहरे चलते समय दर्द से फड़कते हैं और वे पूरे वक्त रोशनी को देखकर आँख मूँद-मूँद लेते हैं। ये बच्चे कभी बड़े नहीं होते ; खान में आने के बाद वे ज्यादा-से-ज्यादा दो साल तक काम कर पाते हैं। मगर क्या किया जाय, सोना काटने के लिये जगह जहाँ बहुत तंग हो वहाँ उनके बिना काम भी तो नहीं चल सकता। वे अपनी जंजीरों का बोझ ढोते हुए थ्रेसियनों के बगल से गुज़र जाते हैं और उन नये आनेवालों की तरफ़ सिर घुमा कर देखते तक नहीं। उन्हें कोई औत्सुक्य नहीं है। किसी बात की कोई परवाह नहीं।

और स्पार्टकस समझ जाता है। वह अपने आप से कहता है, थोड़ी देर में मुझे भी किसी बात की कोई परवाह न रह जायगी। और यह एक ऐसी चीज़ है जिससे ज्यादा डरावनी कोई और चीज़ नहीं।

वे गुलाम अब खाना शुरू करते हैं और थ्रेसियनों को भी उनके संग ले जाया जाता है। उनकी बारक, चट्टान की वह आड़, चट्टानी दीवार के ठीक नीचे बनी हुई थी। वह बहुत प्राचीन काल में कभी बनी थी। किसी को याद नहीं कि वह कब बनी। वह काले पत्थर के मोटे कटे हुए बहुत बड़े बड़े टुकड़ों से बनी थी और उसके अन्दर रोशनी के प्रवेश के लिए बस उसके दोनों तरफ के वे द्वार हैं। उसे कभी साफ़ नहीं किया गया। दशाब्दियों से गन्दगी उसके फ़र्श पर सड़ती रही है और सूख सूख कर कड़ी पड़ती गयी है। दारोगा लोग कभी उसके अन्दर दाख़िल नहीं होते। अगर उसके अन्दर कभी कोई झगड़ा हो तो खाना-पानी बाहर ही रोक लिया जाता है और जब खाने-पानी के बिना काफी दिन गुज़र जाते हैं तो वे गुलाम सीधे हो जाते हैं और जानवरों की तरह हाथ पैर के बल घिसटकर बाहर आ जाते हैं क्योंकि वे भी जानवर ही हैं। जब वहाँ अन्दर कोई मर जाता है तो गुलाम उसके शरीर को बाहर ले आते हैं मगर कभी-कभी कोई नन्हा बच्चा उस लम्बी बारक में भीतर कहीं दूर पर मर जाता है और किसी का ध्यान उस पर नहीं जाता और जब उसका शरीर सड़ने लगता है तो उसकी बदबू से ही उन्हें पता चलता है कि वह बच्चा अब नहीं है। ऐसी जगह है वह बारक।

उसके भीतर गुलाम बग़ैर ज़ंजीर के दाख़िल होते हैं। दरवाज़े पर उनकी ज़ंजीर खोल दी जाती है और उन्हें लकड़ी के एक कटोरे में खाना और एक छोटी सी मशक में पानी दे दिया जाता है। उस मशकची में सेर भर से कुछ कम पानी रहता है और उन्हें दिन में दो बार यह राशन मिलता है। मगर ऐसी खुश्क जगह में गर्मी शरीर का जितना पानी सुखा डालती है उसको पूरा करने के लिए दो सेर पानी काफी नहीं होता और इस तरह धीरे धीरे उन गुलामों के शरीर का पानी सूखता चला जाता है। अगर दूसरी चीज़ें उनकी

जान नहीं ले लेतीं तो इस पानी की कमी से आगे पीछे उनका गुर्दा खराब हो जाता है और जब गुर्दे का दर्द इतना ज्यादा बढ़ जाता है कि वे काम नहीं कर सकते तो उन्हें खदेड़ कर बाहर रेगिस्तान में पहुँचा दिया जाता है ताकि वहीं पर वे मर जायँ।

ये सारी बातें स्पार्टकस जानता है। गुलामों का ज्ञानकोष उसका है और गुलामों की जाति भी उसकी है : उसी में वह पैदा हुआ, उसी में वह बड़ा हुआ, उसी में वह पका। वह गुलामों की ज़िन्दगी के असली भेद को समझता है। उसके मूल में होती है एक लालसा—लालसा आनन्द की नहीं, विश्राम की नहीं, खाने की नहीं, संगीत की नहीं, हँसी की नहीं, प्रेम की नहीं, गरमाहट की नहीं, औरतों की नहीं, शराब की नहीं, इनमें से किसी भी चीज़ की नहीं लेकिन बस एक लालसा जीते रहने की, न मरने की, बस इतना ही कि मैं बचा रहूँ।

वह नहीं समझ पाता कि ऐसा क्यों। इस बचे रहने में कोई कारण, कोई युक्ति तो है नहीं : मगर ज्ञान मात्र ऐन्द्रिक चेतना तो नहीं होता। वह उससे ज्यादा कुछ होता है। इस तरह कोई प्राणी बचा न रह सकता। प्राण रक्षा की योजना सरल नहीं होती, सीधी भी नहीं होती। वह उन सारी समस्याओं से ज्यादा पेचीदा और गम्भीर और कठिन होती है जिनका सामना वे लोग करते हैं जिनके सामने कभी यह प्राण रक्षा का सवाल नहीं खड़ा होता। और इसका भी कारण है। बात बस इतनी है कि स्पार्टकस को यह कारण मालूम नहीं।

अब वह ज़िन्दा रहेगा, अपने प्राणों को बचाकर रक्खेगा। वह अपने आप को परिस्थितियों के योग्य बना रहा है, शरीर को मोड़ना सीख रहा है, अपने आपको आबहवा का आदी बना रहा है। उसके भीतर अद्‌भुत तरलता और लचीलापन है। वह इस विचार से अपने अन्दर शक्ति एकत्र करता है कि कभी वह उन ज़ंजीरों से मुक्त हो सकेगा। उसने और उसके साथियों ने कितने दिन तक इस ज़ंजीर का बोझ ढोया है—इसे पहने पहने उन्होंने समुद्र पार किया, नील नदी पार की, रेगिस्तान पार किया। हफ़्तों उन्होंने इस जञ्जीर को ढोया और अब वह मुक्त है। उसे अपना शरीर चिड़िया के पर की तरह हलका जान पड़ा मगर यह शक्ति जो वह अपने भीतर अब पा रहा है, उसे योंही न गंवाना चाहिए। वह अपने हिस्से के पानी को ले लेता है—इतना पानी उसने हफ़्तों से नहीं देखा है। मगर वह उसको गट गट पी जाने की ग़लती नहीं करेगा कि वह सब पानी पेशाब बनकर निकल जाय। वह इस पानी पर पहरा देगा और घण्टों तक उसकी छोटी-छोटी चुसकियाँ लेगा ताकि उस पानी की एक एक बूँद उसके शरीर के तन्तुओं में भिदे। वह अपना खाना ले लेता है यानी गेहूँ और सूखी

टिड्डियों समेत पकाया हुआ जौ का शोरबा। ठीक तो है, सूखी हुई टिड्डियों में ताक़त होती है, ज़िन्दगी होती है और गेहूँ और जौ तो मेरे शरीर के अंग हैं। मैंने इससे भी बुरा खाना खाया है और हर खाने का आदर करना चाहिए। जो लोग अपने मन में भी खाने का निरादर करते हैं वे खाने के शत्रु हो जाते हैं और जल्दी ही मर जाते हैं।

वह बारक के अँधेरे में घुस जाता है और सड़ाँद के बफारे उसे झिंझोड़ डालते हैं। मगर कहीं कोई बदबू से भी मरता है! और कोई निरा बेवकूफ़ हो या आज़ाद आदमी हो तब तो कै करे, कै भी तो सब लोग नहीं कर सकते। वह इस रूप में अपने पेट का रत्ती भर खाना खराब नहीं करेगा। वह इस बदबू से लड़ेगा नहीं : ऐसी चीज़ों से लड़ा नहीं जा सकता। इसके बदले वह इस बदबू को गले लगायेगा, उसका स्वागत करेगा और उसे अपनी शरीर में जज्ब होने देगा और फिर जल्दी ही उसके भीतर से इस चीज़ का डर जाता रहेगा।

वह अँधेरे में चल रहा है और उसके पैर उसे राह दिखा रहे हैं। उसके पैर आँखों के समान हैं। नहीं, मेरे पैर न फंसने चाहिए, किसी भी हालत में मुझे गिरना न चाहिए क्योंकि मेरे एक हाथ में खाना है और दूसरे में पानी। अब वह संभल संभल कर पत्थर की दीवार तक पहुँच जाता है और उससे टिक कर बैठ जाता है। यह जगह इतनी बुरी नहीं। पत्थर ठण्डा है और अच्छा मालूम हो रहा है और उसकी पीठ को सहारा दे रहा है। वह खाना खाता है और पानी पीता है। और उसके चारों तरफ़ दूसरे लोगों और बच्चों के शरीर का हिलना-डुलना, साँस लेना और मुँह चलाना जारी है जो सब ठीक वही काम कर रहे हैं जो कि स्पार्टकस कर रहा है। स्पार्टकस के शरीर की विचक्षण इन्द्रियाँ उसकी सहायता करती हैं और अपने लिए उन्हें जिस चीज़ की ज़रूरत है उसे बड़ी कुशलता से उस ज़रा से खाने और ज़रा से पानी में से खींच लेती हैं। वह अपने कटोरे में से खाने का आखिरी दाना उठाता है, बचा-खुचा पानी पी जाता है और कटोरे की भीतरी लकड़ी को चाट लेता है। उसके खाने का सम्बन्ध भूख से नहीं है। खाना प्राण-रक्षा का उपाय है, खाने का छोटे-से-छोटा दाना प्राण-रक्षा का उपाय है।

खाना खाया जा चुका है और जिन लोगों ने खाना खाया है उनमें से कुछ सन्तुष्ट हैं और कुछ हैं जो निराश हो रहे हैं। इस जगह से निराशा नहीं खतम हुई है : आशा चली जा सकती है मगर निराशा ज़्यादा बुरी तरह पकड़े रहती है और फिर आहें होती हैं और कराहें और आँसू होते हैं और कहीं किसी की काँपती हुई चीख गूँज जाती है। और थोड़ी बहुत बातचीत भी होती है और एक टूटी हुई आवाज़ पुकारती है—स्पार्टकस तुम कहाँ हो?

—मैं यहाँ हूँ, थ्रेसियन—वह जवाब देता है।

दूसरी आवाज़ कहती है—थ्रेसियन यहाँ है, यहाँ है। वे उसके अपने लोग हैं और उसके चारों तरफ़ सिमट आते हैं। वे उसके इतने पास आ जाते हैं कि वह उनके हाथों का स्पर्श अनुभव करने लगता है। शायद वे दूसरे गुलाम भी उसकी बात सुन रहे हों और कम-से-कम शान्त तो बिलकुल हैं। नरक में नये-नये आने वालों के लिए यह उचित ही है। शायद वे जो और पहले यहाँ आये, इस समय वे बातें याद कर रहे हैं जिन्हें याद करने में उन्हें सबसे ज्यादा डर मालूम होता है। उनमें से कुछ ऐटिक ज़बान के शब्द समझते हैं और कुछ नहीं समझते। शायद अब भी कहीं पर थ्रेस के हिमानी शिखरों की स्मृति बाकी हो, वहाँ की वह प्राण जुड़ानेवाली ठण्डक, चीड़ के जंगलों में बहते हुए वे नाले और चट्टानों पर कूदती हुई वे काली बकरियाँ। कौन जानता है कि उस काली चट्टान के अभागे लोगों में कौन-कौन सी स्मृतियाँ ज़िंदा रही आती हैं?

वे उसे पुकारते हैं 'थ्रेसियन' और अब वह उन्हें अपने चारों तरफ़ महसूस करता है और जब वह अपना हाथ बढ़ाता है तो उनमें से एक के चेहरे का स्पर्श अनुभव करता है, चेहरा जो आँसुओं से नहाया हुआ है। आह, ये आँसू भी अपव्यय हैं।

—हम लोग कहाँ हैं स्पार्टकस, कहाँ हैं हम लोग?—उनमें से एक धीरे से पूछता है।

—हम लोग खोये नहीं हैं। हमें याद है कि हम कैसे यहाँ पर आये।

—हमें कौन याद करेगा?

—हम लोग खोये नहीं हैं—वह दुहराता है।

—मगर कौन हमें याद करेगा?

इस तरह बात नहीं की जा सकती। वह उनके लिए पिता के समान है जैसा कि पुराने कबीलों में होता था; वह अपने से दुगुनी उम्रवाले लोगों के लिए भी पिता ही है। वे सब थ्रेसियन हैं मगर वही उनका नेता है। इसलिए वह धीमे-धीमे गा गा कर उनसे कहता है, जैसे कोई पिता अपने बच्चों को कहानी सुना रहा हो—

सागर तटपर जिस प्रकार सज्जित सेना सी,
अतल गर्भ से वारिधि के उफनाती उठती
मंथन करती हुई प्रबल जल राशि, सामना
करने उस पश्चिमी प्रभंजन का, धरती पर
होती धनुषाकार गिरा करती फेनों के
अस्त्र फेंकती हुई शक्ति से दूर दूर तक;

वैसी ही, उस जैसी ही सैनिक सज्जा में,
व्यूह बना निश्शंक चल दिये दान-निवासी
युद्ध-क्षेत्र को....

वह उन्हें अपने वश में कर लेता है और उनके दुःख दर्द को अपने हाथों में ले लेता है और मन ही मन सोचता है—क्या जादू है इस पुराने गाने में, कैसा आश्चर्य !—वह उन्हें इस भयानक अँधेरे में से निकालकर बाहर लाता है और वे ट्राय के मोती जैसे समुद्री तट पर खड़े हो जाते हैं। वे हैं शहर की सफ़ेद मीनारें। और वे हैं वे सुनहरे काँसे के कवचों से लैस योद्धा। उस नरम मद्धिम गाने की तानें उठती हैं और गिरती हैं और उन गुलामों के दिल में बैठे हुए डर और चिन्ता की गाठों को खोल देती हैं और उस अँधेरे में गति आ जाती है। गुलामों के लिए यूनानी भाषा जानना ज़रूरी नहीं है और सच बात तो यह है कि स्पार्टकस की थ्रेसियन बोली ऐटिका की ज़बान से बहुत कम ही मिलती है। उन्हें अपनी पुरानी किताबों के इस गाने की बात मालूम है जिसमें एक राष्ट्र का ज्ञान और पुराना अनुभव सुरक्षित है और परीक्षा की घड़ी के लिए बचा कर रक्खा हुआ है.......

आखिरकार स्पार्टकस सोने के लिए लेट जाता है। वह सोयेगा। वह जवान है और उसने बहुत पहले [illegible] शत्रु का सामना किया था और उसे हराया था। अब वह अपनी वृत्तियों को समेटता है और अपने बचपन की स्मृतियों मे डूब जाता है। उसे चाहिए ठण्डा साफ नीला आकाश और धूप और मन्द-मन्द बहने वाला पवन और यह सभी चीज़ें वहाँ पर हैं। वह चीड़ के पेड़ों के बीच लेटा हुआ बकरियों को चरते देख रहा है और एक बहुत बुड्ढा आदमी उसके बगल में है। वह बुड्ढा आदमी पढ़ना सिखलाता है। अपनी छड़ी से वह बुड्ढा धूल में एक के बाद दूसरा अक्षर बना कर दिखलाता है। वह बुड्ढा स्पार्टकस से कहता है—पढ़ो, सीखो, मेरे बच्चे। इस तरह हम जो कि गुलाम हैं, अपने संग एक हथियार लेकर चल सकते हैं, ज्ञान ही हमारा हथियार है। उसके बिना हम लोग खेतों मे काम करनेवाले उन जानवरों की तरह हैं। वही ईश्वर जिसने मनुष्य को अग्नि दी उसी ने उनको यह शक्ति भी दी कि वे अपने विचारों को लिख सकें ताकि वे अब बहुत पहले के उस सुनहरे काल के देवताओं के विचारों को फिर से याद कर सकें। उस समय मनुष्य देवताओं के बहुत पास थे और उनसे जब जी चाहे बात कर सकते थे और तब कहीं कोई गुलाम न थे। और वह समय फिर आयेगा।

स्पार्टकस को यह सारी बातें याद आती हैं और तभी उसकी स्मृति स्वप्न में बदल जाती है और वह नींद में डूब जाता है.......

सबेरे नगाड़े पर चोट पड़ने से उसकी नींद खुलती है। नगाड़ा बारक के दरवाजे पर बजाया जाता है और उसकी आवाज पत्थर की उस खोह में बार-बार गूँज जाती है। वह उठता है और अपने आस-पास साथी गुलामों के भी उठने की आवाज सुनता है। वे उस घनघोर अंधेरे में खोह से बाहर निकलने के रास्ते की तरफ बढ़ते हैं। स्पार्टकस अपना प्याला और कटोरा ले लेता है। अगर वह उन्हें लेना भूल जाय तो उसे दिन भर बिना खाने पानी के रहना पड़ेगा मगर वह गुलामी के तौर-तरीके खूब जानता है और इन तरीकों मे ऐसी कोई विविधता भी तो नहीं कि वह पहले ही से उन्हें न जान ले, गुलामी तो सब जगह बहुत कुछ एक ही सी होती है। वह जब आगे बढ़ता है तो अपने चारों तरफ के शरीरों का दबाव अपने ऊपर महसूस करता है और वह अपने शरीर को भीड़ के उस बहाव में छोड़ देता है जो उस पत्थर के बारक से बाहर निकलने के रास्ते की तरफ बढ़ रही है और नगाड़ा लगातार बजता रहता है।

यह पौ फटने के पहले की घड़ी है और इस समय रेगिस्तान इतना ठण्डा है जितना कि किसी समय हो सकता है। सारे दिन में वह अकेली घड़ी है जब कि रेगिस्तान दोस्त की तरह होता है। हवा धीमे धीमे बह रही है और खान की उस काली चट्टानी दीवार को ठण्डक पहुँचा रही है। आकाश का रंग गहरा नीला है जो दिन चढ़ने के साथ-साथ साफ होता जा रहा है। और आँख झपकाते हुए तारे धीरे धीरे डूबते जा रहे हैं, वे तारे जो पुरुषों के इस रूखे निराश संसार में नारीत्व-सम्पन्न अकेली वस्तु हैं। जहाँ से कभी कोई लौटकर नहीं आता उस नूबिया के सोने की खानों में गुलामों को भी थोड़ा आराम देना जरूरी होता है और इसीलिए उन्हें पौ फटने के पहले ही यह घड़ी मिली हुई है ताकि एक तीक्ष्ण तीता-मीठा स्वाद उनके मन को भर सके और उनकी आशाओं को जिलाये रख सके।

दारोगा लोग टोली बनाये एक ओर को खड़े अपनी रोटियाँ खा रहे हैं और पानी की चुसकियाँ ले रहे हैं। अब चार घण्टे तक इन गुलामों को कोई खाना-पानी नहीं दिया जायगा मगर दारोगा होना एक बात है और गुलाम होना दूसरी। दारोगा लोग ऊनी लबादों में लिपटे हुए हैं और उनमे से हर एक के पास एक कोड़ा, एक भारी टीन का डब्बा और एक लम्बा छुरा है। ये दारोगा कौन लोग हैं? वह क्या चीज है जो उनको रेगिस्तान की इस भयानक नारी-शून्य जगह में ले आती है?

ये सिकन्दरिया के लोग हैं। वे कड़वे कठोर लोग हैं और इसलिए यहाँ पर आये हैं कि तनख्वाह यहाँ पर अच्छी मिलती है और खान से निकलनेवाले तमाम सोने का कुछ अंश उनको भी मिलता है। वे दौलत व आराम के

अपने सपने लेकर यहाँ पर आये हैं और यह आश्वासन पाकर आये हैं कि पाँच साल तक कारपोरेशन की सेवा करने के बाद उन्हें रोम का नागरिक बना लिया जायगा। वे भविष्य के अपने सपनों में जीते हैं, जब रोम की बड़ी-बड़ी हवेलियों में उनके पास भी किराये के अपने कुछ कमरे होंगे, जब उनमें से हर एक चार-पाँच गुलाम लड़कियों को खरीद सकेगा जो उनके साथ सोयें और उनकी सेवा करें और जब वे हर रोज ग्लैडिएटरों का खेल देखने या हम्माम में नहाने जा सकेंगे और जब वे हर रात शराब के नशे में चूर हो सकेंगे। उनका विश्वास है कि इस नरक में आकर वे जमीन पर अपना स्वर्ग पा लेने की भावी सम्भावनाओं को और अधिक बढ़ा रहे हैं, मगर सच बात यह है कि जेल के दूसरे सन्तरियों की तरह उनको भी खुशबुओं और शराबों और औरतों से ज़्यादा भूख किस्मत के मारे हुओं के ऊपर अपना अधिकार दिखलाने की होती है।

वे अजीब लोग हैं, सिकन्दरिया की गन्दी बस्तियों की एक अनोखी उपज, और जो जबान वे बोलते हैं वह ऐरेमेइक और यूनानी जबानों की एक अजीब खिचड़ी है। यूनानी लोगों को मिस्र फतह किये ढाई सौ साल हुए और यह दारोगा न तो मिस्री हैं न यूनानी बल्कि सिकन्दरिया वाले। जिसका मतलब है कि वे अनेक प्रकार से भ्रष्ट हैं, उनका दृष्टिकोण मानव-विद्वेषी है और उन्हें किसी देवता में आस्था नहीं है। उनकी वासनाएँ विकृत लेकिन अति सामान्य हैं : वे पुरुषों के साथ लेटते हैं और लाल सागर के किनारे पैदा होने वाली नशीली 'खात' पत्ती का रस लेकर नशे में धुत्त सोते हैं।

यही वे लोग हैं जिन्हें स्पार्टकस प्रत्यूष की उस ठण्डी बेला में ध्यान से देख रहा है जब कि गुलाम गर्दनों में जंजीरें लटकाये हुए पत्थर की उस बड़ी बारक से चले आ रहे हैं और उस चट्टानी दीवार की तरफ बढ़ रहे हैं जहाँ से उन्हें सोना निकालना है। यही लोग उसके मालिक होंगे। उसकी जिन्दगी और मौत उन्हीं के हाथ होगी; और इसलिए वह उन्हें बड़े गौर से देख रहा है ताकि उनकी आदतों, संस्कारों, आचारों में जो हलके भेद भी हैं उन्हें पकड़ सके। खानों में भलेमानस मालिक नाम की चीज नहीं होती मगर यह हो सकता है कि उनमें से कुछ कम क्रूर हों और जिन्हें दूसरों को पीड़ा पहुँचाने में कम आनन्द मिलता हो। वह उन्हें एक-एक करके एक दूसरे से अलग होता हुआ देखता है क्योंकि उन्हें अपने-अपने गुलामों का जिम्मा संभालना है। अब भी इतना काफी अँधेरा है कि वह उनके चेहरे और आकृति की बारीकियों को नहीं समझ पाता मगर उसकी आँखें ऐसे कामों में दक्ष हैं और हर आदमी के चलने-फिरने में भी उसकी अपनी एक पहचान होती है जिससे उसके चरित्र को जाना जा सकता है।

अभी काफी ठण्डक है और गुलाम सब नंगे हैं। यहाँ तक कि उनकी उन करुण, व्यर्थ, धूप से काली जननेन्द्रियों पर भी कपड़े का एक चिन्दा नहीं है और वे खड़े काँप रहे हैं और अपनी बाँहों से अपने शरीर को ढँकने की कोशिश कर रहे हैं। स्पार्टकस को क्रोध धीरे-धीरे आता है क्योंकि एक गुलाम की जिन्दगी में गुस्सा अच्छी चीज नहीं है और उससे कोई नतीजा नहीं निकलता। मगर तब भी वह सोचता है—हम लोग सब कुछ सह सकते हैं मगर यह नहीं कि हमें अपने गुप्तांगों को ढँकने के लिए एक कपड़ा भी न मिले। तब तो हम भी जानवर ही हैं। और तब वह अपने मन में अपनी ही बात का संशोधन करता है—नहीं, जानवरों से भी गये बीते। क्योंकि जब रोमनों ने वह जमीन ली जहाँ पर हम गुलाम थे और वे खेत लिये जहाँ पर हम काम करते थे तो जानवरों को तो उन्होंने खेतों में ही छोड़ दिया और इन खानों में काम करने के लिए हमीं को चुना।

तभी नगाड़े की वह डरावनी आवाज रुक जाती है और दारोगा लोग अपने लपेटकर रक्खे हुए कोड़ों को फटकार कर चमड़े के कड़ेपन को दूर करते हैं और हवा में फटकारे जाते हुए कोड़े की सनसनाहट फैल जाती है। वे हवा में कोड़े चलाते हैं क्योंकि इन्सानों के नंगे शरीर पर कोड़ा चलाने का वक्त अभी नहीं हुआ। और गुलामों की टोलियाँ बारक में से निकलकर आगे बढ़ती हैं। रोशनी अब कुछ और फैल गयी है और स्पार्टकस उन निरे हड्डी-हड्डी काँपते हुए बच्चों को साफ साफ देख रहा है जो अपने हाथों और घुटनों के बल घिसटकर धरती के पेट में दाखिल होंगे और उस सफेद पत्थर में अपने पंजे दौड़ायेंगे जिसमें से सोना मिलता है। दूसरे थ्रेसियन भी उनको देखते हैं क्योंकि वे स्पार्टकस के चारों ओर पास ही भीड़ लगाये खड़े हैं और उनमें से कुछ धीरे से फुसफुसाकर कहते हैं—पिता, यह कैसा नरक है, बोलो पिता?

सब ठीक हो जायगा—स्पार्टकस कहता है और दूसरा वह कहे भी क्या जब वे लोग जो स्वयं तुम्हारे पिता की उम्र के हैं, तुम्हें पिता कहकर पुकार रहे हों? इसलिए वह वे शब्द कहता है जो उसे कहने ही हैं।

अब तक सारी टोलियाँ खान की चट्टानी दीवार की तरफ बढ़ गयी हैं और सिर्फ थ्रेसियनों की यह टोली बच गयी है जो एक जगह पर सिमटी हुई खड़ी है। प्रायः आधे दर्जन दारोगा बच गये हैं और अपनी टोली के एक आदमी के पीछे-पीछे अपने कोड़ों से बालू पर निशान बनाते हुए इन नये आनेवालों की तरफ बढ़ते हैं। उनमें से एक दारोगा अपनी भारी आवाज़ में जवाब तलब करता हुआ पूछता है—ओ थ्रेसवालो, तुम्हारा अगुवा कौन है?

कोई जवाब नहीं।

—अभी कोड़े के इस्तेमाल का वक्त नहीं हुआ, यह समझ लो थ्रेसवालो—

तब स्पार्टकस कहता है—ये लोग मुझको पिता कहते हैं।

दारोगा ऊपर से नीचे तक उसको देखता है जैसे आँखों-आँखों में ही उसे तौल रहा हो—पिता कहलाने के लिए अभी तुम बहुत छोटे हो।

—हमारे देश का यही रिवाज है।

—हमारे यहाँ पर कुछ दूसरे ही रिवाज हैं, पिता! जब बेटा कोई अपराध करता है तो उसके लिए पिता को कोड़ा लगाया जाता है। तुमने सुना मैं क्या कह रहा हूँ?

—हाँ, मैंने सुना।

—तो कान खोलकर सुन लो तुम सब थ्रेसवालो। यह जगह बुरी है। मगर इससे भी बुरी हो सकती है। जब तक तुम जिन्दा हो हम तुमसे काम की और हुकुम मानने की माँग करते हैं। और जब तुम मर जाओगे तो हम किसी चीज की माँग तुमसे नहीं करेंगे। दूसरी जगहों में मरने से बेहतर जीना होता है। लेकिन यहाँ पर हम ऐसा कर देंगे कि जीने से बेहतर मरना हो जायगा। समझे, थ्रेसवालो?

अब सूरज निकल रहा है। उन्हें जंजीरों से बाँध दिया गया है और वे अपनी जंजीरों को उठाये हुए खान की तरफ बढ़ते हैं। वहाँ पहुँचकर उनकी जंजीर अलग कर दी जाती है। सबेरे के वक्त की वह जरा सी देर की ठण्डक खतम हो चुकी है। उन्हें लोहे की कुदालियाँ, हथौड़े और खपच्चियाँ वगैरह औजार दे दिये जाते हैं। उन्हें उस काली चट्टानी दीवार में नीचे की तरफ एक सफेद पट्टी दिखलायी जाती है। हो सकता है कि वहीं से सोने की शुरूआत हो, हो सकता है कि वहाँ कुछ भी न हो। बहरहाल उनका काम उस काली चट्टान को काटना और उस पत्थर को खोदना है जिसके भीतर सोना मिलेगा।

सूरज अब आसमान पर चढ़ आया है और दिन की भयानक गरमी फिर से शुरू हो जाती है। कुदाली और हथौड़ा और खपाची। स्पार्टकस हथौड़े को घुमाता है। दिन बढ़ने के साथ-साथ उसे ऐसा महसूस होता है कि जैसे हर घण्टा पूरा होने पर हथौड़े का वजन आध सेर बढ़ जाता है। स्पार्टकस का शरीर सख्त है मगर कड़ी मेहनत की अपनी तमाम जिन्दगी में उसने ऐसा काम पहले कभी नहीं किया था और थोड़ी ही देर में उसकी एक एक मांसपेशी खिंचने और टूटने लगती है और तब वह जैसे उस सारे तनाव से कराह उठता है। यह कहना आसान है कि एक हथौड़े का वजन नौ सेर होता है मगर उस आदमी की यन्त्रणा को बतलाने के लिए कोई शब्द नहीं हैं जो घण्टों ऐसा

एक हथौड़ा घुमाता रहता है। और यहाँ, जहाँ पानी इतना अनमोल है, स्पार्टकस को पसीना आने लगता है। पसीना रिस रिस कर उसकी खाल में से चू रहा है और उसके माथे पर से बहकर उसकी आँखों में पड़ रहा है। वह अपनी पूरी इच्छाशक्ति से यह चाहता है कि पसीना रुक जाय। वह जानता है कि इस जलवायु में पसीना बहने का मतलब होगा मर जाना। मगर पसीना नहीं रुकता और प्यास कहीं उसके भीतर बैठे हुए एक हिंस्र वन्य पशु के समान हो जाती है जिससे डर मालूम होता है और निरन्तर यातना मिलती है।

चार घण्टे एक निस्सीम अवधि है। चार घण्टे चार युग हैं। अपने शरीर की इच्छाओं का दमन एक गुलाम से ज्यादा कौन जानता है मगर चार घण्टे तो निस्सीम अवधि हैं और जब पानी की थैलियाँ काम करने वालों की टोलियों के बीच पहुँचती हैं तो स्पार्टकस महसूस करता है कि वह प्यास के मारे मरा जा रहा है। दूसरे थ्रेसियनों का भी यही हाल है और वे मशकों के उस हरे हरे और जीवन दायी तरल पदार्थ की आखिरी बूँद तक पी डालते हैं। और तब उनकी समझ में आता है कि उन्होंने कैसी भूल की है।

ये नूबिया की सोने की खानें हैं। दोपहर होने होने तक उनकी काम करने की ताकत खत्म होने लगती है और तब कोड़े उनके ऊपर अंकुश का काम करते हैं। कुछ न पूछो, दारोगा के हाथ के उस कोड़े में बड़ी सिफ़त है। वह जिस्म के किसी भी हिस्से को छूता हुआ निकल जा सकता है, बड़ी नज़ाकत से, बहुत सुबुक अन्दाज़ में मगर ऐसे कि आदमी समझ जाये कि वह क्या चीज़ है और आगे के लिए उसे नसीहत हो जाय। लगने को कोड़ा कहीं भी लग सकता है, पेट पर या मुँह पर या पीठ पर या सिर पर। वह एक बाज के समान है जो आदमी के शरीर से तानें निकाल सकता है। अब प्यास पहले से भी दस गुनी है मगर पानी चला जा चुका है और अब दिन का काम खत्म होने तक पानी नहीं मिलेगा। और ऐसा एक दिन अनन्त होता है।

तथापि उसका भी अन्त हो जाता है। हर चीज का अन्त होता है। प्रकृति का यह नियम है कि हर चीज एक समय शुरू होती है और एक समय खत्म होती है। और तब एक बार फिर नगाड़ा बजता है और दिन का काम ख़त्म हो जाता है।

स्पार्टकस हथौड़ा रख देता है और अपने लहू-लुहान हाथों को देखता है। कुछ थ्रेसियन बैठ जाते हैं। उनमें से एक, अठारह साल का एक लड़का, लुढ़ककर एक करवट लेट जाता है और दर्द के मारे अपने पैरों को समेट लेता है। स्पार्टकस उसके पास जाता है।

—पिता! तुम हो क्या?

—हाँ, हाँ—स्पार्टकस कहता है और उस लड़के का माथा चूम लेता है।

—तो मेरे होंठों को चूमो क्योंकि मैं मर रहा हूँ पिता, और मेरी आत्मा का जो कुछ भी शेष है उसे मैं तुमको दे देना चाहता हूँ।

तब स्पार्टकस उसे चूमता है मगर रो नहीं पाता क्योंकि वह जले हुए चमड़े की तरह खुश्क हो गया है, झुलस गया है।

४

इस तरह बाटियाटस ने अपनी कहानी ख़तम की कि कैसे स्पार्टकस और दूसरे थे्रसियन नूबिया की सोने की खानों में आये और कैसे उन्होंने उस काली चट्टानी दीवार पर एकदम नंगे होकर काम किया। कहानी कहने में बहुत वक़्त लगा था। बारिश थम गयी थी। अंधेरा छा गया था, बहुत गहरा अंधेरा और आसमान बिलकुल सीसे के रंग का हो रहा था और वे दोनों आदमी जिनमें से एक ग्लैडिएटरों का उस्ताद और दूसरा एक ऊँचे खानदान का भाड़े का सिपाही था जो एक दिन अपनी दुनिया का सबसे अमीर आदमी होगा, झिलमिलाते हुए लैम्प की आगे-पीछे पड़ती हुई रोशनी में बैठे हुए थे। बाटियाटस बहुत पी गया था और उसके चेहरे की ढीली-ढीली मांस-पेशियाँ और ढीली हो गयी थीं। वह एक ऐसा कामी व्यक्ति था जिसमें दो विरोधी बातों का सम्मिश्रण था, एक तो दूसरे को पीड़ा पहुँचाकर सुख पाने की प्रवृत्ति और दूसरे स्वयं अपने ऊपर तरस खाने की एक विपुल शक्ति। सोने की खान की अपनी कहानी उसने बहुत ज़ोरदार तरीक़े से और हलके-गहरे रंगों के मेल के साथ कही थी और करुणा भी उसमें थी जिसका नतीजा हुआ कि न चाहते हुए भी क्रैसस का दिल पसीज उठा।

क्रैसस मूर्ख व्यक्ति न था और न चेतनाशून्य और उसने प्रोमिथियस पर लिखे हुए ईस्किलस के महान् नाटक पढ़े थे और उसने कुछ-कुछ इस बात को समझा कि स्पार्टकस जहाँ पर था वहाँ से निकल कर इस जगह पर पहुँचने में उसकी कितनी ताक़त लगी होगी जहाँ रोम की सारी एकत्रित शक्ति उसके गुलामों का मुक़ाबला करने में असमर्थ थी। उसके अन्तस् की यह एक उद्दाम अभिलाषा थी कि स्पार्टकस को समझे, उसे अपनी आँखों के सामने [illegible] खड़ा हुआ महसूस करे—और इतना ही नहीं, बल्कि किसी तरह, चाहे कितना ही मुश्किल क्यों न हो, स्पार्टकस के भीतर पहुँच जाय ताकि उसके वर्ग की उस सनातन पहेली को कुछ-कुछ समझ सके, उस आदमी की पहेली जो ज़ंजीरों में जकड़ा होते हुए भी सितारों को छूने की कोशिश करता है। उसने बाटियाटस को एक आँख बन्द करके देखा जैसे अपने आपसे कह रहा हो कि वह इस मोटे और भद्दे आदमी के प्रति बहुत ऋणी है और सोचने लगा कि रात को उसके संग सोने के लिए खेमे की

किस लड़की को दे। ऐसी नामरूपहीन, सर्वसामान्य वासना क्रैसस की समझ में न आती थी, उसकी इच्छाएँ कुछ दूसरी ही दिशा में चलती थीं, मगर वह छोटे-छोटे निजी ऋणों के शोध के मामले में बहुत चौकस था।

—और फिर स्पार्टकस उस जगह से कैसे भागा ? उसने लानिस्ता से पूछा।

—वह भागा नहीं। ऐसी जगह से कोई भाग नहीं सकता। ऐसी जगह का सबसे बड़ा गुण यह होता है कि वह देखते-देखते गुलाम के हृदय से इस लालसा को ही उखाड़ फेंकती है कि एक बार फिर वह मनुष्यों के संसार में प्रवेश करे। मैंने स्पार्टकस को वहाँ से खरीदा। और अपने संग ले आया।

—वहाँ से खरीद कर ले आये ? मगर क्यों ? और तुम्हें यह पता कैसे चला कि वह था वहाँ पर या यही कि वह कौन है, क्या है ?

—मुझे नहीं मालूम था। मगर आपका खयाल है कि ग्लैडिएटरों के सम्बन्ध में मेरी जो ख्याति है वह एक व्यर्थ की कपोल-कल्पना है—आप सोचते हैं कि मैं एक बेकार का मोटा थुलथुल आदमी हूँ जो किसी चीज़ के बारे में कुछ भी नहीं जानता। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे व्यवसाय में भी एक कला है—

क्रैसस ने सहमति प्रकट करते हुए कहा—मैं तुम्हारी बात पर विश्वास करता हूँ। मुझे बताओ कि तुमने स्पार्टकस को कैसे खरीदा।

—क्या रोमन सेना में शराब पीना मना है ? बाटियाटस ने खाली बोतल उठाते हुए कहा। या मेरे नशे में आ जाने से मेरे प्रति आपकी घृणा और बढ़ जायगी ? या यह बात है कि मूर्ख व्यक्ति अपनी ज़बान पर लगाम रखता है जो शराब से ही ढीली की जा सकती है ?

—मैं तुम्हारे लिए और शराब ले आता हूँ, क्रैसस ने जवाब दिया और उठकर पर्दा हटाते हुए अपने सोने के कमरे में चला गया और एक नयी बोतल लेकर लौट आया। बाटियाटस उसका साथी था और बाटियाटस ने काग खोलने की भी तकलीफ़ गवारा नहीं की और मेज़ के पाये से मारकर बोतल की गर्दन तोड़ दी और अपनी गिलास में शराब ढालने लगा, यहाँ तक कि गिलास भर गयी और शराब बाहर गिरने लगी।

उसने मुस्कराकर कहा, खून और शराब। अगर मेरा बस चलता तो मैं दूसरे ही रूप में पैदा होना चाहता और सेनापति बना होता। मगर कौन जानता है ? हो सकता है कि आपको ग्लैडिएटरों की लड़ाई में मज़ा आता हो। मैं तो उससे उकता गया हूँ।

—मुझे यों ही काफ़ी लड़ाई देखने को मिल जाती है।

—इसमें क्या शक। मगर मेरी लड़ाई के अखाड़े में लड़ने की एक

ऐसी शैली और कुछ ऐसा साहस होता है जिसकी तुलना में आपका व्यापक जन-संहार कुछ भी नहीं है। स्पार्टकस ने जब रोम की सशस्त्र शक्ति को तीन चौथाई तोड़कर खतम कर दिया है तब उन्होंने आपको रोम की खोयी हुई ताक़त को वापस लाने के लिए भेजा है। आप कहिए कि क्या इटली में आपका राज है ? सच बात यह है कि इटली में स्पार्टकस का राज है। हाँ मैं जानता हूँ आप उसे हरा देंगे। कोई दुश्मन रोम का मुकाबला नहीं कर सकता। लेकिन इस वक़्त तो वह आपसे मीर है। कि झूठ कहता हूँ ?

—नहीं तुम ठीक कहते हो, क्रैसस ने जवाब दिया।

—और स्पार्टकस को सिखाया किसने ? मैंने। वह रोम में कभी नहीं रहा मगर सबसे अच्छी लड़ाई रोम में नहीं होती। रोम को तो बूचड़ की दूकान पसन्द है, असली शानदार लड़ाई कापुआ और सिसली में होती है। मैं आपसे कहता हूँ आपके सिपाही जो गर्भस्थित बच्चे की तरह सिर से पैर तक ज़िरह-बख़्तर से ढँके रहते हैं और इधर-उधर आपकी यह छुड़ी भोंकते फिरते हैं, वे लड़ना क्या जानें। मैदान में नंगे उतरो, तब तो बात है, हाथ में बस एक तलवार और कुछ नहीं। वहाँ रेत पर खून होता है और तुम जब वहाँ दाखिल होते हो तो तुम्हारे नथनों को उसकी गन्ध मिलती है। बिगुल बज रहे हैं और नगाड़ों पर चोट पड़ रही है और सूरज चमक रहा है और कुलीन घरों की महिलायें अपनी झालरदार रूमालें हिला रही हैं और उनकी आँखें तुम्हारे नंगे शरीर पर जमी हुई हैं और तीसरा पहर होने-होने तक उन्हें काफ़ी ऐन्द्रिक सुख और उत्तेजना मिल चुकी होती है मगर तुम्हारे अपने ऐन्द्रिक सुख का चरम क्षण वह होता है जब तलवार के एक वार से तुम्हारा पेट चाक हो जाता है और तुम वहाँ खड़े चीखते रहते हो और तुम्हारे पेट की अंतड़ियाँ बाहर आ जाती हैं और उस रेत पर गिर पड़ती हैं। लड़ाई इसको कहते हैं सेनापति जी—और इस काम को खूबी के साथ करना मामूली आदमी के बस का रोग नहीं है। इस काम के लिए दूसरी ही नस्ल चाहिए। और ऐसे आदमी कहाँ मिलते हैं ? पैसा बनाने के लिए मैं पैसा खर्च करने के लिए तैयार रहता हूँ और मैं अपने दलालों को भेजता हूँ कि वह जायें और वह चीज खरीद कर लायें जिसकी मुझे ज़रूरत है। मैं उन्हें ऐसी जगहों में भेजता हूँ जहाँ कमज़ोर लोग जल्दी मर जाते हैं और कायर आत्महत्या कर लेते हैं। साल में दो बार मैं अपने दलालों को नूबिया की खानों में भेजता हूँ। एक बार मैं खुद वहाँ गया था—हाँ एक बार और उतना ही मेरे लिए काफ़ी था। खान को चालू रखने के लिए गुलामों को पीस कर उनकी सारी ताक़त को निकाल लेना ज़रूरी होता है। उनमें से ज़्यादातर दो साल काम कर पाते हैं, बस दो साल—बहुत से तो छः महीने में ही ख़त्म हो जाते हैं। मगर

किसी भी खान को मुनाफ़े के साथ चलाने का अकेला ढंग यह है कि जल्दी जल्दी गुलामों को ख़र्च किया जाय और हमेशा नये गुलाम ख़रीदे जायँ। और चूँकि गुलाम भी इस बात को जानते हैं इसलिए हमेशा उनसे आशंका रहती है कि वे अपनी निराशा में कुछ भी कर सकते हैं। खानों का सबसे बड़ा दुश्मन यही निराशा है जो उन्हें जान पर खेल जाने के लिए प्रेरित करती है। और यह एक छुतही बीमारी है। इसलिए जब तुम्हारे पास ऐसा कोई बेधड़क आदमी हो, मज़बूत आदमी जो कोड़े से नहीं डरता और दूसरे लोग जिसकी बात सुनते हैं, तो उसके साथ सबसे अच्छा सलूक यही हो सकता है कि उसे फ़ौरन मार डाला जाय और बल्लम में उसका सिर लगाकर धूप में उसे रख दिया जाय ताकि मक्खियाँ उसके मास का आहार कर सकें और हर आदमी सरकशी का नतीजा देख सके। मगर इस तरह से जान मारना चीज़ की बर्बादी है और इससे किसी को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता, इसलिए मैंने दारोग़ा लोगों से तय कर रक्खा है और वे ऐसे आदमियों को मेरे लिए संभाल कर रखते हैं और उन्हें अच्छे दामों पर मेरे हाथ बेंच देते हैं। पैसा उनकी अपनी जेब में चला जाता है और कोई घाटे में नहीं रहता। ऐसे आदमी अच्छे ग्लैडिएटर बनते हैं।

—अच्छा तो इस तरह तुमने स्पार्टकस को खरीदा?

—हाँ, बिलकुल इसी तरह। मैंने स्पार्टकस को ख़रीदा और एक दूसरे थ्रेसियन को ख़रीदा जिसका नाम गैनिकस था। आप तो जानते हैं कि उस वक्त थ्रेसियनों की बड़ी माँग थी क्योंकि छुरे के खेल में वे बहुत अच्छे होते हैं। और यह तो चलन की बात है, एक साल छुरा तो उसके अगले साल तलवार और उसके भी अगले साल .फ़ुसीना। सच बात यह है कि बहुत से थ्रेसियनों ने कभी ज़िन्दगी में छुरे को हाथ भी नहीं लगाया होता मगर उनके बारे में बात यह मशहूर हो गयी है कि इस चीज़ में उनका कोई सानी नहीं है और स्त्रियाँ दूसरे किसी के हाथ में छुरा देखने को तैयार नहीं हैं।

—तुमने खुद उसे ख़रीदा?

—अपने दलालों के ज़रिये। उन्होंने उन दोनों को हथकड़ी बेड़ी डालकर सिकन्दरिया से एक जहाज़ में भेज दिया और मैं नेपुल्स के बन्दरगाह पर अपना एक दलाल रखता हूँ और फिर पालकी से उन्हें अंदर ले आया।

क्रैसस ने जो हमेशा किसी मुनाफ़े के कारबार में थोड़ा-बहुत पैसा लगाने के लिए चौकन्ना रहता था, बाटियाटस की बात मानते हुए कहा, तुम्हारा काम मामूली नहीं है।

—तो आप इस बात को मानते हैं? बाटियाटस ने कहा।

अपना भारी-भरकम जबड़ा खोलने पर उसके मुँह की कोरों से शराब बह चली और उसने अपनी बात पूरी करते हुए कहा, बहुत थोड़े लोग हैं

जो इस बात को मानते हैं। आपका क्या ख़याल है, मैंने कापुआ में कितने पैसे लगाये होंगे ?

क्रैसस ने सिर हिलाकर जवाब दिया, इस बात पर कभी मेरा ध्यान नहीं गया। देखने को सभी ग्लैडिएटरों को देखते हैं मगर कोई रुककर यह नहीं सोचता कि उनके मैदान में उतरने के पहले उनके ऊपर कितना पैसा लगा होगा। मगर वह तो एक आम बात है। लोग सेना को देखते हैं और सोचते हैं कि ये सेनायें हमेशा रहा हैं और इसलिए हमेशा रहेंगी।

अपने ढंग की यह एक बेहतरीन चापलूसी थी। बाटियाटस ने अपना गिलास रख दिया और घूरकर सेनापति को देखा और एक उँगली से अपनी मोटी भद्दी नाक को घिसा।

—अन्दाज़ लगाइए।

—दस लाख ?

—पचास लाख दीनारें, बाटियाटस ने धीरे-धीरे और अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा—पचास लाख दीनारें। ज़रा सोचिए मेरे दलाल पाँच देशों में हैं। नेपुल्स के बन्दरगाह में भी मैं अपना एक दलाल रखता हूँ। मैं अपने खिलाड़ियों को बेहतरीन खाना खिलाता हूँ, गेहूँ, जौ, गाय का गोश्त और बकरी के दूध की पनीर। छोटे-मोटे खेलों और जोड़ों की लड़ाई के लिए मेरे पास अपना एक छोटा-सा मैदान है मगर बड़ी लड़ाइयों के लिए मैंने जो गोलघर बनवाया है उसमें तमाशा देखनेवालों के लिए पत्थर की बनी हुई बड़ी खूबसूरत जगह है और उसमें आसानी से मेरे क़रीब दस लाख खर्च हो गये। मैं स्थानीय पल्टन के एक दस्ते को भी अपने पास रखता और खिलाता हूँ और इसमें, अगर आप यक़ीन करें, तो उन रिश्वतों का कोई हिसाब नहीं है जो मुझे इस सिलसिले में देनी पड़ती हैं। बात यह है कि सेना के सारे लोग आप जैसे तो होते नहीं। और अगर आप अपने आदमियों को रोम में लड़ाना चाहते हैं तो इसका मतलब है कचहरी और नगरपालिका के लिए साल में पचास हज़ार दीनारें। और औरतों का तो जैसे यहाँ पर ज़िक्र ही नहीं।

—औरतें ? क्रैसस ने पूछा।

—ग्लैडिएटर जागीर पर काम करने वाला खेतिहर मज़दूर तो होता नहीं; अगर आप चाहते हैं कि उसके अन्दर कुछ दम-ख़म हो तो उसके लिए ज़रूरी है कि आप उसके संग सोने के लिए औरतों का भी इन्तज़ाम करें। तब फिर वह खाता भी ज़्यादा अच्छी तरह है और लड़ता भी ज़्यादा अच्छी तरह है। अपने यहाँ की औरतों के लिए मैंने अलग घर बनवाया है और मैं अच्छी से अच्छी औरतें ही ख़रीदता हूँ। ये सड़ी-गली बाजारू औरतें या

खूसट बेजान औरतें नहीं। मेरे हाथ में आनेवाली हर औरत पुष्ट और स्वस्थ और अक्षत कुमारी होती है। मैं जानता हूँ क्योंकि मैं ही पहले उनकी आज़माइश करता हूँ। उसने अपनी गिलास की आख़िरी बूँद अपने गले में डाली, होंठों को चाटा और एकदम रुआंसा-सा चेहरा बना लिया जैसे बहुत अकेला-अकेला-सा महसूस कर रहा हो। अपने गिलास में धीरे-धीरे शराब ढालते हुए उसने शिकवे के लहजे में कहा, मुझे औरतों की ज़रूरत पड़ती है। कुछ लोगों को नहीं पड़ती, मुझे पड़ती है।

—और यह औरत जिसे लोग स्पार्टकस की बीवी कहते हैं?

—वारिनिया, बाटियाटस ने कहा। अब वह अपने ही में डूब गया था और उसकी आँखों में नफ़रत, गुस्से और तेज़ चाह की एक दुनिया थी। उसने दुहराया, वारिनिया।

—उसके बारे में मुझे बतलाओ।

बाटियाटस की लम्बी ख़ामोशी से क्रैसस को ज़्यादा बातें मालूम हो गयीं बनिस्बत उस के उन शब्दों के जो उसने कुछ थमकर कहे। वह उन्नीस साल की थी, जब मैंने उसे ख़रीदा। कुतिया जर्मन थी लेकिन हाँ, अगर आपको पीले बाल और नीली आँखें पसन्द हों तो कहना होगा कि वह देखने में काफ़ी सुन्दर थी। बड़ी हरामज़ादी थी वह और मुझे उसको मार डालना चाहिए था। लेकिन मारने के बदले मैंने उसे स्पार्टकस को दे दिया। एक अच्छा मज़ाक था यह भी। स्पार्टकस को किसी औरत की ज़रूरत न थी और वारिनिया को किसी मर्द की ज़रूरत न थी। एक अच्छा मज़ाक था यह भी।

—मुझे उसके बारे में बतलाओ।

—मैंने आपको उसके बारे में बतलाया तो! बाटियाटस ने गुस्से से कुत्ते की तरह गुर्राते हुए कहा। वह उठा और लड़खड़ाता हुआ ख़ेमे के पर्दे को पार करके बाहर निकल गया और क्रैसस ने उसके पेशाब करने की आहट पायी। सेनापति का यह एक बड़ा गुण था कि वह एकाग्र चित्त होकर अपने लक्ष्य का पीछा करता था। बाटियाटस जब लड़खड़ाता हुआ वापस आकर अपनी मेज़ पर बैठ गया तो इससे किसी तरह की अस्थिरता सेनापति के मन में न हुई। इस समय इस लानिस्ता को शराफ़त सिखलाना उसका उद्देश्य नहीं था और न उसे इसकी ज़रूरत ही थी।

—मुझे उसके बारे में बतलाओ, उसने आग्रह करते हुए कहा।

बाटियाटस ने कृत्रिम गाम्भीर्य से अपना सिर हिलाया और ऐसे स्वर में कि जैसे उसके आत्मसम्मान को ठेस लगी हो, उसने पूछा—आपको कोई आपत्ति होगी अगर मैं इतनी शराब पी जाऊँ कि फिर होश में न रहूँ?

क्रैसस ने जवाब दिया—इस सम्बन्ध में मैं कुछ भी नहीं सोचता। तुम जितना चाहो पियो। मगर तुम मुझे बतला रहे थे कि तुमने स्पार्टकस और गैनिकस को बन्दरगाह से इधर पालकी में रखकर बुलवाया। हथकड़ियों में लाये होगे?

बाटियाटस ने हामी भरी।

—तो इसके पहले तुमने उसे नहीं देखा था?

—नहीं। और मैंने जो कुछ देखा उसे देखकर आपने उन्हें बिलकुल बेकार समझा होता मगर आदमियों को समझने का मेरा ढंग दूसरा है। उस वक्त उन दोनों की दाढ़ियाँ बढ़ी हुई थीं, वे एकदम गन्दे हो रहे थे और उनके शरीर भर में सड़ते हुए ज़ख्म और नासूर थे और सिर से पैर तक कोड़ों के निशान ही निशान थे। उनके शरीर से ऐसी बदबू निकल रही थी कि पास जाते मितली मालूम होती थी। उनके अपने शरीर की ही गन्दगी उनके शरीर पर सूख गयी थी। वे सूखकर काटा हो रहे थे और बस उनकी आँखें ऐसी थीं जिनसे पता चलता था कि वे जान पर खेल सकते हैं। आपने तो उन्हें अपनी टट्टी की सफ़ाई के लिए भी न रक्खा होता। मगर जब मैंने उन्हें देखा तो मुझे उनके अन्दर कोई चीज़ नज़र आयी और यह वाजिब ही था क्योंकि वही तो मेरी कला है। मैंने उन्हें नहलवाया, उनकी दाढ़ी बनवायी और बाल कटवाये, तेल की मालिश करवायी और अच्छी तरह खिलाया-पिलाया—

—हाँ तो वारिनिया के बारे में तो बतलाओ?

—बड़े बदज़ात हो!

लानिस्ता ने अपने शराब के प्याले की तरफ़ हाथ बढ़ाया मगर निहायत भोंडे ढंग से जिससे कि वह लुढ़क गया। वह उस शराब के लाल धब्बे को घूरता हुआ मेज़ पर हाथ बढ़ाकर लेट गया। कोई नहीं कह सकता कि उस धब्बे में उसने क्या देखा। शायद अतीत को देखा हो और हो सकता है कि थोड़ा बहुत भविष्य को भी देखा हो। क्योंकि ज्योतिष की कला निरा पाखण्ड नहीं है और यह शक्ति आदमी ही के पास है, जानवर के पास नहीं, कि वह अपने कृत्यों के परिणाम को समझे। यही वह आदमी था जिसने स्पार्टकस को लड़ना सिखलाया और इस तरह उसने अपनी ज़िन्दगी के धागे एक ऐसे भविष्य के साथ बुन दिये जिसका कोई अन्त नहीं है—जैसा कि सभी मनुष्य करते हैं—और वह आगे आनेवाले युगों में जिनके बारे में अभी कोई नहीं जानता, याद किया जायगा। उन आदमियों को ट्रेनिंग देनेवाला जिन्होंने स्पार्टकस को ट्रेनिंग दी उन आदमियों के नेता के सामने बैठा था जो स्पार्टकस का ध्वंस करेंगे। मगर इस भविष्य सूचना का दोनों को समान रूप से

हलका-सा और उलझा हुआ सा आभास था कि कोई भी स्पार्टकस का ध्वंस नहीं कर सकेगा और चूँकि उन दोनों को इसका हलका-सा भी आभास समान रूप से मिला वे दोनों समान रूप से अपने अन्धकारपूर्ण अन्त को देख रहे थे।

५

(सेनापति क्रैसस ने कहा, तुम्हारा मोटा दोस्त लेण्टुलस बाटियाटस....मगर केयस क्रैसस, जो उसकी बग़ल में बिस्तर पर लेटा हुआ था, ऊँघ रहा था, उसकी आँखें बन्द थीं—और उसने उस कहानी के बस कुछ टुकड़े सुने थे। क्रैसस को कहानी कहना न आता था। वह कहानी तो उसके दिमाग में थी, उसकी स्मृति में, उसकी आशाओं और आशंकाओं में। गुलाम युद्ध ख़त्म हो गया था और स्पार्टकस ख़त्म होगया था। विला सलारिया शान्ति और समृद्धि का प्रतीक है, उस रोमन शान्ति का जिससे दुनिया निहाल है और वह एक लड़के के संग बिस्तर पर लेटा हुआ था और क्यों न लेटे? उसने अपने आप से प्रश्न किया। दूसरे महान् पुरुष जो कुछ करते हैं किस मतलब में यह उससे बुरा है?

(केयस क्रैसस रोम से कापुआ तक सड़क के दोनों ओर खड़े हुए सलीबों के बारे में सोचने लगा क्योंकि उसे पक्की तरह नींद न आयी थी। उसके मन में इसके कारण कोई बेचैनी न थी कि वह एक महान् सेनापति के साथ एक ही बिस्तर पर लेटा हुआ था। उसकी पीढ़ी को अभी इस बात की ज़रूरत न महसूस हुई थी कि अप्राकृतिक मैथुन से पैदा होने वाली पाप भावना को कम करने के लिए दलीलों का अम्बार जुटाये। उसके लिए यह एक साधारण बात थी। सड़क के किनारे फाँसी पर झूलते हुए छः हज़ार गुलामों का दृश्य भी उसके लिए एक साधारण बात थी। वह महान् सेनापति क्रैसस की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी था। महान् सेनापति क्रैसस को तो तरह-तरह के भूत सताते रहते थे मगर कुलीन वंश के नवयुवक क्रैसस को—जो शायद सेनापति का दूर का रिश्तेदार था क्योंकि उस समय क्रैसस नाम का परिवार रोम के सबसे बड़े परिवारों में से था—किसी भूत से नहीं लड़ना पड़ता।

(यह सच है कि मृत स्पार्टकस से उसको चिढ़ होती थी। उसे एक मुर्दा गुलाम से नफ़रत थी। मगर जब उसने अपनी आँखें खोलीं और क्रैसस के चिन्ता से भारी चेहरे को देखा तो उसकी समझ में नहीं आया कि क्यों उसे स्पार्टकस से नफ़रत है।

(क्रैसस ने कहा—तुम सो नहीं रहे हो, नहीं तुम नहीं सो रहे हो और यही कहानी है, जैसी कुछ भी है—बशर्ते तुमने इसका कोई भी हिस्सा सुना हो—

और अब मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम क्यों स्पार्टकस से नफ़रत करते हो जो कि अब मर चुका है और हमेशा के लिए विदा हो गया है ?

(मगर केयस क्रैसस अपनी ही स्मृतियों में खोया हुआ है। यह चार साल पहले की बात है और उस वक़्त ब्रैकस उसका यार था। और ब्रैकस के संग वह ऐपियन मार्ग से कापुआ गया था और ब्रैकस उसे खुश करना चाहता था, बड़ी जवांमर्दी से और खूब दिल खोलकर, क्योंकि इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि तुम मोटी गद्दीवाली कुर्सी पर अपने प्रियजन की बग़ल में बैठकर आदमियों को आमरण एक दूसरे से लड़ते हुए देखो ! उस समय, आज से चार साल पहले, विला सलारिया की इस अजीब शाम के चार बरस पहले वह ब्रैकस के संग पालकी में बैठकर गया था और ब्रैकस ने उसकी बड़ी-बड़ी खुशामद की थी और वचन दिया था कि वह ऐसी लड़ाई उसे दिखायेगा जैसी कि उसने पहले कभी देखी न होगी, जैसी लड़ाई सिर्फ़ कापुआ में होती है—और यह कहा था कि खर्च की उसे कोई परवाह न होगी। रेत के मैदान पर खून गिरेगा और शराब की चुसकियाँ लेते हुए हम उसे देखेंगे।

(और तब वह ब्रैकस के साथ लेण्टुलस बाटियाटस से मिलने गया था जिसके पास ग्लैडिएटरों का इटली भर में सबसे अच्छा अखाड़ा था।

(और यह सब, केयस ने सोचा, चार साल पहले की बात है—तब तक न तो गुलाम युद्ध हुआ था और न किसी ने स्पार्टकस का नाम ही सुना था। और अब ब्रैकस मर चुका था और स्पार्टकस भी मर चुका था और वह, केयस, रोम के सबसे बड़े सेनापति के साथ बिस्तर में लेटा हुआ था।)

———

भाग ३ । जो विला सलारिया की उस शाम के चार बरस पहले मारियस ब्रैकस और केयस क्रैसस की पहली कापुआ यात्रा और ग्लैडिएटरों के दो जोड़ों की लड़ाई की कहानी है ।

बसन्त के मौसम में एक बहुत अच्छे दिन जब लानिस्ता लेण्टुलस बाटियाटस अपने दफ़्तर में बैठा हुआ था और डकार पर डकार ले रहा था और उसका भारी नाश्ता पेट में बैठा हुआ उसे अपूर्व सुख पहुँचा रहा था, उसका यूनानी मुनीम कमरे में आया और उसने बतलाया कि बाहर दो नौजवान रोमन खड़े हुए हैं और वे दो जोड़ों की लड़ाई के बारे में उससे कुछ बात करना चाहते हैं ।

दफ्तर और मुनीम—जो कि एक सुशिक्षित यूनानी गुलाम था—दोनों बाटियाटस के वैभव और समृद्धि के सूचक थे । नगरपालिका की राजनीति और सड़कों पर होनेवाली संगठित लड़ाई की उसकी आरम्भिक शिक्षा, उसका एक महत्वपूर्ण घराने के बाद दूसरे महत्वपूर्ण घराने से चतुराई के साथ सम्बन्ध जोड़ना और ऊपर चढ़ना और उसकी संगठन-पटुता जिसके फलस्वरूप वह शहर में सड़क पर मारपीट करनेवालों की सबसे बड़ी और मज़बूत टोली बना सका था—इस सब का उसको बहुत लाभ मिला था और उसने अपने होशियारी से बचाकर रक्खे हुए धन को जिस तरह कापुआ में ग्लैडिएटरों का एक छोटा सा स्कूल कायम करने में लगाया था वह एक बहुत बुद्धिमानी की चीज़ थी । जैसा कि वह अक्सर कहा करता था, वह भविष्य की लहरों पर सवार होकर आगे बढ़ रहा था । एक गुण्डा इससे आगे न जा

सकता था और कोई गुण्डा इतना चतुर नहीं होता कि सदा जीतने वाले पक्ष की ही ओर खड़ा हो। उसके दल से कहीं मज़बूत दल किसी प्रतिद्वन्दी की अप्रत्याशित विजय और किसी नये मेयर को प्रतिहिंसा के कारण दृश्यपट से एकदम साफ़ हो गये थे।

दूसरी ओर, जोड़ों की लड़ाई—आम तौर पर यही उसको कहा जाता था—पैसा लगाने और मुनाफ़ा कमाने का एक नया क्षेत्र थी; वह एक कानूनी चीज़ थी; और व्यापारों के समान वह भी एक व्यापार था जिसे मान्यता मिली हुई थी और कोई भी, जो कि युग के लक्षणों को ठीक से पढ़ सकता है, जानता था कि अभी उस चीज़ का शैशव ही था। कुछ ही दिनों में यह हल्का-फुल्का मनोविनोद एक पूरी समाज व्यवस्था पर छा जाने वाला उन्माद बन जायगा। राजनीतिज्ञ अब इस बात को समझने लगे थे कि अगर दूसरे देश की धरती पर सफल युद्ध करके ख्याति नहीं पायी जा सकती तो बहुत कुछ वैसी ही चीज़ अपने देश में ही छोटे पैमाने पर खड़ी करके हासिल की जा सकती है और सौ सौ जोड़ों की लड़ाइयाँ, जो हफ़्तों तक चलती थीं, अब तक काफ़ी प्रचलित हो गयी थीं। अच्छे सिखे-सिखाये ग्लैडिएटरों की माँग बराबर बढ़ती जा रही थी और कभी पूरी न की जा सकती थी और उनके दाम बराबर चढ़ते चले जा रहे थे। एक के बाद दूसरे शहर में पत्थर के अखाड़े बन रहे थे और आख़िरकार जब इटली का एक सबसे ख़ूबसूरत और शानदार अखाड़ा कापुआ में बना तो लेण्टुलस बाटियाटस ने वहाँ जाकर अपना एक स्कूल चलाने का निश्चय किया।

उसने बहुत मामूली ढंग से शुरूआत की, बस ज़रा-सा एक बाड़ा और लड़ने का एक मोटा-झोटा अखाड़ा जहाँ पर वह एक वक़्त में एक जोड़ को लड़ना सिखलाता था; मगर उसका व्यापार बहुत तेज़ी से बढ़ने लगा और अब पाँच बरस के अन्दर-अन्दर उसके पास एक बहुत बड़ी सी संस्था हो गयी जहाँ वह सौ से ऊपर जोड़ों को रखता था और उन्हें लड़ना सिखलाता था। उसके पास ग्लैडिएटरों के रहने के लिए पत्थर की बनी अपनी कोठरियाँ थीं, कसरत करने के लिए अपनी व्यायामशाला और अपना स्नानागार था, ट्रेनिंग देने की अपनी जगह थी और अलग से खेल दिखलाने के लिए अलग अखाड़ा था—जो उन बड़े-बड़े ऐम्फीथियेटरों जैसी चीज़ तो न थी जहाँ बैठकर आम पब्लिक तमाशा देखती थी मगर हाँ इतनी बड़ी ज़रूर थी कि वहाँ पचास-साठ लोग बैठ सकते थे और बयकवक़्त तीन जोड़ लड़ सकते थे। इसके साथ ही साथ उसने उचित रिश्वत के ज़ोर से सेना के साथ काफ़ी स्थानीय सम्पर्क स्थापित कर लिया था और हर समय उसके पास काफ़ी सैनिक मौजूद रहते थे और इस तरह अब उसने अपने आपको उस खर्च से बचा लिया था

जो उसे खुद अपनी निजी पुलिस टोली बनाने के लिए करना पड़ता। उसके बावर्चीखाने में एक छोटी-मोटी फ़ौज का खाना पकता था क्योंकि ग्लैडिएटरों, उनकी औरतों, उनको ट्रेनिंग देने वालों, घर का काम करने वालों और पालकी ढोने वाले गुलामों वग़ैरह को लेकर उसकी गिरस्ती में चार सौ से ऊपर लोग थे। उसका आत्म-सन्तोष सकारण था।

वह दफ़्तर, जिसमें बाटियाटस बसन्त की उस सुबह को बैठा हुआ था और धूप बहुत अच्छी फैली हुई थी, बाटियाटस की सबसे हाल की हासिल की हुई चीज़ थी। जब उसने अपनी यह ज़िन्दगी शुरू की उसने हर तरह की तड़क-भड़क से बचने की कोशिश की। वह ऊँचे खानदान का नहीं था और उसे कोई ख़्वाहिश नहीं थी कि दिखलाये कि वह है। लेकिन जैसे-जैसे उसके मुनाफ़े बढ़ने लगे उसने देखा कि उसके लिए शोभा की बात यही है कि अपनी धन-सम्पदा के अनुकूल ढग से रहे। उसने यूनानी गुलामों को खरीदना शुरू किया और उसकी इन ख़रीदों में औरों के साथ एक मेमार और एक मुनीम भी था। उस मेमार ने बाटियाटस को समझाया था कि दफ़्तर की इमारत यूनानी शैली की बनवाये, सपाट छत और मोटे-मोटे खम्भे, सिर्फ़ तीन दीवारें और चौथी दिशा एकदम खुली हुई ताकि बाहर का सुन्दर दृश्य मिल सके। पर्दे खींच दिये जाने पर वह कमरा एक तरफ़ से बिलकुल खुला हुआ था जिससे खूब ताज़ी हवा और धूप आती थी। संगमरमर का फ़र्श और वह खूबसूरत सफ़ेद मेज़ जिस पर वह अपने सारे काम करता था, दोनो ही सुरुचि का परिचय देते थे। कमरे की खुली हुई दिशा उसकी तरफ़ पड़ती थी और उसके ठीक सामने दरवाज़ा था। उसके आगे एक क्लर्कों के बैठने का कमरा था और एक कमरा था जिसमें उसके मिलने-जुलने वाले आकर उसके इन्तज़ार में बैठते थे। इसमें शक नहीं कि बाटियाटस की दुनिया अब बिलकुल बदल गयी थी—कहाँ रोम की गलियों में होने वाली वह लड़ाइयाँ जिनमें वह भी एक टोली का सरदार होता था और कहाँ अब यह।

तभी मुनीम ने कहा—दो हैं—रईसज़ादे मालूम होते हैं। कपड़ों में इत्र और गालों पर लाली लगाये हैं और बहुत बेशकीमत अँगूठियाँ और कपड़े पहने हैं। बहुत पैसा है सबों के पास, मगर हैं रईसज़ादे और मुसीबत करेंगे। उनमें से एक तो अभी बिलकुल नौजवान है, मेरा ख़याल है इक्कीस साल का होगा। और दूसरा जो है वह इस नौजवान को खुश करने की कोशिश में लगा हुआ है।

बाटियाटस ने कहा—उनको अन्दर आने दो।

पल भर बाद, वे दोनों नौजवान कमरे में दाख़िल हुए और बाटियाटस

अत्यधिक शिष्टाचार के साथ उठा और अपनी मेज़ के सामने पड़े हुए दो स्टूलों पर बैठने के लिए उन्हें इशारा किया।

उनके बैठते-बैठते बाटियाटस ने अपनी सधी हुई निगाहों से जल्दी से उन्हें भाँपा। उनको देखकर मालूम होता था कि वे अमीर हैं मगर अमीरी का यह भाव ऐसा न था कि अपने प्रदर्शन के लिए व्याकुल हो। वे दोनों अच्छे परिवारों के नवयुवक थे मगर किसी महान् वंश-परम्परा के न जान पड़ते थे—क्योंकि वह जो कुछ थे वह बहुत स्पष्ट था। और भी ऊँचे खानदानों के लोग उन्हें शायद ख़ातिर में भी न लाते। उनमें जो छोटा था, केयस क्रैसस, वह बिलकुल छोकरी जैसा था, वैसा ही सुन्दर। ब्रैकस उससे कुछ बड़ा था और कुछ अधिक कठोर और उन दोनों में उसी का पलड़ा भारी था। उसकी आँखें सर्द, नीली, और बाल रेत-जैसे थे, ओंठ पतले थे और चेहरे पर एक ऐसा भाव था जो बतलाता था कि इस व्यक्ति को किसी चीज़ में आस्था नहीं है। बातचीत वही कर रहा था। केयस महज़ सुन रहा था और बीच-बीच में आदर और प्रशंसा की आँखों से अपने दोस्त को देख लेता था। और ब्रैकस ग्लैडिएटरों के बारे में इतने इतमीनान से बात कर रहा था कि मालूम होता था यह व्यक्ति इस खेल का रसज्ञ है।

—मैं लेएटुलस बाटियाटस हूँ। मैं ही लानिस्ता हूँ—उस मोटे आदमी ने कहा और जान-बूझकर अपने को उस बुरे नाम से पुकारा मगर उसके साथ ही साथ उसने मन-ही-मन यह तय किया कि दिन ख़त्म होने के पहले-पहले इस चीज़ की क़ीमत इन्हें पाँच हज़ार दीनारें चुकानी होंगी।

ब्रैकस ने अपना और अपने मित्र का परिचय दिया और फ़ौरन काम की बात पर आ गया—हम अलग से, सिर्फ़ अपने लिए दो जोड़ों की लड़ाई करवाना चाहते हैं।

—बस आप दोनों के लिए?

—हाँ, हम और हमारे दो दोस्त।

लानिस्ता ने गम्भीरता से सिर हिलाया और अपने दोनों मोटे-मोटे हाथ मिलाकर मेज़ पर रख दिये जिससे कि उसके हाथ की अँगूठियों के दोनों हीरे, एक पन्ना और एक लाल बहुत शान के साथ दिखायी देने लगे।

उसने कहा—ठीक है उसका प्रबन्ध हो सकता है।

—आमरण, ब्रैकस ने बहुत इत्मीनान से कहा।

—क्या कहा आपने?

—सुना तो आपने। मैं थ्रेसियनों के दो जोड़ चाहता हूँ जिनकी लड़ाई तब तक चलेगी जब तक एक मर नहीं जाता।

बाटियाटस ने प्रश्न किया—क्यों? ऐसा क्यों? आप नौजवान लोग जब

रोम से आते हैं तो क्यों हमेशा ऐसी लड़ाई पर ही ज़ोर देते हैं ? इतना ही खून और इतनी ही अच्छी लड़ाई—बल्कि इससे भी अच्छी !—आपको उस खेल में भी तो देखने को मिल सकती है जिसका फ़ैसला हार-जीत में होता है। आमरण लड़ाई की क़ैद क्यों रखते हैं ?

—क्योंकि हमें वही पसन्द है।

—यह कोई जवाब नहीं। ज़रा मेरी बात सुनिये—बाटियाटस ने कहा और अपने हाथ इस तरह फैलाये कि जैसे कह रहा हो कि आइए, हम दोनों जो इस खेल को समझते हैं, शान्ति से विचारपूर्वक वैज्ञानिक ढंग से इस बात को सोचें। उसने कहा—आप थ्रेसियनों की माँग करते हैं। मेरे पास थ्रेसियनों का दुनिया का सबसे अच्छा खेल आपको मिलेगा लेकिन अगर आपकी ज़िद यह हो कि लड़ाई का फ़ैसला मौत ही से हो तो इसका मतलब है कि आप न तो अच्छा खेल देखना चाहते हैं न छुरा चलाने का कमाल। आप भी इस बात को अच्छी तरह समझते हैं, जैसे कि मैं समझता हूँ। और बात समझ में आने वाली है भी। आप पैसा देते हैं—और फिर झट से पलक मारते में काम ख़त्म। मैं आपको उनका दिन भर का खेल दिखला सकता हूँ जो ऐसा होगा जैसा आपने रोम में कभी देखा न होगा। सच बात तो यह है कि रोम में आप को थियेटर ऐसा देखने को मिल जायगा जैसा कहीं भी नहीं मिलेगा। लेकिन अगर आप अपने निजी मनोरंजन के लिए मेरे पास आते हैं तो मुझे भी तो अपनी साख की चिन्ता करनी पड़ती है। मेरी साख बूचड़ के रूप में नहीं है। मैं आपको अच्छा खेल दिखलाना चाहता हूँ, सबसे अच्छा खेल जो पैसा ख़रीद सकता है।

ब्रैकस ने मुस्कराकर कहा—हम अच्छी लड़ाई चाहते हैं और हम चाहते हैं कि लड़ाई मौत में ही ख़त्म हो।

—मगर यह तो परस्पर-विरोधी बात है !

ब्रैकस ने धीमे से कहा—आपके विचार में। आप मेरा पैसा भी रखना चाहते हैं और अपने ग्लैडिएटर भी। जब मैं किसी चीज़ के लिए पैसा देता हूँ तो उसे ख़रीद लेता हूँ। मैं आपके दो जोड़ ख़रीद रहा हूँ जिन्हें वह लड़ाई लड़नी होगी जिसका फ़ैसला एक की मौत से ही होता है। अगर आप मेरी इच्छा नहीं पूरी करना चाहते तो मैं कहीं और चला जाऊँगा।

—मैंने कब कहा कि मैं आपकी इच्छा पूरी नहीं करना चाहता ? आप जैसा सोच रहे हैं मैं उससे भी अच्छी तरह आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मैं आपको दो जोड़ दे सकता हूँ जो सबेरे से लेकर रात तक, आठ घण्टे तक लगातार मैदान में लड़ते रहेंगे, अगर आपकी ऐसी ख़्वाहिश हो। और अगर किसी जोड़ के किसी एक आदमी का कोई हिस्सा बहुत बुरी तरह कट

जायगा तो मैं उसके बदले में दूसरा आदमी दे दूँगा। मैं आपको वह सब रक्त और रोमांच दूँगा जो आप या आपकी प्रेमिकाएँ चाह सकती हैं और इस पूरी चीज़ के लिए मैं आपसे सिर्फ़ आठ हज़ार दीनारें लूँगा। इसमें खाना और शराब और दूसरी कोई ख़िदमत जो आप चाहें, सब कुछ शामिल है।

—आप जानते हैं कि हम क्या चाहते हैं। हमें फ़िज़ूल की चिचपिच पसन्द नहीं है, ब्रैकस ने कठोरता से कहा।

—बहुत अच्छा, इसकी क़ीमत आपको पच्चीस हज़ार दीनार पड़ेगी।

इतनी बड़ी रक़म की बात सुनकर केयस बहुत प्रभावित हुआ बल्कि कहें कि आतंकित हुआ मगर ब्रैकस ने बहुत इत्मीनान से अपने कन्धे उचकाये।

—बहुत अच्छा। उन्हें नंगे लड़ना होगा।

—नंगे ?

—कितनी बार कहूँ लानिस्ता !

—बहुत अच्छा।

—और देखिए कोई चालबाज़ी न होनी चाहिए—यह नहीं कि दोनों एक दूसरे को थोड़ा-थोड़ा काट दें और ज़मीन पर गिर जायँ और ऐसा बहाना करें कि जैसे मर गये। अगर दोनों गिर पड़ते हैं तो आपका एक ट्रेनर उन दोनों की गर्दन काट देगा। और लड़ने वालों को भी यह बात मालूम होनी चाहिए।

बाटियाटस ने हामी भरी।

—मैं आपको दस हज़ार अभी दूँगा और बाक़ी खेल ख़तम होने पर।

—ठीक है। पैसे कृपया मेरे मुनीम को दे दीजिए। वह आपको रसीद दे देगा और आपके लिए एक शर्तनामा तैयार कर देगा। जाने के पहले आप उन्हें देखना चाहेंगे।

—खेल सबेरे हो सकेगा ?

—हाँ, सबेरे हो सकता है। मगर मैं आपको पहले ही से आगाह कर दूँ कि बहुत मुमकिन है ऐसी लड़ाई जल्दी ही ख़त्म हो जाय।

—मुझे आगाह करने की ज़रूरत नहीं है लानिस्ता। वह केयस की तरफ़ मुड़ा और उसने पूछा—क्यों, तुम उन्हें देखना चाहोगे ?

केयस लजाकर मुस्कराया और सिर हिलाकर उसने स्वीकृति दी। वे लोग बाहर निकल गये और जब ब्रैकस ने पैसे दे दिये और शर्तनामे पर दस्तख़त कर दिये तो वे दोनों अपनी पालकियों में बैठ गये और पालकी ढोने वाले उन्हें उस हाते के पास ले गये जहाँ ग्लैडिएटर कसरत करते थे। केयस ब्रैकस के चेहरे से अपनी आँखें अलग न कर पाता था। वह सोचने लगा कि मैंने कभी किसी आदमी को इतनी अच्छी तरह आचरण करते नहीं देखा।

बात सिर्फ़ पच्चीस हज़ार दीनारों की न थी—गो कि वह भी कोई ऐसी-वैसी बात न थी क्योंकि उसे अपने खर्च के लिए महीने में जो एक हजार दीनारें मिलती थीं उसी को उसकी जान-पहचान वाले सभी लोग बहुत ज़्यादा समझते थे—हाँ तो बात महज़ पच्चीस हज़ार दीनारों की न थी बल्कि उस ढंग की थी जिस ढंग से उसे खर्च किया जा रहा था और उस इत्मीनान की थी जिससे आदमी की ज़िन्दगी का सौदा किया जा रहा था। आदमी की ज़िन्दगी को कठोरतम उपेक्षा से देखने का यह एक ऐसा तरीका था जिसको अपना सकना केयस का एक बहुत बड़ा मनोरथ था और जो, उसके समीप, सभ्यता और संस्कृति का उच्चतम धरातल था। और यहाँ पर तो उस चीज़ का समन्वय एक बहुत ही संयत-चित्त आभिजात्य से हो गया था। जहाँ तक उसकी अपनी बात है वह हज़ार साल में भी यह माँग करने का साहस न कर सकता कि ग्लैडिएटर लोग नंगे लड़ें। मगर आख़िरकार वह भी तो एक बड़ा कारण था जिसके लिए वे लोग रोम के किसी पब्लिक शो में न जाकर कापुआ में अपने निजी मनोरंजन के लिए इस शो की व्यवस्था कर रहे थे।

कसरत के अहाते के पास पहुँचकर गुलामों ने पालकी उतारकर ज़मीन पर रख दी। कसरत करने का अहाता लोहे के जँगलों से घिरा हुआ एक बाड़ा था, डेढ़ सौ फ़ीट लम्बा और चालीस फ़ीट चौड़ा, जिसके तीन तरफ़ लोहे के जंगले थे और चौथी तरफ़ वह छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं जिनमें ग्लैडिएटर रहते थे। केयस ने महसूस किया कि इन ग्लैडिएटरों को रखना और ट्रेनिंग देना जंगली जानवरों को रखने और ट्रेनिंग देने से ज़्यादा ऊँची और ज़्यादा ख़तरनाक कला है : क्योंकि ग्लैडिएटर न सिर्फ़ एक ख़तरनाक जंगली जानवर था बल्कि सोच भी सकता था। उन आदमियों को बाड़े में कसरत करते देखकर भय और उत्तेजना से उसे इतना आनन्द मिला कि सारे शरीर में उसे रोमांच-सा हो आया। वे क़रीब सौ लोग थे जिनके शरीर पर बस एक लंगोटी थी। उनकी दाढ़ी मूँछ साफ़ थी, बाल बहुत ही छोटे कटे हुए थे और वे अपने लकड़ी के डण्डे और छड़ियाँ लिये हुए कसरत कर रहे थे। उनके बीच में क़रीब छः उस्ताद चल रहे थे और, सभी उस्तादों की तरह, वे भी फ़ौज के पुराने लोग थे। उस्ताद के एक हाथ में एक छोटी स्पेनी तलवार थी दूसरे में डण्डा था जिसके एक सिरे पर पीतल की भारी मूँठ लगी हुई थी और वह बहुत सतर्क होकर और मन-ही-मन डरते हुए चल रहा था और उसकी आँखों में घबराहट थी और था चौकन्नापन। फ़ौज के एक दस्ते के लोग बाड़े के चारों तरफ़ थोड़ी-थोड़ी दूर पर फैले हुए थे, उनके भारी, ख़ूनी बल्लम अनुशासन क़ायम रखने की असाधारण शक्ति से सम्पन्न थे।

केयस ने सोचा, ठीक ही तो है कि ऐसे लोगों की मौत की क़ीमत इतनी ज़्यादा है।

ग्लैडिएटरों के शरीर एकदम साँचे में ढले हुए थे, उनकी एक एक मांस-पेशी अलग दिखायी देती थी और उनकी चाल में चीते की चाल जैसा सजीलापन था। मोटे रूप में उनकी तीन श्रेणियाँ थीं, लड़नेवालों की वे तीन श्रेणियाँ जो इस समय इटली में सबसे लोकप्रिय थीं। एक तो थे थ्रेसियन—जिन्हें एक जाति से अधिक एक दल या समान पेशेवालों का एक समुदाय समझना चाहिए क्योंकि उनमें बहुत से यहूदी और यूनानी भी थे। इस समय इन्हीं की माँग सबसे ज़्यादा थी। वे सीका से लड़ते थे। सीका एक छोटी और हलकी-सी मुड़ी हुई कटार थी जिसका आम चलन थ्रेस और जूडिया में था जहाँ से उनकी अधिकांश भरती होती थी। रेतियराई की लोकप्रियता का युग अभी आरम्भ ही हो रहा था और वे लोग दो विलक्षण अस्त्रों से लड़ते थे, एक तो मछली पकड़ने का जाल और दूसरा एक लम्बा-सा त्रिशूल। इस श्रेणी के लड़नेवालों में बाटियाटस को इथियोपिया से आनेवाले लम्बे-चौड़े स्याह अफ़रीकन सबसे ज्यादा पसन्द थे। और उनका मुक़ाबला हमेशा मुर्मिलोन से किया जाता था—जो कि लड़नेवालों की एक ऐसी श्रेणी थी जिसका विभाजन बहुत बँधा-टंका न था और जो या तो अकेली तलवार या ढाल-तलवार दोनों से लड़ते थे। मुर्मिलोन या तो जर्मन होते थे या गॉल।

—उनको ज़रा ग़ौर से देखना, ब्रैकस ने उन काले आदमियों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा—उनका खेल सबसे अच्छा होता है और हाथ की सफ़ाई में सबसे बढ़-चढ़कर मगर वह बहुत उबानेवाला भी हो सकता है। वह खेल अगर सबसे अच्छा देखना हो तो थ्रेसियनों को देखना चाहिए। आप मेरी बात से सहमत हैं न? उसने बाटियाटस से पूछा।

लानिस्ता बाटियाटस ने अपने कन्धे उचकाकर जवाब दिया—हर खेल की अपनी सिफ़त है।

—मुझे एक थ्रेसियन और एक काले आदमी का जोड़ चाहिए।

बाटियाटस ने क्षण भर उसकी ओर देखा और फिर सिर हिलाते हुए जवाब दिया—वह भी कोई जोड़ है। थ्रेसियन के पास तो सिर्फ़ कटार होती है।

—मुझे वही चाहिए।

....बाटियाटस ने कन्धा उचकाया और अपने एक सिखाने वाले को अपनी ओर देखते पाकर उसे इशारे से अपने पास बुलाया। केयस मन्त्र-मुग्ध सा ग्लैडिएटरों की क़तारों को बाक़ायदा अपनी नाच जैसी कसरतें करते देख रहा था। थ्रेसियन और यहूदी छोटी-छोटी लकड़ियों और लकड़ी की छोटी छोटी

ढालों से अपने कटार के खेल का अभ्यास कर रहे थे, काले हब्शी अपने जाल और अपने लम्बे-लम्बे डण्डे आगे को फेंक रहे थे जो देखने में बिलकुल झाड़ू के दस्ते जैसे मालूम होते थे और लहीम-शहीम, गोरे-चिट्टे जर्मन और गॉल लकड़ी की तलवारों से लड़ रहे थे। अपनी सारी ज़िन्दगी में उसने ऐसे लोग न देखे थे जिनकी हर हरकत इतनी नपी-तुली, इतनी सजग, इतनी फुर्तीली, इतनी सजीली और इतने इत्मीनान की थी कि जैसे उन्हें ज़रा भी थकावट न मालूम हो रही हो। उनको बार-बार बार-बार अपने वह नाच के से क़दम सीखते हुए देखकर केयस के मन में यही विचार उठ रहा था। लोहे के जँगले के पीछे सूरज की रोशनी में उन्हें ऐसा करते देखकर केयस को भी—उसके दरिद्र, अनुभूतिशून्य, ऐंठे बररे हुए अन्तःकरण को भी—करुणा सी मालूम हुई कि ऐसी खूबसूरत, सजीली और जानदार ज़िन्दगी का इस्तेमाल सिर्फ़ उन्हें बूचड़ों की तरह हलाल करने के लिए हो। मगर यह भाव क्षण भर के लिए ही उसके मन में आया, सिर्फ़ एक हलकी सी भभक के रूप में। आगे आने वाली किसी घटना के लिए उसके मन में ऐसी तीक्ष्ण उत्तेजना पहले कभी न आयी थी। अभी जब वह बच्चा था तभी से ऊब और थकान ने उसकी ज़िन्दगी में घर कर लिया था। इस वक्त उसके मन में कोई ऊब न थी।

उस्ताद बात समझा रहा था—छुरे में सिर्फ़ एक तरफ़ तेज़ धार होती है। जहाँ एक बार छुरा जाल में फँसा कि थ्रेसियन का काम तमाम। इससे अखाड़े के रहने वालों में आपस में अदावत होती है। यह कोई जोड़ नहीं है।

—उन्हें बुलाओ—बाटियाटस ने संक्षेप में कहा।

—जर्मन के साथ क्यों नहीं—

ब्रैकस ने बहुत कठोरता से कहा—मैं थ्रेसियन के लिए पैसा दे रहा हूँ। मुझसे बहस मत करो!

—तुमने इनकी बात सुन ली न—लानिस्ता ने कहा।

उस्ताद के पास चाँदी की एक छोटी-सी सीटी थी जिसे वह एक धागे में पिरोकर अपनी गर्दन में लटकाये रहता था। अब उसने तीन बार ज़ोर से सीटी बजायी और ग्लैडिएटरों की क़तारें अपनी-अपनी जगह रुक गयीं।

—आप किसको चाहते हैं? उसने बाटियाटस से पूछा।

—ड्राबा।

—ड्राबा! उस्ताद ने ज़ोर से पुकारा।

एक काला आदमी घूमा और अपना जाल और डण्डा घसीटता हुआ उनकी तरफ़ आया। पूरा देव था वह और उसकी काली खाल पसीने से चमक रही थी।

—डेविड।

—डेविड ! उस्ताद ने ज़ोर से पुकारा।

यह एक यहूदी था, दुबला-पतला, बाज़ का-सा चेहरा, पतले-पतले तिक्त ओंठ, हरी-हरी आँखें, दाढ़ी मूँछ साफ़, धूप में सीझा हुआ चेहरा और एकदम चिकना सफ़ाचट सिर। उसकी उँगलियों में, जो कभी •खुलती थीं और कभी बन्द होती थीं, उसकी लकड़ी की कटार फँसी हुई थी और उसकी आँखें जैसे उन मेहमानों को आर पार चीरती निकल जाती थीं मगर उन्हें देखती न थीं।

ब्रैक्स ने केयस से कहा—यह आदमी यहूदी है। तुमने कभी यहूदी देखा है?

केयस ने सिर हिलाया।

—बड़ा मज़ा आयेगा। यहूदी लोग सीका से लड़ने में बड़े तेज़ होते हैं। लड़ाई का मतलब उनकी समझ में बस इतना ही है लेकिन अपने हथियार में वे होते बहुत अच्छे हैं।

—पोलेमस।

—पोलेमस ! उस्ताद ने ज़ोर से पुकारा।

यह एक थ्रेसियन था। बहुत कमउम्र और सजीला और खूबसूरत।

—स्पार्टकस !

वह भी इन तीनों से आ मिला। वे चारों आदमी खड़े रहे और उनके और इन दो रोमन नौजवानों, लानिस्ता और पालकी ढोनेवाले गुलामों के बीच कसरत करने के हाते के भारी-भारी लोहे के डण्डे थे। उनको देखते हुए केयस सोचने लगा कि वे लोग वाक़ई एक नयी चीज़ हैं, दूसरों से भिन्न और विचित्र और उसके अपने सोचने के ढंग के अनुसार भयानक। और बात उनके उस म्लान, गम्भीर, उदास पौरुष ही की न थी—यद्यपि यह पौरुष भी ऐसा था जैसा कि उसके अपने परिचितों की गोष्ठी में शायद ही कभी देखने को मिलता हो—तो बात केवल उनके पौरुष की न थी बल्कि जिस तरीके से उन्हें बाक़ी लोगों से काटकर अलग रक्खा गया था, उसकी थी। वे ऐसे लोग थे जिन्हें लड़ने और मारने की ही शिक्षा दी जाती है और लड़ना भी वैसा नहीं जैसे कि सैनिक लड़ते हैं या जानवर लड़ते हैं बल्कि जैसे कि ग्लैडिएटर लड़ते हैं, जो कि एक बिलकुल ही दूसरी चीज़ थी। उसे लगा कि वह अपने सामने चार आदमियों को नहीं बल्कि चार डरावने नक़ली चेहरों को देख रहा है।

—क्यों कैसे लगे? बाटियाटस ने पूछा।

लाख चाह कर भी केयस इस सवाल का न तो जवाब ही दे सकता था और न शायद कुछ भी बोल सकता था मगर ब्रैक्स ने बहुत इतमीनान से

कहा—एक उस टूटी नाक वाले को छोड़कर बाक़ी सब बहुत अच्छे हैं। उसकी तो शक्ल ही लड़नेवाले की नहीं है।

—शक्ल से कभी कभी धोखा भी हो जाया करता है—बाटियाटस ने उसे याद दिलाते हुए कहा—वह स्पार्टकस है। बहुत अच्छा, बहुत ताक़तवर और बहुत फुर्तीला। मैंने उसे ख़ास तौर पर चुना है। वह बहुत फ़ुर्तीला है!

—आप उसका जोड़ किससे करायेंगे?

—उस हब्शी से—बाटियाटस ने जवाब दिया।

—तो ठीक है। उम्मीद करता हूँ कि दाम के लायक चीज़ मुझे मिलेगी, ब्रैकस ने कहा।

हाँ तो इस तरह केयस ने तब स्पार्टकस को देखा मगर चार बरस बाद उसे किसी भी ग्लैडिएटर का नाम न याद रह गया था और बस याद रह गयी थी वह गर्म धूप, उस जगह की अपनी अनुभूति और गन्ध और पुरुषों के पसीना बहते हुए शरीर की गन्ध।

२

यह वारिनिया है जो अँधेरे में जागती हुई पड़ी है और जो आज रात नहीं सोयी है, ज़रा भी नहीं, कुछ क्षणों के लिए भी नहीं: मगर स्पार्टकस, जो उसकी बग़ल में लेटा हुआ है, सो रहा था। कैसी गहरी पक्की नींद है उसकी! उसका धीरे धीरे साँस लेना, श्वास और निश्वास जो कि उसके भीतर की ज़िन्दगी की आग के लिए ईंधन के समान है, वह उतना ही सम और नियमित है जितना कि सृष्टि में किसी भी चीज़ का आरोह और अवरोह होता है और वारिनिया इस चीज़ के बारे में सोचती है और जानती है कि जिस चीज़ में भी शान्ति है और जो जीवन से संघर्ष कर रही है उसमें यही नियमितता होती है चाहे वह ज्वार-भाटा हो, चाहे ऋतुओं का आवागमन और चाहे स्त्री के गर्भ में पल्लवित होता हुआ डिम्ब।

मगर कोई इस तरह कैसे सो सकता है जब कि उसे मालूम हो कि जागने पर उसे किस चीज़ का सामना करना है? मौत की कगार पर वह कैसे इस तरह खर्राटे ले सकता है? उसकी इस मानसिक शान्ति का क्या रहस्य है?

बहुत धीरे से, बहुत ही धीरे से वारिनिया ने उसको छुआ और अँधेरे में पड़े हुए उसके शरीर की त्वचा पर उसके मांस पर और एक एक अंग पर हाथ फेरा। उसकी त्वचा में ताज़गी है, जान है, लचीलापन है: उसकी मांस-पेशियाँ विश्राम की स्थिति में ढीली पड़ी हैं, उसी तरह उसके अंग-प्रत्यंग ढीले हैं और आराम कर रहे हैं। नींद बड़ी अनमोल चीज़ है: नींद उसके लिए ज़िन्दगी है।

(सो सो सो मेरे प्रियतम, मेरे प्राण, मेरे सौम्य, मेरे सुशील, मेरे रुद्र, सो। सो और शक्ति संचय कर, मेरे पुरुष, मेरे पुरुष।)

बहुत नरमी से, आहिस्ता से, उसकी समस्त गति जैसे एक हलकी-सी फुसफुसाहट हो, वारिनिया उसके पास से और पास पहुँचती जाती है और उसका शरीर स्पार्टकस के शरीर से घनिष्ठतर सम्पर्क में आता जाता है, उसकी लम्बी-लम्बी जाँघें और बाँहें स्पार्टकस की जाँघों और बाँहों से सट जाती हैं और उसके उन्नत, पूर्ण वक्ष स्पार्टकस के सीने को गद्दी का सहारा-सा देने लगते हैं और उसका चेहरा स्पार्टकस के चेहरे को छूने लगता है, गाल पर गाल, और उसके सुनहरे बाल उसके ऊपर छितरा जाते हैं और उसके मन का भय पुरानी स्मृतियों से और प्रेम से कम हो जाता है क्योंकि भय और प्रेम कभी साथ-साथ नहीं रह सकते।

(एक बार उसने स्पार्टकस से कहा था, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे संग एक काम करो। अपने क़बीले में हम ऐसा ही करते हैं क्योंकि हमारा यही विश्वास है। स्पार्टकस ने मुस्कराकर कहा था, तुम्हारे क़बीले मे लोग क्या विश्वास करते हैं? उसने कहा था, तुम हँसोगे और तब स्पार्टकस ने जवाब दिया था, क्या मैं कभी हँसता हूँ? क्या मैं कभी हँसा? तब वारिनिया ने कहा था, हमारे क़बीले के लोगों में यह विश्वास है कि नाक और मुँह के रास्ते, हर सांस के साथ आत्मा शरीर में प्रविष्ट होती है। देखो तुम मुस्करा रहे हो। तब उसने जवाब दिया, मैं तुम पर नहीं मुस्करा रहा हूँ। मैं इस पर मुस्करा रहा हूँ कि लोगों के विश्वास भी कैसे अजीब-अजीब होते हैं। उसकी इस बात पर वारिनिया ने चीख़ कर रहा था, क्योंकि तुम यूनानी हो और यूनानी लोग किसी बात पर विश्वास नहीं करते। तब स्पार्टकस ने कहा था, मैं यूनानी नहीं थ्रेस का हूँ और यह बात सच नहीं है कि यूनानी लोग किसी बात पर विश्वास नहीं करते। वे उन सभी अच्छी और अनमोल बातों पर विश्वास करते हैं जिन पर कहीं के लोग विश्वास कर सकते हैं। इसके जवाब में वारिनिया ने कहा था कि मुझे इससे कोई बहस नहीं कि यूनानी किस बात पर विश्वास करते हैं या नहीं करते मगर तुम क्या वह बात करोगे जो अपने क़बीले में हम लोग किया करते हैं? क्या तुम मेरे मुँह पर अपना मुँह रखकर अपनी साँस और अपनी आत्मा को मेरे भीतर डालोगे? और तब मैं तुम्हारे संग भी यही बात करूँगी और हमेशा-हमेशा के लिए हमारी आत्माएँ एक हो जायँगी और हम दो शरीरों में वास करते हुए एक व्यक्ति हो जायेंगे। कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हें इस बात से डर लगता हो? और इसका जवाब स्पार्टकस ने यह कह कर दिया था कि क्या तुम अब भी यह नहीं समझतीं कि मुझे किन चीज़ों से डर लगता है?

अपनी कोठरी के फर्श पर, पतली सी पुआल के बिस्तरे पर वह उसके संग लेटी हुई है। वह कोठरी ही उनका घर है। वह कोठरी ही उनका क़िला है। उनका साथ-साथ रहना हमेशा पत्थर की इसी कोठरी में हुआ है जो पाँच फ़ीट चौड़ी और सात फ़ीट लम्बी है और जिसमें सिर्फ़ एक पेशाबदान और एक पतला सा पुआल का बिस्तरा है। मगर ये चीज़ें भी उनकी नहीं हैं : कुछ भी उनका नहीं है, यहाँ तक कि वे खुद भी एक दूसरे के नहीं हैं और इस वक़्त वह उसकी बग़ल में लेटी हुई उसके मुँह और उसके अंगों को छूती हुई धीरे-धीरे रो रही है—वह जिसे किसी ने दिन के समय रोते नहीं देखा।

(बाटियाटस अक्सर कहा करता था कि मैं औरतें किसी को देता नहीं उधार देता हूँ। मैं उन्हें अपने ग्लैडिएटरों को उधार देता हूँ। ऐसा आदमी अखाड़े के किस काम का जिसके पुरुष अंग सूख गये हों, मुरझा गये हों। ग्लैडिएटर पालकी ढोनेवाला गुलाम नहीं होता। ग्लैडिएटर मर्द होता है और अगर वह मर्द नहीं है तो कोई उसके लिए दस दीनारें भी नहीं देगा और मर्द को औरत की ज़रूरत होती है। मैं ऐसे लोगों को ख़रीदता हूँ जिनके सुधरने की कोई उम्मीद नहीं होती और वह इसलिए कि ऐसे लोग सस्ते होते हैं और अगर मैं उन्हें बस में नहीं कर सकता तो मेरे उस्ताद, जो इसी काम पर मुक़र्रर हैं, वे तो कर ही सकते हैं।

रात बीत रही है और प्रभात का पहला हलका कुहासा कोठरी में दाख़िल हो रहा है। वारिनिया अगर पूरी तरह तन कर खड़ी हो जाय तो उसका सिर कोठरी की अकेली खिड़की के बराबर पहुँच जायगा। अगर वह अपनी कोठरी के बाहर देखे तो वह कसरत करने के उस लोहे के जंगले से घिरे हुए हाते को देखेगी और उसके उस पार दिन रात पहरा देते हुए निंदासे सैनिकों को देखेगी। वह इस बात को अच्छी तरह जानती है। कोठरी और जंजीरें उसके लिए स्वाभाविक निवास नहीं हैं जैसे कि स्पार्टकस के लिए हैं।

(इस स्त्री को देखकर बाटियाटस के मन में आनन्द और उत्कण्ठा का संचार हुआ था। उसके दलालों ने बहुत थोड़े पैसों में, सिर्फ़ पाँच सौ दीनारों में, उसे रोम में ख़रीदा था। इसलिए यह तो वह समझता था कि इस माल में कोई दाग़ न हो ऐसा हो नहीं सकता मगर तो भी उसको देखने ही से उसके मन मे उत्कण्ठा और हर्ष का संचार हुआ था। एक बात तो यह थी कि वह लम्बी थी और उसका शरीर बहुत खूबसूरत ढला हुआ था जैसा कि अधिकांश जर्मन क़बीलाई औरतों का होता है और बाटियाटस को लम्बी खूबसूरत औरतें पसन्द थीं। दूसरी बात यह थी कि अभी वह बहुत कमसिन थी, मुश्किल से बीस-इक्कीस साल की और बाटियाटस को कमसिन औरतें बहुत पसंद थीं। इतना ही नहीं वह बहुत खूबसूरत थी और उसके पीले बाल खूब घने और

खुशनुमा थे और बाटियाटस को अच्छे बालोंवाली खूबसूरत औरतें पसन्द थीं। इसलिए यह समझना मुश्किल नहीं है कि क्यों उसको देखकर लानिस्ता के मन में उत्कण्ठा, लालसा और हर्ष का उद्रेक हुआ।

(मगर दाग़ उसके अन्दर था और पहली ही बार जब उसने वारिनिया को अपने संग बिस्तर पर सुलाने की कोशिश की तो उसे इसका पता चला। वह खूँख्वार जंगली बिल्ली बन गयी, हाथ-पैर चलाने लगी, थूकने लगी, नोचने-बकोटने लगी और चूँकि वह काफ़ी ऊँची पूरी और मज़बूत थी इसलिए उसको मार-मार कर बेहोश करने में बाटियाटस को काफ़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा। उस संघर्ष में, वे सभी बहुमूल्य वस्तुएँ जिनसे उसने अपने शयनकक्ष को अलंकृत किया था, टूट-फूट गयीं और इन टूटनेवाली चीज़ों में एक खूबसूरत यूनानी गुलदान भी था जिसका इस्तेमाल उसने वारिनिया के सिर पर चोट करने के लिए किया। अतृप्त वासना के कारण उस समय उसे इतना क्रोध आ रहा था, कि उसे लगा कि अगर मैं इस औरत को मार भी डालूँ तो उचित होगा : लेकिन जब उसने उन गुलदानों, लैम्पों और छोटी-छोटी मूर्तियों की क़ीमत खुद उस औरत की क़ीमत में जोड़ी तो उसने निश्चय किया कि उन चीज़ों में उसकी इतनी ज़्यादा पूँजी लगी हुई है कि इस तरह अपने क्रोध के बहाव में बह जाना ठीक न होगा। और न वह यही कर सकता था कि उस औरत को उसके रूप के बल पर ऊँचे दामों में बाज़ार में बिक्री कर दे। कहा नहीं जा सकता मगर शायद इसीलिए कि उसने अपनी ज़िन्दगी रोम की गलियों में एक गुण्डे सरदार के रूप में शुरू की थी, बाटियाटस को व्यवसाय में अपनी नैतिकता का असाधारण ध्यान रहता था। उसे इस बात का गर्व था कि मैं कभी धोखा देकर कोई चीज़ नहीं बेचता। लिहाज़ा उसको बेचने के बदले उसने यह तय किया कि उसे अपने ग्लैडिएटरों के हवाले कर दे कि वे उसे ठीक करके क़ाबू में ले आयें और चूँकि अब तक अकारण ही स्पार्टकस नाम के उस अजीब चुप्पे थ्रेसियन के ख़िलाफ़ चिढ़ उसके भीतर पैदा हो चुकी थी—वह स्पार्टकस जो ऊपर से देखने में भेड़ जैसा था मगर जिसके भीतर एक आग थी जिसका आदर अखाड़े का हर ग्लैडिएटर करता था—इसलिए बाटियाटस ने उसी को इस औरत के लिए चुना।

(वारिनिया को स्पार्टकस के हाथ में देते समय स्पार्टकस को देखकर उसे बहुत मज़ा आ रहा था और उसने कहा—लो, इस औरत को लो। इसके साथ सोओ। बच्चा हो या न हो यह तुम्हारी इच्छा की बात है। इससे अपनी आज्ञा का पालन करवाओ मगर घायल न करो और शक्ल भी न बिगाड़ो। यही बात उसने स्पार्टकस से कही और स्पार्टकस शान्त खड़ा इतमीनान से उस जर्मन लड़की को यों देखता रहा कि जैसे उस पर बाटियाटस की बात का कोई

असर न हो रहा हो। उस समय वारिनिया खूबसूरत न थी। उसके चेहरे पर दो लम्बे-लम्बे घाव थे। एक आँख इतनी सूजी हुई थी कि बन्द हो गयी थी और उस पर चोट का पीला और बैंगनी दाग़ था और उसी तरह उसके माथे, गर्दन और बाँहों पर भी हरे-लाल ज़ख़्म थे।

(बाटियाटस ने कहा—ज़रा एक नज़र देखो तो कि तुम क्या चीज़ पा रहे हो और यह कहकर उसने उस लड़की के अपने दिये हुए पहले से फटे कपड़े को और भी फाड़ दिया और वह स्पार्टकस के सामने एकदम नङ्गी हो गयी। उस क्षण स्पार्टकस ने उसको देखा और प्यार करने लगा। इसलिए नहीं कि वह नङ्गी थी बल्कि इसलिए कि बिना कपड़ों के भी वह ज़रा भी नङ्गी न थी और न वह सिटपिटायी और न अपनी लाज को अपनी बाँहों से ढँकने की ही उसने कोई कोशिश की बल्कि बड़ी शान्त दृप्त गरिमा से खड़ी रही और न तो उसके चेहरे पर कोई कष्ट या यातना ही दिखायी पड़ती थी और न वह किसी को देख रही थी, न स्वयं उसको न बाटियाटस को। वह अच्छी तरह अपने भीतर समायी हुई और अपनी दृष्टि और अपनी आत्मा और अपने स्वप्नों में डूबी हुई खड़ी रही और यह तमाम चीज़ें उसके अन्दर इसीलिए थीं कि उसने अपने जीवन का उत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया था, जिसका मूल्य इससे अधिक कुछ न था। स्पार्टकस का हृदय उसके प्रति प्रेम से भर उठा।

(उस रात को वह कोठरी के उस सबसे दूर वाले कोने में सिमटी बैठी रही और स्पार्टकस ने उसको कुछ भी नहीं किया, उसके पास पहुँचने की भी कोई कोशिश नहीं की और शीत की कँपकँपी कम होने पर सिर्फ़ इतना पूछा, छोकरी तू लैटिन बोलती है?—कोई जवाब नहीं। तब उसने कहा—मैं तुझसे लैटिन में बात करूँगा क्योंकि मैं जर्मन नहीं बोलता और अब रात की सर्दी बढ़ रही है और मैं चाहता हूँ कि तू मेरी चटाई पर सो जा—और तब भी उस लड़की की तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया। तब उसने वह चटाई लड़की की तरफ़ बढ़ा दी और वह उन दोनों के बीच पड़ी रही और सबेरे तक पड़ी रही और दोनों रात भर नंगे पत्थर पर सोये। मगर जब आज से डेढ़ साल पहले जर्मनी के जंगलों से पकड़कर वे लोग उसे ले आये थे, तब से यह पहला अवसर था जब वारिनिया को किसी की ओर से ऐसी भलमनसी, ऐसा स्नेह मिला था।)

और आज की इस गीली रात को जो अब सुबह में तब्दील हो रही थी, उस पहली रात की स्मृति बार-बार उसके मन में आ रही है और इस स्मृति के साथ उसके भीतर से निकलकर प्रेम की एक ऐसी लहर अपनी बग़ल में सोये हुए उस आदमी के अन्दर जा रही है कि अगर उसको इसका आभास न हो तो यही समझना चाहिए कि वह पत्थर का बना है। वह हिलता है और एकाएक अपनी आँखें खोल देता है और भोर के उस झुटपुटे में उसकी

धुँधली धुँधली आकृति देखता है मगर अपने मन की आँख से उसको सम्पूर्ण रूप से देख लेता है और अपनी उसी अर्द्ध-जाग्रत अवस्था में उसको अपने पास खींच लेता है और उसे दुलराने लगता है।

—ओ मेरे प्राण, मेरे प्राण, वह कहती है।

—मुझे....

—मगर आज इसके लिए तुम्हारे पास शक्ति कहाँ है, मेरे प्राण?

—मैं कहता हूँ। मेरे अन्दर शक्ति भरी हुई है।

और तब वह उसकी बाँहों में लेट जाती है और उसके आँसू चुपचाप बहते रहते हैं।

३

लड़ने के लिए सवेरे का वक्त मुकर्रर है और यह चीज़ हर जगह हवा में गूँज रही है और उन दो सौ से ज़्यादा ग्लैडिएटरों में से एक-एक इस बात को जानता है और उनमें इस विद्युत् ज्ञान की प्रतिक्रिया होती है। मैदान की रेत पर दो जोड़ों का खून बहेगा क्योंकि दो नौजवान बहुत सा पैसा और उत्तेजना के रोमाच की चाह लेकर रोम से आये हैं। दो थ्रेसियन, एक यहूदी और एक अफ्रीकन हब्शी और चूँकि हब्शी को मछली के जाल और त्रिशूल से लड़ने का अभ्यास है इसलिए लड़ाई का जोड़ बहुत बेजोड़ है। यह एक ऐसी चीज़ है जो कि बहुत से लानिस्ता कभी न होने देते थे क्योंकि भले तुम एक कुत्ते को पाल-पोसकर बड़ा करो मगर उसका यह मतलब थोड़े ही है कि तुम उसे शेर से लड़ा दो। मगर बाटियाटस पैसे के लिए कुछ भी कर सकता है।

वह हब्शी ड्राबा सवेरे जागता है और अपनी बोली मे कहता है—ओ मेरे मौत के दिन, मैं तेरा स्वागत करता हूँ।

वह अपनी चटाई पर लेटा हुआ है और अपनी ज़िन्दगी के बारे में सोच रहा है। वह इस अजीब सच्चाई के बारे में सोच रहा है कि सभी आदमियों को, यहाँ तक कि दीन से दीन आदमी को भी, प्रेम और दुलार और चुम्बनों और खेल और खुशी और गाने और नाच की स्मृति होती है और यह कि सभी आदमियों को मरने से डर लगता है। यहाँ तक कि जब ज़िन्दगी की वक़्त धूल के बराबर भी नहीं होती तब भी आदमी उससे चिपकता है। यहाँ तक कि जब वह अकेला होता है और अपने घर से बहुत दूर होता है और उसे अपने घर लौटने की कोई भी उम्मीद नहीं होती और उसे हर तरह के अपमान और कष्ट और क्रूरता का शिकार बनना पड़ता है और उसे जानवरों की तरह खिला-पिलाकर मोटा किया जाता है ताकि वह दूसरों के

मनोरंजन के लिए लड़े—इस सब के बाद भी ज़िन्दगी का मोह उससे नहीं छूटता।

और वह जो कि कभी एक सद्गृहस्थ था और जिसके पास अपना घर था और पत्नी थी और बच्चे थे और शान्ति के दिनों में लोग जिसकी बात को सुनते थे और लड़ाई के दिनों में जिसकी बात की कद्र करते थे, उसे आज एक मछली पकड़ने का जाल और उसी काम का त्रिशूल पकड़ा कर लड़ने के लिए भेजा जा रहा था ताकि लोग हँस सकें और तालियाँ बजा सकें।

वह धीरे से अपनी जाति और अपने पेशे के लोगों के उस छूंछे दर्शन को बुदबुदाता है—दुम विविमस, विवमस।

मगर वह बात छूंछी है और उसमें कोई सान्त्वना नहीं है और उसकी हड्डियाँ और मांस-पेशियाँ दर्द कर रही हैं जब कि वह अपना दिन का काम शुरू करने के लिए खड़ा होता है और अपने शरीर और अपने मन को तैयार करता है, मजबूर करके तैयार करता है, स्पार्टकस को मारने के लिए—उस स्पार्टकस को जिसे वह प्यार करता है और जिसकी वह सबसे ज़्यादा क़द्र करता है, उस जगह के सभी गोरी चमड़ी वालों से ज़्यादा। इसीलिए तो कहा गया है—ग्लैडिएटर, कभी दूसरे ग्लैडिएटर से दोस्ती न कर।

वे लोग पहले नहाने के लिए गये, चारों एक साथ मगर ख़ामोश। बात करना फ़िज़ूल था क्योंकि उस वक़्त बात करने के लिए उनके पास कुछ भी न था और चूँकि अब से लेकर अखाड़े में दाख़िल होने तक वे लोग बराबर साथ ही रहेंगे, इसलिए बात करने से हालत और ख़राब ही होगी।

नहाने के बड़े-बड़े टबों में गरम पानी था जिससे भाप निकल रही थी और वे लोग जल्दी से गंदले पानी में घुस गये जैसे बिना किसी सोच-विचार या लिहाज़ के उन्हें हर काम पूरा करना हो। नहाने का घर चालीस फ़ीट लम्बा और बीस फ़ीट गहरा और काफ़ी अँधेरा सा था जिसमें दरवाज़ों के बन्द हो जाने पर सिर्फ़ एक छोटे से रोशनदान से रोशनी आती थी। इस पीली रोशनी में नहाने का पानी गंदले-से ख़ाकी रंग का हो रहा था और उस पर गर्म भाप का बादल था। यह भाप आग में लाल किये हुए पत्थरों को पानी में डालने से उठ रही थी और उसकी वजह से नहाने की उस पूरी जगह में हवा भाप से भारी हो रही थी। वह स्पार्टकस के शरीर की पोर-पोर में प्रवेश कर रही थी और उससे उसकी तनी हुई मांस-पेशियों में आलस्य का ढीलापन आ रहा था और आराम और सकून का एक अजीब सा एहसास हो रहा था। वह गरम पानी उसके नज़दीक एक ऐसा रहस्य था जिसका कोई अन्त न था

और न नूबिया की खुश्क मौत कभी उसके जिस्म से पूरी तरह धुली ही : और कभी ऐसा न होता था कि नहानघर में दाखिल होते समय उसे यह खयाल न आता हो कि देखो हम जैसे लोगों के शरीरों की कितनी फ़िक्र की जाती है जो पैदा ही मौत के लिए हुए हैं और जिन्हें मौत पैदा करने की ही सीख दी जाती है। वह जब ज़िन्दगी की चीज़ें पैदा करता था, गेहूँ और जौ और सोना, तब उसका शरीर एक गन्दी, बेकार, शर्मनाक और ग़लीज़ चीज़ थी जिसकी एक ही वक़त थी कि उसे पीटा जाय और ठोकर मारी जाय और कोड़े लगाये जायँ और भूखों मारा जाय—लेकिन अब जब कि वह एक मौत का जानवर हो गया था तब उसका शरीर वैसा ही बेशक़ीमत हो गया था जैसी कि वह पीली धातु जिसे वह अफ्रीका में खान में से खोदकर निकालता था।

और यह एक अजीब बात थी कि अब जाकर उसके अन्दर घृणा अंकुरित हो रही थी। घृणा के लिए पहले कोई जगह न थी; घृणा भी एक विलास की चीज़ है जिसके लिए पहले खाने और शक्ति और एक प्रकार के विचार के लिए समय की आवश्यकता होती है। वे चीज़ें अब उसके पास थीं और लेण्टुलस बाटियाटस उसकी घृणा का जीवित लक्ष्य था। बाटियाटस रोम था और रोम बाटियाटस था। उसे रोम से घृणा थी और बाटियाटस से घृणा थी और हर उस चीज़ से घृणा थी जो रोमन थी। वह एक ऐसे वातावरण में पैदा हुआ और पला था कि जिसमें खेत पर काम करने को, मवेशी चराने को और खान में से धातुओं की खुदाई करने को उसने ज़िन्दगी की शर्त के रूप में स्वीकार किया था; मगर रोम में आकर उसने देखा कि लोग इसीलिए पैदा किये जाते हैं और सिखाये-पढ़ाये जाते हैं कि वे एक दूसरे के टुकड़े-टुकड़े कर सकें और रेत के मैदान में पड़े-पड़े खून बहायें ताकि उन्हें देखकर कुलीन घरों के पुरुष और स्त्रियाँ हँसें और रोमांचित हों।

नहानघर से वे लोग मालिश की मेज़ों पर गये। हमेशा की तरह स्पार्टकस ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और ज़ैतून का खुशबूदार तेल उसकी चमड़ी पर डाला गया और मालिश करनेवाले की सुबुक और समझदार उँगलियाँ उसके शरीर की एक-एक मांसपेशी के तनाव को मालिश से दूर करने लगीं। पहली बार जब यह चीज़ उसके संग हुई थी तो उसको वही अनुभूति हुई थी जो एक जाल में फंसे हुए जानवर को होती है, भय और आतंक की अनुभूति, कुछ ऐसी कि जैसे वे कुछ टटोलती हुई-सी, दर्द से ऐंठती हुई-सी उँगलियाँ उसकी उस रही-सही आज़ादी को जो कि उसके पास थी या कभी थी यानी उस के मांस को उसके शरीर को हमला करके उससे छीने ले रही हैं। मगर अब वह आराम से पड़ जाता था और

मालिश करने वाला जो कुछ उसे देता था उसका पूरा लाभ वह ले सकता था। बारह बार वह इसी तरह लेटा था; बारह बार वह लड़ा था, आठ बार कापुआ के विशाल ऐम्फ़ीथियेटर में जब कि खून देखकर पागल और शोर करती हुई भीड़ें लड़ने के लिए उसका जोश बढ़ा रही थीं और चार बार बाटियाटस के निजी अखाड़े में, मार-काट के उन अमीर पारखियों के मनोरंजन की ख़ातिर जो न जाने किन विशाल नगरों से आते थे जिनके बारे में बहुत सी जनश्रुतियाँ थीं लेकिन जिन्हें स्पार्टकस ने कभी देखा न था और जो कि वहाँ आदमियों की लड़ाई देखने के लिए अपनी प्रेमिकाओं या पुरुष प्रेमियों के संग एक दिन गुज़ारने के लिए वहाँ पर आते थे।

आज भी जब वह हमेशा की तरह मालिश की मेज़ पर लेटा हुआ था तो वह उन बीते दिनों को फिर से अपनी स्मृति में जीने लगा। वे सब बातें उसके दिमाग़ पर खुदी हुई थीं। खेत या खान की कोई विभीषिका वैसी न थी जैसी उस समय तुम्हें जकड़ लेती है जब कि तुम लड़ाई के अखाड़े की ठोंक-ठोंककर सख़्त की हुई रेत पर पैर रखते हो; कोई भय इस जैसा न था। कोई अपमान इस अपमान जैसा न था कि हत्या करने के लिए तुमको चुना जाय।

और इस तरह उसने समझा कि इंसान की ज़िन्दगी की कोई शक्ल ग्लैडिएटर की ज़िन्दगी से घटिया नहीं है, और चूँकि अपनी ज़िन्दगी में वह जानवरों के इतना क़रीब था इसीलिए उसकी देखभाल भी उसी जतन से होती थी जिस जतन से अच्छे घोड़ों की होती है, फ़र्क बस इतना था कि लेण्टुलस बाटियाटस या दूसरे किसी भी रोमन को इस ख़्याल से ही आग लग जाती कि एक अच्छे घोड़े को अखाड़े में मार डाला जाय। वह भय और अपमान का अपना लबादा ओढ़े हुए था और अब मालिश करने वाली उँगलियाँ उसकी नसों के ताने-बाने को बड़े जतन से सहला और दबा रही थीं।

वह बड़ा खुशनसीब था। आज तक कभी उसकी कोई रग नहीं कटी थी, कोई हड्डी नहीं टूटी थी, कोई आँख नहीं लहूलुहान हुई थी, कान के पर्दों पर या गर्दन पर छुरी का कोई घाव नहीं लगा था और न उस क़िस्म का ही कोई ख़ास घाव लगा था जिससे उसके साथी इतना डरते थे और रात को जिनका सपना देखकर भय और आतंक से उन्हें पसीना हो आता था। आज तक कभी उसकी पिछली टाँग में घुटने के पीछे की मोटी नस नहीं कटी थी और न उसकी अंतड़ियों में ही छुरी भुँकी थी। उसके सभी ज़ख़्म उन लोगों की ज़बान में मामूली निशानियाँ थीं और उसका कभी यह ख़्याल न था और न वह यह चाहता था कि लोग ऐसा समझें कि इसका कारण उसकी विशेष निपुणता है। निपुणता बूचड़ के इस काम में! वे कहा करते थे कि गुलाम

कभी अच्छा सैनिक नहीं बन सकता। मगर वह बिल्ली की तरह फुर्तीला था, बहुत कुछ वैसा ही फुर्तीला जैसा कि वह हरी आँख वाला यहूदी, वह नफ़रत और ख़ामोशी की दुनिया का बाशिन्दा, जो उसकी बग़ल में मेज़ पर लेटा हुआ था और जो मज़बूत और बहुत चिन्तनशील था। यही सबसे कठिन बात है—सोचना मगर फिर भी गुस्सा न होना। गुस्सा मौत है। और वे जो लड़ाई के अखाड़े में गुस्सा होते थे, मारे जाते थे। डर और चीज़ है, मगर गुस्सा नहीं। खुद उसके लिए यह चीज़ कठिन न थी। अपनी सारी ज़िन्दगी में उसके विचार ही अपनी प्राणरक्षा के उसके अस्त्र थे। बहुत थोड़े लोग इस बात को जानते थे। 'गुलाम–वह कुछ भी नहीं सोचता।' और 'ग्लैडिएटर तो जानवर होता है,—यह बात तो बहुत साफ़ थी मगर इसके भीतर ही इसकी एकदम उल्टी बात भी थी। बहुत कम ही ऐसा होता है कि कोई आज़ाद आदमी अपने चिन्तन के सहारे अपनी प्राणरक्षा करता है। मगर जहाँ तक गुलाम की बात है उसके तो हर रोज़ ज़िन्दा रहने की शर्त यह है कि वह सोचे। यह एक दूसरी ही तरह का सोचना होता है मगर फिर भी होता तो सोचना ही है। सोच-विचार दार्शनिक का साथी था मगर गुलाम का दुश्मन। जब स्पार्टकस ने उस सुबह वारिनिया को छोड़ा तो उसको अपने दिमाग़ से पोंछ डाला। उसके लिए अब वारिनिया का अस्तित्व नहीं। अगर वह ज़िन्दा रहता है तो वह भी ज़िन्दा रहेगी मगर अभी तो वह ज़िन्दा है न मुर्दा।

मालिश ख़त्म हुई। चारों गुलाम फिसलकर मेज़ पर से उतर आये और उन्होंने अपने-अपने लम्बे ऊनी लबादे, जिन्हें कफ़न कहा जाता था, अपने शरीर में लपेट लिये और हाते को पार करके खाना खाने के बड़े कमरे में पहुँच गये। सभी ग्लैडिएटर अपना सुबह का खाना खा रहे थे, सभी फ़र्श पर पलथी मारे बैठे थे और खाना उनके सामने छोटी-छोटी चौकियों पर रक्खा हुआ था। हर आदमी के पास एक प्याला बकरी के दूध का दही और एक कटोरा गेहूँ का दलिया था जिसमें सुअर के गोश्त के चर्बीदार टुकड़े थे। लानिस्ता अच्छा खाना खिलाता था और बहुत से लोग जो उसके अखाड़े में आते थे ज़िन्दगी में पहली बार भरपेट खाना खाते थे, उसी तरह जैसे मौत की सज़ा पाया हुआ आदमी सलीब पर टाँगे जाने के पहले भरपेट खाना खाता है। मगर आज जिन चार लोगों को अखाड़े में अपना खेल दिखाना था उनके लिए सिर्फ़ जरा सी शराब और मुर्ग़ का थोड़ा सा ठण्डा गोश्त था। पेट भारी होने पर आदमी ठीक से नहीं लड़ सकता।

मगर ख़ैर स्पार्टकस को भूख न थी। वे चारों एक दूसरे से अलग-अलग बैठे और उन सभी को खाने से एक सी अरुचि हो रही थी। वे धीरे-धीरे शराब की चुसकियाँ ले रहे थे। एकाध लुक़मा गोश्त का भी खा

लेते थे और कभी-कभी एक दूसरे को देख लेते थे। मगर बोल कोई नहीं रहा था और बातचीत से भरे हुए उस बड़े कमरे में उन लोगों का अपना एक छोटा सा ख़ामोशी का टापू था। दूसरे ग्लैडिएटर भी न तो उन्हें देख ही रहे थे और न उनकी ओर उनका कोई विशेष ध्यान ही था। यह उनका आख़िरी नाश्ते का शिष्टाचार था।

अब तक सब लोग जान गये थे कि कैसे जोड़ बने हैं। हर आदमी जानता था कि स्पार्टकस उस काले हब्शी से लड़ेगा और छुरी का मुकाबिला जाल और काँटे से होगा। हर आदमी जानता था कि दूसरे जोड़ में थ्रेसियन का मुकाबला यहूदी से होगा। स्पार्टकस मारा जायगा और नौजवान थ्रेसियन मारा जायगा। ग़लती इसमें स्पार्टकस की है। यही नहीं, कि वह उस जर्मन लड़की के संग सोता था और हमेशा बातचीत में उसे अपनी बीबी कहता था, दूसरा कुछ नहीं; बल्कि यह भी उसकी ग़लती ही थी कि उसने ऐसा कुछ किया था कि दूसरे सभी लोग उसे प्यार करते थे। उस बड़े कमरे में बैठे हुए ग्लैडिएटरों में से कोई भी इस बात को स्पष्ट रूप में न व्यक्त कर सकता था। उन्हें नहीं मालूम था कि ऐसा क्यों हुआ या कैसे हुआ। हर आदमी का अपना ढङ्ग होता है, अपने तौर-तरीक़े होते हैं। भरे-भरे ओंठ, टूटी नाक और भेड़-जैसे चेहरे वाले इस थ्रेसियन के व्यवहार में एक विशेष नरमी थी। यों उसके अन्दर ऐसा कोई गुण न था कि लोग उसके फ़ैसले को मानते, अपने मन की दहशतों और अपने झगड़ों को लेकर उसके पास पहुँचते या सान्त्वना और निश्चय के लिए उसकी ओर देखते लेकिन तब भी वह जब कोई निश्चय कर देता तो वे लोग वैसा ही करते जैसा कि वह बताता। जब वह उनसे अपनी हलकी आवाज़ और कुछ विचित्र उच्चारण की लैटिन में बोलता तो लोग उसके शब्दों को मान लेते। वह बोलता और लोगों को सान्त्वना मिल जाती। वह देखने में सुखी आदमी जान पड़ता था। वह सिर ऊँचा करके चलता था जो कि एक गुलाम के लिए कुछ अजीब ही बात थी; वह कभी सिर नहीं झुकाता था; वह कभी आवाज़ चढ़ाकर बात न करता था और न कभी गुस्सा ही होता था। उसका आत्म-सन्तोष ही वह चीज़ थी जो उसे औरों से अलग करती थी और वह इन सिखाये-पढ़ाये ख़ूनियों और खोये हुए लोगों के बीच, जिनका कोई भविष्य नहीं था, अपने उसी ढङ्ग से चलता था।

बाटियाटस अक्सर कहता—ग्लैडिएटर जानवर होते हैं। उनको अगर कोई आदमी मान ले तो उसकी समझ ही में न आये कि क्या करे। वह ठीक से देख ही न सकेगा।

और सीधी बात यह थी कि स्पार्टकस ने जानवर बनने से इनकार कर दिया। और इसलिए वह ख़तरनाक है और इसीलिए बावजूद इसके कि छुरे के खेल में वह उस्ताद था और अगर उसे किराये पर दिया जाता तो उसके काफ़ी पैसे भी मिलते, बाटियाटस यही चाहता था कि वह मर जाय।

नाश्ता ख़त्म हो गया। वे चारों, जिन्हें उनकी अपनी ज़बान में व्यंग से 'सुविधाभोगी' कहा जाता था, अलग ही अलग चल रहे थे। आज उन पर मनाही थी, न तो कोई उनसे बात कर सकता था और न उन्हें छू सकता था। मगर गैनिकस स्पार्टकस के पास गया, उसने उसको गले से लगाया और उसके ओंठों को चूम लिया। यह एक अजीब सी हरकत थी और इसकी सज़ा भी कड़ी थी, तीस कोड़े, लेकिन उन ग्लैडिएटरों में शायद ही कोई रहा हो जिसको अपने मन में इस बात का आभास न मिला हो कि उसने ऐसा क्यों किया।

५

बाद के सालों में लेण्टुलस बाटियाटस ने बहुत बार उस सुबह को याद किया और बहुत बार अन्वेषण करके इस बात को समझना चाहा कि क्या बाद में दुनिया को हिला देनेवाली जो घटनाएँ हुईं उनका कारण यह चीज़ हो सकती थी। मगर उसे इसका विश्वास न था कि उन बातों में ऐसा कोई कार्य-कारण सम्बन्ध बिठाला जा सकता है और इस बात को मानना उसके लिए संभव न था कि बाद में जो कुछ हुआ वह इसीलिए हुआ कि दो शौक़ीन रोमन रईसज़ादे उस खेल का एक विशेष शो देखना चाहते थे जिसका ख़ातमा एक खिलाड़ी की मौत में होता हो। शायद ही कोई हफ़्ता गुजरता हो कि उसके अपने निजी अखाड़े में एक या दो या तीन जोड़ों की लड़ाई का विशेष शो न होता हो और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह चीज़ उससे किस प्रकार भिन्न है। इस सिलसिले में उसे किराये के अपने उन कुछ बड़े-बड़े मकानों का ख़्याल आया जो रोम में थे और जिनका मालिक वह था और उसने सोचा कि उनकी क़िस्मत भी बहुत कुछ ऐसी ही है। इन मकानों को, जिन्हें इन्स्यूली कहा जाता था, आम तौर पर बहुत अच्छा धन्धा समझा जाता था जिसमें कोई व्यापारी अपनी पूँजी लगा सकता था, बेहतरीन धन्धों में से एक। सौदागरी के धन्धे में क़िस्मत के जो उतार-चढ़ाव होते थे उनसे यह चीज़ आज़ाद थी; उनसे बराबर बँधी हुई आमदनी होती थी और यह आमदनी बराबर बढ़ती जाती थी और बढ़ायी भी जा सकती थी। मगर इस आमदनी बढ़ाने में ही एक ख़तरा भी छिपा हुआ था। शुरू-शुरू में बाटियाटस

ने दो मकान खरीदे जिनमें एक चौमंज़िला था और दूसरा पँचमंज़िला। दोनों में नीचे की मंज़िल में बारह-बारह कमरे थे और हर मंज़िल का किराया साल में क़रीब दो सौ पच्चीस रुपये था।

बाटियाटस को यह समझने में देर नहीं लगी कि मुनाफ़े में दिलचस्पी रखने वाला आदमी बराबर नयी-नयी मंज़िलें जोड़ता चला जाता है। ग़रीब मेहतरों के पास छोटे छोटे नीची छत के मकान थे और अमीरों के पास गगनचुम्बी अट्टालिकायें थीं। लानिस्ता ने फ़ौरन पाँच मंज़िल के मकान को सात मंज़िल का मकान कर दिया मगर चौमंज़िले मकान में उसने पहली मंज़िल जो जोड़नी चाही तो वह भहराकर गिर पड़ी जिससे न सिर्फ़ उसे पैसे का बड़ा नुकसान हुआ बल्कि उसके बीस से ज़्यादा किरायेदार भी मर गये—जिसका मतलब हुआ कि रिश्वतों में अब और न जाने कितना खर्च करना होगा। कुछ ऐसी ही मात्रा में वृद्धि और उससे गुणात्मक परिवर्तन की बात यहाँ, इन ग्लैडिएटरों के मामले में भी थी। मगर तब भी बाटियाटस जानता था कि अपने व्यवहार में वह ज़्यादातर अखाड़े के मालिकों से बुरा नहीं है और सच बात यह है कि बहुतों से अच्छा है।

इसमें शक नहीं कि यह सुबह बुरी थी। सबसे पहले तो गैनिकस को कोड़े लगाने पड़े। ग्लैडिएटरों को कोड़े लगाना कोई अच्छी बात न थी मगर क्या किया जाय, इस बात का भी तो ख्याल रखना पड़ता है कि अखाड़े का अनुशासन दुनिया भर में सबसे कड़ा अनुशासन हो, जैसा कि उसे होना चाहिये। कोई ग्लैडिएटर अगर थोड़ा सा भी अनुशासन भंग करता था तो उसको सज़ा देनी पड़ती थी और सज़ा भी ऐसी कि फ़ौरन दी जाय और बेरहमी से दी जाय। इसके अलावा दूसरी बात यह थी कि ग्लैडिएटरों में इस बात को लेकर तीव्र आक्रोश था कि छुरीवाले आदमी का मुकाबला जाल और कांटे से कराया जा रहा था। और तीसरी बात तो खुद वह लड़ाई थी।

बाटियाटस खेल के अखाड़े में खड़ा मेहमानों के आने का इन्तज़ार कर रहा था। निजी तौर पर बाटियाटस इन रोमनों के बारे में चाहे कुछ भी सोचता हो मगर इस बात की उसे तीक्ष्ण चेतना थी कि जो पैसा देता है वह विशेष सम्मान का अधिकारी होता है। जब भी उसका सामना किसी लखपती आदमी से होता यानी ऐसे आदमी से जिसके पास न सिर्फ़ लाखों हों बल्कि जो लाखों खर्च कर सकता हो तो हमेशा वह अपने आपको इतना तुच्छ अनुभव करता कि जैसे वह एक बहुत ही छोटी सी गड़हिया का एक बहुत ही छोटा-सा मेंढक हो। जिन दिनों वह शहर की गलियों में गुण्डों की सरदारी करता था उन दिनों वह सपना देखा करता था कि पचास हज़ार रुपये जमा करेगा और उस रुपये के बल पर ऊँचे वर्ग में प्रवेश पा सकेगा। जब उसे यह पद मिला तब उसने पहले पहल इस

बात को समझा कि दौलत का क्या मतलब होता है और गो कि वह काफी ऊपर चढ़ा—और अपनी चालाकी से—तब भी अभी चढ़ने को अनन्त सीढ़ियाँ बाक़ी थीं।

सम्मान देने का जहाँ पद हो वहाँ सम्मान देना चाहिए। इसीलिए वह यहाँ पर केयस और ब्रैकस और दूसरे लोगों का इन्तज़ार कर रहा था; और इसीलिए उसे पता न था कि गैनिकस को तीस कोड़ों की सजा मिली थी इस चीज़ से अलग वह तो उन सम्मानित अतिथियों को उस जगह पर ले जा रहा था जो ख़ास उनके बैठने के लिए बनायी गयी थी, जो इतनी काफी ऊँची बनी थी कि वे बिना अपनी गर्दन को सारस की तरह लम्बा किये या ख़ामख़ाह खींचे-ताने वहाँ से उस छोटे से अखाड़े के एक-एक कोने को अच्छी तरह से देख सकें। उसने खुद अपने हाथों से उनकी कोचों की गद्दियाँ ठीक कीं ताकि लड़ाई देखते समय वे ज़्यादा से ज़्यादा आराम से उसमें पीछे की ओर झुककर बैठ सकें। उनके लिए ठण्डी की हुई शराब और छोटे-छोटे बर्तनों में मिठाइयाँ लायी गयीं ताकि उनकी भूख और प्यास हमेशा शान्त रहे। उनके बैठने की जगह पर एक धारीदार कपड़े का छज्जा बनाया गया था जो सबेरे की धूप से उनकी हिफ़ाज़त करता था और दो गुलाम खिदमतगार चिड़ियों के पर के पंखे लिये खड़े थे ताकि अगर सबेरे की ठण्डक चली जाय और दोपहर के ठीक पहले मौसम खुश्क और गर्म हो जाय तो भी मेहमानों को कोई तकलीफ़ न हो। अतिथियों के सत्कार के लिए जो प्रबन्ध किये गये थे उनका मुआइना करके बाटियाटस का हृदय गर्व से फूल उठा—क्योंकि इसमें सन्देह नहीं कि कोई कितना ही नफ़ासत-पसन्द आदमी क्यों न हो उसके आराम के लिए यहाँ पर हर चीज़ मौजूद थी। और अभी और खेल शुरू होने के बीच के समय में उनका जी न उकताये इसके लिए मैदान के फ़र्श पर दो गवैयों और एक नाचनेवाली की भी व्यवस्था की गयी थी।

यह नहीं कि वे लोग संगीत या नृत्य की ओर कुछ ख़ास ध्यान दे रहे थे; वे इससे ज़्यादा ऊँची चीज़ों की चर्चा कर रहे थे और ब्रैकस का विवाहित दोस्त कार्नीलियस लूसियस उन लोगों को बड़े विस्तार से यह बतला रहा था कि इन दिनों रोम में अच्छी तरह से रहने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत होती है। बाटियाटस ने भी ठहरकर उन लोगों की बातें सुनीं; वह यह जानने को उत्सुक था कि इन दिनों रोम में अच्छी तरह रहने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत होती है और उनकी बातचीत ने उसको अच्छी तरह अपनी गिरफ़्त में ले लिया जब उसे यह मालूम हुआ कि एक नये नानबाई के लिए लूसियस ने पाँच हजार दीनार दिये जो कि नानबाई को देने के लिए बहुत ही बड़ी रक़म है।

—मगर आदमी सुअर की तरह तो नहीं रह सकता—कि झूठ कहता हूँ ? लूसियस ने पूछा, और न उसी तरह रह सकता है जिस तरह मेरे पिता रहते थे। अगर आदमी अच्छा खाना चाहता है तो उसे कम-से-कम चार लोगों की जरूरत होती है, नानबाई, कोकस, पिस्टोर, और एक डलसियारियस तो ज़रूर ही, क्योंकि अगर वह न हो तो मिठाइयों के लिए आदमी को बाज़ार भेजना पड़ेगा और अगर यही करना हो तो फिर उस चीज़ के बिना भी तो काम चल ही सकता है।

—मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे उसके बिना मिठाई के काम चल सकता है, उसकी बीबी ने कहा, हर महीने एक नये हज्जाम की ज़रूरत होती है। तुम्हारी हजामत ठीक से बनाना हर आदमी के बस का रोग तो है नहीं, उसके लिए तो फ़रिश्ते चाहिए ! लेकिन अगर मैं कहूँ कि मुझे अपने बालों की देख-भाल के लिए या मालिश करने के लिए एक और औरत की ज़रूरत है तो—

—इसके लिए कोई सौ गुलामों की ज़रूरत नहीं है, ब्रैकस ने नरमी से उससे कहा, मगर असल बात उनको काम सिखलाने की है—और उनको काम सिखलाने के बाद भी मैं कभी-कभी सोचता हूँ तो उससे कोई नतीजा तो निकलता नहीं। अपने कपड़ों के लिए मेरे पास एक प्रिवाटा है, साइप्रस का रहने वाला एक यूनानी जो पूरे वक्त आपको होमर के उद्धरण दे सकता है। और देखो वह न तो कपड़े धोता है और न उसकी सफ़ाई करता है। उससे मैं सिर्फ़ एक चीज़ की माँग करता हूँ कि वह मेरे कपड़ों को ज़रा कायदे से रक्खे। मेरे पास अपने लबादों के लिए एक बड़ी सी आलमारी है। मैं बस इतना चाहता हूँ कि जब मैं कोई खास लबादा उतारूँ तो उसे उसी आलमारी में रक्खा जाय। और ट्यूनिक उसी आलमारी में रक्खा जाय जिसमें ट्यूनिक रक्खे जाते हैं। यह काम तो ऐसा है कि कुत्ते को भी सिखलाया जा सकता है, कि नहीं ? इसलिए जब मैं उससे कहूँ 'रेक्सिडीज़, मुझे वह पीला वाला ट्यूनिक तो दो तो उसे यह काम कर सकना चाहिए। मगर वह नहीं कर सकता। और उसे ढङ्ग से यह काम करना सिखलाने में जितना वक्त लगेगा उससे कम में तो मैं खुद अपने हाथों से उसे कर लूँगा।

—तुम अपने हाथ से उसे नहीं कर सकते, केयस ने आपत्ति की।

—नहीं—हरगिज़ नहीं। ज़रा देखो तो लानिस्ता यह कैसी शराब हम लोगों को दे रहा है।

वार्टियाटस और भी तेज़ था। उसने शराब का पात्र उठाते हुए गर्व से कहा—सिज़ाल्पिन।

ब्रैकस ने नाक पर एक उँगली रखकर बड़ी नज़ाकत से थूका।—तुमको

इन गद्दियों का ख़्याल कैसे आया जब मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि हमें गद्दियाँ चाहिए ? तुम्हारे पास जूडिया की शराब है लानिस्ता ?

'ज़रूर, ज़रूर—सबसे अच्छी। हल्के गुलाबी रंग की—हल्के-से-हल्के गुलाबी रंग की। उसने ज़ोर से चीख़ कर एक गुलाम को फ़ौरन जूडिया की शराब लाने को कहा।

—इनसे कहो, लूसियस ने अपनी पत्नी से कहा जो उसके कान में कुछ कह रही थी।

—नहीं।

ब्रैकस उसकी ओर झुक गया और उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर उसे अपने ओंठ से लगा लिया।—प्रिये, क्या ऐसी भी कोई बात है जो तुम मुझसे नहीं कह सकतीं ?

—मैं कान में कहूँगी।

उसने कान में कहा और ब्रैकस ने जवाब दिया,—ज़रूर, ज़रूर। और फिर बाटियाटस से कहा—लड़ने के पहले उस यहूदी को यहाँ लाना।

बाटियाटस कभी उस एक धागे को न पकड़ पाता था जो कुलीन लोगों के सभी कामों में बराबर यकसाँ दौड़ता रहता था। वह जानता था कि ऐसा एक धागा है ज़रूर मगर वह कितना ही क्यों न करे, उस चीज़ को ठीक से बतला न पाता था और उसकी समझ में न आता था कि वह अपने लिए आचरण का कौन-सा तरीका अपनाये कि उसका नीचे कुल में उत्पन्न होना छिप जाय। सभी लोग जो किसी विशेष शो के लिए उसके मैदान को किराये पर लेते थे, अलग-अलग ढङ्ग से आचरण करते थे। ऐसी हालत में कोई बात समझे भी कैसे ?

बाटियाटस ने उस यहूदी को बुलवाया।

वह दो उस्तादों के बीच आया और जहाँ पर ये लोग बैठे हुए थे वहाँ आकर खड़ा हो गया। वह अब भी अपने लम्बे खुरदुरे ऊनी लबादे में लिपटा हुआ था और उसकी हल्की हरी आँखें ठण्डे पत्थरों की तरह नज़र आती थीं। अपनी उन आँखों से वह कुछ देख नहीं रहा था। वह बस वहाँ पर खड़ा था।

औरत ने खीस काढ़ दी। केयस डरा हुआ था। यह पहला मौका था जब एक ग्लैडिएटर हाथ भर की दूरी पर उसके पास खड़ा था, जब उसके और ग्लैडिएटर के बीच कोई दीवार या सीख़चे न थे और गो वहाँ उनको सिखानेवाले उस्ताद भी मौजूद थे मगर तब भी उसके मन को ढाढ़स न होता था। यह आदमी थोड़े ही था, यह यहूदी, जिसकी आँखें हरी और मुँह पतला

सा था, नाक मुड़ी हुई और खूँख्वार नज़र आती थी और सिर के बाल बहुत छोटे छोटे कटे हुए थे !

ब्रैकस ने कहा—लानिस्ता, इससे कहो कि अपना लबादा उतार दे।

—कपड़ा उतार दो, बाटियाटस ने धीरे से कहा।

वह यहूदी इसके बाद भी थोड़ी देर वैसे ही खड़ा रहा और फिर एका-एक उसने अपना लबादा गिरा दिया और उनके सामने नंगा खड़ा हो गया। उस वक़्त उसका वह दुबला-पतला मगर कसा हुआ शरीर ऐसा निश्चल था जैसे कासे को तराश कर उसे गढ़ा गया हो। केयस मन्त्रमुग्ध सा उसे घूरता रहा। लूसियस ने दिखलाना चाहा कि उसे इस चीज़ से ऊब मालूम हो रही है मगर उसकी बीबी उस यहूदी को घूरती रही, उसका मुँह थोड़ा खुला हुआ था और सास ज़ोर ज़ोर से चल रही थी।

ब्रैकस ने थके हुए ढङ्ग से कहा, दो पैर का जानवर है यह।

यहूदी झुका, उसने अपना लबादा उठाया और घूम पड़ा। दोनों सिखानेवाले उसके पीछे पीछे चल दिये।

—पहले इसी की लड़ाई हो, ब्रैकस ने कहा।

६

इस वक़्त तक कानून की ऐसी कोई बन्दिश न थी कि जब कोई थ्रेसियन या यहूदी मैदान में अपनी पुराने ज़माने से चली आती हुई कटार या उस ज़रा सी मुड़ी हुई छुरी से लड़े जिसे सीका कहते हैं तो उसे अपने बचाव के लिए लकड़ी की एक छोटी सी ढाल दी जाय और इतना ही नहीं जब यह कानून पास हो गया तब भी अक्सर इसका उल्लंघन होता था। पिंडलियों की हिफ़ाज़त के लिए पहने जानेवाले पुराने ज़माने से चले आते हुए पीतल के शाकपोश और लोहे के टोप की तरह लकड़ी की यह ढाल भी छुरे के खेल के असली मज़े को खत्म कर देती थी—वह मज़ा जिसकी जान ही थी ग्लैडिएटरों की गज़बनाक तेज़ी और फुर्तीलापन। अब से क़रीब चालीस साल पहले तक—और तब तक दो-दो आदमियों के जोड़ बहुत कम ही लड़ा करते थे—अखाड़े के खेल को आम तौर पर समनाइटीज़ कहा जाता था और उसमें लड़नेवाले जोड़ भारी भारी ज़िरहबख्तर पहनकर रोमन सेना की भारी सी लम्बूतरी ढाल, स्कूटम नाम की, और स्पेन की तलवार, स्पाथा, ले कर लड़ते थे। इस लड़ाई में न तो कुछ ख़ास उत्तेजना ही मिलती थी और न काफ़ी खून ही बहता था और उसमें ढाल से ढाल की और तलवार से तलवार की टक्कर घंटों तक चल सकती थी और लड़नेवालों में से किसी को भी कुछ ख़ास नुक़सान

न पहुँचता था। उस वक्त भी लानिस्ता को उसी नफ़रत से देखा जाता था जिस नफ़रत से रण्डी के दलाल को देखा जाता है। यह लानिस्ता अक्सर गुण्डों का कोई छोटा-मोटा सरदार होता था जो कुछ थोड़े से नीम-मुर्दा गुलामों को ख़रीदकर उन्हें एक दूसरे पर छोड़ देता था ताकि वे एक दूसरे पर अपने हथियार चलायें और या तो शरीर का ज़्यादा खून बह जाने के कारण या थकान से चूर होकर ज़मीन पर ढेर हो जायें और मर जायें। बहुत बार लानिस्ता सचमुच रण्डी का दलाल ही होता था। वह एक हाथ से ग्लैडिएटरों का सौदा करता था और दूसरे से रण्डियों का।

दो नये आविष्कारों ने इस अखाड़े की लड़ाई में एक क्रान्ति ला दी—और पहले का वह उबा देने वाला खेल एक ऐसी चीज़ बन गया कि सारा रोम उसके पीछे पागल हो उठा और बहुत से लानिस्ता लोगों को सेनेट में जगह मिल गयी, गाँव में उनका अपना बड़ा सा मकान हो गया और लाखों की सम्पत्ति हो गयी। रोम जिस तरह फ़ौजी और व्यावसायिक रूप में अफ्रीका के भीतर घुस रहा था, पहला आविष्कार उसी का परिणाम था। काला हब्शी, जो पहले बहुत कम ही देखने में आता था, अब गुलामों के बाज़ार में दिखायी देने लगा। वह ऊँचे डील-डौल का ग़ज़ब का ताकतवर नीग्रो। किसी लानिस्ता को यह बात सूझ गयी और उसने उस हब्शी को एक मछली जाल और मछली पकड़ने का त्रिशूल जैसा काटा पकड़ा दिया और उसे ढाल-तलवार के मुकाबले में अखाड़े में खड़ा कर दिया। तत्काल यह चीज़ रोमवालों की आँखों पर चढ़ गयी और वे खेल अब साधारण खेल नहीं रह गये। इस क्रिया को पूरा किया एक दूसरे आविष्कार ने, जो कि थ्रेस और जूडिया के भीतर घुसने का परिणाम था क्योंकि वहाँ पर उनको पहाड़ी किसानों की दो अक्खड़, मज़बूत, आज़ाद जातियाँ मिलीं जिनका ख़ास हथियार एक छोटा सा, उस्तरे की तरह तेज़ छुरा था। जाल लेकर लड़ने वाले आदमियों से भी ज़्यादा इन लोगों ने ग्लैडिएटरों की लड़ाई की शक्ल बदल दी। उन दिनों शायद ही कभी कोई ढाल या ज़िरहबख़्तर का इस्तेमाल करता था। और इस तरह समनाइटीज़ की देर तक चलने वाली ढाल-तलवार की भारी टक्कर छुरी के बिजली जैसे तेज़ द्वन्द्व युद्ध में बदल गयी जिसमें लम्बे लम्बे भयानक ज़ख़्म थे, खून था, अतड़ियों का बाहर निकल आना था, हाथ की सफ़ाई थी, दर्द था और बिजली के कौंधे जैसी तेज़ी थी।

इसी बात को ब्रैकस ने अपने नौजवान साथी से कहा, एक बार थ्रेसियनों की लड़ाई देख लेने के बाद फिर कुछ भी अच्छा नहीं लगता, यह बात तय है। उसके बाद हर चीज़ बहुत धीमी और उबा देनेवाली और

बेमतलब हो जाती है। थ्रेसियनों का अच्छा खेल दुनिया की सबसे रोमांचकारी चीज़ है।'

जोड़ों के लड़ने का वक्त हो गया था। नाचनेवाली और गवैये चले गये थे। सुबह की गर्म धूप में एरीना एकदम ख़ाली और सूना था। उस वक्त वहाँ की हर चीज़ पर एक दर्द करती हुई और काँपती हुई ख़ामोशी बादल की तरह छायी हुई थी और वे चारों रोमन यानी वह स्त्री और तीन पुरुष, धारीदार छज्जे की छाया में अपनी कोचों पर लेटे हुए जूडिया की गुलाबी शराब की चुसकियाँ ले रहे थे और खेल के शुरू होने का इन्तज़ार कर रहे थे।

७

मैदान में उतरने के ठीक पहले ग्लैडिएटर एक जगह बैठकर इन्तज़ार करते थे। यह एक छोटा सा शेड था जो मैदान में खुलता था। वहीं पर वे तीनों ग्लैडिएटर, दो थ्रेसियन और वह हब्शी, बैठे हुए थे। वे एक बेंच पर बैठे थे और उन्हें कोई खुशी न थी; जैसा कि वे अपनी ज़बान में कहा करते थे, उनका टिकट कट चुका था। अब सिर्फ़ ज़िल्लत ही उनकी संगिन थी, न कोई वीरोचित गौरव, न प्रेम, न सम्मान और फिर आख़िरकार उस हब्शी ने उस मौन को भंग करते हुए जिसे उन्होंने अपने ऊपर बिठाल लिया था, कहा—ईश्वर जिसे प्यार करता है वह बचपन में ही मर जाता है।

—नहीं, स्पार्टकस ने कहा।

और तब हब्शी ने उससे पूछा—तुम ईश्वर को मानते हो ?

—नहीं।

—परलोक मानते हो ?

—नहीं।

—तब फिर तुम क्या मानते हो, स्पार्टकस ?—हब्शी ने पूछा।

—मैं मानता हूँ कि तुम हो और मैं हूँ।

नौजवान खूबसूरत थ्रेसियन ने कहा, तुम और मैं, हम तो लानिस्ता की क़साई चौकी पर पड़े हुए गोश्त हैं।

—तुम और क्या मानते हो स्पार्टकस ?—हब्शी ने पूछा।

—और क्या ?—आदमी काहे का सपना देखता है ? जब कोई मरने जा रहा हो तब वह काहे का सपना देख ही सकता है !

—मैंने तुमसे पहले यह बात कही थी और वही बात फिर तुमसे कहता हूँ, हब्शी ने धीरे से कहा, सीने से निकलती हुई उसकी भारी आवाज़ में गूंज थी और दर्द था—और वह बात यह है कि मैं बहुत अकेला हूँ और

अपने घर से बहुत दूर हूँ और अपने घर पहुँचने की भूख मुझे काँटों की तरह चुभ रही है। अब मैं और ज़िन्दा नहीं रहना चाहता। मैं तुम्हें नहीं मारूँगा, साथी।

—यह क्या दया करने की जगह है?

—यह थकान की जगह है और मैं थका हुआ हूँ।

स्पार्टकस ने कहा—मेरा बाप गुलाम था और उसने मुझे सिखलाया है कि गुलाम की अकेली खूबी यह होती है कि वह ज़िन्दा रहे।

—हम दोनों जिन्दा नहीं रह सकते।

—और गुलाम के साथ ज़िन्दगी एक ही नेकी बरतती है और वह नेकी यह है कि दूसरे लोगों की तरह उसे भी अपनी मौत की घड़ी नहीं मालूम होती।

सन्तरियों ने उनकी बात सुन ली और उन्हें चुप करने के लिए उनके शेड की दीवार पर अपने बल्लम पटकने लगे। यहूदी लौट आया; कुछ भी हो वह बोलता नहीं; वह कभी न बोलता था, उसे आदत ही न थी। अपना लबादा ओढ़े हुए वह दरवाजे के भीतर आकर खड़ा हो गया और उसका सिर दुःख से और अपमान से झुका हुआ था। नगाड़ा बजने लगा। नौजवान थ्रेसियन उठा, उसका निचला ओंठ आवेग के कारण काँप रहा था और उसने और यहूदी ने अपने अपने लबादे गिरा दिये। दरवाजा खुल गयाऔर दोनों नङ्गे, अगल-बगल, मैदान में निकल गये।

हब्शी को कोई दिलचस्पी न थी। वह मौत को वर चुका था। बावन बार वह अपने जाल और भाले से लड़ चुका था और ज़िन्दा बचकर निकल आया था मगर अब वह धागा टूट गया था जो उसे ज़िन्दगी से बाँधे हुए था। वह अपनी स्मृतियों में खोया हुआ बेंच पर झुका बैठा था और उसका सिर उसके हाथों पर टिका हुआ था। मगर स्पार्टकस कूदकर दरवाज़े के पास गया और उसकी एक दरार में अपनी आँख लगायी ताकि वह देख सके, जान सके। वह किसी की ओर न था; थ्रेसियन उसी के देश और उसी की जाति का आदमी था मगर यहूदी तो कुछ ऐसा था जो एक अजीब तरीक़े से उसके दिल को मसोसता था। जब एक जोड़ किसी एक की मौत से फ़ैसल होने वाली लड़ाई लड़ता था तो ज़ाहिर है कि किसी एक को उसमें मरना ही था मगर तत्व की बात ज़िन्दगी है, जब तक है। स्पार्टकस का सत्त ज़िन्दगी थी। लोग उसके अन्दर की इस चीज़ को पहचानते थे। वह ज़िन्दगी को बचा रखने की एक ऐसी बुलन्दी थी जो सितारों को छू लेती थी और अब उसने दरवाज़े की सन्धि में आँख लगायी जहाँ से मैदान के बीच के हिस्से की पट्टी दिखाई देती थी।

पहले उन दोनों लड़नेवालों के कारण उसकी दृष्टि रुँधती रही। मगर

जैसे-जैसे वे मैदान के मध्य की ओर बढ़ते गये उनका आकार छोटा होता गया और फिर वे जाकर उन लोगों के सामने खड़े हो गये जिन्होंने उनका गोश्त और खून खरीदा था। उनकी परछाइयाँ उनके पीछे-पीछे चल रही थीं। उनके जिस्म काले थे और तेल से चमक रहे थे। तब वे दोनों एक दूसरे से दस क़दम हटकर खड़े हो गये और स्पार्टकस को अपनी दृष्टि के चौखटे में जड़े हुए से दिखायी दिये और उन दोनों के दरम्यान रेत थी और धूप थी। स्पार्टकस उन गद्देदार कुर्सियों को देख सकता था जहाँ पर रोमन बैठे हुए थे; वह उसकी दृष्टि परिधि का अन्त था, वह गुलाबी और पीले और लाल रङ्ग का चौड़ा सा खुशनुमा खेमा जिस पर धूप से बचाव के लिए एक धारीदार छज्जा लगा हुआ था और स्पार्टकस को दिखाई दे रही थी गुलाम हाथों के पर वाले पंखों की धीमी गति। वहाँ पर वे बैठे थे, वे मुट्ठी भर शक्तिशाली लोग जिन्होंने जि़न्दगी और मौत ख़रीदी थी—और उस समय स्पार्टकस के मन में वे सभी विचार आये जो हर युग में कम-से-कम एक आदमी के मन में ज़रूर आते हैं......

तभी रियाज़ कराने वाला, मैदान का उस्ताद, दाख़िल हुआ। उसके हाथ में रोग़न की हुई चमकदार लकड़ी की एक तश्तरी में दो छुरे थे और प्रतीकात्मक रूप में उसने उन्हें उन लोगों को पेश किया जिन्होंने इस खेल का दाम दिया था। उसने जब तश्तरी उन लोगों की तरफ़ झुकायी तो चमचम चमकते हुए इस्पात के बारह इञ्च लम्बे छुरे, खूब पैने किये हुए, उस्तरे की तरह तेज़, धूप में चमक उठे। उन्हें बहुत कारीगर हाथों ने बनाया था और उनमें अखरोट की काली लड़की की मूँठ लगी हुई थी। छुरा हलका सा मुड़ा हुआ था और उसकी धार के हल्के से छू भर जाने का मतलब था खाल का कट जाना।

थ्रैकस ने सिर हिलाया और उसे देखकर स्पार्टकस को सिर से पैर तक नफ़रत का वही एहसास हुआ जैसे उन छुरों में से एक छुरा आकर उसे लग गया हो—मगर उसने फिर अपने को वश में कर लिया और बिल्कुल निरुद्वेग होकर उसने उन दोनों ग्लैडिएटरों को अपने हथियार चुनते हुए देखा और फिर वे एक दूसरे से अलग होकर उसके दृष्टिपथ से बाहर हो गये। मगर तब भी वह जानता था कि उनके क्या पैतरे होंगे; उसे हर पैतरा मालूम था। एक दूसरे को उस चौकन्नी दहशत और मुस्तैदी से देखते हुए जो मौत की सजा पाये हुए आदमी में मिलती है, वे दोनों बीस क़दम की उस जगह को नाप रहे थे जो उन्हें दी गयी थी। अब वे नीचे झुके और उन्होंने अपने छुरों की मूँठों पर और अपनी हथेलियों पर रेत मली और अपने दांव की ताक में झुककर खड़े हो गये और उनकी एक-एक मांस पेशी खूब तनी हुई कमानी की

तरह कांपने लगी और उनका दिल ऐसे ज़ोर से धड़कने लगा जैसे मशीनें चल रही हों।

अखाड़े के उस्ताद ने अपनी चांदी की सीटी बजायी और दोनों ग्लैडिएटर फिर स्पार्टकस की दृष्टिपथ में आ गये। नंगे, झुके-झुके, हर एक की दाहिनी मुट्ठी में वह चमकता हुआ छुरा, अब वे इन्सान न थे। अब वे दो जानवर थे। वे मैदान की गर्म रेत पर छोटे-छोटे क़दमों से इधर-से-उधर जाते, मैदान का चक्कर लगाते हुए दो जानवर थे। फिर दोनों पास आये और फिर एक मरोड़ती हुई गति के साथ छिटक कर एक दूसरे से अलग खड़े हो गये और रोमन तालियाँ बजाने लगे और यहूदी के सीने पर खून की लकीर खिच गयी जैसे वह लाल रंग का पटका पहने हो।

मगर दोनों में से किसी को जैसे भान न हो कि उसे कहाँ चोट लग रही है। एक दूसरे पर उनका ध्यान इतना एकाग्र, इतना पैना और तन-मन की सारी ताक़त को इतनी पूरी तरह तलब करने वाला था कि ऐसा मालूम होता था कि सारी दुनिया की धुरी वह हों। वक्त थम गया। सारा जीवन और जीवन के सारे अनुभव सभी कुछ एक दूसरे पर पूरी तरह केन्द्रित थे और जिस तीक्ष्णता से वे एक दूसरे की हर गति को परख रहे थे वह अब एक यातना बन गयी थी। और अब एक बार फिर शक्ति और निश्चय की भयानक थरथरी से काँपते हुए मुहूर्त में वे दोनों एक दूसरे के पास आ गये और आपस में गुँथ गये, एक का बायाँ हाथ दूसरे के दाहिने हाथ को कस कर पकड़े हुए और इसी तरह जिस्म से जिस्म और निगाहों से निगाहें बँधी हुई वे दोनों खड़े रहे, यहाँ तक कि मुट्ठियों में जकड़ी हुई कलाइयाँ जैसे अपनी मौन आवाज़ में चिल्ला उठीं कि और क़रीब पहुँचो, वार करो, मार डालो। उनका रूपान्तर अब पूरा हो गया था; वे एक दूसरे से नफरत करते थे; उन्हें सिर्फ़ एक उद्देश्य की चेतना थी, मृत्यु के उद्देश्य की, क्योंकि एक को मार कर ही दूसरा जी सकता था। उनकी मांसपेशियाँ सख्त और दर्द करती हुई, एक दूसरे की मुट्ठियों में जकड़े हुए वे दोनों अब एक हो गये थे, एक इकाई जो अपने भीतर ही भीतर टुकड़े-टुकड़े हुई जा रही थी।

जब तक रक्त-मांस सह सका तब तक उनकी मुट्ठियों की जकड़ क़ायम रही और फिर छूट गयी और वे एक दूसरे से छिटककर अलग हो गये और अब उस थ्रेसियन की बाँह में ऊपर से नीचे तक एक लाल शिगाफ हो गया था। एक दूसरे से बारह क़दम दूर वे हाँफते और नफ़रत करते और काँपते हुए खड़े थे, दोनों के जिस्म खून और तेल और पसीने से पुते हुए थे और उनके जिस्म से खून चू-चू कर उनके पैरों के पास की रेत को भिगो रहा था।

तब फिर थ्रेसियन ने वार किया। छुरी का हाथ फैलाकर उसने यहूदी

पर जस्त की और यहूदी ने झट एक घुटने के बल बैठकर वार को बचाते हुए छुरी ऊपर कर दी और थ्रेसियन को हवा में उछाल दिया और इसके पहले कि थ्रेसियन ज़मीन पर गिरे यहूदी उसके ऊपर सवार था। यह उस समूचे खेल में सबसे भयङ्कर और सबसे तीक्ष्ण उत्तेजना का क्षण था। मौत थ्रेसियन पर ताबड़तोड़ छुरियों के वार किये जा रही थी। दर्द से वह ऐंठा, मुड़ा, उसकी मांस-पेशियाँ खिचीं, उस भयानक छुरी के वार को बचाने के लिए उसने अपने नंगे पैर चलाये मगर यहूदी उसके ऊपर पूरी तरह सवार था और वार-पर-वार किये जा रहा था। मगर इतने पर भी वह नौजवान थ्रेसियन अपनी जान को बचाने के लिए ऐसा पागलों की तरह लड़ रहा था कि यहूदी उसके काम को तमाम करनेवाला वार उस पर न कर पाता था।

आख़िरकार थ्रेसियन उठकर खड़ा हो गया। उसका लहूलुहान, कटा-फटा जिस्म सही मानी में हवा में उछला और अपने पैरों पर आ गया और वह खड़ा हो गया मगर जिन्दगी और ताक़त उसके जिस्म से बहकर निकली जा रही थी। वह विस्फोट जिसने उसको अपने पैरों पर खड़ा किया था, उसने उसकी ताक़त की आख़िरी बूँद तक निचोड़ ली थी। वह एक हाथ से अपने शरीर का सन्तुलन क़ायम करने की कोशिश कर रहा था और दूसरे हाथ से छुरे को पकड़े हुए था और लड़खड़ाता हुआ आगे-पीछे आ-जा रहा था और यहूदी को अपने से दूर रखने के लिए हवा में छुरा चला रहा था। मगर यहूदी उससे अलग दूर पर पीछे खड़ा था और उसके पास पहुँचने की कोई कोशिश न कर रहा था—और सच पूछो तो अब उसकी कोई ज़रूरत भी न थी क्योंकि थ्रेसियन मौत के भाले से बिंध चुका था। उसका चेहरा, हाथ, जिस्म और टाँगें सब पर छुरे के गहरे ज़ख़्म थे और उसकी ज़िन्दगी ख़ून की शक्ल में बहकर उसके पैरों के पास रेत के एक फैलते हुए गीले धब्बे में डूबती जा रही थी।

मगर ज़िन्दगी और मौत का ग़ज़बनाक ड्रामा अभी ख़त्म न हुआ था। रोमन अपनी तन्द्रा से जागे और उन्होंने अपनी सीटी की तरह तेज़ और फटी हुई भारी आवाज़ में आदेश देने के स्वर में चीख़कर यहूदी से कहा, मारो, मारो!

मगर यहूदी अपनी जगह से नहीं हिला। उसके सीने पर बस वह एक अकेला घाव था मगर जिस्म की उस वक़्त की हरकत ने पूरे शरीर में ख़ून ही ख़ून फैला दिया था और तब अचानक उसने अपना छुरा रेत पर फेंक दिया जो वहीं गड़ गया और काँपने लगा। यहूदी सिर झुकाये खड़ा रहा।

क्षण भर और, और मौक़ा हाथ से निकल जायगा। नंगा थ्रेसियन ऊपर से नीचे तक जैसे लाल ख़ून की पोशाक पहने हुए था, एक घुटने के बल

ढेर हो गया। उसने अपने हाथ का छुरा फेंक दिया था और बहुत तेज़ी से मर रहा था। रोमन चीख़ रहे थे और अखाड़े का उस्ताद एक लम्बा और भारी, बैल के चमड़े का कोड़ा फटकारता भागता हुआ मैदान में आया। दो सैनिक भी उसके पीछे-पीछे आये।

—लड़ बे, हरामज़ादे! उस्ताद गरजा और उसका कोड़ा यहूदी की पीठ पर पड़कर उसके पेट के चारों तरफ़ लिपट गया।—लड़! कोड़ा उसे बार-बार लग रहा था मगर वह नहीं हिला और तब थ्रेसियन पलटकर मुँह के बल पड़ रहा, थोड़ा सा कांपा और धीमी आवाज़ में दर्द से कराहने लगा, मगर धीरे-धीरे यह आवाज़ ऊँची होती गयी, जैसे कोई उसके ऐंठते हुए जिस्म को कोड़े मार-मार कर उसमें से यह आवाज़ निकाल रहा हो। फिर ये दर्द की चीखें बन्द हो गयीं और वह निश्चेष्ट पड़ा रहा। तब अखाड़े के उस्ताद ने यहूदी को कोड़े मारना बन्द कर दिया।

हब्शी भी स्पार्टकस के पास आकर दरवाज़े की दरार में आँख लगाकर खड़ा हो गया। वे दोनों बिना बोले देखते रहे।

सिपाही थ्रेसियन के पास पहुँचे और उन्होंने अपने भालों से उसे गोदा। वह थोड़ा सा हिला। एक सिपाही ने अपनी पेटी से झूलता हुआ एक छोटा-सा मगर भारी हथौड़ा हुक खोलकर अपने हाथ में लिया। दूसरे सिपाही ने अपना भाला थ्रेसियन के शरीर के नीचे लगाकर उसे पलट दिया। तब पहले सिपाही ने अपने हथौड़े से उसकी कनपटी पर बहुत कसकर चोट की जिससे खोपड़ी चूर-चूर हो गयी। इसके बाद सिपाही ने उस हथौड़े से दर्शकों को सलाम किया जिसमें थ्रेसियन के भेजे के टुकड़े चिपके हुए थे। उसी वक़्त अखाड़े का एक दूसरा उस्ताद एक गधा लेकर मैदान में आया। गधे के सिर पर परों की बनी चटकीले रङ्ग की पोशाक थी और चमड़े की जोत थी जिससे एक जंजीर बंधी हुई थी। जंजीर थ्रेसियन के पैरों में बाँधी गयी और सिपाहियों ने अपने भालों से गधे को चाबुक लगायी और वह तेज़ दुलकी चाल से मैदान के चक्कर लगाने लगा। और वह खून से लथपथ लाश, जिसका भेजा चू रहा था, गधे के पीछे-पीछे उसके पैरों से बँधी घिसटती रही। रोमनों ने इस पर तालियाँ बजायीं और उस कुलीन महिला ने आनन्द विभोर होकर अपनी लेस की रूमाल हिलायी।

इसके बाद उस खूनी रेत को पलटकर फिर से चिकना कर दिया गया। और अगले जोड़ की लड़ाई के पहले वाला नाच-गाना शुरू हो गया।

बाटियाटस माफ़ी मांगने के लिए अपने ग्राहकों के पास भागकर गया, उन्हें इस बात की सफ़ाई देने के लिए कि क्यों, इतना होने पर भी कि उसे पैसे इतने अच्छे मिले थे, यहूदी ने लड़ाई के एकदम आखीर में जीवित मांस की हत्या नहीं की, क्यों गले या बांह की कोई रग नहीं काटी ताकि उसका गर्म-गर्म ताज़ा लाल खून लड़ाई के उचित अन्त को रँग देता। मगर मारियस ब्रैकस ने, जो एक हाथ मे शराब का प्याला पकड़े हुए था, दूसरे हाथ से उसे चुप होने का इशारा किया और कहा, एक लफ़्ज़ नहीं लानिस्ता, बहुत मज़ा आया। बहुत काफ़ी था।

—मगर मुझे अपनी साख का भी तो ख़याल है।

—जहन्नुम में जाय तुम्हारी साख। मगर रुको—मैं तुम्हें बतलाता हूँ। उस यहूदी को यहाँ लाओ। और कोई सज़ा न देना। जब एक आदमी अच्छी तरह लड़ा है तो इतना काफी है, कि नहीं? उसे यहाँ लाओ।

—यहाँ? अच्छा, ठीक है—लूसियस ने कहना शुरू किया।

—क्यों नहीं! उसका जिस्म साफ़ करने की कोशिश मत करना। वह जैसा है वैसा ही उसे यहाँ ले आओ।

जब बाटियाटस अपने काम पर चला गया तो जैसा कि पारखी लोग अक्सर किया करते हैं, ब्रैकस ने भो बतलाने की कोशिश की कि उन्होंने जो कुछ अभी देखा था उसका विशेष सौन्दर्य और नैपुण्य क्या था।

—अगर सौ जोड़ों की लड़ाई में एक बार भी आदमी ऐसी चीज़ देख ले तो उसे अपने आपको खुशनसीब समझना चाहिए। एक घण्टे की उबा देने वाली लड़ाई से कहीं अच्छा है ऐसा एक शानदार लमहा। यही वह मशहूर jacienda ad mortem है—भागकर मौत की बांहों में पहुँचना—और इससे अच्छी मौत ग्लैडिएटर की दूसरी कौन हो सकती है? जरा परिस्थिति पर विचार करो। थ्रेसियन अपनी निगाहों से यहूदी को तौलता है और समझता है कि उसका पलड़ा हलका है।

—मगर खून उसी ने पहले निकाला—लूसियस ने आपत्ति की।

—उससे क्या। बहुत मुमकिन है कि इसके पहले कभी उनकी लड़ाई न हुई हो। वह तो एक दूसरे को तौलना हुआ। एक दूसरे को समझने के लिए उन्हें इस तरह के पैंतरे करने ही पड़ते हैं। अगर उनका जोड़ बराबर का होता तो उनके छुरे टकराते और लड़ाई चलती और उसका मतलब होता उनकी हाथ की सफाई और सहन शक्ति का इम्तहान; मगर जब वे आपस में गुँथे तो

यहूदी ने अपने आपको छुड़ा लिया और थ्रेसियन की बांह को काट दिया। अगर वह बायीं के बदले दाहिनी बांह होती तो वहीं पर बात ख़त्म थी; मगर चूँकि थ्रेसियन जानता था कि वह अपने दुश्मन से कमज़ोर है इसलिए उसने सब कुछ एक जस्त पर, अपने जिस्म की एक जस्त पर दांव पर लगा दिया। दस में से नौ ग्लैडिएटरों ने उस जस्त को रोकने और उससे गुँथने की कोशिश की होती और इस कोशिश में बुरी तरह ज़ख़्मी हो गये होते। तुम समझते हो छुरे के एक ऐसे वार को बचाने का क्या मतलब होता है जिसके पीछे आदमी के जिस्म का सारा वज़न हो ! मैंने यहूदी को क्यों बुलाया है—अभी दिखलाता हूँ—

वह बात कर ही रहा था कि इतने में यहूदी आ गया। वह अब भी नंगा था और उसके शरीर से खून और पसीने की गन्ध आ रही थी और जिस तरह वह सिर झुकाये उनके सामने खड़ा था और उसकी मांस-पेशियाँ अब भी कांप रही थीं, वह आदमी भी एक भयानक वहशियाना तस्वीर था।

—झुको ! ब्रैकस ने हुक्म दिया।

यहूदी ने कोई जुम्बिश न की।

—झुको ! बाटियाटस चिल्लाया।

अखाड़े के उन दोनों उस्तादों ने जो उसके साथ थे यहूदी को पकड़ लिया और उसे जबरन् रोमनों के आगे घुटनों पर बिठाल दिया और ब्रैकस उसकी पीठ की ओर इशारा करके विजय गर्व से चिल्लाया—वह देखो, वहाँ ! वह कोड़े के दाग़ नहीं हैं। वह जगह देखते हो जहाँ की खाल कट गयी है, जैसे किसी औरत के नाखून से हल्का सा छिल गया हो। वही वह जगह है जहाँ पर थ्रेसियन के छुरे ने उस वक़्त उसको छुआ था जब यहूदी उसकी जस्त के सामने बैठ गया और थ्रेसियन को हवा में फेंक दिया। उससे कुछ मत बोलो लानिस्ता—ब्रैकस ने बाटियाटस से कहा—अब और कोड़ा मत मारना। उससे कुछ भी मत बोलो और देख लेना तुम उसके बल पर जायदाद खड़ी कर लोगे। मैं खुद उसकी शोहरत बढ़ाने के लिए कोशिश करूँगा। मैं तुम्हारी सेहत का जाम पीता हूँ ग्लैडिएटर—ब्रैकस ने ज़ोर से कहा।

मगर वह यहूदी अपना सिर झुकाये गूँगे की तरह खामोश खड़ा रहा।

६

हब्शी ने कहा—पत्थर भी रोते हैं और वह रेत भी जिस पर हम चलते हैं सुबकती है और दर्द से कराहती है मगर हम नहीं रोते।

—हम ग्लैडिएटर हैं।—स्पार्टकस ने जवाब दिया।

—क्या तुम्हारा दिल पत्थर का है ?

—मैं गुलाम हूँ। मेरा ख्याल है कि गुलाम के या तो दिल हो ही नहीं और अगर हो तो पत्थर का हो। तुम्हारे पास याद करने के लिए अच्छी चीज़े है मगर मैं कारू हूँ और मेरे पास याद करने के लिए कुछ भी नहीं है।

—क्या इसीलिए तुम इस चीज़ को देखते हो और तब भी तुम्हारा दिल नहीं पसीजता ?

—दिल के पसीजने से मुझे क्या मिलेगा—स्पार्टकस ने बुझे हुए ढङ्ग से जवाब दिया कि जैसे यह बहस ही बेकार हो।

—मैं तुम्हें नहीं समझ पाता स्पार्टकस। तुम गोरे हो और मैं काला हूँ। हम दोनों एक दूसरे से बहुत अलग हैं। मेरे देश में जब आदमी का दिल दर्द से भर आता है तो वह रोता है। मगर थ्रेसियनों के आँसू सूख गये हैं। मेरी ओर देखो। तुम क्या देख रहे हो!

—मैं एक मर्द को रोते देख रहा हूँ—स्पार्टकस ने कहा।

—और क्या इस रोने की वजह से मैं कुछ कम मर्द हूँ ! मैं कहता हूँ स्पार्टकस मैं तुमसे नहीं लड़ूँगा। खुदा उन्हें ग़ारत करे, हमेशा हमेशा के लिए जहन्नुम रसीद करे। मैं कहता हूँ कि मैं तुमसे नहीं लड़ूँगा।

—अगर हम नहीं लड़ते तो हम दोनों मारे जायंगे—स्पार्टकस ने धीरे से जवाब दिया।

—तो तुम मुझे मार डालो मेरे दोस्त। मैं ज़िन्दगी से थक गया हूँ। मैं ज़िन्दगी से बेज़ार हूँ।

—भीतर क्या गुल-गपाड़ा मचा रक्खा है—सिपाहियों ने शेड की दीवार पर चोटें कीं मगर हब्शी घूमा और उसने दीवार पर अपनी भारी मुट्ठियों से इतने कसकर घूँसा मारा कि सारा शेड हिल गया। फिर वह एकाएक थम गया और बेंच पर बैठ गया और झुककर अपने चेहरे को हाथों में छिपा लिया। स्पार्टकस उसके पास गया। उसने उसका सिर उठाया और बड़े प्यार से उसके माथे पर के पसीने के दानों को पोंछा।

—ग्लैडिएटर, कभी ग्लेडिएटर से दोस्ती न कर।

—स्पार्टकस, आदमी का जन्म क्यों हुआ है ? उसने बड़े दर्द से बुदबुदा कर कहा।

—जीने के लिए।

—क्या यही पूरा जवाब है ?

—अकेला जवाब।

—मैं तुम्हारे जवाब को नहीं समझता, थ्रेसियन।

क्यों—क्यों नहीं, मेरे दोस्त !—स्पार्टकस ने लगभग याचना के स्वर

मैं पूछा—मां के गर्भ से बाहर आने के साथ-साथ बच्चा तक इस जवाब को समझता है। यह तो बड़ा आसान जवाब है।

हब्शी ने कहा—मेरे लिए इस जवाब का कोई मतलब नहीं और मेरा दिल उन लोगों के लिए तड़प रहा है जो मुझे प्यार करते थे।

—अब और लोग तुम्हें प्यार करेंगे।

—अब और नही....अब और नहीं—हब्शी ने कहा।

१०

बाद के सालों में केयस को उस सुबह की बातें कुछ साफ़-साफ़ याद न रह गयीं जब कापुआ में दोनों जोड़ों की लड़ाई हुई थी। उसकी ज़िन्दगी में बहुत सी सनसनी की चीजें थीं; सनसनी तो वह पैसा देकर खरीदता था और स्पार्टकस तो केवल एक थ्रेसियन नाम था। रोमनों का कहना था कि सभी थ्रेसियन नाम सुनने में एक से मालूम पड़ते हैं, गैनिकस, स्पार्टकस, मैनीकस, फ्लौरेकस, लियेकस। यह भी मुमकिन था कि कहानी कहते-कहते केयस ने यह कह दिया होता कि वह यहूदी भी थ्रेसियन था क्योंकि अखाड़े के सम्बन्ध में जिस तरह नयी-नयी जनश्रुतियाँ जुड़ती जा रही थीं और जिस तरह एक पूरी कौम को नशे की तरह उसकी लत पड़ती जा रही थी, इससे इस शब्द थ्रेसियन के दो अर्थ हो गये थे। थ्रेसियन का एक अर्थ तो था बालकन क्षेत्र के दक्षिण भाग में रहने वाले क़बीलों में से किसी एक का आदमी, और जहाँ तक रोमनों की बात थी वे इस शब्द का और भी व्यापक अर्थ में इस्तेमाल करते थे और उनके नज़दीक तो वे सभी बर्बर लोग थ्रेसियन थे जो बालकन के पूरब में स्तेपी के उस पार काले सागर तक रहते थे। उनमें से वे जो मकदूनिया के पास थे यूनानी ज़बान बोलते थे मगर इसका यह मतलब नहीं है कि वे सभी लोग जो थ्रेसियन कहलाते थे उन सब की जबान यूनानी थी—उस तरह जैसे वह मुड़ा हुआ छुरा उन सभी क़बीलों का हथियार नहीं था।

दूसरी ओर रोम की खेल-कूद की ज़बान में और अखाड़े की आम बोल-चाल की ज़बान में हर शख्स जो सीका से लड़ता था थ्रेसियन था। इस तरह वह यहूदी भी थ्रेसियन था क्योंकि केयस को न तो यह बात मालूम थी और न उसे इससे कोई ग़रज़ थी कि वह जूडिया के पहाड़ों के उन जंगली सरकश किसान मुजाहिदों के क़बीले का था जो प्राचीन काल के मैकॉबियों और पहले किसान युद्ध के ज़माने से अत्याचारियों के खिलाफ़ बराबर बग़ावत और नफ़रत का झण्डा लिये चल रहे थे। केयस को जूडिया के बारे में कुछ

भी न मालूम था और न उसे इस चीज़ की परवाह ही थी; वह यहूदी भी एक थ्रेसियन ही था, फ़र्क़ बस इतना कि उसका ख़तना हुआ था। उसने एक जोड़ की लड़ाई देखी थी और अब दूसरा जोड़ आने वाला था। यह दूसरा जोड़ और भी अनहोना था मगर उस काले हब्शी के ऊपर क्या गुज़री उसको याद करने में केयस उस हब्शी के प्रतिद्वन्द्वी को भूल गया। हाँ, उसे उन दोनों के अखाड़े में प्रवेश करने की बात अच्छी तरह याद थी, उस वक्त की जब वे दोनों अपने कठघरे में से बाहर आ रहे थे, छाया में से उस चमकती हुई लहूलुहान धूप में, और फिर किस तरह वे उस धब्बेदार पीली रेत पर पहुँचे थे। वे चित्तीदार पीली-पीली नन्हीं-नन्हीं चिड़ियाँ, खून पर जीने वाली चिड़ियाँ, जो उस दाग़-लगी रेत पर बराबर चोंच मार रही थीं और अच्छी तरह अपना पेट भर रही थीं, उड़ गयीं। रेत की तरह उनका भी रंग धब्बेदार पीला था और जब वह उड़ीं तो ऐसा मालूम हुआ कि जैसे किसी ने मुट्ठी भर-भर कर रेत हवा में फेंक दी हो। इसके बाद दोनों आदमी अपनी नियत जगह पर आकर रुक गये। यह ठीक, यहाँ पर उन लोगों की अक़ीदत करो जिन्होंने तुम्हारा गोश्त और खून खरीदा है! यही वह क्षण है जब जीवन धूल के मोल का हो जाता है। जब इज़्ज़त का ख़याल और उसको ज़िन्दगी में बरत न सकने की शर्म ज़िन्दगी का मतलब बदल देती है। यही वह जगह है जहाँ तुम आख़िरकार पहुँचे। संसार की स्वामिनी रक्त से अपना मनोरंजन कर रही है।

केयस को यह याद था कि अफ्रीका के उस देव जैसे हब्शी के मुक़ाबले में वह थ्रेसियन कितना छोटा नज़र आ रहा था क्योंकि वह पीली रेत की उस धूप से चमकती हुई पृष्ठभूमि पर, ऐम्फीथियेटर के उन बिना रंग रोग़न के लकड़ी के तख़्तों पर एक खुदी हुई तस्वीर की तरह नज़र आ रहा था; मगर उसे यह याद न था कि ब्रैकस ने क्या कहा था। वे शब्द बहुत छोटे थे और बहुत महत्वहीन और समय की नदी उन्हें अपने संग बहा ले गयी। ऐसे लोगों की वे छोटी-मोटी सनकें कभी कारण नहीं होतीं; वे बस कारण दीख पड़ती हैं; यहाँ तक कि स्पार्टकस भी कोई कारण न था। वह तो बस परिणाम था उस चीज़ का जो केयस के नज़दीक एकदम साधारण और सहज थी। और जहाँ तक उस सनक की बात थी जिसके वश ब्रैकस ने अपने इस बेकार और अक्ल से ख़ारिज दोस्त के मनोरंजन के लिए मृत्यु और यन्त्रणा की यह विभीषिका रचायी थी, वह केयस को सनक नहीं मालूम पड़ी बल्कि इसके विपरीत बड़ी मौलिक सूझबूझ और उत्तेजना की चीज़ मालूम पड़ी।

इस तरह दोनों लड़नेवालों ने आकर अक़ीदत की और रोमन शराब की चुसकियाँ लेते रहे और अपनी मिठाइयाँ कुतरते रहे। इसके बाद वह आदमी

आया जिसके हाथ में हथियार थे। स्पार्टकस के लिये छुरा। उस काले हब्शी के लिए वह लम्बा, भारी, मछली मारने का त्रिशूल जैसा कांटा और मछली पकड़ने का जाल। उस वक्त अपनी उस शर्म और ज़िल्लत के कारण वे दोनों दो विदूषक थे। सारी दुनिया को गुलाम बनाया गया था ताकि ये रोमन यहाँ साये में अपनी गद्देदार कुर्सियों पर बैठकर बड़ी नज़ाकत से अपनी मिठाइयाँ कुतर सकें और शराब की चुसकियाँ ले सकें।

दोनों लड़ने वालों ने अपने हथियार उठा लिये। और तब, जैसा कि केयस को दिखायी पड़ा, वह हब्शी पागल हो गया। केयस उस चीज़ को पागलपन के अलावा और कुछ भी न समझ सकता था। न वह न ब्रैकस न लूसियस उनमें से किसी को भी उस जगह की यात्रा करने का खयाल न आ सकता था जहाँ से हब्शी की ज़िन्दगी शुरू होती थी और अगर उन लोगों ने यह यात्रा की होती तो उन्होंने समझ लिया होता कि वह हब्शी ज़रा भी पागल नहीं हुआ था। वे अपनी कल्पना में भी नदी किनारे उसके मकान को न देख सकते थे और न उसके बच्चों को जो उसकी पत्नी ने उसके लिए जने और न उस ज़मीन को जो वह जोतता था और न उन फलों को जो उसके देश में पैदा होते थे जब कि सिपाही आये और गुलामों के व्यापारी आये, इन्सान की ज़िन्दगी की फ़सल काटने के लिये जिसे जादुई ढंग से सोने में तबदील किया जा सकता था।

इसलिए उन्होंने तो बस उस काले आदमी को पागल होते देखा। उन्होंने देखा कि उसने अपना जाल अलग फेंक दिया और जैसे कि जङ्गली जातियाँ लड़ाई के वक्त तरह-तरह की चीखें मुँह से निकालती हैं उसी तरह वह भी कुछ चिल्लाया। और फिर उन्होंने उसके देव-जैसे शरीर को उस तरफ बढ़ते देखा जहाँ पर वे लोग खुद बैठे हुए थे। अखाड़े के उस्ताद ने जिसके हाथ में नंगी तलवार थी उसको रोकने की कोशिश की मगर तभी उन्होंने देखा कि वह उस्ताद काँटे में बिंधी हुई मछली की तरह हब्शी के त्रिशूल की नोंक पर छटपटा रहा है और फिर हब्शी ने मछली ही की तरह उसे हवा में उछाल दिया और वह हवा में कलाबाज़ियाँ खाता और चीखता हुआ ज़मीन पर आ गिरा। अब एक छः फुट ऊँची बाड़ी उस काले देव का रास्ता रोके हुये थी मगर उसने उन लकड़ी के पटरों को ऐसे नोंच डाला कि जैसे वे कागज़ के बने हों। उसकी शक्ति ने ही उसका रूप बदल दिया था; उसकी शक्ति ने ही उसे एक हथियार बना दिया था जो उन गद्देदार कुर्सियों की तरफ़ बढ़ा जा रहा था जहाँ तमाशबीन बैठे थे।

मगर तब तक अखाड़े के अग़ल-बग़ल से सिपाही दौड़े चले आ रहे थे। उनमें जो सिपाही सबसे आगे था वह रेत पर अपनी टाँगें अच्छी तरह फैलाकर

खड़ा हो गया, उसने अपने जिस्म को तौला और अपना भाला फेंका, वह लकड़ी का बड़ा-सा भाला जिसकी नोक लोहे की थी, जिसका मुक़ाबला दुनिया में कोई न कर सकता था, जिसने एक सौ राष्ट्रों की सेनाओं को ज़मीन पर बिछा दिया था। मगर वह उस हब्शी को ज़मीन पर नहीं बिछा सका। भाला उसकी पीठ में लगा था और नोक उसके सीने को चीरती हुई बाहर निकल गयी थी मगर तब भी वह रुका नहीं, और अपनी पीठ में भुँके हुए उस भयानक भाले को लिये-दिये वह अपने पंजे ज़मीन में गड़ाता हुआ रोमनों की तरफ़ बढ़ा। एक दूसरे भाले ने आकर उसकी बग़ल को चीर दिया मगर तब भी वह आगे बढ़ता रहा। एक तीसरा भाला फिर उसकी पीठ में घुसा और एक चौथा भाला उसकी गर्दन में। और अब आख़िरकार उसका काम तमाम हो गया मगर तब भी उसके फैले हुए हाथ का वह कांटा उस जगह को छू रहा था जहाँ पर रोमन दहशत के मारे सिमटे बैठे थे और वहीं पर वह लेटा हुआ था और उसके जिस्म से ख़ून के फ़व्वारे छूट रहे थे और वहीं पर उसने दम तोड़ दिया।

मगर यह ग़ौर करने की बात है कि इस पूरी घटना में, स्पार्टकस हिला तक नहीं। अगर वह हिला होता तो मर गया होता। उसने अपना छुरा रेत में फेंक दिया और बिना हिले-डुले खड़ा रहा। ज़िन्दगी का जवाब ज़िन्दगी है।

———

भाग ४ । जिसका सम्बन्ध मारकस तुलियस सिसेरो और गुलाम महायुद्ध की उत्पत्ति में उसकी दिलचस्पी से है ।

अगर विला सलारिया मे, जहाँ कुलीन रोमन परिवारों की कुछ स्त्रियाँ और पुरुष एक रोमन जागीरदार का सुव्यवस्थित आतिथ्य सत्कार ग्रहण करने के लिए रात भर को आये थे, सब लोगों का ध्यान स्पार्टकस और उसके नेतृत्व में होने वाले महान् विद्रोह पर ही पूरे वक्त टिका रहा, तो यह कोई अप्रत्याशित बात न थी। वे सब ऐपियन मार्ग से इस हवेली में पहुँचे थे। उनमें से ज्यादातर रोम से दक्षिण चलकर आये थे और सिसेरो सिसिली से, जहाँ ख़ज़ांची के रूप में वह एक ऊँचे सरकारी पद पर था, रोम की ओर उत्तर चल कर आया था। इस तरह अपने सफ़र में पूरे समय उनको वे सलीब देखने को मिले थे जो सारी दुनिया को यह बतलाने के लिए एक कठोर प्रतीक थे कि रोमन न्याय निर्मम भी है और न्यायपूर्ण भी।

मगर कोई कितना ही भाव-शून्य क्यों न हो यह सम्भव न था कि इस विशाल राज मार्ग पर सफ़र करते हुए उसे गुलामों और आजाद लोगों के बीच होने वाली उन अनेक भयानक लड़ाइयों का ख़्याल न आता जिन्होंने रोमन प्रजातन्त्र की जड़ों तक को हिला दिया था और इतना ही नहीं, उस समूची दुनिया को हिला दिया था जिस पर रोमन प्रजातन्त्र का राज्य था। वहाँ खेतों पर काम करनेवाले उन गुलामों में एक भी ऐसा गुलाम न था

जो उन अनगिनत सलीबों पर लटके हुए अपने ही जैसे उन हज़ारों आदमियों की बात सोच कर नींद में भी बेचैनी से करवटें न बदलने लगता हो। लोगों का यह सलीबों पर चढ़ाये जाना एक बड़ा विराट् नरमेध-यज्ञ था और उन छः हज़ार लोगों का दर्द, जिनकी जान इतने धीरे-धीरे और इतने क्रूर कष्ट से निकली, आस-पास के सारे देहाती इलाकों में फैल गया। यह स्वाभाविक ही था और फिर यह भी स्वाभाविक ही था कि मारकस तुलियस सिसेरो जैसा विचारशील नवयुवक उसके प्रभाव से अछूता नहीं रह सका।

सिसेरो के बारे में यह चीज़ कहने की है कि ऐण्टोनियस केयस जैसे लोग बहुत बार अकारण भी उसके प्रति वह सम्मान प्रदर्शित करते थे जो कि उसकी अवस्था के ३२ वर्षों का प्राप्य नहीं था।

यह कुलीन परिवार में जन्म लेने का प्रश्न न था और न इसी बात का प्रश्न था कि सम्प्रति उसके परिवार का बड़ा महत्व था। बात उसके व्यक्तिगत आकर्षण की न थी और न यही थी कि उसके व्यवहार में दूसरों को लुभाने का कोई विशेष गुण था, क्योंकि उसके दोस्त तक सिसेरो को विशेष आकर्षक नहीं मानते थे। हाँ, चतुर वह था मगर दूसरे भी तो उतने ही चतुर थे। मगर सिसेरो में अपनी जो ख़ास बात थी वह यह थी कि वह उन नौजवानों में था—और ऐसे लोग हर युग में पाये जाते हैं—जो अपनी सफलता के रास्ते में आड़े आनेवाली हर चीज़ को छोड़ने के लिए तैयार रहते हैं, भले-बुरे का हर विवेक, नैतिकता-अनैतिकता की हर चिन्ता, समाज में प्रचलित सदाचार शास्त्र का हर झमेला, अपने अन्तःकरण या पाप-भावना पर ठण्ढा फाहा रखने की हर इच्छा, करुणा या न्याय की ओर हर प्रवृत्ति, सब कुछ। इसका यह मतलब नहीं है कि उसे न्याय या नैतिकता या करुणा इन सब चीज़ों से कोई बहस ही न थी; थी, मगर वहीं तक जहाँ तक उनसे उसको आगे बढ़ने में मदद मिलती हो। सिसेरो केवल महत्वाकांक्षी न था क्योंकि सीधी-सादी विशुद्ध महत्वाकांक्षा में भी संवेदना के कुछ तत्व हो सकते हैं। सिसेरो सिर्फ़ सफलता का आराधक था, निस्संग, धूर्त—और अगर कभी-कभी उसका हिसाब-किताब ग़लत हो जाता था तो यह भी उसके जैसे आदमियों के लिए कोई वैसी अनहोनी बात न थी।

इस वक्त अब तक उसका कोई हिसाब-किताब ग़लत नहीं हुआ था। वह वो अद्भुत लड़का था जिसने अठारह साल की उमर में वकालत की थी और बाईस-चौबीस की उम्र में एक बड़ी लड़ाई में हिस्सा लिया था—केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिए और शरीर को उसमें कोई ख़तरा भी नहीं—और तीस का होते-होते शासन सम्बन्धी एक महत्वपूर्ण सरकारी पद पर पहुँच गया था। दर्शन शास्त्र और राज्य संचालन पर उसके निबन्ध और भाषण पढ़े जाते थे और

प्रशंसित होते थे और उनके अन्दर जो थोड़ा-बहुत तत्व होता था वह अगर उसने किसी से उधार लिया होता था तो ज़्यादातर लोग इतने अशिक्षित होते थे कि जान भी नहीं पाते थे कि उसने कहाँ से चुराया है। जिन लोगों से काम निकल सकता था उनको वह जानता था और बड़ी सावधानी से उनका मूल्य आँकता था। उस वक्त रोम के ज़्यादातर लोग ऐसे लोगों से सम्बन्ध बनाने की खोज में रहते थे जिनका असर हो; सिसेरो का सबसे बड़ा गुण यही था कि वह उपयोगी लोगों से अपने सम्बन्धों के रास्ते में किसी चीज़ को आड़े न आने देता था।

अब से बहुत पहले सिसेरो ने न्याय और नैतिकता के विराट् अंतर को पा लिया था। न्याय था मज़बूत के हाथ का एक औज़ार जिसे वह जैसे चाहे इस्तेमाल करे और नैतिकता थी कमज़ोर के मन की एक भ्रान्ति, वैसी ही भ्रान्ति जैसे भगवान। गुलामी की प्रथा न्यायपूर्ण थी; सिसेरो के मतानुसार केवल मूर्खों का यह कहना था कि वह नैतिक है। राजमार्ग पर उत्तर की ओर बढ़ते हुए, उन अनगिनत सलीबों को देखकर उनकी भीषण यन्त्रणा उसकी समझ में आयी मगर उसने अपने दिल को पसीजने नहीं दिया। उस समय वह उन गुलाम युद्धों के बारे में एक निबन्ध लिख रहा था—और वह हमेशा कुछ न कुछ लिखता रहता था—जिन्होंने सारी दुनिया को हिला दिया था और उसे ऐपियन मार्ग में सलीबों पर झूलते हुए तरह-तरह के गुलामों में बड़ी गहरी दिलचस्पी थी। उसने इस कला में पूरी दक्षता पा ली थी कि कैसे किसी चीज़ में दिलचस्पी लेते हुए भी वह उस ओर से एकदम निस्संग रह सके और वह बिना किसी तरह की मितली या मन में कोई करुणा लाये, मज़े में, सलीबों पर लटके हुए उन अनेक जातियों के गुलामों का अध्ययन कर सका जिनमें गॉल थे, अफ्रीकन थे, थ्रेसियन थे, यहूदी थे, जर्मन थे, यूनानी थे। उसे विचार आया कि नरमेध के इस विराट् नाटक में संसार की किसी नयी और वेगवती धारा की छाया है—एक ऐसी धारा जिसके परिणाम उन युगों तक पहुँचेंगे जो अभी आनेवाले हैं—मगर इसके साथ ही साथ यह विचार भी उसे आया कि स्वयं उसके युग में जो व्यक्ति गुलाम विद्रोह की इस नयी घटना का ठण्डे मन से निरीक्षण और उसकी व्याख्या कर सकता है वह शक्ति के अछूते शिखर पर पहुँच सकता है। उन लोगों के लिए सिसेरो के मन में केवल उपेक्षा थी जो अपनी घृणा के पात्रों की निजी आवश्यकताओं को समझे बिना उनसे घृणा करते हैं।

सिसेरो के ये गुण ऐसे थे जिन्हें कुछ लोग देख पाते थे और बहुत से लोग नहीं देख पाते थे। उस शाम को क्लॉदिया जब विला सलारिया पहुँची तो उसने इन गुणों को नहीं लक्ष्य किया। क्लॉदिया की समझ में बस वह ताक़त

आती थी जिसमें कम-से-कम उलझाव था। मगर हेलेना ने उस चीज़ को पहचाना और इसके लिए सिसेरो को मन-ही-मन सम्मान दिया। उसकी आँखों ने सिसेरो से कहा—मैं तुम्हारी तरह हूँ। क्या हम लोग इस चीज़ को और आगे बढ़ायेंगे?—और जब उसका भाई बिस्तरे में लेटा हुआ एक महान सेनापति की प्रतीक्षा कर रहा था वह सिसेरो के कक्ष में गयी। उसमें उस स्त्री की यत्न-साधित गरिमा थी जो वास्तव में अपने से घृणा करती है और इसी में आनन्द पाती है। पर उसकी समझ में न आता था कि क्यों वह अपने आप को इस व्यक्ति से हीन समझ रही है जो पैसा खसोटने-वाले मध्यवर्ग का आदमी है। अपने मन में भी वह इस बात को मानने के लिए तैयार न थी कि शाम गुज़रने के पहले वह ऐसी बहुत-सी चीज़ें करेगी जिनके लिए बाद को उसे अपने आपसे नफ़रत होगी।

जहाँ तक सिसेरो की बात थी, उसके समीप वह एक बहुत काम्य स्त्री थी। उसका लम्बा पुष्ट शरीर, उसका खूबसूरत, नुकीला नाक-नक़्शा और उसकी खूब ही काली आँखें सब जैसे पुकार-पुकार कर उससे कह रही थीं कि इसमें कुलीन पेट्रीशियन रक्त के वे सारे गुण हैं जिनकी बात तुमने सुन रक्खी है। यही वह लक्ष्य था जिसकी ओर उसके लोग पीढ़ियों से पहुँचने की कोशिश कर रहे थे मगर जो कभी उनके हाथ न आ सका था। और ऐसे बहिरंग के भीतर उन गुणों को पाकर जो इतनी रात गये एक ही स्पष्ट कारण से एक स्त्री को एक पुरुष के कक्ष में ले आये थे, उसको बहुत सन्तोष हुआ।

उन दिनों शायद ही कोई रोमन बहुत रात गये तक काम करता था। उस समाज का जो विचित्र सा ऊबड़-खाबड़ विकास हुआ था उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरियों में से एक कमज़ोरी रोशनी की अव्यवस्था थी; रोमन लैम्प बहुत ही बेजान होते थे और पूरे वक़्त भकभक करते रहते थे और उनकी रोशनी में आँखों पर बहुत ज़ोर पड़ता था क्योंकि वह रोशनी बड़ी मद्धिम और पीली-सी होती थी। इसलिए रात को काम करना, ख़ास कर रात को जब कि खूब शराब पी गयी हो और खाना खाया गया हो, झक्कीपन में शुमार था जो प्रशंसनीय भी हो सकता था और सन्देहास्पद भी—और यह चीज़ उस पर निर्भर थी कि कौन काम कर रहा है। जहाँ तक सिसेरो की बात थी यह प्रशंसनीय चीज़ ही थी क्योंकि यही वह अद्‌भुत नवयुवक था, और जब हेलेना ने उसके कक्ष में प्रवेश किया तब वह अद्‌भुत नवयुवक अपनी गोद में एक बड़ा सा खुला खाता रक्खे बिस्तर पर पलथी मारे बैठा था और उस खाते में कुछ लिखता और कुछ काटता जा रहा था। अगर वह प्रौढ़ स्त्री होती तो शायद उसने ज़रूर समझ लिया होता कि सिसेरो ने जान-बूझकर अपना

यह रूपक खड़ा किया है मगर हेलेना अभी केवल तेईस साल की थी और उस पर इस चीज़ का वही प्रभाव हुआ जो कि अभीष्ट था। पुरानी जनश्रुतियों की वे बातें अब भी खूब प्रचलित थीं जो ऐसे लोगों की कहानी कहती थीं जो शान्ति और युद्ध दोनों ही कालों में नेतृत्व करते थे और ऐसे रोमन थे जिनके बारे में कहा जाता था कि वे रात को बस दो-तीन घण्टा सोते हैं और अपना बाक़ी समय राष्ट्र को देते हैं। उनका जीवन राष्ट्र को समर्पित था। हेलेना को यह बात अच्छी लगी कि ऐसे ही एक राष्ट्र को जीवन अर्पित करनेवाले व्यक्ति, सिसेरो, ने उसे इस तरह से देखा था।

अभी हेलेना ने भीतर से दरवाज़ा बन्द भी नहीं किया था जब सिसेरो ने अपने सिर से उसे इशारा किया कि वहीं पलंग पर उसके पैताने बैठ जाय—और ऐसा करना ज़रूरी था क्योंकि कमरे में उसके अलावा बैठने के लिए दूसरी कोई आरामदेह जगह न थी—और अपना काम बदस्तूर करता रहा। उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया और पलंग पर बैठ गयी।

अब ? हेलेना की नौजवान ज़िन्दगी के अनेक आश्चर्यों में से एक आश्चर्य यह भी था कि कोई दो पुरुष ठीक एक-ही ढङ्ग से किसी स्त्री के पास पहुँचने की कोशिश नहीं करते। मगर सिसेरो ने उसके पास पहुँचने की कोशिश ही नहीं की और क़रीब पन्द्रह मिनट तक यों ही बैठे रहने के बाद हेलेना ने पूछा—क्या लिख रहे हो ?

सिसेरो ने प्रश्न करती हुई आँखों से उसे देखा। यह प्रश्न बेमतलब सा था; असल बात तो यह थी कि यह बातचीत की शुरुआत थी और सिसेरो बात करना चाहता था। अपने ही जैसे दूसरे नौजवानों की तरह वह निरन्तर उस स्त्री की प्रतीक्षा में रहता था जो उसे समझ सकेगी—अर्थात् जो ठीक से उसके अहं के लिए खाद्य जुटा सकेगी और उसने हेलेना से पूछा—तुम क्यों पूछती हो ?

—क्योंकि मैं जानना चाहती हूँ।

—मैं गुलाम युद्धों के बारे में एक निबन्ध लिख रहा हूँ—उसने नम्रता से कहा।

—तुम्हारा मतलब है उनका इतिहास ?—यह वह समय था जब उच्च वर्गों के अवकाश-भोगी सज्जनों में इतिहास लिखने का फ़ैशन शुरू ही हो रहा था और बहुत से नये-नये आये हुए अभिजात कुल के महानुभाव प्रजातन्त्र के आरम्भिक इतिहास को इस प्रकार तोड़ने-मरोड़ने में व्यस्त थे कि उनके अपने वंश और महान् घटनाओं के ताने-बाने एक दूसरे मे अच्छी तरह से गुँथ जायँ।

—इतिहास नहीं—सिसेरो ने गम्भीरता से कहा और अपनी गम्भीर निर्निमेष दृष्टि से उस लड़की को देखा, अपने उस खास ढङ्ग से जिससे कि

वह दूसरे पर अपनी ईमानदारी और सच्चाई का प्रभाव डालता था मगर जिसमें बनावट का अपना रंग भी शामिल था।—इतिहास का मतलब होगा काल का अनुक्रम। मुझे ज़्यादा दिलचस्पी उस घटना में है, उस प्रक्रिया में। अगर आदमी सिर्फ़ उन सलीबों को देखे, दण्ड के उन प्रतीकों को जो ऐपियन मार्ग के दोनों ओर दूर तक चले गये हैं, तो उसे सिर्फ़ छः हज़ार आदमियों की लाशें दिखायी देंगी। इससे यह परिणाम निकाला जा सकता है कि हम रोमन प्रतिहिंसात्मक लोग हैं और यह कहना काफ़ी नहीं है कि हम बस न्याय चाहते हैं, न्याय की आवश्यकता का आवाहन करते हैं। हमें इस न्याय का तर्क समझाना होगा, यहाँ तक कि खुद अपने आपको समझाना होगा। हमें बात को समझना होगा। उस बुड्ढे की तरह यह कहना काफ़ी नहीं है कि कार्थेज का ध्वंस आवश्यक है। वह तो झूठ-मूठ की तक़रीरबाज़ी है। जहाँ तक मेरी बात है मैं इस बात को समझना चाहूँगा कि क्यों कार्थेज का ध्वंस नितान्त आवश्यक है और क्यों छः हज़ार गुलामों को इस तरह मौत की सज़ा देना ज़रूरी है।

हेलेना ने मुस्कराकर कहा—कुछ लोगों का कहना है कि अगर उन सब को एक साथ ही बिक्री के बाज़ार में ला खड़ा किया गया होता तो बहुत से बड़े-बड़े मालदार लोगों का सफ़ाया हो गया होता।

सिसेरो ने जवाब दिया—इसमें थोड़ी सी सच्चाई है और बहुत सा झूठ। मैं ऊपरी, सतही, बातों के आगे देखना चाहता हूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि गुलामों के विद्रोह का क्या मतलब है। अपने आप को भरम में रखना रोमनों के लिए एक बड़ा मनोविनोद बन गया है; मुझे अपने आपको भरम में रखना अच्छा नहीं मालूम होता। हम इस युद्ध की बात करते हैं, बड़ी-बड़ी लड़ाइयों और सेनापतियों की बात करते हैं मगर हममें से कोई धीरे से बुदबुदाकर भी हमारे समय के उस निरन्तर चलते रहनेवाले युद्ध के बारे में नहीं बात करना चाहता जो दूसरे सब युद्धों से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है, गुलाम युद्ध, गुलामों का विद्रोह। यहाँ तक कि इस चीज़ से सम्बन्ध रखनेवाले सेनापति भी इस बात को दबा देना चाहते हैं। गुलाम युद्ध में कोई गौरव नहीं है। गुलामों पर विजय प्राप्त करने में कोई गौरव नहीं है।

—मगर यह कुछ इतने महत्व की चीज़ तो है नहीं।

—नहीं ? और तुम जब ऐपियन मार्ग से आयीं और तुमने दोनों तरफ़ की वे सलीबें देखीं तो वे तुम्हें महत्व की जान पड़ीं या नहीं ?

—उन्हें देखकर तबियत ज़रूर ख़राब हुई। मुझे ऐसी चीज़ें देखने में मज़ा नहीं आता। मेरी सहेली क्लॉदिया को आता है।

—यानी कि उसका कुछ महत्व है।

—मगर सभी तो स्पार्टकस और उसके युद्ध के बारे में जानते हैं।

—सचमुच जानते हैं क्या ? मैं तो ऐसा नहीं सोचता। मुझे तो इसका भी यक़ीन नहीं है कि और तो और क्रैसस भी इस चीज़ के बारे में बहुत कुछ जानता है। हमारे लिए स्पार्टकस एक रहस्य है। सरकारी बयान बतलाते हैं कि वह थ्रेस का रहनेवाला एक भाड़े का सिपाही और डाकू था। क्रैसस का कहना है कि वह एक पैदाइशी गुलाम था जिसे नूबिया की सोने की खानों से लाया गया था। हम किसका विश्वास करें ? वह हरामज़ादा बाटियाटस, जिसका अखाड़ा कापुआ में था, मर चुका है—एक यूनानी गुलाम ने जो उसका मुनीम था उसकी गर्दन काट दी थी—और इसी तरह स्पार्टकस से सम्बन्ध रखनेवाले सभी लोग या तो मर चुके हैं या कहीं गुम हो गये हैं। और अब उसके बारे में कौन लिखेगा ? मेरे जैसे लोग।

—इसमें कोई बुराई है कि तुम्हारे जैसे लोग लिखें ? हेलेना ने पूछा।

—शुक्रिया मेरी जान ! मगर मैं स्पार्टकस के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैं उससे सिर्फ़ नफ़रत करता हूँ।

—क्यों ? मेरा भाई भी उससे नफ़रत करता है।

—और क्या तुम नहीं करतीं ?

हेलेना ने कहा—मेरे मन में उसके लिए कोई ख़ास भाव नहीं है। वह महज़ एक गुलाम था।

—मगर क्या वह महज़ एक गुलाम था ? मगर तब फिर यह बतलाना होगा कि कैसे महज़ एक गुलाम, स्पार्टकस के दरजे को पहुँचा और स्पार्टकस बना ? यही वह पहेली है जिसे हमें सुलझाना है। मुझे पता लगाना है कि यह चीज़ कहाँ शुरू हुई और कैसे शुरू हुई। मगर मुझे लगता है कि तुम मेरी बात से ऊब रही हो ?

सिसेरो के अन्दर ईमानदारी का कुछ ऐसा ढङ्ग था जो झट लोगों की निगाह पर चढ़ जाता था और लोग उसकी बात पर विश्वास कर लेते थे और उसी चीज के बल पर बाद में जब उस पर अभियोग लगाये गये तो उन्होंने उसकी रक्षा की।—बोलते जाओ, हेलेना ने कहा। रोम में उसकी जान-पहचान के जो नौजवान थे, सिसेरो की उम्र के, वे नये-से-नये इत्रों के बारे में बात करते थे या उस ग्लैडिएटर की बात करते थे जिस पर उन्होंने शर्त बदी थी या उस घोड़े के बारे में जिस पर उन्होंने दाँव लगाया था और अगर यह नहीं तो अपनी सबसे नयी प्रेमिका या रखेल के बारे में।—अपनी बात जारी रक्खो, उसने कहा।

सिसेरो ने कहा—मुझे तक़रीरबाज़ी पर आस्था नहीं है। मुझे चीजों

को लिख डालना पसन्द है ताकि हर चीज अपनी ठीक जगह पर पहुँच जाय। मुझे डर है कि ज़्यादातर लोग तुम्हारी ही तरह सोचते हैं कि गुलामों का विद्रोह कुछ ख़ास महत्व की चीज़ नहीं है। मगरा ज़रा देखो हमारी सारी ज़िन्दगियाँ गुलामों के संग गुँथी हुई हैं और गुलामों के विद्रोह को लेकर जितना युद्ध हुआ है वह हमारी सभी विजयों से बढ़कर है। क्या तुम इस बात का विश्वास कर सकती हो ?

हेलेना ने सिर हिलाया।

—मैं इसका प्रमाण दे सकता हूँ। इस चीज़ की शुरुआत क़रीब एक सौ बीस बरस पहले हुई—कार्थेज के गुलामों के विद्रोह के साथ जिन्हें हमने गुलाम बनाया था। फिर उसके दो पीढ़ी बाद, यूनान में लॉरियम की खानों में गुलामों का महान् विद्रोह। फिर स्पेन की खानों में काम करनेवाले गुलामों का महान् विद्रोह उसके कुछ बरस बाद सिसिली के गुलामों का विद्रोह जिसने हमारे राज्य की जड़ें तक हिलाकर रख दीं। उसके बीस बरस बाद सैल्वियस नाम के गुलाम के नेतृत्व में गुलाम युद्ध। और देखा यह तो सिर्फ़ बड़े-बड़े युद्ध हैं, इनके बीच-बीच और भी एक हज़ार छोटी-मोटी बग़ावतें हैं—और सब मिलकर एक युद्ध बनते हैं, एक निरन्तर चलता हुआ, कभी अन्त न होनेवाला युद्ध, हमारे और हमारे गुलामों के बीच, एक मौन निश्शब्द युद्ध, एक लज्जाजनक युद्ध जिसके बारे में कोई नहीं बोलता और इतिहासकार जिसका उल्लेख नहीं करना चाहते। हमको उसका उल्लेख करते डर लगता है, उस पर नज़र डालते डर लगता है, क्योंकि धरती पर यह एक नयी चीज़ है। पहले राष्ट्रों के बीच युद्ध होते थे, नगरों के बीच युद्ध होते थे, दलों के बीच युद्ध होते थे, यहाँ तक कि भाइयों के बीच युद्ध होते थे मगर यह तो एक नया राक्षस है हमारे ही भीतर, हमारे ही पेट में, और वह सभी राष्ट्रों, सभी दलों, सभी नगरों का समान रूप से दुश्मन है।

—तुम्हारी बात से मुझे डर मालूम होता है, हेलेना ने कहा, तुम समझ रहे हो तुम कैसी तस्वीर खींच रहे हो !

सिसेरो ने सिर हिलाया और कुछ खोजती हुई सी आँखों से उसको देखा। हेलेना ने भावावेश में अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया था और उसे अपने मन में उस आदमी के प्रति एक मीठी और मादक सी अनुभूति हुई। इस नौजवान को देखो, जो मुझसे ज़्यादा बड़ा नहीं, जिसे राष्ट्र के भाग्य और भविष्य के मसलों में इतनी गहरी दिलचस्पी है। उसे पुराने ज़माने की कहानियों की याद हो आयी, बचपन की सुनी हुई उन कहानियों की जिनकी उसे अब केवल धुंधली-धुंधली याद थी। सिसेरो ने अपनी पाण्डुलिपि

अलग कर दी और धीरे धीरे उसके हाथ को थपथपाने लगा और फिर झुक-कर उसने उसे चूम लिया। अब बहुत स्पष्ट चित्रमय रूप में उसे उन दण्ड के प्रतीकों की याद आयी, ऐपियन मार्ग के दोनों ओर सलीबों पर लटकते हुए इन्सानों के उस सड़ते हुए, गिद्धों के खाये हुए, धूप में तचे हुए गोश्त की। मगर अब उससे डर न मालूम होता था; सिसेरो ने उस चीज़ का रहस्य खोल कर उसके आगे रख दिया था मगर लाख कोशिश करने पर भी वह याद न कर पायी कि सिसेरो ने क्या कहा था, किस तर्क की शृंखला में उस चीज़ को बांध कर उसके आगे उजागर कर दिया था।

—हम बड़े विलक्षण लोग हैं, जिनमें प्रेम और न्याय की महान् क्षमता है,—सिसेरो ने सोचा। हेलेना से प्रणय निवेदन करते हुए उसने अनुभव किया कि आख़िरकार यह एक औरत मिली जो उसको समझती है। मगर इससे अपनी शक्ति के गर्व का यह भाव उसके अन्दर कम नहीं हुआ कि इस लड़की को मैंने जीत लिया है। इसके विपरीत उसने अपने आपको शक्ति से भरा हुआ पाया, अपनी शक्ति को बढ़ते हुए पाया—और अगर सच बात कही जाय तो शक्ति का यह विस्तार जो कुछ उसने लिखा था उसका अन्तिम तर्क था। आध्यात्मिक उपलब्धि के एक क्षण में उसने अपनी पुरुष इन्द्रिय को उस शक्ति से मिलते हुए देखा जिसने स्पार्टकस को कुचला था और बार बार कुचल देगी। उसको देखकर हेलेना को इस बात की भयाक्रान्त चेतना हुई कि सिसेरो का चेहरा घृणा और क्रूरता से भरा हुआ है। सदा की तरह उसने भय और अपने प्रति जुगुप्सा के भाव से अपने आपको समर्पित कर दिया।

२

भयंकर थकान और भावों की उथल-पुथल के कारण हेलेना आख़िरकार सो गयी और जागते समय का उसका वह दुःस्वप्न, जो कि किसी पुरुष के सङ्ग उसके सम्बन्ध का ज़रूरी अंग था, एक विचित्र और मन को उद्विग्न करने वाले स्वप्न में बदल गया। उस स्वप्न में यथार्थ और कल्पना का कुछ ऐसा समन्वय था कि दोनों तत्वों को अलग करना कठिन था। स्वप्न में उसने उस समय को याद किया जब रोम की सड़कों पर उसके भाई केयस ने लानिस्ता लेण्टुलस बाटियाटस को उसे दिखलाया था। वह अभी सिर्फ़ सात महीने पहले की बात थी और उसके कुछ ही रोज़ पहले की जब बाटियाटस का गला उसके यूनानी मुनीम ने काट दिया था—जैसी कि अफ़वाह थी, एक औरत को लेकर झगड़े में, जिस औरत को उस यूनानी ने लानिस्ता के चुराये हुए पैसों से खरीदा था। स्पार्टकस के संग अपने सम्बन्ध के कारण बाटियाटस भी कुछ-

कुछ मशहूर हो गया था। इस बार वह अपने एक मकान के मुक़दमे में पैरवी करने रोम आया हुआ था, मकान ढह पड़ा था और छः किरायेदार जो मर गये थे उनके घरवालों ने उसके ऊपर नालिश की थी।

अपने स्वप्न में हेलेना ने उसे बहुत सहज और स्पष्ट रूप में देखा, एक भारी-भरकम मोटा थुलथुल आदमी जिसको देखकर ही पता चल जाता था कि ज़रूरत से ज़्यादा खाने और व्यभिचार ने ही उसको यह शक्ल दी है। वह किराये से पालकी न लेता था और एक भारी से चोगे में लिपटा हुआ पैदल चल रहा था और पूरे वक़्त खखार रहा था और थूक रहा था और सड़क पर के भिखमंगे छोकरों को अपने हाथ की छड़ी से मार-मार कर भगा रहा था। बाद को उसी रोज़ हेलेना और केयस कचहरी पहुँच गये और संयोग से उस इजलास में पहुँच गये जहाँ बाटियाटस अपनी पैरवी कर रहा था। सपने की इतनी बात तो वैसी ही थी जैसी कि वाक़ई ज़िन्दगी में हुई थी। इजलास बाहर मैदान में हो रहा था। तमाम तमाशबीन भरे हुए थे—आलसी लोग जिन्हें कुछ करने को नहीं था, औरतें जिनके पास बेशुमार वक़्त था, शहर के चक्कर लगानेवाले आवारा नौजवान, बच्चे, दूसरे देशों के लोग जो बिना उस विख्यात रोमन न्याय को देखे उस रोमन नगरी को छोड़ने के लिए तैयार न थे, गुलाम जो किसी काम पर जा रहे थे या किसी काम से लौट रहे थे। सचमुच यह एक विलक्षण बात थी कि ऐसी भीड़ में से न्याय की कौन कहे साधारण बुद्धि की भी कोई बात निकाली जा सकती है। मगर कचहरियाँ थीं कि हफ्तों तक इसी तरह चला करती थीं। बाटियाटस से सवाल पूछे जा रहे थे और वह साँड़ की तरह गरज-गरजकर सवालों के जवाब दे रहा था और यह सब कुछ वैसा ही था जैसा कि उसने सचमुच देखा था।

मगर फिर, जैसा कि सपनों में होता है, अकारण ही उसने अपने आपको लानिस्ता के शयन-कक्ष में खड़े और उस यूनानी मुनीम को नंगा छुरा लेकर आगे बढ़ते हुए देखते पाया। वह छुरा मुड़ा हुआ सीका था जिससे थेसियन लोग अखाड़े में लड़ते थे। और शयनकक्ष का फर्श भी अखाड़ा ही था क्योंकि दोनों के लिए लैटिन शब्द एक ही है। यह यूनानी असली थेसियन के चौकन्नेपन से और अपने जिस्म को अच्छी तरह तौलता हुआ धीरे-धीरे रेत पर आगे बढ़ा और लानिस्ता जो जगकर बिस्तर पर बैठा हुआ था, उसे दहशत की आँखों से देखता रहा। मगर किसी के मुँह से एक भी शब्द या कोई भी आवाज़ नहीं हुई। तभी उस यूनानी के बग़ल में एक विशाल देव जैसी आकृति दिखायी दी, ऊपर से नीचे तक ज़िरहबख़्तर में ढँका हुआ एक ग़ज़बनाक आदमी और हेलेना फ़ौरन जान गयी कि यह स्पार्टकस था। उसका हाथ मुनीम की कलाई पर पड़ा और उसने हलके से कलाई को दबाया और

वह छुरा रेत पर गिर पड़ा। तब उस काँसे के से बने खूबसूरत देव ने, जो कि स्पार्टकस था, हेलेना को इशारा किया और उसने छुरा उठा लिया और लानिस्ता का गला काट दिया। इसके बाद वह यूनानी और वह लानिस्ता दोनों गायब हो गये और वह ग्लैडिएटर के सङ्ग अकेली छूट गयी; मगर जब उसने उसको अपने आलिंगन में लेने के लिए अपनी बाँहें फैलायीं तो उस देव ने जो कि स्पार्टकस था उसके मुँह पर थूक दिया, घूम पड़ा और चल दिया। फिर वह उसके पीछे-पीछे रोती-सिसकती और रुकने के लिए उससे प्रार्थना करती हुई दौड़ी मगर वह गायब हो चुका था और वह रेत के अनन्त विस्तार में अकेली खड़ी थी।

२

सचमुच लानिस्ता बाटियाटस की मौत बड़ी ज़लील और घटिया मौत थी, इस तरह खुद अपने गुलाम के हाथों खत्म होना; और वह शायद इस चीज़ से और दूसरी कई चीज़ों से बच गया होता अगर उसने उन दोनों ग्लैडिएटरों को जान से मरवा दिया होता जो ब्रैकस के लिए आयोजित उन निष्फल लड़ाइयों में से बच कर निकल आये थे। अगर उसने ऐसा किया होता तो यह उसके अपने अधिकारों के भीतर की बात होती; क्योंकि यह बहुत दिनों से चली आती हुई रीति थी कि फूट फैलानेवाले ग्लैडिएटरों को जान से मार दिया जाय। मगर यह सन्दिग्ध है कि अगर स्पार्टकस नष्ट भी हो गया होता तो इससे इतिहास का रूप बहुत बदला होता। जो शक्तियाँ उसको अंकुश लगा रही थीं, अनुप्रेरित कर रही थीं उन्होंने किसी और को खोज लिया होता, बस इतनी बात होती। जैसे इतने दिन बाद विला सलारिया में एक रोमन कुमारी हेलेना अपनी पाप-भावना से भारी निद्रा में मग्न थी और और उसने जो स्वप्न देखा था उसका सम्बन्ध ख़ास स्पार्टकस से न होकर किसी भी एक गुलाम से था जो कि तलवार उठा लेता है उसी तरह उसके अपने सपनों में भी ऐसी कोई ख़ास बात न थी बल्कि यही रक्ताक्त स्मृतियाँ और आशाएँ थीं जो कि उसके अनेक सहकर्मियों, तलवार के बल जीने वाले ग्लैडिएटरों के मन में थीं। इससे उन लोगों को जवाब मिल जायगा जो नहीं समझ पाते थे कि स्पार्टकस ने कैसे अपने षड्यन्त्र की योजना बनायी। यह योजना किसी एक ने नहीं बनायी बल्कि बहुतों ने मिलकर बनायी।

स्पार्टकस सो रहा था और उसकी पत्नी, वह जर्मन बाला वारिनिया उसकी कराहों से और नींद में उसके पागल की तरह बड़बड़ाने से जगी हुई उसके पास बैठी थी। वह बहुत सी चीज़ों के बारे में बात कर रहा था। अभी देखो

तो छन भर पहले वह एक नन्हा बच्चा था और फिर देखो तो सोने की खानों में पहुँच गया और फिर दूसरे ही क्षण लड़ाई के अखाड़े में। और तभी जैसे सीका ने आकर उसके गोश्त को चाक कर दिया और वह दर्द से चीख पड़ा।

जब यह हुआ तब वारिनिया ने उसको जगा दिया क्योंकि अपनी नींद जिन डरावने सपनों के बीच वह उस समय जी रहा था वह चीज़ अब वारिनिया की सहन-शक्ति के बाहर थी। उसने उसको जगा दिया और बड़े प्यार से उसे दुलराने लगी, उसके माथे पर हाथ फेरने लगी और उसकी ठंडी त्वचा को चूमने लगी। वारिनिया छोटी सी बच्ची थी तो वह देखा करती थी कि उसके क़बीले में जब स्त्री-पुरुष को आपस में प्रेम हो जाता था तो उनके अन्दर कैसी एक नयी बात पैदा हो जाती थी। इस चीज़ को वे लोग भय के ऊपर विजय कहते थे। दूसरों की कौन कहे उन घने-घने जङ्गलों के भूत-प्रेत भी जहाँ पर उसके क़बीले के लोग रहते थे, इस बात को जानते थे कि प्रेमियों को भय नहीं सता सकता और यह चीज़ तुम उन प्रेम करनेवालों की आँखों में देख सकते थे और जिस तरह वे घूमते थे और एक की उंगलियाँ दूसरे की उंगलियों में गुँथी होती थीं उसको देखकर समझ सकते थे। मगर क़ैद में पड़ने के बाद यह सारी स्मृतियाँ उसे भूल गयीं और तब उसके जीवन की सबसे प्रबल भावना घृणा बन गयी।

मगर फिर उसका सम्पूर्ण अस्तित्व, उसके भीतर का जीवन, उसकी एक-एक साँस, उसका जीना और काम करना, उसके रक्त की गति और उसके दिल का धड़कना सब कुछ इस थ्रेसियन गुलाम के प्रति उसके प्रेम में घुल-मिल गया। अब उसने जाना कि उसके क़बीले की स्त्रियों और पुरुषों का वह प्राचीन अनुभव बहुत सच्चा और बहुत भाव-व्यंजक था। अब उसे दुनिया की किसी चीज़ का डर न था। वह जादू में विश्वास करती थी और उसके प्रेम का जादू सच्चा था और प्रमाणित किया जा सकता था। इसके साथ-ही-साथ उसने महसूस किया कि उसका आदमी ऐसा है कि उसे प्रेम करना सहज है। वह उन अत्यन्त असाधारण मनुष्यों में था जो एकदम सांचे में ढले हुए निकलते हैं और जिनमें कहीं कोई जोड़ नहीं नज़र आता। स्पार्टकस में यही चीज़ थी जो सबसे पहले नज़र आती थी, उसकी सम्पूर्णता। वह असाधारण था, अनूठा था। वह सन्तुष्ट था, इस बात से नहीं कि वह कहाँ पर है बल्कि इस बात से कि मनुष्य के नाते वह क्या है। जीवन से हताश, मौत के मुँह में झोंके हुए, भयानक, जान पर खेल जानेवाले आदमियों के इस रैनबसेरे में भी—मौत की सज़ा पाये हुए हत्यारे, फ़ौज से भागे हुए सिपाही, खान पर काम करनेवाले मज़दूर, जिन्हें खान नष्ट न कर सकी, सब खोयी हुई

आत्माएँ जिनका कोई भविष्य नहीं, ऐसे लोगों को लेकर जो क़त्ल का अखाड़ा चलता था, उसमें भी स्पार्टकस को प्रेम मिलता था, सम्मान मिलता था, आदर मिलता था। मगर वारिनिया का प्रेम कुछ दूसरी ही चीज़ थी। स्पार्टकस समग्र रूप से जो कुछ था वह जैसे पुरुष जाति का सत्त था, पुरुष, जैसे कि नारी उसे देखती है और पाना चाहती है। वारिनिया सोचती थी कि उसके शरीर की वासनाएँ सब मर चुकी हैं, सदा-सदा के लिए, मगर स्पार्टकस के स्पर्श मात्र से उसको पाने की भूख उसके अन्दर जग जाती थी। अगर वारिनिया मूर्तिकार होती और उसे मूर्ति गढ़नी होती तो स्पार्टकस जैसा कुछ भी था वही जैसे पुरुष के शरीर की रचना का उसके लिए अकेला ढङ्ग होता। उसकी टूटी हुई नाक, उसकी बड़ी-बड़ी बादामी रङ्ग की आँखें और उसका भरा-भरा चंचल मुँह, सभी कुछ बचपन में देखे हुए अन्य पुरुषों के चेहरे से इतना भिन्न था जितना कि हो सकता था मगर तो भी वारिनिया ऐसे किसी आदमी को अपने अन्दर लेने या प्यार करने की बात सोच भी नहीं सकती थी जो कि स्पार्टकस जैसा नहीं था।

वह समझ नहीं पाती थी कि स्पार्टकस में वह खास चीज़ क्या है। वह रोमन अभिजात वर्ग के सभ्य सुसंस्कृत जीवन का अंग इतने काफ़ी समय तक रह चुकी थी कि वह समझने लगी थी कि उनके पुरुष कैसे होते हैं मगर यह उसकी समझ में नहीं आता था कि कैसे एक गुलाम वह कुछ हो सकता था जो कि स्पार्टकस था।

उसके सहलाने ने अब तक स्पार्टकस को शान्त कर दिया था और वारिनिया ने उससे पूछा—तुम काहे का सपना देख रहे थे?

उसने सिर हिलाया।

—मुझे अपने शरीर से चिपका लो और तब तुम्हें सपने नहीं आयेंगे।

स्पार्टकस ने उसे अपने शरीर से चिपका लिया और धीरे से पूछा—तुम कभी यह भी सोचती हो कि हो सकता है एक दिन हम लोगों का साथ छूट जाय?

—हाँ।

—और तब तुम क्या करोगी, प्राण? स्पार्टकस ने उससे पूछा।

—तब मैं मर जाऊँगी, वारिनिया ने सरल सीधे ढंग से उत्तर दिया।

—मैं उसी चीज़ के बारे में तुमसे बात करना चाहता हूँ, स्पार्टकस ने कहा। अब वह अपने सपनों से जाग गया था और पुनः शान्त था।

—हम लोग क्यों उस चीज़ के बारे में सोचें या बात करें?

—क्योंकि अगर तुम मुझे काफी प्यार करती हो तो मेरे मरने या तुमसे छीन लिये जाने की हालत में भी तुम मरना न चाहोगी।

—तुम क्या ऐसा ही सोचते हो?

—हाँ।

—और अगर मैं मर जाऊँ तो क्या तुम मरना न चाहोगे? वारिनिया ने पूछा।

—मैं जीना चाहूँगा।

—क्यों?

—क्योंकि जीवन के बिना कुछ नहीं।

—तुम्हारे बिना मेरे लिए जीवन का कोई अर्थ नहीं, वारिनिया ने कहा।

—मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे वचन दो और उसका पालन करो।

—मैं अगर वचन दूँगी तो उसका पालन करूँगी। नहीं तो वचन न दूँगी।

—चाहता हूँ कि तुम मुझे वचन दो कि आत्महत्या नहीं करोगी, स्पार्टकस ने कहा।

वारिनिया ने थोड़ी देर तक कोई जवाब नहीं दिया।

—दोगी इस बात का वचन?

अन्ततः वारिनिया ने कहा—अच्छा, मैं वचन देती हूँ।

इसके बाद थोड़ी ही देर में स्पार्टकस वारिनिया की बाँहों में अपनी शान्त मीठी नींद में डूब गया।

४

सबेरे के वक़्त डंके पर चोट पड़ी जिसने उन लोगों को कसरत के लिए बुलाया। उन्हें सबेरे के खाने के पहले चालीस मिनट तक बाड़े में दौड़ाया जाता था। हर आदमी को जागने पर एक गिलास ठण्डा पानी दिया जाता था। उसकी कोठरी का दरवाज़ा खोला जाता था। अगर उसके संग कोई औरत होती थी तो उसे जाने के पहले कोठरी की सफ़ाई करने दी जाती थी और उसके बाद वह स्कूल की गुलाम आबादी के संग मिलकर काम करने चली जाती थी। लेण्टुलस बाटियाटस की संस्था में किसी क़िस्म की कोई बर्बादी न होती थी। ग्लैडिएटरों की औरतें झाड़ू लगाती थीं और सफ़ाई करती थीं और खाना पकाती थीं और साग-भाजी के खेत गोड़ती थीं और नहानघरों में काम करती थीं और बकरियों की देख-भाल करती थीं और इन औरतों के संग बाटियाटस वही सख्ती बरतता था जो कोई भी जागीरदार अपने खेतिहरों के संग बरतता है। वह खूब आज़ादी से और अच्छी तरह कोड़े का इस्तेमाल करता था और खाने के लिए उन्हें सड़े-गले आलुओं का भुरता देता था। मगर स्पार्टकस और वारिनिया से उसे एक विचित्र प्रकार का भय मालूम होता

था; गो कि अगर कोई उससे पूछता कि उन लोगों में ऐसी कौन-सी चीज़ है जिससे उसे भय मालूम होता है तो वह बतला न सकता।

मगर इस ख़ास सुबह को, जो भूलने की चीज़ न थी, स्कूल की हर चीज़ में बेसब्री और नफ़रत का एक जज़्बा दौड़ रहा था, डंके की आवाज़ में, जिस तरीक़े से अखाड़े के उस्ताद उन आदमियों को अपनी कोठरियों से खदेड़ कर बाड़े में ले जा रहे थे, उसमें, और जिस तरह वे उन आदमियों को लोहे के जंगले के सामने ले जाकर क़तार में खड़ा कर रहे थे जहाँ उस काले अफ्रीकन को मौत के बाद भी सलीब पर टांगा गया था, उस चीज़ में; यहाँ तक कि आज औरतों को भी उसी नफ़रत से कोड़े मार-मार कर काम पर लगाया जा रहा था। आज इस सुबह वारिनिया का डर नहीं था और न उस पर कोड़े ही दूसरों से हलके पड़ रहे थे। अगर कुछ था तो यही कि दारोगा ने उसके संग विशेष सख्ती बरतने के लिए उसे महान् योद्धा स्पार्टकस की रण्डा कहकर दूसरी औरतों से अलग कर दिया था और दूसरो से ज़्यादा कोड़े उस पर पड़ रहे थे। वह बावर्चीखाने में काम कर रही थी जहाँ पर उसे खदेड़कर ले जाया गया था।

यह बाटियाटस का गुस्सा था जो हर जगह पर छाया हुआ था, एक भारी, काँपता हुआ गुस्सा जिसकी जड़ उस एक चीज़ में थी जो कि लानिस्ता को गुस्से में लाने के लिए सबसे ज़्यादा कारगर थी यानी पैसे का नुक़सान। ब्रैकस से जितनी रक़म तै हुई थी उसका आधा ब्रैकस ने रोक लिया था। और गो कि बाटियाटस नालिश वग़ैरह की बात सोचता था तो भी यह बात भी उससे छिपी नहीं थी कि एक रोमन अदालत में एक विख्यात रोमन परिवार के ख़िलाफ़ नालिश करके उसमें जीतने की उम्मीद बहुत नहीं है। उसके क्रोध के परिणाम हर जगह दिखायी दे रहे थे। बावर्चीखाने में बावर्ची उन औरतों को गाली दे रहा था और लकड़ी के अपने लम्बे डण्डे से मार-मार कर उनसे काम ले रहा था। अखाड़े के उस्ताद लोग अपने मालिक से कोड़े खाकर ग्लैडिएटरों को कोड़े लगा रहे थे और वह सलीब पर टंगा हुआ काला हब्शी बाड़े के जंगले के उस पार क़रीब लाकर खड़ा कर दिया गया था ताकि अपनी सबेरे की कसरत के लिए इकट्ठा होनेवाले ग्लैडिएटर उसे अपने ठीक सामने खड़ा पा सकें।

स्पार्टकस अपनी जगह पर खड़ा हो गया। उसके एक ओर गैनिकस था और दूसरी ओर क्रिक्सस नाम का एक गॉल। अपनी कोठरियों के ब्लाक के सामने वे लोग दो कतारों में खड़े थे और उनके उस्ताद जो आज उनके सामने खड़े थे, हथियारों से बहुत अच्छी तरह लैस थे, उन्हें ख़ास तौर पर छुरी और तलवार दी गयी थी। बाड़े के फाटक खोले गये और फ़ौज के चार

दस्ते यानी चालीस लोग वहाँ अटेन्शन की हालत में खड़े हो गये, उनके लकड़ी के छोटे-छोटे भाले उनके हाथों में थे। सबेरे की धूप उस पीली रेत पर भर उठी थी और उन आदमियों को भी अपनी गर्म-गर्म उंगलियों से छू रही थी। मगर स्पार्टकस के अन्दर कोई गरमी न थी और जब गैनिकस ने उसके कान में फ़ुसफ़ुसाकर उससे पूछा कि क्या उसे मालूम है यह सब क्या माजरा है तो स्पार्टकस ने खामोशी से सिर हिला दिया।

—तुम लड़े थे ? उस गॉल ने पूछा।

—नहीं।

—मगर उसने उनमें से किसी को मारा तो नहीं और अगर आदमी को मरना ही हो तो वह इससे अच्छी तरह से भी तो मर सकता है।

—क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारी मौत इससे बेहतर होगी ? स्पार्टकस ने पूछा।

क्रिक्सस ने कहा—वह कुत्ते की मौत मरेगा और तुम भी वैसे ही मरोगे। उसका पेट उधड़ा हुआ पड़ा होगा और वह रेत में दम तोड़ेगा और उसी तरह तुम भी।—तब जाकर स्पार्टकस को एहसास होना शुरू हुआ कि उसे क्या करना चाहिए; या शायद यह कहना बेहतर होगा कि इतने दिनों से जो चेतना उसके अन्दर थी वह कड़ी पड़कर एक वास्तविकता बन गयी। वह वास्तविकता अभी आरम्भ ही हो रही थी; वह वास्तविकता उसके लिए कभी आरम्भ से अधिक कुछ न होगी, उसका अन्त या अनन्तता का विस्तार तो उस भविष्य तक है जिसका अभी जन्म नहीं हुआ है; मगर उस वास्तविकता का सम्बन्ध उन सब बातों से है जो उस पर और उसके आस-पास के आदमियों पर गुज़रीं और उन सबसे जो अब गुज़रने जा रही थीं। वह उस काले हब्शी के विशाल शरीर को घूरने लगा, वह शरीर जो धूप में खड़ा था, जिसे कोड़े लगे थे, जिसकी खाल और जिसका गोश्त उस जगह पर उधड़ गया था जहाँ पर कि बल्लम उसके शरीर के पार हो गया था, खून जम कर सख्त हो गया था और उसके चौड़े-चौड़े कन्धों के बीच उसका सिर झूल रहा था।

इन रोमनों के लिये जीवन कितनी उपेक्षा की वस्तु है, स्पार्टकस ने सोचा। कितनी आसानी से यह किसी की जान लेते हैं और इसमें कितना आनन्द मिलता है इनका। और क्यों न हो, उसने अपने मन में कहा, जब उनके जीने की सारी क्रिया मेरे ही जैसे लोगों के खून और हड्डियों पर खड़ी हुई है ! लोगों को सलीब पर टाँगने में उन्हें विशेष आनन्द आता था। यह चीज़ कार्थेज से आयी थी, कार्थेजवालों ने ही सबसे पहले इसे अपनाया था

क्योंकि उनका ख़्याल था कि एक गुलाम के लिए यही मौत माकूल है मगर जब रोम की उँगलियों ने उसे छुआ तो उसको जैसे और चार चाँद लग गये और धीरे-धीरे उसने एक पागलपन की शक्ल अख़्तियार कर ली।

तभी बाटियाटस हाते के अन्दर आया और स्पार्टकस ने अपने पास खड़े हुए उस गॉल क्रिक्सस से मुँह-ही-मुँह में पूछा, इस तरह कि उसके होंठ भी मुश्किल ही से हिले होंगे—और तुम कैसे मरोगे?

—वैसे ही जैसे कि तुम, थ्रेसियन।

—वह मेरा दोस्त था, स्पार्टकस ने उस मरे हुए नीग्रो के बारे में कहा, और वह मुझे प्यार करता था।

—यही तुम्हारा अभिशाप है।

बाटियाटस ग्लैडिएटरों की लम्बी क़तार के सामने खड़ा हो गया और सिपाही उसके पीछे इकट्ठा हो गये। लानिस्ता ने कहा—मैं तुम्हें खाना खिलाता हूँ। मैं तुम्हें अच्छे-से-अच्छा खाना खिलाता हूँ, भुना हुआ गोश्त और मुर्ग़ और ताज़ी मछली। मैं तुम्हें इतना खिलाता हूँ कि तुम्हारे पेट फटने लगते हैं। मैं तुम्हें नहलाता हूँ और तुम्हारी मालिश करवाता हूँ। मैंने तुम्हें खदानों से और फाँसी के तख़्तों से छुड़ाकर यहाँ पर रक्खा है और यहाँ पर तुम देश भर की चर्बी खाकर बादशाहों की तरह रहते हो जिन्हें कुछ भी करना नहीं होता। जब तुम यहाँ पर आये उसके पहले तुम्हारी जो हालत थी उससे गयी-गुज़री हालत किसी की नहीं हो सकती मगर अब तुम आराम से रहते हो और अच्छे से-अच्छा खाना खाते हो।

—क्या तुम मेरे दोस्त हो? स्पार्टकस ने फ़ुसफ़ुसाकर कहा और उस गॉल ने भी उसी तरह मुँह-ही-मुँह जवाब दिया—ग्लैडिएटर, कभी दूसरे ग्लैडिएटर से दोस्ती न कर।

—मैं तुम्हें अपना दोस्त कहता हूँ, स्पार्टकस ने कहा।

तभी बाटियाटस ने कहा—इस काले कुत्ते के काले दिल में न तो कृतज्ञता थी न समझदारी। तुममें से कितने लोग उसकी तरह हैं?

ग्लैडिएटर ख़ामोश खड़े रहे।

—मेरे पास एक काले आदमी को लाओ—बाटियाटस ने अखाड़े के उस्तादों से कहा और वे वहाँ पर गये जहाँ अफ्रीकन खड़े थे और उनमें से एक को घसीट कर हाते के बीचोंबीच ले आये। यह चीज़ पहले ही से तय कर ली गयी थी। नगाड़े बजने लगे और दो सिपाही बाक़ी सिपाहियों से अलग हो गये और उन्होंने लकड़ी के बने अपने भारी-भारी बल्लम उठाये। नगाड़े बजते ही रहे। वह नीग्रो पागल की तरह छटपटाता और छूटने की कोशिश करता रहा और उन सिपाहियों ने बारी-बारी से अपने बल्लम उसके सीने के पार कर दिये। अब वह रेत पर चित पड़ा था और दोनों बल्लम एक विचित्र

कोण बनाते हुए उसके सीने में गड़े थे। बाटियाटस अपने बग़ल में खड़े हुए अफ़सर की तरफ़ मुड़ा और बोला—अब फिर गड़बड़ी नहीं होगी। अब ये कुत्ते गुर्रायेंगे भी नहीं।

—मैं तुम्हें अपना दोस्त कहता हूँ, गैनिकस ने स्पार्टकस से कहा और वह गॉल जो स्पार्टकस की दूसरी बग़ल खड़ा हुआ था उसने कुछ नहीं कहा। वह बस ज़ोर-ज़ोर से साँस लेता रहा और घबराहट की आवाज़ उसके गले से निकलती रही।

इसके बाद सुबह की कसरत शुरू हुई।

५

बाद में, सेनेट की ओर से बिठाले गये जाँच कमीशन के सामने बाटियाटस ने कहा और काफ़ी सच्चाई से कहा कि न सिर्फ़ उसे यह न मालूम था कि कोई साज़िश रची गयी है बल्कि यह चीज़ ही उसे नामुमकिन मालूम होती थी कि कोई साज़िश रची भी जा सकती है। अपनी इस बात के समर्थन में उसने बताया कि ग्लैडिएटरों में वह अपने कम-से-कम दो आदमी ज़रूर रखता था जिन्हें वह तनख़्वाह देता था और जिन्हें उसने वचन दे रक्खा था कि अगर वे अपना काम ठीक से करेंगे तो उन्हें रिहा कर दिया जायगा। बीच-बीच में इन दोनों के जोड़ को भी लड़ाया जाता था। तब एक को आज़ाद कर दिया जाता और दूसरा छोटे मोटे घावों के साथ वापस अपनी जगह पर आ जाता और तब उसकी जोड़ को पूरा करने के लिए एक नया भेदिया भरती कर लिया जाता। बाटियाटस ने ज़ोर देकर यह बात कही कि यह मुमकिन नहीं कि बिना मेरी जानकारी के कोई साज़िश रची गयी हो। ऐसा ही हमेशा होता था और चाहे जितनी ही बार गुलामों ने विद्रोह क्यों न किया हो इसका पता चलाना मुमकिन न था कि यह चीज़ कहाँ से शुरू हुई, इसकी जड़ कहाँ पर है जहाँ से यह बार-बार शुरू होती है, क्योंकि इसमें तो सन्देह नहीं कि उस चीज़ की जड़ स्ट्रॉबेरी की जड़ों की तरह एक-में-एक लगी-लिपटी न जाने कहाँ तक चली गयी थी और दिखायी न देती थी और दिखायी देता था सिर्फ़ उसका फूल देता हुआ पौदा। फिर वह चाहे सिसिली का बड़े पैमाने पर होने वाला विद्रोह हो या किसी जागीर पर होनेवाली कोई निष्फल कोशिश हो, जिसका अन्त दो-चार सौ अभागों को सलीब पर टाँगने में होता हो, उस चीज़ की जड़ों को खोदने की सेनेट की हर कोशिश नाकाम रही। मगर तब भी उन जड़ों को खोदना तो था ही। यहाँ पर मनुष्यों ने जीवन के एक ऐसे वैभव और विलास और समृद्धि की सृष्टि की थी जैसी कि संसार में पहले नहीं देखी

गयी थी; राष्ट्रों के आपसी युद्ध का अन्त रोमन शान्ति में हुआ था; रोमन सड़कों ने राष्ट्रों को एक दूसरे से विभाजित किया था, और संसार के इस महान् नागर केन्द्र में किसी को खाने की या आमोद-प्रमोद की कमी न थी। यह सब तो उचित ही था, जैसा कि होना ही था, जैसा कि सभी देवताओं की ओर से पूर्व-निश्चित था, मगर तब भी न जाने कहाँ से शरीर के इस वसन्तागम के साथ यह रोग भी आ गया था जिसे उखाड़ना मुश्किल हो रहा था।

इसीलिए सेनेट ने बाटियाटस से पूछा—क्या तब वहाँ पर षड्यन्त्र के, असन्तोष के, दुरभिसन्धि के कोई लक्षण न थे?

—नहीं, एक भी नहीं, बाटियाटस ने अपनी बात पर अड़ते हुए कहा।

—और जब तुमने उस अफ्रीकन को मौत की सज़ा दी—और देखो हमको ग़लत मत समझना, हम तुम्हारे क़दम को बिलकुल उचित समझते हैं —तब भी क्या कोई विरोध नहीं हुआ?

—नहीं।

—हमको यह जानने में ख़ास दिलचस्पी है कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि किसी तरह की बाहरी मदद, कोई बाहरी उकसावा इस मामले में दाख़िल हो गया हो?

—यह असम्भव है, बाटियाटस ने कहा।

—और स्पार्टकस, गैनिकस और क्रिक्सस की यह जो त्रिमूर्ति थी उसको बाहर से तो किसी क़िस्म की सहायता, पैसे वग़ैरह से नहीं मिलती थी?

—मैं भगवान् की सौगन्ध खाकर कह सकता हूँ कि उन्हें ऐसी कोई सहायता नहीं मिलती थी, बाटियाटस ने कहा।

६

मगर यह बात पूरी तरह सच न थी और दुनिया में कोई आदमी अकेला नहीं। स्पार्टकस की यह अद्भुत शक्ति थी कि उसने कभी अपने आपको अकेला नहीं समझा और कभी अपने ही भीतर समा जाने की उसने कोशिश नहीं की। उस नौजवान अमीर रोमन मारियस ब्रैकस ने अपने लिए जो दो जोड़ों की लड़ाई करवायी थी और जो निष्फल रही थी उसके कुछ ही पहले सिसिली की तीन बड़ी बड़ी जागीरदारियों में गुलामों का विद्रोह हुआ था। उसमें नौ-सौ गुलाम थे और मुट्ठी भर को छोड़कर बाकी सब को मौत के घाट उतार दिया गया। और उनके ख़ून से अच्छी तरह नहा चुकने पर ही मालिकों को ख़याल आया कि इस तरह उनका इतना पैसा नाली में बहा जा रहा है। यह

सोचकर बाक़ी बचे हुए क़रीब सौ गुलाम बहुत थोड़े पैसों पर जहाज़वालों
हाथ बेच दिये गये और ऐसे ही एक जङ्गी जहाज़ में बाटियाटस के एव
दलाल ने उस लहीम शहीम, चौड़े कंधे और लाल रङ्ग के बाल वाले उ
गॉल को देखा था जिसका नाम क्रिक्सस था। चूँकि उन बड़े-बड़े जङ्गी जहाज़
पर काम करनेवाले गुलामों के बारे में लोगों का ख़याल था कि उन्हें सुधार
नहीं जा सकता इसलिए उनका दाम कम होता था और इस सौदे के सिलसि
में जो घूस-वूस देनी पड़ती थी वह भी थोड़ी होती थी और चूँकि ऑस्टिय
के बन्दरगाह पर नियन्त्रण रखनेवाले गुलामों के व्यापारी किसी क़िस्म व
गड़बड़ी या झगड़ा नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने क्रिक्सस की उत्पत्ति के बा
में कुछ नहीं कहा।

तो कहने का मतलब कि स्पार्टकस न तो अकेला था न उन तमाम धाग
से अलग था जो एक ख़ास ताना-बाना बुनते थे। क्रिक्सस उसके बग़ल व
कोठरी में था। बहुत बार शाम को, अपनी कोठरी के फ़र्श पर लम्बे लेटे हु
और दरवाजे के पास अपना सिर किये स्पार्टकस ने क्रिक्सस के मुँह से सिसिल
के गुलामों की उन अनन्त लड़ाइयों की कहानी सुनी थी जो पचास बरस
भी ज़्यादा पहले शुरू हुई थीं। वह खुद गुलाम था और उसका बाप गुला
था मगर यहाँ उसके अपने ही लोगों में ऐसे-ऐसे बहादुर और शानदार व
थे जैसे कि पौराणिक कथाओं में पाये जाते हैं, जैसे कि एकिलीज़ और हेक्ट
और वह बुद्धिमान ओडीसियस, वैसे ही द्युतिमान और उनसे भी गर्वीले, ग
कि उनके बारे में कोई गाने न गाये जाते थे और उन्हें देवताओं की शक
न दी गयी थी जिनकी लोग पूजा करते हैं जो कि अच्छा ही था क्योंकि देव
भी तो अमीर रोमनों ही की तरह थे, गुलामों की ज़िन्दगी से उन्हें भी तो उत
ही कम सरोकार था। ये लोग इन्सान थे और इन्सान से घटकर थे, गुला
नंगे गुलाम जो कि बाजार में गधों से भी सस्ते बिकते थे और जागीरदारों
खेतों में जानवरों की जगह खुद ही हल में जुतकर काम करते थे। मगर कै
विराट् पुरुष थे वे भी! युनुस जिसने उस द्वीप के एक-एक गुलाम को आज़ा
किया और खुद खत्म होने के पहिले तीन रोमन सेनाओं का सफ़ाया किय
यूनान का वह एथीनियन, थ्रेस का वह सैल्वियस, जर्मनी का वह उण्डार्ट औ
वह विचित्र यहूदी बेन जोश जो एक किश्ती में कार्थेज से भाग निकला
और अपने तमाम आदमियों के साथ एथीनियन से आ मिला था।

उनकी कहानी सुनते-सुनते स्पार्टकस का हृदय गर्व से और आनन्द
भर उठता और उसके मन में अपने इन मृत वीरों के प्रति मैत्री और भा
चारे का एक महान् और हृदय के समस्त कल्मष को धोनेवाला भाव जा
उठता। उसका हृदय जैसे अपने इन साथियों से जा मिलता और वह सोचत

कि मैं इन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि उनके हृदय में क्या भाव उठते थे और वे किस चीज़ का स्वप्न देखते थे, किस चीज़ की आकांक्षा करते थे। जाति, नगर या राज्य से क्या आता जाता है। उनकी दासता तो सब जगह एक थी। मगर इतना होते हुए भी कि उनके विद्रोहों में अपना एक करुण गौरव था, बात यह सच है कि वे सदा असफल रहे; हर बार रोमनों की ही जीत हुई और उन्होंने विद्रोह करनेवालों को सलीब पर टाँगा, वह नया पेड़ और उसका नया फल, ताकि सब लोग देख सकें कि उस गुलाम को क्या पुरस्कार मिलता है जो गुलाम नहीं रहना चाहता।

—अन्त में सदा वही होता था, क्रिक्सस ने कहा...

इस तरह क्रिक्सस को ग्लैडिएटर बने जितने ही दिन गुज़रते जाते थे उतना ही कम उन गुज़री हुई बातों के बारे में वह बोलता था। ग्लैडिएटर को न तो भूत से कोई सहायता मिलती है न भविष्य से। उसके लिए तो केवल वर्तमान होता है। क्रिक्सस ने अपने चारों ओर तीखी निराशा की एक दीवार खड़ी कर ली और केवल स्पार्टकस में यह साहस था कि वह उस देव जैसे गॉल के मर्म में बैठे हुए उस तीखेपन के भीतर पैठने की कोशिश कर सके। और एक बार क्रिक्सस ने उससे कहा था—स्पार्टकस, तुम ज़रूरत से ज़्यादा दोस्त बनाते हो। दोस्त की जान लेना कठिन होता है। मुझे छोड़ दो।

आज इस सुबह, क़वायद के बाद, सबेरे के खाने के लिए जाने के पहले उन लोगों को थोड़ी देर के लिए हाते में एक जगह पर इकट्ठा किया गया था। ग्लैडिएटरों के शरीर गरम हो रहे थे और उनसे पसीना जारी था और वे छोटी-छोटी टोलियों में खड़े थे या बैठे थे और जँगले के उस पार सलीब पर लटकते हुए दो अफ्रीकनों की उपस्थिति से उनकी बातचीत का गला घुँटा हुआ था। वह आदमी जिसे एक दूसरे आदमी के एवज दण्ड का प्रतीक बनाया गया था उसके सलीब के नीचे बहुत सा ताजा खून इकट्ठा हो गया था और खून पीकर जीनेवाली चिड़ियाँ ज़मीन पर पड़े हुए उस मीठे धब्बे पर चोंच मार रही थीं और अपना पेट भर रही थीं। ग्लैडिएटर अपने को दबा हुआ महसूस कर रहे थे मगर उनके मन में गुस्सा भरा हुआ था और वे उदास थे। उन्होंने महसूस किया कि अभी तो यह शुरुआत ही है। बाटियाटस अब जितनी जल्दी मुमकिन हो सकेगा कोई ग्राहक फँसायेगा और उन्हें लड़ायेगा। बुरा वक़्त आया है।

सिपाही स्कूल के बग़ल से बहनेवाले नाले के उस पार, पेड़ों के एक छोटे से झुरमुट में बैठकर खाना खाने के लिए गये हुए थे। और स्पार्टकस, बाड़े के भीतर से उन्हें वहाँ ज़मीन पर लेटे हुए देख सकता था। उनके लोहे

के टोप अलग और उनके भारी-भारी हथियारों का ढेर एक जगह पर लगा हुआ। उसकी आँखें उसके ऊपर से अलग ही न होती थीं।

—तुम क्या देख रहे हो? गैनिकस ने पूछा। वे दोनों बहुत दिन तक साथ-साथ गुलाम रहे थे, बचपन में भी वे साथ थे और खानों में भी उन्होंने एक साथ काम किया था।

—मुझे नहीं मालूम।

क्रिक्सस भीतर-ही-भीतर अपने गुस्से को दबाये हुए था और उसकी घुटन महसूस कर रहा था; अपने भीतर हिंसा के भावों को बन्द किये-किये अब वह उस जगह पर आ गया था जहाँ ऐसा करना अब उसको भारी हो रहा था। उसने भी पूछा, तुम क्या देख रहे हो स्पार्टकस?

—मुझे नहीं मालूम।

—मगर तुम सब कुछ जानते हो और इसीलिए सब थ्रेसियन तुमको पिता कहते हैं।

—तुम्हें किससे नफ़रत है क्रिक्सस?

—क्या वह काला हब्शी भी तुम्हें पिता कहता था स्पार्टकस? तुम उससे क्यों नहीं लड़े? जब हमारी लड़ने की बारी आयेगी तो तुम मुझसे लड़ोगे स्पार्टकस?

स्पार्टकस ने शान्त भाव से कहा—मैं अब किसी ग्लैडिएटर से नहीं लड़ूँगा। मैं अब इस बात को जान गया हूँ। थोड़ी ही देर पहले न जानता था मगर अब जान गया हूँ।

उसके लगभग आधे दर्जन साथियों ने उसके शब्द सुने। वे उसके पास घिर आये। अब वह सिपाहियों को नहीं देख रहा था, उनके बदले अब वह ग्लैडिएटरों को देख रहा था। उसकी निगाहें एक के बाद दूसरे चेहरे पर पड़ रही थीं। वे आधे दर्जन बढ़कर आठ हो गये और फिर दस और फिर बारह औरतब भी उसने कुछ नहीं कहा, मगर उनके दिल की घुटन दूर हो गयी और उनकी आँखों में एक उत्तेजना थी जो अपने लिए निकासी मांग रही थी। उसने उनकी आँखों में पैठकर देखा।

—हम लोग क्या करेंगे, पिता? गैनिकस ने पूछा।

—जब कुछ करने का वक़्त आयेगा तो हमें मालूम हो जायगा कि हमको क्या करना है। अभी तो इस चीज़ को अब ख़त्म करो।

तब फिर भूत-भविष्यत्-वर्तमान सब एक में मिल गये और उस थ्रेसियन गुलाम ने एक हज़ार बरसों का बोझ अपने ऊपर अनुभव किया। जो कुछ एक हज़ार बरसों में नहीं हुआ था वह अब अगले कुछ घण्टों में होगा। और तभी फिर थोड़ी देर के लिए, वे गुलाम बन गये। गुलाम यानी ज़िन्दगी की

तलछट, गुलाम यानी बूचड़। वे बाड़े के फाटक की ओर बढ़े और फिर सबेरे के खाने के लिए हॉल में चले गये।

उसी वक़्त वे पालकी में जाते हुए बाटियाटस के पास से गुज़रे। वह अपने उस दुबले-पतले, छरहरे, शिष्ट-सभ्य मुनीम के सङ्ग अपनी उस बड़ी सी पालकी में बैठा हुआ था जिसे आठ गुलाम ढोते थे। वे दोनों उस वक़्त रसद खरीदने कापुआ की बाज़ार जा रहे थे। जब वे ग्लैडिएटरों की क़तारों के पास से गुज़रे तो बाटियाटस ने लक्ष्य किया कि उसके गुलाम बड़े ढङ्ग से, बहुत अनुशासन-पूर्वक चल रहे थे और उसने सोचा कि भले एक अफ्रीकन की बलि चढ़ाने में उसे कुछ खर्च उठाना पड़ा था मगर वह खर्च उचित था।

यही सान्त्वना लेकर बाटियाटस जीता था और उसका मुनीम भी जीता रहा और आगे चलकर उसने अपने मालिक का गला काट दिया।

७

जिस कमरे में—उसे खाना खाने का हॉल कहना ज़्यादा ठीक होगा—ग्लैडिएटर खाना खाने के लिए इकट्ठा होते थे वहाँ पर क्या हुआ वह कभी कोई न तो ठीक से जान सकेगा और न कोई उसकी कहानी कहेगा क्योंकि गुलामों के कारनामों के बारे में लिखनेवाले न तो इतिहासकार ही थे और न उनकी ज़िन्दगी को ही किसी मतलब में उल्लेख योग्य समझा जाता था; और जब किसी गुलाम का कोई काम इतिहास का अंग बन जाता था तब भी उस इतिहास का लिखनेवाला वही होता था जो खुद गुलामों का मालिक था और उनसे डरता और नफ़रत करता था।

मगर बावर्चीखाने में काम करती हुई वारिनिया ने खुद अपनी आँखों से उसको देखा और—जैसा कि आप देखेंगे—उसने बहुत बाद में जाकर उसकी कहानी एक और से कही और फिर चाहे ऐसी चीज़ का बज्र निर्घोष घटते-घटते एक फुसफुसाहट ही क्यों न बन जाय मगर पूरी तरह वह कभी नहीं खोता। बावर्चीखाना खाना खाने के हॉल के एक सिरे पर था। उसके भीतर जाने के दरवाज़े दूसरे सिरे पर थे।

खाना खाने का हॉल खुद बाटियाटस की सूझ थी। बहुत सी रोमन इमारतें परम्परा से चली आती हुई शैली में बनायी जाती थीं मगर इतने विराट् पैमाने पर ग्लैडिएटरों को रखना और उन्हें खेल सिखाना और पैसा लेकर उनके खेल दिखलाना यह इसी पीढ़ी की उपज थी, वैसे ही जैसे इन जोड़ों की लड़ाई देखने का उन्माद, और इतने ग्लैडिएटरों को रियाज़ करवाना और उन्हें अपने वश में रखना, यह एक नया प्रश्न था। बाटियाटस

ने एक पुरानी पत्थर की दीवार ली और उसके तीन तरफ़ दीवारें खड़ी कर दीं। इस तरह जो चतुर्भुज बना उसकी छत पुराने ढङ्ग की थी यानी लकड़ी का एक शेड जो हर ओर से क़रीब आठ फ़ीट तक भीतर को निकला हुआ था। उसका बीच वाला हिस्सा यों ही छोड़ दिया गया था जहाँ से खुला आकाश दिखायी देता था और भीतर बीच की एक नाली को छोड़कर जहाँ से बरसाती पानी बह सके, बाक़ी फ़र्श अब पक्का कर दिया गया था। भवन निर्माण की यह प्रणाली एक शताब्दी पहले अधिक प्रचलित थी मगर कापुआ की मृदु जलवायु में यही काफ़ी था यद्यपि जाड़े में वह जगह ठण्डी भी हो जाती थी और अक्सर नम रहा करती थी। ग्लैडिएटर शेड के नीचे फ़र्श पर पलथी मारे बैठे खाना खा रहे थे। अखाड़े के उस्ताद, रियाज़ करानेवाले, खुले आँगन के बीचोंबीच चहलक़दमी कर रहे थे क्योंकि वहाँ से वे सभी लोगों को बहुत आसानी से देख सकते थे। बावर्चीखाना, जिसका मतलब था ईंट और खपड़े का एक बड़ा सा चूल्हा और काम करने की बड़ी सी मेज़, इस चतुर्भुज के एक सिरे पर था और यहाँ बैठे हुए लोगों को बावर्चीखाने की हर चीज़ दिखायी देती थी; लकड़ी के दो भारी-भारी दरवाज़े दूसरे सिरे पर थे और ग्लैडिएटरों के अन्दर आने पर फ़ौरन वह दरवाज़े कसकर बन्द कर दिये जाते थे।

रोज़-रोज़ की तरह आज भी वही बात हुई, ग्लैडिएटर अपनी जगह पर आकर बैठ गये और बावर्चीखाने में काम करनेवाली गुलाम औरतें उन्हें खाना परोसने लगीं। बावर्चीखाने में काम करनेवाले गुलामों में ज्यादातर औरतें ही थीं। अखाड़े के चार उस्ताद आँगन के बीचोंबीच घूम रहे थे। उनके पास छुरे और बटे हुए चमड़े के छोटे-छोटे कोड़े थे। दरवाज़े बाक़ायदा बाहर से बन्द थे और दो सिपाही जिन्हें इसी काम के लिए दस्ते से अलग कर दिया गया था, अपनी ड्यूटी पर तैनात थे। बाक़ी सिपाही क़रीब सौ गज़ दूर पेड़ों की ठंडी छाँह में अपना सवेरे का खाना खा रहे थे।

स्पार्टकस ने यह सब देखा और लक्ष्य किया। उसने बहुत थोड़ा खाना खाया। उसका मुँह सूख रहा था और उसका दिल ज़ोर-जोर से धड़क रहा था। जैसा कि उसने देखा कोई बड़ी बात न हो रही थी और भविष्य जितना औरों के लिए खुला और बन्द था उतना ही उसके लिए भी। मगर कुछ लोग उस बिन्दु पर पहुँच जाते हैं जहाँ वे अपने आप से कहने लगते हैं—अगर मैं अमुक काम नहीं करता तो मेरे ज़िन्दा रहने की न तो कोई ज़रूरत है और न उसमें कोई तुक हो है—और जब बहुत से लोग उस बिन्दु पर पहुँच जाते हैं तो धरती काँपने लगती है।

आज भी दिन डूबने के पहले यानी इसके पहले कि सुबह दोपहर में और

फिर रात में तब्दील हो जाये, धरती थोड़ा काँपनेवाली थी; मगर स्पार्टकस को इसका पता न था। उसे बस अगला क़दम मालूम था और वह था ग्लैडिएटरों से बात करना। क्रिक्सस से यह बात कहते समय उसने अपनी बीबी वारिनिया को देखा जो चूल्हे के सामने खड़ी उसी को देख रही थी। दूसरे ग्लैडिएटर भी उसको देख रहे थे। उस यहूदी डेविड ने उसके होंठों के कम्पन का अर्थ पढ़ा। गैनिकस अपना कान उसके और पास ले आया। फ़्रैक्सस नाम का एक अफ़्रीकी बात सुनने के लिए उसके और क़रीब झुक गया।

स्पार्टकस ने कहा—मैं खड़े होकर कुछ बोलना चाहता हूँ। मैं अपने दिल को खोलना चाहता हूँ। मगर जब मैं बोलूँगा तो फिर पीछे हटना मुमकिन न होगा और हमारे यह उस्ताद हमको रोकने की कोशिश करेंगे।

लाल-लाल बालोंवाले उस दैत्याकार गॉल क्रिक्सस ने कहा—वे तुमको नहीं रोक सकेंगे।

आँगन के उस पार भी हवा की इस बिजली को महसूस किया गया। दो उस्ताद स्पार्टकस और उसके चारों ओर घिरे हुए आदमियों की तरफ़ मुड़े। उन्होंने अपने कोड़े फटकारे और अपने छुरे निकाल लिये।

—अब बोलो—गैनिकस चिल्लाया।

अफ़्रीकन ने कहा—हम लोग कुत्ते हैं क्या जो तुम हमारे ऊपर कोड़े फटकारते हो?

स्पार्टकस खड़ा हुआ और उसके साथ दर्जनों ग्लैडिएटर खड़े हुए। उन उस्तादों ने उनके ऊपर अपने कोड़े और अपने छुरे चलाये मगर ग्लैडिएटरों की भीड़ उनके ऊपर चढ़ गयी और उन्होंने देखते देखते ही उनको मार डाला। औरतों ने बावर्ची को मार डाला। इस सब काम में शोर-गुल बहुत थोड़ा हुआ। सिर्फ़ ग्लैडिएटरों की गुंथी हुई भीड़ की हल्की-सी गुर्राहट सुनायी दी। तब स्पार्टकस ने बहुत धीरे से, मन्द स्वर में, धीमे-धीमे अपना पहला आदेश दिया और क्रिक्सस और गैनिकस और डेविड और फ़्रैक्सस से कहा—तुम लोग दरवाज़े पर जाओ और उसकी रखवाली करो ताकि मैं बोल सकूं।

क्षण भर को वे हिचकिचाये मगर फिर उन्होंने आदेश का पालन किया और बाद में भी जब स्पार्टकस ने उनका नेतृत्व किया तो अधिकांश में उन्होंने उसकी बात को माना। वे उसको प्यार करते थे। क्रिक्सस जानता था कि हम लोग मारे जायंगे मगर उससे क्या और वह यहूदी डेविड जिसके मन में अब तक कहीं कोई भाव न था उसने टूटी हुई नाक और भेड़ जैसे चेहरे वाले इस अजीब, नेक, बदसूरत थ्रेसियन के लिए अपने मन में एक अजीब सोज़ और प्यार की एक लहर सी उठती महसूस की।

—मेरे पास आ जाओ, उसने कहा।

यह चीज़ बहुत फ़ुर्ती से हुई थी और अब तक बाहर खड़े हुए सिपाहियों की ओर से कोई आवाज़ न आ रही थी। सब ग्लैडिएटर और बावर्चीख़ाने में काम करनेवाले गुलाम—तीस औरतें और दो मर्द—उसके चारों ओर घिरकर खड़े हो गये और वारिनिया भय और आशा और आतंक से उसको अपलक देखने लगी और उसने चाहा कि स्पार्टकस के पास पहुँच जाय। भीड़ ने उसके लिए रास्ता बना दिया, वह उसके पास चली गयी और स्पार्टकस ने उसे अपनी बांह में लेकर कसकर अपने शरीर से चिपटा लिया और अपने मन में सोचने लगा, अब मैं आज़ाद हूँ। मेरे बाप ने और मेरे दादा ने आज़ादी का एक पल भी न जाना था लेकिन इस वक्त यहाँ पर खड़ा हुआ मै एक आज़ाद आदमी हूँ। इस चीज़ से उसे नशा सा हो रहा था और उसने महसूस किया कि जैसे यह भाव शराब की तरह उसकी रगों में बह रहा हो। मगर उसके साथ ही भय था। आज़ाद होना कोई हलकी चीज़ नहीं है; आज़ाद होना कोई छोटी चीज़ नहीं है, जब तुम बहुत दिनों तक गुलाम रहे आये हो, वे तमाम दिन जो तुमने देखे हैं और तुम्हारे बाप ने देखे थे। स्पार्टकस के मन में भय का वह दबा हुआ और जाग्रत भाव भी था जो उस आदमी में होता है जो कोई अपरिवर्तनीय निश्चय करता है और जानता है कि अपनी उस राह में जो भी कदम वह उठायेगा हर क़दम पर मौत उसका इन्तज़ार कर रही है। और सबसे अन्त में अपने प्रति एक महान् प्रश्न क्योंकि उन लोगों ने जिनका पेशा मार-काट था अपने मालिकों को मार डाला था और उनके मन में वह भयंकर सन्देह भरा हुआ था जो उस गुलाम के भीतर पैदा होता है जिसने अपने मालिक पर वार किया हो। उनकी आँखें उसके ऊपर लगी थीं। वही वो थ्रेस का रहनेवाला, नेक, खान का मज़दूर था जो उनके दिल की बात जानता था और उनके बहुत पास आ गया था और चूंकि उनके भीतर अनेक अन्ध-विश्वास थे और बहुत सा अज्ञान था, जैसी कि उस समय अधिकांश लोगों की स्थिति थी, इसलिए उन्होंने महसूस किया कि जैसे किसी देवता ने उसे स्पर्श कर दिया हो, किसी ऐसे विचित्र देवता ने जिसके हृदय में थोड़ी-सी दया है। इसलिए उसके लिए ज़रूरी है कि वह भविष्य को समझे और उसे उसी तरह पढ़े जैसे कि आदमी किताब पढ़ता है, और उन लोगों को अपने पीछे-पीछे उस भविष्य तक ले जाये; और अगर कोई मार्ग नहीं हैं जिन पर वे लोग उस भविष्य की यात्रा

कर सकें तो वह मार्ग बनाये। ये सारी बातें उनकी निगाहों ने उससे कहीं; ये सारी बातें उसने उनकी आँखों में पढ़ीं।

—बतलाओ तुम क्या मेरे अपने लोग हो?—उसने उन लोगों से पूछा जब वे लोग उसके चारों ओर आकर खड़े हो गये थे।—अब मैं फिर कभी ग्लैडिएटर नहीं बनूँगा। पहले मैं मरूँगा। तुम मेरा साथ दोगे?

उनमें से कुछ की आँखों में आँसू भर आये और वे उसके और भी पास घिर आये। कुछ के मन में ज़्यादा भय था और कुछ के मन में कम मगर उसने उन सब को एक उदास भावना का स्पर्श दे दिया था—इस चीज़ की विलक्षण प्रतिभा उसके अन्दर थी।

उसने कहा—अब हम सब साथी होंगे और हर काम में एक साथ रहेंगे जैसे हम एक ही आदमी हों; और मैंने सुना है कि प्राचीन काल में मेरी जाति के लोग जब लड़ने के लिए जाते थे तो वैसे नहीं जाते थे जैसे कि रोमन जाते हैं बल्कि अपनी इच्छा से जाते थे और अगर कोई ऐसा होता था जो लड़ना नहीं चाहता था तो वह चला जाता था और फिर कोई उस पर ध्यान न देता था।

—क्या करेंगे हम लोग?—कोई चिल्लाया।

—हम लोग निकल जायेंगे और लड़ेंगे और खूब लड़ेंगे क्योंकि हम सारी दुनिया के सबसे अच्छे लड़नेवाले लोग हैं।—एकाएक उसकी आवाज़ गूँज उठी और उसका वह शान्त नम्र रूप एकदम बदल गया जिसे देखकर वे लोग मन्त्रमुग्ध से खड़े रहे। उसका स्वर दुर्दान्त था, प्रचण्ड था और बाहर खड़े हुए सिपाहियों ने ज़रूर उसके चिल्लाने की आवाज़ सुनी होगी जब उसने कहा—हम उनको अखाड़े की ऐसी लड़ाई दिखलायेंगे जैसी कि आज तक उन्होंने रोम में कभी देखी न होगी और फिर वे मरते दम तक कापुआ के ग्लैडिएटरों को न भूलेंगे।

एक ऐसा वक्त आता है जब आदमी को जो कुछ करना होता है उसे करना ही पड़ता है और वारिनिया यह जानती थी और इस समय उसके मन में जो आह्लाद था उसमें एक महान् गर्व भी था जैसा कि उसने पहले कभी नहीं अनुभव किया था; उसके भीतर गर्व था और एक अनोखा आह्लाद था क्योंकि उसका आदमी ऐसा था जैसा दुनिया में कोई दूसरा न था। वह स्पार्टकस को जानती थी; धीरे-धीरे सारी दुनिया उसको जान जायगी मगर ठीक उस रूप में नहीं जैसे कि वह स्पार्टकस को जानती थी। न जाने कैसे वह समझ रही थी कि यह किसी विराट् और अनन्त वस्तु का आरम्भ है और उसका आदमी सौम्य है, नम्र है, पवित्र है और उसके जैसा दूसरा कोई नहीं है।

—सबसे पहले सिपाहियों को, स्पार्टकस ने कहा।

—हम लोग उनके एक-एक पर पाँच-पाँच पड़ेंगे और शायद वे भाग जायँगे।

—वे भागेंगे नहीं, उसने गुस्से से कहा, सिपाहियों के बारे में यह बात तुम्हें जाननी ही चाहिए कि वे भागेंगे नहीं। या तो वे हमें मार डालेंगे या हम उन्हें मार डालेंगे और अगर हम उन्हें मार डालते हैं तो उनकी जगह दूसरे आ जायँगे। रोमन सैनिकों का कहीं अन्त नहीं है।

जब उन लोगों ने उस तरह उसकी ओर देखा जैसे कि वे देख रहे थे तो उसने कहा, मगर गुलामों का भी कहीं अन्त नहीं है।

इसके बाद उन लोगों ने बड़ी जल्दी-जल्दी अपनी तैयारियाँ कीं। उन मुर्दा उस्तादों के पास से उन्होंने छुरे लिये और बावर्चीखाने से वे सभी चीज़ें ले लीं जो हथियार की तरह इस्तेमाल की जा सकती थीं, छुरियाँ और गोश्त का क़ीमा बनानेवाले बड़े-बड़े छुरे और लोहे की सलाख़ें जिनमें गोद कर गोश्त भूना जाता था और मूसल और ख़ास कर मूसल जिससे अनाज कूटकर दलिया बनाया जाता था और जो कि वहाँ पर कम से कम बीस की संख्या में थे, लकड़ी के वे मोटे-मोटे डण्डे जिनके एक सिरे पर लकड़ी की एक भारी सी गाँठ होती थी और यह चीज़ ऐसी थी जिस का इस्तेमाल डण्डे के रूप में भी हो सकता था और उसे दुश्मन पर फेंका भी जा सकता था। उन्होंने जलाने की लकड़ी भी ले ली और एक आदमी को कुछ और न मिला तो उसने गोश्त की एक हड्डी ही उठा ली और ढाल की तरह इस्तेमाल करने के लिए उन्होंने बर्तनों के ढक्कन भी उठा लिये। एक न एक रूप में अब उन सब के पास हथियार थे और तब उन्होंने खाने के हॉल का वह भारी सा दरवाज़ा खोल दिया और लड़ने के लिए बाहर निकल गये। औरतें सब के पीछे थीं।

उन्होंने काफ़ी तेज़ी से काम लिया था मगर फिर भी वह तेज़ी इतनी न थी कि सैनिकों के तैयार होने के पहले ही अचानक उन पर जा टूटते। बाहर जो दो सैनिक पहरा दे रहे थे उन्होंने अपने बाक़ी साथियों को होशियार कर दिया था और उनको इतना काफ़ी वक़्त मिल गया था कि वे अपने ज़िरहबख़्तर पहन लें और दस-दस सैनिकों के अपने चार दस्ते बना लें। लिहाज़ा अब वे नाले के दूसरे किनारे पर हमला करने की हालत में तैयार खड़े थे, चालीस सैनिक, दो अफ़सर और एक दर्जन उस्ताद जो सैनिकों ही की तरह हथियारों से पूरी तरह लैस थे, हथियार यानी तलवार और ढाल और भाला। इस तरह अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित चौवन सैनिक दो सौ ग्लैडिएटरों

का मुकाबला कर रहे थे जो नंगे थे और निरस्त्र थे। यह जोड़ बराबरी का न था मगर पलड़ा उन्हीं सैनिकों का भारी था और वे रोमन सैनिक थे जिनके सामने दुनिया की कोई चीज़ ठहर न सकती थी। उन्होंने अपने भाले उठाये और एक के पीछे दूसरा दस्ता इस तरह से तेज़ी से आगे बढ़े। सुबह की हवा में उनके अफ़सरों के हुकुम ऊँची आवाज़ में और साफ़ सुन पड़े और वे अपने रास्ते की इस गन्दगी को साफ़ करने के लिए गोया एक झाड़ू की तरह तेज़ी से लपके। बूट पहने हुए उनके क़दम नाले के पानी में छपछप करते हुए आगे बढ़े। किनारे पर पहुँचकर जब उन्होंने चढ़ना शुरू किया तो वहाँ जंगली फूल एक ओर को झुक गये। और आस-पास सारी जगह से बाक़ी गुलाम भी दौड़ते हुए निकल आये और छोटे-छोटे गुच्छों में आकर खड़े हो गये ताकि इस अद्भुत और कल्पनातीत घटना को देख सकें। उनकी मुड़ी हुई बाँहों पर टिके हुए उनके भयानक बल्लमों की नोकें धूप में चमक रही थीं और अगर रोमन शक्ति का कुछ भी मतलब था, उस रोमन शक्ति का जिसका अत्यन्त साधारण प्रतीक ये चार दस्ते थे तो इन गुलामों को भाग खड़े होना चाहिए था, धूल हो जाना चाहिए था।

मगर उस समय रोमन शक्ति पर आक्रमण हो रहा था और वह अपने बचाव की युक्ति कर रही थी और उसी क्षण में स्पार्टकस सेनापति बन गया। दूसरों का नेतृत्व करनेवाले व्यक्ति की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है; नेतृत्व एक ऐसी वस्तु है जो देखने में भी बहुत कम नज़र आती है और जिसे पकड़ पाना कठिन है कि वह क्या है। विशेषकर उस स्थिति में जब उसके पीछे कोई सत्ता या वैभव न हो। यों तो आदेश कोई भी दे सकता है मगर वह आदेश ऐसे देना कि दूसरे उसको सुनें और उसका पालन करें, यह एक विशेष गुण है और स्पार्टकस के अन्दर यह गुण था। उसने ग्लैडिएटरों को आदेश दिया कि दूर दूर फैल जाओ और वे दूर दूर फैल गये। उसने उन्हें आदेश दिया कि उन सैनिक दस्तों के चारों ओर एक बड़ा सा ढीला-ढाला घेरा बना लो और उन्होंने ऐसा घेरा बना लिया। अब आक्रमण के लिए उद्यत उन चारों दस्तों की गति धीमी पड़ गयी, वे दुविधे में पड़ गये, रुक गये। दुनिया में कहीं ऐसे सैनिक न थे जो कि क़दमों के फुर्तीलेपन में ग्लैडिएटरों का मुकाबला कर सकते हों, जिनका जीवन ही गति और गति ही जीवन था और फिर उनके शरीर पर सिवाय छोटी-छोटी लंगोटियों के और कुछ न था जब कि उन रोमन पैदल सिपाहियों के ऊपर उनकी तलवार और बल्लम और ढाल और ज़िरहबख़्तर और लोहे का टोप, इन सभी चीज़ों का भारी बोझ था। ग्लैडिएटर एक चौड़े घेरे में, जो इस ओर से उस ओर तक डेढ़ सौ गज़ था, दौड़ रहे थे और उनके घेरे के ठीक बीचों-बीच वे सैनिक

दस्ते थे जो कभी इधर होते थे और कभी उधर और बल्लम को उठाये हुए फेंकने की तैयारी में थे—जो कि तीस चालीस गज़ से ज़्यादा दूरी के लिए एकदम बेकार था। [आख़िरकार यह रोमन बल्लम एक ही बार तो फेंका जा सकता था!] फेंको और चढ़ दौड़ो। मगर फेंको काहे पर!

उसी क्षण स्पार्टकस ने आश्चर्यजनक स्पष्टता से अपने दाँव-पेंच की जैसे एक झलक पा ली, वे दाँव-पेंच जिनका आनेवाले सालों में उसने बराबर इस्तेमाल किया। उसने अपने मन की आँखों से उस एक झाँकी में ही बड़े सजीव चित्रमय रूप में उन सभी कहानियों के तर्क को देख लिया जिनमें बताया जाता था कि कैसे सेनाएँ रोम की उन लोहे की नोकों पर अपने आपको फेंक देती थीं और रोमन भाला उन्हें वहीं ढेर कर देता था और फिर कैसे उस छोटी सी रोमन तलवार की उस्तरे जैसी तेज़ धार उनके टुकड़े-टुकड़े कर देती थी। मगर यहाँ इन शोर करते हुए, मुँह से तमाम गालियाँ निकालते हुए, सरकश और नंगे ग्लैडिएटरों के घेरे के भीतर रोम का सारा अनुशासन और रोम की सारी शक्ति निपट असहाय थी।

स्पार्टकस चिल्लाया—पत्थर उठाओ! हमारी तरफ़ से पत्थर लड़ेंगे—अपने हल्के फुर्तीले क़दमों से वह उस घेरे के चारों ओर दौड़ रहा था और बहुत सजीला लगता था—पत्थर चलाओ!

पत्थरों की इस बौछार में सैनिकों को मजबूरन झुकना पड़ा। हवा में तमाम पत्थर ही पत्थर उड़ रहे थे, औरतें भी घेरे में शामिल हो गयी थीं। घरों में काम करनेवाले गुलाम भी आकर उनसे मिल गये थे और खेतों में काम करनेवाले गुलाम भी उनसे आकर मिलने के लिए बाग़ों से दौड़े। पत्थरों से बचने के लिए सैनिकों ने अपनी ढालों के पीछे छुपने की कोशिश की मगर इससे ग्लैडिएटरों को और भी पास आने और उन पर चोट करने का मौक़ा मिल गया। एक दस्ते ने घेरे पर हमला किया और अपने भाले फेंके। एक ग्लैडिएटर को आकर वह भयानक हथियार लगा मगर बाक़ी सब दस्ते के ऊपर आकर कूद पड़े और उन्होंने उनको घसीटकर लगभग नंगे हाथों से ही मारकर गिरा दिया। वे सैनिक भी जम कर लड़े। उनके दो दस्तों ने एक घेरा बनाया और पत्थरों की उस बरसात में जब उनमें मुट्ठी भर ही अपने पैरों पर खड़े रह गये और जब भेड़ियों के एक झुण्ड की तरह ग्लैडिएटर उनके ऊपर चढ़ दौड़े तब भी वे लड़ते रहे और उस वक़्त तक लड़े जब तक कि मर नहीं गये। चौथे दस्ते ने घेरे को काटकर अपना रास्ता बनाने और भागने की कोशिश की मगर इस दाँव को कामयाब बनाने के लिए दस आदमी बहुत कम थे और उन्हें पकड़कर गिरा दिया गया और मार डाला गया। उसी तरह उस्तादों को भी मार डाला गया और उस्तादों में से दो को, जो

दया की भिक्षा माँग रहे थे औरतों ने ढेले मार मार कर खतम कर दिया। यह अजीब, खूँखार, छोटी सी लड़ाई जो खाना खाने के हॉल के पास शुरू हुई थी अब स्कूल के मैदान पर और कापुआ की सड़क पर हो रही थी, जहाँ उस आखिरी सैनिक को गिराया और मारा गया था और उस सारी जगह पर काफ़ी दूर तक मुर्दा और घायल आदमी पड़े थे। मुर्दों में चौवन रोमन और उस्ताद थे ओर और भी बहुत से थे जो ग्लैडिएटर थे।

मगर यह तो अभी आरम्भ ही था। विजय के गर्व से भरा हुआ, खून से लथपथ और उसके उल्लास को लिये हुए, यह तो अभी आरम्भ ही था—और स्पार्टकस वहाँ उस राजमार्ग पर खड़ा हुआ दूर पर कापुआ की दीवारों को देख रहा था जो सबेरे की सुनहली धूप में कुहरे से लदा हुआ, कुछ धुँधला-धुँधला सा सोने का नगर जान पड़ता था। स्पार्टकस देख रहा था कापुआ की दीवारों को और सुन रहा था वहाँ पर स्थित सेना के बजते हुए नगाड़ों को। अब कहीं आराम न मिलेगा क्योंकि अनेक घटनाएँ हो रही थीं और हवा मे शोर था और कापुआ में बहुत सैनिक रहते थे। संसार में विस्फोट हो गया था। जब वह चारों ओर खून और मौत से घिरा हुआ, हाँफता हुआ उस पक्के राजमार्ग पर खड़ा था, उस समय स्पार्टकस को लगा कि वह एक विराट्, अत्यन्त वेगवती, तुमुल कोलाहलपूर्ण धारा के ऊपर सवार चला जा रहा है और उसने देखा कि वह लाल लाल बालोंवाला गॉल क्रिक्सस हँस रहा है, गैनिकस अत्यन्त प्रसन्न है और उस यहूदी डेविड के छुरे पर खून और आँखों में ज़िन्दगी की चमक है और वे विशालकाय अफ्रीकी अत्यन्त शान्त खड़े लड़ाई का अपना कोई मन्त्र बुदबुदा रहे हैं। उसने वारिनिया को अपनी बाँहों में ले लिया। दूसरे ग्लैडिएटर भी अपनी औरतों को चूम रहे थे, उन्हें अपनी बाँहों में उठाये चक्कर खिला रहे थे और उनके संग हँस रहे थे जब कि घर के भीतर काम करनेवाले गुलाम बाटियाटस की शराब की मशकें लिये हुए दौड़े आये। जो घायल थे वे अपने घावों को छोटा करके दिखलाने की कोशिश कर रहे थे और दर्द की अपनी चीखों को दबा देते थे। और उस जर्मन लड़की ने स्पार्टकस को निहारा जो कि एक साथ ही हँस भी रहा था और रो भी रहा था, और उसने स्पार्टकस के चेहरे को, उसकी बाँहों को और उसके हाथ को छुआ जिसमें वह अपना छुरा पकड़े हुए था। शराब की मशकों में से शराब ढाली जा रही थी जब स्पार्टकस उन्हें अपने होश में ले आया। उसी वक़्, अपनी जीत में मगन और शराब के नशे में चूर, वे लोग इतिहास के बाहर निकल जा सकते थे क्योंकि सैनिक कापुआ के फाटक से बाहर निकलने लगे थे मगर तभी स्पार्टकस ने अपने गुलाम साथियों को बस में कर लिया। उसने गैनिकस को हुक्म दिया कि मरे हुए सैनिकों के सारे हथियार ले

लो और नोर्डो नाम के एक अफ्रीकी को यह पता लगाने के लिए भेजा कि क्या हथियारखाने को तोड़ सकना मुमकिन है। उसकी कोमलता अब ग़ायब हो चुकी थी और किस तरह वे लोग वहाँ से भाग जायें, इसी का एकाग्र संकल्प उसके भीतर एक तेज लौ की तरह जल रहा था और उसी ने उसका रूपान्तर कर दिया था। उसकी सारी ज़िन्दगी आज की इसी चीज़ के लिए बनी थीं और उसका सारा धीरज इसी दिन की तैयारी के लिए था। उसने सदियों इन्तज़ार किया था; आज के दिन का इन्तज़ार वह उस दिन से कर रहा था जब कि पहले गुलाम को ज़ंजीरों में जकड़ा गया था और उसे लकड़ी चीरने और पानी खींचने के लिए कोड़े मारे गये थे, और अब वह किसी भी हालत में इधर से विरत नहीं हो सकता, पैर नहीं हटा सकता।

पहले वह उनसे अनुरोध करता था, अब वह उन्हें आदेश देता था। रोमन हथियारों को कौन इस्तेमाल कर सकता है? बल्लम लेकर लड़ना किसे आता है? उसने अपने सिपाहियों को चार दस्तों में बाँटा।

उसने कहा—मैं चाहता हूँ कि औरतें घेरे के अन्दर रहें। उनको कोई चोट न आनी चाहिए और न उन पर हमला करने का मौक़ा हमें दुश्मन को देना चाहिए। औरतें नहीं लड़ेंगी।

औरतों के गुस्से को देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया था। उनका गुस्सा तो पुरुषों से भी कहीं बढ़-चढ़कर था। औरतें लड़ना चाहती थीं। लड़ने की उनके भीतर घोर प्रेरणा थी और इसीलिए वे रो-रोकर स्पार्टकस से भीख-सी माँग रही थीं कि वह अपनी स्वीकृति दे दे। उन छुरों को देखकर उनका जी ललचा गया और उन्होंने कुछ छुरों को पाने के लिए बड़ी अनुनय-विनय की मगर जब स्पार्टकस ने उनकी बात नहीं मानी तो उन्होंने अपनी ट्यूनिकों के फेंटे बाँधे और उनमें ईंट पत्थर भर लिये।

स्कूल के पास ही ढालुआँ पहाड़ी खेत थे जो कि किसी की जागीर थी। खेत में काम करनेवाले गुलाम यह देखकर कि आज और दिनों से भिन्न कोई अनोखी और भयानक चीज़ हो रही है, उसको देखने के लिए दौड़े और आकर छोटी छोटी टोलियों में पत्थर की दीवारों पर यहाँ वहाँ खड़े हो गये और उनको देखकर स्पार्टकस की आँखों के आगे स्पष्ट रूप से उसका भविष्य अपनी पूरी सादगी के साथ आ गया। उसने उस यहूदी डेविड को बुलाया और कहा कि उसको क्या करना है और वह यहूदी उन खेत के गुलामों की ओर दौड़ गया। स्पार्टकस का अनुमान ग़लत नहीं था; खेत के उन गुलामों में से तीन चौथाई डेविड के संग आ गये। वे दौड़ते हुए आये और उन्होंने ग्लैडिएटरों को सलाम किया और उनके हाथों को चूम लिया। वे अपने साथ अपनी कुदालें लिये हुए थे और अब देखते देखते इन कुदालों का रूप

बदल गया था, अब वे औज़ार नहीं हथियार थे। तब तक अफ्रीकन लौट आया। वे हथियारखाने को तोड़ने में नाकाम रहे थे; उसको तोड़ने में कम-से-कम आधा घण्टा लगेगा; मगर हाँ, उन्होंने हाल की आयी हुई एक पेटी ज़रूर तोड़ डाली थी जिसके अन्दर त्रिशूल थे, मछली पकड़ने के वही तीन नोक-वाले काँटे। इस तरह अब तीन नोक वाले ये तीस भाले उनके पास थे और स्पार्टकस ने उन्हें उन लोगों में बाँट दिया जिनको इस हथियार से लड़ने का अभ्यास था और उन अफ्रीकियों ने अपने हथियारों को चूमा, प्यार से थपथपाया और अपनी विचित्र बोली में उनके प्रति अपनी विचित्र शपथ ली।

इस सब में बहुत थोड़ा समय ही लगा था मगर तब भी स्पार्टकस को और भी जल्दी करने की ज़रूरत पहले से भी ज़्यादा बोझ बनकर सता रही थी। वह इस जगह से दूर चला जाना चाहता था, स्कूल से दूर, कापुआ से दूर। मेरे पीछे आओ!—वह चिल्लाया—मेरे पीछे आओ! वारिनिया उसकी बगल में थी। वे सड़क से दूर खेतों में निकल गये और खेत पार करके ढालुआँ पहाड़ियों पर चढ़ने लगे।—मुझे पीछे मत छोड़ना, मुझे पीछे मत छोड़ना, वारिनिया ने कहा, मैं भी तुम आदमियों की ही तरह लड़ सकती हूँ।

तभी उन्होंने सैनिकों को कापुआ की तरफ़ से सड़क पर आते देखा। वे दो सौ सैनिक थे। वे दौड़ते आ रहे थे जब कि उन्होंने ग्लैडिएटरों की पहाड़ियों पर चढ़ते देखा। तब उनके अफ़सरों ने उन्हें एकदम तिक्खे एक ओर को मोड़ दिया ताकि वे बीच में ही जाकर ग्लैडिएटरों को पकड़ लें और वे सैनिक खेतों में होकर तेज़ी से दौड़े। उनके उस पार उधर दूर पर कापुआ के नागरिकों की भीड़ें फाटक में से बाहर आ रही थीं। वे लोग • गुलामों के विद्रोह का दमन देखने के लिए और ग्लैडिएटरों की एक ऐसी लड़ाई देखने के लिए आ रहे थे जिसमें उनका कोई खर्च नहीं लगना था।

यह चीज़ यहीं पर ख़त्म हो सकती थी या इसके एक घण्टा पहले या एक महीना बाद। ऐसे असंख्य बिन्दुओं में से किसी एक पर पहुँचकर इस चीज़ का अन्त हो सकता था। गुलाम इसके पहले भी भागे थे। अगर ये गुलाम भी भागे होते तो वे खेतों में जाते और जंगलों में जाते। वहाँ पर वे चोरी की चीजों पर और कन्द मूल खाकर जानवरों की तरह ज़िन्दगी बिताते। और फिर एक के बाद एक उन्हें उसी तरह पकड़ लिया जाता जिस तरह जानवरों को पकड़ा जाता है और फिर एक के बाद एक उन्हें सलीब पर टाँग दिया जाता। गुलाम के लिए कहीं शरण लेने को जगह न थी, दुनिया ही ऐसी बनी थी। और जब स्पार्टकस ने उन कापुआ में स्थित सैनिकों को अपनी तरफ़ भाग कर आते देखा तो यह सीधी सी बात उसकी समझ में आ गयी। छिपने के

ाए कहीं जगह न थी, कोई बिल न था, जिसमें वे लोग घुस सकें। इस दुनिया ो को बदलना होगा।

उसने दौड़ना बन्द कर दिया और कहा—हम इन सैनिकों का मुकाबिला ारेंगे।

१०

इसके बहुत बाद स्पार्टकस ने अपने मन में कभी कहा—हमारी लड़ाइयों ; बारे में कौन लिखेगा कि हम क्या जीते और क्या हारे? और कौन है जो च बात कहेगा? गुलाम के नज़दीक जो कुछ सत्य था वह उस युग के, जिसमें रहते थे, सभी सत्यों के विपरीत पड़ता था। सत्य असम्भव था; हर हालत सत्य असम्भव था, इसलिए नहीं कि वह हुआ नहीं बल्कि इसलिए कि उस ग के सन्दर्भ में किसी के पास उसकी व्याख्या न थी। गुलामों से अधिक निक थे और सैनिक अस्त्र-शस्त्रों से खूब सुसज्जित थे; मगर सैनिकों को ाशा न थी कि गुलाम लड़ेंगे और गुलाम जानते थे कि सैनिक लड़ेंगे। लवान से नीचे गिरते हुए एक पहाड़ी नाले की तरह गुलाम तेज़ी से नीचे ो दौड़े और सैनिक, जो कि बेतरतीब इधर-उधर भाग रहे थे, ठीक वैसे से लोग खरगोश का पीछा करते हैं, इस हल्ले का मुकाबिला न कर के और उन्होंने ऊटपटांग अपने भाले इधर-उधर फेंकने शुरू किये और ौरतें उन पर जो पत्थर बरसा रही थीं उनसे बचने का उपाय करने लगे।

तो सच बात तो यह है कि सैनिक गुलामों के हाथ मार खाकर भाग गये और कापुआ जब आधी दूर रह गया था तो उनका पीछा करते हुए गुलामों बहाँ जाकर उन्हें पकड़ लिया था और मार गिराया था। पहली लड़ाई में लामों को बड़ी क्षति पहुँची मगर दूसरी लड़ाई में उनके सिर्फ मुट्ठी भर आदमी ारे गये और रोमन सैनिक भाग खड़े हुए। सच्चाई तो यही थी मगर स कहानी को एक सौ तरीक़ों से कहा गया और इसकी पहली रिपोर्ट कापुआ ; सैनिकों के सेनापति ही ने लिखी।

उसने लिखा—लेण्टुलस बाटियाटस के ट्रेनिंग स्कूल के गुलामों ने विद्रोह र दिया और उनमें से बहुत से भाग गये और ऐपियन मार्ग पर होकर दक्षिण ो ओर निकल गये। उनका पीछा करने के लिए कापुआ की आधी सैन्य-क्ति भेजी गयी मगर तब भी उनमें से कुछ भाग गये। किसी को यह नहीं ालूम है कि उनके नेता कौन है या कि उनके इरादे क्या हैं मगर यह ज़रूर कि उन्होंने देहातों के गुलामों में भी असन्तोष का बीज डाल दिया है और हाँ के नागरिकों का यह मत है कि कापुआ की सैन्य शक्ति को और बढ़ाने ; लिए हमारी महान् सेनेट को कुछ भी उठा न रखना चाहिए ताकि तत्काल

इस विद्रोह का दमन किया जा सके। शायद बाद को यह विचार आने पर सेनापति ने इतना और जोड़ दिया था—बहुत से लोमहर्षक काण्ड हो चुके हैं और इस बात का डर है कि देहात के सारे इलाक़े में लूटपाट, मार-काट का बाज़ार गर्म हो जायगा।

और ख़ैर बाटियाटस ने तो जैसे अपनी कहानी कापुआ के उत्सुक नागरिकों को सुनायी ही। सच पूछिए तो किसी को कोई परेशानी न थी—एक बाटियाटस को छोड़कर जो अपनी सालों की मेहनत को नाली में बहे जाते देख रहा था—मगर उनमें से हर एक यह समझ रहा था कि वह गाँव का इलाका तब तक गड़बड़ी में पड़ा रहेगा जब तक कि उन भयानक आदमियों (ग्लैडिएटरों) को पकड़कर या तो तलवार के घाट नहीं उतार दिया जाता या कील ठोंक कर सलीब पर टांग नहीं दिया जाता ताकि दूसरे उनकी मिसाल से नसीहत लें। यह कहानी का कहना अपने आप में एक प्रक्रिया थी। इस कहानी को ऐसे सैकड़ों लोगों ने सुनाया था और फिर-फिर सुनाया था जिनकी पूरी ज़िन्दगी गुलामों की उस अस्थिर आधार शिला पर टिकी हुई थी और उन्होंने अपनी कहानियाँ डर के मारे सुनायीं और इसलिए सुनायीं कि अपने भीतर वे उस चीज़ की हलचल महसूस कर रहे थे। ऐसा ही हमेशा हुआ है। बरसों बाद. इसी चीज़ की यह शकल हो जायगी—हाँ, मैं कापुआ में शर्बत पी रहा था जब स्पार्टकस वहाँ से भागा। मैंने उसे देखा, कहता तो हूँ। आदमी क्या है, देव है। मेरी आँखों के सामने उसने एक बच्चे को अपनी बर्छी की नोक पर उठा लिया। बड़ी भयानक चीज़ थी, देखकर कलेजा मुँह को आता था।

या इसी क़िस्म की और कोई बात, उन हज़ार बातों में से कोई एक जो इस घटना को लेकर फैल रही थीं। मगर उनके भीतर जो सत्य था उसकी तो उस समय स्पार्टकस तक को कभी-कभी केवल झलक मिल जाती थी। उसकी दृष्टि काल की शृंखला को तोड़कर मुक्त हो गयी थी। दो छोटी-छोटी लड़ाइयों में, उसके नेतृत्व में चलनेवाले गुलामों ने रोमन सैनिकों को हरा दिया था। यह बात बिलकुल ठीक है कि ये सिर्फ़ मुट्ठी भर रोमन सैनिक थे और सो भी मध्यम श्रेणी के जिन्हें शहर की आराम ज़िन्दगी ने नाजुक बना दिया था, और उनका मुक़ाबला कर रहे थे तमाम इटली के सबसे अच्छे पेशेवर तलवार चलानेवाले मगर इतना होते हुए भी यह एक दुनिया को हिला देनेवाली घटना थी कि गुलाम दिन में दो बार अपने मालिक को मार गिराये। और जब वे सैनिक भाग गये तो उन गुलामों ने अपनी जीत के लाभ को हाथ से जाने नहीं दिया। स्पार्टकस ने जब उन्हें बुलाया तो वे लौट आये—वे अनुशासन की डोर में बँधे हुए लोग थे और इन कुछ ही घण्टों में स्पार्टकस उनके लिए भगवान के समान हो गया था। उनके अन्दर स्वाभिमान लहरें

मार रहा था और उनके मन के दर्द ग़ायब हो चुके थे। वे बार-बार एक दूसरे को छू रहे थे, कुछ इस तरह कि जैसे प्यार से हाथ फेर रहे हों मानों वह निष्ठुर कहावत, ग्लैडिएटर किसी ग्लैडिएटर से दोस्ती न कर, एकाएक बिलकुल पलट गयी हो। और इसी तरह एक दूसरे को छू कर उन्हें आपस में एक दूसरे के अस्तित्व की चेतना हो रही थी। उन्होंने इस चीज़ के बारे में न तो सोचा और न तर्क करके ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचे; वे लोग अधिकांश में सीधे-सादे अनपढ़, गँवार लोग थे मगर एकाएक किसी ने उन्हें बहुत ऊँचाइयों पर चढ़ा दिया था और उनके सारे कल्मष को धोकर पवित्र कर दिया था। वे इस तरह एक दूसरे को देख रहे थे जैसे पहले उन्होंने एक दूसरे को देखा ही न हो और शायद इस बात में कुछ सच्चाई भी थी। इसके पहले उन्हें कभी सचमुच एक दूसरे को देखने का साहस न हुआ था। क्या जल्लाद उस आदमी को देख सकता है जिसे वह सज़ा देने जा रहा है? मगर अब उनका सम्बन्ध जल्लाद और उसके हाथ सज़ा पानेवाले आदमी का न था जिन्हें अनिवार्य रूप से एक ही डोर में बाँध दिया गया है, दोनों एक दूसरे के लिए जल्लाद। अब उनका सम्बन्ध भाई-चारे का था, ऐसे भाइयों का जिन्होंने मिलकर विजय प्राप्त की है और अब स्पार्टकस की समझ में आया कि कैसे यह चीज़ सिसिली और दूसरी बहुत सी जगहों में हो सकी थी। उसने उनकी शक्ति को अपने भीतर महसूस किया क्योंकि उनका एक अंश स्वयं उसके भीतर भी बढ़ रहा था, पल्लवित हो रहा था और यही धारणा जो उसके भीतर दौड़ रही थी उसने उन सब कष्टों और यातनाओं को धो डाला जिनसे कि उसका अतीत बना था और धो डाला उसकी समस्त भीतियों और लज्जा और अपमान को। वह इतने दिनों तक ज़िन्दगी को दाँत से पकड़े रहा था और इतने दिनों से बराबर उसने प्राणरक्षा को बिलकुल ठीक-ठीक विज्ञान का रूप दे रक्खा था कि कोई भी उसके बारे में यह समझने की भूल कर सकता था कि उसके लिए ज़िन्दगी बड़ी सावधानी से और सतर्कता से बरती जाने वाली चीज़ हो गयी होगी। मगर यही तो वह सब था जो उसने इतने दिनों तक बचाया था और एकाएक मृत्यु के विचार का उसे कोई डर न रह गया क्योंकि मृत्यु अब उसके लिए नगण्य थी . . .

कापुआ से क़रीब पाँच मील दक्षिण को, ऐपियन मार्ग से थोड़ी दूर हटकर, वे सब ग्लैडिएटर और उनकी स्त्रियाँ और उनके साथ में आनेवाले गुलाम एक पहाड़ी पर इकट्ठा हुए जहाँ से किन्हीं रोमन महाशय की जागीर पर बनी हुई विशाल हवेलियों में से एक दिखायी दे रही थी। दोपहर का वक़्त हो रहा था और उन दोनों लड़ाइयों के दौरान में और उसके बाद दक्षिण की ओर बढ़ने के दौरान में वे ग्लैडिएटर अब एक छोटी-सी सेना बन गये

थे। कुछ दूर से उनको देखकर रोमन सैनिकों की एक टुकड़ी का धोखा हो सकता था अगर उनके बीच वे काले हब्शी न होते। उन्होंने आपस में हथियार बाँट लिये थे, रोमन सैनिकों के वही सब लोहे के टोप और ज़िरह बख़्तर और बर्छी और ढाल। अब कोई निहत्था न था और हथियारों से लैस होकर और अग्नि परीक्षा में से निकलने के बाद अब इसमें सन्देह था कि रोम के पहले कोई दूसरी शक्ति उनका मुक़ाबला कर सकेगी। औरतों को छोड़कर मगर घर में और खेतों पर काम करनेवाले गुलामों को लेकर अब उनकी संख्या ढाई सौ थी। उनकी तीन मुख्य श्रेणियाँ थीं, गॉल, अफ्रीकी और थ्रेसियन और वे तीनों टुकड़ियों के रूप में मार्च कर रही थीं और उनके सबसे आगे चलते हुए लोग ही कहने-सुनने के लिए उनके अफ़सर थे। चूँकि इतने दिनों तक उन्होंने रोमन सैनिकों की दस-दस की टुकड़ियाँ देखी थीं इसलिए स्वाभावतः उन्होंने उसी तरीक़े को अपना लिया। स्पार्टकस उनका नेता था। इसके बारे में कोई बहस न थी। उसके लिए वे जान दे सकते थे। उनके पास ऐसे लोगों की, जिनको भगवान का स्पर्श मिला था, न जाने कितनी जन-श्रुतियाँ भरी पड़ी थीं। उन्होंने जब स्पार्टकस को देखा तो उनका यह विश्वास उनके चेहरे पर लिख गया।

मार्च करते समय वही सबसे आगे था और वह जर्मन लड़की वारिनिया उसकी कमर में बाँह डाले उसके बग़ल में चल रही थी। कभी-कभी वह उसको देख लेती थी। उसके लिए यह कोई नयी बात न थी। उसने अब से बहुत पहले इस आदमी से शादी की थी जो सभी आदमियों में सबसे ज़्यादा अच्छा और सबसे बहादुर था और क्या उस वक़्त भी उसको यह बात न मालूम थी—जैसी कि आज मालूम है? उनकी जब आँखें मिलीं तो वह मुस्करा दी। वह सैनिकों से लड़ी थी। उसे यह नहीं पता था कि उसकी इस बात से स्पार्टकस खुश था या नाखुश मगर वह ख़ैर जो भी हो उसने उसके हाथ के उस छुरे पर कोई आपत्ति न की थी। वे दोनों बराबर थे। दुनिया में उन अमेज़ॉन स्त्रियों की पुराने ज़माने की कहानियाँ भरी पड़ी थीं जो कि उस प्राचीन, अति प्राचीन काल में पुरुषों ही की तरह उनके साथ-साथ युद्ध क्षेत्र में जाया करती थीं—और तब स्पार्टकस के समय में इन कहानियों के अलावा उस अतीत की और भी कहानियाँ प्रचलित थीं जब कि स्त्री और पुरुष बराबर थे और न कोई स्वामी था और न कोई दास और सब का सब चीज़ों पर बराबर अधिकार था। वह प्राचीन काल समय के कुहासे में खो गया था; वह स्वर्णयुग था। अब फिर से वही स्वर्णयुग आयेगा।

एक तरह से वह स्वर्णयुग इसी समय आ गया था जब कि सूरज अपनी प्रखर ज्योति से उस सुन्दर ग्रामांचल को नहला रहा था और अखाड़े के वे

हिंस्र लोग उसको और उस गुलाम जर्मन लड़की को घेर कर बैठे हुए थे और सवाल पर सवाल पूछते चले जा रहे थे। जहाँ पर वे इकट्ठा हुए थे उस चरागाह में घास नम थी और हरी थी। उस पर मक्खन के गोलों की तरह गोले-गोले फूल फूले हुए थे और चारों ओर तितलियाँ और मधु मक्खियाँ भरी हुई थीं और हवा में उनके गाने की गूँज थी। थ्रेसियन ढंग पर उन्होंने स्पार्टकस को पिता कहकर पुकारा।

—अब हम लोग क्या करेंगे और कहाँ जायँगे?

वह उनके घेरे के बीच खड़ा था। वारिनिया घास पर बैठी हुई थी और उसका गाल स्पार्टकस के पैर से टिका हुआ था। वे सब उसके चारों ओर घास पर बैठे थे या सिमटे खड़े थे, वे सब लहीम-शहीम हब्शी, सुर्ख चेहरों और नीली आँखों वाले गॉल और थ्रेसियन जिनके बाल और शरीर की एक एक मांसपेशी लोहे के तार जैसी बटी हुई थी। उसने कहा—हम एक क़बीला हैं। तुम्हारी राय है? उन लोगों ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी। उस क़बीले में कोई गुलाम न था और सब बराबरी से बोल सकते थे और अभी यह बहुत पुरानी बात न थी, उसकी स्मृति की स्मृति तो उनको थी ही।

—कौन बोलना चाहता है? उसने पूछा—कौन तुम्हारा नेता बनकर आगे आयेगा? जो नेतृत्व करना चाहता हो खड़ा हो जाय। अब हम आज़ाद लोग हैं।

कोई खड़ा नहीं हुआ। थ्रेसियनों ने अपने छुरे की मूँठ से अपनी उन छोटी-छोटी ढालों को बजाया और उसकी आवाज़ से चरागाह की बहुत-सी चिड़ियाँ उड़ीं। कुछ लोग दूर पर जागीरदार की हवेली के आसपास दिखायी दिये मगर वे इतनी दूर थे कि यह कहना असम्भव था कि वे कौन थे या क्या थे। हब्शियों ने अपने चेहरों के आगे हाथ ले जाकर ताली बजायी और इस तरह स्पार्टकस का अभिवादन किया। उन सब को अपने भीतर एक विचित्र सन्तोष, एक अद्भुत तृप्ति मिल रही थी और उस समय तो वे निश्चय ही स्वप्न में जी रहे थे। वारिनिया का गाल स्पार्टकस के पैर से बराबर लगा रहा। गैनिकस चिल्लाया—स्पार्टकस ज़िन्दाबाद।

एक आदमी जो मर रहा था, धीरे-धीरे अपने कमज़ोर पैरों पर खड़ा हो गया। वह घास पर पड़ा हुआ था, उसकी बाँह ऊपर से नीचे तक कट गयी थी, भीतर से सफ़ेद हड्डी झाँक रही थी और खून का परनाला जारी था। वह एक गॉल था और वह पीछे नहीं छूटना चाहता था और इस रूप में उसने आज़ादी का थोड़ा-बहुत स्वाद पा लिया था। खून में भीगे हुए कपड़े से उसकी बाँह बँधी हुई थी और वह धीरे-धीरे चलकर स्पार्टकस तक गया और स्पार्टकस ने उसे तनकर खड़े होने में मदद दी।

उसने ग्लैडिएटरों से कहा—मुझे मरने का डर नहीं है। इस तरह मरना लोगों को तमाशा दिखलाते हुए मरने से कहीं बेहतर है। लेकिन अगर मेरा बस चलता तो मैं मरने के बदले इस आदमी के पीछे चला चलता। मैं मरना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि मैं इस आदमी के पीछे-पीछे चलूँ और देखूँ कि यह हमें कहाँ ले जाता है। लेकिन अगर मैं मर जाऊँ तो मुझे याद करना और इस आदमी के संग कोई बुराई न करना। उसकी बात सुनना। थ्रेसियन उसको पिता कहकर बुलाते हैं और हम सब छोटे बच्चों की तरह हैं और वह हमारे भीतर की सारी बुराई को चूस कर फेंक देगा। मेरे अन्दर अब कोई बुराई, कोई पाप नहीं है। मैंने एक बड़ा काम किया है और मैं स्वच्छ हूँ और मुझे मरने का डर नहीं है। मैं शान्तिपूर्वक सोऊँगा। मरने के बाद फिर मुझे सपने न आयेंगे।

कुछ ग्लैडिएटर अब खुल कर रो रहे थे। उस गॉल ने स्पार्टकस को चूमा और स्पार्टकस ने उसको चूमा। मेरे पास रहो, स्पार्टकस ने कहा और वह आदमी वहीं पास ही घास पर ढेर हो गया और खेत पर काम करनेवाले वे गुलाम जो इन लोगों के संग आ मिले थे, मुँह खोलकर भौंचक से इन ग्लैडिएटरों को देखने लगे जिनका मृत्यु से इतना सहज और इतना घनिष्ठ परिचय था।

स्पार्टकस ने उससे कहा—तुम मर रहे हो मगर हम जिएँगे। हम तुम्हारे नाम को याद रक्खेंगे और हवा में उसकी गूँज भर देंगे। देश भर में लोग तुम्हारे नाम को जानेंगे।

—तुम कभी हथियार डालोगे तो नहीं? उस गॉल ने विनती के स्वर में पूछा।

—क्या जब वे सैनिक हमसे लड़ने के लिए आये तो हमने हथियार डाले? हम दो बार उन सैनिकों से लड़े और हम जीते। तुम जानते हो अब हमें क्या करना होगा?—उसने ग्लैडिएटरों से पूछा।

वे ग़ौर से उसको देखने लगे।

—क्या हम लोग भाग सकते हैं?

—भागकर कहाँ जायेंगे?—क्रिक्सस ने पूछा—सब जगह तो यही बात है। सब जगह तो यही मालिक और गुलाम का सवाल है।

स्पार्टकस ने जो अब सारी बात जानता था और अच्छी तरह, पूरे निश्चय के साथ जानता था, ऐसे कि जैसे उसे कभी कोई सन्देह न रहा हो, कहा—हम भागेंगे नहीं। हम एक के बाद दूसरी जागीरदारी में जायँगे, घर घर जायँगे और जहाँ भी जायँगे गुलामों को आज़ाद करेंगे और उन्हें अपने में मिला लेंगे। जब वे फिर हमसे लड़ने के लिए अपने सैनिक भेजेंगे तो हम

उनसे लड़ेंगे और फिर भगवान ही यह निश्चय करेगा कि वह किस तरीके को ज़्यादा पसन्द करता है, रोमन तरीक़े को या हमारे तरीक़े को।

—और हथियार? हथियार हमें कहाँ मिलेंगे?—किसी ने पूछा।

—हथियार हम सैनिकों से छीनेंगे। और हथियार बनायेंगे भी। रोम अगर हमारा खून-पसीना और हमारा ज़ख़्म नहीं है तो और है क्या? ऐसी कौन सी चीज़ है जो हम नहीं बना सकते?

—तब रोम हमारे खिलाफ़ लड़ाई छेड़ देगा।

—तब हम रोम के ख़िलाफ़ लड़ाई छेड़ देंगे—स्पार्टकस ने शान्त भाव से कहा—हम लोग रोम का अन्त कर देंगे और एक ऐसी दुनिया बनायेंगे जिसमें न कोई गुलाम होगा न कोई मालिक।

यह एक स्वप्न था मगर इस समय उन्हें स्वप्न देखने का ही जी हो रहा था। वे आसमानों में ग़ोते लगा रहे थे और अगर उस काली काली आँखों और टूटी हुई नाक वाले अजीबोगरीब थ्रेसियन ने उनसे कहा होता कि वह स्वयं उनको लेकर भगवान पर चढ़ाई करने जा रहा है तो उन्होंने फ़ौरन उसकी बात मान ली होती और उसी वक़्त उसके पीछे चल दिये होते।

—हम अपने आप को ज़लील नहीं करेंगे—स्पार्टकस ने मद्धिम स्वर में उनसे कहा, कुछ इस तरह से कि वह उनमें हर एक से अलग-अलग सीधे-सीधे कोई बात कह रहा हो—हम वैसा नहीं करेंगे जैसा कि रोमन करते हैं। हम रोमन कानून को नहीं मानेंगे। हम खुद अपना कानून बनायेंगे।

—हमारा कानून क्या है?

—हमारा कानून बहुत आसान है। हमारे हाथ में जो कुछ भी आयेगा उस पर सब का बराबर अधिकार होगा और किसी आदमी के पास अपने हथियारों और अपने कपड़ों को छोड़कर दूसरी कोई चीज़ अपनी न होगी। सब कुछ वैसा ही होगा जैसा कि पुराने ज़माने में होता था। हम उन्हीं क़ायदों को बरतेंगे।

एक थ्रेसियन ने कहा—माल तो इतना है कि हम सभी रईस हो सकते हैं।

—तब फिर तुम्हीं कानून बनाओ, मैं नहीं बनाता, स्पार्टकस ने कहा।

वे इसी तरह बातें करते रहे और उनके बीच ऐसे लालची लोग भी थे जो रोमनों की तरह खुद भी बड़े-बड़े जागीरदार बनने के स्वप्न देखते थे और ऐसे भी थे जो खुद रोमनों को गुलाम बनाकर रखने के स्वप्न देखते थे। और वे इसी तरह बातें करते रहे और करते रहे मगर अन्त में हुआ वैसा ही जैसा कि स्पार्टकस ने कहा।

स्पार्टकस ने कहा—और हम लोग किसी स्त्री को रखेल बनाकर नहीं रक्खेंगे। हम स्त्री को केवल पत्नी के रूप में रक्खेंगे और किसी आदमी के पास एक से अधिक पत्नी न होगी। दोनों के बीच समान रूप से न्याय होगा और अगर वे शान्तिपूर्वक जीवन निर्वाह नहीं कर सकते तो वे अलग हो जायँगे। मगर कोई आदमी किसी स्त्री के संग चाहे वह रोमन हो चाहे और कोई, जो कि उसकी धर्मपत्नी नहीं है, नहीं सोयेगा।

उनके कानून थोड़े से थे और उन के बारे में उनके बीच पूर्ण मतैक्य था। इसके बाद उन्होंने अपने हथियार उठाये और उस जागीरदार की हवेली पर हमला करने के लिए चले गये। वहाँ पर सिर्फ़ गुलाम बच गये थे क्योंकि रोमन लोग भाग कर कापुआ चले गये थे....और वे गुलाम ग्लैडिएटरों से आ मिले।

११

कापुआ में उन लोगों ने इस पहली हवेली से उठते हुए धुएँ को देखा और इससे यह नतीजा निकाला कि गुलाम अनावश्यक रूप से क्रूर और प्रतिहिंसा से भरे हुए हैं। वे चाहते थे कि यह गुलाम शराफ़त और हमदर्दी से पेश आयें। और व्यावहारिक शब्दों में कहें तो वे चाहते थे कि गुलाम भाग कर उन जंगली पहाड़ों में, उनकी गुफ़ाओं में इक्के-दुक्के छिप जायें और जानवरों की तरह छिपे-छिपे तब तक साँस लेते रहें जब तक कि उनमें से एक एक जानवर का शिकार नहीं कर लिया जाता। कापुआ के नागरिकों ने जब पहले जलते हुए मकान से उठते धुएँ को देखा तब भी उन्हें कुछ ख़ास चिन्ता या परेशानी नहीं हुई। यह तो स्वाभाविक ही था कि ग्लैडिएटरों को जो कुछ अपने सामने मिलेगा उसी पर वे अपना गुस्सा निकालेंगे। कापुआ की इस बग़ावत की ख़बर सेनेट को देने के लिए तेज़ चलने वाले हरकारे ऐपियन मार्ग पर चल चुके थे—और इसका मतलब था कि थोड़े ही दिनों में स्थिति काबू में आ जायगी और तब इन गुलामों को ऐसा पाठ पढ़ाया जायगा जो वे फिर कभी न भूलेंगे।

मारियस एकैनस नाम के एक बड़े जागीरदार को पहले ही से सूचना मिल गयी थी और उसने अपने सातों सौ गुलामों को इकट्ठा किया ताकि उन्हें लेकर हिफ़ाज़त के साथ कापुआ की दीवारों के पीछे पहुँच जाय! मगर रास्ते में ही उसे ग्लैडिएटर मिल गये और फिर ये ग्लैडिएटर निर्मम होकर शान्त खड़े देखते रहे और उनकी आँखों के सामने उन गुलामों न अपने मालिक को और मालकिन को और मालकिन की बहन को और मालिक की बेटी को और उसके पति को मार डाला। यह बड़ी निर्मम, भयानक चीज़ थी मगर स्पार्टकस

जानता था कि वह इसको रोक नहीं सकता और न उसकी ऐसी कोई इच्छा ही थी। उन्होंने जो कुछ बोया था आख़िर वही तो वे काट रहे थे और खुद उनके पालकी ढोनेवाले गुलामों ने यह काम किया जब उनको यह मालूम हुआ कि यह रोमन सैनिक नहीं बल्कि वही भागे हुए ग्लैडिएटर हैं जिनकी ख्याति सब जगह पहुँच चुकी थी, हवा में जिनके नाम की गूँज थी। यह तीसरे पहर का वक्त था मगर ख़बर वक्त से भी तेज़ दौड़ रही थी। कुल सौ को लेकर जो चीज़ शुरू हुई थी वह अब एक हज़ार को पहुँच चुकी थी और जिस समय वे दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे, तमाम पहाड़ों से और वादियों से भाग-भाग कर गुलाम आ रहे थे और उनमें मिल रहे थे। खेतिहर अपने काम करने के औज़ार लेकर आ रहे थे; बकरी चरानेवाले अपनी भेड़-बकरियों के झुण्ड लेकर आ रहे थे। जब वे नदी की तरह बहते हुए एक मकान के क़रीब पहुँचे, आदमियों की एक बड़ी-सी भीड़ के रूप में क्योंकि अब सिर्फ़ ग्लैडिएटरों में कुछ थोड़ा-सा फ़ौजी चाल-ढाल क़ायदा-कानून बाक़ी बचा था—तो उनके भी पहुँचने के पहले ख़बर पहुँच चुकी थी और बावर्ची ख़ाने में काम करनेवाले गुलाम अपनी छूरियाँ और बोगदे लेकर उनका स्वागत करने के लिए बाहर आये और घर के भीतर काम करनेवाले गुलाम उन्हें रेशम और अच्छे-अच्छे कपड़ों का उपहार देने के लिए दौड़े आये। ज़्यादातर जगहों पर रोमन भाग गये थे और जहाँ पर रोमनों और उनके दारोग़ाओं ने मुक़ाबला करने की कोशिश की वहीं पर इसका भयानक प्रमाण मिलता था कि यहाँ कुछ हुआ है।

वे लोग तेज़ी से आगे न बढ़ पाते थे। अब वे हँसते-गाते हुए मर्दों और औरतों और बच्चों की एक बहुत बड़ी भीड़ बन गये थे जिसमें हर कोई आज़ादी की वही शराब पिये हुए था। अभी वे कापुआ से बीस मील से भी ज़्यादा दूर थे जब साँझ हो गयी और उन्होंने एक पहाड़ी सोते के पास एक घाटी में पड़ाव डाल दिया, आगें सुलगा लीं और ताज़ा मारकर लाया हुआ गोश्त छक-छककर खाने लगे। उनकी सलाखों पर पूरी-पूरी बकरियाँ और भेड़ और यहाँ वहाँ एकाध बैल भी, आग पर भूना जाने लगा और उसकी सोंधी खुशबू हवा में बस गयी। उन लोगों के लिए यह एक बड़ी शानदार दावत थी जो साल के साल प्याज़ और शलजम और जौ के दलिये पर ही गुज़र करते थे। गोश्त के बाद उन्होंने शराब पी और उनके गानों और हँसी ने खाने में मिर्च-मसाले का काम किया। कैसी अच्छी टोली थी यह भी, गॉल और यहूदी और यूनानी और मिस्री और थ्रेसियन और नूबियन और सूडानी और लिबियन, ईरानी और असीरियन और समारियन, जर्मन और स्लाव, बल्ग़ार और मक़दूनियावाले और स्पेनवाले और बहुत से इटली

वाले भी जो पुश्तहापुश्त एक न एक कारण से बेचे गये थे, साबीन और उम्ब्रियन और टान और सिसिलियन और बहुत से ऐसे क़बीले जिनके नाम भी भूले जा चुके हैं, खून और क़ौम के रिश्ते से बँधी हुई एक अनोखी टोली जिन्हें पहले उनकी गुलामी ने एक किया था और जो अब अपनी आज़ादी में एक थे।

उस प्राचीन काल में पूरे जन का एक परिवार होता था और क़बीले के सारे लोग एक समुदाय के समझे जाते थे और सारे राष्ट्र को उन पर अभिमान होता था मगर सताये हुओं की इस दोस्ती और भाईचारे में दुनिया को एक नयी ही चीज़ मिल रही थी और उस रात उस टोली में जिसमें न जाने कितनी क़ौमों और कितने राष्ट्रों के लोग थे, गुस्से या असन्तोष की एक भी आवाज़ नहीं सुनायी दी। उन सब को प्रेम और स्वाभिमान का थोड़ा-थोड़ा स्पर्श मिल गया था। उनमें से बहुतों ने स्पार्टकस को शायद ही कभी देखा था या किसी ने काफ़ी दूर से स्पार्टकस को उन्हें दिखलाया था मगर तब भी वे स्पार्टकस से भरे हुए थे। वह उनका नेता और उनका भगवान था—क्योंकि यह चीज़ उनके दिमाग़ में बहुत साफ़ न थी कि कभी-कभी भगवान मनुष्य का रूप धर कर धरती पर भी उतर आते हैं और क्या यह बात सच नहीं है कि खुद प्रोमीथ्यूस ने स्वर्ग की उस पवित्र अग्नि को चुराया था और उसे मानवता को एक सबसे अनमोल उपहार के रूप में भेंट किया था? और जो बात एक बार हो सकती है वह दुबारा भी हो सकती है। अभी से ही लोग अपनी आग के चारों ओर बैठे हुए कहानियाँ कह रहे थे और स्पार्टकस की वीरताओं का एक नया महाकाव्य अस्तित्व में आता जा रहा था। उनमें से एक भी ऐसा न था—नहीं, एक भी नहीं, यहाँ तक कि उन नन्हें बच्चों में भी नहीं—जिसने ऐसे संसार का स्वप्न न देखा हो जिसमें कोई गुलाम न होगा........

और स्पार्टकस ग्लैडिएटरों के बीच अभी बैठा हुआ था और वे लोग बातें कर रहे थे और जो कुछ हुआ था उसे तौल रहे थे, उसका जायज़ा ले रहे थे। उनका वह छोटा सा पहाड़ी नाला अब तक एक नदी बन चुका था और अब एक भीम प्रवाह का रूप लेने जा रहा था। गैनिकस ने यह बात कही। वह जब भी स्पार्टकस की ओर देखता था तो उसकी आँखें चमकने लगती थीं।—हम इसी तरह बढ़ते हुए सारी दुनिया को सर कर सकते हैं और उसके एक-एक पत्थर को उलटकर रख दे सकते हैं! ऐसा उसने कहा मगर स्पार्टकस ज़्यादा समझदार था। वह वारिनिया की गोद में सिर रक्खे लेटा हुआ था और वारिनिया उसके कड़े, भूरे, घुँघराले बालों में अपनी उँगलियाँ दौड़ा रही थी और कभी-कभी उसकी दाढ़ी के बालों पर भी हाथ फेर लेती थी और उसे

अपने भीतर एक अपूर्व समृद्धि और तृप्ति भरी हुई महसूस होती थी। अब वह सन्तुष्ट थी मगर स्पार्टकस के भीतर आग जल रही थी; वह पुरानी ही दशा में अधिक सन्तुष्ट था। उसने इटली की रात की वेला नीले आकाश पर फैले हुए उन साफ़-साफ़ चमकते हुए तारों को देखा और उसका मन एक-से-एक विचित्र विचारों और आकांक्षाओं और भीतियों और सन्देहों से भर उठा और उसे जो कुछ करना है उसका भारी बोझ उसने अपने ऊपर महसूस किया। उसे रोम को नष्ट करना है। इस विचार से ही, कि कोई ऐसा सोचने की धृष्ठता भी करे, उसको मुस्कराहट आ गयी और वारिनिया प्रसन्न हो गई और उसके होठों पर अपनी उँगलियाँ फेरते हुए, अपनी ज़बान में कुछ—गाने लगी। एक ठण्डे और जंगली मुल्क के रहनेवाले जंगली लोगों का संगीत। उसने वारिनिया के मुँह से उसके न जाने कितने वे अजीब-अजीब जंगली गाने सुने थे। वह गाती थी और स्पार्टकस उनको अपने मन में दुहराता था और उसके विचार उस संगीत की पृष्ठभूमि में आप से आप न जाने कैसे जम जाते और उसे अपने स्वप्न आकाश में चमकते हुए तारों के बीच फैले हुए दिखायी देते।

—तुम्हें रोम का ध्वंस करना है, तुम्हें, हाँ स्पार्टकस तुम्हें। तुम्हें इन लोगों को यहाँ से ले जाना होगा और इनके संग कठोर निर्मम बर्ताव करना होगा। तुम्हें इनको लड़ने और मारने का विज्ञान सिखाना होगा। अब लौटना नहीं हो सकता—नहीं एक क़दम पीछे नहीं। सारे संसार पर रोम का आधिपत्य है इसलिए रोम का ही ध्वंस करना होगा ताकि वह बस एक बुरी स्मृति के रूप में रह जाय और तब फिर जहाँ पहले रोम था वहाँ हम एक नये जीवन का निर्माण करेंगे जिसमें सब लोग शान्ति से और प्रेम से भाई-भाई की तरह रहेंगे, जिसमें न कोई गुलाम होगा और न कोई गुलामों का मालिक, जिसमें न ग्लैडिएटर होंगे और न उनके अखाड़े, बल्कि जो उस प्राचीन युग के समान ही, उस स्वर्णयुग जैसा ही एक युग होगा। भाई-चारे के आधार पर हम नये नगर बनायेंगे और उनके चारों ओर दीवारें न होंगी।

तभी वारिनिया ने गाना बन्द कर दिया और उससे पूछा—तुम काहे का स्वप्न देख रहे हो, तुम, मेरे पुरुष, मेरे थ्रेसियन? क्या तारों में बैठे हुए देवता तुमसे बातें कर रहे हैं? तो वे तुमसे क्या कह रहे हैं मेरे हृदयेश्वर? क्या वे तुम्हें कुछ ऐसी रहस्यभरी गोपन बातें बतला रहे हैं जो कि दूसरों को नहीं बतलायी जातीं? सच बात यह है कि वह आधे मन से स्वयं इस पर विश्वास करती थी। जहाँ देवताओं की, भगवान की बात हो वहाँ क्या सच है क्या सच नहीं है, यह कौन कह सकता है? स्पार्टकस ईश्वर से घृणा करता था और उसे किसी प्रकार का कोई सम्मान न देता था, उसके प्रति

स्पार्टकस के मन में ज़रा भी भक्ति न थी। एक बार उसने वारिनिया से पूछा था—क्या गुलामों के लिए भी ईश्वर होता है!

उसने वारिनिया के सवाल का जवाब देते हुए कहा—मेरे जीवन में ऐसा कुछ भी न होगा जो मैं तुम्हारे संग न बाँट सकूँ, मेरी प्राण।

—तब फिर तुम काहे का स्वप्न देख रहे हो!

—मैं स्वप्न देख रहा हूँ कि हम एक नया संसार बनायेंगे।

तब वारिनिया को उससे भय मालूम हुआ मगर स्पार्टकस ने बड़े प्यार से उससे कहा, आदमियों ने ही तो इस संसार को बनाया था। क्या यह सब यों ही हो गया था, प्राण! ज़रा सोचो। क्या इस संसार में ऐसी भी कोई चीज़ है जो हमने नहीं बनायी है—नगर, मीनारें, दीवारें, सड़कें, जहाज़! सभी कुछ तो हमने बनाया है। तब फिर हम एक नया संसार क्यों नहीं बना सकते!

—रोम—वारिनिया ने कहा और उस एक शब्द में वह शक्ति निहित थी जो सारी दुनिया पर शासन करती थी।

—तब हम रोम का ध्वंस कर देंगे—स्पार्टकस ने उत्तर दिया—दुनिया रोम से उकता चुकी। हम रोम का ध्वंस कर देंगे और जिन चीज़ों में रोम की आस्था है उनका ध्वंस कर देंगे।

—कौन करेगा? कौन करेगा? वारिनिया ने अनुनय के स्वर में कहा।

—गुलाम। पहले भी गुलामों के विद्रोह हो चुके हैं। मगर अब यह चीज़ कुछ और होगी। हम दुनिया भर के गुलामों का आवाहन करेंगे और वे हमारी बात सुनेंगे........

इस तरह शान्ति गयी और आशा गई और बहुत दिन बाद वारिनिया ने उस रात को याद किया जब उसके पुरुष का सिर उसकी गोद में था और उसकी आँखें दूर के तारों पर जमी हुई थीं। तब भी वह प्रेम की रात थी। कुछ ही लोगों को थोड़ी सी ऐसी रातें मिलती हैं और वे भाग्यशाली होते हैं। वे वहाँ पर ग्लैडिएटरों के बीच, आग के इर्द-गिर्द लेटे रहे और समय धीरे-धीरे बीतता रहा। वे एक दूसरे को छूते थे और इस प्रकार उन्हें एक दूसरे का बोध होता था। वे एक व्यक्ति के समान हो गये।

भाग ५ । जिसमें लेएटेलस ग्रैकस का वृत्तान्त है, यानी उसकी कुछ स्मृतियाँ और विला सलारिया में उसके ठहरने से सम्बन्ध रखनेवाली कुछ खास बातें ।

लेएटेलस ग्रैकस अक्सर कहा करता था कि जैसे-जैसे उसका वज़न बढ़ रहा है, तनी हुई रस्सी पर चलने की उसकी योग्यता भी बढ़ती जा रही है और जिस तरह उसने अपनी छप्पन साल की ज़िन्दगी के सैंतीस साल रोमन राजनीति की सफल साधना में बिताये थे उससे निश्चय ही उसके कथन की पुष्टि होती थी। वह कभी-कभी कहा करता था कि सनातन काल से राजनीति के लिए व्यक्ति के अन्दर तीन योग्यताओं की ज़रूरत होती है—योग्यताएँ तीन और सद्‌गुण एक नहीं। उसका दावा था कि सज्जनता के कारण जितने राजनीतिज्ञ बर्बाद हुए हैं उतने और किसी कारण से नहीं; और जिन योग्यताओं की बात वह करता था वे निम्नोक्त हैं। पहली योग्यता, जीतते हुए पक्ष को चुन सकना अगर वह सम्भव न हो तो फिर दूसरी योग्यता, हारते हुए पक्ष से अपना पिण्ड छुड़ा सकना और तीसरी योग्यता यह कि कभी किसी को अपना शत्रु न बनाओ।

ये तीनों ही योग्यताएँ आदर्श थीं और आदर्श तो फिर आदर्श ही हैं और लोग भी जैसे होते हैं वैसे ही होते हैं, इस सबसे यह चीज़ कहीं पर शत प्रतिशत न मिलती थी। जहाँ तक उसकी अपनी बात है, उसका हाल अच्छा ही रहा था। उसने एक सीधे-सादे मगर मेहनती मोची के बेटे के रूप में शुरू किया था। मगर मोची का बेटा होने से क्या होता है, उन्नीस साल की उम्र में वह

वोट ख़रीदने-बेचने लग गया था, पच्चीस तक पहुँचते-पहुँचते संस्थाओं के पद बेचने-ख़रीदने लग गया था और साथ ही बीच-बीच में दो एक क़त्ल-वत्ल, अट्ठाईस की उम्र में वह एक ताक़तवर राजनीतिक गिरोह का नेता था और तीस की उम्र में तो जैसे विख्यात सीलियन वार्ड का निर्विरोध नेता था ही। पाँच साल बाद वह मजिस्ट्रेट हो गया था और चालीस की उम्र में सेनेट के अन्दर दाख़िल हुआ। वह शहर के दस हज़ार लोगों को नाम से और और भी बीस हज़ार लोगों को शकल से पहचानता था। जिन लोगों पर उसके एहसान थे उनकी फेहरिस्त में उसके कट्टर से-कट्टर दुश्मन भी थे और जहाँ एक ओर उसने कभी यह समझने की भूल नहीं की कि उसके सहकर्मियों में कोई ईमानदार आदमी भी है, वहाँ दूसरी ओर उसने कभी उससे भी बड़ी भूल यह नहीं की कि पहले ही से बेईमान को बेईमान मान कर बैठ जाये।

उसका वज़न, आकार, सब कुछ उसके पद के अनुरूप ही था। उसने कभी स्त्रियों पर विश्वास नहीं किया था और न उसके देखने में यही आया था कि उसके मित्रों और सहयोगियों को स्त्रियों से कुछ खास लाभ पहुँचा हो। उसकी अपनी कमज़ोरी थी खाना और अपने जीवन के इतने सफल बरसों में उसने चर्बी की जो मोटी मोटी तहें इकट्ठा कर ली थीं उनसे वह न सिर्फ देखने में बहुत रोबीला हो गया था बल्कि इसके साथ ही साथ उसी चर्बी की वजह से वह उन थोड़े से रोमनों की कोटि में आ गया था जिन्हें कभी किसी ने उनके चोग़ों के बिना देखा ही न था, जो हमेशा अपने चोग़ों की तहों में अच्छी तरह लिपटकर बाहर निकलते थे। ट्यूनिक पहन कर लेण्टेलस ग्रैकस भला न मालूम होता था। हाँ चोग़ा पहन कर वह ज़रूर रोम के वैभव और रोम के ऊँचे चारित्रिक गुणों का प्रतीक मालूम होता था। उसका तीन सौ पौण्ड वज़न अपने ऊपर उसके भारी-से गंजे सिर का बोझ सँभाले था, जो गर्दन और गले पर की चर्बी के कारण ऐसा लगता था कि जैसे उसको बड़ी मज़बूती से चर्बी के उस घेरे के बीच बिठाला गया हो। उसकी आवाज़ भारी और फटी हुई थी, उसकी मुस्कराहट बड़ी दिलचस्प थी और उसकी छोटी-छोटी, खुशी से नाचती हुई नीली-नीली आँखें गोश्त की उन तहों के भीतर से झाँकती नज़र आती थीं। और उसकी त्वचा का रंग वैसा ही गुलाबी था जैसा कि एक नन्हें बच्चे का होता है।

ग्रैकस वास्तव में जीवन से उतना निराश या जीवन के प्रति उतना कठोर न था पर बातें ग्रैकस को सब मालूम थीं। रोमन समाज में शक्ति प्राप्त करने का नुस्ख़ा कभी उसके लिए रहस्य की चीज़ न रही थी और सिसेरो को बड़े भारी-भरकम ढंग से उस चीज़ की ओर बढ़ते देखकर जिसे वह सबसे अन्तिम और सबसे महत्वपूर्ण सत्य समझता था, ग्रैकस को मन ही मन हँसी आती

थी। जब ऐंटोनियस केयस ने सिसेरो के बारे में उसकी राय पूछी तो ग्रैकस ने संक्षेप में उत्तर दिया—छोकरा है।

ऐण्टोनियस केयस के संग ग्रैकस के बेहतरीन ताल्लुकात थे जैसे कि और भी कई बड़े बड़े सामन्तों से थे। आभिजात्य उसके समीप एक बड़ा रहस्य था, अकेला रहस्य, वह अकेली चीज़ जिसकी पूजा ग्रैकस करता था। वह अभिजात वर्ग के लोगों को पसन्द करता था, उनसे स्पृहा करता था और एक विशेष क्षेत्र के भीतर ही भीतर उनसे घृणा करता था क्योंकि उन सबको मूर्ख समझता था और कभी वह इस बात पर से अपना ध्यान नहीं हटा सका कि वे लोग अपने कुल और अपनी सामाजिक स्थिति से कितना थोड़ा लाभ उठाते हैं। तब भी वह उनसे अपने सम्बन्ध बनाये रखने और दृढ़तर करने के लिए यत्न किया करता था और जब उसे विला सलारिया जैसी किसी शानदार हवेली से निमन्त्रण मिलता तो वह गर्व और आनन्द से भर उठता। वह झूठी शान न दिखलाता और इस बात की कोशिश न करता कि लोग उसे भी अभिजात कुल का समझें। वह उनकी साफ़-सुथरी, ख़ूबसूरती से तराशी हुई लैटिन ज़बान न बोलता था बल्कि वह सीधी-सादी ज़बान बोलता था जो कि मध्य वर्ग के लोग बोला करते थे और न उसने कभी खुद अपनी कोई जागीर खड़ी करने की कोशिश की, गोकि ऐसा वह कर सकता था क्योंकि पैसों की उसे कोई कमी न थी। जहाँ तक उन जागीरदारों की बात थी, वे उसकी व्यावहारिकता के प्रशंसक थे और यह बात उन्हें पसन्द थी कि इस आदमी से उन्हें अपने काम की बहुत सी बातें मालूम हो जाती थीं; और उसके भारी-भरकम डील-डौल से भी उन्हें बहुत आश्वासन मिलता था। ऐण्टोनियस केयस इसलिए ग्रैकस को पसन्द करता था कि ग्रैकस एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने निर्णय करते समय कभी नैतिकता आदि के झगड़ों में न पड़ता था और इसीलिए ऐण्टोनियस केयस अक्सर ग्रैकस के बारे में कहा करता था कि उसने जितने लोगों को जाना है उनमें एक वही पूरी तरह ईमानदार आदमी है।

आज शाम को ग्रैकस अपने सामने होनेवाली हर चीज़ में पूरी पूरी दिलचस्पी ले रहा था। वह हर चीज़ को तौल रहा था, हर चीज़ का मूल्यांकन कर रहा था मगर कोई निर्णय नहीं दे रहा था। केयस के लिए उसके मन में केवल घृणा थी। उस महान् और वैभवशाली सेनापति क्रैसस को देखकर उसे बड़ा मज़ा आ रहा था और जहाँ तक सिसेरो की बात है तो उसके बारे में तो उसने अपने मेज़बान से कहा भी कि इस आदमी में महानता छोड़कर और सब कुछ है। मैं सोचता हूँ कि अगर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में उसे इस बात से सहायता मिले तो वह अपनी माँ का गला भी काट देगा।

—मगर सिसेरो का लक्ष्य इतना महत्वपूर्ण तो नहीं है!

—यही तो बात है। और इसीलिए वह प्रायः सभी चीजों में असफल रहेगा। चूँकि वह आदमी प्रशंसा के योग्य नहीं है इसलिए उससे भय खाने की भी कोई ज़रूरत नहीं है।

ग्रैकस ने यह एक बड़ी गहरी बात ऐण्टोनियस केयस से कह दी थी क्योंकि स्वयं केयस प्रशंसा के योग्य व्यक्ति था, यद्यपि उसकी यौन प्रवृत्तियाँ और आचरण अब भी बारह बरस के लड़के जैसे थे। ग्रैकस इस बात को अपने तईं मानने के लिए तैयार था कि जिस ज़मीन पर वह खड़ा था वह दलदल में तब्दील होती जा रही थी। उसकी दुनिया टूट-फूट रही थी, बिखर रही थी लेकिन चूँकि टूटने-फूटने और बिखरने की यह प्रक्रिया अत्यन्त धीमी थी और चूँकि स्वयं वह भी अमृत की घरिया पीकर नहीं आया था इसलिए खुद अपने आपको धोखा देने में उसे कोई दिलचस्पी न थी। उसके सामने जो कुछ हो रहा था उसको वह बिना किसी एक पक्ष का साथ दिये निर्विकार भाव से देख रहा था; उसका मानसिक गठन जिस प्रकार का था उसमें उसके लिए किसी का पक्ष लेने की कोई ज़रूरत न थी।

आज की इस शाम वह घर के दूसरे तमाम लोगों के सो जाने के बाद भी जागता पड़ा था। उसे बहुत थोड़ी नींद आती थी और वह भी बहुत कच्ची और इसलिए उसने उस दूधिया चाँदनी में मैदान का चक्कर लगाने की सोची। अगर किसी ने उससे पूछा होता तो उसने काफ़ी ठीक ठीक रिपोर्ट इस बात की दी होती कि उस शाम को कौन किसके साथ सोया; मगर यह सब कुछ उसे अनायास ही दिख गया था, उसने कुछ ख़ास ताक-झाँक नहीं की थी और न उसके मन में किसी प्रकार का कोई आक्रोश था। यह रोम है। ऐसी बातों के लिए जिसके मन में आक्रोश हो उसे मूर्ख समझना चाहिए।

जब वह टहल रहा था तभी उसने जूलिया को पत्थर की एक बेंच पर बैठे देखा। उस समय रात को, चाँदनी की उस रोशनी में जूलिया का रूप बहुत करुण और उदास दिखायी दे रहा था; वह अपनी अपूर्णता के विचार से बड़ी उद्विग्न और भयभीत थी और ख़ास कर यह सोच कर कि किस तरह वह बुरे माल की तरह अस्वीकार कर दी गयी थी। ग्रैकस उसकी ओर मुड़ा।

उसने जूलिया से कहा—आज रात हम दोनों। बड़ी खूबसूरत रात है, है न जूलिया?

—अगर तुम इसे खूबसूरत समझते हो।

—और तुम नहीं समझतीं जूलिया? उसने अपने चोग़े को ठीक किया। तुम्हारी इजाज़त हो तो मैं भी ज़रा देर यहीं बैठ जाऊँ?

—बैठो, बैठो।

वह थोड़ी देर तक शान्त बैठा रहा और उसका मन उन मैदानों के

चाँदनी में नहाये हुए सौन्दर्य का रस हलके-हलके लेता रहा, झाड़ियों और सदाबहार की क्यारियों के बीच से उठता हुआ वह बड़ा सफ़ेद मकान, वह छत, वह फ़व्वारे, यहाँ-वहाँ मूर्तियों की वह हल्की पीली सी झलक, वे लताकुन्ज और उनकी हल्के गुलाबी या गहरे काले रंग के संगमरमर की खूबसूरत बेन्चें। रोम ने कितने सौन्दर्य की व्यवस्था कर ली थी! अन्त में उसने कहा—ऐसा लगता है जूलिया कि इससे हमारा सन्तोष होना चाहिए।

—हाँ, लगता तो ऐसा ही है।

वह उसके पति का मित्र और अतिथि था।—रोमन होना बड़े गौरव की बात है—उसने कहा।

—तुम जब मेरे साथ होते हो तभी इस तरह की बेवकूफ़ी से भरी बेसिर-पैर की बातें करते हो—जूलिया ने धीरे से उत्तर दिया।

—सच!

—सच, मैं तो ऐसा ही सोचती हूँ। बताओ, वारिनिया की फिर कभी कोई ख़बर मिली?

—वारिनिया?

—क्या कभी ऐसा होता है कि बिना किसी बात को कम से कम पाँच बार अपने दिमाग़ में घुमाये-फिराये तुम कोई जवाब देते हो? देखो मैं तुम्हारे संग बहुत चतुर बनने की कोशिश नहीं कर रही हूँ।—उसने अपना हाथ उसके भालुओं जैसे भारी-भारी पंजों पर रख दिया।—मैं चाहूँ भी तो नहीं कर सकती। वारिनिया स्पार्टकस की पत्नी थी।

—हाँ, मुझे उसकी ख़बर मिली है। अगर मुझसे पूछो तो सच बात यह है कि तुम लोगों के सिर पर स्पार्टकस का भूत सवार हो गया है। आज रात मैंने स्पार्टकस की चर्चा के अलावा दूसरा कुछ शायद ही सुना हो।

—वह और बात है मगर इतना ज़रूर है कि स्पार्टकस ने विला सलारिया को बख़्श दिया। मैं नहीं जानती कि मुझे उसका कृतज्ञ होना चाहिये या नहीं? हो सकता है कि इसका कारण दण्ड के वे प्रतीक हों। मैं अब तक बाहर सड़क पर नहीं निकली हूँ। क्या बड़े भयानक हैं वे सलीब?

—भयानक? मैंने तो इसके बारे में शायद बहुत सोचा भी नहीं। वे हैं, बस और क्या। जान बहुत सस्ती है और आज कल तो गुलाम मिट्टी के मोल बिक रहे हैं, कोई उन्हें नहीं पूछता। तुमने मुझसे वारिनिया के बारे में क्यों पूछा?

—मैं सोचने की कोशिश कर रही हूँ कि वह कौन है जिससे मुझे ईर्ष्या है। मेरा ख़याल है कि मैं उससे ईर्ष्या करती हूँ।

—सच कहती हो जूलिया? वह तो एक बर्बर गुलाम छोकरी है। तुम

कहो तो मैं कल उसकी जैसी एक दर्जन छोकरियाँ बाज़ार से उठवा कर यहाँ भेज दूँ ?

—तुम कभी किसी चीज़ के बारे में गम्भीरता से नहीं सोचते, कि मैं झूठ कहती हूँ ग्रैकस ?

—इसमें गम्भीरता से सोचने की कौन-सी बात है। मैं तो समझता हूँ कि ऐसी कोई बात नहीं। तुम क्यों उससे ईर्ष्या करती हो ?

—क्योंकि मैं अपने आप से घृणा करती हूँ।

—यह तो बड़े पेंच की बात है, मेरी समझ में नहीं आती—ग्रैकस ने अपनी भारी आवाज़ में कहा—तुम्हारी उस गुलाम शाहजादी की असल शकल क्या है, यह तुमने कभी सोचा है—गन्दी, हाथ से नाक पोंछती हुई, खो-खो करके थूकती हुई, नाखून गन्दे और टेढ़े मेढ़े टूटे हुए, चेहरे पर मुँहासे ही मुँहासे ! यह है उसकी शकल। अब भी तुम उससे ईर्ष्या करती हो ?

—वह क्या ऐसी ही थी ?

ग्रैकस हँसा—कौन जाने ? राजनीति तो झूठ का नाम है जूलिया। और जिसे हम इतिहास कहते हैं वह भी तो इसी झूठ की क़लमबन्दी है। अगर कल तुम बाहर निकल कर सड़क पर जाओ और उन सलीबों को देखो तो तुम्हें स्पार्टकस के सम्बन्ध की अकेली सच्चाई दीख जायगी। मौत। और कुछ नहीं। और सब कुछ झूठ है, बनावट है। मैं जानता हूँ।

—मैं अपने गुलामों को देखती हूँ।

—और तुम स्पार्टकस को नहीं देखतीं ? ज़रूर-ज़रूर। अपने मन को अब और त्रास देना बन्द करो जूलिया। मैं उम्र में तुमसे बड़ा हूँ। तुम्हें सलाह देना मैं अपना हक़ समझता हूँ। चाहे फिर मुझे उस सिलसिले में उन बातों में भी हस्तक्षेप करना पड़े जिनमें दिलचस्पी रखने का मुझे कोई हक़ नहीं है और हो सकता है तुम्हें यह बात बुरी भी लगे। अपने गुलामों की कोठरियों में से किसी भी एक तगडे जवान को ले लो—

—इसे बन्द करो ग्रैकस !

—और वह भी तो कि एक तरह से स्पार्टकस ही है।

वह अब रो रही थी। ग्रैकस अपने वर्ग की कम ही स्त्रियों को रोते देखता था इसलिये जूलिया को रोते देखकर उसे एकाएक बड़ी बौखलाहट-सी मालूम हुई और न जाने कैसा लगा। उसने उससे पूछना शुरू किया कि कहीं उससे तो कोई ख़ता नहीं हो गयी। उसने जो कुछ कहा था उसमें ऐसी अपमानजनक कोई ख़ास बात न थी मगर यह ख़ता क्या उसकी थी ?

—नहीं-नहीं ग्रैकस, ऐसी बात दिल में न लाओ। तुम मेरे गिनती के दोस्तों में से एक हो और देखो मेरी बेवकूफ़ी के कारण मुझे छोड़ न देना।

उसने आँसू पोंछ लिये और ग्रैकस को वहीं छोड़कर उसकी इज़ाजत लेकर चली गयी। उसने कहा—मैं बहुत थकी हुई हूँ। मेरे संग मत आओ।

२

सिसेरो की भाँति ग्रैकस को भी इतिहास की चेतना थी; दोनों में एक बड़ा अन्तर यह था कि ग्रैकस को इस सम्बन्ध में कोई दिमाग़ी उलझाव न था कि उस इतिहास में स्वयं उसकी कौन-सी जगह और क्या भूमिका है; और इसलिए वह बहुत-सी चीज़ों को सिसेरो की अपेक्षा कहीं ज़्यादा सफ़ाई से देख पाता था। इस समय वह इटली की उस खुशगवार और मन को मोहनेवाली रात में अकेले बैठा हुआ एक रोमन पेट्रीशियन महिला के बारे में सोच रहा था जिसे एक बर्बर गुलाम स्त्री से ईर्ष्या थी और यह चीज़ उसे बड़ी विचित्र जान पड़ रही थी। पहले तो उसने ग़ौर किया कि जूलिया सच बात कह रही है या नहीं और फिर निश्चय किया कि बात वह सच ही कह रही है। किसी कारण से जूलिया के अपने जीवन के दर्द भरे नाटक पर वारिनिया की ज़िन्दगी की रोशनी पड़ती थी और उस रोशनी में जूलिया की ज़िन्दगी का दर्द और भी उजागर होकर सामने आ जाता था—और यह सोचते-सोचते ग्रैकस के मन में विचार आया कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि स्वयं उसके अपने जीवन का अर्थ भी इसी प्रकार ऐपियन मार्ग के दोनों ओर खड़े हुए उन अनन्त सलीबों के भीतर छिपा हुआ हो। ग्रैकस को नैतिकता की कोई चिन्ता न थी; वह अपने राष्ट्र के लोगों को जानता था और रोम की कुल-वधुओं और रोम के परिवारों के सम्बन्ध में जो अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित थीं उनका उसके ऊपर कोई असर न था। मगर पता नहीं क्यों जूलिया ने जो कुछ कहा था उससे उसका मन बहुत उद्विग्न हो गया था और वह सवाल उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था।

जवाब उसे मिला, चेतना की एक तेज़ सी झलक में, जैसे कौंधा लपके, और ग्रैकस को लगा कि उसका शरीर सुन्न पड़ गया है और वह ऐसा काँपने लगा जैसा कि जीवन में शायद पहले कभी नहीं काँपा था; और उसका मन मृत्यु के भय से और मृत्यु के संग आनेवाली अस्तित्वहीनता के उस भयानक सूचीभेद्य अन्धकार के भय से भर उठा क्योंकि वह उत्तर उसके उन क्रूर विश्वासों को डिगा गया जिन पर वह टिका हुआ था और वहाँ पत्थर की उस बेन्च पर बैठे हुए उसने अपने आप को बिलकुल अकेला और दीन-हीन अनुभव किया, एक मोटा, तुन्दिल, बुड्ढा आदमी जिसका व्यक्तिगत अन्त एकाएक इतिहास की धाराओं के उद्दाम वेग के साथ जुड़ गया था।

उसने इस चीज़ को साफ़-साफ़ देखा। संसार में यह जो चीज़ अभी इतने

हाल में आयी थी वह एक ऐसा पूरा समाज था जो गुलामों की पीठ पर खड़ा था और उस समाज से जो मिली-जुली आवाज़ निकलती थी वह सनसनाते हुए कोड़ों का संगीत था। उसने उन लोगों के जीवन के साथ क्या किया जिनके हाथ में कोड़ा था? जूलिया का क्या मतलब है? खुद उसने, ग्रैकस ने, कभी शादी न की थी; उसकी आज की इस समझ के एक बीजाणु ने उसे विवाह करने से रोका था इसलिए वह औरतों को ख़रीदता था और जब उसे रखेलों की ज़रूरत होती थी तो ये रखेलें उसके घर में पहुँच जाती थीं। मगर ऐण्टोनियस केयस के पास भी तो रखेलों की एक अस्तबल थी, जैसी कि उसकी जान-पहचान के हर कुलीन आदमी के पास थी जो सब उसी तरह काफ़ी संख्या में अपने पास औरतें रखते थे जैसे कोई घोड़े रखता है या कुत्ते रखता है और उनकी बीवियाँ भी इस बात को जानती थीं और स्वीकार करती थीं और पुरुष गुलामों के साथ मिलकर हिसाब-किताब बराबर कर देती थीं। यह केवल व्यभिचार की बात न थी, वह तो बड़ी मामूली बात है, बल्कि एक ऐसे राक्षस की बात थी जिसने सारी दुनिया को उलटकर रख दिया था; और यह सब लोग जो एक रात के लिए विला सलारिया में इकट्ठा हुए थे, इन सब पर स्पार्टकस भूत बन कर छाया हुआ था क्योंकि स्पार्टकस वह सब था जो वे नहीं थे। सिसेरो की समझ में भले यह बात न आये कि इस रहस्यपूर्ण गुलाम की शक्ति क्या है मगर वह, ग्रैकस, इस बात को समझता है। घर और परिवार और इज्जत और शराफ़त और नेकी और जो कुछ भी अच्छा था और पवित्र था उसके मालिक गुलाम थे और वही उसकी रक्षा कर रहे थे—इसलिए नहीं कि वे अच्छे और पवित्र थे बल्कि इसलिए कि जो कुछ भी पवित्र था सब उनके मालिकों ने उन्हीं के हवाले कर दिया था।

जैसे कि स्पार्टकस को आगे आनेवाली वस्तुओं की अन्तर्दृष्टि मिलती थी—स्वयं उसके भीतर से निकलनेवाली अन्तर्दृष्टि—उसी तरह ग्रैकस को भी भविष्य का चित्र अपने सामने उपस्थित दीख पड़ा और भविष्य के अन्दर उसने जो कुछ देखा उससे वह घबरा गया और डर के मारे सुन्न पड़ गया। वह उठा, अपने चोग़े को उसने संभाला और भारी-भारी क़दमों से अपने कमरे और बिस्तर की तरफ़ बढ़ा।

मगर उसे आसानी से नींद न आयी। जूलिया की इच्छा को उसने अपना लिया और एक छोटे से लड़के की तरह अपने अकेलेपन में किसी एक साथी के लिए उसका मन ख़ामोश और खुश्क आँसू गिराने लगा और एक छोटे से लड़के की तरह उसने अपने मन को भरमाना चाहा कि जैसे वह गुलाम लड़की वारिनिया उसके बिस्तर पर सोयी हुई है। उसके मन की भीति ने सच्चरित्रता की करुण चाह को शक्ति पहुँचायी। उसके मोटे-मोटे चर्बीदार हाथों ने बिस्तर

की चादर पर किसी प्रेत को थपथपाया। घण्टे गुज़रते गये और वह अपनी स्मृतियों को लिये वहीं पड़ा रहा। वे सब स्पार्टकस से नफ़रत करते थे। यह घर स्पार्टकस से भरा हुआ था; कोई भी उसके रूप-रंग, आचार-विचार या तौर-तरीक़े को न जानता था मगर तब भी यह घर उसकी उपस्थिति से भरा हुआ था और रोम उसकी उपस्थिति से भरा हुआ था। यह एक सरासर झूठी और कल्पित बात थी कि ग्रैकस के मन में यह नफ़रत न थी। इसके बिलकुल विपरीत, उसकी नफ़रत, जिसे वह हमेशा इतनी होशियारी से छिपाये रखता था, उनकी नफ़रत से ज़्यादा हिंस्र, ज़्यादा तीक्ष्ण और ज़्यादा गहरी थी।

वह जैसे-जैसे अपनी स्मृतियों से लड़-झगड़ रहा था वैसे-वैसे उसकी स्मृतियों ने रूप, रंग, आकार ग्रहण किया और वास्तविकता बन गयीं। उसे याद आया कि कैसे वह सेनेट में बैठा हुआ था—और कभी ऐसा न होता था कि सेनेट के कक्ष में बैठने के समय उसे उन महान अभिजातवर्गीय लोगों के संग बैठने के अपने अभिमान पर क्रोध न आया हो—जब कापुआ से यह ख़बर आयी कि लेण्टुलस बाटियाटस के स्कूल में ग्लैडिएटरों ने विद्रोह कर दिया है और यह विद्रोह आसपास के देहातों में फैल रहा है। उसे भय की उस लहर की याद आयी जो सारे सेनेट में फैल गयी थी और फिर कैसे वे लोग बहुत-सी घबरायी हुई बत्तख़ों की तरह चखचख करने लगे थे, वे सब के सब एक साथ बात कर रहे थे, वे सब के सब अजीब-अजीब डरी और घबरायी हुई बातें कर रहे थे और यह सब केवल इसलिए कि मुट्ठी भर ग्लैडिएटरों ने अपने उस्तादों को मार डाला था। उसे याद आयी कि उन लोगों के प्रति उसके मन में कितनी घृणा थी। उसे याद आया कि कैसे वह उठा, उसने अपने चोग़े को संभाला और अपने ख़ास तरीक़े से उसको अपने कन्धे पर फेंका और गरजकर अपने उन महान् सहयोगियों से बोला—सज्जनो सज्जनो, आप अपने आप को भूल रहे हैं।

उन्होंने अपनी चख़चख़ बन्द कर दी और उसकी ओर मुड़े।

—सज्जनो, इस वक़्त हमारे सामने मुठी भर ज़लील गन्दे बूचड़ गुलामों का जुर्म है। हम किसी बर्बर आक्रमण का सामना नहीं कर रहे हैं। लेकिन अगर ऐसा भी हो, सज्जनो, तो मैं तो यही समझता हूँ कि उस स्थिति में भी सेनेट का आचरण इससे कुछ भिन्न होना चाहिए। मैं तो समझता हूँ कि हमारी भी कुछ मर्यादा है।

वे सब उस पर क्रुद्ध थे मगर वह उन पर क्रुद्ध था। उसने यह अपने अभिमान की एक बात बना ली थी कि कभी गुस्सा न होगा, अपने मिज़ाज को हाथ से जाने न देगा। मगर इस बार तो ऐसा ही हुआ था और वह जो

कि एक साधारण आदमी था, छोटे कुल में पैदा हुआ था और पला था उसने सारे संसार की सबसे महान् संस्था का अपमान किया था और उसे नीचा दिखाया था। जहन्नुम में जाय! उसने अपने मन में कहा और अभी जब कि वे लोग अपने आत्मसम्मान की रक्षा के बारे में बड़ी-बड़ी बातें कर ही रहे थे और उनकी बातें खुद ग्रैकस के कानों में गूँज रही थीं तभी वह उठा और सेनेट के बाहर आ गया और अपने घर चला गया।

वह दिन सदा उसके साथ रहता था। उस दिन का हर मिनट उसके साथ रहता था। उसे पहले डर मालूम हुआ था। उसने आचरण के अपने पवित्र नियमों का स्वयं उल्लंघन किया था। गुस्से में उसने अपनी सुध-बुध खो दी थी। उसने लोगों को अपना शत्रु बनाया था। वह अपने प्रिय रोम की सड़कों पर घूम रहा था और उसने जो कुछ कर डाला था उसका भय उसके अन्दर भरा हुआ था। मगर उस भय के साथ ही मिली हुई थी अपने उन सहयोगियों के प्रति घृणा और स्वयं अपने प्रति घृणा, अपने प्रति घृणा इसलिए कि वह सेनेट के प्रति अपने भय के ऊपर नहीं उठ पा रहा था और सेनेट की कुर्सियों पर बैठे हुए उन बेवक़ूफ़ों के प्रति संस्कार बन कर चले आते हुए आदर भाव से भी उसे छुटकारा नहीं मिल रहा था।

उस समय एक बार उसे अपने प्रिय रोम के रूप-गन्ध-ध्वनि किसी की चेतना न रही। क्रैसस शहर में ही पैदा हुआ था और पला था और यह शहर ही असल में उसके रहने की जगह थी। वह चीज़ उसका अंग थी और वह स्वयं उसका अंग था और उसके मन में दूर के उन क्षितिजों और हरी-भरी घाटियों और कल-कल करके बहते हुए पहाड़ी नालों के लिए असीम उपेक्षा थी। उसने रोम की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों और गन्दे नालों के बीच चलना और दौड़ना और लड़ना और झगड़ना सीखा था। अपने बचपन में वह उन बड़े-बड़े किराये के मकानों की छतों पर जिनका कहीं ओर-छोर दिखायी न देता था, बकरी की तरह चढ़ जाया करता था। जलते हुए कोयले की गन्ध, जो शहर भर में फैली रहती थी, उसके लिए सबसे मीठी सुगन्ध थी। उसके जीवन का यह एक ऐसा क्षेत्र था जिसमें जीवन से हताशा या वितृष्णा कभी विजयी न हुई थी। बाज़ार की उन सँकरी-सँकरी सड़कों के बीच होकर जाना, जहाँ ठेलों और छोटी-मोटी दूकानों की क़तारें खड़ी थीं, जिनमें दुनिया भर की चीज़ें दिखायी देती थीं और बिकती थीं, उसके लिए हमेशा एक नये रोमांचकारी आनन्द की चीज़ थी। शहर के आधे लोग उसको शक्ल से पहचानते थे। वह जिधर से भी निकल जाता, 'अरे ग्रैकस' कहनेवाले लोग मिल जाते और वे बिना किसी शिष्टाचार या घबराहट के उससे मिलते और तमाम खोमचेवाले और मोची और भिखमंगे और आवारे और शराब

का ठेला चलानेवाले और मकान बनानेवाले राजगीर और बढ़ई सब उसे पसन्द करते थे क्योंकि वह उन्हीं में से एक था और लड़-झगड़ कर नोच खसोट कर के ऊपर चढ़ा था। वे उसे पसन्द करते थे क्योंकि जब वह वोट खरीदता था तो उनके ऊँचे से ऊँचे दाम देता था। वे उसको पसन्द करते थे क्योंकि वह झूठी शान नहीं दिखलाता था और पालकी में चढ़कर चलने की अपेक्षा पैदल चलना पसन्द करता था और क्योंकि किसी पुराने दोस्त से मिलकर दो गाल बात करने के लिए हमेशा उसके पास समय रहता था। इस बात से कोई फ़र्क न पड़ता था कि वह उनकी बढ़ती हुई बदहाली और नाउम्मीदी का कोई इलाज न बतला पाता था और दुनिया का रंग-ढंग ऐसा था कि गुलाम उन्हें आवारा बनने पर और सरकारी दान के भरोसे जीने पर मजबूर कर रहे थे। उन्हें किसी इलाज का पता न था। और इसके बदले में ग्रैकस भी उनकी दुनिया को प्यार करता था, उनकी वह अँधेरे की दुनिया जिसमें ऊँचे-ऊँचे मकान उन गन्दी गलियों के ऊपर एक दूसरे से मिल से जाते थे और शहतीरें लगाकर उन्हें अलग अलग खड़ा किया जाता था, वह सड़कों की दुनिया, संसार के सबसे बड़े शहर की शोरगुल से भरी हुई गन्दी ज़लील सड़कें।

मगर आज इस रोज़ जिसकी स्मृति उसे इतनी सजीव थी, उसे इन सब चीज़ों से कोई सरोकार न था और न उनके लिए उसके पास निगाह ही थी। वह लोगों की सलाम-बन्दगी पर ध्यान दिये बग़ैर सड़कों पर घूमता रहा। उसने दूकानों से कुछ भी नहीं खरीदा। यहाँ तक कि बहुत से ठेलों पर पकते हुए ऐसे-ऐसे लज़ीज़ टुकड़े भी उसे अपनी तरफ़ न खींच सके जैसे तला हुआ सुअर का गोश्त, भरा हुआ डर्मा और सॉसेज। आम तौर पर सड़क पर पकती हुई अच्छी-अच्छी चीजों को देखकर अपने ऊपर उसका वश न रहता था और इन अच्छी चीज़ों में जो चीज़ें उसे सबसे ज़्यादा पसन्द थीं वे थे शहर के बने केक और भुनी हुई मछली और सुखायी और नमक लगायी हुई सार्डीन और सेब का मुरब्बा और हिरन का गोश्त; मगर आज के रोज़ इन चीज़ों पर उसका कोई ध्यान न था और वह अपने मन के अन्धकार में डूबा-डूबा अपने घर लौट आया।

ग्रैकस क़रीब-क़रीब क्रैसस के बराबर ही अमीर था मगर शहर के नये हिस्से में, नदी के किनारे-किनारे बने हुए बाग़-बाग़ीचों के बीच तैयार होते हुए तमाम बंगलों में से उसने न तो अपने लिए एक बंगला खरीदा और न बनवाया। उसे अपने पुराने वार्ड के पुराने मकान की नीचे की मंज़िल ही ज़्यादा पसन्द थी और जो भी उससे मिलना चाहे उसके लिए उसके दरवाजे हमेशा खुले रहते थे। यह बतलाने की ज़रूरत है कि बहुत से अच्छे

खाते-पीते परिवार इन्हीं नीचे की मंजिलों में रहते थे। किरायेदारों के लिए बने मकानों में यह सबसे अच्छे मकान थे और किराये के लिए बने हुए इन रोमन मकानों में आदमी जैसे-जैसे उनकी कमज़ोर और पुरानी सीढ़ियों पर होकर ऊपर की मंज़िलों पर जाता था वैसे-वैसे दाम कम होता जाता था और मुसीबत बढ़ती जाती थी। अक्सर यह होता था कि बस नीचे की दो मंज़िलों में नल और टट्टी और नहाने वग़ैरह की जैसी-तैसी सुविधा मिलती थी; मगर उस पुराने क़बीलाई समाज को बीते अभी इतने दिन न हुए थे कि ग़रीब और अमीर दोनों एक दूसरे से पूरी तरह पृथक् हो गये हों और इसलिए यह देखने में आता था कि बहुत से धनाढ्य व्यापारियों और बैंकरों के सिर के ऊपर सात मंज़िल तक ग़रीबी और मुफ़लिसी का एक अच्छा ख़ासा अड्डा रहता था।

इस तरह ग्रैकस को याद आया कि कैसे उस रोज़ वह बिना किसी से हँसे-बोले या सलाम-बन्दगी किये अपने घर वापिस आ गया था और अपने गुलामों को यह कुछ अजीब-सा आदेश देते हुए कि कोई उसे छेड़े नहीं वह अपने दफ़्तर में चला गया था। उसने अपने लिए जितने गुलाम रख छोड़े थे वे सब की सब औरतें थीं; इस चीज़ पर उसका आग्रह था और उसे यह मंज़ूर नहीं था कि कोई मर्द उसके मकान में रहे; और न इस सिलसिले में वह किसी किस्म की ज़्यादती ही करता था जैसा कि उसके बहुत से दोस्त करते थे। उसकी तमाम ज़रूरतों के लिए चौदह औरतें काफ़ी थीं। वह अलग से कोई हरम नहीं रखता था जैसा कि बहुत से कुँआरे लोग अक्सर रखा करते थे; उन गुलाम औरतों में से जो उसे पसंद आती थीं उन्हीं को वह जब-तब ज़रूरत पड़ने पर अपने बिस्तर की संगिनी के रूप में ले लेता था और चूँकि उसे यह नहीं पसन्द था कि उसके घर में किसी क़िस्म की झंझटें हों, इसलिए जब उन औरतों में से किसी को गर्भ रह जाता था तो वह उसे किसी जागीर-दार के हाथ बेच देता था। वह तर्क यह देता था कि बच्चों के लिए देहात में पलना और बढ़ना ज़्यादा अच्छा होता है और अपनी इस हरकत में उसे न तो कोई अनैतिकता दिखायी देती थी और न कोई क्रूरता।

उन औरतों में उसकी कोई खास चहेती न थी—और उसकी वजह यही थी कि वह किसी भी औरत के संग नितान्त क्षणिक सम्बन्ध रखने से अधिक कुछ न करता था—और वह अक्सर कहा करता था कि उसकी गिरस्ती बहुतों से ज़्यादा क़ायदे की है और ज़्यादा शान्तिपूर्ण है। मगर इस वक़्त जब कि वह विला सलारिया में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था और उस दिन को याद कर रहा था, तब अपनी गिरस्ती की स्मृति में उसे कोई उल्लास न मिला, कोई गरमाहट न मिली। नैतिकता के एक मानदण्ड ने उसे अपना बन्दी बना लिया

था और अपनी ज़िन्दगी के बारे में सोचकर, अपने रहने-सहने की बात को ख़याल में लाकर उसे जैसे मितली सी आती थी। मगर इतने पर भी वह उस दिन की घटनाओं के पीछे पड़ा ही रहा। उसने अपने आपको एक ऊँचाई पर से देखा—एक मोटा, भद्दा-सा आदमी चोग़ा पहने हुए, एक खाली खाली से कमरे में जिसे कि वह अपना दफ्तर कहता है, अकेला बैठा हुआ, है और वह उस जगह पर एक घण्टे से ज़्यादा देर तक बैठा रहा होगा जब कि विघ्न पड़ा। इसके बाद दरवाज़े पर एक दस्तक।

—क्या है? उसने पूछा।

—कुछ लोग आपसे मिलने आये हैं, ग़ुलाम ने कहा।

—मैं किसी से नहीं मिलना चाहता।—वह कैसा बचपना कर रहा है!

—ये नगर-पिता हैं और सेनेट के बड़े-बड़े लोग हैं जो आपसे मिलने आये हैं।

अच्छा, तो वे लोग उससे मिलने आये हैं और इसका मतलब है कि उन्होंने उसको अपनी गोष्ठी में से बाहर नहीं निकाल फेंका है और अभी उसका सितारा एकदम डूबा नहीं। मगर यह ख़याल उसको कैसे आया कि वे लोग उसे अपनी गोष्ठी से निकाल बाहर करेंगे? यह तो मानी हुई बात थी कि वे उसके पास आयेंगे! एक बार फिर से उसकी जान में जान आयी। उसका अहंभाव लौट आया। वह उछलकर खड़ा हुआ और उसने झटके से दरवाज़े को खोल दिया और अब वह फिर वही हमेशा का जाना-पहचाना ग्रैकस था, मुस्कराता हुआ, आत्मविश्वास से भरा हुआ, निपुण।

उसने कहा—सज्जनो, मैं आपका स्वागत करता हूँ।

कमेटी में वे पाँच लोग थे। उनमें से दो राजदूत थे और बाक़ी तीन विख्यात और अत्यन्त चतुर पैट्रीशियन थे। कमेटी के ये लोग जो आये थे वह इस वक़्त की परिस्थिति की किसी खास ज़रूरत के ख़याल से उतना नहीं आये थे जितना कि राजनीतिक जीवन में ग्रैकस के हाथ से होनेवाली तोड़-फोड़ में फिर से सीमेण्ट भरने के लिए और टूटे हुए सम्बन्धों को फिर से जोड़ने के लिए। इसलिए वे बड़े याराने के ढंग से मिले और उन्होंने ग्रैकस को बुरा-भला कहा।

—क्यों ग्रैकस, क्या तुम साल भर तक इसी दिन के इन्तज़ार में बैठे थे कि कब तुम्हें मौक़ा मिले और तुम हम लोगों को ज़लील करो?

—आपसे माफ़ी माँगने की न तो मेरे पास अक्ल ही है और न मुझे उसका ढंग ही आता है—ग्रैकस ने माफ़ी माँगते हुए कहा।

—तुम्हारे पास वे दोनों चीज़ें हैं। मगर इस वक़्त उनसे हमें बहस नहीं।

उसने कुर्सियाँ मँगवायीं और वे सब लोग उसे चारों तरफ़ से घेरकर बैठ गये, पाँच वयस्क और सम्मानित लोग, अपने अच्छे-अच्छे सफ़ेद चोग़ों में

लिपटे हुए जो कि सारी दुनिया में रोमन सत्ता का प्रतीक बन गया था। उसने शराब और मिठाइयों की एक तश्तरी मँगायी। राजदूत कैस्पियस मुख-पात्र बना। उसने ग्रैकस की प्रशस्ति गायी और उसे उलझन में डाल दिया क्योंकि ग्रैकस की समझ में नहीं आ रहा था कि यह मौक़ा इतने बड़े संकट का है। उसने बहुत बार अपने राजदूत होने का स्वप्न देखा था मगर वह चीज़ उसके लिए न बनी थी, उसके पास न तो उस काम के लिए वे योग्यताएँ थीं और न वैसे पारिवारिक सम्बन्ध सूत्र ही थे। उसने अटकल लगाने की कोशिश की कि आख़िर वह कौन-सी चीज़ है जिसके पीछे यह दौड़ रहे हैं और वह केवल अनुमान लगा सका कि हो न हो इसका सम्बन्ध स्पेन से है जहाँ सेनेट—और जिसका मतलब है रोम—के विरुद्ध सर्टोरियस के नेतृत्व में होनेवाला विद्रोह सर्टोरियस और पॉम्पी के बीच सत्ता के संघर्ष में बदल गया था। इस चीज़ के बारे में ग्रैकस का अपना हिसाब-किताब था। उसे दोनों प्रतिद्वन्द्वियों से घृणा थी और उसने अपने मन में तय कर लिया था कि चुपचाप बैठा रहेगा और उन्हें आपस में लड़कर ख़त्म हो जाने का पूरा मौक़ा देगा। और वह जानता था कि उसके सामने बैठे हुए वे पाँच सज्जन भी यही चाहते हैं।

कैस्पियस ने कहा—हाँ तो देखो कापुआ का यह विद्रोह अपने भीतर बड़ी भयानक सम्भावनाएँ छिपाये हुए है।

—मेरी तो समझ में नहीं आता—ग्रैकस ने तड़ाक से जवाब दिया।

—यह देखते हुए कि गुलामों के विद्रोह से हमें कितना-कितना नुक़सान हुआ है।

—उस विद्रोह के बारे में तुम्हें क्या मालूम है?—ग्रैकस ने पहले से अधिक कोमल स्वर में पूछा—कितने गुलामों ने विद्रोह किया है? वे कौन हैं? कहाँ गये हैं? तुम्हारी परेशानी किस हद तक सच्ची है?

कैस्पियस ने एक-एक करके सभी प्रश्नों का उत्तर दिया—हम लोगों ने उनके बारे में बराबर जानकारी बनाये रक्खी है। शुरू-शुरू में तो उसमें सिर्फ़ ग्लैडिएटर थे। एक रिपोर्ट कहती है कि बस सत्तर लोग भागे। उसके बाद की एक रिपोर्ट कहती है कि दो सौ से ऊपर लोग भागे, जिसमें थ्रेसियन हैं और गॉल हैं और बहुत से काले अफ्रीकी हैं। बाद की रिपोर्टों में यह संख्या और भी बढ़ जाती है। हो सकता है कि यह घबराहट का परिणाम हो। दूसरी ओर यह भी हो सकता है कि जागीरदारियों में भी बदअमनी हुई हो। ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने बहुत काफ़ी नुकसान किया है मगर इस चीज़ के बारे में कोई तफ़सील हमारे पास नहीं है। जहाँ तक कि यह

सवाल है कि वे लोग गये कहाँ हैं तो हमें तो ऐसा मालूम होता है कि वे विसूवियस पहाड़ की ओर बढ़ रहे हैं।

ग्रैकस ने अधीरता से कहा—जब होता है तब यही कि ऐसा मालूम होता है! गाड़ी 'ऐसा मालूम होता है' के आगे कभी बढ़ती ही नहीं। कापुआ में वे सब उल्लू के पट्ठे बैठे हैं जो इसका भी ठीक-ठीक जायज़ा नहीं ले पाते कि खुद उनके आँगन में क्या हुआ है! उनके पास वहाँ पर गारद है। गारद ने इस चीज़ को चटपट क्यों नहीं ख़तम कर दिया?

कैस्पियस ने शान्त-संयत भाव से ग्रैकस को देखा—उनके पास वहाँ पर कापुआ में बस एक टुकड़ी है।

—एक टुकड़ी! इन मुट्ठी भर ग्लैडिएटरों को मारकर गिराने में क्या पूरी फ़ौज लगती है?

—मेरी ही तरह तुम भी अच्छी तरह इस बात को जानते हो कि कापुआ में क्या हुआ होगा।

—मैं जानता नहीं मगर अनुमान लगा सकता हूँ। और मेरा अनुमान है कि वहाँ के सैनिकों का जो कमाण्डर है वह उस जगह के तमाम लानिस्ता लोगों से पैसा खाता होगा और उसने टुकड़ी के सैनिकों को सभी जगहों में बाँट दिया होगा। बीस सिपाही यहाँ और एक दर्जन वहाँ, फिर शहर में भला कितने बच रहे होंगे?

—ढाई सौ। बस। ग्रैकस, नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं है कि इसने यह बदमाशी कर दी और उसने वह बदमाशी कर दी। ग्लैडिएटरों ने सैनिकों को हरा दिया और परेशानी की बात यह है ग्रैकस। हम सोचते हैं कि शहर की टुकड़ियों को फ़ौरन वहाँ भेजना चाहिए।

—कितनी?

—कम से कम छः टुकड़ियाँ—कम से कम तीन हजार सैनिक।

—कब?

—अभी इसी वक्त।

ग्रैकस ने सिर हिलाया। वह पहले भी जानता था कि ठीक यही बात होगी। उसने सोचा कि वह क्या कहना चाहता है। उससे बहुत ग़ौर से इस चीज़ के बारे में सोचा। गुलामों के मनोविज्ञान के बारे में उसे जो कुछ मालूम था और जो कुछ कि अब वह जानता था उस सब को उसने अपने दिमाग़ में बटोरा।

—नहीं, ऐसा मत करो।

उसे उनका विरोध करने की आदत थी। उन्होंने जानना चाहा कि क्यों।

—क्योंकि मुझे शहर की इन सैनिक टुकड़ियों पर विश्वास नहीं है। उन

गुलामों को फिलहाल यों ही छोड़ दो, उनसे कुछ न बोलो। उनके भीतर ही सड़न शुरू होने दो। शहर की इन टुकड़ियों को मत भेजो।

—तो फिर किसे भेजें ?

—किसी एक लीजन को वापिस बुला लो।

—स्पेन से ? और पॉम्पी ?

—जहन्नुम में जाय पॉम्पी ! अच्छा तो स्पेन को छोड़ दो, वहाँ से मत बुलाओ। सिस्-ऐल्पाइन गॉल से तीसरी लीजन को बुला लो। हड़बड़ी न करो। यह महज़ गुलाम हैं, मुट्ठी भर गुलाम। इनके किये-धरे कुछ नहीं बनेगा, तुम्हीं इन्हें आसमान पर चढ़ाये दे रहे हो....

वे लोग इसी तरह तर्क करते रहे और अपनी स्मृति में ग्रैकस ने इस तर्क को फिर से जिया और फिर वह उसके हाथ से खो गया और फिर उसने देखा कि कैसे गुलाम विद्रोह से बुरी तरह डरने के कारण उन्होंने शहर की छः टुकड़ियों को वहाँ भेजने का निर्णय कर डाला। ग्रैकस बहुत थोड़ा सोता था। वह बहुत भोर में ही उठ गया जैसी कि उसकी आदत थी, चाहे कोई समय हो, कोई स्थान हो। उसने अपना सबेरे का पानी और फल उठा लिया और उसे खाने के लिए पक्के चबूतरे पर निकल गया।

३

दिन की रोशनी आदमी के मन की भीतियों और चिन्ताओं को कम कर देती है और बहुत बार एक मरहम का और आशीष का काम करती है। बहुत बार, मगर सदा नहीं; क्योंकि कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो दिन की रोशनी का स्वागत नहीं करते। क़ैदी रात को सीने से चिपकाये रहता है क्योंकि रात उसके लिए एक लबादा है जो उसे गर्म रखता है और उसकी हिफ़ाज़त करता है और उसे आराम पहुँचाता है। मौत की सजा पाये हुए आदमी को भी दिन की रोशनी आकर कोई खुशी का सन्देश नहीं देती। मगर बहुत बार दिन की रोशनी रात की उलझनों को धो डालती है। महान् व्यक्ति हर रोज़ सबेरे अपनी महानता का चोग़ा पहन लेते हैं क्योंकि रात के वक्त तो महान् व्यक्ति भी दूसरे साधारण जनों की तरह हो जाते हैं और उनमें से कुछ बड़े घृणित काम करते हैं और कुछ रोते हैं और कुछ मौत के डर से और अपने चारों तरफ़ के अँधेरे से भी ज़्यादा घटाटोप अँधेरे के डर से दुबके-सिमटे बैठे रहते हैं। मगर सबेरे के वक्त़ वे फिर महान् व्यक्ति हो जाते हैं और चबूतरे पर अपना बर्फ़ जैसा सफेद और ताज़ा चोग़ा पहने और अपना आत्म-विश्वास और उल्लास से भरा हुआ मांसल चेहरा लिये ग्रैकस इस समय एक आदर्श

रोमन सेनेटर की तस्वीर बना हुआ था। यह बात बहुत बार कही गयी है, उस वक्त भी और बाद को भी, कि प्रजातान्त्रिक रोम के सेनेट से ज़्यादा अच्छी और समझदार और पवित्र विचारों की विधान-सभा दूसरी कोई नहीं हुई। और ग्रैकस को देख कर इस बात को मान लेने को जी चाहता था। यह बात सच थी कि वह कुलीन घर में नहीं पैदा हुआ था और उसकी रगों में बहनेवाला खून अत्यन्त संदिग्ध था मगर वह बहुत पैसेवाला था और यह उस प्रजातन्त्र का एक गुण था कि वहाँ पर आदमी को जितना उसके खानदान की तराजू पर तौला जाता था उतना ही खुद उसकी अपनी औक़ात की तराजू पर भी तौला जाता था। भगवान किसी को धन देता है यह अपने आप में उसके जन्म-जात गुणों का एक चिह्न है और कोई अगर इस बात का प्रमाण चाहे तो वह देख सकता है कि ग़रीब लोग कितनी बड़ी संख्या में हैं और अमीर कितने थोड़े हैं।

उस वक्त जब कि ग्रैकस वहाँ पर बैठा हुआ था, विला सलारिया में आये हुए दूसरे लोग भी उससे आ मिले। यह मर्दों और औरतों की एक बड़ी असाधारण टोली थी जो वहाँ पर रात भर के लिए इकट्ठा हुई थी और उन्हें यह जानकर बड़ा सुख मिलता था कि वे लोग बहुत महत्वपूर्ण और हर तरह से शानदार लोग हैं। इस विचार से उनके आपसी सम्बन्धों में बड़ी आसानी पैदा हो जाती थी और उससे यह भी पता लगता था कि ऐण्टोनियस केयस को वे कितने विश्वास की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि ऐण्टोनियस केयस कभी अपने यहाँ बेजा तरीक़े से लोगों को गडमड करने की भूल नहीं करता था। मगर रोम की देहाती ज़िन्दगी के आम एतबार से वे लोग कुछ बहुत असाधारण न थे। यह बात सच है कि उनमें दुनिया के दो सबसे अमीर लोग थे, एक नौजवान औरत थी जो कि आगे चलकर एक बहुत बड़ी वेश्या बनेगी जिसका नाम सदियों तक रोशन रहेगा और एक नौजवान था जो कि सारी ज़िन्दगी अपने हिसाब-किताब, जोड़-तोड़, षड्यन्त्र-दुरभिसन्धि के बल पर आगे आनेवाली कई सदियों तक विख्यात रहेगा और एक और भी नौजवान था जिसकी पतनशीलता ही अपने आप में एक प्रसिद्धि की चीज बन जायगी; मगर इस तरह के लोग तो किसी भी समय विला सलारिया में पाये जा सकते थे।

इस सुबह को वे लोग ग्रैकस को घेरकर बैठे हुए थे। उन लोगों में वही एक था जो चोग़ा पहने था। वही वह अचल न्यायाधीश था जो अपने सुवासित जल को लिये वहाँ पर बैठा था और एक सेब छील रहा था और कभी-कभी किसी पर बड़ी कृपा करके एकाध शब्द बोल देता था।—ये जल्दी ही स्वास्थ्य पा लेते हैं, उसने अपने मन में कहा और उन अच्छी तरह बने-सँवरे आदमियों

को और रँगी-चुँगी औरतों को देखा जिनका सुन्दर केशविन्यास बड़े निपुण हाथों से हुआ था और जिनके ओंठों की लिपस्टिक और गालों की लाली इतनी कलापूर्ण सजावट के साथ, रंगों के ऐसे सुन्दर ताल-मेल के साथ वहाँ पर बिठाली गयी थी। वे लोग इस-उस चीज़ के बारे में ग़पशप कर रहे थे और उनकी ग़पशप से पता चलता था कि वे चतुर लोग हैं और उन्होंने मन ही मन कई बार दुहरा लिया है कि उन्हें क्या कहना है। अगर वे लोग मूर्ति कला के बारे में बात करते थे तो जैसी कि उम्मीद की जा सकती थी सिसेरो एक अधिकारी की मुद्रा बना कर बैठ जाता था और कहता था :

—मैं यह यूनानियों की बातें सुनते-सुनते तंग आ गया हूँ। उन्होंने ऐसा कौन सा काम किया है जो कि मिस्रियों ने उनसे एक हज़ार साल पहले नहीं कर डाला था? दोनों ही हालतों में तुम्हें एक ख़ास तरह की पतनशीलता दिखायी देती है, कि गोया वे ऐसे लोग हों जिनमें विकास करने की या हुकूमत करने की क्षमता न हो। उनकी मूर्तिकला पर इस चीज़ की छाप है। रोमन कलाकार कम से कम यथार्थ को तो चित्रित करता है।

—मगर यथार्थ तो बहुत उबानेवाला हो सकता है, हेलेना ने आपत्ति की जो कि युवती और विदुषी और स्त्री होने के नाते उसका अधिकार था। ग्रैकस से यह उम्मीद की जाती थी कि वह कहेगा कि मैं कला के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मगर उसने अपने मन में कहा, मैं जानता हूँ मुझे क्या पसन्द है। ग्रैकस कला के बारे में बहुत कुछ जानता था। वह मिस्र की कला की वस्तुएँ खरीदता था क्योंकि उनसे उसके भीतर के कुछ तार झनझना उठते थे। कला के बारे में क्रैसस के अपने कोई दृढ़ मत न थे। यह एक बड़ी अजीब और ग़ौर करने की चीज़ है कि बहुत थोड़ी-सी बातों में ही उसके पास अपने कोई दृढ़ मत थे मगर इसके बाद भी वह एक अच्छा सेनापति था। तो भी सिसेरो ने जिस तरह अपनी बात को पाव-रत्ती सही मानकर और ज़ोर देकर कहा वह चीज़ क्रैसस को बुरी मालूम हुई। पतनशीलता के बारे में लम्बी-चौड़ी बात बघारना बहुत आसान है जब कि तुम्हें उन तथाकथित पतनशीलों से लड़ना न पड़ता हो।

ऐण्टोनियस केयस ने कहा—मैं तो ज़रूर कहूँगा कि मुझे यूनानी मूर्तिकला पसन्द है। वह सस्ती होती है और एक बार रङ्ग धुल जाने पर देखने में बड़ी अच्छी मालूम होती है। कहने की ज़रूरत नहीं कि यह पुरानी मूर्तियाँ ही हैं जिनका सब रङ्ग-वंग धुल-धुला गया है जो यहाँ-वहाँ दिखायी देती हैं मगर बाग़ीचे में वे बड़ी भली मालूम होती हैं और मुझे तो उसी रूप में पसन्द हैं।

—तब तो तुमने स्पार्टकस के भी स्मारक खरीद लिये होते, इसके पहले कि हमारे दोस्त क्रैसस ने उसको टुकड़े-टुकड़े करवा डाला—सिसेरो ने मुस्करा कर कहा।

—स्मारक ? हेलेना ने पूछा।

—उन्हें तुड़वाना पड़ा, क्रैसस ने शान्त भाव से कहा।

—कौन से स्मारक ?

सिसेरो ने कहा—अगर मैं भूल नहीं करता तो उनको नष्ट करने के आदेश पर ग्रैकस ने ही हस्ताक्षर किये थे।

ग्रैकस अपनी भारी आवाज़ में गड़गड़ाया—तुम कभी कोई भूल नहीं करते, यही कहना चाहते हो न ? तुम बिलकुल ठीक कहते हो।—उसने हेलेना को अपनी बात समझायी, ज्वालामुखी पत्थर के दो बड़े-बड़े स्मारक स्पार्टकस ने विसूवियस के पूर्वी ढाल पर खड़े करवाये थे। मैंने उन्हें देखा नहीं मगर उनको नष्ट करने के आदेश पर हस्ताक्षर जरूर किया था।

—कैसे कर सके आप ? हेलेना ने जवाब तलब किया।

—क्यों, इसमें कौन-सी बात है ? अगर गन्दगी अपना कोई स्मारक खड़ा करती है तो उसे धोना ही पड़ता है।

—देखने में कैसे थे वे ? क्लॉदिया ने पूछा।

ग्रैकस ने सिर हिलाया और यह सोचकर कुछ उदास ढङ्ग से मुस्कराया कि कैसे उन गुलामों का भूत और उनके नेता का भूत हमेशा उनके बीच में घुस आता था, बातचीत चाहे जहाँ भी क्यों न शुरू होती हो।—मैंने उन्हें देखा नहीं, मेरी जान। क्रैसस ने देखा था। उनसे पूछो।

क्रैसस ने कहा—मैं तुम्हें एक कलाकार की राय तो नहीं दे सकता मगर हाँ, देखने में ये चीज़ें ऐसी ही थीं जैसी कि होनी चाहिए। दो थीं। एक तो मेरा ख़याल है क़रीब पचास फ़ीट लम्बी एक गुलाम की मूर्ति थी। वह पैर फैला कर खड़ा हुआ था और उसकी ज़ंजीरें टूट गयी थीं और आस-पास झूल रही थीं। एक बाँह में वह एक बच्चे को उठाये और छाती से चिपकाये हुए था और दूसरे, झूलते हुए, हाथ में एक स्पेनी तलवार थी। एक तो वह थी और उसे तुम एक विराट् मूर्ति कह सकते हो। जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ, बहुत अच्छी बनी हुई थी लेकिन जैसा कि मैंने अभी कहा मैं कला का कोई पारखी नहीं हूँ। मगर यह ज़रूर है कि वह चीज़ बड़ी सादगी से बनी थी और उस आदमी और उस बच्चे को बड़े कुशल हाथों ने गढ़ा था और अपनी बारीकियों तक में वह चीज़ अत्यन्त स्वाभाविक थी, हाथ के घट्टे और ज़ंजीर की रगड़ से पैदा हुए ज़ख़्म तक उसके अन्दर नक़्श कर दिये गये थे। मुझे याद है नौजवान गैयस तानेरिया ने उस गुलाम के भारी-भारी कन्धों और उसके हाथ की उभरी हुई नसों को मुझे दिखलाया था, वे बिलकुल वैसी ही थीं जैसी कि किसी भी हल जोतनेवाले की होती हैं। तुम जानती ही हो कि स्पार्टकस के पास बहुत से यूनानी भी थे और यूनानी लोग इस चीज़ में बड़े निपुण होते

हैं। उन्हें इस चीज़ को तस्वीर में उतारने का मौक़ा नहीं मिला या शायद रङ्ग नहीं मिल सके मगर कुल मिलाकर उन्हें देखकर मुझे एथेन्स के कुछ पुराने भित्ति चित्र याद आ गये, वे जिनके रंग धुल गये हैं और मैं कैयस से सहमत हूँ कि वे वैसे ही अच्छे लगते हैं—और बहुत सस्ते भी होते हैं।

—दूसरा स्मारक इतना लम्बा न था; उसकी मूर्तियाँ ज़्यादा से ज़्यादा बीस फ़ीट ऊँची रही होंगी मगर वे भी बहुत अच्छी तरह बनायी गयी थीं। उनमें तीन ग्लैडिएटर थे, एक थ्रेसियन, एक गॉल और एक अफ्रीकी। बड़ी दिलचस्प बात है कि उस अफ्रीकी की मूर्ति काले पत्थर से गढ़ी गयी थी; दूसरी मूर्त्तियाँ सफेद थीं। वह अफ्रीकी बीच में खड़ा था, वह दूसरों से थोड़ा अधिक लम्बा था और 'दोनों हाथों से अपना त्रिशूल पकड़े हुए था। उसके एक ओर वह थ्रेसियन था जिसके हाथ में छुरा था और दूसरी ओर हाथ में तलवार लिये वह गॉल था। वह चीज़ बहुत अच्छी बनी थी और उसको देखकर साफ़ मालूम होता था कि वे लोग अभी ज़रा देर पहले तक लड़ते रहे हैं क्योंकि उनकी बाँहों और टाँगों में बहुत जगह कटा हुआ था। उनके पीछे एक औरत खड़ी थी और बड़े गर्व के साथ खड़ी थी और लोगों का कहना है कि वारिनिया को देखकर ही वह मूर्ति बनायी गयी थी। वह औरत एक हाथ में करनी और दूसरे में कुदाल लिये हुए थी। सच बात यह है कि मैं आज तक नहीं समझ सका कि उस चीज़ का क्या महत्व था ?

—वारिनिया ? ग्रैकस ने धीमे से पूछा।

—उन्हें नष्ट करने की आख़िर ऐसी क्या ज़रूरत थी। हेलेना ने पूछा।

ग्रैकस ने जवाब दिया—क्या उनके स्मारकों को खड़ा रहने दिया जा सकता है ? क्या तुम उन्हें खड़ा रहने दे सकती थीं ताकि सब लोग उनकी तरफ़ इशारा करके कहें कि यह देखो गुलामों ने यह चीज़ बनायी है ?

—रोम इतना काफ़ी शक्तिशाली था कि वह उन स्मारकों को वैसे ही छोड़ दे सकता था—हाँ, और जिसका जी चाहे उनकी तरफ़ इशारा करे, हेलेना ने कहा।

—बहुत खूब ! सिसेरो ने कहा। मगर क्रैसस सोचने लगा कि उस वक्त क्या शक्ल थी जब कि उसके दस हज़ार बेहतरीन सिपाही खून से भीगे हुए, मैदान में पड़े थे और गुलाम गुस्से में बिफरे हुए एक ऐसे शेर-बबर की तरह दूर चलते चले जा रहे थे जिसे गुस्सा तो आ गया है मगर चोट ज़्यादा नहीं लगी है।

—वारिनिया की मूर्ति देखने में कैसी थी ? ग्रैकस ने पूछा और इस बात की कोशिश की कि उसका प्रश्न अधिक से अधिक सहज मालूम पड़े, ऐसा कि जैसे उसे कुछ ख़ास दिलचस्पी नहीं है।

—मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे अच्छी तरह उसकी याद है। उसे देखकर तुम उसे जर्मन या गॉल औरत समझते—लम्बे बाल, ढीला गाउन और ऐसी सब चीजें। उसके बाल चोटी में गुँथे हुए थे जैसे कि जर्मन और गॉल स्त्रियों के बाल होते हैं। बड़ा सुन्दर वक्ष था–देखकर ही लगता था कि यह कैसी हृष्ट-पुष्ट सुन्दर स्त्री है! वैसी जर्मन स्त्रियाँ अब भी बाजार में कभी-कभी दिखायी दे जाती हैं और लोग उनको ख़रीदने के लिए कितने लालायित रहते हैं तुम्हें पता ही है। हाँ, यह कहना मुश्किल है कि वह सचमुच वारिनिया ही थी या नहीं। स्पार्टकस से ताल्लुक रखनेवाली हर चीज़ की तरह इस चीज़ के बारे में भी हमें कुछ नहीं मालूम। हाँ अगर तुम उस सारे प्रचार को ज्यों का त्यों पी जाने के लिए तैयार हो तो उसकी बात और है। वारिनिया के बारे में मुझे उतना ही मालूम है जितना कि उस हरामज़ादे लानिस्ता बाटियाटस ने मुझे बतलाया था और कुछ खास बतलाया भी तो नहीं था। सिवाय इसके कि उसकी याद करके उसके मुँह में पानी भर आया था और उसकी लिजलिजी जीभ बाहर निकल आयी थी। इसका मतलब है कि वह ज़रूर सुन्दरी रही होगी।

—और आपने उसे भी नष्ट कर दिया, हेलेना ने कहा।

क्रैसस ने सिर हिलाया। वह जल्दी ही अस्थिर हो जानेवाला आदमी न था। उसने हेलेना से कहा—मेरी जान, मैं सिपाही था और सेनेट के आदेश का पालन मेरा धर्म था। तुम्हें यह सुनने को मिलेगा कि गुलाम युद्ध एक छोटी चीज थी। काफ़ी स्वाभाविक है कि लोग इस चीज़ को यों देखें क्योंकि रोम को दुनिया को यह बतलाने से कोई फ़ायदा न होगा कि कुछ गुलामों को लेकर हम कैसी मुसीबत में पड़ गये थे। मगर यहाँ पर, मेरे अज़ीज़ और नेक दोस्त ऐण्टोनियस केयस के मकान के इस आरामदेह चबूतरे पर बैठकर, अपने लोगों की इस सोहबत में हम उन गढ़ी हुई बातों को उठाकर ताक़ पर रख दें तो अच्छा हो। सच बात यह है कि स्पार्टकस रोम के विध्वंस के जितने पास पहुँच गया था उतने पास कभी कोई दूसरा नहीं पहुँचा। किसी ने रोम को इतने भयानक रूप से ज़ख्मी नहीं किया। मैं अपनी बात को ज़ोर पहुँचाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। पॉम्पी को ही यश लूटने दो, गुलामों का दमन करने में कोई यश नहीं है। मगर सचाई सचाई है और अगर ये सलीब, दण्ड के ये प्रतीक, देखने में इतने बुरे लगते हैं, तो जरा सोचो उस वक्त मुझे कैसा लगा होगा जब मैंने रोम के बेहतरीन सिपाहियों की लाशों को क़ालीन की तरह मैदान पर बिछते देखा। इसलिए जब उन गुलामों की तैयार की हुई किसी चट्टानी मूर्ति को नष्ट करने की बात आयी तो मैं झिझका नहीं। इसके बर-अक्स मुझे इसमें कुछ सन्तोष

ही मिला। हमने खूब अच्छी तरह उन मूर्तियों का ध्वस किया और पीसकर उन्हें धूल कर दिया—ताकि उनका कोई चिह्न बाक़ी न रहे। और इसी तरह हमने स्पार्टकस और उसकी फ़ौज का ध्वंस किया था। और आगे चलकर, यक़ीनन हम उसकी स्मृति का भी ध्वंस कर देंगे कि उसने क्या किया था और कैसे किया था। मैं बहुत मामूली सीधा सादा आदमी हूँ और कुछ ख़ास चतुर भी नहीं हूँ। मगर मैं इतना जानता हूँ कि संसार का नियम यह है कि कुछ लोग शासन करेंगे और कुछ लोग शासित होंगे। भगवान का चलाया हुआ नियम यही है। और सदा ऐसा ही रहेगा।

क्रैसस के अन्दर यह गुण था कि वह स्वयं ज़रा भी आवेश में आये बिना दूसरे के अन्दर आवेश पैदा कर सकता था। वह जो कुछ कह रहा था उसको उसके खूबसूरत मज़बूत फ़ौजी चेहरे से बल पहुँच रहा था। प्रजातन्त्र का राजचिन्ह वह जो काँसे का बना हुआ बाज़ था उससे कितना ज़्यादा मिलता-जुलता था यह आदमी!

ग्रैकस अपनी झुकी हुई पलकों के नीचे से उसको देख रहा था। ग्रैकस वहाँ पर बैठा था और उन सब को देख रहा था, उस पतले से चेहरेवाले आक्रमणशील सिसेरो को, उस बाँके छैले नौजवान केयस को, हेलेना को, उस ख़ामोशी से तकलीफ़ भुगतती हुई और कुछ कुछ उपहासास्पद-सी जूलिया को, स्निग्ध और संतुष्ट क्लॉदिया को, ऐण्टोनियस केयस को और क्रैसस को—उन सब को वह देख रहा था और उनकी बातें सुन रहा था और उसे फिर याद आया कि कैसे जब वह चला आया था तब सेनेट की कमेटी के लोग उसके पीछे-पीछे आये थे। वह तो शुरुआत ही थी—जब कि तीन हज़ार सैनिकों की छः टुकड़ियाँ भेजी गयीं और जैसा कि क्रैसस ने कहा, लोग उस शुरुआत को भी भूल जायेंगे और उस अन्त को भी भूल जायेंगे, जब तक कि कहीं ऐसा न हो कि वह अन्त अभी आनेवाला हो।

४

शुरू-शुरू में सेनेट का निर्णय यह था कि गुलामों के विद्रोह को तत्काल दबा देने के लिए शहर की छः टुकड़ियों को फ़ौरन कापुआ भेजा जाय। यही वह निर्णय था जिसका ग्रैकस ने विरोध किया था और जिसे कि किसी-न किसी रूप में कार्यान्वित किया गया था ताकि ग्रैकस को थोड़ी-बहुत नम्रता सिखलायी जा सके। बाद में जो कुछ हुआ उसकी रोशनी में जब ग्रैकस इस नम्रता के प्रश्न पर विचार करता था तो उसे कुछ एक तीखे स्वाद का सन्तोष मिलता था।

शहर की हर टुकड़ी में पाँच सौ साठ सिपाही थे—जो कि साधारण सिपाहियों से ज़्यादा अच्छी तरह हथियारों से लैस थे। रहने के लिए शहर अच्छी जगह थी। लीजन के सैनिक दुनिया के कोने कोने में जाते थे और बहुत बार ऐसा होता था कि वे कभी लौटकर न आते थे और उनकी कब्रें विदेशी धरती पर बन जाया करती थीं और बहुत बार जब वह लौटते भी थे तो पाँच या दस या पन्द्रह बरस बाद। लीजन के सैनिक मुट्ठी भर खाना खाकर दिन भर मार्च करते थे और जी तोड़कर परिश्रम करते थे और जङ्गल में सड़कें और शहर बनाते थे और कभी-कभी उनके वे बड़े-बड़े नगर उनके लिए केवल स्मृति बनकर रह जाते थे। शहर की टुकड़ियाँ देश भर की चर्बी पर जीती थीं और उनके लिए लड़कियों, शराबों और खेलकूद का कोई अन्त न था। शहर की टुकड़ियों का एक मामूली सैनिक भी अपनी जगह पर कुछ राजनीतिक ताक़त रखता था और हमेशा कुछ-न-कुछ पैसा उसके हाथ में पहुँचा करता था जिससे उसे गुदगुदी मालूम होती थी। इनमें से बहुत से थे जिनके पास शहर में अपने अच्छे-अच्छे मकान थे जिनमें वे अपने ड्यूटी से खाली घण्टों में रहा करते थे और उनमें से कुछ तो छः छः गुलाम औरतें रखते थे। शहर के एक सैनिक के बारे में कहानी मशहूर थी कि वह रोम के एक बड़े से मकान में अपनी चौदह रखेलों को रखता था और उनसे पैदा होनेवाले बच्चों को छः साल की उमर तक बड़ा करके और फिर उन्हें बाज़ार में बेचकर उसने एक अच्छा-ख़ासा मुनाफ़े का धन्धा खड़ा कर लिया था। इसी तरह की बहुत-सी कहानियाँ कही जाती थीं।

वे लोग खूबसूरत वर्दियाँ पहनते थे। इन सभी टुकड़ियों के नायक अच्छे घरों के नौजवान थे जो सेना को अपनी ज़िन्दगी का पेशा तो बनाना चाहते थे मगर साथ ही यह भी चाहते थे कि वे थिएटर और एरेना और अच्छे-अच्छे जलपान-गृहों से कुछ ही क़दम के फ़ासले पर रहे आयें। उनमें से आधे लोग केयस के दोस्त थे और एक दो बार खुद उसके दिल में ख़्याल आया था कि वह खुद भी क्यों न वही नौकरी कर ले मगर फिर यह सोचकर कि वह चीज़ उसकी अपनी योग्यताओं से अलग पड़ती है, उसने विचार तज दिया था। मगर उन लोगों के यह सब ठाट-बाट और फिर यह कि लगभग सभी सार्वजनिक उत्सवों में उनकी बाक़ायदा रस्मी परेड हुआ करती थी, इससे ऊँचे-ऊँचे खान्दानों के उन नवयुवकों में स्वभावतः यह होड़ लगी रहती थी कि सबसे अच्छी वर्दी पहने हुए सैनिकों का नायक कौन बनता है। शहर में पहुँचकर मैदान में लड़नेवाले सैनिक के पसीने में डूबे हुए चमड़े के पतलून बहुत अच्छी तरह सिझाकर नर्म किये हुए, खूबसूरत रँगे हुए, हिरन के चमड़े के पतलून में बदल जाते थे। हर रेजीमेण्ट के पास अपनी अलग वर्दी थी और उनको

अपने लोहे के टोपों में पंख खोसने की भी विशेष सुविधा आम तौर पर मिल जाया करती थी। कन्धे पर की वह लोहे की पट्टी जो सामने की तरफ़ नीचे को पड़ी रहती थी और ब्रेस्ट प्लेट से जुड़ी रहती थी और जिसे वे लोग ह्यूमरालिया कहते थे, उस पर आमतौर पर सोने या चाँदी का पानी चढ़ा रहता था। एक टुकड़ी ऊपर से नीचे तक पीतल के ज़िरहबख्तर में थी और हर रेजी-मेण्ट के पास अपना एक ख़ास बूट था जो कि अक्सर घुटनों तक पहुँचता था और जिसमें अलंकार के लिए नन्हीं-नन्हीं चाँदी की घण्टियाँ लगी हुई थीं। कांसे के साक़पोश जो पिंडलियों पर पहने जाते थे, और जिन्हें सरहदी सैनिकों ने बहुत पहले छोड़ दिया था क्योंकि धात की पकड़ में बन्द टाँगों को लेकर उनके लिए एक-एक दिन में कई-कई मील का मार्च करना असम्भव हो जाता था, उनको यहाँ शहर की आधी रेजीमेण्टें अब भी बड़े ठाट-बाट से इस्तेमाल करती थीं और हर टुकड़ी के पास अपनी ढाल के लिए अलग एक नक्शा था। सारी इटली में उनके हथियारों और उनके ज़िरहबख़्तर की बराबरी कोई न कर सकता था।

यह भी न था कि उनको ट्रेनिंग ठीक से न मिलती हो। इन टुकड़ियों को इस ज़माने में दिन के वक्त क़वायद करनी पड़ती थी, हर रोज़। आम तौर पर बहुत सबेरे सरकस मैक्सिमस में उनकी ट्रेनिंग होती थी। सरकस मैक्सिमस वैलिस मर्सिया के खाले में एक खुला हुआ घुड़दौड़ का मैदान था और वहाँ पर उन लोगों को एक सौ तुरहियों की लय पर कवायद करते देख कर बहुत अच्छा मालूम होता था। किसी भी सुबह उस सरकस के चारों ओर की पहाड़ियों पर रोम के तमाम बच्चों को देखा जा सकता था जो इस फ़ौजी क़वायद को बड़े मुग्ध होकर प्यासी आँखों से देखा करते थे।

मगर सच बात यह थी कि ये टुकड़ियाँ मैदान में लड़नेवाले सैनिकों की टुकड़ियाँ न थीं। और ज़िन्दगी से बेज़ार भूखे बेकारों की एक भीड़ को दबाना या शहर की उन सँकरी सड़कों पर होनेवाले एक राजनीतिक झगड़े में जूझकर पार हो जाना एक बात है और स्पेनियार्डों या गॉलों या जर्मनों या थ्रेसियनों या यहूदियों या अफ्रीकियों का मुक़ाबला करना बिलकुल दूसरी। मगर तब भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि यह सिर्फ़ मुट्ठी भर गुलामों की बग़ावत थी और फिर उनमें चाहे जितनी भी कमज़ोरियाँ क्यों न रही हों, शहर की इन छः टुकड़ियों में साढ़े तीन हज़ार से ज़्यादा रोमन सैनिक थे। ग्रैकस भी अंशतः इस बात को मानता था। सिद्धान्त रूप में उसको यह बात न पसन्द थी कि ये टुकड़ियाँ शहर की दीवारों से एक दिन के मार्च के फ़ासले से ज़्यादा दूर जायें। मगर कुल मिलाकर वे सत्ताइस टुकड़ियाँ थीं और ग्रैकस भी इस बात को मानता था कि जो काम उन्हें करना

था वे कर सकते थे। उसके विरोध के मूल में मुख्य रूप से यह बात थी कि उसे इन राजनैतिक रेजीमेण्टों से बहुत डर लगता था जिनमें देहातों से आये हुए किसान सैनिक न थे बल्कि शहर के ही पैदा और शहर में ही पले हुए ऐसे लोग थे जिनके पास कहीं कोई काम न था, जिनके पास अपने अन्तःकरण के नाम से कुछ भी न था और जो कि एकदम बिगड़े हुए, परजीवी लोग थे जिन्हें समाज ने उठाकर घूर पर फेंक दिया था और जिनकी ज़िन्दगी में अब कोई आशा बाक़ी न रह गयी थी और जो समाज को अपने ऊपर टिकाये हुए गुलामों की उस बहुत बड़ी तादाद और उनके मुट्ठी भर शासकों के बीच की जगह पर जीते थे। वे सख्या में रोम के मेहनतकशों से ज़्यादा थे, यानी उन दस्तकारों और दूकानदारों से ज़्यादा थे जिनकी संख्या रोज़बरोज़ कम होती जा रही थी। उनका दिन सड़कों पर या अखाड़े में गुज़रता था; वे सरकार से मिलने वाली मदद पर जीते थे और जुआ खेलते थे और घुड़दौड़ में शर्त लगाते थे और हर चुनाव में अपने वोट बेचते थे और अपने नवजात बच्चों का गला घोंट देते थे ताकि उनकी परवरिश की जिम्मेदारी से बच सकें और घण्टों हम्मामों में गुज़ारते थे और उन ऊँचे-ऊँचे चालों में छोटी-छोटी गन्दी-गन्दी खोलियाँ लेकर रहते थे—और ऐसे ही लोगों में से शहर की टुकड़ियों की भरती होती थी।

सेनेट के फैसले के दूसरे रोज़ पौ फटते-फटते वे छः टुकड़ियाँ रवाना हो गयीं। उनकी कमान एक नौजवान सेनेटर वारिनियस ग्लैबरस को दी गयी। उसे सेनेट के एक सदस्य के रूप में, उसका प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया और उपयुक्त राजचिन्ह भी दे दिया गया। रोम में ज़्यादा उम्रवाले लोगों की वैसी कोई कमी न थी जिनके पास कई बरस का फ़ौजी तजुर्बा था; मगर रोम पिछले कई बरसों से अपने भीतर ही भीतर चलनेवाले सत्ता के संघर्ष के कारण एक-दम जर्जर हो रहा था और सेनेट इस सम्बन्ध में बहुत ही अधिक सतर्क थी कि अपने से बाहर किसी आदमी के हाथों में फ़ौजी ताक़त न दे। वारिनियस ग्लैबरस घमण्डी था, बेवकूफ़ कहना चाहिए, और राजनीति के मामले में विश्वसनीय था।

उस वक़्त उसकी उम्र उन्तालीस साल थी और अपनी माँ की ओर से उसके पारिवारिक सम्बन्ध बहुत ऊँचे लोगों से थे। वह बहुत अधिक महत्वाकांक्षी न था और उसने और उसके घरवालों ने इस नये काम का स्वागत किया, जो उसे दिया जा रहा था, यह सोचकर कि एक तो इसमें किसी तरह की कोई अनिश्चितता न होगी और दूसरे काफ़ी ख्याति पाने का अवसर भी मिल सकता है। उसको चुनने से सेनेट के बहुमत को नगर की पैट्रीशियन आबादी के एक पूरे हिस्से का समर्थन मिल रहा था जिससे उसकी

ताक़त और भी बढ़ गयी थी। उसके नीचे काम करने वाले अफ़सरों को जो कुछ करना होगा, फ़ौजी ढंग से करेंगे, और जो कुछ थोड़े से निर्णय स्वयं उसे करने होंगे उनके सम्बन्ध में उसको सभी बातें बड़ी सावधानी से और सफ़ाई से समझा दी गयी थीं और उपयुक्त निर्देश दे दिये गये थे। उसे अपने सैनिकों को मैदानी रफ्तार से कापुआ तक ले जाने का आदेश मिला था यानी दिन भर में बीस मील। यह सारा का सारा फ़ासला ऐपियन मार्ग के संग-संग ही उसे तय करना था जिसका मतलब था कि खाना और पानी जो कि मैदान में लड़नेवाले साधारण सैनिकों को अपनी पीठ पर लाद कर ले चलना पड़ता था, उसको गाड़ियाँ ढोयेंगी। उसको आदेश मिला था कि वह अपने आदमियों को कापुआ की दीवारों के बाहर रोक कर पड़ाव डाल दे और उस शहर में गुलामों के विद्रोह की प्रगति के बारे में पता लगाने के लिए और उसको दबाने की अपनी योजना बनाने में एक दिन से ज़्यादा न खर्च करे। उसके बाद उसे आदेश दिया गया था कि अपनी योजनाओं की सूचना सेनेट को दे मगर सेनेट की तरफ़ से उसकी तसदीक़ आने का इन्तज़ार किये बिना बदस्तूर अपनी कारंवाई करता रहे। वह जैसी ज़रूरत महसूस करे उसी तरह गुलामों के संग बरते मगर उसे हर मुमकिन कोशिश इस बात की करनी थी कि विद्रोह के नेताओं को पकड़ लिया जाय और फिर उनको और और भी जितने पकड़ में आयें उन सबको रोम भेज दिया जाय ताकि वहाँ उनके ऊपर खुले आम मुक़दमा चलाया जाय और सज़ा दी जाय। अगर कापुआ की कौन्सिल यह अनुरोध करे कि दण्ड के कुछ प्रतीक भी होने चाहिए तो उसके लिए उसको अधिकार दिया गया था कि वह दस गुलामों को कापुआ के बाहर सलीब पर टांग सकता था—मगर शर्त यह थी कि बीस से ज़्यादा लोगों को गिरफ़्तार किया गया हो। सेनेट की स्पष्ट राजाज्ञा से गुलामों पर सारे सम्पत्तिगत अधिकार छीन लिये गये थे और वारिनियस को निर्देश किया गया था कि वह इस सम्बन्ध में किसी की माँग पर कोई ध्यान न दे, हाँ अगर कोई बाद में दावा दायर करने के लिए विशेष अनुमति चाहता हो तो वह चीज़ मंजूर की जा सकती थी और उसे अधिकारों की कमेटी के सामने पेश किया जा सकता था।

यह सब उस समय हो रहा था जब रोम में किसी को पता न था कि विद्रोह का नेता कौन है। स्पार्टकस का नाम अब तक लोगों को मालूम न था और न लोग यही स्पष्ट रूप से समझ पा रहे थे कि कैसे बाटियाटस के स्कूल में विद्रोह हो गया। शहर की टुकड़ियाँ भोर में परेड के लिए इकट्ठा हुईं मगर इस सब में कुछ देर हो गयी क्योंकि अफ़सरों में इस बात को लेकर झगड़ा हो गया कि कौन टुकड़ी कहाँ पर खड़ी होगी। सूरज आसमान में

अच्छी तरह चढ़ आया था जब उन्होंने प्रयाण किया। उनके नगाड़ों और तुरही का जोश दिलानेवाला फ़ौजी संगीत शहर भर में गूँज रहा था और जब वे लोग शहर के फाटक पर पहुँचे तब तक उनको जाते हुए देखने के लिए एक अच्छी ख़ासी भीड़ जमा हो गयी थी।

ग्रैकस को यह बात अच्छी तरह याद थी—ख़ूब ही अच्छी तरह। फाटक पर की उस भीड़ में दो और सेनेटरों के संग वह भी था और उसने याद किया कि उस वक़्त कैसा अच्छा दृश्य था जब टुकड़ियाँ बाहर जा रही थीं, बैण्ड बज रहा था, झण्डे उड़ रहे थे, उनकी अपनी फ़ौजी पहचान के झण्डे इतने गर्व के साथ झूम रहे थे, सैनिकों के टोप जिनमें रङ्ग-बिरंगे पंख खोंसे हुए थे उनके मार्च करते समय कैसी अदा से हिल रहे थे और वारिनियस सैनिकों के आगे आगे चमचम चमकते हुए पीतल की ब्रेस्टप्लेट लगाये एक ख़ूबसूरत सफ़ेद घोड़े पर सवार चला जा रहा था और हाथ हिला-हिला कर उस शोर करती हुई भीड़ की हर्षध्वनि का जवाब दे रहा था। अच्छी तरह से क़वायद कराये गये सैनिकों की परेड से ज़्यादा रोमांचकारी दुनिया में और कुछ नहीं है। ग्रैकस को यह बात ख़ूब ही अच्छी तरह याद थी।

५

इस तरह से सेनेट ने स्पार्टकस का नाम सुना और ग्रैकस को उस वक़्त की याद थी जब पहली मर्तबा किसी ने उसके सामने यह नाम बोला था। बहुत मुमकिन है कि वह पहली बार किसी ने रोम में वह नाम खुलकर बोला हो। वारिनियस ने जो रिपोर्ट बहुत तेज़ हरकारों के हाथ कापुआ से रोम में सेनेट के पास भेजी थी उसमें उसने बहुत मामूली ढङ्ग से बिना उसको कोई विशेष महत्व दिये, उसका उल्लेख किया था। वारिनियस की रिपोर्ट बहुत उत्साह बढ़ानेवाली न थी। वह उसी प्रचलित ढङ्ग से शुरू हुई थी—महान् सेनेट की सेवा में निवेदन है—और इसके बाद उसमें बतलाया गया था कि जब वे लोग ऐपियन मार्ग के बग़ल से होकर मार्च करते चले जा रहे थे तो कौन-कौन-सी घटनाएँ हुईं और फिर कापुआ पहुँचकर उन्हें क्या-क्या बातें मालूम हुईं। उनके मार्च की सबसे ख़ास बात यह थी कि तीन टुकड़ियाँ जो कांसे के साकपोश पहने हुए थीं उनके पैरों में ज़ख़्म हो गये थे जो बहुत दर्द करते थे। वारिनियस ने उन साकपोशों को अलग करने का फ़ैसला किया था और एक गाड़ी में उस चीज़ को भरकर रोम वापस भेज दिया था। उन टुकड़ियों के अफ़सरों को ऐसा महसूस हुआ कि जैसे यह उनके रेजीमेण्ट की इज़्ज़त के ऊपर एक लांछन हो, गोया उनके सैनिकों का अपमान किया जा रहा हो और यह कि पैर में थोड़ी सी चिकनाई लगाने से काम बन

सकता था। वारिनियस उनकी बात मान गया। और उसका परिणाम होगा कि एक सौ से ऊपर सैनिकों को अयोग्य क़रार देकर कापुआ में छोड़ना होगा। और भी कई सौ सैनिक लंगड़ा रहे थे मगर उनके बारे में यह ख्याल किया जाता था कि वे गुलामों के ख़िलाफ़ कार्रवाई में हिस्सा लेने के लिए काफ़ी ठीक हैं।

(ग्रैकस को फुरफुरी सी मालूम हुई जब उसने कार्रवाई का लफ्ज़ सुना।)

जहाँ तक उस विद्रोह की बात थी, वारिनियस एक विचित्र सा अन्तर्द्वन्द्व अनुभव कर रहा था। एक ओर तो उसकी इच्छा यह थी कि वास्तविकता को सीधे-सीधे बयान कर दे और कहे कि कहीं कुछ नहीं है और दूसरी ओर वह इसमें अपने को आगे बढ़ाने का मौक़ा भी देख रहा था जिसका स्पष्ट मतलब था कि वह उस चीज़ को खूब बढ़ा-चढ़ा कर पेश करे। उस विद्रोह की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में उसने अपनी रिपोर्ट के साथ बाटियाटस का एक वक्तव्य भी लगा दिया था और लिखा था कि ऐसा मालूम होता है कि विद्रोह का एक नेता स्पार्टकस है जो कि थ्रेसियन है और दूसरा नेता एक गॉल है जिसका नाम क्रिक्सस है—ये दोनों ग्लैडिएटर थे मगर उस रिपोर्ट से यह न मालूम होता था कि विद्रोह में कितने ग्लैडिएटर शरीक हैं। वारिनियस ने बड़े विस्तार से तीन अलग-अलग जागीरों का बयान किया था जिनमें आग लगा दी गयी थी। इन जागीरों पर काम करनेवाले गुलाम निस्सन्देह स्वामिभक्त थे मगर उन्हें मौत का डर दिखाकर गुलाम विद्रोहियों का साथ देने के लिए विवश किया गया था। जिन्होंने इनकार किया उन्हें फ़ौरन मार डाला गया।

(ग्रैकस ने सिर हिलाया। यह बात इसके सिवा दूसरी किसी तरह न कही जा सकती थी।)

दो जागीरदारों ने कापुआ में शरण लेने की कोशिश की थी मगर ग्लैडिएटरों ने बीच में ही उन्हें पकड़ लिया था और मार डाला था और उनके गुलामों को मजबूर करके अपने विद्रोह में शरीक कर लिया था। इनके अलावा उस इलाक़े के बहुत से बदमाश गुलाम भाग कर विद्रोहियों से जा मिले थे। गुलामों के तथाकथित अत्याचारों की एक लम्बी तालिका भी वारिनियस ने जोड़ दी थी। और अपनी रिपोर्ट के साथ उसने तीन लोगों के बयान भी रख दिये थे जो कि खुद उसने लिये थे और जिनकी सच्चाई में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता था। इन बयानों में गुलामों के कुछ और अत्याचारों का हवाला था।

उसने यह कहकर अपनी रिपोर्ट ख़त्म की थी कि जहाँ तक उसे पता चलता है उन गुलामों ने अपना हेडक्वार्टर विसूवियस पहाड़ के जङ्गली और

चट्टानी ढलवान पर बनाया था और यह कि उसका इरादा फ़ौरन वहाँ पर जाने और उन पर सेनेट की इच्छा को लागू करने का है।

सेनेट ने उसकी रिपोर्ट ले ली थी और स्वीकार कर ली थी। इसके साथ ही सेनेट के अन्दर यह प्रस्ताव भी रक्खा गया था और पास हुआ था कि भागे हुए गुलामों में से क़रीब अस्सी को, जिन्हें इस वक़्त खान पर काम करने के लिए रोक लिया गया था, दण्ड देने के लिए भेंट कर दिया जाय ताकि उन्हें सलीब पर टँगा हुआ देख कर नगरों के सभी गुलाम डरें और उनसे नसीहत लें। उसी रोज़ उन ग़रीबों को दो घुड़दौड़ों के बीच के समय में सरकस मैक्सिमस में सलीब पर चढ़ा दिया गया। वे अपने सलीब पर लटके हुए थे जब कि उस वक़्त का सबसे ज़्यादा चहेता घोड़ा ऐरेस्टोनीज़, जो कि पार्थिया का एक बड़ा बांका घोड़ा था, नूबिया की एक घोड़ी शारोश से हार गया जिसकी किसी को आशा न थी—और उसकी हार से रोम के बहुत से घुड़दौड़-प्रेमी दिवालिया हो गये।

मगर इसके बाद छः रोज़ तक वारिनियस या शहर की टुकड़ियों के पास से और कोई खबर न आयी। और उसके बाद एक बहुत छोटी सी खबर आयी। उन शहर की टुकड़ियों को गुलामों ने हरा दिया था। यह एक बड़ी छोटी-सी रिपोर्ट थी और उसके बारे में दूसरे कोई तथ्य न थे और इसलिए चौबीस घण्टे तक सेनेट और सारा शहर बहुत तनाव की हालत में आगे की ख़बर का इन्तज़ार करता रहा। हर शख़्स गुलामों के इस नये विद्रोह के बारे में बात कर रहा था मगर किसी को कुछ मालूम न था। मगर तब भी सारे शहर पर खौफ़ छाया हुआ था।

६

सेनेट की पूरी बैठक बन्द दरवाज़ों के भीतर हुई और बाहर भीड़ इकट्ठा हो गयी और बढ़ती गयी यहाँ तक कि चौक भर उठा और उस तक पहुँचने वाली सड़कें बन्द हो गयीं और चारों तरफ़ अफ़वाहें फैल गयीं क्योंकि सेनेट को शहर की उन टुकड़ियों की कहानी अब मालूम थी।

सिर्फ़ एक या दो कुर्सियाँ खाली थीं। सेनेट की उस बैठक का ख़याल करके ग्रैकस ने अपने मन में यह निश्चय किया कि ऐसे ही मौक़ों पर—सङ्कट और कटु ज्ञान के ऐसे ही मौक़ों पर—सेनेट का सबसे अच्छा रूप दिखायी देता है। उन बुड्ढे लोगों की आँखें, जो अपने चोग़ों में लिपटे हुए इतने ख़ामोश बैठे थे, निश्चय से भरी थीं और उनमें किसी भी प्रकार का कोई डर या उद्विग्नता न थी और जो कुछ कम उम्र के लोग थे उनके चेहरे कठोर और

गुस्से से भरे हुए थे। मगर उन सब को रोमन सेनेट की मर्यादा की तीक्ष्ण चेतना थी और उसके सन्दर्भ में ग्रैकस के लिए वह जीवन के प्रति अपनी वितृष्णा और निराशा छोड़ देना सम्भव था। वह इन लोगों को जानता था; वह जानता था कि किन घटिया और गन्दे तरीक़ों से उन्होंने अपनी सीटें ख़रीदी थीं और राजनीति का कैसा गन्दा खेल वे खेलते थे। उनमें से हर एक आदमी अपने मकान के पिछवाड़े गन्दगी का अपना जो ख़ास कुआँ रक्खे हुए था उसमें से एक-एक को वह जानता था; मगर तब भी उनके बीच में बैठने में उसे गर्व और रोमांच का अनुभव हो रहा था।

स्वयं अपनी विजय की खुशी मनाने की योग्यता अब उसके अन्दर न थी। उसकी अपनी विजय उस चीज़ से अलग न थी जिसका वे सब सामना कर रहे थे और इसीलिए उन लोगों ने उसको सेनेटर इनक्विज़िटर चुना और उसने उनके दर्द को अपना लिया और अपने ओछे विजय-गर्व को अलग कर दिया। वह उनके सामने खड़ा था और उसके सामने वह रोमन सैनिक था जो ख़बर लेकर लौटा था, जो शहर की सड़कों और गलियों में पैदा हुआ और पला था और बढ़ा था मगर अब अपनी ज़िन्दगी में पहली मर्तबा उस महान् सेनेट के सामने खड़ा हुआ था। वह एक पतले से चेहरे का, काली-काली आँखोंवाला आदमी था जिसकी आँखें चोरों की-सी और डरी हुई थीं, जिसकी एक आँख बराबर मुलमुला रही थी और जीभ बार-बार ओंठों पर फिर-फिर जाती थी मगर तब भी वह अपना ज़िरहबख़्तर पहने था, निश्शस्त्र था—क्योंकि इसी तरह सेनेट के सामने आया जाता है—उसकी हजामत बनी हुई थी और कम-से-कम अंशतः तो उसके शरीर की सफ़ाई हुई ही थी मगर उसकी एक बाँह पर ख़ून में भीगी हुई पट्टी थी और वह बहुत थका हुआ था। ग्रैकस ने एक ऐसा काम किया जो दूसरे किसी ने न किया होता। उससे सवाल-जवाब बाक़ायदा शुरू करने के पहले उसने एक नौकर से कहकर शराब मंगायी और उस सिपाही के पास एक छोटी सी मेज़ पर रखवा दी। वह आदमी बहुत कमज़ोर हो रहा था और ग्रैकस यह नहीं चाहता था कि वह बेहोश होकर वहीं ढेर हो जाय। उससे कुछ फ़ायदा न होगा। वह आदमी अपने हाथों में राजदूत का वह छोटा सा हाथीदाँत का डण्डा लिये हुए था, जिसके बारे में लोग कहा करते थे कि उसके अन्दर एक हमला करती हुई फ़ौज से भी ज़्यादा ताक़त है क्योंकि वह सेनेट की शक्ति और सत्ता का प्रतीक है।

—उसको मुझे दे दो, ग्रैकस ने शुरू किया।

सैनिक ने पहले उसकी बात नहीं समझी और तब ग्रैकस ने उसके हाथ से डण्डा ले लिया और उसे वेदी पर रख दिया और उसको महसूस हुआ कि जैसे उसका गला रुँध रहा हो और उसके सीने में दर्द हो रहा हो। मनुष्यों

के लिए तो उसके मन में घृणा हो सकती थी क्योंकि मनुष्य जैसे होते हैं वह तो सबको पता ही है मगर उस छोटे से डण्डे के लिए उसके मन में कोई घृणा न थी क्योंकि वह डण्डा उसके जीवन की समस्त मर्यादा और शक्ति और गौरव का प्रतीक था और उसे कुछ ही दिन पहले वारिनियस को दिया गया था।

इसके बाद उसने सैनिक से पूछा—पहले अपना नाम बताओ?

—अरालस पोर्थस।

—पोर्थस?

—अरालस पोर्थस—सैनिक ने दुहराया।

एक सेनेटर ने अपने कान के पास हाथ लगाकर कहा—और ज़ोर से बोलो, सुनायी नहीं देता। तुम और ज़ोर से नहीं बोल सकते क्या?

ग्रैकस ने कहा—बोलो-बोलो, यहाँ पर बोलने से तुम्हारे ऊपर कोई ख़तरा नहीं आयेगा। तुम यहाँ सेनेट के पवित्र भवन में हो और तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भगवान की सौगन्ध खाकर पूरा-पूरा सत्य कहो, बोलो।

सैनिक ने सिर हिलाया।

—थोड़ी शराब ले लो, ग्रैकस ने कहा।

सैनिक ने सफ़ेद चोग़ा पहने हुए धीर-गम्भीर लोगों की उन क़तारों में एक के बाद दूसरे का चेहरा देखा, पत्थर की उन सीटों को देखा जिन पर वे मूर्तियों की भाँति बैठे हुए थे और तब काँपते हुए हाथ से उसने एक गिलास में शराब ढाली और ढालता ही गया, यहाँ तक कि शराब बहने लगी और फिर वह उसे एक ही घूँट में पी गया और फिर एक बार उसने अपने होंठों पर जीभ फेरी।

—तुम्हारी क्या उम्र है? ग्रैकस ने पूछा।

—पच्चीस बरस।

—और तुम पैदा कहाँ हुए थे?

—यहीं, इसी नगर में।

—तुम्हारा कोई व्यवसाय है?

उस आदमी ने सिर हिलाया।

—मैं चाहता हूँ कि तुम हर सवाल का जवाब दो। मैं चाहता हूँ कि तुम कम-से-कम हाँ या ना कहो। अगर और विस्तार में जवाब दे सकते हो तो दो।

—नहीं, मेरे पास युद्ध को छोड़कर दूसरा कोई व्यवसाय नहीं है, सैनिक ने कहा।

—तुम्हारी कौन सी रेजीमेण्ट थी?

—मैं तीन नम्बर टुकड़ी में था।

—और तुम इस तीन नम्बर टुकड़ी में कितने ज़माने से हो ?

—दो साल और दो महीने।

—इसके पहले ?

—मैं सरकारी मदद पर जीता था।

—तीन नम्बर टुकड़ी का नायक कौन था ?

—सिल्वियस केयस सल्वारियस।

—और नायब ?

—मारियस ग्रैकस आल्वियो।

—बहुत अच्छा, अरालस पोर्थस। अब मैं चाहता हूँ कि तुम मुझको और यहाँ पर एकत्र इन सम्मानित महानुभावों को ठीक-ठीक बतलाओ कि जब तुम्हारी टुकड़ी और बाकी पाँचों टुकड़ियां कापुआ से दक्षिण की तरफ़ बढ़ीं तो क्या हुआ। यह चीज़ तुम मुझे सीधे-सीधे और साफ़-साफ़ शब्दों में बतलाओ। तुम जो कुछ भी चाहे कह सकते हो, इसके लिए तुमको दण्डित नहीं किया जायगा और सेनेट के इस पवित्र भवन में तुमको किसी तरह की क्षति न पहुँचने पायेगी।

मगर तब भी उस सैनिक के लिए क़ायदे से, सुलझे हुए ढङ्ग से बात कहना आसान न था और उसके कई बरस बाद, विला सलारिया के पक्के चबूतरे पर बसन्त की सबेरे की मन्द-मन्द बयार में बैठे हुए ग्रैकस को आज भी उस सैनिक के शब्दों से कहीं ज़्यादा साफ़ तरीक़े पर वे तीखी और डरावनी तसवीरें याद थीं जो कि उस सैनिक के शब्दों के भीतर से निकलती थीं। कापुआ से दक्षिण को जो सेना वारिनियस ग्लैबरस के नेतृत्व में चली वह कोई बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न सेना न थी। मौसम बहुत गर्म हो गया था जैसा कि उन दिनों नहीं हुआ करता और उन शहर की टुकड़ियों को, जिन्हें इतने लम्बे मार्च की आदत न थी, उस गर्मी से बड़ी तकलीफ़ हो रही थी। गोकि यह बात सच है कि वे लीजन के सिपाहियों के मुक़ाबले में फ़ी-आदमी बीस-बीस पौण्ड वज़न कम लेकर चल रहे थे मगर तब भी यही क्या कम था कि वे अपने लोहे के टोप और ज़िरहबख़्तर और ढाल और बल्लम और तलवार का बोझ ढो रहे थे। जिस जगह उनके हथियारों की गर्म धातु उनकी चमड़ी से छुलती थी वहाँ पर ज़ख़्म हो गये थे और फिर यह भी उनको पता चला कि वे नर्म-नर्म ख़ूबसूरत परेड बूट जो कि सरकस मैक्सिमस के मैदान में इतने ठाठदार नज़र आते थे वे सड़कों और मैदानों पर चलने के उतने काम के न थे। तीसरे पहर की बारिश ने उनको भिगो दिया और शाम होते-होते वे बहुत उदास और दुखी और नाराज़ हो गये थे।

ग्रैकस की आँखों के आगे उनकी तसवीर सी खड़ी थी, सैनिकों की लम्बी·

सी क़तार, ऐपियन मार्ग से ज़रा हटकर, धूल से ढँके हुए गाड़ी के रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई, उनके टोपों के गीले पंख अपनी जगह पर से भूलते हुए और खुद उनकी हालत अब ऐसी कि शिकायत का स्वर भी उनकी थकान के भीतर जाकर खो गया था। लगभग इसी वक्त उन्होंने खेत पर काम करने वाले उन चार गुलामों को पकड़ पाया और मार डाला। तीन आदमी और एक औरत।

—तुमने उन्हें क्यों मारा, ग्रैकस ने बाधा दी।

—हमारा ख़याल था कि उस पूरे इलाक़े में हर गुलाम हमारे ख़िलाफ़ है।

—अगर वे तुम्हारे ख़िलाफ़ थे तो फिर क्यों तुम्हारी क़तारों को मार्च करते हुए देखने के लिए अपनी पहाड़ियों से उतरकर नीचे सड़क पर आये थे?

—मुझे नहीं मालूम। दो नंबर टुकड़ी के लोगों ने यह काम किया था। उन्होंने क़तारें तोड़ दीं और उस औरत को पकड़ लिया। उन आदमियों ने उसको बचाने की कोशिश की तो सिपाहियों ने उनको बर्छी भोंककर मार डाला। मुश्किल से एक मिनट लगा होगा और वे तीनों आदमी मर चुके थे। जब मैं वहाँ पर पहुँचा—

—तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारी रेजीमेण्ट ने भी क़तार तोड़ दी थी? —ग्रैकस ने जवाब तलब किया।

—जी हुजूर। पूरी फ़ौज ने यही किया था। हम लोग उस जगह के इर्द-गिर्द भीड़ लगाकर खड़े हो गये—यानी हममें से वे लोग जो कि उस घटना-स्थल पर पहुँच सके। उन्होंने उस औरत के कपड़े नोच डाले और उसके हाथ-पांव अच्छी तरह छितराकर उसे वहीं नङ्गा ज़मीन पर लिटा दिया और फिर एक के बाद एक उन लोगों ने—

—उसके विस्तार में जाने की ज़रूरत नहीं है, ग्रैकस ने बाधा दी। तुम्हारे अफ़सरों ने हस्तक्षेप किया?

—नहीं हुजूर।

—तुम्हारा कहने का मतलब है कि उन्होंने इस चीज़ को होने दिया और कुछ भी नहीं बोले?

सैनिक ने कोई जवाब नहीं दिया और एक क्षण तक यों ही खड़ा रहा।

—मैं चाहता हूँ कि तुम सच सच बात कहो। मैं नहीं चाहता कि तुम सच बात कहने से डरो।

—अफ़सरों ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया। वे कुछ भी नहीं बोले।

—वह औरत मरी कैसे?

—जो कुछ उसके संग किया जा रहा था उसी से वह मर गयी, सैनिक ने

धीरे से जवाब दिया। तब उन्होंने उसको फिर से अपनी बात कहने के लिए आदेश दिया। अब उसकी आवाज़ और भी डूब गयी।

उसने बतलाया कि उस रात को उन लोगों ने कैसे पड़ाव डाला था।—दो टुकड़ियों ने अपने तम्बू भी नहीं ताने। रात गर्म थी और सैनिक खुले मैदान में सो गये।—यहाँ पर उसको बाधा दी गयी।

—क्या तुम्हारे कमाण्डर ने बाक़ायदा क़िलेबन्दी के साथ पड़ाव डालने की कोशिश की? तुम्हें पता है कि उसने ऐसी कोशिश की या नहीं?

यह रोमन सेना के लिए गर्व की बात थी कि कोई भी सैनिक किसी जगह एक रात के लिए भी बिना क़िलेबन्दी के पड़ाव नहीं डालता। वह शहतीरें खड़ी करता है या मिट्टी की दीवार बनाता है, खाई खोदता है, खम्भे गाड़ता है और कुल मिलाकर उस जगह को एक छोटे-मोटे क़िले का रूप दे देता है।

—मैं जानता हूँ कि लोग क्या कहते थे।

—हमको वही बतलाओ।

—वे कहते थे कि वारिनियस ग्लैबरस ऐसा करना चाहता था मगर रेजीमेण्ट के कमाण्डरों ने उसे नहीं करने दिया। सैनिक कहते थे कि अगर वे सब लोग एकमत हो भी जायँ तो भी हमारे पास न तो कोई इंजीनियर है और न हमने उस चीज़ की कोई ढङ्ग की योजना ही बनायी है। वे कहते थे, श्रीमान्—

—डरो मत, हमको बतलाओ कि वे क्या कहते थे।

—जी हाँ, वे कहते कि जिस तरह से इस चीज़ की योजना बनायी गयी थी उसमें कोई तुक न थी। मगर अफ़सरों का कहना था कि मुट्ठी भर गुलाम कोई ऐसा बड़ा ख़तरा नहीं हैं। रात होने ही वाली थी और जैसा कि मैंने सुना, उन अफ़सरों की दलील यह थी कि अगर वारिनियस ग्लैबरस को क़िलेबन्दी के साथ ही पड़ाव डालना था तो उसने क्यों हमको ख़ामख़ा झुटपुटे के इस वक़्त तक मार्च कराया? सिपाही भी यही कह रहे थे। इस पूरी यात्रा में यही सबसे बुरा मार्च था। पहले तो धूल से भरी हुई सड़कों पर, इतनी धूल इतनी धूल कि हम लोग साँस भी नहीं ले पाते थे, और फिर उसके बाद मूसलाधार बारिश में। वे कहते थे कि अफ़सरों के लिए तो सब ठीक है, उनको क्या वे तो अपने घोड़ों पर सवार हैं मगर हमको तो पैदल चलना पड़ता है। मगर दलील यह थी कि चूंकि हमारा सामान लेकर अब गाड़ियाँ चल रही थीं इसलिये जब तक कि गाड़ियाँ हमारे सङ्ग हैं हमको ज़्यादा से ज़्यादा फ़ासला तय कर लेना चाहिए।

—तब फिर तुम कहाँ थे?

—पहाड़ के बहुत पास।

हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि यह डरा हुआ, कल्पना-शक्ति से हीन सैनिक जिन सीधे-सादे सपाट शब्दों में अपनी साखी दे रहा था उनकी अपेक्षा उसकी बातों से निकलती हुई तसवीरों के ज़रिये उन बातों को याद करने में ज़्यादा आसानी पड़ती थी। और इनमें से कुछ तसवीरें ग्रैकस के दिमाग़ में इतनी साफ़ थीं कि उसको कभी-कभी लगता था कि जैसे उसने खुद अपनी आँखों से उन घटनाओं को देखा हो। धूल से ढँकी हुई वह सड़क जो संकरी होती होती बैलगाड़ी की एक छोटी-सी पगडण्डी बन जाती है, जागीरों के वे खूबसूरत खेत और चरागाह जिनके ख़त्म हो जाने पर झाड़ियों से भरे हुए जङ्गल, ज्वालामुखी की सूनी-सूनी चट्टानें, विसूवियस की विचारशील मुद्रा की गरिमा। वे छहों सैन्य दल एक मील दूर तक सड़क पर फैले हुए थे। सामान की गाड़ियाँ कच्चे रास्ते पर गड्ढों में से अपना रास्ता बनाते हुए घिसटती चली जा रही थीं। सैनिक सब असन्तुष्ट थे और थके हुए थे। और तभी उन्हें अपने सामने एक चट्टान की चोटी दिखलायी दी और उसके नीचे एक छोटा सा खुला मैदान जिसके बीच से होकर एक पतला-सा पहाड़ी नाला बहता था और फिर बटरकप और डेज़ी के फूल और नर्म घास; और रात हो रही थी।

उन लोगों ने वहीं पर अपना पड़ाव डाला और क़िलेबन्दी के सवाल पर वारिनियस ने उन अफ़सरों की बात मान ली। इसकी भी तसवीर ग्रैकस की आँखों के आगे खिंची हुई थी। रेजीमेण्ट के कमाण्डरों ने कहा होगा कि उनके पास तीन हजार से ऊपर रोमन सैनिक हैं और वह अच्छी तरह हथियारों से लैस हैं। ऐसे में आक्रमण की भला क्या आशंका? इतने पर भी कोई हमला कर सकता है? विद्रोह के शुरू में ही ग्लैडिएटरों की संख्या मुश्किल से दो सौ रही होगी और उनमें से बहुत से मारे भी जा चुके। और हमारे सैनिक जो थे वे बहुत थके हुए थे। उनमें से कुछ घास पर लेटे और उसी दम सो गये। कुछ टुकड़ियों ने तम्बू खड़े करने की और रेजीमेण्ट की सड़कों को ठीक ढङ्ग से बनाने की कोशिश की। ज़्यादातर टुकड़ियों ने रसोई के लिए आग भी तैयार की मगर चूंकि सामान की गाड़ियों में बहुत ढेर सी रोटी भी थी इसलिए कुछ ने वह आग जलाना भी जरूरी न समझा। पहाड़ के साये में हमारे खेमे की उस वक़्त यही तसवीर थी। वारिनियस ने खेमे के बिलकुल बीचों-बीच अपना तम्बू खड़ा करवाया था और वहाँ पर हमारी सेना का झण्डा और अपना सेनेटर का राजचिन्ह गाड़ दिया था। कापुआ के लोगों ने बहुत ही स्वादिष्ट चीज़ें तैयार करके झोलों में हमारे साथ रख दी थीं। वह अपने बड़े अफ़सरों के साथ बैठकर उनका खूब भोग लगाता था—उसको भी शायद अब इतमीनान था कि चलो क़िलेबन्दी कराने की झंझट से बचे।

कुछ भी कहो यह दुनिया की सबसे बुरी लड़ाई तो थी नहीं। इसमें इज़्ज़त भी थी और शायद थोड़ी सी प्रसिद्धि भी और यह सब कुछ हमारी महान् नगरी से चन्द दिनों के मार्च के फ़ासले पर।

इस तरह अपनी स्मृति में ग्रैकस ने अपने भीतर की उस आँख पर, जो उसे जानवरों से अलग करती थी और उन से ऊँची सतह पर बिठाल देती थी, उन तसवीरों का अक्स फेंका जिनसे कि कहानी शुरू हुई थी। स्मृति ही मनुष्य जाति का सुख और दुःख है, उसका हर्ष और विषाद। ग्रैकस धूप में खूब फैलकर बैठा हुआ था और अपने हाथ के पानी के गिलास में देख रहा था और उस दयनीय सैनिक की दूरागत गूंज को सुन रहा था जो राजदूत का हाथीदांत का बना राजदण्ड लेकर लौट आया था। तसवीरें आती जा रही थीं। उन लोगों को कैसा लगता होगा जिन्हें कुछ ही घण्टों में मौत का सामना करना हो मगर जिन्हें इसका कुछ भी पता न हो? क्या वारिनियस ग्लैबरस ने कभी स्पार्टकस का नाम सुना था? शायद नहीं।

—मुझे याद है कि कैसे रात हुई और कैसे उस वक्त आसमान में तमाम तारे खिले हुए थे, सैनिक ने पत्थर के मे चेहरेवाले उन सेनेटरों से कहा।

यह एक बेवकूफ़ की वक्तृता का सहज सौन्दर्य था। रात हुई और वारिनियस ग्लैबरस और उसके अफ़सर अपने आमोद-कक्ष में बैठे हुए शराब पी रहे होंगे और शहद में डूबे हुए टुकड़ों में से गोश्त कुतर रहे होंगे। उस रात बड़ी अच्छी बातें हुई होंगी, बड़ी चुस्त-दुरुस्त बातें। यहाँ पर दुनिया के अब तक के सब से सुसंस्कृत समाज के वे बहुत से नवयुवक इकट्ठा थे। अच्छा, बोलो तो उन्होंने काहे के बारे में बातें की होंगी? अब चार बरस बाद ग्रैकस ने याद करने की कोशिश की कि उस समय किन चीज़ों की सब से ज़्यादा चर्चा थी—रंगमंच पर, घुड़दौड़ के मैदान में, अखाड़े में? अच्छा यह तो बोलो कि क्या यह पाकूवियस के नाटक 'आरमोरम यूडीसियम' के नये अभिनय के कुछ ही दिन बाद की बात तो नहीं है? और क्या उस समय फ्लैवियस गैलिस ने अपनी नायक की भूमिका जैसे गाकर अदा की थी वैसे उसके पहले कभी नहीं हुई थी? (या यह केवल कल्पना की ही बात है कि कोई भूमिका ऐसी अभिनीत होती है या गायी जाती है जैसी कि पहले कभी अभिनीत न हुई थी, गायी न गई थी?) मगर तब भी हो सकता है और शायद नगर के सैन्य दल के उन नवयुवकों ने शराब की चुसकियाँ लेते हुए अपनी आवाज़ें ऊँची करके कहा होगा :

ज़िन्दगी हसीन है ज़िन्दगी जवान है

उनकी आवाज़ गूंजी होगी और शायद खेमे के तमाम लोगों ने सुना होगा। क्या ताज्जुब, बहुत मुमकिन है। स्मृति एक अजीब चीज़ है, वह हर बात को कुछ का कुछ बना देती है। खेमे में सभी जगह थकान ग़ायब हो गयी

होगी। शहर की टुकड़ी के लोग चित लेटे हुए थे, अपनी रोटी चबा रहे थे और सितारों को देख रहे थे, यानी वे जिन्होंने तम्बू नहीं खड़े किये थे, और इस तरह नींद आ गयी, मीठी कोमल नींद आ गयी रोम के उन तीन हज़ार और कुछ सैनिकों को जो दक्षिण चलकर विसूवियस पहाड़ तक इसीलिए गये थे कि गुलामों को सबक़ दें कि उन्हें अपने मालिकों के खिलाफ़ कभी हाथ उठाने की जुर्रत न करनी चाहिए....

ग्रैकस सेनेटर इन्क्विज़िटर था। उसका काम प्रश्न पूछना था और उस सैनिक के एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच सेनेट के कक्ष में ऐसी निविड़ शान्ति होती थी कि मक्खी का उड़ना भी सुना जा सकता था।

—तुम सोये थे? ग्रैकस ने पूछा।

—मैं सोया था, उस डरे हुए सैनिक ने उत्तर दिया जो गवाही देने के लिए अकेला बच रहा था और यहाँ लौटकर आया था।

—और फिर किस चीज़ ने तुमको जगाया?

यहाँ पर सैनिक शब्दों के लिए अटकने लगा जैसे उसकी समझ मे न आ रहा हो कि कैसे कहे। उसका चेहरा बिलकुल सफ़ेद हो गया और ग्रैकस ने समझा कि अब वह बेहोश होने ही वाला है मगर वह बेहोश नहीं हुआ और यहाँ पर आकर उसकी रिपोर्ट बहुत स्पष्ट और सुसंगत हो गयी लेकिन हाँ, उसमें भावना का लेश मात्र भी न था। जो कुछ उसने देखा उसके अनुसार उसका कहना था कि यह हुआ।

—मैं सो गया था और फिर मैं जाग पड़ा क्योंकि कोई चीख रहा था। कम से कम मैंने सोचा कि काई एक आदमी चीख़ रहा है मगर जब मैं जागा तो मेरी समझ में आया कि यह तो हवा में बहुत से लोगों की चीख़ भरी हुई है। मैं जाग पड़ा और फ़ौरन पलट गया। मैं पेट के बल सोता हूँ इसीलिए मैं पलट गया। मेरे बग़ल में कैलियस सो रहा था जिसका बस इतना ही नाम है। वह सड़कों पर से उठाया हुआ एक अनाथ लड़का था मगर वही मेरा सबसे पहला और सबसे अच्छा दोस्त था। वह मेरा दाहिना हाथ था और इसीलिए हम लोग अग़ल-बग़ल सोते थे और जब मैं पलटा तो मेरी दाहिनी कलाई किसी गीली और गर्म और मुलायम चीज़ में पड़ गयी और जब मैंने उस पर नज़र डाली तो देखा कि वह तो कैलियस की गर्दन थी मगर गर्दन ऐसी कि ऊपर से नीचे तक एकदम कटी हुई, और हवा में वह चीख़ तो पूरे वक्त भरी ही रही। फिर मैं खून से लथपथ उठ बैठा और मेरी समझ में नहीं आया कि यह मेरा खून है या किसी और का। मगर वह ख़ैर जो भी हो मेरे चारों तरफ़ उस चाँदनी में लाशें पड़ी हुई थीं, वहीं पर जहाँ पहले वे सो रही थीं और सारे ख़ेमे में गुलाम भरे हुए थे जिनके पास उस्तरे की

तरह तेज़ छुरे थे और उनके यह छुरे ऊपर उठते थे और नीचे आते थे और फिर ऊपर उठते थे और फिर नीचे आते थे और चाँद की रोशनी में चमक-चमक जाते थे और इसी तरह हम लोग मारे गये, हममें से आधे तो सोते में ही मारे गये और जब कोई आदमी उछलकर खड़ा होता था तो वे लोग उसको भी मार डालते थे। यहाँ वहाँ कुछ थोड़े से सैनिकों ने एक छोटी सी टोली बनायी मगर वे ज़्यादा देर तक लड़ नहीं सके। इससे भयानक कोई चीज़ मैंने अपनी ज़िन्दगी में न देखी थी और वे गुलाम अपनी मार-काट में बराबर लगे हुए थे और रुकते ही न थे। फिर मैं भी पागल सा हो गया और चीख़ने लगा। मुझे यह बात कहने में कोई शर्म नहीं है। मैंने अपनी तलवार निकाल ली और बड़ी तेज़ी से ख़ेमे में होकर भागा और रास्ते में एक गुलाम पर वार किया और मेरा ख़याल है कि मैंने उसे मार भी गिराया मगर जब मैं उस चरागाह के सिरे पर पहुँचा तो मैंने देखा कि ख़ेमे के चारो तरफ़ नेज़ों की एक ठोस क़तार है और जो उन नेज़ों को उठाये हुए थे उनमें से ज़्यादातर औरतें थीं मगर वैसी औरतें नहीं जैसी कि मैंने कभी देखी थीं या कल्पना की थीं बल्कि बड़ी भयानक वहशियाना औरतें थीं वे और उनके बाल रात की हवा में उड़ रहे थे और उनके मुँह नफ़रत की एक भयानक चीख़ में खुले हुए थे। जो चीख़ मैं सुन रहा था उसमें इस चीख़ का भी हिस्सा था और तभी एक सैनिक तेज़ी से मेरी बग़ल से गुजरा और सीधे उन्हीं नेज़ों से जा टकराया क्योंकि उसे उम्मीद न थी कि वे औरतें उसे नेज़ा भोंक देंगी। मगर उन्होंने भोंक दिया और कोई भी उस जगह से भाग नहीं सका। और जब घायल लोग घिसटते हुए आये तो उन्होंने उनको भी अपने नेज़े भोंक दिये। मैं दौड़कर उस क़तार तक गया और उन्होंने मेरी बाँह में नेज़ा मार दिया और तब मैं वहाँ से बचकर भागकर वापस ख़ेमे में पहुँच गया और उसी ख़ून में गिर पड़ा और पड़ा रहा। मैं वहाँ पर पड़ा रहा और मेरे कानों में वे चीख़ें गूँजती रहीं। मुझे नहीं मालूम कि मैं कितनी देर तक वहाँ पड़ा रहा। मालूम तो नहीं होता था कि ज़्यादा समय गुज़रा है। मैंने अपने मन में कहा, अब तुम उठोगे और लड़ोगे और मरोगे मगर मैं इन्तज़ार करता रहा। इसके बाद चीख़-पुकार कम हो गयी और तब कुछ हाथों ने मुझे पकड़ा और मुझे अपने पैरों पर खड़ा किया, और मैंने उन पर अपनी तलवार चला दी होती मगर उन्होंने एक झटका देकर उसे मेरे हाथ से गिरा दिया था और मेरे हाथ में उस नेज़े की चोट के दर्द की वजह से ताक़त न थी। उन गुलामों ने मुझे पकड़ लिया और मेरी गर्दन काटने के लिए एक छुरा उठा और फिर मैं समझ गया कि अब मेरा काम तमाम हुआ। मगर तभी किसी ने पुकारकर कहा, रुको! और छुरा रुक गया। वह मेरे

गले से एक इंच की दूरी पर रुका रहा। फिर एक गुलाम वहाँ पर आया, उसके भी हाथ में वह थ्रेसियन छुरा था और उसने कहा, रुको। मेरा ख़याल है कि यह अकेला बच गया है। वे लोग खड़े रहे और रुक गये, मेरी ज़िन्दगी भी रुकी रही। फिर एक लाल बालों वाला गुलाम आया और उन लोगों में आपस में बातचीत हुई। मैं अकेला बचा था। इसीलिए उन्होंने मुझको नहीं मारा। मैं अकेला बचा था और बाक़ी सब मर चुके थे। वे मुझे ख़ेमे के बीच होकर ले चले और मैंने देखा हमारे सैनिक सब मरे पड़े थे। हमारे अधिकांश सैनिक तो वहीं मरे पड़े थे जहाँ वे सोये थे। फिर वे कभी नहीं जागे। वे मुझको राजदूत वारिनियस ग्लैबरस के खेमे में ले गये। मगर वह भी मरा पड़ा था। वह अपनी गद्देदार कुर्सी पर मरा पड़ा था। हमारे दस्तों के कुछ अफ़सर भी उसी खेमे में थे क्योंकि वहीं पर वे भी मारे गये थे। सब मर चुके थे। इसके बाद उन्होंने मेरी बाँह के ज़ख़्म पर पट्टी बाँधी और फिर मुझ पर पहरा देने के लिए कुछ गुलामों को तैनात करके मुझे वहीं छोड़ दिया। अब आसमान का रङ्ग भूरा हो रहा था और पौ फट रही थी। मगर हमारे सैनिक सब मर चुके थे।

ये बातें उसने बिना किसी भावावेश के, सीधे सादे, काम की बात कहने के ढङ्ग पर कहीं। मगर उसकी दृष्टि अस्थिर थी और वह एक बार भी उन सेनेटरों की क़तारों से नज़र नहीं मिला सका जो पत्थर जैसे चेहरे लिये वहाँ पर बैठे थे।

—तुम्हें यह कैसे मालूम कि वे सब मर चुके थे—ग्रैकस ने पूछा।

—उन लोगों ने उस ख़ेमे में सबेरा होने तक मुझको रक्खा। उस ख़ेमे के आसपास नज़र के लिए कोई रुकावट न थी और मैं अपने पड़ाव की पूरी जमीन को देख सकता था। चीख़ें अब बन्द हो गयी थीं मगर मेरे सिर में अब भी चीख़ें गूँज रही थीं। मैं चारों तरफ़ निगाह दौड़ाकर देख सकता था और जहाँ भी मेरी नज़र जाती थी ज़मीन पर लाशें पड़ी हुई थीं। हवा में ख़ून और मौत की बू थी। उन औरतों में से ज़्यादातर अब वहाँ न थीं जिन्होंने हमारे चारों तरफ़ नेज़ों का वह घेरा डाला था। वे कहीं चली गयीं। मुझे पता नहीं वे कहाँ गयीं। मगर ख़ून की बू के बीच से मैंने आग पर भुनते हुए गोश्त की खुशबू भी पायी। हो सकता है कि वे औरतें नाश्ते के लिए गोश्त पका रही हों। मुझे तो यह सोचकर ही मितली आने लगी कि लोग ऐसे वक़्त भी खाना खा सकते हैं। मैंने क़ै कर दी। उन गुलामों ने मुझको ख़ेमे से घसीटकर बाहर कर दिया ताकि मैं अच्छी तरह क़ै कर लूँ। अब रोशनी काफ़ी फैल गयी थी। मैंने गुलामों की टोलियों को ख़ेमे के बीच आते-जाते देखा। वे मुर्दों के जिस्म पर से चीजें उतार रहे थे। यहाँ-वहाँ उन्होंने हमारे तम्बू

फैला दिये थे। मैं वहाँ सब जगह ज़मीन पर इन सफ़ेद धब्बों को देख सकता था। मुर्दों के जिस्म पर जो कुछ था उन्होंने सब उतार लिया, ज़िरह-बख़्तर और कपड़े और बूट और फिर उनके ढेर उन फैले हुए तम्बुओं पर लगा दिये। तलवारों और नेज़ों और ज़िरहबख़्तर को उन्होंने नाले में धो लिया। यह पहाड़ी नाला ख़ेमे के बिलकुल पास से होकर बहता था और उसके अन्दर जो खून में लिथड़े हुए हथियार और ज़िरहबख़्तर धोये गये थे उससे नाले का पानी जङ्ग के रङ्ग का हो गया था। इसके बाद उन्होंने हमारे ग्रीज़ के डब्बे लिये और हथियारों का पानी पोंछ कर उनमें ग्रीज़ लगा दी। ख़ेमे से दो ही चार क़दम पर एक तम्बू फैलाया हुआ था। उस पर वे तलवारों के ढेर लगा रहे थे, हज़ारों तलवारें—

—वहाँ पर कितने गुलाम थे? ग्रैकस ने पूछा।

—सात-आठ सौ, या हो सकता है एक हज़ार रहे हों—मैं कह नहीं सकता। वे दस-दस की टोलियों में काम कर रहे थे। वे बड़ी मेहनत से काम कर रहे थे। उनमें से कुछ ने हमारी सामान ढोनेवाली गाड़ियों को जोता और उन पर वे तमाम चीज़ें लादीं जो उन्होंने मुर्दों के जिस्म पर से उतारी थीं और गाड़ियों को हाँक ले गये। जब वे लोग काम कर रहे थे तभी उनमें से कुछ औरतें डोलचियों में भुना हुआ गोश्त लेकर आयीं। एक वक़्त में एक टोली रुककर खाना खा लेती थी। वे हमारी तमाम रोटियाँ भी खा गये।

—लाशों का उन्होंने क्या किया?

—कुछ नहीं। जहाँ पर वे थीं वहीं उन्हें छोड़ दिया। वे लोग इस तरह से वहाँ आ जा रहे थे, मुर्दों के जिस्म पर से चीज़ें उतारने के बाद, कि जैसे वहाँ पर लाशें हों ही नहीं। और लाशें सब जगह थीं। ज़मीन पर उनकी क़ालीन-सी बिछी हुई थी और धरती उनके खून से तर थी। अब सूरज ऊपर चढ़ आया था। ऐसी भयानक चीज़ मैंने कभी नहीं देखी थी। तभी मैंने गुलामों की एक टोली को मैदान के एक सिरे पर खड़े होकर यहाँ जो कुछ हो रहा था उस सब को देखते पाया। उस टोली में छः लोग थे। उनमें से एक काला आदमी था, अफ्रीकी हब्शी। वे लोग ग्लैडिएटर थे।

—तुमको यह बात कैसे मालूम हुई कि वे ग्लैडिएटर थे?

—वे लोग जब उस जगह पर आये जहाँ पर मैं था यानी ख़ेमे में तो मैं उन्हें देखकर पहचान गया कि वे ग्लैडिएटर थे। उनके बाल बहुत ही छोटे कटे हुए थे और उनके शरीर भर में तमाम घावों के निशान ही निशान थे। ग्लैडिएटर को पहचानना कुछ वैसी मुश्किल बात नहीं है। उनमें से एक का एक कान ग़ायब था। एक के बाल लाल थे। मगर टोली का नेता एक थ्रेसियन

था। उसकी नाक टूटी हुई थी और काली-काली आँखें ऐसी थीं कि बिना हिले-डुले और बिना एक बार झपके बराबर सामने को देखती रहती थीं।

अब उन सेनेटरों में कुछ अन्तर आ गया था। अभी यह अन्तर अस्पष्ट और अलक्षित सा ही था मगर था ज़रूर। वे लोग एक नये ढङ्ग से अब बात सुन रहे थे। अब वे नफ़रत और तनाव और और भी गहरी दिलचस्पी से बात सुन रहे थे। ग्रैकस को उस क्षण की याद बहुत अच्छी तरह थी क्योंकि उसी क्षण स्पार्टकस का जन्म हुआ, वह न जाने कहाँ से निकलकर आया और सारी दुनिया को हिला गया। दूसरे व्यक्तियों की कहीं पर जड़ें होती हैं, कोई अतीत होता है, कहीं आरम्भ होता है, कोई स्थान होता है, ज़मीन होती है, देश होता है—मगर स्पार्टकस के पास यह सब कुछ नहीं था। उसका जन्म एक सैनिक के होंठों पर हुआ जो बच गया था और जिसे स्पार्टकस ने इसीलिए बचाया था ताकि वह लौटकर सेनेट के लोगों से कहे कि वह आदमी ऐसा था और ऐसा था। वह देखने-सुनने में कोई देव न था और न वहशी नज़र आता था और न वह कोई बड़ा ख़ूंख़्वार भयानक आदमी था। वह तो महज़ एक गुलाम था, मगर उस आदमी में सैनिक ने ऐसी कोई चीज़ देखी थी जिसे विस्तार से बतलाना ज़रूरी था।

—और उसका चेहरा मुझे भेड़ के चेहरे-जैसा लगा। वह ट्यूनिक पहने हुए था और पीतल की बनी भारी-सी पेटी लगाये था और ऊँचे-ऊँचे बूट पहने था मगर न तो उसके जिस्म पर कोई ज़िरहबख़्तर था और न सिर पर लोहे का टोप। उसकी पेटी में एक छुरा लगा हुआ था और बस वही हथियार था उसके पास। उसकी ट्यूनिक पर ख़ून के छींटे थे। उसका चेहरा ऐसा था कि एक बार देख लेने पर फिर कोई उसे भूल नहीं सकता। उसको देखकर मुझे डर मालूम हुआ। दूसरों से मुझे डर नहीं मालूम होता था मगर उससे डर मालूम हुआ। सैनिक उनको यह बता सकता था कि कैसे उसने सपने में उस चेहरे को देखा और कैसे वह डरकर जाग गया और उसके शरीर से ठण्डा-ठण्डा पसीना छूट रहा था और वह सपाट, धूप से तपा हुआ, टूटी नाक और काली-काली आँखोंवाला चेहरा उसे अपनी आँखों के आगे खड़ा दिखायी दे रहा था। मगर इस तरह की तफ़सीली बातें कहीं सेनेट से कही जाती हैं? सेनेट को उसके सपनों में दिलचस्पी न थी।

—तुमको यह कैसे मालूम कि वह थ्रेसियन है?

—उसके उच्चारण से मैं जान गया। वह ग़लत-सलत लैटिन बोल रहा था और मैंने थ्रेसियनों को बोलते सुना है। बाक़ियों में से भी एक थ्रेसियन था और शेष शायद सब गॉल थे। वे बस मुझे देख रहे थे, मुझ पर नज़र डाल रहे थे। मुझे लगा कि मैं भी दूसरों के साथ मर गया हूँ। उन्होंने मुझ

पर नज़र डाली और ख़ेमे के दूसरी ओर चले गये। कमाण्डर के खेमे से लाशें निकालकर अब बाहर सभी सैनिकों की लाशों के साथ ज़मीन पर डाल दी गयी थीं। मगर उसके पहले उन लोगों ने वारिनियस ग्लैबरस के शरीर पर की हर चीज़ उतार ली थी और उसका ज़िरहबख़्तर और तमाम चीज़ें जो उसके पास थीं उनका ढेर गद्देदार कुर्सी पर लगा हुआ था। उसका राजदूत का दण्ड भी उसी कुर्सी पर ही था। गुलाम लौट आये और उस कुर्सी के इर्दगिर्द खड़े हो गये और ज़िरहबख़्तर को, कमाण्डर की तमाम चीज़ों को देखने लगे। उन्होंने तलवार उठा ली और उसका मुआइना किया और फिर वह एक के हाथ से दूसरे के हाथ में घूमने लगी। उसकी म्यान हाथी दाँत की थी और उस पर ऊपर से नीचे तक नक्काशी की हुई थी। उन लोगों ने उसको देखा और फिर वहीं कुर्सी पर डाल दिया। इसके बाद उन्होंने उस दण्ड की परीक्षा की। वह टूटी हुई नाक वाला आदमी—उसका नाम स्पार्टकस है—मेरी ओर मुड़ा और उस दण्ड को हाथ में लेकर उसने मुझसे पूछा—रोमन, तुम्हें मालूम है यह क्या है? मैंने जवाब दिया—यह हमारे महान् सेनेट की बांह है। मगर उनकी समझ में कुछ नहीं आया। मुझे उनको अपनी बात समझानी पड़ी। स्पार्टकस और वह लाल सिर वाला गॉल दोनों उस गद्देदार कुर्सी पर बैठ गये। बाक़ी लोग खड़े रहे। स्पार्टकस ने अपनी ठुड्डी अपने हाथों में ले ली, कोहनी अपने घुटनों पर टिका ली और मुझको एकटक देखने लगा। मुझको उस वक़्त ऐसा लगा कि जैसे कोई साप मुझे घूर रहा हो। इसके बाद जब मेरा बोलना ख़त्म हो गया तो उन्होंने कुछ नहीं कहा और स्पार्टकस मुझे उसी तरह घूरता रहा। मुझको महसूस हुआ कि मेरे सारे जिस्म से पसीना छूट रहा है। मैंने सोचा कि अब वे लोग मुझको मारने जा रहे हैं। तब उसने मुझको अपना नाम बतलाया। उसने कहा, मेरा नाम स्पार्टकस है। मेरे नाम को याद रखना, रोमन। और वे लोग फिर मुझे उसी तरह घूरने लगे। और तब स्पार्टकस ने कहा, तुमने कल उन तीन गुलामों को क्यों मारा रोमन? उन्होंने ने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा था। वे लोग तो केवल उधर से गुज़रते हुए सैनिकों को देखने के लिए आये थे। क्या रोम की स्त्रियां इतनी सती-साध्वी हैं कि एक पूरी सेना को एक बेचारी गुलाम औरत के ऊपर बलात्कार करना पड़ता है? तुमने ऐसा क्यों किया रोमन? मैंने उसको बतलाना चाहा कि क्या हुआ था। मैंने उसको बतलाया कि हमारी दूसरी टुकड़ी ने उसके संग बलात्कार किया था और गुलामों को मारा था। मैंने उसको बतलाया कि मैं तीसरी टुकड़ी में था और मेरा इसमें कोई कसूर नहीं है और मैंने उस औरत के संग बलात्कार नहीं किया था। पता नहीं, उन्हें इस चीज़ के बारे में कैसे मालूम हो गया क्योंकि जब वे तीन गुलाम मारे गये उस वक़्त वहाँ पर कोई आस-पास न

था। मगर हम लोग जो कुछ भी करते थे उन्हें सब मालूम हो जाता था। उन्हें मालूम था कि हम लोग कापुआ कब आये। उन्हें मालूम था कि हम लोग कापुआ से कब चले। ये सारी बातें उसकी उन काली-काली सांप जैसी आँखों में थीं, जो कभी झपकती न थीं। ये सारी बातें उसकी आवाज़ में थीं। वह कभी अपनी आवाज़ चढ़ाता न था। वह मुझसे उसी तरह बात कर रहा था जैसे कोई बच्चे से बात करता है। मगर उसके इस तरह बात करने से मैं चकमे में आनेवाला थोड़े ही था। वह हत्यारा था। उसकी आँखें यह बात कह रही थीं। उन सब की आँखों में यही बात थी। वे सब हत्यारे थे, खूनी। मैं वैसे ग्लैडिएटरों को जानता हूँ। ग्लैडिएटर ही खूनी बन जाते हैं। उस रात उन लोगों ने जैसा कत्लेआम किया था, ग्लैडिएटर ही कर सकते थे। मैं ग्लैडिएटरों को जानता हूँ जो—

ग्रैकस ने बाधा दी। वह सैनिक मन्त्रमुग्ध सा अपनी ही बात के नशे में था और कुछ तेज़ ढङ्ग से ही ग्रैकस को उससे कहना पड़ा—सैनिक, तुम जो सब जानते हो उसमें हमारी दिलचस्पी नहीं। हमें सिर्फ़ इसमें दिलचस्पी है कि तुम्हारे और गुलामों के बीच क्या हुआ।

—यह हुआ, सैनिक ने शुरू किया और फिर रुक गया। वह नींद से जैसे जागा और उसने शक्तिशाली रोम के उन महान् सेनेटरों के चेहरे एक के बाद एक देखे। वह कांप उठा और बोला, इसके बाद मैं इन्तज़ार करने लगा कि वे मुझको बतलायेंगे कि अब मेरे संग वे क्या करने जा रहे हैं। स्पार्टकस वहाँ बैठा था और वह राजदूत का दण्ड उसके हाथ में था। उसके ऊपर उसकी उँगलियाँ दौड़ रही थीं और फिर एकाएक उसने उसको मेरी तरफ़ बढ़ा दिया। मैं पहले तो समझा नहीं कि इसका क्या मतलब है या कि वह क्या चाहता है। उसने कहा—इसे लो, सैनिक। रोमन, इसे लो। लो इसे। मैंने ले लिया। उसने कहा, अब तुम महान् सेनेट की बांह हो। उसके चेहरे पर क्रोध का कोई भाव न था। वह कभी अपनी आवाज़ न चढ़ाता था। वह केवल एक तथ्य रख रहा था, मेरा कहने का मतलब कि उसके नज़दीक तो यह एक तथ्य ही था। यही वह चाहता था। मैं कुछ भी करने की हालत में न था। वर्ना उस पवित्र दण्ड का स्पर्श करने के पहले मैं मर गया होता। मैंने उसका स्पर्श न किया होता। मैं रोमन हूँ। मैं एक रोमन नागरिक हूँ।

—इसके लिए तुमको सज़ा नहीं मिलेगी, ग्रैकस ने कहा, अपनी बात जारी रक्खो।

स्पार्टकस ने फिर कहा—अब तुम महान् सेनेट की बाँह हो। तुम्हारी महान् सेनेट की बाँह लम्बी है और अब यहाँ पर तुम्हीं उसके अवशेष हो। सो मैंने दण्ड ले लिया और लिये रहा और वह मुझ पर अपनी आँखें गड़ाये बैठा

रहा और फिर उसने मुझसे पूछा, क्या तुम नागरिक हो रोमन ? मैंने उसको बतलाया कि मैं नागरिक हूँ। उसने सिर हिलाया और थोड़ा-सा मुस्कराया। उसने कहा, अब तुम राजदूत हो। मैं तुम्हें एक सन्देश देता हूँ। इसे अपनी महान् सेनेट के पास ले जाओ। शब्दशः—मैं जैसे कहता हूँ वैसे ही इसको ले जाकर उनको दो—फिर वह रुक गया। उसने बोलना बन्द कर दिया और सेनेट इन्तज़ार करने लगा। ग्रैकस भी इन्तजार करने लगा। वह नहीं चाहता था कि एक गुलाम के सन्देश के लिए उससे माँग करे। मगर तब भी उसे बोलना तो होगा। स्पार्टकस शून्य में से आ गया था—मगर अब तो वह सेनेट कक्ष के मध्य में खड़ा था और ग्रैकस ने उस समय उसको देखा वैसे ही जैसे बहुत बार बाद को भी देखा। यद्यपि कभी उसने स्पार्टकस नाम के रक्त-मांस के आदमी को नहीं देखा था।

और आखिरकार ग्रैकस ने सैनिक को बोलने के लिए कहा।

—मैं नहीं बोल सकता।

—सेनेट तुमको बोलने का आदेश देती है।

—यह एक गुलाम के शब्द थे। मेरी जबान कट कर गिर जाये।

—इस सब की जरूरत नहीं, ग्रैकस ने कहा, हमको बतलाओ कि इस गुलाम ने हमको बतलाने के लिये तुमसे क्या कहा था।

लिहाजा सिपाही ने स्पार्टकस के शब्द बोले। स्पार्टकस ने उससे यह कहा था—कई बरस बाद वह बात लगभग ऐसी ही कुछ उसे याद रह गयी थी और उसको याद करके ग्रैकस के सामने तसवीर आयी कि वह प्रिटोरियम कैसा रहा होगा, रोमन कमांडर का वह ठाठदार खेमा, जिस पर खुशनुमा नीले और पीले रङ्ग की पट्टियाँ हैं, मैदान के बीचों-बीच खड़ा हुआ और मैदान में तमाम नंगी लाशें बिछी हुईं, वह गुलाम स्पार्टकस कमाण्डर की गद्देदार कुर्सी पर बैठा हुआ, उसके सेनानायक ग्लैडिएटर उसके इर्द-गिर्द खड़े हुए और स्पार्टकस के सामने यह अकेला बचा हुआ भयभीत घायल रोमन सैनिक जिसे दो गुलाम पकड़े हुए थे और जिसके हाथ में शक्ति का वह राजदण्ड, सेनेट की वह बाँह थी !

—वापस जाओ और सेनेट से कहो, स्पार्टकस ने कहा, और उन्हें यह हाथीदाँत का डण्डा दे दो। मैं तुम्हें दूत बनाता हूँ, लौटकर जाओ और उनको बतलाओ कि तुमने यहाँ पर क्या देखा। उनको बतलाओ कि उन्होंने हमारे खिलाफ अपनी पल्टन भेजी थी और हमने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उनको बतलाओ कि हम लोग गुलाम हैं—उनकी जबान में, एक बोलनेवाला औजार, एक औजार जिसके पास आवाज है। उनको बतलाओ कि हमारी आवाज क्या कहती है। हम कहते हैं कि दुनिया तुम लोगों से

तङ्ग आ चुकी है, तुम्हारी उस सड़ी हुई सेनेट और तुम्हारे इस सड़े हुए रोम से तङ्ग आ चुकी है। दुनिया उस तमाम दौलत और तमाम शान-शौकत से तङ्ग आ चुकी है जो तुमने हमारे खून और हमारी हड्डी से निचोड़ा है। दुनिया कोड़ों का सङ्गीत सुनते-सुनते तङ्ग आ चुकी है। हमारे ये श्रेष्ठ रोमन बस एक यही सङ्गीत जानते हैं। मगर अब हम उस सङ्गीत को और नहीं सुनना चाहते। शुरू में सब लोग बराबर थे और शान्ति से रहते थे और जो कुछ उनके पास था उसे आपस में बाँट लेते थे। मगर अब दो तरह के लोग हैं, एक मालिक और एक गुलाम। मगर हमारी तरह के लोग तुम्हारी तरह के लोगों से ज्यादा हैं, बहुत ज्यादा। और हम तुमसे मजबूत हैं, तुमसे अच्छे हैं, तुमसे नेक हैं। इन्सानियत के पास जो कुछ अच्छा है वह हमारा है। हम अपनी औरतों की इज़्ज़त करते हैं और सङ्ग-सङ्ग दुश्मन से लड़ते हैं। मगर तुम अपनी औरतों को वेश्या बना देते हो और हमारी औरतों को मवेशी। हमारे बच्चे जब हमसे छिनते हैं तो हम रोते हैं और हम अपने बच्चों को पेड़ों के बीच छिपा देते हैं ताकि हम उन्हें कुछ और दिन अपने पास रख सकें; मगर तुम तो बच्चों को उसी तरह पैदा करते हो जिस तरह मवेशी पैदा किये जाते हैं। तुम हमारी औरतों से अपने बच्चे पैदा करते हो और उन्हें ले जाकर सबसे ऊँची बोली बोलनेवाले के हाथ गुलामों के हाट में बेंच देते हो। तुम आदमियों को कुत्तों में बदल देते हो और उन्हें अखाड़े में भेजते हो ताकि वे तुम्हारी तफ़रीह के लिए एक दूसरे के टुकड़े-टुकड़े कर डालें। तुम्हारी वे श्रेष्ठ रोमन महिलायें हमको एक दूसरे की हत्या करते देखती हैं और अपनी गोद के कुत्तों को प्यार से सहलाती जाती हैं और उन्हें एक से एक नफ़ीस चीजें खाने को देती हैं। कितने ज़लील लोग हो तुम और ज़िन्दगी को तुमने कितना गन्दा बना दिया है। इन्सान जो भी सपने देखता है उन सबका तुम मखौल उड़ाते हो। इन्सान के हाथ की मशक्कत का और उसके माथे से गिरे हुए पसीने की बूँद का। तुम्हारे अपने नागरिक सरकार के दिये हुए टुकड़ों पर जीते हैं और अपना दिन सरकस और अखाड़े में गुजारते हैं। तुमने इन्सान की जिन्दगी को एक मजाक बना दिया है और उसकी सारी खूबसूरती लूट ली है। तुम मारने के लिए मारते हो और खून को बहता हुआ देखकर तुम्हारी तफ़रीह होती है। तुम नन्हें-नन्हें बच्चों को अपनी खानों में रखते हो और उनसे इतना काम लेते हो कि वे कुछ ही महीनों में मर जाते हैं। और यह जो सारी दौलत तुमने इकट्ठा की है वह सारी दुनिया की चोरी करके। मगर अब यह चीज नहीं चल सकती। अपनी सेनेट से जाकर कह दो कि अब यह चीज ख़त्म हुई। औजार की यही आवाज है। अपनी सेनेट से जाकर कहो कि अपनी फौजें हमारे ख़िलाफ़ भेजें और

हम उन फ़ौजों को भी उसी तरह काटकर गिरा देंगे जैसे कि हमने इस फ़ौज को काटकर गिराया है और तुम्हारी फ़ौजों के हथियारों से हम अपने आपको लैस करेंगे। सारी दुनिया औजार की आवाज को सुनेगी—और हम सारी दुनिया के गुलामों से चिल्लाकर कहेंगे, उठो और अपनी जंजीरें तोड़ दो। हम सारी इटली में होकर गुजरेंगे और हम जहाँ भी जायेंगे गुलाम हमसे आकर मिल जायेंगे और फिर एक रोज हम तुम्हारी अमरावती पर धावा करेंगे, तुम्हारी अमर नगरी रोम पर और तब वह अमर न रह जायगी। अपनी सेनेट से जाकर यह कहो। उनसे जाकर कहो कि हम उनको पहले से बतला देंगे कि हम कब आ रहे हैं। और फिर हम रोम की दीवारें गिरा देंगे। और तब हम उस इमारत में आयेंगे जहाँ तुम्हारी सेनेट बैठती है और हम उनको उन ऊँची-ऊँची शानदार सीटों पर से उनको घसीटकर बाहर निकालेंगे और उनके चोगे चीर देंगे ताकि वे नंगे खड़े हो जायँ और उस हालत में, उसी नंगी हालत में, उनके ऊपर फैसला किया जा सके, उसी तरह जैसे सदा हमारे संग किया गया है। मगर हम उनके संग पूरा-पूरा न्याय करेंगे और न्याय से जो कुछ उनका प्राप्य होगा वह उनको देंगे। उन्होंने जो-जो अपराध किये हैं वह उनके सामने रक्खे जायँगे और उन्हें उनका पूरा हिसाब देना होगा। उनको जाकर बतला दो ताकि उनको अपनी तैयारी के लिए और अपनी आत्मपरीक्षा के लिए वक़्त मिल जाय। उन्हें गवाही देनी होगी और हम कुछ भूलते नहीं। और इसके बाद जब न्याय हो चुकेगा तब हम आज से अधिक सुन्दर नगर बनायेंगे, साफ़-सुथरे, खूबसूरत नगर जिनमें दीवारें न होंगी—जहाँ मानवता शान्ति से और सुख से रह सकेगी। सेनेट के लिए यही हमारा सन्देश है। यह उनके पास ले जाओ। उनसे कहना कि इसे स्पार्टकस नाम के एक गुलाम ने उनके पास भेजा है....

इसी तरह या लगभग इसी तरह सैनिक ने यह बात कही—बहुत पुरानी बात हुई, ग्रैकस ने सोचा—और इसी तरह सेनेट ने उसको सुना था, उनके चेहरे पाषाणवत् हो रहे थे। मगर यह तो बहुत पुरानी बात है। इतनी पुरानी कि बहुत कुछ तो भूली भी जा चुकी और स्पार्टकस के शब्द कहीं लिखे भी तो नहीं गये और उनका अस्तित्व अगर था तो कुछ थोड़े से लोगों की स्मृति में। सेनेट के कागज़ात में से भी ये शब्द मिटा दिये गये। यह बात ठीक थी, उतनी ही ठीक जितनी कि गुलामों के खड़े किये हुए उन स्मारकों को ढहा देना और पीसकर धूल कर देना। क्रैसस इस बात को समझता था गोकि क्रैसस कुछ मूर्ख-सा आदमी था। महान् सेनापति बनने के लिए कुछ मूर्ख होना जरूरी होता है जब तक कि वह स्पार्टकस न हो क्योंकि स्पार्टकस भी एक महान् सेनापति था। मगर वह भी मूर्ख था क्या? क्या

वे किसी मूर्ख के शब्द थे ? तब फिर यह कैसे होता है कि एक मूर्ख चार लम्बे सालों तक रोम की शक्ति का मुक़ाबला करता है और एक के बाद दूसरी रोमन सेना को चकनाचूर कर देता है और इटली को हमारे सैनिकों की एक कब्रिस्तान बना देता है ? वह कैसे होता है? वे कहते हैं कि वह मर गया। मगर कुछ लोगों का कहना है कि मुर्दे भी जीते हैं। क्या वह उसी की जीती-जागती मूर्ति है जो ग्रैकस की तरफ़ बढ़ती चली आ रही है ? दैत्याकार और तब भी उससे इतनी मिलती-जुलती, वही टूटी हुई नाक, वही काली-काली आँखें, वही कड़े घुँघराले बाल, छोटे-छोटे, उसकी खोपड़ी से चिपके हुए ? क्या मुर्दे चलते हैं ?

७

ग्रैकस का वह बड़ा-सा सिर सामने को लटक गया था—मगर उस हालत में भी वह अपने सुवासित जल के पात्र को ऐसे ढंग से पकड़े हुए था कि उसमें से एक बूँद भी नहीं गिरी। इसको देखकर एँटोनियस केयस ने मुसकराते हुए कहा—जरा इस बुड्ढे खुर्राट ग्रैकस को देखो !

—उनका मज़ाक़ मत बनाओ !—जूलिया ने कहा।

—कौन हँसता है ग्रैकस पर ? कोई तो नहीं, मेरी प्यारी जूलिया—सिसेरो ने कहा—मैं इस आन-बान को पाने के लिए सारी ज़िन्दगी कोशिश करूँगा।

—और तब भी उसके पास कभी न पहुँचोगे, हेलेना ने सोचा।

ग्रैकस जग गया और आँख झपकते हुए बोला—क्या मैं सो रहा था ? —यह उसकी ख़ास अपनी बात थी कि वह जूलिया की ओर मुड़ा—मेरी प्यारी, मैं तुमसे माफ़ी माँगता हूँ। मैं दिन के वक़्त सपना देख रहा था।

—अच्छी चीज़ों का ?

—पुरानी चीज़ों का। मैं नहीं समझता कि स्मृति मनुष्य के लिए वरदान है। अधिकतर वह अभिशाप ही होती है। मेरे पास आवश्यकता से अधिक स्मृतियाँ हैं।

—उतनी ही जितनी किसी और के पास, क्रैसस ने कहा, हम सभी के पास अपनी-अपनी स्मृतियाँ हैं और एक-सी अप्रिय।

—और प्रिय कभी नहीं ? क्लॉदिया ने पूछा।

ग्रैकस ने कहा—प्रिये, तुम्हारी स्मृति मेरे लिये जीवन की अन्तिम साँस तक सुनहली धूप की तरह रहेगी। एक बुड्ढे आदमी को इतना कहने दो।

—वह एक नौजवान को भी यह कहने देगी, ऐण्टोनियस केयस हँसा, अभी जब तुम सो रहे थे तो क्रैसस हमको बतला रहा था कि—

—क्या हम लोग स्पार्टकस को छोड़कर और किसी चीज़ के बारे में बात

नहीं कर सकते ?—जूलिया चीख़ पड़ी—क्या दुनिया में राजनीति और युद्ध को छोड़कर और कुछ नहीं है ? मुझे इस तरह की बातचीत से घिन आती है।

—जूलिया....ऐंएटोनियस केयस ने उसकी बात काटते हुए कहा।

वह रुक गयी, जल्दी से गले की घूँट निगली और फिर उसको देखने लगी। वह उससे उसी तरह बात कर रहा था जैसे कोई किसी जिद्दी बच्चे से करता है।

—जूलिया, क्रैसस हमारे अतिथि हैं। हम लोगों को उनसे ऐसी तमाम बातें मालूम करके खुशी हो रही है जो हमें दूसरी किसी तरह नहीं मालूम हो सकती थीं। मैं समझता हूँ कि क्रैसस की बात सुनने में तुमको भी आनन्द आयेगा जूलिया, बशर्ते तुम सुनो।

उसका मुँह खिंच उठा और उसकी आँखें लाल हो गयीं और उनमें पानी भर आया।

उसने अपना सिर झुका लिया। मगर क्रैसस ने बड़ी नम्रता से उससे क्षमा-याचना की।

—जूलिया, मेरी प्यारी! ऐसी बातें मुझे भी उतना ही उबाती हैं जितना कि तुम्हें। मुझे माफ़ करो।

ऐंएटोनियस केयस ने कहा—मेरा ख़याल है कि जूलिया भी सुनना चाहेगी, चाहोगी न जूलिया ? सुनना चाहोगी न जूलिया ?

—हाँ, उसने धीरे से बुदबुदाकर कहा, अपनी बात कृपया जारी रक्खो क्रैसस।

—नहीं-नहीं, बात क्या है ?

—मैं बड़ी बेवक़ूफ़ हूँ और मैंने बहुत बदतमीज़ी की, जूलिया ने ऐसे कहा जैसे कोई सबक़ दुहरा रही हो, बराय मेहरबानी अपनी बात जारी रक्खो।

तभी ग्रैकस ने इस बात में दख़ल दिया जो कि धीरे-धीरे बहुत ही अप्रिय रूप लेती जा रही थी। उसने बातचीत का रुख जूलिया की तरफ़ से क्रैसस की तरफ़ मोड़ दिया और बोला—मुझे विश्वास है कि मैं अंदाज़ लगा सकता हूँ कि सेनापति क्या कहना चाहते हैं। वे आप लोगों को बतला रहे थे कि गुलाम लोग इसलिए लड़ाइयाँ जीत जाते थे कि उनको आदमी की जिन्दगी के लिए कोई भी लिहाज़ न था। उनकी वे जंगली भीड़ें हमारे ऊपर चढ़ आती थीं और फिर हमारा कुछ बस न चलता था। क्यों मैं ठीक बात कह रहा हूँ क्रैसस ?

—इससे ज़्यादा ग़लत बात तुम दूसरी नहीं कह सकते थे, हेलेना हँसी।

ग्रैकस ने अपने आप को दूसरों के मज़ाक़ का निशाना बनने दिया और

यहाँ तक कि जब सिसेरो ने अपनी यह बात कही तो भी उसका बुरा न माना —ग्रैकस, मैं हमेशा समझता था कि कोई भी जिसका प्रचार तुम्हारे जैसा हो वह स्वयं अपने ही प्रचार पर विश्वास किये बिना नहीं रह सकता।

—कुछ-कुछ तो विश्वास हो ही जाता है, ग्रैकस ने बड़ी उदारता से स्वीकार कर लिया, रोम महान् है क्योंकि रोम खड़ा है। स्पार्टकस घृण्य है क्योंकि स्पार्टकस उन सलीबों से ज़्यादा कुछ नहीं है। यह एक ऐसी बात है जिसको हमें अपने ध्यान में रखना चाहिए। क्यों, तुम मेरी बात से सहमत नहीं हो क्रैसस ?—सेनापति ने सिर हिलाया।

सिसेरो ने कहा—मगर तब भी इस बात से कैसे इनकार किया जाय कि स्पार्टकस ने पाँच बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीती थीं। नहीं, वह लड़ाइयाँ नहीं जिनमें उसने हमारी फ़ौजों को खदेड़ दिया था और वह भी नहीं, जिनमें हमारी फ़ौजों में भगदड़ पड़ गयी थी। मैं उन पाँच लड़ाइयों का ज़िक्र कर रहा हूँ जिनमें उसने हमारी सबसे अच्छी फ़ौजों का ध्वंस किया था, ध्वंस किया था और उन्हें धरती से मिटा दिया था और उनके हथियार ले लिये थे। क्रैसस कहना चाह रहे थे कि स्पार्टकस लड़ाई के दाँव-पेंच का कुछ वैसा बड़ा उस्ताद न था, बात बस इतनी थी कि वह लड़नेवालों की एक ख़ास टोली का भाग्यशाली—या अभागा, जैसा भी आप समझें—नेता था। वे अपराजेय थे क्योंकि पराजय का अर्थ उनके लिए संपूर्ण विनाश होता। क्यों तुम यही कह रहे थे न क्रैसस ?

—एक हद तक, सेनापति ने स्वीकार किया। वह जूलिया को देखकर मुस्कराया—मैं एक कहानी कह कर अपनी बात को साफ़ करूँगा और वह शायद तुम्हें ज़्यादा अच्छी लगेगी जूलिया। थोड़ा-सा युद्ध, थोड़ी-सी राजनीति और थोड़ी-सी बातें वारिनिया के बारे में। वारिनिया यानी वही स्पार्टकस की औरत।

—मैं जानती हूँ, जूलिया ने धीरे से जवाब दिया। उसने कुछ इतमीनान और कृतज्ञता के भाव से ग्रैकस की ओर देखा। ग्रैकस ने अपने मन में कहा, मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ मेरी प्यारी जूलिया। हम दोनों ही कुछ कुछ दयनीय हैं और उपहासास्पद भी। हम दोनों में अन्तर यही है कि मैं पुरुष हूँ और तुम स्त्री। तुम बहुत आडंबर नहीं कर सकतीं। मूलतः हम दोनों एक ही हैं। हम दोनों की जिन्दगी में वही रीतापन है, उसी रीतेपन का विषाद है। हम दोनों प्रेतों से प्रेम करते हैं क्योंकि हमने कभी मनुष्यों से प्रेम करना या प्रेम पाना नहीं सीखा।

क्लॉदिया ने कुछ अप्रत्याशित ढंग से कहा—मैं हमेशा सोचती थी कि वह निरी कपोल कल्पना है, किसी कहानी कहनेवाले ने यों ही उसकी सृष्टि कर दी होगी।

—क्यों, ऐसा क्यों प्रिये !

—ऐसी औरतें नहीं हुआ करतीं, क्लॉदिया ने निश्चयात्मक ढंग से कहा।

—नहीं ? कौन जाने, शायद तुम्हारी बात ठीक हो। कहना कठिन है कि कौन-सी बात सच है और कौन-सी बात सच नहीं है। मैंने एक ऐसी लड़ाई के बारे में पढ़ा जिसमें मैं खुद लड़ा था और मैंने जो कुछ पढ़ा उसका यथार्थ से बहुत थोड़ा सम्बन्ध था। तो ऐसा तो होता है। मैं इस बात की सच्चाई का तो कोई दावा नहीं करता लेकिन उस पर विश्वास करने के लिए मेरे पास कारण हैं। हाँ, मेरा ख़याल है कि मैं उस पर विश्वास करता हूँ।

उसकी आवाज़ में अजब ही एक सुर था और तेज़ निगाहों से उसकी तरफ़ देखते हुए हेलेना को एकाएक महसूस हुआ कि वह आदमी कितना खूबसूरत है। सुबह की धूप में बाहर उस पक्के सहन में बैठे हुए क्रैसस का वह खूबसूरत मज़बूत चेहरा तरुण रोमन प्रजातन्त्र के पौराणिक अतीत की याद दिलाता था। मगर पता नहीं क्यों, इस विचार से उसको खुशी नहीं हुई और वह आँख की कोर से अपने भाई को देखने लगी। केयस मन्त्रमुग्ध भाव से सेनापति को निर्निमेष देख रहा था। दूसरों ने इसको लक्ष्य नहीं किया। क्रैसस मे यह गुण था कि वह बरबस लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेता था; उसकी मद्धिम मगर गहरी, ईमानदारी से भरी हुई आवाज़ लोगों को अपनी गिरफ़्त में ले लेती थी और पकड़ रखती थी, यहाँ तक कि सिसेरो को भी, जो अब एक नयी सजगता से उसकी ओर देख रहा था। और ग्रैकस ने एक बार फिर क्रैसस के इस गुण को, जिसे पहले भी उसने लक्ष्य किया था, दुबारा लक्ष्य किया कि वह बिना स्वयं आवेश में आये दूसरों के अन्दर आवेश भर देता था।

क्रैसस ने कहना शुरू किया—अपनी बात की भूमिका के तौर पर बस एक शब्द। मैंने जब कमान सँभाली तो लड़ाई को कई बरस हो चुके थे, जैसा कि आप जानते ही हैं। एक हारी हुई लड़ाई में दाख़िल होना बड़ी नाज़ुक बात होती है और ख़ास करके जब वह लड़ाई बाग़ी गुलामों से हो; जीतने पर कोई नामवरी नहीं मिलती और हारने पर भयानक ज़िल्लत मिलती है, इतनी कि कुछ न पूछिए। सिसेरो बिलकुल ठीक कहता है। स्पार्टकस ने पाँच सेनाओं का ध्वंस कर दिया था, सम्पूर्ण ध्वंस।—उसने ग्रैकस की ओर देख कर सिर हिलाया—तुम्हारा प्रचार बहुत मोहक है मगर तुम मानोगे कि मुझे तो स्थिति को वैसे ही देखना है जैसी कि वह सचमुच थी।

—ज़रूर, इसमें क्या शक।

मैंने पाया कि गुलामों की ऐसी कोई बहुत बड़ी फ़ौजें न थीं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि हमारी तादाद उनसे ज़्यादा न रही हो, अगर सच्ची बात कही

जाय। यह बात शुरू में सच थी और यही बात अन्त में भी सच थी। अगर स्पार्टकस के पास वे तीन लाख आदमी होते जो कि कहे जाते हैं उसके पास थे तो हम लोग आज यहाँ इस खुशगवार सुबह के वक्त इटली की सबसे सुन्दर जागीरदारी हवेली में न बैठे होते। स्पार्टकस ने रोम ले लिया होता और सारी दुनिया ले ली होती। दूसरे चाहें तो इस पर शक कर सकते हैं मगर मैं स्पार्टकस से इतनी काफ़ी बार लड़ चुका हूँ कि मेरे पास शक करने का कारण नहीं है। मैं जानता हूँ, कि पूरी सच्चाई यह है कि इटली के ज्यादातर गुलाम स्पार्टकस के संग शरीक नहीं हुए। क्या तुम सोचते हो कि अगर वे इस धातु के बने होते कि एक हो सकते तो हम यहाँ इस जागीर पर यों बैठे होते जहाँ हमारे एक के पीछे उनकी तादाद सौ है? हाँ यह सच है कि बहुत से गुलामों ने स्पार्टकस का साथ दिया मगर उसके पास कभी पैंतालीस हज़ार से ज़्यादा लड़नेवाले नहीं रहे। और वह भी उस वक्त जब कि स्पार्टकस अपनी शक्ति के शिखर पर था। उसके पास घुड़सवार सेना न थी, जैसी कि हैनिबल के पास थी, मगर तब भी उसने रोम को घुटना टेकने के जितना क़रीब ला दिया था उतना हैनिबल कभी नहीं लाया—और स्पार्टकस को जिस रोम का सामना करना पड़ा वह इतना मज़बूत था कि उसने एक लड़ाई में हैनिबल को पीसकर रख दिया होता। नहीं, इसमें शक नहीं कि सबसे अच्छे, सबसे खूंख्वार, सबसे भयानक, सबसे सरकश लोगों ने ही स्पार्टकस का साथ दिया था।

—यह एक ऐसी चीज़ थी जिसका पता खुद मुझे लगाना पड़ा। मुझे रम के ऊपर शर्म आती थी जब मैं देखता था कि इन गुलामों ने कैसी दहशत और वहम की हालत पैदा कर दी है। मैं सच्चाई चाहता था। मैं ठीक-ठीक जानना चाहता था कि मैं किससे लड़ रहा हूँ, किस क़िस्म के आदमी से, किस क़िस्म की फ़ौज से। मैं जानना चाहता था कि क्यों दुनिया के बेहतरीन सिपाही जिन्होंने जर्मनों से लेकर स्पेनवालों और यहूदियों तक सबसे लड़ाई लड़ी थी और सबको चकनाचूर कर दिया था, वे क्यों इन गुलामों को देखते ही अपनी ढालें पटक कर भाग जाते थे। मैंने अपना पड़ाव उस वक्त सिस्-ऐल्पाइन गॉल में डाला था और वह पड़ाव की एक ऐसी जगह थी जिस पर हमला करने के पहले स्पार्टकस को दो बार सोचना होता। और फिर मैं इस मामले की छानबीन करने लगा। मुझमें शायद ही कोई अच्छाई हो मगर एक अच्छाई मुझमें ज़रूर है कि मैं हर काम को पक्के-पोढ़े ढंग से करता हूँ और इस सिलसिले में मैंने कम से कम एक सौ लोगों से मुलाकात की होगी और एक हज़ार काग़ज़ात पढ़े होंगे। उन्हीं में वह लानिस्ता बाटियाटस भी था। उन्हीं में सैनिकों और अफसरों की वे टोलियाँ भी थीं जो स्पार्टकस से लड़ी

थीं। और उन्हीं म स एक ने मुझको यह कहानी सुनायी थी। और मैं उस पर विश्वास करता हूँ।

ऐण्टोनियस केयस ने कहा—अगर कहानी भी उतनी ही लम्बी है जितनी कि भूमिका तो दोपहर का खाना हम लोग यहीं खायेंगे।—गुलाम मिस्र के ख़रबूजे और अंगूर और सबेरे के वक़्त पी जानेवाली एक हलकी शराब ले आ रहे थे। सहन में बड़ी अच्छी ठण्डक थी और बड़ा आनन्द आ रहा था, यहाँ तक कि वे लोग जो उसी दिन अपनी यात्रा पर आगे बढ़ जाने वाले थे उन्हें भी अब जाने की कोई जल्दी न थी।

—और भी लम्बी। मगर अमीर आदमी की बात सुननी ही पड़ती है।

—कहो, कहो। ग्रैकस ने रूखे ढंग से कहा।

—मैं कहने ही तो जा रहा हूँ। यह कहानी जूलिया के लिए है। तुम्हारी आज्ञा है जूलिया!

जूलिया ने सिर हिलाया और ग्रैकस सोचने लगा—निश्चय ही इस आदमी में कोई अन्तर्दृष्टि नहीं है। आख़िर यह कम्बख़्त कहना क्या चाहता है?

—यह उस वक़्त की बात है जब स्पार्टकस ने दूसरी बार एक रोमन सेना का ध्वंस किया था। पहली बार शहर की टुकड़ी के संग जो कुछ हुआ था उसकी बातें तो मैं समझता हूँ मेरे दोस्त ग्रैकस को बहुत अच्छी तरह याद होंगी—जैसी कि हम सभी को याद हैं, क्रैसस ने कहा। उसकी आवाज़ में द्वेष का एक हल्का-सा स्वर था।—उसके बाद सेनेट ने पुब्लियस को स्पार्टकस के ख़िलाफ़ भेजा था। वह एक पूरी सेना थी और मेरा ख़याल है बहुत अच्छी सेना थी। वह तीसरी सेना थी न ग्रैकस!

—हर काम को पक्के-पोढ़े ढंग से करने की सिफ़त तो तुम्हारे अन्दर है, कुछ मेरे अन्दर तो है नहीं, मैं क्या जानूँ!

—मेरा ख़्याल है मैं ठीक ही कह रहा हूँ और अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूँ तो उस फौज के साथ शहर के कुछ घुड़सवार दस्ते भी गये थे—कुल मिलाकर सात हज़ार सैनिक थे वे जूलिया। उसने कहा—मेरी बात का विश्वास करो कि युद्ध की कला में रहस्य की वैसी कोई बात नहीं है। पैसा पैदा करने में या कपड़े का एक टुकड़ा बुनने में एक अच्छा सेनापति बनने से ज़्यादा अक्ल लगती है। जिन लोगों का धन्धा युद्ध होता है उनमें से ज्यादातर बहुत चतुर नहीं होते। कारण स्पष्ट है। स्पार्टकस काफ़ी चतुर था। वह लड़ाई के कुछ सीधे-सादे क़ायदे समझता था और वह रोमन सेनाओं की ताक़त और उनकी कमज़ोरियों को भी समझता था। उसके अलावा शायद ही किसी ने कभी उनको समझा हो। हैनिबल समझता था मगर उसके अलावा और

तो शायद कोई नहीं। और मुझे तो डर है कि हमारे आदरणीय सहयोगी पॉम्पी बिलकुल नहीं समझते।

—और आख़िर वे महान् रहस्य क्या हैं, कुछ बतलाओ भी तो? सिसेरो ने पूछा।

—वे न तो महान् हैं और न उनमें ऐसा कोई रहस्य ही है। जूलिया की ख़ातिर मैं उनको दुहराता हूँ। ऐसा लगता है कि जैसे उनको समझना आदमी के बस की बात नहीं है। पहला क़ायदा तो यह कि जब तक कि अपने बचाव के लिए एकदम जरूरी न हो उठे तब तक अपनी शक्ति को टुकड़ों में न बाँटो। दूसरा क़ायदा यह कि अगर तुम लड़ना चाहते हो तो हमला करो और अगर हमला करना नहीं चाहते तो लड़ने से बचो। तीसरा क़ायदा यह कि लड़ाई का समय और स्थान तुम खुद निर्णय करो और कभी किसी हालत में यह निर्णय दुश्मन पर न छोड़ो। चौथा क़ायदा यह कि हर हालत में अपने आपको घिरने से बचाओ। और आख़िरी क़ायदा यह कि दुश्मन जहाँ पर सबसे कमज़ोर हो वहीं उस पर हमला करो और उसे ख़त्म करो।

सिसेरो ने टिप्पणी की—क्रैसस, इस तरह का क ख ग लड़ाई की किसी भी किताब में मिल सकता है। अगर तुम मुझे कहने दो तो मैं तो यही कहूँगा कि इसमें कोई गहराई नहीं है। यह तो बहुत ही आसान-सी बात है।

—शायद। मगर मैं तुमको यक़ीन दिलाता हूँ कि जो चीज़ें इतनी आसान होती हैं उनमें ज़रूर गहराई रहती है।

—और अपनी बात तो पूरी करो, ग्रैकस ने कहा, रोमन सेनाओं की वह ताक़त और वे कमज़ोरियाँ क्या हैं?

—वे भी उतनी ही आसान हैं और मुझे पूरा यक़ीन है कि सिसेरो को एक बार फिर मुझसे इख़्तलाफ़ होगा।

—मैं तो एक महान् सेनापति के चरणों में एक जिज्ञासु विद्यार्थी हूँ, सिसेरो ने सुबुक अन्दाज़ में कहा।

क्रैसस ने सिर हिलाया—नहीं मैं सच कहता हूँ। दो चीज़ों के बारे में सब लोगों को पूरा यक़ीन होता है कि उनकी योग्यता उनके अन्दर है और यह कि उनमें न तो किसी तैयारी की ज़रूरत होती है और न अध्ययन की। एक तो किताब लिखना और दूसरी सेना का संचालन करना और इसका कारण भी है क्योंकि बेशुमार गधे ये दोनों काम कर डालते हैं। मैं तो खुद अपने आपको कहता हूँ, उसने लोगों को निरस्त्र करते हुए इतना और जोड़ा।

—यह तो बड़ी चतुर बात तुमने कही, हेलेना ने कहा।

क्रैसस ने उसकी ओर देखकर सिर हिलाया। उसको औरतों से ग़रज़ तो

थी मगर सच पूछो तो उनमें दिलचस्पी न थी; कम से कम हेलेना की यही राय थी।—जहाँ तक हमारी अपनी सेना की बात है, क्रैसस ने कहना शुरू किया, उसकी कमज़ोरी और उसकी ताक़त को एक ही शब्द में रक्खा जा सकता है—अनुशासन। हमारी सेना सारी दुनिया में सबसे अनुशासनपूर्ण सेना है, शायद दुनिया की अकेली अनुशासनपूर्ण सेना। एक अच्छी सेना, दिन में पांच घण्टे और हफ्ते में सात रोज़ अपने सिपाहियों को क़वायद कराती है। यह क़वायद लड़ाई की बहुत सी सम्भावनाओं के लिए सैनिकों को तैयार करती है। मगर सबके लिए तो नहीं कर सकती। अनुशासन तो एक हद तक यान्त्रिक चीज है और जब कोई नयी सम्भावना पैदा होती है तो अनुशासन की परीक्षा होती है। इतना ही नहीं इसके साथ ही साथ यह भी है कि हमला करने के लिए हमारी सेना बेजोड़ है; इसकी फ़तह हमला करने में ही है और इसके सारे हथियार हमला करने के हथियार हैं। इसीलिए जब हमारी फ़ौज कहीं पर रात के लिए ठहरती है तो वहाँ पर बाक़ायदा क़िलेबन्दी के साथ अपने ख़ेमे लगाती है। हमारी फ़ौज की सबसे बड़ी कमज़ोरी यही रात को होनेवाला हमला है। रोमन सेना का सबसे पहला दाँव-पेंच यह है कि हम लड़ाई के लिए अपना मैदान खुद चुनते हैं। मगर स्पार्टकस ने कभी यह चीज़ हमको न करने दी। और पुब्लियस जब उस तीसरी फौज को लेकर दक्षिण गया तो उसने इन सब बेहद सीधे-सादे क़ायदों को एक-एक करके तोड़ा। और क्यों तोड़ा यह समझ में आने की बात है। स्पार्टकस के लिए उसके मन में बड़ी घृणा थी, वह उसको अत्यन्त हीन समझता था।

तभी ऐण्टोनियस केयस की दोनों बेटियाँ सहन में आकर इन लोगों से मिल गयीं। वे दौड़ती हुई आयीं, उनका चेहरा खेलकूद के आवेग और हँसी से तमतमाया हुआ था, और जब उन्होंने आकर जूलिया की बाँहों में शरण ली तो क्रैसस अपनी बात ख़त्म ही कर रहा था।

—क्या तुम स्पार्टकस को जानते थे? बड़ीवाली ने पूछा, क्या तुमने उसको देखा था?

—मैंने उसको कभी नहीं देखा, क्रैसस मुस्कराया, मगर मैं उसका आदर करता हूँ, मेरी बच्ची।

ग्रैकस ने बड़ी संजीदगी से एक सेब छीला और अपनी सोच में डूबी हुई अधखुली आँखों से क्रैसस को देखा। वह क्रैसस को पसन्द नहीं करता था। अब वह सोच रहा था कि उसे कभी सेना का कोई ऐसा आदमी न मिला था जिसके लिए उसके मन में कभी कोई प्यार या गरमाहट महसूस की हो। उसने सेब के छिलके का एक लम्बा सा टुकड़ा उठाया और वे छोटी-छोटी लड़कियाँ खुशी से ताली बजाने लगीं। उन्होंने सेब के उस छिलके की

तरफ़ हाथ बढ़ाया मगर ग्रैकस ने आग्रह किया कि पहले अपने मन में कोई इच्छा ले लो। इसके बाद इस छिलके को अपनी इच्छा के चारों ओर लपेट लो। सेब में सब ज्ञान है।

—और कभी-कभी एकाध कीड़ा भी, जूलिया ने कहा, तुम वारिनिया के बारे में कोई कहानी कह रहे थे क्रैसस।

—अभी हमारी मुलाक़ात उससे होती है। मैं तो सिर्फ़ उसकी पृष्ठभूमि तैयार कर रहा हूँ। स्पार्टकस अभी तक विसूवियस के आस-पास के इलाक़े में था। और मूर्ख पुब्लियस ने अपनी सेना को तीन टुकड़ों में बाँट दिया, एक एक टुकड़े में दो-दो हज़ार से कुछ ज़्यादा लोग। और फिर वहाँ की ऊँची-नीची ऊबड़-खाबड़ ज़मीन की गश्त लगाने लगा—स्पार्टकस की तलाश में। तीन अलग-अलग लड़ाइयों में स्पार्टकस ने उसकी फ़ौज का नाम-निशान धरती से मिटा दिया। हर बार उसने यही किया, वह उनको किसी छोटे से दर्रे में पकड़ लेता था जहाँ पर हमारे दस्ते लड़ न पाते थे और फिर उनका काम तमाम कर देता था। मगर ख़ैर एक बार एक पूरा घुड़सवार दस्ता और पैदल सेना का भी लगभग एक दस्ता लड़ते-भिड़ते उनसे जान बचाकर बाहर निकल आया, वे पैदल सिपाही घोड़ों की दुम पकड़े हुए और घोड़े जान छोड़कर बेतहाशा भागते हुए। अगर तुम इस बात को समझ लो कि गुलाम कैसे लड़ते थे तो तुम समझ जाओगे कि इस तरह की चीज से वे अपना ध्यान नहीं बँटने देते। जो सामने है उसी पर वे अपना सारा ध्यान लगाते हैं। और यही उन्होंने किया। और वे आठ या नौ सौ पैदल और घुड़सवार जंगल में होकर पीछे लौटे, खो गये और फिर गुलामों के उस ख़ेमे पर जा निकले जहाँ पर उनकी औरतें और बच्चे थे। मैं उसे ख़ेमा कहता हूँ मगर दरअसल उसे एक छोटा-मोटा गाँव कहना ज़्यादा ठीक होगा। उसके चारों ओर एक खाई थी, एक मिट्टी की दीवार थी और उसके ऊपर एक मज़बूत जँगला था। हमारी फ़ौजों से भागे हुए बहुत से सिपाही स्पार्टकस के संग रहे होंगे क्योंकि इस ख़ेमे की बनावट वैसी ही थी जैसी कि हमारे ख़ेमों की होती है। और उसके भीतर की झोंपड़ियाँ बाक़ायदा सड़कों पर बनी हुई थीं। हाँ, फाटक खुले हुए थे और बहुत से बच्चे बाहर खेल रहे थे और कुछ औरतें उनको देख रही थीं। तुमको यह बात समझनी चाहिए कि जब सिपाहियों को मार पड़ी हो और वे भाग खड़े हुए हों तो फिर अपने ऊपर उनका कुछ ख़ास बस नहीं रह जाता। मैं न्यायाधीश की तरह उन लोगों पर विचार करने नहीं बैठा हूँ जो गुलामों को मारते हैं, फिर चाहे वे मर्द हों चाहे औरतें चाहे बच्चे। गुलामों से नफ़रत करने के लिए हमारे पास काफ़ी कारण हैं और वे सिपाही भी नफ़रत से भरे हुए थे। वे उस जगह पर टूट पड़े और घुड़सवारों

ने इस तरह उन बच्चों को अपने नेज़ों पर उठा लिया जैसे कि शिकार के वक़्त ख़रगोश को। इस पहले हल्ले में उन्होंने कुछ औरतों को भी मार डाला मगर फिर बाक़ी औरतों ने मुक़ाबला किया। और फिर गाँव की औरतें अपने छुरों और तलवारों और नेज़ों से लैस होकर बहुत बड़ी तादाद में फाटक के बाहर निकल आयीं। मुझे नहीं मालूम कि उस वक़्त उन सिपाहियों के जी में क्या था—सिर्फ़ घृणा और प्रतिशोध या और भी कुछ। मेरा ख़याल है उन्होंने कुछ औरतों को मार डाला होता और बाक़ी के संग बलात्कार किया होता। याद करो कि उस वक़्त सारे देश में गुलामों के बारे में लोगों के बहुत बुरे भाव थे। स्पार्टकस के पहले अगर कोई आदमी अपनी एक गुलाम औरत का क़त्ल करता था तो फिर वह बाहर सड़क पर निकल न सकता था और शर्म से उसका सर झुका रहता था। यों कहिए कि इसको एक बहुत ज़लील काम समझा जाता था और अगर यह साबित हो जाता कि उसने अकारण ही ऐसा किया है तो उसके ऊपर कसकर जुर्माना भी हो सकता था। वह कानून तीन साल हुए बदल दिया गया। क्यों ठीक कहता हूँ न ग्रैकस ?

ग्रैकस ने बेमन से कहा—हाँ ठीक कहते हो। मगर अपनी कहानी कहो। तुम वारिनिया के बारे में बतला रहे थे।

—हाँ ! क्रैसस पल भर को जैसे अपनी बात भूल गया हो। जूलिया की निगाहें क्रैसस पर थीं मगर दरअसल वह अपने दूब के मैदानों को देख रही थी। उसने अपने बच्चों से कहा, अच्छा अब भागो। जाओ खेलो।

—आपका मतलब है कि वह औरतें सिपाहियों से लड़ीं ? क्लॉदिया ने जानना चाहा।

क्रैसस ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा, यही तो बात है। फाटक पर बड़ी भयानक लड़ाई हुई। हाँ, वे औरतें सिपाहियों से लड़ीं। और फिर सिपाही भी पागल हो गये और वे भूल गये कि वे औरतों से लड़ रहे हैं। मेरा ख़्याल है कि यह लड़ाई लगभग एक घण्टे चली होगी। और जैसा कि बताया जाता है उन औरतों का नेतृत्व सुनहले बालोंवाली यही जंगली औरत कर रही थी जिसके बारे में लोगों का ख़याल है कि वह वारिनिया थी। वह एक ही समय में हर जगह दिखायी देती थी। उसके कपड़े फट गये थे और वह नंगी अपने नेज़े से लड़ रही थी। एकदम चण्डिका—

—मैं यह सब कुछ भी नहीं मानता, ग्रैकस ने बात काटते हुए कहा।

—अगर तुम विश्वास नहीं करना चाहते तो न करो, कोई ज़रूरत नहीं है, क्रैसस ने सिर हिलाया और महसूस किया कि उसकी कहानी का रंग बिलकुल नहीं जमा, मैंने तो यह कहानी सिर्फ़ जूलिया के लिए सुनायी है।

—सिर्फ़ मेरे लिए क्यों ? जूलिया ने पूछा।

क्रैसस को एकटक देखते हुए हेलेना ने कहा, अपनी कहानी ख़त्म कीजिए। वह सच हो या न हो, उसका अन्त तो होगा ही, कि नहीं ?

—एक साधारण अन्त। सभी लड़ाइयों का कुल मिलाकर एक ही अन्त होता है। या तो तुम लड़ाई में जीत जाते हो या हार जाते हो। हम यह लड़ाई हार गये। कुछ गुलाम लौट आये और तब दोतरफ़े हमले में पड़कर हमारे सभी सिपाही मारे गये और सिर्फ़ मुट्ठी भर घुड़सवार बचकर निकल पाये। उन्हीं ने रिपोर्ट दी।

—मगर वारिनिया नहीं मारी गयी ?

—अगर वह वारिनिया ही थी तो वह निश्चय ही नहीं मारी गयी। वह अब भी बीच-बीच में कई बार दिखायी दे जाती है।

—और क्या वह अब भी ज़िन्दा है ? क्लॉदिया ने पूछा।

—क्या वह अब भी ज़िन्दा है ? क्रैसस ने दुहराया, मगर उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है, कि ग़लत कहता हूँ ?

तभी ग्रैकस उठा, उसने अपने ख़ास अन्दाज़ से अपना चोग़ा पीछे को फेंका और वहाँ से चल दिया। थोड़ी देर तक ख़ामोशी रही और तब सिसेरो ने पूछा—वह क्या चीज़ है जो इस बुड्ढे को भीतर ही भीतर खाये जा रही है ?

—ईश्वर जाने।

—आप यह क्यों कहते हैं कि इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि वारिनिया अब भी ज़िन्दा है या नहीं ? हेलेना ने जानना चाहा।

क्रैसस ने बेहिसी से कहा—वह बात ख़त्म हो गयी न ? स्पार्टकस मर गया। वारिनिया एक गुलाम औरत है। रोम का बाज़ार ऐसी औरतों से भरा हुआ है। वारिनिया और दस हज़ार और।—उसकी आवाज़ में एकाएक गुस्सा भर आया....

ऐण्टोनियस केयस ने उन लोगों से इजाज़त ली और ग्रैकस के पीछे-पीछे चला गया। उसे यह बात तकलीफ पहुँचा रही थी कि ग्रैकस और क्रैसस जैसे दो आदमी, जो राजनीतिक तौर पर एक दूसरे से इस तरह बँधे हुए हों, ऐसी बेकार सी बात पर आपस में झगड़ पड़ें। उसने इसके पहले ग्रैकस को इस तरह बर्ताव करते नहीं देखा था। वह सोचने लगा कि कहीं जूलिया को लेकर तो यह बात नहीं है ? नहीं—इस बुड्ढे ग्रैकस, इस मोटे, नारीविहीन, बुड्ढे ग्रैकस के संग यह बात नहीं हो सकती। ग्रैकस में और बहुत सी बातें थीं लेकिन इन काम-सम्बन्धी मामलों में ऐण्टोनियस केयस उसको ख़सी समझता था। और जहाँ तक क्रैसस की बात है, वह क्यों इस अत्यन्त साधारण, दयनीय-सी जूलिया को लेकर परेशान हो जब कि वह रोम की किसी भी औरत

को पा सकता है, चाहे वह आज़ाद हो चाहे गुलाम ! ईश्वर जानता है कि अगर उनमें से किसी को जूलिया की दरकार हो तो उसका स्वागत है और वह अपनी जूलिया के संग-संग अपना बिस्तर और खिलाना-पिलाना भी उसकी नज़र कर देगा। इससे ज़्यादा खुशी उसे और किसी बात से नहीं हो सकती थी।

उसने ग्रैकस को उस जगह पर चुपचाप बैठे देखा जहाँ पर पौदे हिफ़ाज़त और परवरिश के लिए रक्खे जाते हैं। वह अपने उस पुराने दोस्त के पास गया और जाकर उसे धीरे से कुहनी मारी—क्या बात है दोस्त, सब ठीक तो है ?

ग्रैकस ने कहा—एक दिन वह आयेगा जब इस दुनिया में क्रैसस और मैं हम दोनों न रह सकेंगे।

भाग ६ । जिसमें विला सलारिया में एकत्र उन लोगों में से कुछ की कापुआ यात्रा की कहानी है, उस सुन्दर नगर के बारे में कुछ विस्तार की बातें हैं और इसका वर्णन है कि कैसे उन यात्रियों ने एक अन्तिम ग्लैडिएटर को सलीब पर चढ़ते देखा ।

उसी रोज़ सिसेरो और ग्रकस ने उन लोगों से विदा ली और रोम चले गये । क्रैसस और नौजवान केयस की मण्डली के लोग, ऐण्टोनियस का कहना मान कर, और एक दिन विला सलारिया में रुके और मान गये कि अगले दिन खूब तड़के रवाना होंगे और इस तरह उन्हें सड़क पर पूरे एक दिन की यात्रा मिल जायगी । क्रैसस ने पहले ही केयस को सुझाया था कि वे लोग साथ-साथ यात्रा करें और हेलेना और क्लॉदिया को ऐसे मशहूर सेनापति के संग रहने के विचार से ही खुशी हो रही थी ।

सूरज निकलने के थोड़ी ही देर बाद वे लोग उस जागीर पर से रवाना हो । गये उनकी वे चार पालकियाँ, बहुत से नौकर और सामान ढोनेवाले, कुल मिलाकर सड़क पर एक अच्छा-ख़ासा जुलूस बन गया और जब वे ऐपियन मार्ग पर पहुँचे तो क्रैसस ने दस सिपाही अपने हुजूर में ले लिये । कापुआ में गुलामों के विद्रोह के अन्तिम दमन की खुशियाँ मनाने के लिए जो उत्सव हो रहे थे उनके लिए क्रैसस को आमन्त्रित किया गया था—ये उत्सव कापुआ में ही मनाये जा रहे थे क्योंकि विद्रोह वहीं पर शुरू हुआ था । स्पार्टकस की हार और मौत के बाद जो गुलाम क़ैदी बनाये गये थे उनमें से एक सौ ग्लैडिएटरों को चुना गया था और अब हफ्तों से उनकी लड़ाइयाँ बराबर करवायी

जा रही थीं। ये लड़ाइयाँ ऐसी थीं जिनमें हर जोड़ का एक-एक आदमी मरता जाता था और अन्त में केवल एक आदमी बच जाता था। जब एक जोड़ लड़ता था तो उसमें एक मरता था और एक बच जाता था और फिर उस बचनेवाले एक आदमी को दूसरे के संग लड़ाया जाता था। मौत के इस नाच का कोई अन्त न था।

—मैंने सोचा कि तुमको शायद इस खेल में मज़ा आये, केयस ने कहा।

चारों पालकियाँ अग़ल-बग़ल चल रही थीं ताकि यात्रा करते समय वे लोग बराबर बातचीत कर सकें। दूसरी तरफ़ से आनेवाले लोगों को सिपाही सड़क के एक ओर कर देते थे और लोग इस जुलूस की लम्बाई-चौड़ाई और शान-शौकत को देखकर ही इस बात को मान लेते थे कि पहले इन्हीं को जाने का अधिकार है।

केयस और क्रैसस बीच में अग़ल-बग़ल चल रहे थे, क्लॉदिया क्रैसस के एक ओर थी और हेलेना अपने भाई के। अपनी उम्र के कारण और उन लोगों के प्रति अपने मन के कुछ विशेष भावों के कारण क्रैसस अब मेज़बान बन गया था। उसके गुलाम बहुत अच्छी तरह से सिखे-पढ़े थे और अभी जब कि पालकियाँ उस शानदार सड़क पर आगे बढ़ ही रही थीं क्रैसस को अपने उन साथियों की ज़रूरतों और इच्छाओं का खासा अन्दाज़ हो गया था, फिर चाहे वह जूडिया की खुशबूदार और बर्फ़ पड़ी हुई नयी शराब की चाह हो चाहे मिस्र के रसीले अंगूरों की या फिर चाहे हवा को साफ़ करने के लिए इत्र के एक हलके से छिड़काव की। अनेक धनाढ्य व्यक्तियों की तरह वह भी अपने सामाजिक वर्ग के लोगों की सुख-सुविधा के प्रति बड़ा सजग था; इस वक्त वह उनका मेज़बान, साथी, और राह दिखलानेवाला था। केयस के सवाल के जवाब में उसने कहा, नहीं। तुम्हें चाहे सुनकर कुछ ताज्जुब हो केयस, मगर अब मुझे इन खेलों में कोई मज़ा नहीं मिलता। हाँ कभी-कभी, अगर कोई जोड़ बहुत अच्छा और बहुत असाधारण हो तो उसकी बात और है। मगर मैं समझता हूँ कि इस चीज़ से तो मुझे उकताहट ही मालूम होगी। लेकिन अगर मैंने जाना होता कि तुम इसको देखना चाहोगे—

—ऐसी कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है।

—मगर मुनेरा के बाद भी आदमी बच जाता ही होगा—क्लॉदिया ने कहा।

—नहीं, कोई ज़रूरी नहीं है क्योंकि यह भी हो सकता है कि आख़िरी जोड़ के दोनों लड़नेवाले बुरी तरह ज़ख़्मी हो जायँ लेकिन अगर एक बच जाता है, जिसकी कि काफ़ी उम्मीद रहती है, तो उसे प्रतीक के रूप में शहर के बड़े दरवाजे के सामने सलीब पर चढ़ा दिया जाता है। तुम्हें मालूम ही

है कि कुल सात ऐसे दरवाजे हैं और जब ये सलीब खड़े किये गये तो हर फाटक के सामने एक सलीब था। जो भी बच जायगा वह बस ऐपियन दरवाजे की लाश की जगह ले लेगा। क्या तुम कभी कापुआ गयी हो?—उसने क्लॉदिया से पूछा।

—नहीं, मैं कभी नहीं गयी।

—तब फिर एक बहुत बड़ी चीज़ तुम्हारा इन्तजार कर रही है। बड़ा खूबसूरत शहर है, मैं समझता हूँ कि दुनिया का सबसे खूबसूरत शहर और आज के जैसे साफ़ दिन तो कापुआ की दीवारों से खाड़ी का दृश्य भी बड़ा सुन्दर होगा और दूर पर विसूवियस की चमकती हुई सफ़ेद चोटियाँ भी। मैं वैसी और कोई चीज़ नहीं जानता जो उसका मुकाबिला कर सके। वहाँ पर मेरे पास एक छोटा सा मकान है और अगर तुम लोग मेरा आतिथ्य स्वीकार करो तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

केयस ने बतलाया कि उसके नाना, कोई प्लेबियन, उन लोगों की राह देख रहे हैं और अब उनके लिए अपनी योजना बदलना सम्भव न होगा।

—ख़ैर, हम लोग एक दूसरे से मिला तो करेंगे। शुरू के कुछ दिन तो बड़ी ऊब के होंगे मगर जब कि रस्मी स्वागत और भाषण और ये सब अलाय-बलाय ख़तम हो लेगी तो हम लोग कुछ घण्टों के लिए कश्तियाँ लेकर खाड़ी पर निकल जायँगे—सब खेलों का बादशाह है वह—और एक छोटा-मोटा पिकनिक भी कर लेंगे और फिर तीसरा पहर इत्रफ़रोशों के यहाँ गुज़ारेंगे, कापुआ को उसके इत्रों से अलग करके नहीं देखा जा सकता और मुझे वहाँ के एक इत्र के कारखाने में दिलचस्पी है और मैं कुछ कुछ जानता हूँ कि कैसे ये इत्र बनाये जाते हैं। तुम लोगों को जो भी इत्र पसन्द हो, उसने उदारता से कहा, मुझे उसको तुम्हें भेंट करने में बड़ी खुशी होगी।

—आप बड़े मेहरबान हैं, हेलेना ने कहा।

—मैं यह क्यों न कहूँ कि इस मेहरबानी की कीमत मुझे बहुत कम चुकानी पड़ती है और इसका फ़ायदा मुझे काफ़ी मिलता है। वह ख़ैर जो भी हो, मुझे कापुआ से प्रेम है और हमेशा से मैं उसके लिए एक प्रकार का गर्व अनुभव करता रहा हूँ। यह एक बहुत प्राचीन शहर है। तुम जानते होगे, इसके बारे में जनश्रुति यह है कि एक हज़ार साल पहले एत्रुस्कनों ने इटली के इस हिस्से में बारह शहर बनवाये थे—उन्हें सोने के हार के बारह हीरे-जवाहर कहा जाता था। उनमें से एक का नाम वोलतुरनम था और लोगों का ख़याल है कि वही आज का कापुआ है। वह तो ख़ैर एक जनश्रुति ही है और समनाइटीज़ ने, जिसने एत्रुस्कनों से उस शहर को क़रीब साढ़े तीन सौ साल पहले लिया था, बहुत कुछ नये सिरे से इस

शहर को बनाया था—और जब फिर यह शहर हमारे हाथ में आया तो हमने नयी दीवारें बनायीं और सब जगह नयी सड़कें बिछायीं। यह शहर रोम से कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत है।

इसी तरह वे लोग ऐपियन मार्ग पर आगे बढ़ते रहे। अब तक वे उन सलीबों को देखने के इतने आदी हो गये थे कि अब उस ओर उनका ध्यान न जाता था। जब हवा चलती थी और उसके संग सड़ते हुए गोश्त की बदबू आती थी तो इत्रों का छिड़काव हवा में फिर मीठी ख़ुशबू भर देता था। मगर अक्सर वे लोग उन सलीबों को देखते ही न थे। सड़क साधारण रूप से चल रही थी और कोई विशेष घटनाएँ न हुईं। उन्होंने देहात के घरों में दो रातें गुज़ारीं और एक रात एक बड़े शानदार डाक बँगले पर। धीरे-धीरे वे लोग कापुआ पहुँच गये।

२

कापुआ अपनी ख्याति और ऐश्वर्य और समृद्धि के शिखर पर था और इस वक़्त जशन मना रहा था। गुलाम युद्ध के दाग़ धुल चुके थे। शहर की सफेद दीवारों पर बारह सौ झण्डे उड़ रहे थे। शहर के सातों मशहूर दरवाजे बिलकुल खोल दिये गये थे क्योंकि देश में अब शान्ति थी और कहीं किसी तरह की कोई गड़बड़ी न थी। उनके आने की ख़बर उनके पहले पहुँच चुकी थी और उनका स्वागत करने के लिए शहर के बहुत से बड़े बड़े पदाधिकारी मौजूद थे। पीतल के झाँझ और तुरही और नगाड़े समेत एक सौ दस बाजे-वाला नगरपालिका का बैण्ड, ज़ोर-शोर से स्वागत संगीत बजाये जा रहा था। और शहर की टुकड़ी अपना चाँदी की क़लई किया हुआ जिरहबख्तर पहने उन लोगों को ऐपियन द्वार में से ले चली। इस चीज को देखकर उन लड़कियों की तबियत फड़क उठी और यहाँ तक कि केयस का मन भी, भले वह उदासीनता दिखला रहा हो, उस असाधारण रंग-बिरंगे स्वागत को देखकर जो उन्हें अपने उस मशहूर साथी से संग मिल रहा था, गर्व और आनंद से भर उठा। अपने उस मशहूर शहर के भीतर पहुँचने पर वे क्रैसस से अलग हो गये और अपने सम्बन्धियों के घर चले गये; मगर कुछ ही घण्टे बाद सेनापति के पास से एक निमन्त्रण पत्र आया जिसमें उनसे अनुरोध किया गया था कि उसी शाम को होनेवाले राजकीय भोज में वे सब यानी केयस और उसकी बहन और उसकी सहेली और उसके परिवार के सब लोग क्रैसस के अतिथि हों। केयस को काफ़ी गर्व अनुभव हो रहा था कि सेनापति उसकी ओर इतना ध्यान दे रहे हैं और उस तमाम लम्बे और कुल मिलाकर उबा देनेवाले भोज में क्रैसस बराबर उन लोगों के प्रति कुछ न कुछ छोटी-मोटी

खातिरें करता ही रहा। सेनापति के सम्मान में जो पचपन तरह के खाने पेश किये गये उनमें से केयस और क्लॉदिया और हेलेना ने थोड़े से ही चखे। कापुआ अब भी कीड़े-मकोड़ों की एक से एक अनोखी चटनियाँ और मुरब्बे बनाने की उस प्राचीन एत्रुस्कन परम्परा को लिये चल रहा था मगर केयस बहुत प्रयत्न करने पर भी कीड़े-मकोड़ों के लिए रुचि न उत्पन्न कर पाता था भले वे शहद में डुबाये गये हों या क़ीमा किये हुए झींगे के संग मिलाकर उनके नफ़ीस केक बनाये गये हों। उस शाम की एक ख़ास बात थी एक नया नृत्य जो विशेष रूप से क्रैसस के सम्मान में ही रचा गया था। उसमें दिखलाया गया था कि किस तरह वे ख़ूंख़्वार गुलाम रोम की कुमारियों के संग बलात्कार करते हैं और इसमें सन्देह नहीं कि उस घण्टे भर के नृत्य में जो दृश्य दिखलाये गये वे सत्य को बड़ी निर्मम सचाई से पेश करते थे। और अन्त में जब उन गुलामों को मारा गया तो उस विशाल कक्ष की छत से सफेद फूल बर्फ़ की तरह बरसने लगे।

हेलेना ने लक्ष्य किया कि जैसे-जैसे शाम बढ़ती जा रही थी और भोज में आये हुए वे सैकड़ों अतिथि नशे में ज़्यादा-से-ज़्यादा चूर होते जा रहे थे वैसे-वैसे क्रैसस का पीना कम होता जा रहा था। वह शराब को केवल चख रहा था और उसमें कापुआ की उस मशहूर आलूबुखारे की ब्रैण्डी को उसने चखा भी नहीं जो कि उतनी ही मशहूर थी जितने कि दुनिया भर में प्रसिद्ध कापुआ के इत्र। क्रैसस इन्द्रिय-निग्रह और ऐन्द्रिकता का एक विचित्र समन्वय था। वे लोग अब एक दूसरे को अक्सर देख लेते थे और हेलेना देख रही थी कि उसके ये दोनों ही गुण उसकी आँखों में थे। दूसरी ओर केयस और क्लॉदिया नशे में चूर थे।

काफ़ी रात जा चुकी थी जब कि भोज ख़तम हुआ मगर हेलेना को एकाएक यह विचित्र हठ मन में आया कि वह लेण्टुलस बाटियाटस का स्कूल देखना चाहेगी, उस जगह को देखना चाहेगी जहाँ पर गुलामों के विद्रोह की शुरुआत हुई थी। यह सोचकर उसने क्रैसस से पूछा कि क्या वह उनको वहाँ पर ले जायगा और उनका मार्ग-दर्शक बनेगा। रात बड़ी शानदार थी, ठण्डी और थकी हुई इन्द्रियों पर मरहम की तरह और बसन्त के फूलों की खुशबू से लदी हुई, जो फूल शहर भर में हर जगह गहगहाकर फूले हुए थे। एक बड़ा सा पीला चाँद आसमान पर ऊपर उठ ही रहा था और उस अंधेरे में भी इसीलिए उनको अपना रास्ता पाने में कोई कठिनाई न होगी।

वे लोग चौक में खड़े थे, एक भीड़ सेनापति को घेरे हुए थी और एक सवाल यह भी था कि कैसे उन दोनों लड़कियों को हेलेना के परिवार से अलग किया जाय; मगर हेलेना आग्रह कर रही थी कि केयस उन लोगों के साथ

चले। वह नशे में इतना चूर था कि फ़ौरन बात मान गया; वह कुछ-कुछ लड़खड़ाता हुआ सा खड़ा रहा और क्रैसस को भक्ति भाव से देखता रहा। सेनापति ने दो-चार औपचारिक शब्द कहकर विदा ली और थोड़ी ही देर बाद वे लोग अपनी पालकियों में थे जो कि ऐपियन द्वार की ओर जा रही थीं। द्वार पर के सन्तरियों ने सेनापति को सलामी दी और सेनापति ने उनसे एकाध मज़ाक़ की बातें कीं और आपस में बाँट लेने के लिए मुट्ठी भर चाँदी के सिक्के दिये। उन्हीं से उसने रास्ता भी पूछ लिया।

—तब क्या आप कभी वहाँ पर नहीं गये? हेलेना ने पूछा।

—नहीं। मैंने कभी वह जगह नहीं देखी।

हेलेना ने कहा—कैसी अजीब बात है। अगर मैं आपकी जगह पर होती तो मैंने ज़रूर चाहा होता कि उसको देखूँ। जिस तरह से आपकी ज़िन्दगी और स्पार्टकस की ज़िन्दगी के धागे यहाँ पर आकर एक में मिल जाते हैं।

— मेरी ज़िन्दगी और स्पार्टकस की मौत!—क्रैसस ने अत्यन्त शान्त भाव से कहा।

द्वार के कप्तान ने उनको बतलाया, इस जगह में अब कोई दम नहीं है। उस पुराने लानिस्ता ने इस जगह को बनाने के लिए बहुत रुपया खर्च किया था, और ऐसा मालूम होता था कि वह लखपती बनने के रास्ते पर है। मगर उस विद्रोह के बाद ऐसा मालूम होता है कि दुर्भाग्य उसका पीछा करने लगा और उसके बाद तो फिर जब वह अपने गुलाम के हाथों मारा गया तो यह जगह अदालती झगड़ों में फँस गयी, तब से आज तक फँसी हुई है। इसके अलावा और जो बड़े-बड़े स्कूल थे वे शहर के अन्दर चले गये हैं। उनमें से दो ने बड़े-बड़े किराये के मकान ले लिये हैं।

क्लॉदिया ने जम्हाई ली। केयस अपनी पालकी में सो रहा था।

सन्तरियों का कप्तान उल्लास-पूर्वक अपनी बात कहे जा रहा था, इस विद्रोह के इतिहास में, वह जो फ़्लेसियस मानाइया ने लिखा है, बाटियाटस के स्कूल के बारे में बताया गया है कि वह शहर के बीचोंबीच था। हम लोग यात्रियों को, जो इन जगहों को देखना चाहते हैं, अब वहीं पर ले जाते हैं। मेरी बात का विश्वास कीजिए, वैसे एक इतिहासकार के मुक़ाबले में मेरे शब्दों का क्या मूल्य। मगर बाटियाटस की जगह ढूँढ़ना काफ़ी सरल है। उस पहाड़ी नाले के संग-संग जो छोटी सी पगडण्डी चली गयी है उसी पर आगे बढ़ते जाइए। चाँद की रोशनी तो इस समय इतनी काफ़ी है कि जैसे दिन हो। अखाड़ा आपको न मिले ऐसा नहीं हो सकता। उसका लकड़ी का बना दर्शक-मंच इतना ऊँचा है कि दूर से ही देखा जा सकता है।

वे लोग जब बातें कर रहे थे तभी गुलामों की एक टोली फावड़े और

कुदाल लेकर उस दरवाज़े में से निकली। फावड़े और कुदाल के अलावा वे एक सीढ़ी और बेंत की एक टोकरी भी लिये हुए थे। वे उस जगह पर गये जहाँ वह बड़ा-सा सलीब खड़ा था; दण्ड के प्रतीक उन छः हज़ार सलीबों में जो कि वहाँ से लेकर रोम तक पूरे रास्ते में खड़े हुए थे, वही सलीब पहला और सबसे अधिक प्रतीकात्मक था। उन गुलामों ने जब अपनी सीढ़ी उस सलीब के सहारे टिकायी तो बहुत से कौवे गुस्से से काँव-काँव करते हुए उड़े।

—यह लोग क्या कर रहे हैं? क्लॉदिया ने सहसा पूछा।

—वे एक कुत्ते को काटकर नीचे गिरा रहे हैं ताकि उसकी जगह पर हम दूसरे कुत्ते को टाँग सकें, द्वार के कप्तान ने यों ही जवाब दिया, सबेरे के वक़्त, मुनेरा से बच कर निकले हुए ग्लैडिएटर को उसके अधिकार के अनुरूप सम्मानित किया जायेगा। इस जगह पर वह आख़िरी गुलाम मरेगा जो कि स्पार्टकस के साथ था।

क्लॉदिया काँप गयी। उसने क्रैसस से कहा—मैं सोचती हूँ कि आपके साथ न जाऊँ।

—अगर तुम घर जाना चाहती हो तो जाओ। क्या तुम इनके साथ अपने दो आदमी कर सकोगे? उसने कप्तान से पूछा।

मगर केयस जो कि बड़े आराम से खर्राटे ले रहा था उन लोगों के संग गया। हेलेना ने पैदल चलने की इच्छा व्यक्त की, क्रैसस ने हामी भरी और अपनी पालकी छोड़कर वह भी उसके संग-संग टहलने लगा। पालकियाँ आगे आगे चल रही थीं और उनके पीछे-पीछे वह बड़ा अर्थपति और सेनापति और वह नवयुवती चाँद के आलोक में चले जा रहे थे। जब वे लोग सलीब के पास से गुज़रे उस समय गुलाम सलीब पर मरे हुए उस आदमी की धूप से काली, गिद्धों और कौओ की नोची हुई, बदबूदार लाश के टुकड़े को नीचे खड़े आदमी को पकड़ा रहे थे। दूसरे गुलाम सलीब के नीचे ज़मीन खोद रहे थे और सलीब को सीधा करने के लिए, और भी मज़बूत बनाने के लिए उसके भीतर खपाचियाँ ठांक रहे थे।

—तुमको सचमुच कभी किसी चीज़ से परेशानी नहीं होती, है न?—क्रैसस ने हेलेना से पूछा।

—इस तरह की चीज़ से मुझे परेशानी क्यों हो?

क्रैसस ने अपना कन्धा उचकाया—मैंने यह बात आलोचना के रूप में नहीं कही थी। मेरा तो ख़याल है कि यह बड़ी प्रशंसा की बात है।

—कि औरत औरत न हो?

क्रैसस ने तटस्थ ढंग से उत्तर दिया, मैं जिस दुनिया में रहता हूँ उसको

मानकर चलता हूँ। मैं दूसरी किसी दुनिया की बात नहीं जानता। तुम जानती हो क्या ?

हेलेना कुछ नहीं बोली—उसने सिर्फ़ सिर हिलाया और वे लोग आगे बढ़ते रहे। स्कूल बहुत दूर न था और वह प्राकृतिक दृश्य जो कि दिन के समय भी इतना सुन्दर था, इस समय चाँद के आलोक में बिलकुल परियों का देश जान पड़ रहा था। तभी उनको अपनी आँखों के सामने अखाड़े की दीवार खड़ी दिखलायी दी। क्रैसस ने पालकी ढोनेवालों से कहा कि वे सब अपनी-अपनी पालकियाँ नीचे रख दें और उनके पास ही रहे आएँ जब तक कि वह लौटकर न आये। इसके बाद हेलेना के संग आगे बढ़ गया।

वह जगह छोटी और अपने उस सूनेपन में एक ओछा-सा भड़कीलापन लिये हुए थी। जहाँ ग्लैडिएटर कसरत करते थे वहाँ के जंगले का बहुत-सा लोहा चोरी चला गया था। लकड़ी के वे झोंपड़े सड़ने लगे थे और अखाड़े की आधी दीवार ढह चुकी थी। क्रैसस हेलेना को अखाड़े की बालू तक ले गया और वहाँ खड़े होकर वे उस जगह को देखने लगे जहाँ से दर्शक लोग खेल देखा करते थे। अखाड़ा बहुत छोटा और घटिया मालूम हो रहा था मगर उसकी बालू चाँदनी में चाँदी के रंग की हो रही थी।

हेलेना ने कहा—मैंने अपने भाई को इस चीज़ के बारे में बोलते सुन था। वह तो इसकी इतनी तारीफ़ कर रहा था कि कुछ न पूछिए और यह तो कुछ यों ही सी चीज़ मालूम होती है।

क्रैसस ने इस छोटे से भद्दे स्कूल के संग, मैदान भर में बिछी हुई लाशों और उन खूँख्वार लड़ाइयों और कभी न ख़त्म होने वाले, तन-मन को पीस कर रख देनेवाले संघर्षों को जोड़ने की कोशिश की मगर जोड़ न सका। उसके नज़दीक वह स्कूल कोई मतलब न रखता था, निदान उसके लिए क्रैसस के मन में कोई भाव न था।

—मैं वहाँ ऊपर, मंच पर जाना चाहती हूँ, हेलेना ने कहा।

—जाओ, अगर ऐसी ही इच्छा है तो। मगर ज़रा संभल कर जाना। मुमकिन है लकड़ी सड़ी हुई हो।

वे दोनों उस बॉक्स तक गये जिसका बाटियाटस को इतना अभिमान था और जिसे देखकर उसको इतना गर्व होता था। दर्शक-मंच का धारीदार छज्जा चिथड़ा होकर लटक रहा था और फटी-पुरानी गद्दियों में से निकल-निकलकर चूहे इधर-उधर दौड़ लगा रहे थे। हेलेना एक कोच पर बैठ गयी और क्रैसस उसकी बग़ल में बैठ गया। फिर हेलेना ने कहा—क्या तुम्हारे मन में मेरे लिए कोई भाव नहीं है ?

—यही कि तुम एक बहुत सुन्दर और बुद्धिमती युवती हो—क्रैसस ने उत्तर दिया।

हेलेना ने बड़े शान्त भाव से कहा—और मैं, महान् सेनापति, सोचती हूँ कि आप सुअर हैं। वह उसकी ओर झुका और हेलेना ने उसके मुँह पर थूक दिया। इसके बाद वहाँ की उस मद्धिम रोशनी में भी हेलेना ने देखा कि कैसे क्रैसस की आँखें गुस्से से शोले के मानिन्द चमकने लगीं। यही सेनापति था, यही वह आवेग था जो कभी उसके शब्दों में नहीं आता था। क्रैसस ने ज़ोर से उसको एक झापड़ रसीद किया और हेलेना कोच पर से फिंककर लकड़ी की उस सड़ी हुई आड़ से जा टकरायी जो कि उसके वज़न के कारण चरमरा उठा। वह उसी तरह वहाँ पर पड़ी रही, उसका आधा शरीर आड़ से बाहर को लटका हुआ, अखाड़े का फ़र्श नीचे बीस फ़ीट की दूरी पर, मगर तभी उसने अपने आपको सँभाल लिया और पीछे की तरफ़ घसीटा और इस बीच सेनापति अपनी जगह से ज़रा भी नहीं हिला। फिर वह जंगली बिल्ली की तरह उसके ऊपर टूट पड़ी और उसे नोचने-बकोटने लगी। मगर उसने उसकी दोनों कलाइयाँ पकड़ लीं और अपने शरीर से कुछ दूर पर उसको वैसे ही पकड़े खड़ा रहा और ताक़तवर के अभिमान से मुस्कराता हुआ बोला—असल बात कुछ और है, मेरी जान, मैं जानता हूँ।

हेलेना के गुस्से का दौरा अब ठण्ढा पड़ गया था और वह रोने लगी। वह एक छोटी-सी, बिगड़ी हुई, ज़िद्दी लड़की की तरह रो रही थी और जब वह रो रही थी तभी क्रैसस उसके संग प्रणय व्यापार कर रहा था। हेलेना ने न तो कोई विरोध किया और न स्वागत किया और जब क्रैसस ने बिना किसी आवेग या आतुरता के उस काम को ख़तम कर दिया तो हेलेना से बोला—तुम यही चाहती थीं न, मेरी जान ?

हेलेना ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने कपड़े और बाल ठीक करती रही और लिपस्टिक को पोंछा जो तमाम उसके चेहरे पर फैल गया था और आँजन को साफ़ किया जो बहकर गालों पर आ लगा था। लौटते समय पालकी की तरफ़ बढ़ते हुए वही आगे-आगे थी और वहाँ पहुँचकर ख़मोशी से वह अपनी पालकी में बैठ गयी। क्रैसस पैदल चलता रहा। पालकी ढोनेवाले कापुआ के रास्ते पर लौट पड़े और केयस अब भी सो रहा था। रात अब प्रायः शेष हो रही थी और चाँद की तेज़ रोशनी पीली पड़ रही थी। एक नयी रोशनी धरती को छू रही थी और थोड़ी ही देर में एक भूरा सा बादल चाँद की रोशनी और दिन की रोशनी को एक में मिला देगा। पता नहीं क्यों, क्रैसस को अपने भीतर शक्ति और जीवन का एक नया उद्रेक अनुभव हो रहा था। उसे एक ऐसी अनुभूति हो रही थी जो कि कभी ही कभी होती थी, जीवन और शक्ति की एक ऐसी विराट् अनुभूति कि उसका मन उन प्राचीन किम्वदन्तियों को सच मानने की ओर कुछ कुछ झुका जिनमें कहा जाता था

कि देवता ही मर्त्यलोक की कुछ स्त्रियों में अपना बीज डालते हैं जिससे कुछ विशेष मनुष्यों की सृष्टि होती है। वह अपने मन में सोचने लगा कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं भी उन्हीं में से एक हूँ? ज़रा सोचो कि भाग्य ने मेरा साथ कितना दिया। तब फिर यह कैसे सम्भव नहीं है कि मैं भी उन्हीं मनुष्यों में से एक होऊँ?

अपने लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वह हेलेना की पालकी के बग़ल-बग़ल चलने लगा और हेलेना ने विचित्र ढंग से उसको देखा और कहा, अभी थोड़ी देर पहले तुमने यह कहा था कि असल बात कुछ और है, इसका क्या मतलब था? क्या मैं बनावटी हूँ? तुमने ऐसी भयानक बात क्यों कही?

—क्या वह बात इतनी भयानक थी!

—तुम जानते हो कि वह कितनी भयानक थी। असल चीज़ क्या है?

—औरत।

—कौन औरत?

क्रैसस के चेहरे पर बादल-सा घिर आया और उसने सिर हिलाया। अपने आन्तरिक ऐश्वर्य की अनुभूति को बचाये रखने के लिए वह जी जान से संघर्ष कर रहा था और उसका बहुत कुछ उसके भीतर बचा हुआ भी था। ऐपियन द्वार पर पहुँच कर उसने हेलेना की पालकी छोड़ दी और द्वार के कप्तान के पास गया और तब भी अपने आपको देवताओं के बीज से उत्पन्न समझने का संघर्ष उसके मन में चल ही रहा था। उसने काफ़ी रूखे ढंग से कप्तान को आदेश दिया, इनको हिफ़ाज़त के साथ घर पहुँचाने के लिए साथ में कुछ सिपाही कर दो!

कप्तान ने आदेश का पालन किया और हेलेना वहाँ से हाँक कर ले जायी गयी। क्रैसस ने रात की शुभ-कामनाएँ तक न दीं। क्रैसस द्वार की गहरी छाया में कुछ सोचता हुआ खड़ा था। द्वार का कप्तान और वहाँ काम करने वाले सिपाही हैरान होकर उसको देख रहे थे। तभी क्रैसस ने पूछा—कितना बजा है?

—अंतिम घड़ी प्रायः बीत गयी है। आप थक गये होंगे?

क्रैसस ने कहा, नहीं, मैं थका नहीं हूँ। मैं बिलकुल थका नहीं हूँ कप्तान। —उसकी आवाज़ कुछ-कुछ नरम पड़ गयी—बहुत दिन बाद आज मैं इस तरह पहरे पर खड़ा हुआ हूँ।

—रातें बहुत लम्बी होती हैं, कप्तान ने स्वीकार किया। अब से आध घण्टे बाद यह जगह बिलकुल बदल जायगी। तरकारी बेचनेवाले आयेंगे और अपनी गायें लिये ग्वाले आयेंगे और बोझा ढोनेवाले और मछुए और इसी तरह के तमाम लोग आयेंगे। यह तो बड़ा व्यस्त द्वार है। और

आज सुबह तो वह ग्लैडिएटर वहाँ पर टँगेगा।—उसने सलीब की तरफ़ इशारा करके सिर हिलाया, सलीब, जो कि सबेरे के उस अँधेरे में धुँधला-धुँधला भूरा-भूरा दिखायी दे रहा था।

—क्या बहुत भीड़ होगी? क्रैसस ने पूछा।

—जी हुज़ूर—शुरू में तो बहुत न होगी मगर जैसे-जैसे दिन चढ़ेगा, भीड़ बढ़ती जायगी। इस बात को मानना ही होगा कि किसी आदमी को सलीब पर चढ़ाये जाते देखने में एक अजीब मज़ा होता है। आज दोपहर तक यह दरवाज़ा और आसपास की सब दीवारें ठसाठस भर जायँगी। आप सोचेंगे कि एक बार यह चीज़ देख ली तो हो गया मगर ऐसा होता नहीं।

—वह कौन आदमी है?

—यह मैं नहीं कह सकता। बस एक ग्लैडिएटर है, जहाँ तक मैं जानता हूँ। शायद बहुत अच्छा ग्लैडिएटर है और मुझे तो बेचारे के लिए दुःख-सा होता है।

—अपनी हमदर्दी को बेकार खर्च मत करो कप्तान, क्रैसस ने उससे कहा।

—मेरा मतलब यह नहीं था हुज़ूर। मेरा मतलब सिर्फ़ यह था कि मुनेरा का जो आख़िरी आदमी होता है उसके लिए इन्सान को कुछ न कुछ दर्द महसूस होता ही है।

—अगर तुमको गणित की कल्पनाओं में आनन्द मिलता हो तो मैं कहना चाहूँगा कि उनका मुनेरा तो अब से बहुत पहले शुरू हुआ था। किसी न किसी को तो आख़िरी आदमी होना ही था।

अंतिम घड़ी बीत चुकी थी। दिन की रोशनी के साथ पहली घड़ी शुरू हुई। चाँद डूब चुका था और आसमान गन्दे दूध के रंग का हो रहा था। सुबह का कुहरा हर जगह फैला हुआ था, एक उस मार्ग को छोड़कर जिसकी काली रेखा उत्तर में न जाने कहाँ तक चलती चली गयी थी। आसमान में रोशनी फैलती आ रही थी और उसी को पृष्ठभूमि बनाकर वह कंकाल जैसा नया और डरावना सलीब खड़ा था और उधर पूरब में एक हलकी सी गुलाबी आभा फैल रही थी जो कि उगते हुए सूरज के आगमन की सूचना थी। क्रैसस प्रसन्न था कि उसने जागते रहने का निश्चय किया। उसका अपना मन इस समय ऐसा था कि उसे भोर का यह कड़वा-मीठा स्वाद अच्छा लग रहा था। भोर की बेला में सदा शोक और उल्लास के रंग घुले-मिले रहते हैं।

तभी एक ग्यारह बरस का लड़का हाथ में एक सुराही लिये वहाँ पर पैदल आया। द्वार के कप्तान ने उसका स्वागत किया और उसके हाथ से सुराही ले ली।

उसने क्रैसस को बतलाया, यह मेरा बेटा है हुज़ूर। यह रोज़ सबेरे मेरे

लिए गर्म शराब लेकर आता है। आप उससे दो शब्द बोलेंगे नहीं हुजूर? उसके लिए यह एक बहुत बड़ी बात होगी। बाद को वह इस चीज़ को याद करेगा। उसका नाम मारियस लिक्तस है। मैं जानता हूँ हुजूर कि मैं अपनी औक़ात से ज़्यादा बड़ी चीज़ माँग रहा हूँ मगर ख़ुद उसके लिए और मेरे लिए उसकी बहुत बड़ी क़ीमत होगी।

—कहो मारियस लिक्तस, क्रैसस ने कहा।

—मैं आपको जानता हूँ, लड़के ने उससे कहा, आप ही सेनापति हैं। मैंने कल आपका देखा था। आपकी वह सीनेवाली सोने की पट्टी कहाँ गयी?

—वह सोने की नहीं पीतल की थी और मैंने उसको उतार दिया क्योंकि पहनने में आराम नहीं मिलता था।

—मेरे पास जब होगी तो मैं कभी नहीं उतारूँगा।

—इसी तरह रोम ज़िन्दा है और रोम का वैभव उसकी कीर्ति और उसकी परम्परायें इसी तरह चिरकाल तक जियेंगी, क्रैसस ने सोचा। इस दृश्य ने उसके मर्म को एक विशेष रूप में स्पर्श किया था। कप्तान ने सुराही उसकी तरफ़ बढ़ायी।

—आप भी लेंगे हुजूर?

क्रैसस ने सिर हिलाकर इनकार किया। तभी दूर पर नगाड़ों की आवाज़ सुनायी दी और कप्तान ने सुराही लड़के को पकड़ा दी और चिल्लाकर दरवाजे के सन्तरियों को आदेश देने लगा। सैनिक खुले हुए दरवाजे में दोनों ओर क़तार बाँधकर खड़े हो गये, उनकी ढालें ज़मीन पर टिकी हुई थीं और उनके भारी-भारी नेज़े उनके हाथों में ऊपर नोक किये खड़े थे। उस हालत में नेज़े को रखना एक मुश्किल काम था और क्रैसस को उससे थोड़ी चिढ़ मालूम हुई क्योंकि उसने सोचा कि अगर वह ख़ुद उस जगह पर न होता तो हथियारों के इस खेल के पीछे वे लोग हरगिज़ न पड़ते। नगाड़ों की आवाज़ बढ़ती गयी और इसके थोड़ी ही देर बाद फ़ौजी बैण्ड की पहली क़तारें उस चौड़े रास्ते पर दिखायी दीं जो दरवाज़े से फ़ोरम को जाता था। अब चढ़ता हुआ सूरज ऊँची-ऊँची इमारतों की चोटियों को छू रहा था और लगभग उसी वक़्त कुछ थोड़े से लोग सड़कों पर दिखायी दिये। वे लोग दरवाज़े और फ़ौजी बैण्ड की आवाज़ की तरफ़ बढ़े।

छः नगाड़े थे और चार तुरहियाँ; उनके पीछे छः सैनिक; उनके बाद नंगा ग्लैडिएटर, जिसकी बाँहें पीछे को कसकर बंधी हुई थीं और फिर एक दर्जन सैनिक और। एक आदमी को ले जाने के लिए सैनिकों की यह काफ़ी बड़ी संख्या थी और यह आदमी जिसको ले जाया जा रहा था कुछ ख़ास ख़तरनाक या मज़बूत नहीं नज़र आता था। मगर जब वह कुछ और पास

आया तब क्रैसस ने अपनी राय बदल दी। खतरनाक ज़रूर है—ऐसे आदमी खतरनाक होते हैं। यह चीज़ उसके चेहरे पर लिखी हुई है। उसके चेहरे पर वह खुलापन, वह स्नेह की गरमी नहीं है जो किसी रोमन के चेहरे पर दिखायी देती है। उसका चेहरा बाज़ की तरह है, लम्बी-सी, बाहर को निकली हुई नाक, उभरी हुई गाल की हड्डियों पर तनी हुई चमड़ी, पतले होंठ और आँखें बिल्ली की आँखों की तरह हरी-हरी और नफ़रत से भरपूर। उसका चेहरा नफ़रत से भरा हुआ था मगर उस नफ़रत के पास अपनी भाषा न थी, उसकी नफ़रत एक जानवर की सी नफ़रत थी और उसका चेहरा इन्सान का चेहरा नहीं नाटकवाला नकली चेहरा था। देखने-सुनने में वह बड़ा न था मगर उसकी मांस-पेशियाँ चमड़े और कोड़े की बटी हुई रस्सी की तरह थीं। उसके शरीर पर सिर्फ़ दो जगह ताज़े घाव थे जहाँ गोश्त कट गया था, एक तो सीने के ऊपर और एक सीने के बग़ल मे मगर उनमें से कोई भी घाव बहुत गहरा न था और उनके ऊपर का खून जमकर सख्त हो गया था। मगर उन ज़ख्मों के नीचे शरीर भर में घावों के दाग़ ही दाग़ थे। एक हाथ की एक उँगली गायब थी और एक कान पूरा साफ़ हो गया था।

जब उस अफ़सर ने, जो इस टुकड़ी के आगे-आगे चल रहा था, क्रैसस को देखा तो उसने अपना हाथ उठा दिया ताकि उसके सिपाही रुक जायँ और फिर उसने आगे बढ़कर सेनापति को सलामी दी। ज़ाहिर है कि वह खूब समझ रहा था कि वह मौक़ा कितना अहम है।

उसने कहा—मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मुझे आपको यहाँ पर देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

—यह संयोग की बात है, क्रैसस ने सिर हिलाकर कहा। वह भी इस चीज़ को लक्ष्य किये बिना न रह सका कि कैसे उस गुलाम सेना के आखिरी आदमी के संग उसका सामना हो रहा था।—क्या तुम अभी इसी वक्त़ उसको सलीब पर चढ़ाने जा रहे हो?

—मुझको आदेश तो यही मिला है।

—यह कौन है? यह ग्लैडिएटर? यह तो काफ़ी ज़ाहिर सी बात है कि वह अखाड़े का कोई पुराना घाघ है। उसके जिस्म मे तलवार के तमाम निशान ही निशान हैं। मगर तुम्हें मालूम है कि यह है कौन?

—हमें थोड़ा-बहुत मालूम है। यह एक अफ़सर था और शायद एक दस्ते का या उससे भी बड़ी टुकड़ी का सेनापति था। यह भी मालूम होता है कि यह आदमी यहूदी है। बाटियाटस के साथ बहुत से यहूदी थे जो कि कभी-कभी सीका से लड़ने में थ्रेसियनों से भी ज़्यादा अच्छे पड़ते थे। सच बात तो यह है कि बाटियाटस ने डेविड नाम के एक यहूदी के बारे में बयान दिया

था और उसने बतलाया था कि वह स्पार्टकस के साथ-साथ विद्रोह के पहले नेताओं में से एक था। हो सकता है कि यह वही आदमी हो और यह भी हो सकता है कि न हो। उसको जब इस मुनेरा में शरीक होने के लिए यहाँ पर लाया गया तब से वह एक शब्द नहीं बोला। वह खूब-खूब लड़ा—हे ईश्वर, मैंने छुरे का ऐसा खेल सारी ज़िन्दगी में नहीं देखा था। वह पाँच जोड़ लड़ा और यह देखिये उसके शरीर पर बस दो जगह ज़ख्म हैं। तीन जोड़ों की लड़ाई तो मैंने खुद देखी और मैं कह सकता हूँ कि मैंने ज़िन्दगी में छुरे का इससे बेहतर खेल नहीं देखा था। उसे पता था कि अन्त में उसे सलीब पर चढ़ना होगा मगर तब भी वह इस तरह से लड़ रहा था कि जैसे लड़ाई में जीतने का मतलब आज़ादी होगी। मेरी समझ में यह बात नहीं आती।

—नहीं—हाँ ज़िन्दगी अजीब चीज़ है, नौजवान।

—जी हुज़ूर। आप सच कहते हैं।

—अगर यही वह यहूदी डेविड है, क्रैसस ने सोच में डूबे-डूबे कहा, तो इसका मतलब यह है कि दुनिया में नियति के व्यंग्य जैसी कोई चीज़ है। क्या मैं उससे बात कर सकता हूँ?

—ज़रूर-ज़रूर। गो कि मैं समझता हूँ हुज़ूर कि उससे बात करके आपको कुछ भी हासिल न होगा। वह एक ख़ामोश जानवर है जो भीतर-ही-भीतर घुटता रहता है मगर ज़बान पर एक लफ़्ज़ नहीं लाता।

—कोशिश करने में क्या बुराई है।

वे लोग वहाँ पर गये जहाँ ग्लैडिएटर खड़ा था और जहाँ लोगों की एक बढ़ती हुई भीड़ उसे घेरे हुए थी और सैनिकों को भीड़ को पीछे हटाना पड़ रहा था। भारी-भरकम ढंग से, बड़े शानदार लहजे में अफ़सर ने एलान किया—ग्लैडिएटर, तुम्हें एक बहुत बड़ी इज़्ज़त मिल रही है। ये सेनापति मार्कस लिसिनियस क्रैसस हैं जो तुमसे बात करना चाहते हैं।

जब इस नाम का एलान हुआ तो भीड़ तालियाँ बजाने लगी। मगर उस गुलाम पर इस सब का कोई असर न था गोया वह एकदम बहरा हो। वह ज़रा भी नहीं हिला और सामने की ओर उसी तरह एकटक देखता रहा। उसकी आँखें हरे पत्थर के टुकड़ों की तरह चमक रही थीं मगर उसके चेहरे पर दूसरा कोई चिन्ह या गति न थी।

क्रैसस ने कहा—तुम मुझे जानते हो ग्लैडिएटर। मेरी तरफ़ देखो।

मगर तब भी वह नङ्गा ग्लैडिएटर नहीं हिला और फिर उस टुकड़ी का नायक अफ़सर उसके पास गया और उसने कसकर उसे एक झाँपड़ लगाया।

—अबे सुअर, तुझसे कौन बोल रहा है कुछ पता है?—वह चीखा।

उसने दुबारा उसे झाँपड़ रसीद किया। ग्लैडिएटर ने वार से बचने की

कोई कोशिश न की और क्रैसस ने महसूस किया कि अगर यही चीज़ चलती रही तो वह इस आदमी से शायद ही कुछ हासिल कर सके।

—बहुत काफ़ी हो गया अफ़सर, क्रैसस ने कहा, उसको छोड़ दो और तुम्हें जो काम करना हो, जाओ करो।

—मुझे सख़्त अफ़सोस है। मगर वह बोला नहीं। शायद वह बोल नहीं सकता। उसको कभी किसी ने अपने साथियों तक से बोलते नहीं देखा।

—कोई बात नहीं, क्रैसस ने कहा।

वह उन्हें दरवाज़े में से होकर सलीब की तरफ़ बढ़ते हुए देखता रहा। अब दरवाज़े में से लगातार लोगों की भीड़ें आ रही थीं और रास्ते के दोनों तरफ़ फैलती चली जा रही थीं जहाँ से वे तमाम कार्रवाइयों को कुछ ऊँचाई पर से निर्बाध रूप में देख सकती थीं। क्रैसस भीड़ को चीरता हुआ उस सलीब तक गया और उसके मन में न चाहते हुए भी एक विचित्र-सा कुतूहल यह जानने के लिए था कि इस चीज़ की प्रतिक्रिया उस गुलाम पर क्या होती है। उस आदमी की पत्थर जैसी ख़ामोशी अब एक चुनौती बन गयी थी और क्रैसस, जिसने कभी किसी आदमी को चाहे वह कितना ही सख़्तजान क्यों न हो, इस तरह से एकदम ख़ामोशी में सलीब पर चढ़ते नहीं देखा था, सोचने लगा कि उसके जाने का असर उस आदमी पर क्या होता है।

वे सिपाही लोगों को खड़े-खड़े सलीब पर लटकाने के काम में बड़े निपुण थे और बड़ी फुर्ती और चतुराई से अपना काम कर रहे थे। एक रस्सी उस बँधे हुए गुलाम की बाँह के नीचे से डाली गयी। और फिर खींचकर उस रस्सी के दोनों हिस्से बराबर कर दिये गये। वह सीढ़ी जिसे पिछली रात गुलाम वहाँ छोड़ गये थे, पीछे से सलीब से टिका दी गयी। रस्सी के दोनों हिस्से सलीब की बाँहों पर फेंक दिये गये और दो सिपाहियों ने एक-एक सिरा पकड़ लिया। फिर उसी फुर्ती और निपुणता से ग्लैडिएटर को ऊपर खींच कर लगभग उस जगह तक ले आया गया जहाँ दोनों लकड़ियाँ मिलती थीं। इसके बाद एक और सिपाही सीढ़ी पर चढ़ गया और ग्लैडिएटर को सहारा देकर ऊपर चढ़ाने लगा और नीचेवाले लोग रस्सियाँ खींचते रहे। अब वह सलीब पर इस तरह लटक रहा था कि उसके कन्धे उस जगह के ठीक नीचे पड़ते थे जहाँ लकड़ी की दोनों शहतीरें आपस में मिलती थीं। सीढ़ी पर वाला सिपाही कूदकर ऊपर चढ़ गया और एक दूसरा सिपाही एक हथौड़ा और बहुत सी लम्बी-लम्बी मोटी-मोटी कीलें लेकर सीढ़ी से ऊपर आ गया और सलीब की दूसरी बाँह पर दोनों ओर पैर लटकाकर बैठ गया।

इस बीच क्रैसस बड़ी गहरी दिलचस्पी से ग्लैडिएटर को देख रहा था।

गोकि उसका नंगा शरीर उस वक्त ऐंठा जब कि उसे सलीब की खुरदरी लकड़ी पर ऊपर खींचा गया मगर तब भी उसके चेहरे पर कोई भाव न था और न उसी वक्त उसके चेहरे पर कोई भाव आया जब कि रस्सी ने दर्द के साथ उसके शरीर को काटा। वह निश्चेष्ट और निस्पन्द झूल रहा था जब कि पहले सिपाही ने रस्सी उसकी बाँहों के नीचे से निकालकर, सीने को लपेटते हुए ऊपर सलीब में गाँठ लगा दी। इसके बाद वह पहली रस्सी खींच ली गयी। और फिर वह रस्सी जो उसके हाथों को बाँधे हुए थी काट दी गयी और दोनों सिपाहियों ने एक-एक बाँह उठाकर उसकी कलाइयाँ सलीब की आड़ी शहतीर से बाँध दीं। जब कि दूसरे सिपाही ने जोर लगाकर उसकी मुट्ठी खोली और उस पर कील रक्खी और अपने हथौड़े का एक भारी चोट से कील को लकड़ी के अन्दर धँसाया तब कहीं जाकर ग्लैडिएटर के अन्दर वस्तुतः दर्द की कोई प्रतिक्रिया हुई। मगर तब भी वह न बोला और न चीखा मगर उसका चेहरा विकृत हो गया और उसका शरीर रह रहकर ऐंठने लगा। हथौड़े की तीन और चोटों ने कील को लकड़ी के भीतर पाँच इंच धँसा दिया और एक अन्तिम चोट ने उसका सिर एक ओर को ऐसे झुका दिया कि हाथ फिर अपनी जगह से हिल नहीं सकता था। फिर दूसरे हाथ के साथ भी यही क्रिया दुहरायी गया और एक बार फिर ग्लैडिएटर यन्त्रणा से ऐंठ गया और एक बार फिर जब कील उसके हाथों की मासपेशियों और रगों को काटती हुई अन्दर घुसी तो उसका चेहरा दर्द से विकृत हो गया। मगर तब भी वह चीखा नहीं गोकि आँसू उसकी आँख से जारी थे और उसके खुले हुए मुँह से लार टपक रही था।

अब वह रस्सी जो उसके सीने के चारों तरफ़ लिपटी हुई थी काट दी गयी और अब वह केवल अपने हाथों के सहारे लटक रहा था और उसकी कलाइयों पर बँधी हुई रस्सी ही कीलों पर पड़नेवाले शरीर के बोझ को कुछ कम कर रही थी। सिपाही सीढ़ी से नीचे उतर आये, सीढ़ी हटा दी गयी और भीड़, जिसमें अब सैकड़ों लोग थे, उस निपुणता की प्रशंसा में तालियाँ बजाने लगी जिससे कुछ ही मिनटों में एक आदमी को सलीब पर चढ़ा दिया गया था....

इसके बाद ग्लैडिएटर बेहोश हो गया।

अफ़सर ने क्रैसस को समझाया—ये लोग हमेशा इसी तरह बेहोश हो जाते हैं। कीलों की चोट के कारण ही ऐसा होता है मगर उन्हें फिर होश आ जाता है और तब कहीं बीस-तीस घण्टे बाद ही वे फिर बेहोश होते हैं। हमको एक गॉल मिला था जो चार दिन तक होश में रहा। उसकी आवाज़ बन्द हो गई। वह चीख न पाता था मगर फिर भी होश में था। ऐसी कोई चीज हमारे देखने में फिर नहीं आयी। मगर जब ये कीलें उसके हाथों में भी

टोंकी गयीं तो वह भी बेहोश हो गया। कितनी प्यास लगी है मुझे—उसने एक फ्लास्क खोला, खूब अच्छी तरह जी भर कर पानी पिया और फिर क्रैसस की तरफ़ फ्लास्क को बढ़ाया—गुलाब जल का पानी लीजिएगा?

—शुक्रिया, क्रैसस ने कहा। एकाएक वह अपने को बहुत खुश्क और थका हुआ महसूस कर रहा था। फ्लास्क में जितना पानी बचा था वह सब पी गया। भीड़ अब भी बढ़ती जा रही थी और सिर से उनकी ओर इशारा करते हुए क्रैसस ने पूछा—क्यों, ये लोग सारे दिन यहीं रहेंगे?

—उनमें से ज़्यादातर तो केवल उसके होश आने तक यहाँ पर रहेंगे। वे देखना चाहते हैं कि उस समय यह क्या करेगा। उस समय ये लोग अजीब-अजीब हरकतें करते हैं। बहुत से तो अपनी माँ को पुकारते हैं। आपने कभी गुलामों के बारे में इस रूप में न सोचा होगा, है न? क्रैसस ने कन्धा उचका दिया। अफ़सर अपनी बात कहता गया—मुझे यह सड़क साफ़ करनी हागी। यह लोग रास्ते का चलना बन्द कर देते है। कोई सोचेगा कि इन लोगों में इतनी अक्ल तो होगी कि सड़क का थोड़ा सा हिस्सा तो खाली छोड़ दें—मगर नहीं, कभी नहीं। वे सब एक से होते हैं। भीड़ में कोई अक्ल नहीं होती। उसने अपने दो सिपाहियों को तैनात किया कि वे इतनी सड़क खाली करवा दें कि आने-जानेवालों का रास्ता न रुके।

उसने क्रैसस से कहा—हुजूर। आपको मैं एक तकलीफ़ देना चाहता हूँ। मुझे इस चीज़ से कोई बहस तो न होनी चाहिए थी मगर मुझे यह जानने का बड़ा कुतूहल है कि आपने यह बात क्यों कही थी कि अगर यह वही यहूदी डेविड है तो इस चीज़ में नियति का एक व्यंग्य छिपा हुआ है। आपने ऐसी ही कोई बात कही थी—

—क्या मैंने ऐसी कोई बात कही थी? क्रैसस ने पूछा। मुझे नहीं मालूम मेरा क्या मतलब था या हो सकता था। वह एक गुज़री हुई बात थी और बीती हुई बातें दबी रहें, यही अच्छा है और उस गुलाम युद्ध में कोई गौरव न था। वे जीतें और ज़बर्दस्त लगन की कहानियाँ सब दूसरों के लिए थीं; जहाँ तक उसकी अपनी बात थी उसके लिए तो इन्हीं सलीबों के बूचड़खाने का ओछा सन्तोष था। इस सब मार-काट और मृत्यु और यन्त्रणा से वह कितना थक गया था। मगर इससे कोई बचकर जाय कहाँ? रोज़-ब-रोज़ वे एक ऐसे समाज की सृष्टि करते जा रहे थे जिसमें ज़िन्दगी मौत पर टिकी हुई थी। सारी दुनिया के समस्त इतिहास में कभी ऐसा नहीं हुआ कि क़त्ल को निपुणता के इतने ऊँचे स्तर पर पहुँचाया गया हो और इतने परिमाण में हत्या की गयी हो और कहाँ होगा इस चीज़ का अन्त और कब होगा? उसे एक घटना की याद आयी जो उसके कुछ ही दिन बाद हुई थी

जब कि उसने रोम की पराजित और हतोत्साह सेनाओं की कमान संभाली थी। उसने तीन फ़ौजें अपने दोस्त और बचपन के साथी पिलिको ममियस के हवाले कर दी थीं, जो दो अहम लड़ाइयों में अब तक हिस्सा ले चुका था, और उसने ममियस को आदेश दिया था कि वह स्पार्टकस को तंग करे और अगर मुमकिन हो तो उसकी सेना के एक टुकड़े को काट कर अलग कर दे। इसके बदले हुआ यह कि ममियस एक जाल में जा फँसा और उसकी तीनों फ़ौजें गुलामों से अचानक सामना हो जाने पर, इस तरह जान लेकर भागीं कि इससे ज्यादा अन्धी और शर्मनाक भगदड़ किसी रोमन सेना में पहले देखी न गई थी। उसे याद आया कि कैसे उसने ममियस को खूब कसकर डाँट बतायी थी। उसे याद आया कि उसने उसको क्या-क्या गालियाँ दी थीं और किस तरह उसके ऊपर कायरता का अभियोग लगाया था। मगर ममियस जैसे आदमी के संग इससे अधिक कुछ नहीं किया जा सकता था। फ़ौजों की बात और थी। सातवीं फ़ौज के पाँच हज़ार सिपाहियों को क़तार में खड़ा किया गया और उनमें से हर दसवें आदमी को लेकर कायरता के अभियोग में मौत की सजा दे दी गयी।—तुम्हें चाहिए था कि मुझे भी मार डालते, ममियस ने बाद में उससे कहा था।

अब इस समय उसको इस चीज़ की बड़ी स्पष्ट स्मृति थी—क्योंकि उसके लिए यह ममियस और वह भूतपूर्व राजदूत मार्कस सर्वियस दोनों गुलामों के प्रति उसकी गहरी घृणा के प्रतीक थे। यह कहानी घूम-फिरकर उसके पास आयी मगर गुलामों के ख़ेमे में से उठनेवाली सभी कहानियों की तरह इसमें से भी झूठ और सच को अलग-अलग करना मुश्किल था। मार्कस सर्वियस कुछ हद तक स्पार्टकस के प्यारे साथी क्रिक्सस नाम के एक गॉल की मौत के लिए ज़िम्मेदार था। क्रिक्सस अपनी फ़ौज से कटकर अलग जा पड़ा था, दुश्मन से घिर गया था और अपनी फ़ौज के साथ मारा गया था। इसीलिए जब बहुत बाद को स्पार्टकस ने सर्वियस और ममियस को गिरफ़्तार किया और अपनी गुलाम अदालत में उनके ऊपर मुक़दमा चलाया तो यह कहा जाता है कि डेविड नाम के एक यहूदी ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि उनको किस तरह मारा जाय। या शायद जिस तरह उनको मारने का फ़ैसला किया गया रहा हो, डेविड नाम के उस यहूदी ने उसका विरोध किया था। क्रैसस को यह बात कुछ ठीक से मालूम न थी। वे दोनों ग्लैडिएटरों की तरह लड़-कर मरे थे। उनको यही सजा दी गयी थी। उनको एकदम नंगा कर दिया गया था, रोमन सेनाओं के उन दो प्रौढ़ सेनापतियों को, और एक-एक छुरा दे दिया गया था और एक कामचलाऊ अखाड़े में एक दूसरे के सामने खड़ा कर दिया गया था ताकि वे आपस में लड़कर एक दूसरे को ख़त्म कर

दें। यह पहली बार स्पार्टकस ने ऐसी चीज़ की थी मगर क्रैसस कभी इस बात को नहीं भूला और न कभी उसने इसके लिए स्पार्टकस को माफ़ किया।

मगर यह बात ऐसी न थी कि वह अपने उस अफ़सर से कह सकता जो कि सलीब के साये में उसके पास ही खड़ा था। क्रैसस ने कहा—मुझे पता नहीं, कि मेरा क्या मतलब था। मगर वह कोई खास बात नहीं थी।

वह थक गया था और उसने तय किया कि घर लौटकर सोयेगा।

३

तत्व की बात यह थी कि क्रैसस को इसकी कोई चिन्ता न थी कि यह जो इस आख़िरी ग्लैडिएटर को सलीब पर चढ़ाया जा रहा था वह इन खास तथ्यों की रोशनी में न्यायपूर्ण था या नहीं। उसकी न्याय भावना भोंथी हो गयी थी; उसकी प्रतिशोध भावना भोंथी हो गयी थी; और मौत में उसके लिए अब कोई नयापन न था। रोमन प्रजातन्त्र के अन्य 'बड़े' घरानों के बच्चों की तरह वह भी अपने बचपन में सुनी हुई प्राचीन काल की पौराणिक वीरगाथाओं से भरा हुआ था। उसे पूरा विश्वास था कि रोमन ही दुनिया के श्रेष्ठतम मनुष्य हैं। राज्य और क़ानून सभी मनुष्यों के लिए हैं और क़ानून न्यायपूर्ण होता है। वह ठीक-ठीक नहीं कह सकता था कि किस जगह पर आकर उसका यह विश्वास टूट गया। मगर पूरी तरह तो तब भी नहीं टूटा। उसके भीतर कहीं पर अब भी वह थोड़ा-सा पुराना भ्रम बना हुआ था; मगर तब भी वह जो किसी समय न्याय की इतनी स्पष्ट परिभाषा किया करता था आज अब न कर पाता था। दस बरस पहले उसने विरोधी दल के नेताओं के हाथ अपने पिता और अपने भाई को निर्मम रूप से मौत के घाट उतरते देखा था मगर न्याय ने तो उसका बदला नहीं लिया। क्या चीज़ न्यायपूर्ण है और क्या अन्यायपूर्ण, इसकी उलझन घटने के बजाय बढ़ गयी थी और अब वह केवल धन-सम्पदा और शक्ति के आधार पर ही कोई तर्क-शृंखला खड़ी कर पाता था। तर्क की दृष्टि से न्याय का मतलब होता था कि धन-सम्पदा और शक्ति पर किसी तरह आंच न आये; नैतिकता का महत्व धीरे-धीरे ग़ायब हो गया। इसीलिए उसने जब आख़िरी ग्लैडिएटर को सलीब पर चढ़ाये जाते देखा तो उसके मन में ऐसा कोई भाव नहीं आया कि जैसे कोई ईश्वरी न्याय सम्पन्न हो रहा हो। सच पूछो तो उसके मन में किसी तरह का भाव न था, कोई अनुभूति न थी। उसका मन तनिक भी उद्वेलित न हुआ था।

तो भी ग्लैडिएटर के दिमाग़ में न्याय और अन्याय के प्रश्न थे—और इस वक्त दर्द और चोट और थकान से पैदा हुई बेहोशी में गडमड हो गये

थे। उसकी स्मृति के अनगिनत धागों में ये प्रश्न गुंथे हुए थे। हो सकता है कि उन धागों को अलग किया जा सकता; हो सकता है कि यन्त्रणा की उन अन्धा कर देनेवाली, छुरा सा मारनेवाली लहरों के बीच में से उन धागों को एक-एक करके अलग किया जा सकता। उसके दिमाग़ में कहीं पर उस घटना की स्मृति साफ़-साफ़ और ठीक-ठीक बनी हुई थी जिसका उल्लेख क्रैसस ने किया था।

क्रैसस के समान ही ग्लैडिएटरों के सामने भी न्याय का प्रश्न था; और बाद को जब कि गुलामों का इतिहास लिखा गया और उसको उन लोगों ने लिखा जो गुलामों से सबसे ज़्यादा नफ़रत करते थे और गुलामों के बारे में बिलकुल नहीं जानते थे तब उसमें कहा गया कि गुलामों ने रोमनों को बन्दी बनाया और ग्लैडिएटरों की तरह आपस में लड़ाकर मारा और इसमें उन्हें पैशाचिक उल्लास मिला। इस तरह यह बात पहले से मान ली गयी—जैसा कि मालिक लोग हमेशा पहले से मान लेते हैं—कि जब उन लोगों के हाथ में सत्ता आयेगी जो आज दलित हैं, पीड़ित हैं तो वे उस सत्ता का प्रयोग उसी तरह करेंगे जिस तरह कि उनका दमन करनेवाले और उनको पीड़ा पहुँचाने वाले आज कर रहे हैं।

और यह बात उस आदमी की स्मृति में थी जो सलीब पर लटक रहा था। कभी किसी बड़े पैमाने पर रोमन क़ैदियों को ग्लैडिएटरों की तरह आपस में लड़ा कर नहीं मारा गया था। वह केवल एक बार की बात थी जब स्पार्टकस ने क्रोध और घृणा के निर्मम, ठंडे आवेश में आकर उन दो कुलीन रोमनों की तरफ़ इशारा करके कहा था, जैसा हम करते थे वैसा ही तुम करोगे! छुरा हाथ में लेकर, नंगे होकर सामने की उस बालू पर निकल जाओ ताकि तुम सीख सको कि रोम की गौरव-वृद्धि के लिए और उसके नागरिकों के मनोरंजन के लिए हम किस तरह मरते थे।

वह यहूदी तब वहीं पर बैठा हुआ था और सारी बातें सुन रहा था और जब वे दोनों रोमन वहाँ से ले जाये गये तो स्पार्टकस उसकी ओर मुड़ा और तब भी उस यहूदी ने कुछ नहीं कहा। उन दोनों के बीच एक बड़ा गहरा सम्बन्ध इतने बरसों में पैदा हो गया था। इन तमाम बरसों में, इन तमाम लड़ाइयों में कापुआ से भागे हुए ग्लैडिएटरों का वह छोटा-सा गिरोह और भी छोटा होता गया था। सबसे ज़्यादा वही मारे गये थे और उस विराट् गुलाम सेना के नेताओं में से जो मुट्ठी भर लोग बचे थे उनका आपसी सम्बन्ध और भी गहरा हो गया था।

तब स्पार्टकस ने उस यहूदी को देखा था और पूछा था—मैं ठीक कर रहा हूँ कि ग़लत?

—जो उनके लिए ठीक है वह कभी हमारे लिए ठीक नहीं हो सकता।

—उनको लड़ने दो आपस में !

—लड़ने दो, अगर तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है। उन्हें एक दूसरे को मार डालने दो। मगर इससे हमीं को और चोट पहुँचेगी। यह चीज़ कीड़े की तरह हमीं को अन्दर-अन्दर खाने लगेगी। तुम और मैं, हम दोनों ग्लैडिएटर हैं। अभी उस बात को कितने दिन हुए जब हमने कहा था कि हम दो इन्सानों की इस लड़ाई की स्मृति को भी धरती से मिटा देंगे।

—और हम मिटा देंगे। मगर इन दोनों को लड़ना ही होगा।....

तो ऐसी थी यह बात, वह आदमी जो सलीब पर इस वक़्त लटका हुआ था उसकी स्मृति का एक छोटा-सा टुकड़ा यह था। क्रैसस ने उसकी आँखों के भीतर झाँक कर देखा था और क्रैसस ने उसको सलीब पर चढ़ाये जाते देखा था। एक विशाल वृत्त अब पूरा हो रहा था। क्रैसस सोने के लिए अपने घर चला गया। क्योंकि वह रात भर जागता रहा था और जैसा कि स्वाभाविक ही था वह थक गया था और वह ग्लैडिएटर कीलों के सहारे सलीब पर लटक रहा था और बेहोश था।

४

लगभग एक घण्टे बाद ग्लैडिएटर को फिर होश आया। दर्द एक सड़क की तरह था और चेतना उस दर्द की सड़क पर सफ़र कर रही थी। अगर उसकी सारी इन्द्रियों और उनकी अनुभूतियों को नगाड़े के चमड़े की तरह ताना गया होता तो इस वक़्त यह कहा जा सकता था कि उस नगाड़े पर चोट पड़ रही है। उसका संगीत असह्य था और वह जब जागा तो इसी दर्द का ज्ञान उसको हुआ। दर्द की दुनिया में वह और किसी चीज़ को न जानता था और दर्द ही सारी दुनिया थी। वह अपने छः हज़ार साथियों में आख़िरी था और उनका दर्द भी उसके जैसा ही था; मगर खुद उसका अपना दर्द इतना विराट् था कि कोई उसको बाँट न सकता था। उसने आँखें खोलीं मगर दर्द एक लाल झिल्ली की तरह था जो उसे दुनिया से अलग कर रहा था। वह एक रेशम के कीड़े की तरह था, उसके लार्वे की तरह, जिसके चारों तरफ़ दर्द का कोया बुना जा रहा हो।

उसका जागना एक बार में नहीं बल्कि लहरों में हुआ। रथ ही वह सवारी थी जिसको वह सबसे अच्छी तरह जानता था; वह एक ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर बुरी तरह हिलते-डोलते झटके देते हुए रथ पर होकर वापस चेतना के देश को लौट रहा था। वह उस पहाड़ी देश में तब एक छोटा-सा लड़का था और बड़े-बड़े लोग, दूर-दूर के राजा और सामन्त, सभ्य लोग, स्वच्छ लोग

कभी-कभी रथों पर चढ़ा करते थे और वह पहाड़ के चट्टानी रास्तों पर उनके रथ के साथ दौड़ता हुआ उनसे भीख माँगा करता था कि उसको भी वे थोड़ी देर के लिए रथ पर चढ़ा लें। वह चिल्लाता था—ऐ मालिक, मेरे मालिक मुझको भी चढ़ा लीजिए। उनमें से कोई उसकी ज़बान न बोलता था मगर कभी-कभी वे उसको और उसके दोस्तों को रथ के पीछे, नौकरों के खड़े होने की जगह पर बैठ जाने दिया करते थे। वे बड़े लोग कितने उदार थे। कभी-कभी वे लोग उसको और उसके दोस्तों को मिठाइयाँ देते थे। जिस तरह से ये छोटे-छोटे, धूप से झँवाये हुए, काले बालोंवाले बच्चे गाड़ी के पीछे के तख़्ते को पकड़कर लटके रहते थे उसको देखकर वे लोग हँसते थे। मगर तभी बहुत बार वे अपने घोड़ों को चाबुक मार देते थे और फिर गाड़ी एकाएक तेज़ झटके के साथ दौड़ पड़ती थी और पीछे तख़्ते से लटके हुए बच्चे इधर-उधर फिंक जाते थे। पश्चिमी दुनिया के ये बड़े लोग सचमुच ऐसे थे कि इनके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता था और मीठी चीज़ों के साथ-साथ कड़वी चीज़ें भी लेनी ही पड़ती थीं मगर हाँ यह ज़रूर है कि गाड़ी से गिरने पर चोट लगती थी।

तभी उसको चेतना होती कि वह गैलिली की पहाड़ियों के बीच रहने वाला बच्चा नहीं, सलीब पर लटकता हुआ आदमी है। टुकड़े-टुकड़े करके उसको यह चेतना हो रही थी क्योंकि उसका सारा शरीर अब हर समय उसका अपना न था। वह उस चीज़ को महसूस करता अपनी बाँहों में जहाँ स्नायु लाल भट्ठी में तपे हुए तारों की तरह थे और गर्म-गर्म खून उसकी बाँहों से बहकर उसके कन्धों के ऐंठे हुए कूबड़ पर गिर रहा था। वह उस चीज़ को महसूस करता अपने पेट में, जहाँ उसकी अंतड़ियाँ दर्द और तनाव की भयानक बेरहम गाँठें बन गयी थीं।

और जो भीड़ उसको देख रही थी वह बहती हुई, कलकल करती हुई, वास्तविक और अवास्तविक, लहरों के समान थी। अब उसकी आँख की रोशनी ठीक न थी। वह कहीं पर आँख जमा न पाता था और जिन लोगों को वह देख रहा था वह कभी सिमट जाते थे और कभी खुल जाते थे जैसी कि किसी टेढ़े शीशे में पड़ने वाली परछाईं। और लोग देख रहे थे कि ग्लैडिएटर को होश आ रहा है और वे बड़ी उत्सुकता से उसको देख रहे थे। जैसे और बहुत-से सलीब पर चढ़ाये गये अगर यह भी उसी तरह यों ही किसी एक आदमी का सलीब पर चढ़ाया जाना होता तो फिर इसमें कोई नयी बात न होती। लोगों का सलीब पर चढ़ाया जाना रोम में बड़ी आम बात थी। जब अब से चार पीढ़ी पहले रोम ने कार्थेज को फ़तह किया तो उसने वहाँ से बेहतरीन चीज़ें ले लीं और उनमें दो सबसे बड़ी चीज़ें थीं, जागीरदारी की

प्रथा और यह सलीब। सलीब पर लटकते हुए आदमी में ऐसी कोई बात थी जो रोमवालों को बहुत भा गयी थी और अब दुनिया यह भूल गयी थी कि यह चीज़ जो सारी दुनिया में सभ्यता का प्रतीक बन गयी थी, वास्तव में कार्थेज में ही पैदा हुई थी। जहाँ-जहाँ रोमन सड़कें जाती थीं वहाँ-वहाँ सलीब गया और जागीरदारी की प्रथा गयी और ग्लैडिएटरों की लड़ाई गयी और गुलामी में पड़ी हुई इन्सानियत की ज़िन्दगी के प्रति एक विराट् उपेक्षा का भाव गया और आदमी के खून और पसीने को निचोड़कर सोना हासिल करने की तमाम कोशिशें गयीं।

मगर अच्छी-से-अच्छी चीज़ भी धीरे-धीरे बासी पड़ जाती है और अच्छी-से-अच्छी शराब भी उबाने लगती है जब बहुत ज़्यादा ढाल ली जाती है और एक आदमी का उन्माद हज़ारों आदमियों के उन्माद में जाकर खो जाता है। अगर किसी दूसरे आदमी को सलीब पर चढ़ाया जा रहा होता तो उसको देखने के लिए यह भीड़ न उमड़ी होती; मगर यह तो एक वीर की मौत थी, एक महान् ग्लैडिएटर की, स्पार्टकस के एक साथी की, एक ऐसे ग्लैडिएटर की जिसका नाम लोग सदा याद रक्खेंगे, एक ऐसा महान् ग्लैडिएटर जो मुनेरा में से बच कर निकल आया जिसमें से सिर्फ़ एक ही आदमी बच कर निकलता है। हमेशा उन लोगों के सामने एक अजीब-सा अन्तर्विरोध रहता था क्योंकि एक ओर तो वे उस आदमी को एक ग्लैडिएटर के रूप में देखते थे, एक ऐसे गुलाम के रूप में जिसके ऊपर मौत का ठप्पा लगा हुआ है, एक लड़ने वाले कठपुतले के रूप में, एक घृणित-से-घृणित व्यक्ति के रूप में और दूसरी ओर वे उसी आदमी को लड़ाई के खूनी मैदान से बचकर निकले हुए मर्द के रूप में देखते थे।

इसीलिए आज वे इस ग्लैडिएटर को मरता हुआ देखने के लिए आये थे, यह देखने के लिए कि वह उस विराट् रहस्य का स्वागत कैसे करता है जिसके सभी मनुष्य भागी हैं और यह देखने के लिए कि जब कीलें उसके हाथों में ठोंके जायँगे तब वह क्या करेगा। वह एक अजीब ही आदमी था जो एकदम ख़ामोश होकर सब कुछ सह रहा था। वे यह देखने के लिए आये थे कि यह ख़ामोशी, यह चुप्पी तोड़ी जा सकती है या नहीं और जब कील ठोंकने से भी वह न टूटी तो लोग यह देखने के लिए ठहर गये कि जब वह दुबारा फिर इस दुनिया पर आँख खोलेगा तो उस वक्त यह चुप्पी टूटेगी या नहीं।

आख़िरकार वह टूटी। आख़िरकार जब उसने उन लोगों को देखा, जब आँखों के सामने की आकृतियों का तैरना ख़त्म हुआ तो वह चीख़ पड़ा, दर्द और यन्त्रणा की एक भयावनी चीख़।

ज़ाहिर है कि कोई उसके शब्दों को नहीं समझा। लोग अटकल लगाने

लगे कि स्वर के उस यातना से भरे हुए विस्फोट में उसने क्या कहा था। कुछ ने इस बात पर शर्त बदी थी कि वह बोलेगा या नहीं बोलेगा और शर्त बदनेवालों में शर्त के पैसे देने के सवाल को लेकर इस वक्त झगड़ा हो रहा था क्योंकि यह तय नहीं था कि उसने कोई शब्द बोले थे या केवल कराहा था या किसी विदेशी ज़बान में कुछ कहा था। कुछ ने कहा कि उसने भगवान को पुकारा था; दूसरे लोगों का कहना था कि वह अपनी माँ को बुला रहा था।

सच बात यह है कि उसने यह दोनों ही बातें नहीं कही थीं। सच बात यह है कि वह चीखा था—स्पार्टकस, स्पार्टकस, हम लोग क्यों नाकाम रहे?

५

अगर किसी जादू से उन छः हज़ार लोगों के दिमाग़ों को खोला जा सकता और नक़्शे की तरह सामने फैला कर रखा जा सकता, उन छः हज़ार लोगों के दिमाग़ों को जो उस वक्त बन्दी बनाये गये थे जब कि स्पार्टकस का जीवन लक्ष्य इतिहास की धूल में खो गया, और सलीब से फिर पीछे की तरफ़ बढ़ते हुए उन तमाम उलझे हुए तानों-बानों को सुलझाया जा सकता जो कि उनको उस जगह पर ले आये थे—यानी अगर छः हज़ार इन्सानों की ज़िन्दगी के नक़्शे बनाये जा सकते तो शायद उनसे यह बात ज़ाहिर हो जाती कि उनमें से ज़्यादातर के गुज़रे ज़माने एक दूसरे से बहुत अलहदा न थे। यों तो अन्त की उनकी यातनाएँ भी एक दूसरे से बहुत भिन्न न थीं। यह एक सब के लिए समान यातना थी और सब की यातनाएँ एक में मिल गयी थीं और अगर आकाश में कहीं देवता हैं या कोई एक ईश्वर है और यह मेह जो बरसता है उसी के आँसू हैं तो निश्चय ही न जाने कितने दिनों तक लगातार मेह बरसा होता। मगर इसके बदले चिलचिलाती हुई धूप निकली और उसने उनके दर्द को और भी सुखा डाला और गिद्ध और कौए उनके खून बहते हुए गोश्त को नोचते रहे और वे लोग मर गये।

मरनेवालों में यही अन्तिम था, वह उन सब का योग था। उसका दिमाग़ एक आदमी की ज़िन्दगी में होनेवाली तमाम बातों से भरा हुआ था मगर ऐसे दर्द में आदमी सोचता नहीं और स्मृतियाँ डरावने सपनों की तरह हो जाती हैं। जैसे-जैसे उसके मन में स्मृतियाँ आ रही थीं वैसे-वैसे उनको दर्ज करते जाना मुमकिन न था क्योंकि दर्द की उस छाया से हटकर उनका कोई मतलब न होता। मगर उसकी स्मृतियों के बीच से एक कहानी निकाली जा सकती थी और ताश के पत्तों की तरह उसकी स्मृतियों को फिर से फेंटा जा सकता था ताकि उसमें से कोई एक नक़्शा निकल सकता; और उस हालत में वह नक़्शा दूसरों के नक़्शों से बहुत भिन्न न था।

उसके जीवन में चार युग आये थे। पहला तो वह युग था जब उसे कोई ज्ञान न था। दूसरा युग वह था जब उसे ज्ञान हुआ और वह युग घृणा से भर उठा और उसके अन्दर घृणा-ही-घृणा रह गयी। तीसरा आशा का युग था और उसकी घृणा दूर हो गयी और उसने अपने ही जैसे दूसरे मनुष्यों के लिए एक गहरा प्यार और साथी की मुहब्बत जानी। चौथा निराशा का युग था

अज्ञान के युग में, उस भोले वक़्त में जब उसे कुछ न मालूम था वह एक छोटा-सा लड़का था और उस वक़्त उसके चारों तरफ़ ख़ुशी और धूप की आभा थी। इस वक़्त जब कि वह सलीब पर चढ़ा हुआ था और उसके दिमाग़ पर यन्त्रणा के आरे चल रहे थे और उसे ठण्डक की तलाश थी और वह उस दर्द से दूर भाग जाना चाहता था तब उसे वह मुबारक ठण्डक अपने बचपन की याद में मिली। उसके बचपन के वे हरे-हरे पहाड़ ठण्डे थे और ख़ूबसूरत थे। पहाड़ी चश्मे पत्थरों से टकराते हुए बहते रहते थे और उनका पानी चमकता रहता था और काली-काली बकरियाँ पहाड़ियों के ढलवानों पर घास चरती रहती थीं। पहाड़ियों के ढलवानों पर खुशनुमा खेत थे जो बहुत प्यार से संजोये जाते थे और मोती के दानों की तरह जौ और लाल और नीलम जैसे अंगूर पैदा होते थे। वह पहाड़ के ढलवानों पर खेलता था, नालों में हलता था और गैलिली की उस बड़ी सी ख़ूबसूरत झील में तैरता था। वह हिरन की तरह कुलाँचे भरता था, उन्मुक्त, स्वस्थ, वन्य हिरन की तरह और उसके भाई और उसकी बहनें और उसके दोस्त उसके लिए एक ऐसा समाज थे जिसमें वह मुक्त था, आश्वस्त था, सुखी था।

उस वक़्त भी उसे ईश्वर के बारे में मालूम था, उसके बाल-मन पर ईश्वर की एक साफ़ और गहरी तसवीर थी जिसमें किसी संदेह के लिए स्थान न था। वह एक पहाड़ी क़बीले में पैदा हुआ था, जिनकी कल्पना ने ईश्वर को एक ऐसे शिखर पर बिठाल दिया था जहाँ दूसरा कोई आदमी नहीं रह सकता था। ईश्वर सबसे ऊँचे पहाड़ पर रहता था जिस पर कभी कोई चढ़ा भी नहीं था। ईश्वर वहाँ पर अकेले बैठा रहता था। ईश्वर एक ही था, बस एक। ईश्वर एक बुड्ढा आदमी था जो कभी और बुड्ढा न होता था और उसकी दाढ़ी उसके सीने पर लहराती रहती थी और उसके सफ़ेद कपड़े आसमान में एकाएक छा जानेवाले सफ़ेद बादलों की तरह हवा में उड़ते रहते थे। वह एक न्यायपूर्ण ईश्वर था, और कभी-कभी दयालु भी, मगर प्रतिशोध उसका सहज स्वभाव था; और उस छोटे से लड़के को यह बात मालूम थी। रात हो या दिन वह छोटा-सा लड़का कभी अपने को ईश्वर की आँखों से

अलग न पाता था। वह जो कुछ भी करता था, ईश्वर उसे देखता था। वह जो कुछ भी सोचता था, ईश्वर को वह मालूम था।

वह एक धर्मप्राण, अत्यन्त धर्मप्राण जाति से आया था। उनकी ज़िन्दगी के ताने बाने में ईश्वर की वही जगह थी जो लबादे की बुनावट में धागों की होती है। वे भेड़ चराते समय लम्बे-लम्बे धारीदार लबादे पहनते थे जिनके एक-एक धागे में आतंक के उस भाव का कुछ अंश होता था जो ईश्वर के प्रति उनके मन में था। सबेरे-शाम वे ईश्वर से प्रार्थना करते; वे जब रोटी खाने बैठते तब प्रार्थना करते; जब शराब का एक गिलास लेते तो ईश्वर को धन्यवाद देते और यहाँ तक कि जब उनके ऊपर कोई विपत्ति भी आती तो ईश्वर का गुण-गान करते ताकि वह यह न सोचे कि उनको अपनी विपत्ति खल रही है और वे अहंकार के शिकार हुए जा रहे हैं।

इसलिए यह कोई अचरज की बात न थी कि उस लड़के के मन में उस बच्चे के मन में जोकि अब एक पूरा आदमी था और इस वक्त सलीब पर लटका हुआ था, ईश्वर का ज्ञान और उसकी उपस्थिति का बोध अच्छी तरह समाया हुआ था। वह बच्चा ईश्वर से डरता था और वह ईश्वर एक ऐसा ईश्वर था जिससे डरना ही उचित है। मगर उस चारों तरफ़ फैली हुई धूप और उन पहाड़ों और उन पहाड़ी चश्मों की मीठी ठण्डक के बीच यह डर एक छोटी-सी चीज़ थी। वह बच्चा भागता फिरता था और हँसता था और गाने गाता था और भेड़-बकरियाँ चराता था और अपने से बड़े लड़कों को गैलिली की उस्तरे की तरह तेज़ छुरी फेंकते देखता था, जिसे वे लोग चाबो कहते थे और बड़े गर्व से अपनी बग़ल में लगाये रहते थे। उसके पास अपनी एक छुरी थी जो उसने लकड़ी काटकर बनायी थी और उससे बहुत बार वह अपने भाइयों और दोस्तों से झूठी लड़ाइयाँ लड़ा करता था।

और अगर वह कोई ख़ास कमाल दिखलाता तो वे लड़के जो उससे बड़े थे बहुत बेमन से उसको स्वीकार करते हुए सिर हिलाते और कहते—थ्रेसियन की तरह लड़ता है! ज़रा देखो तो इस ज़रा से छोकरे को, बन्दर कहीं का! हर बुराई के लिए और लड़ाई के बेहतरीन कमाल के लिए एक ही शब्द था थ्रेसियन। अब से बहुत-बहुत पहले भाड़े के सिपाही उस देश में आये थे और उनसे बरसों तक लड़ाई हुई थी और तब कहीं जाकर उन्हें मारा और देश से खदेड़कर बाहर किया जा सका था। इन भाड़े के सिपाहियों को थ्रेसियन कहते थे मगर इस छोटे से लड़के ने अपनी ज़िन्दगी में कभी किसी थ्रेसियन को देखा नहीं था।

वह उस दिन की आस लगाये था जब वह भी एक छुरी अपनी बग़ल में लटकाएगा और तब वे लोग देखेंगे कि वह भी किसी थ्रेसियन ही की तरह

भयानक और खूँख़ार है या नहीं। मगर तब भी यह तो कहना ही होगा कि वह कोई ख़ास भयानक या खूँख़ार लड़का न था, वह तो एक छोटा सा, सीधा-सादा, नेक और मुहब्बती लड़का था और बहुत अंशों में सुखी भी...

यह वो युग था जब उसे कोई ज्ञान न था।

अपने जीवन के दूसरे युग में अर्थात् जब उसे ज्ञान हुआ और उसने जाना और समझा, तब वह बच्चा न रह गया और चारों तरफ़ फैली हुई सूरज की रोशनी और धूप बर्फ़ की तरह ठण्डी और हड्डी को कंपा देनेवाली हवा में बदल गयी। धीरे-धीरे उसने अपने आपको बचाने के लिए कवच के रूप में अपने चारों तरफ़ नफ़रत का एक लबादा चढ़ा लिया। यही वह युग था जो कि इस वक़्त जब कि वह सलीब पर लटका हुआ था लाल यन्त्रणा के तेज़ कौंधों में उसके दिमाग़ में छुरे भोंक रहा था। उस युग के बारे में उसके विचार बेलगाम थे और ऐंठे हुए थे और भयानक थे। उसकी स्मृतियाँ टुकड़े-टुकड़े होकर वैसे ही बिखर गयी थीं जैसे कि उस पहेली के अलग-अलग टुकड़े जिन्हें मिलाकर एक तस्वीर बनती है। अपने जीवन के उस दूसरे युग को उसने आदमियों की उस भीड़ में देखा, उस हिलती हुई भीड़ में जो उसको देख रही थी; उनके चेहरों में, उनके इधर से आनेवाली आवाज़ों में उसने अपने जीवन के उस दूसरे युग को देखा। जब तक उसके मन में आवेग रहा तब तक वह बार-बार अपनी स्मृति में अपने जीवन के उस दूसरे युग के भीतर पहुँच गया, उस युग के भीतर जब कि उसे ज्ञान हुआ।

उस युग में उसको दुनिया का ज्ञान हुआ और उसी ज्ञान में उसका बचपन मर गया। उसे अपने बाप का ज्ञान हुआ। वह एक गन्दुमी रंग का, मेहनत से सख़्त पड़ा हुआ आदमी था जो सबेरे से रात तक मेहनत करता था—मगर तब भी वह मेहनत कभी काफ़ी न पड़ती थी। उसे दुःख का, दर्द का ज्ञान हुआ। उसकी माँ मर गयी और वे लोग उसके लिए रोये। उसे टैक्सों का ज्ञान हुआ क्योंकि उसका पिता चाहे कितनी ही मेहनत क्यों न करता घर के लोगों का पेट भरने के लिए पूरा न पड़ता, गो कि धरती उतनी ही उपजाऊ थी जितनी कि कहीं की धरती हो सकती थी। और फिर उसे उस विराट् खाई का ज्ञान हुआ जो अमीर को ग़रीब से अलग करती है।

आवाजें अब भी वही थीं जो पहले थीं, फ़र्क़ बस इतना था कि वह उन आवाज़ों को सुन रहा था और समझ रहा था जब कि पहले उसने उनको सुना था मगर समझा न था। अब जब लोग बातें करते तो उसको भी थोड़ी दूर पर खड़े होकर सुनने देते; पहले वे लोग उसको घर से भगा दिया करते थे कि जाओ खेलो।

इसके साथ ही-साथ उसको एक छुरी दी गयी मगर वह छुरी अपने संग

कोई खुशी न लायी। एक रोज़ अपने पिता के साथ वह पहाड़ियों के उस पार पूरे पाँच मील की दूरी पर एक जगह गया जहाँ एक लुहार रहता था और वहाँ पर वे लोग तीन घण्टे भट्टी के पास बैठे रहे और लुहार उसके लिए छुरी गढ़ता रहा। और पूरे वक्त उसका पिता और वह लुहार उन दुःखों और दर्दों की बात करते रहे जो कि देश पर आये हुए थे और बात करते रहे कि छोटा आदमी किस तरह पिसता चला जा रहा है। ऐसा लगता था कि जैसे उसके पिता और उस लुहार में होड़ लगी हो और दोनों एक दूसरे को दिखलाना चाह रहे हों कि मैं ज्यादा पिसा हुआ हूँ।

लुहार ने कहा—लो यह छुरी। तुमसे मैं इसके चार दीनार लूँगा। उसमें से एक चौथाई मन्दिर का आदमी ले लेगा जो चन्दा जमा करने आता है। एक चौथाई टैक्सवाला ले लेगा। इसका मतलब हुआ कि मेरे पास बस दो दीनार बचेंगे। अगर मैं दूसरी छुरी बनाना चाहता हूँ तो मुझे दो दीनार उसके लोहे को खरीदने के लिए देने पड़ेंगे। मेरी मेहनत की क़ीमत कहाँ है? उस सींग की क़ीमत कहाँ है जो कि मुझे इस छुरी की मूँठ बनाने के लिए खरीदनी पड़ेगी? उस खाने की क़ीमत कहाँ है जो कि मुझे अपने घर वालों को खिलाना पड़ता है? लेकिन अगर मैं इसकी क़ीमत पाँच दीनार लूँ तो फिर उसी हिसाब से हर चीज़ की क़ीमत चढ़ जायगी और फिर कोई मुझसे इस दाम में छुरी क्यों लेगा जब इससे कम में दूसरी जगह से मिल सकती हो? ईश्वर तुम्हारे ऊपर ज़्यादा मेहरबान है। तुम कम-से-कम धरती में से अपना खाना तो निकाल लेते हो और पेट तो भर सकते हो।

लड़के के पिता के पास हमेशा एक और ही तर्क होता था—तुम्हारे पास कभी-कभी कुछ थोड़ा-सा नक़द पैसा तो होता है। मेरी अपनी हालत यह है। मैं अपनी जौ की फ़सल काटता हूँ और फिर उसकी मड़ाई करता हूँ और फिर ओसाता हूँ। डोलचियाँ भर जाती हैं और जौ मोती के दानों की तरह चमकने लगती है। हम परम पिता परमात्मा को अनेक-अनेक धन्यवाद देते हैं क्योंकि हमारी जौ इतनी सुन्दर है और इतनी पोषक है। किसी को क्यों कोई परेशानी होने लगी अगर उसकी बखार में मोती के दानों जैसी जौ की डलियाँ भरी पड़ी हों। मगर इसके बाद वह मन्दिर का चंदा लेनेवाला आदमी आता है और हमारी एक चौथाई जौ मन्दिर के लिए ले जाता है। इसके बाद टैक्स जमा करनेवाला आता है और एक चौथाई वह ले जाता है। मैं उसके सामने गिड़गिड़ाता हूँ, उसको समझाता हूँ कि मेरे पास बस इतनी जौ है कि मैं जाड़े भर; अपने जानवरों को खिला सकूँ। तो वह मुझसे कहता है, अपने जानवरों को खा जाओ! और फिर यही भयानक काम हमको करना पड़ता है। और फिर जब वह वक्त आता है कि घर में न तो गोश्त होता है

और न अनाज और बच्चे खाने के लिए रीं-रीं करते हैं तो हम अपनी कमानों पर डोर चढ़ाते हैं और पहाड़ों के उन थोड़ से बचे हुए ख़रगोशों और हिरनों की बात सोचते हैं। मगर एक यहूदी के लिए यह मांस अपवित्र होता है जब तक कि उसे पवित्र न किया जाय। इसलिए पिछले जाड़े में हमने अपने रबाई को यरूशलम भेजा कि वह जाकर हमारी बात मन्दिर के लोगों के सामने रक्खे। हमारा रबाई बहुत अच्छा आदमी है। उसकी भूख हमारी भूख है। मगर पाँच रोज़ तक वह मन्दिर के आँगन में पड़ा रहा तब कहीं जाकर पुरोहितों ने उसकी बात सुनी और बड़ी उपेक्षा से सुनी। उन्होंने उसकी भयानक भूख को कम करने के लिए उसको रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं दिया। उन्होंने उससे कहा—यह गैलिली के लोगों का रोना-गिड़गिड़ाना आख़िर कब बन्द होगा? तुम्हारे किसान आलसी हैं। वह धूप में लेटे रहना चाहते हैं और फिर भी चाहते हैं कि भगवान स्वर्ग का खाना उनके मुँह में डाल दे। उनसे कहो कि और ज़्यादा मेहनत करें, और ज़्यादा जौ बोएँ। ऐसी उनकी सलाह है मगर और ज़्यादा जौ बोने के लिए किसान को और ज़्यादा धरती कहाँ से मिले और अगर धरती मिले भी और हम और जौ बोएँ भी तो जानते हो क्या होगा?

उस लुहार ने कहा—मैं जानता हूँ क्या होगा। तब भी अन्त में तुम्हारी वही हालत होगी जो कि आज है, तुम्हारे लिए और न बचेगा। उस तरह सदा यही होता है। ग़रीब और ग़रीब होते जाते हैं, अमीर और अमीर होते जाते हैं।

यह उस दिन की बात है जब वह लड़का अपनी छुरी लेने गया था मगर घर में भी बहुत कुछ यही हालत थी। घर पर शाम के वक़्त, पड़ोसी लोग उसके पिता के उस छोटे से घर में आते थे, जिसमें वे सब लोग एक कमरे में घुस-पिलकर रहते थे, और फिर वहाँ बैठकर वे लोग आपस में अनन्त काल तक यही चर्चा करते रहते थे कि आदमी के लिए जीना कितना मुश्किल हो गया है और वे लोग कैसे उनको चूसते ही जा रहे हैं, चूसते ही जा रहे हैं, चूसते ही जा रहे हैं—और आख़िर कितना चूसेंगे और फिर पत्थर को चूसने से, उसको दबाने से उसमें से ख़ून थोड़े ही निकलेगा?

सलीब पर का आदमी यही सोच रहा था और यह उसकी स्मृति के वो टुकड़े थे जो उसे छुरा भोंक रहे थे। मगर इतनी यातना सहते हुए भी वह जीना चाह रहा था, जब कि दर्द की ऐसी लहरें उठती थीं जो सही न जा सकती थीं और कभी थोड़ा घटकर ऐसी हो जाती थीं कि सही जा सकती थीं मगर बस सही जा सकती थीं। वह मर चुका था, सलीब पर लटकाया जा चुका था, मगर तब भी वह जीना चाह रहा था। जीवन में कितनी शक्ति

है। कितनी उमंग है। केवल प्राणरक्षा के लिए आदमी क्या-क्या नहीं कर सकता !

मगर ऐसा क्यों है, वह न जानता था। अपनी यन्त्रणा में उसने ईश्वर को नहीं पुकारा क्योंकि उस चीज़ में किसी सवाल का कोई जवाब न था। अब वह न एक ईश्वर में विश्वास करता था न बहुत से ईश्वरों में। अपने जीवन के उस दूसरे युग में ईश्वर के संग उसका सम्बन्ध बदल गया था। ईश्वर केवल अमीरों की प्रार्थना सुनता है।

इसलिए उसने ईश्वर को नहीं पुकारा। अमीर लोग सलीब पर नहीं लटका करते और उसकी सारी ज़िन्दगी एक सलीब पर गुज़री थी, एक अनन्त काल थी उसकी ज़िन्दगी जिसमें उसके हाथों में बराबर कीले ठुँके हुए थे। या वह और किसी की ज़िन्दगी थी ? वह उसका पिता तो नहीं था न ? उसका दिमाग़ अब ठीक काम नहीं कर रहा था; उसके दिमाग़ की वे कलें जो हर चीज़ को इतनी ख़ूबसूरती से और ठीक-ठीक क़ायदे से सजाकर रखती हैं अब उलट-पलट गयी थीं और जब उसने याद किया कि कैसे उसके पिता को सलीब पर चढ़ाया गया था तो सारी बातें उसके दिमाग़ में गडमड हो गयीं और वह नहीं तय कर सका कि इस वक़्त सलीब पर कौन था, वह या उसका पिता। उसने अपने दर्द से ऐंठते हुए खाली-खाली दिमाग़ को टटोला यह बातें याद करने के लिए कि यह सब कैसे हुआ था और उसे वह वक़्त याद आया जब टैक्सवाले आये थे और ख़ाली हाथों लौटा दिये गये थे। उसे वह वक़्त याद आया जब मन्दिर के पुरोहित आये थे और उन्हें भी ख़ाली हाथों लौटा दिया गया था।

इसके बाद विजयोल्लास का एक छोटा-सा क्षण आया था। उस महान् वीर, मकाबी जूडस की एक देदीप्यमान स्मृति उसके मन में थी और जब उन लोगों के खिलाफ़ पुरोहितों ने अपनी पहली सेना भेजी तो पहाड़ के किसानों ने अपने तीर-कमान और छुरे उठा लिये और उस सेना का ध्वंस कर दिया। वह भी उस लड़ाई में था। तब उसकी उम्र मुश्किल से चौदह साल की थी। मगर तब भी उसने अपनी छुरी का इस्तेमाल किया था और अपने पिता के बग़ल में खड़े होकर लड़ा था और विजय का स्वाद जाना था।

मगर विजय का स्वाद बहुत दिन चला नहीं। भाड़े के सैनिकों की बड़ी-बड़ी हथियारबन्द फ़ौजें गैलिली के बाग़ियों के ख़िलाफ़ मार्च करती हुई आयीं, और मन्दिर के ख़ज़ाने में सोने का एक ऐसा कुआँ था जिसका कहीं अन्त न था और इसलिए वे हमेशा नये-नये सिपाही ख़रीद सकते थे। किसान अपने छुरों और अपने नंगे शरीरों से एक बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला न कर सकते थे। किसानों की ताक़त तोड़ दी गयी और दो हज़ार किसान

कैद कर लिये गये। उन कैदियों में से नौ सौ को सलीब के लिए चुना गया। यही सभ्य तरीक़ा था, पश्चिमी तरीक़ा, और जब तमाम पहाड़ियों पर सब जगह सलीब मनके के दानों की तरह एक धागे में पिरोये हुए से खड़े हो गये तो मन्दिर के पुरोहित उनको देखने के लिये आये और उनके संग उनके रोमन सलाहकार भी आये। और वह लड़का डेविड वहीं पर खड़ा देखता रहा और उसकी आँखों के सामने उसके पिता को कीलों से एक सलीब पर जड़ दिया गया और वह अपने हाथों के सहारे वहाँ पर लटकता रहा और चील-कौवे धीरे-धीरे उसके गोश्त को खा गये।

और अब वह खुद सलीब पर था। कहानी जैसे शुरू हुई थी वैसे ही उसका अन्त हुआ, और अब कितना थका हुआ था वह और कितना दर्द और कितनी व्यथा उसके अन्दर-बाहर भर उठी थी। सलीब पर जैसे-जैसे वक्त गुज़र रहा था—वक़्त जिसका कोई सम्बन्ध उस वक़्त से नहीं है जिसे इन्सानियत जानती है क्योंकि सलीब पर चढ़ा हुआ इंसान इंसान नहीं रह जाता—वह बार-बार अपने आपसे यही एक सवाल पूछ रहा था कि ऐसी ज़िन्दगी का क्या मतलब है जो न जाने किस शून्य से आयी और फिर न जाने किस शून्य में खो गयी ? ज़िन्दगी पर उसकी वह गिरफ़्त, जिस पर एकाएक यकीन न आता था, और जो अब तक उसको सहारा दिये हुए थी, अब ख़त्म होने लगी। पहली बार उसके दिल में आया कि मर जाय।

(स्पार्टकस ने उससे क्या कहा था ? ग्लैडिएटर, ज़िन्दगी से प्यार कर। यही सारे सवालों का जवाब है। मगर स्पार्टकस मर गया था और वह अभी ज़िन्दा था।)

वह अब थक गया था। थकान और दर्द में होड़ थी और इसलिए उसकी अस्त-व्यस्त स्मृतियाँ भी थकान की ही थीं। विद्रोह के असफल होने पर उसको और दूसरे सात सौ जवानों को उनकी गर्दनों में एक ही लम्बी जंजीर डालकर उत्तर की ओर ले जाया गया था। कितना लम्बा सफ़र था वह ! मैदान और रेगिस्तान और पहाड़, उन सब के भी आगे, यहाँ तक कि गैलिली के हरे-भरे पहाड़ जन्नत का एक ख़ाब बन गये थे। उनके मालिक बदलते रहते थे मगर उनके जिस्म पर पड़नेवाला कोड़ा हमेशा वही रहता था। और आख़िरकार वे ऐसे देश में आये जहाँ के पहाड़ गैलिली के पहाड़ों से ऊँचे थे, जहाँ पहाड़ों के शिखर गरमी और जाड़े सभी ऋतुओं में बर्फ़ का एक लबादा ओढ़े रहते थे।

और वहाँ पर उसको ताँबा खोदने के लिए धरती के गर्भ में भेजा गया। दो साल तक उसने ताँबे की खानों में काम किया। उसके दो भाई जो उसके साथ थे मर गये मगर वह ज़िन्दा रहा आया। उसका जिस्म इस्पात

और बटे हुए चमड़े का बना था। दूसरे बीमार पड़ते थे, उनके दाँत झड़ जाते थे या उन्हें इतनी कै मालूम होती थी कि वह कै कर करके जान दे देते थे। मगर वह ज़िन्दा रहा आया और दो साल तक उसने खानो में काम किया।

और उसके बाद वह भाग निकला। वह भागकर उन जंगली पहाड़ों में निकल गया। गुलामी का पट्टा अब भी उसके गले में था और पहाड़ों के उन सीधे-सादे, आदिम, क़बीलाई लोगों ने उसको शरण दी और उसके गले का पट्टा हटा दिया और उसको अपने संग रहने दिया। जाड़े भर वह उनके संग रहा। वह लोग रहमदिल और ग़रीब थे और शिकार करके और जानवरों को जाल में फँसाकर अपना पेट पालते थे और उनके यहाँ पैदा कुछ न होता था। उसने उनकी ज़बान सीख ली और वह चाहते थे कि वह उनके संग ही रह जाय और उनके यहाँ की किसी औरत से शादी कर ले। मगर उसका दिल गैलिली के लिये तड़प रहा था और जब बसन्त के दिन आये तो वह दक्खिन की ओर चल पड़ा। मगर ईरानी सौदागरों के एक गिरोह ने उसको पकड़ लिया और पच्छिम की ओर जानेवाले गुलामों के एक कारवाँ के हाथ उसको बेच दिया और तब उसे टायर के नगर में नीलाम पर चढ़ाया गया, जहाँ से उसकी अपनी मातृभूमि प्रायः दिखाई देने लगी थी। कितनी मनोव्यथा उसको तब न हुई। कितने तल्ख़ आँसू वह न रोया कि हाय रे किस्मत! मैं अपने घर और अपने सम्बन्धियों और स्वजनों से कितने पास हूँ, कितने पास हूँ अपने देश भाइयों से, जो मुझे प्यार करेंगे, मगर तो भी आज़ादी से कितनी दूर। फिनीशिया के एक सौदागर ने उसे ख़रीदा और उसको डाँड़ के पास ज़ंजीर से कस कर बिठाल दिया गया एक ऐसे जलपोत में जो सिसिली के बन्दरगाहों के संग वाणिज्य करता था और पूरे एक साल तक वह उस जगह के नीले अँधेरे और गीली गन्दगी में बैठा पानी में अपनी डाँड़ घसीटता रहा।

इसके बाद यूनानी समुद्री डाकुओं ने जलपोत पर क़ब्ज़ा कर लिया और फिर एक घिनौने उल्लू की तरह आँख मुचमुचाते हुए उसको ऊपर, जहाज़ के डेक पर, घसीटकर लाया गया और फिर उन खूंख़ार यूनानी मल्लाहों ने उससे सवाल-जवाब किये। फिनीशिया के उस सौदागर और पोत खेनेवालों का देखते-देखते काम तमाम कर दिया गया : उनको इस तरह उठा कर पानी में फेंक दिया गया कि जैसे वह भूसे के गट्ठर हों। मगर उससे और दूसरे गुलामों से उन्होंने सवाल-जवाब किये और हरेक से भूमध्यसागर की अपनी ऐरेमेइक बोली में पूछा गया—तुम लड़ भी सकते हो या सिर्फ़ डाँड़ चलाना आता है?

उसको अपने बैठने की उस बेंच से और अँधेरे से और गन्दे पानी से शैतान का सा डर मालूम होता था और उसने जवाब दिया—मैं लड़ सकता हूँ। मुझे सिर्फ़ एक मौक़ा दो। उस वक़्त वह पूरी फ़ौज से लड़ सकता था और सिर्फ़ इसलिए कि उसे फिर से डेक के नीचे डाँड़ के ऊपर झुकने और अपनी कमर तोड़ने के लिए न भेजा जाय। लिहाज़ा उन लोगों ने उसको डेक के ऊपर एक बार मौक़ा दिया और समुन्दर के सभी काम उसको सिखलाये—यह नहीं कि बिना मार-पीट के या गाली दिये—पाल को खोलना और तीस फ़ुट लम्बे डाँड़ से कश्ती को खेना और पाल को उठाना, रस्सी के सिरे जोड़ना और रात के वक़्त तारों के सहारे ठीक दिशा में कश्ती को ले जाना, यह सब कुछ उन्होंने उसको सिखलाया। एक रोमन जहाज़ के संग अपनी पहली ही लड़ाई मे डेविड ने ऐसी फ़ुर्ती और अपने उस लम्बे छुरे को चलाने में ऐसी हाथ की सफ़ाई दिखलायी कि डाकुओं के उस वहशियाना गिरोह में उसको एक बहुत अच्छी जगह मिल गयी। मगर उसके दिल में कोई खुशी न थी और वह इन आदमियों से नफ़रत करने लगा जो सिर्फ़ मार-काट और ज़ुल्म और मौत का हाल जानते थे। अपने बचपन के दिनों से वह जिस तरह के सीधे-सादे किसानों के बीच में रहता चला आया था उनसे ये लोग उतने ही भिन्न थे जितनी कि रात दिन से। वे किसी ईश्वर मे विश्वास न करते थे, यहाँ तक कि समुद्र के देवता पोसीडन मे भी नहीं और यद्यपि उसका अपना विश्वास डिग चुका था मगर तब भी उसकी ज़िन्दगी के अच्छे साल वही थे जब कि उसे विश्वास था। वह लोग जब भी किनारे पर कोई हमला करते थे तो हमेशा मारकाट और आतिशज़नी और बलात्कार के लिए।

यही वह ज़माना था जब कि उसने अपने चारों तरफ़ एक मजबूत और सख़्त दीवार खड़ी कर ली। इसी दीवार के पीछे वह रहता था और तरुणाई के सभी चिन्ह उसके चेहरे से ग़ायब हो गये, उसका चेहरा जिसकी आँखें एकदम ठण्डी, सूनी और हरी-हरी थीं और नाक,बाज़ जैसी थी। वह जब उन लोगों के गिरोह में शरीक हुआ तब उसकी उम्र अठारह साल से कुछ कम थी मगर उसकी आकृति में कुछ एक ऐसी बात आ गयी थी कि उसको देखकर उसकी उम्र का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था, कुछ ऐसा भाव कि वह हमेशा से ऐसा ही है और हमेशा ऐसा ही रहेगा। और अभी से उसके बालों के काले-काले गुच्छों में बीच-बीच में सफ़ेद बाल भी दिखायी देने लगे थे। वह किसी से मिलता-जुलता न था और कभी-कभी पूरे एक हफ़्ते तक उसके मुँह से एक शब्द न निकलता था; वह लोग भी उसको छेड़ते न थे। उन्हें पता था कि वह कैसे लड़ सकता है और इसीलिए वह उससे डरते थे।

वह एक स्वप्न पर जी रहा था और वह स्वप्न ही उसकी मदिरा और उसका आहार था। वह स्वप्न यह था कि आगे-पीछे एक-न-एक रोज़ वह लोग फ़िलस्तीन के किनारे पर पहुँचेंगे और तब फिर वह एक ओर से चुपचाप समुद्र में उतर जायगा और तैरकर किनारे पर पहुँच जायगा और फिर पैदल गैलिली के अपने प्यारे पहाड़ों में पहुँच जायगा। मगर तीन साल गुज़र गये और वह दिन नहीं आया। उन लोगों ने पहले अफ्रीका के साहिल पर हमला किया और फिर इटली के साहिल के आस-पास। वह स्पेन के साहिल पर लड़ते थे और रोम की हवेलियों को जलाते थे और जो माल-मता और औरतें उनके हाथ लगती थीं उनको अपने कब्ज़े में ले लेते थे। इसके बाद वह फिर समुद्र पार करते थे और हरकुलीज़ के स्तम्भ के पास एक दीवार से घिरे हुए डाकुओं के नगर में पूरा जाड़ा गुज़ारते थे, फिर वह जिब्राल्टर के जलडमरूमध्य में होकर ब्रिटेन आते थे जहाँ वह अपना जहाज़ साहिल से लगा देते थे और फिर वहाँ उसकी सफ़ाई और मरम्मत करते थे। इसके बाद वह लोग आयरलैण्ड चले जाते थे जहाँ वह कपड़े के टुकड़े और घटिया हीरे-जवाहरात देकर आयर-लैण्ड के कबीलेवालों से उनके सोने के गहने ले लेते थे। इसके बाद वह लोग गॉल और फ्रांस के साहिल के ऊपर नीचे आते-जाते थे। और फिर वापस अफ्रीका। इस तरह तीन साल गुज़र गये और वह लोग उसकी मातृभूमि के किनारे नहीं पहुँचे। मगर वह स्वप्न और वह आशा उसके हृदय में बनी रही—और इसी बीच वह कठोर से कठोरतर होता गया और होते-होते इतना कठोर हो गया जितना कि किसी को होने का अधिकार नहीं है।

मगर इस बीच उसने बहुत कुछ सीखा। उसने सीखा कि समुद्र एक सड़क है जिस पर ज़िन्दगी बहती है उसी तरह जैसे खून आदमी के जिस्म में बहता है। उसने सीखा कि दुनिया बहुत बड़ी और अनन्त है और उसने सीखा कि तुम चाहे जहाँ जाओ तुम्हें सीधे-सादे ग़रीब लोग मिलेंगे, तुम्हारे अपने लोगों की तरह, जो अपनी रोटी के लिए और अपने बच्चों की रोटी के लिए धरती को जोतते हैं, और उन्हें फल क्या मिलता है? सिर्फ़ यह कि धरती से उन्होंने जो कुछ उपजाया उसका बहुत बड़ा हिस्सा किसी सरदार के पास या राजा के पास या समुद्री डाकू के पास चला जाता है। और उसने यह भी सीखा कि सब के ऊपर एक सब से बड़ा सरदार और राजा और समुद्री डाकू है और उसका नाम रोम है।

और अन्त में वे लोग एक रोमन जंगी जहाज़ से हारे। और उनके आद-मियों में जो लोग बच गये थे उनमें डेविड था और चौदह और लोग थे और उनको फाँसी पर टाँगने के लिए ऑस्टिया ले जाया गया। इस तरह उसकी ज़िन्दगी के दिन पूरे होने आ रहे थे मगर ठीक आख़िरी क्षण में लेण्टुलस

बाटियाटस के एक आदमी ने उसको कापुआ के स्कूल के लिए ख़रीद लिया ....यह उस ग्लैडिएटर के जीवन के दूसरे युग की बात थी, उस युग की जब उसे ज्ञान हुआ और उसने घृणा करना सीखा। यह युग कापुआ में आकर पूरा हुआ। यहाँ आकर उसने सभ्यता के उस अन्तिम संस्कार को सीखा, यानी कुछ थोड़े से रोम के आलसियों और लानिस्ता नाम के एक मोटे, ग़लीज़, बदमाश आदमी के फ़ायदे के लिए आदमियों का एक दूसरे को मार डालने के लिए सिखाया जाना, सभ्यता का यह अन्तिम संस्कार। वह ग्लैडिएटर बन गया। उसके बाल बहुत छोटे-छोटे कर दिये गये। वह हाथ में एक छुरा लेकर मैदान के अन्दर दाखिल हुआ लेकिन उन लोगों को मारने के लिए नहीं जिनसे उसको घृणा थी बल्कि उनको जो खुद उसी की तरह गुलाम थे या जिनकी मौत का पट्टा लिखा जा चुका था।

यहाँ पर आकर घृणा और ज्ञान एक हो गये। उसमें घृणा भर चली जैसे किसी बर्तन में। वह अपनी कोठरी के उस भयानक एकान्त और निराशा के बीच रहता था; वह अपने भीतर ही सिमट गया। अब उसे किसी ईश्वर में विश्वास न था और अगर वह कभी अपने बाप-दादाओं के ईश्वर के बारे में सोचता भी था तो केवल घृणा से और उपेक्षा से। एक बार उसने अपने आप से कहा था—मैं चाहता हूँ कि पहाड़ों की चोटी पर रहने वाले उस बदज़ात बुड्ढे के साथ मैदान में एक बार उतरूँ। उसने इन्सानों को जितना रुलाया है और अपने तमाम वादे तोड़कर जितना हताश किया है उस सब का भुगतान मैं उससे कराऊँगा। उसको दे दो उसका बज्र और उसकी बिजली। मैं सिर्फ़ अपने हाथ में एक छुरा चाहता हूँ, कुर्बानी करने के लिए। और तब मैं उसको बतलाऊँगा कि गुस्सा कैसा होता है।

उसको एक बार एक सपना आया था और उस सपने में वह ईश्वर के सिंहासन के पास खड़ा हुआ था। मगर उसको डर नहीं मालूम हो रहा था। उसने मखौल उड़ाते हुए चिल्लाकर कहा—तुम मेरा क्या कर लोगे? मैं इक्कीस बरस जिन्दा रहा और दुनिया ने मेरे संग जो कुछ किया है उससे ज़्यादा तुम क्या कर लोगे। मैंने अपने बाप को सलीब पर चढ़ते देखा। मैंने गन्दे गोबरैले की तरह खान के भीतर काम किया। दो साल तक मैंने खान पर मशक्क़त की और एक साल तक कश्ती के उस ग़लीज़ पानी के भीतर रहा जब कि चूहे मेरे पैरों पर दौड़ लगाते थे। तीन साल तक मैं एक चोर था जो अपने वतन के सपने देखता था और अब मैं भाड़े के लिए आदमियों को क़त्ल करता हूँ। जहन्नुम में जाओ तुम, तुम मेरा क्या कर लोगे?

अपने जीवन के दूसरे युग में वह ऐसा ही हो गया था और उन्हीं दिनों

एक थ्रेसियन गुलाम कापुआ के स्कूल में लाया गया, एक अजीब-सा आदमी जिसकी बड़ी नर्म मीठी आवाज़ थी और नाक टूटी हुई थी और आँखें गहरी-गहरी काली-काली थीं। इसी तरह इस ग्लैडिएटर की मुलाक़ात स्पार्टकस से हुई।

६

इसके बहुत बाद एक बार एक रोमन गुलाम को सलीब पर चढ़ाया गया। और जब उसको वहाँ पर लटके हुए चौबीस घण्टे हो चुके थे तो खुद शहन्शाह ने उसको माफ़ कर दिया और किसी-किसी तरह उसकी जान बच गयी। उसने एक जगह पर यह लिखा है कि सलीब पर उसको कैसा महसूस हुआ और अपने उस बयान में जो सबसे बड़ी बात उसने लिखी है उसका सम्बन्ध समय के प्रश्न से है। वह कहता है—सलीब पर सिर्फ दो चीज़ें रह जाती हैं, दर्द और अनादि-अनन्त काल। ये लोग मुझसे कहते हैं कि मैं सिर्फ़ चौबीस घण्टे सलीब पर रहा मगर मैं तो जानता हूँ कि सृष्टि से आज तक जितना समय गुज़रा है उससे भी ज़्यादा देर तक मैं सलीब पर था। जब समय न रह जाता हो, काल की परिभाषा मिट जाती हो तब हर क्षण चिर काल है, अनन्त है।

उस विचित्र, दर्द से ऐंठे हुए अनन्त काल में, उस ग्लैडिएटर का दिमाग़ बिखर गया और व्यवस्थित बुद्धि से सोच सकने की ताक़त धीरे धीरे ख़त्म हो गयी, स्मरण-शक्ति धोखा देने लगी। अब वह फिर से एक बार अपनी बेशतर ज़िन्दगी को जी रहा था। वह एक बार फिर स्पार्टकस से पहली बार बोला। वह इस वक़्त एक खेल खेल रहा था, जो उसने पहले भी बहुत बार खेला था और अपनी स्मृति में अपनी उस आकांक्षा को जी रहा था कि अपनी तबाह ज़िन्दगी के उस मलबे में से कोई ऐसी चीज़ निकाल लाये जिसकी कुछ क़ीमत हो—उसकी ज़िन्दगी, समय की तेज़ बहती हुई लहर में एक गुमनाम गुलाम की गुमनाम ज़िन्दगी।

(वह स्पार्टकस को देख रहा है। वह उसके ऊपर निगरानी रख रहा है। यह आदमी बिल्ले की तरह है और इसकी हरी हरी आँखें बिल्ले से उसके सादृश्य को और बढ़ा देती हैं। तुम तो जानते ही हो, बिल्ला कैसे चलता है, कैसे उसके चलने में हर वक़्त एक तनाव-सा रहता है। यह ग्लैडिएटर भी उसी तरह चलता है और उसको देखकर न जाने क्यों यह ख्याल होता है कि अगर उसको उठाकर हवा में फेंक दिया जाय तो वह नीचे आते-आते खुद-ब-खुद सीधा हो जायगा और जब गिरेगा तो अपने पैरों के बल। वह कभी किसी आदमी की तरफ़ सीधे नहीं ताकता; जब ताकेगा, आँख की कोर

से। और इसी तरह एक दिन के बाद दूसरे दिन वह स्पार्टकस को देखता रहता है, उसकी चौकसी करता रहता है। खुद उसकी समझ में नहीं आता कि स्पार्टकस के अन्दर वह कौन-सा गुण है जिसकी वजह से वह इस कदर उसकी ओर झुका रहता है, ध्यान लगाये रहता है : मगर सच पूछो तो यह कोई बड़ा रहस्य नहीं है। वह ऊपर से नीचे तक तनाव ही तनाव है और स्पार्टकस हर तरफ़ से एकदम ढीला, कहीं कोई तनाव नहीं। वह किसी से नहीं बोलता मगर स्पार्टकस सबसे बोलता है और वे सब स्पार्टकस के पास आते हैं और अपनी मुसीबतें लेकर आते हैं। स्पार्टकस ग्लैडिएटरों के उस स्कूल में एक नयी चीज़ डाल रहा है, उसका ध्वंस कर रहा है।

इस यहूदी को छोड़कर बाक़ी सब उसके पास आते हैं। स्पार्टकस को इस बात से हैरानी होती है। फिर एक रोज़, क़वायद के बीच आराम के घण्टे में वह उस यहूदी के पास जाता है और उससे बात करता है।

(—तुम ग्रीक बोलते हो ? वह उससे पूछता है।

(वे हरी-हरी आँखें निर्निमेष उसको देखती रहती हैं। एकाएक स्पार्टकस को महसूस होता है कि यह तो बहुत कम उम्र आदमी है बल्कि यों कहो कि लड़का ही है। अपने चेहरे को इसने एक नक़ली चेहरे के नीचे छुपा लिया है और सच बात यह है कि वह खुद उस आदमी को नहीं बल्कि उसके चेहरे पर लगे हुए चेहरे को देख रहा है।

(वह यहूदी अपने मन में कहता है—ग्रीक—क्या मैं ग्रीक बोलता हूँ ? मेरा ख़याल है मैं तमाम ज़बानें बोलता हूँ, इबरानी और ऐरेमेइक और ग्रीक और लेटिन और और भी बहुत सी ज़बानें जो दुनिया के बहुत से हिस्सों में बोली जाती हैं मगर मैं क्यों किसी ज़बान में बोलूँ ? क्यों ?

(बड़ी नरमी से स्पार्टकस उससे आग्रह करता है—एक शब्द मैं बोलूँ और तब एक शब्द तुम बोलो। हम सब एक क़ौम हैं। हम अकेले नहीं हैं। मुसीबत तब होती है जब तुम अकेले होते हो। सचमुच यह बड़ी भयानक चीज़ है—अकेले होना। मगर यहाँ पर हम अकेले नहीं हैं। हम जो कुछ हैं उसके लिए हमें शर्म क्यों हो। क्या अपने आपको यहाँ पर लाने के लिए हमने कोई भयानक वीभत्स काम किये हैं ? मैं नहीं समझता कि हमने कोई ऐसे काम किये हैं। इससे कहीं भयानक काम करते हैं वे जो हमारे हाथों में छुरे पकड़ा देते हैं और हमसे कहते हैं कि रोमनों की क्रीड़ा के लिए हत्या करो। इसलिए हमको शर्मिंदा न होना चाहिए और एक दूसरे से नफ़रत न करनी चाहिए। आदमी के पास चुटकी भर ताक़त होती है, चुटकी भर उम्मीद, चुटकी भर मुहब्बत। ये चीज़ें बीजों की तरह हैं जो सभी इन्सानों के दिल में छींटे गये हैं। लेकिन अगर आदमी उनको अपने ही भीतर बंद कर

ले और दूसरे को न दे तो ये बीज सड़ जाते हैं और बड़ी जल्दी मर जाते हैं और तब उस गरीब को भगवान ही बचा ये क्योंकि फिर उसके पास कुछ नहीं बचता और ज़िन्दगी जीने योग्य नहीं रह जाती। इसके बर-अक्स अगर वह अपनी ताक़त और उम्मीद और मुहब्बत दूसरों को देता है तो उसके पास इन चीज़ों का एक ऐसा ख़ज़ाना आ जाता है जो कभी चुकता नहीं। तब फिर कभी ऐसी हालत नहीं आ सकती कि ये चीजें उसके भीतर से एकदम सूख जायँ। तब ज़िन्दगी जीने योग्य रहती है और मेरी बात का यक़ीन करो ग्लैडिएटर, यह ज़िन्दगी ही दुनिया में सबसे अच्छी चीज़ है। हम इस बात को जानते हैं। हम गुलाम हैं। हमारे पास यही ज़िन्दगी तो है। इसीलिए हम जानते हैं कि इसकी क़ीमत क्या है। रोमनों के पास और भी बहुत सी चीज़ें हैं इसीलिए ज़िन्दगी की उनके लिए कुछ ख़ास क़ीमत नहीं है। वे ज़िन्दगी के संग खिलवाड़ करते हैं मगर हम ज़िन्दगी को संजीदा तरीक़े पर बरतते हैं और इसीलिए हमें कभी अपने आप को अकेले न होने देना चाहिए। तुम बहुत ज़्यादा अकेले हो ग्लैडिएटर। मुझसे थोड़ी बात करो।

(मगर वह यहूदी कुछ नहीं कहता और उसके चेहरे पर और उसकी आँखों में कहीं कुछ नहीं बदलता। तो भी वह सुनता है। वह ख़ामोशी से सुनता है और ध्यान लगाकर सुनता है और फिर मुड़ता है और चला जाता है। मगर कुछ ही क़दम जाने के बाद वह रुक जाता है, अपने सिर को आधा घुमाता है और अपनी आँख की कोरों से स्पार्टकस को देखता है। और स्पार्टकस को ऐसा मालूम होता है कि जैसे उन आँखों में अब कोई चीज़ हो जो पहले न थी, एक चिनगारी, एक याचना, आशा की एक किरण। शायद।)

ग्लैडिएटर की ज़िन्दगी को जिन चार युगों, चार दौरों में बाँटा जा सकता है उसके तीसरे दौर की वह शुरूआत थी। इसे उम्मीद का दौर कहा जा सकता है। और यही वह वक़्त था जब कि उसकी नफ़रत दूर हो गयी और उस ग्लैडिएटर ने अपने ही जैसे दूसरे लोगों के लिए एक ज़बर्दस्त मुहब्बत और भाई-चारे को ज़िन्दगी में पहली बार जाना। यह चीज़ एकाएक नहीं हो गयी। और एक बार में नहीं हुई। धीरे-धीरे करके उसने एक आदमी पर विश्वास करना सीखा और उस आदमी के माध्यम से उसने ज़िन्दगी को प्यार करना सीखा। स्पार्टकस के अन्दर यही चीज़ थी जिसने शुरू से उसको अपनी तरफ़ खींचा था, उस थ्रेसियन के दिल में ज़िन्दगी की ज़बर्दस्त मुहब्बत। स्पार्टकस जीवन के एक संरक्षक के समान था। बात इतनी ही न थी कि उसे ज़िन्दगी प्यारी थी और वह उसे बहुत सँजोकर रखता था: पूरी बात यह थी कि ज़िन्दगी उसे पूरी तरह अपने में समोये हुए थी। वह एक ऐसी चीज़ थी

जिसके बारे में वह कभी कोई सवाल न उठाता था और कभी आलोचना न करता था। किसी हद तक ऐसा भी मालूम होता था कि जैसे स्पार्टकस और ज़िन्दगी की तमाम ताक़तों के बीच कोई गुप्त समझौता हो।

स्पार्टकस को देखते-देखते वह ग्लैडिएटर डेविड धीरे-धीरे उसका अनुसरण करने लगा। यह चीज़ उसने प्रदर्शनपूर्ण ढंग से नहीं की बल्कि लगभग गोपनीय ढंग से, चुपचाप। जब भी कोई मौक़ा आता था और इस बात का अन्देशा न रहता था कि दूसरे इस बात को ताड़ जायंगे तो वह स्पार्टकस के पास खड़ा हो जाता था। उसके कान लोमड़ी के कान की तरह तेज़ थे। वह स्पार्टकस के शब्दों को सुनता था: वह उन शब्दों को अपने भीतर ले जाता था और उनको मन-ही-मन दुहराता था। वह जानने की कोशिश करता था कि उन शब्दों के भीतर क्या है। और इस बीच पूरे वक़्त उसके भीतर कुछ हो रहा था। वह बदल रहा था: वह विकास कर रहा था। बहुत कुछ उसी तरह कुछ थोड़ा-सा परिवर्तन और कुछ थोड़ा-सा विकास उस स्कूल के हर ग्लैडिएटर के अन्दर हो रहा था मगर डेविड के अन्दर यह चीज़ और थी। वह एक ऐसी क़ौम से आया था जिनकी ज़िन्दगी में ईश्वर की बहुत बड़ी जगह थी। जब उसका ईश्वर खो गया तो उसकी ज़िन्दगी में एक बहुत बड़ा सूराख हो गया। अब वह आदमी से उस सूराख को भर रहा था। वह आदमी से प्यार करना सीख रहा था। वह आदमी की महानता को सीख रहा था। वह इस चीज़ के बारे में इस रूप में नहीं सोचता था मगर उसके संग हो यही चीज़ रही थी—और किसी हद तक दूसरे ग्लैडिएटरों के संग भी।

यह ऐसी चीज़ न थी जिसे बाटियाटस या रोम की सेनेट के सदस्य समझ सकें। उनकी समझ में विद्रोह पूर्ण विकसित रूप में और बिना किसी पूर्वनिश्चित योजना के एकाएक विस्फोट के रूप में हो गया था। जहाँ तक उनकी समझ जाती थी, कोई तैयारी न हुई थी और उसका कोई आरम्भ न था और ऐसा ही उनको लिखना पड़ा। इसको किसी दूसरी तरह से लिखने का ढंग उनको न आता था।

मगर इस चीज़ का आरम्भ था, एक सूक्ष्म और विचित्र और विकासशील आरम्भ। डेविड कभी उस पहले मौके को न भूल सका जब स्पार्टकस ने उसको ओडीसी की कविताएँ सुनायी थीं। यह एक नया और मोहक संगीत था। यह एक ऐसे बहादुर आदमी की कहानी थी जिसने बहुत कुछ सहा मगर हारा नहीं। बहुत सी कविताएँ पूरी-पूरी उसकी समझ में आती थीं। वह उस विफलता से भरी हुई यातना को जानता था जो उस आदमी को होती है जो अपने प्यारे वतन से दूर पड़ा हुआ है। वह जानता था कि

भाग्य कैसे-कैसे खिलवाड़ करता है। वह गैलिली के पहाड़ों की एक लड़की से मुहब्बत करता था जिसके होंठ पॉपी की तरह सुर्ख और गाल रुई की तरह नर्म थे और उसका दिल उसके लिए तड़पा करता था क्योंकि वह उसको पा नहीं सका। मगर यह कैसा संगीत था और यह कैसी शानदार बात थी कि एक गुलाम, जो कि गुलाम के बेटे का बेटा था, और ज़िन्दगी में कभी आज़ाद इन्सान न रहा था, इस तरह इस अच्छी कहानी के न जाने कितने टुकड़े यों ही सुनाता चला जा रहा था। क्या कभी कोई स्पार्टकस के जैसा आदमी हुआ है। इतना नेक, इतना धैर्यवान्, इतना शान्त जिसे इतनी देर में गुस्सा आता हो।

अपने मन ही मन उसने स्पार्टकस को ओडीसियस समझ लिया था, वह धीर गम्भीर और बुद्धिमान ओडीसियस; और इसके बाद हमेशा के लिए डेविड के मन में वे दोनों एक ही बने रहे। सब कुछ होते हुए भी तब तक वह अभी लड़का ही था, और उस लड़के को स्पार्टकस की शकल में अपना आदर्श नायक मिल गया था और मिल गया था ज़िन्दगी का नक़शा और उस ज़िन्दगी को जीने का नक़शा। पहले-पहले अपने भीतर की इस प्रवृत्ति को उसने अविश्वास की दृष्टि से देखा। किसी आदमी पर विश्वास न करो और फिर किसी आदमी से तुम्हें निराशा न होगी, यह बात उसने अपने आप से बहुत बार कही थी, इसीलिए वह इस बात का इन्तज़ार करता रहा और इस बात की टोह में रहा कि स्पार्टकस जो कुछ है उससे घटकर कुछ हो जाये। और धीरे-धीरे उसको यह समझ में आने लगा कि स्पार्टकस कभी अपने आप को घटाएगा नहीं, वह जो कुछ है उससे कम नहीं होने देगा—और उसकी यह चेतना इतनी ही न रही बल्कि और आगे बढ़ी क्योंकि उसकी समझ में आया कि कोई आदमी अपने आप से घटकर नहीं होता—इस चीज़ का पूरा ज्ञान नहीं बल्कि उसकी एक हल्की सी झलक कि हर मनुष्य के भीतर कैसी अद्भुत रत्नराशियाँ छिपी हुई हैं।

इसीलिए जब रोम के उन दो, इत्र में बसे हुए, अप्राकृतिक मैथुनाचारियों के मनोरंजन के लिए दो दो की जोड़ में आमरण लड़नेवाले चार ग्लैडिएटरों में से एक उसको भी चुना गया तो उसके मन में एक ऐसा संघर्ष, एक ऐसा अपवित्र अन्तर्विरोध अनुभव हुआ जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था। यह एक नया संघर्ष था और जब उसे इस संघर्ष में विजय मिली तब उसने पहली बार सही मानी में उस दीवार को भेदा जो उसने अपने बचाव के लिए अपने चारों तरफ़ उठा रक्खी थी। इस समय सलीब पर चढ़ा हुआ वह उस क्षण को भी पुनः जी रहा था। वह लौट आया था और अपने आप से लड़

रहा था और सलीब पर उस समय उसके सूखे हुए होंठों से पीड़ा से भरे हुए वे शब्द निकले जो उसने चार बरस पहले अपने आप से कहे थे।

(वह अपने आपसे कहता है—मैं दुनिया का सबसे अभिशप्त आदमी हूँ क्योंकि देखो मुझे उस आदमी को मारने के लिए चुना गया है जिसको मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ। यह कैसी क्रूर नियति है। मगर ऐसे ईश्वर से या ईश्वरों से जिनका काम केवल मनुष्य को यन्त्रणा देना है, दूसरी और किस चीज़ की आशा की जा सकती है! वही तो उनके जीवन का सम्पूर्ण उद्देश्य है। मगर मैं उनको सन्तुष्ट नहीं करूँगा। मैं उनके सामने अपना तमाशा नहीं बनाऊँगा। वे भी इत्र में बसे हुए उन्हीं रोमन सुअरों की तरह हैं जोकि मैदान में लड़ते हुए लोगों का खून करते हैं और इन्तज़ार करते हैं कि एक आदमी की अँतड़ियाँ निकल कर बाहर आ जायँ और रेत पर लोटने लगें। मगर इस बार मैं उन्हें नहीं सन्तुष्ट करूँगा। इस बार मैं उन्हें, उन नीच और कुत्सित लोगों को यह मनोरंजन न पाने दूँगा कि वे दो आदमियों को लड़ते हुए देखें, भले उन्हें किसी और चीज़ में मनोरंजन न मिलता हो। वे मुझे मरा हुआ देख सकते हैं मगर किसी आदमी को मरा हुआ देखने से तो उनका सन्तोष नहीं होता। वह तो वे किसी भी समय देख सकते हैं। मगर मैं स्पार्टकस से नहीं लड़ूंगा। उससे लड़ने से पहले मैं खुद अपने भाई का क़त्ल कर देना पसन्द करूँगा। मैं किसी भी हालत में स्पार्टकस से नहीं लड़ूंगा।

(मगर इसके बाद! पहले मेरी पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ़ पागलपन था और फिर यहाँ की ज़िन्दगी ने उस पागलपन को और बढ़ा दिया। स्पार्टकस ने मुझे क्या दिया है! मुझे अपने आप से यह सवाल पूछना चाहिए और इसका जवाब देना चाहिए। इसका जवाब मुझे इसलिए देना चाहिए कि स्पार्टकस ने मुझको कोई बड़ी क़ीमती चीज़ दी है। उसने मुझको ज़िन्दगी का राज़ दिया है। ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी का राज़ है। हर आदमी किसी-न-किसी तरफ़ है। या तो तुम ज़िन्दगी के तरफ़दार हो या मौत के तरफ़दार हो। स्पार्टकस ज़िन्दगी का तरफ़दार है और इसलिए अगर उसको मुझसे लड़ना ही होगा तो वह लड़ेगा। वह यों ही नहीं मर जायगा। वह उन्हें यह मौक़ा नहीं देगा कि यों आसानी से वे उसे मौत के घाट उतार दें और वह एक शब्द भी न बोले और पलटकर उन पर एक वार भी न करे। इसलिए मुझको भी यही करना चाहिए। मुझको स्पार्टकस से लड़ना ही होगा और जिन्दगी हमारा फ़ैसला करेगी। ओह, कितना भयानक निर्णय है यह भी। क्या दूसरा कोई आदमी कभी इतना अभिशप्त था! मगर शायद इसको ऐसा ही होना है। शायद दूसरी कोई गति नहीं है।)

वह एक बार फिर स्मृति में उन विचारों और उन निर्णयों को जीने लगा और उसे अब यह चेतना न रही कि वह क्रूस पर मर रहा है, कि भाग्य उस पर कृपालु रहा है, कि उसको स्पार्टकस से लड़ना नहीं पड़ा। उसका दर्द से ऐंठता हुआ दिमाग़ टुकड़ा-टुकड़ा करके उस बीते हुए ज़माने को इकट्ठा कर रहा था और एक बार फिर उसे जी रहा था। एक बार फिर ग्लैडिएटरों ने खाना खाने के उस बड़े हॉल में अपने ट्रेनरों को मार डाला। एक बार फिर वे लोग अपने छुरों से और नंगे हाथों उन रोमन सैनिकों से लड़े। एक बार फिर वह उस पूरे ग्रामांचल में घूमे और जागीरों पर के गुलाम निकल आये और उनसे आकर मिल गये। और एक बार फिर रात के वक्त उन्होंने नगर सेना पर हमला किया और उसको तहस-नहस कर डाला और उनके तमाम हथियार और ज़िरहबख़्तर ले लिये। यह सब-कुछ वह एक बार फिर अपनी स्मृति में जी रहा था, बुद्धि से नहीं, काल के अनुक्रम के अनुसार नहीं, आसानी से भी नहीं बल्कि इस तरह जैसे गर्म आग का एक गोला समय के विस्तार में पीछे की तरफ़ फेंका जाये।

(—स्पार्टकस—वह कहता है, स्पार्टकस?—उनकी दूसरी बड़ी लड़ाई अब पीछे छूट चुकी है। गुलाम अब एक फ़ौज हैं। वे फ़ौज की तरह नज़र भी आते हैं। उनके पास दस हज़ार रोमनों के हथियार और ज़िरहबख़्तर हैं। वे सैकड़ों की तादाद में, हज़ारों की तादाद में क़तार बनाये खड़े हैं। उनका रात का ख़ेमा एक ऐसा क़िला है जिसके चारों तरफ़ खाई है और जिसकी दीवारें लकड़ी की हैं। उनका यह ख़ेमा वैसा ही है जैसा कि रोमन फ़ौजें अपने लिए बनाती हैं। वे घण्टों तक रोमन नेज़े को फेंकने का अभ्यास किया करते हैं। उन्होंने जो कुछ किया है उसकी शोहरत और उसकी दहशत सारी दुनिया में फैल चुकी है। हर गुलाम की झोंपड़ी में, गुलामों की हर बारक में लोग कानों में फुसफुसाकर उस आदमी के बारे में बातें करते हैं जिसका नाम स्पार्टकस है और जिसने सारी दुनिया में आग लगा दी है। हाँ, उसने ऐसा ही किया है। उसके पास एक ज़बर्दस्त फ़ौज है। जल्दी ही वह ख़ुद रोम पर धावा करेगा और अपने गुस्से में रोम की दीवारों को तोड़ कर गिरा देगा। वह जहाँ भी जाता है गुलामों को आज़ाद करता है और दुश्मन का जो भी सामान उसके हाथ लगता है वह सबके मिले-जुले ख़ज़ाने में चला जाता है, जैसा कि उस पुराने ज़माने में होता था जब कि सारी दौलत क़बीले की होती थी और किसी आदमी की अपनी कोई दौलत न होती थी। उसके सिपाहियों के पास बस अपने हथियार हैं और जिस्मों पर अपने कपड़े हैं और पैरों में अपने जूते हैं। अब यही स्पार्टकस है।

(वह कहता है—स्पार्टकस?

(धीरे-धीरे इस यहूदी डेविड की बोलने की ताक़त लौट आयी है। वह धीरे-धीरे और अटक-अटककर बोल रहा है मगर बोल रहा है। अब वह गुलामों के नेता से बोल रहा है।

(—स्पार्टकस, मैं अच्छा योद्धा हूँ। है न?

(—अच्छे बहुत अच्छे। सबसे अच्छे। तुम बहुत अच्छा लड़ते हो।

(—और मैं कायर भी नहीं हूँ, यह भी तो तुम जानते हो न?

(—मैं बहुत दिनों से यह बात जानता हूँ—स्पार्टकस कहता है—ग्लैडिएटर भी कभी कायर होता है?

(—और मैंने कभी लड़ाई में पीठ नहीं दिखायी है।

(—कभी नहीं।

(—और जब मेरा कान एकदम कट गया तब भी मैंने बस दाँत-पर-दाँत रख लिये और दर्द से चीखा नहीं।

(स्पार्टकस कहता है—दर्द से चीख़ना शर्म की बात नहीं है। मैं ऐसे मज़बूत लोगों को जानता हूँ जो दर्द से चीख़ पड़ते हैं। मैं ऐसे मज़बूत लोगों को जानता हूँ जो रोने लगते हैं जब उनका मन दुःख से भर जाता है। उसमें कोई शर्म की बात नहीं है।

(—मगर हम दोनों यानी तुम और मैं कभी नहीं रोते और एक रोज़ मैं तुम्हारी तरह बनूँगा स्पार्टकस।

(—तुम मुझसे ज़्यादा अच्छे आदमी बनोगे। तुम मुझसे ज़्यादा अच्छे योद्धा हो।

(—नहीं, मैं कभी तुम्हारा आधा अच्छा भी नहीं बन सकूँगा मगर मेरा ख़्याल है कि मैं लड़ता अच्छा हूँ। मैं बहुत फुर्तीला हूँ, बिल्ले की तरह। बिल्ला अपने ऊपर होनेवाली चोट को पहले ही से देख लेता है। बिल्ले के सारे जिस्म में आँखें-ही-आँखें होती हैं, वह अपनी चमड़ी से देखता है। कभी-कभी मुझको भी ऐसा ही महसूस होता है। प्रायः सदा ही मैं आनेवाली चोट को पहले ही से देख लेता हूँ। इसीलिए मैं तुमसे कुछ मांगना चाहता हूँ। मैं तुमसे यह मांगना चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने बग़ल में रहने दिया करो। हम जब भी लड़ें मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे बग़ल में रहूँ। मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करूँगा। अगर हम तुमको खो देते हैं तो इसका मतलब होगा कि सभी कुछ खो गया। हम अपने लिए नहीं लड़ रहे हैं। हम सारी दुनिया के लिए लड़ रहे हैं इसीलिए मैं चाहता हूँ कि लड़ाई के वक़्त मैं सदा तुम्हारे बग़ल में रहूँ, इसकी इजाज़त तुम मुझे दे दो।

(—मेरे बग़ल में खड़े होने से ज़्यादा ज़रूरी काम तुम्हारे पास करने को

हैं। मेरे बग़ल में रहकर क्या करोगे ? मुझे ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो सेना का नेतृत्व कर सकें।

(—मगर उन लोगों को तो तुम्हारी ज़रूरत है। क्या मैं बहुत बड़ी चीज़ माँग रहा हूँ ?

(—तुम बहुत छोटी चीज़ माँग रहे हो डेविड, और यह चीज़ तुम अपनी ख़ातिर नहीं मेरी ख़ातिर माँग रहे हो।

(—तो फिर मान क्यों नहीं जाते ?

(स्पार्टकस स्वीकृति में सिर हिलाता है।

—और फिर कभी तुम्हें कोई चोट न पहुँच सकेगी। मैं तुम्हारे ऊपर पहरा दूँगा। रात दिन मैं तुम्हारे ऊपर पहरा दूँगा।)

इस तरह वह यहूदी, गुलाम नेता स्पार्टकस का दाहिना हाथ बन गया। जिसने अपनी उस छोटी-सी ज़िन्दगी में सिर्फ़ हिंसा और रक्तपात और शरीर को चूर कर डालनेवाले श्रम को जाना था, अब उसने अपने सामने चमकते हुए स्वर्ण क्षितिज देखे। उनके विद्रोह का क्या परिणाम होगा यह उसके दिमाग़ में स्पष्ट से स्पष्टतर होने लगा। चूंकि दुनिया में ज़्यादा बड़ी संख्या गुलामों की है, इसलिए वे जल्दी ही एक ऐसी शक्ति बन जायँगे जिसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकेगा। तब राष्ट्र और नगर सब का लोप हो जायगा और एक बार फिर से स्वर्ण युग आ जायगा। सभी देश के लोगों की कहानियों और किम्वदन्तियों के अनुसार प्राचीन काल में कभी स्वर्णयुग था जब लोग निष्पाप थे और उनमें कोई कटुता न थी और जब वे आपस में प्रेम और शान्ति से रहा करते थे। इसलिए जब स्पार्टकस और उसके गुलाम सारी दुनिया को जीत लेंगे तो फिर ऐसा ही हो जायगा। उस युग के स्वागत में बड़े-बड़े झाँझ-मजीरे बजेंगे, नगाड़े बजेंगे और सब लोग मिलकर उसकी अभ्यर्थना करेंगे, समवेत स्वर में।

उसका मस्तिष्क तप्त और ज्वरग्रस्त हो रहा था और उसने उसी स्थिति में उस समवेत गान को सुना। उसने मानवता के स्वर को ऊपर चढ़ते और फैलते हुए सुना, वह समवेत गान जो पहाड़ों से टकराकर लौट रहा था....

(वह वारिनिया के साथ अकेले में है। वह जब वारिनिया को देखता है तो उसके लिए यह वास्तविक जगत् लुप्त हो जाता है और केवल यह नारी रह जाती है जो कि स्पार्टकस की पत्नी है। डेविड की आँखों में वह दुनिया की सबसे अधिक सुन्दर और स्पृहणीय स्त्री है और उसके लिए डेविड का प्रेम ऐसा है कि जैसे पेट में कोई कीड़ा बैठा उसे कुतर रहा हो। कितनी बार उसने अपने आप से कहा था,

(—कितने घृणित व्यक्ति हो तुम जो स्पार्टकस की पत्नी से प्यार करते हो।

दुनिया में तुम्हारे पास जो कुछ भी है वह स्पार्टकस का दिया हुआ है और इसका बदला तुम उसे इस तरह चुका रहे हो ? उसी की पत्नी से प्यार करके ? कितना भयंकर पाप है। कितनी भयानक बात है ! भले तुम मुँह पर इस बात को न लाओ, भले तुम इसको किसी तरह ज़ाहिर न होने दो मगर तब भी यह है तो भयानक बात। और इससे भी बड़ी बात यह है कि ऐसा करना बेकार है, एकदम बेसूद। ज़रा अपने आप पर नज़र डालो। आइने में ज़रा अपनी शक्ल देखो। क्या कभी तुमने ऐसी शक्ल देखी थी, ऐसी तेज़ और वहशियाना, बाज़ के जैसा चेहरा, एक कान ग़ायब, जिस्म में हज़ार ज़ख़्म और उनके निशान !

(अब वारिनिया उससे कहती है—तुम कैसे अजीब लड़के हो डेविड। तुम कहाँ के रहनेवाले हो ? क्या तुम्हारे देश में सभी लोग तुम्हारी तरह हैं ? अभी तुम लड़के ही हो मगर तुम न तो मुस्कराते हो न हँसते हो। जीने का यह भी कैसा अजीब ढंग है !

(—मुझको लड़का मत कहो वारिनिया। मैं साबित कर चुका हूँ कि मैं कभी-कभी लड़के से ज़्यादा भी कुछ हूँ।

(—सचमुच ? जो भी हो, मुझ पर तो तुम्हारा चकमा नहीं चल सकता। तुम अभी बिलकुल लड़के हो। तुम्हारे पास कोई लड़की होनी चाहिए। तुम्हें उसकी कमर में बाँह डालकर घूमने के लिए निकल जाना चाहिए जब कि शाम अभी हो ही रही हो और वक़्त बहुत ख़ूबसूरत हो। तुम्हें उसको चूमना चाहिए। तुम्हें उसके संग हँसना चाहिए। दुनिया में क्या काफ़ी लड़कियाँ नहीं हैं ?

(—मेरे पास अपना काम है। मेरे पास उस सब के लिए वक़्त नहीं है।

(—प्रेम करने के लिए वक़्त नहीं है ? अरे डेविड डेविड, तुम कह क्या रहे हो ! कैसी अजीब बात कह रहे हो !

(वह बड़े हिंस्र ढंग से उत्तर देता है, क्रोध में भर कर—और अगर कोई इन सब चीज़ों के बारे में सोचे-विचारे नहीं तो फिर हम कहाँ होंगे ? तुम क्या इसको बच्चों का खिलवाड़ समझती हो, सेना का नेतृत्व करना, इतने हज़ारों लोगों के लिए हर रोज़ खाने का प्रबन्ध करना, सिपाहियों को लड़ाई की शिक्षा देना। हमारे पास एक-से-एक ज़रूरी काम करने को हैं और तुम चाहती हो कि मैं लड़कियों से आँखें लड़ाऊँ।

(—डेविड मैं तुमसे आँखें लड़ाने को नहीं कहती, प्रेम करने को कहती हूँ।

(—मेरे पास उसके लिए समय नहीं है।

(—समय नहीं है ! अच्छा तुम्हीं बताओ मुझे कैसा लगे अगर स्पार्टकस मुझसे कहे कि उसके पास मेरे लिए समय नहीं है ? मैं तो सोचती हूँ कि मैं उस हालत में मर जाना चाहूँगी। आदमी बनने से, एक सीधा-सादा

मामूली, इन्सानियत से भरा आदमी बनने से ज़्यादा बड़ी चीज़ दूसरी नहीं है। मैं जानती हूँ कि तुम स्पार्टकस को आदमी से ज़्यादा बड़ी चीज़ समझते हो। मगर वह है नहीं। अगर वह होता तो किसी काम का न होता। स्पार्टकस के भीतर कोई रहस्य नहीं है। मैं इस बात को जानती हूँ। जब स्त्री किसी पुरुष से प्यार करती है तो उसके बारे में बहुत सी बातें जान जाती है।

(वह अपना सारा साहस बटोरकर कहता है—तुम स्पार्टकस से प्यार करती हो न ?

(—तुम कह क्या रहे हो ! मैं उसको अपनी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा प्यार करती हूँ। अगर वह चाहे तो मैं उसके लिए जान भी दे सकती हूँ।

(—मैं उसके लिए जान दे सकता हूँ, डेविड कहता है।

(—वह बात और है। मैं कभी-कभी तुमको देखती हूँ, उस वक़्त जब कि तुम स्पार्टकस को देखते रहते हो। वह बात और है। मैं उसको प्यार करती हूँ क्योंकि वह आदमी है। वह एक सीधा-सादा आदमी है। उसमें कहीं कोई उलझाव नहीं है। वह सरल है, नेक है, भला है और उसने मुझे आज तक कभी नहीं डाँटा और न कभी मुझ पर हाथ उठाया। कुछ लोग होते हैं जिनके मन में अपने लिए बड़ी व्यथा होती है। मगर स्पार्टकस के पास अपने लिए न तो कोई व्यथा है और न कोई करुणा। करुणा और व्यथा उसके पास दूसरों के लिए है। तुमने यह बात कैसे पूछी कि मैं उसको प्यार करती हूँ या नहीं ? क्या सब लोग जानते नहीं कि मैं उसको कितना प्यार करती हूँ।)

इस तरह अपनी उस पीड़ा में, बीच-बीच में, यह अन्तिम ग्लैडिएटर पुरानी बातों को बड़ी सफ़ाई से और ठीक-ठीक याद कर पा रहा था : मगर कभी-कभी यह भी होता था कि उसकी स्मृति बिलकुल ही अस्तव्यस्त और भयानक हो जाती थी, कि जैसे कोई डरावना सपना, लड़ाई, चीख-पुकार, खून और दर्द का एक डरावना सपना, जिसमें वहशियाना भीड़ें इधर से उधर दौड़ लगाती रहती थीं और उन पर किसी का कोई बस न होता था। अपने विद्रोह के पहले दो सालों में कभी-न-कभी उनको यह एहसास हुआ था कि रोम की दुनिया में रहनेवाले तमाम गुलाम विद्रोह नहीं करेंगे या शायद नहीं कर सकते, वे सब उन लोगों का साथ न देंगे। तब वे अपनी शक्ति के शिखर पर पहुँच चुके थे मगर रोम की शक्ति का कहीं कोई अन्त दिखायी न देता था। उसने उस समय की एक लड़ाई को याद किया, एक भयानक लड़ाई की जो इतनी बड़ी थी, जिसमें दोनों तरफ़ के इतने सिपाही लड़ रहे थे कि लगभग एक दिन और पूरी एक रात स्पार्टकस और उसके इर्द-गिर्द के लोग मुशकिल से यह अनुमान लगा पाते थे कि लड़ाई किस नतीजे की ओर जा

रही है। इस स्मृति के समय, कापुआ के लोगों ने, जो इस सलीब पर चढ़े हुए ग्लैडिएटर को देख रहे थे, देखा कि कैसे उसका शरीर ऐंठा और बल खा गया और कैसे उसके होंठों पर सफ़ेद झाग आ गया था और कैसे उसके सभी अंग दर्द से अलग-अलग ऐंठ रहे थे। उन्होंने उसके मुँह से आवाज़ें निकलते सुनीं और उनमें से कई लोगों ने कहा—अब इसके मरने में देर नहीं है। काम तमाम ही समझो।

(उन लोगों ने एक पहाड़ी की चोटी पर, एक लम्बी सी पहाड़ी की चोटी पर, जिसके दोनों ओर लम्बी-लम्बी चट्टानें थीं, अपने पैर जमाये हैं और उनके पैदल दस्ते दोनों ओर आधी मील की दूरी तक फैले हुए हैं। वहीं पर एक बड़ी ख़ूबसूरत घाटी है जिसके बीचोंबीच होकर एक छोटी-सी उथली नदी, टेढ़ी-मेढ़ी गति से बह रही है, घाटी की तलहटी में हरी-हरी घास है है और दूध से भरे हुए भारी भारी थनों वाली गायें घास चर रही हैं। और घाटी के दूसरी ओर पहाड़ी की वह ज़मीन है जहाँ रोमन सेनाएँ अपने पैर जमाए खड़ी हैं। अपनी सेना के बीचोंबीच स्पार्टकस ने अपनी कमान चौकी क़ायम की है, एक टीले पर सफ़ेद रंग का एक मण्डप जहाँ से वह सारा इलाका दिखायी देता है। यहीं पर उसने वे तमाम चीजें शुरू कर दी हैं जो कि लड़ाई की कमान चौकी के लिए एकदम ज़रूरी हैं। एक मुंशी लिखने के सामान और काग़ज़ लेकर बैठा हुआ है। पचास हरकारे तैयार खड़े हैं कि आदेश मिले और वे दौड़कर रणक्षेत्र के किसी भी हिस्से में पहुँच जायँ। झण्डी दिखानेवाले आदमी के लिए एक मस्तूल बनाया गया है और वह आदमी उस मस्तूल के बग़ल में अपनी रंग-बिरंगी झण्डियाँ लिये खड़ा है। और उस बड़े से ख़ेमे के बीचोंबीच एक लम्बी सी मेज़ पर लड़ाई के क्षेत्र का एक बड़ा सा नक्शा तैयार किया जा रहा है।

(यही वे तरीक़े हैं जो गुलामों ने निकाले हैं और दो साल की सख़्त लड़ाई के दौरान में निकाले हैं, उसी तरह जिस तरह उन्होंने अपनी लड़ाई के दाँव-पेंच निकाले हैं। इस वक़्त सेना के नेता उस मेज़ के चारों तरफ़ खड़े हैं, नक़्शे को देख रहे हैं और दुश्मन की फ़ौज के बारे में उनको जो ख़बरें मिली हैं उनको छाँटकर उनके अन्दर से यह मालूम कर रहे हैं कि वाक़ई दुश्मन की फ़ौज कितनी बड़ी है और कैसी है। मेज़ के चारों तरफ़ आठ लोग हैं। एक सिरे पर स्पार्टकस खड़ा है। डेविड उसके बग़ल में खड़ा है। अगर कोई अजनबी स्पार्टकस को पहली मर्तबा देखे तो कहेगा कि यह आदमी कम-से-कम चालीस साल का है। उसके घुँघराले बालों में यहाँ-वहाँ सफ़ेद बाल भी मिले हुए हैं। वह पहले से दुबला हो गया है और रात को नींद न मिलने की वजह से उसकी आँखों के नीचे स्याह हल्क़े हैं।

(देखनेवाला यह कहेगा कि वक़्त इस आदमी को पकड़े ले रहा है। वक़्त इस आदमी के कन्धों पर अच्छी तरह बैठ गया है, आसन मारकर और सवारी कर रहा है....यह सचमुच पैना निरीक्षण होगा क्योंकि कभी ही कभी अनेक वर्षों और अनेक शताब्दियों में कोई एक आदमी आता है जो सारी दुनिया को आवाज़ देता है : और फिर जब सदियाँ गुज़र जाती हैं, और दुनिया मोड़ ले लेती है, तब भी इस आदमी को कोई भूलता नहीं। अभी कुछ ही समय पहले तक यह आदमी महज़ एक गुलाम था मगर अब कौन है जो स्पार्टकस का नाम नहीं जानता ? मगर उसके पास यह देखने के लिए कि खुद उसके अन्दर क्या तब्दीली हुई है, रुककर सोचने का वक़्त नहीं है। इससे भी कम वक़्त उसके पास यह सोचने के लिए है कि इन दो वर्षों में उसके अन्दर क्या तब्दीली हुई है, कि तब वह कैसा आदमी था और अब कैसा आदमी है। अब वह लगभग पचास हज़ार सिपाहियों की एक फ़ौज का सेनापति है और बहुत सी बातों में वह एक ऐसी फ़ौज है जिससे अच्छी फ़ौज दुनिया में आज तक किसी ने देखी न थी।

(यह एक ऐसी फ़ौज है जो कि बहुत सीधे-साधे शब्दों में बग़ैर किसी क़लई-मुलम्मे के आज़ादी के लिए लड़ती है। पुराने ज़माने में न जाने कितनी फ़ौजें हुई हैं, फ़ौजें जो राष्ट्रों के लिए लड़ती थीं या नगरों के लिए या धन-सम्पदा के लिए या लूट के सामान के लिए या सत्ता के लिए या इस-उस क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमाने के लिए; मगर यह एक ऐसी फ़ौज है जो कि इन्सान की आज़ादी और स्वाभिमान के लिए लड़ती है, यह एक ऐसी फ़ौज है जो कि किसी देश या किसी नगर को अपना नहीं कहती क्योंकि इसके सिपाही सभी देशों और नगरों और जातियों के लोग हैं, यह एक ऐसी फ़ौज है जिसमें हर सिपाही गुलामी की एक ही परम्परा को ढो रहा है और उन सभी के दिल में उन लोगों के लिए समान रूप से नफ़रत है जो दूसरों को गुलाम बनाते हैं। यह एक ऐसी फ़ौज है जो जीतने के लिए कृतसंकल्प है, जिसे जीतना ही होगा क्योंकि पीछे लौटने को उसके पास पुल नहीं है, कोई देश नहीं है जो उसे शरण दे या आश्रय दे। वह इतिहास की बदली हुई गति का एक क्षण है, एक आरम्भ, एक हलचल, एक निश्शब्द फुसफुसाहट, एक सूचना, रोशनी का एक कौंधा जो दुनिया को हिला देने-वाली गरज और अन्धा कर देनेवाली बिजली की चमक का पता देता है। यह एक ऐसी फ़ौज है जिसे एकाएक यह ज्ञान हो गया है कि वह विजय जिसके लिए कि वह कृत-संकल्प है, दुनिया को बदले बिना न रहेगी और इसलिए या तो उसको दुनिया को बदल ही देना है या फिर विजय नहीं प्राप्त करना है।

(शायद उस वक्त जब कि स्पार्टकस उस नक्शे के पास खड़ा हुआ, उसको देखता हुआ अपने विचार में मग्न है, यह सवाल उसके दिमाग़ में उठता है कि आख़िर इस सेना का जन्म कैसे हुआ। वह उन मुट्ठी भर ग्लैडिएटरों की बात सोचता है जिन्होंने उस मोटे थुलथुल लानिस्ता के स्कूल में से लड़कर निकलने के लिए अपनी राह बनायी थी। वह सोचता है कि वे लोग वैसे ही थे जैसे कि समुद्र में फेंका हुआ एक भाला जो कि समुद्र में हरकत पैदा कर देता है और उसी तरह यहाँ भी एकाएक गुलामों की दुनिया की बहुत दिनों से चली आती हुई स्थिरता और शान्ति में एकाएक विस्फोट हो जाता है। वह उस अनन्त संघर्ष की बात सोचता है जो इन गुलामों को सैनिक बनाने के लिए करना होता है, उन्हें आपस में मिलकर काम करने और मिलकर सोचने के लिए, और फिर वह यह समझने की कोशिश करता है कि क्यों वह गति रुक गयी।

(मगर इस सब सोच-विचार के लिए अब समय नहीं है। अब वे लोग लड़ने जा रहे हैं। उसका दिल डर के कारण भारी हो रहा है, जैसा कि हर लड़ाई के पहले होता है। लड़ाई जब शुरू होती है तो बहुत-सा डर ग़ायब हो जाता है मगर अभी तो उसे डर लग रहा है। वह मेज़ के इर्द-गिर्द खड़े हुए अपने सभी साथियों को मुड़कर देखता है। उनके चेहरे इतने शान्त क्यों हैं? उनके मन में कोई डर नहीं है क्या? वह क्रिक्सस को देखता है, उस लाल बालों वाले गॉल को, उसकी छोटी-छोटी नीली-नीली आँखें उसके सुर्ख़, हल्के भूरे रंग के धब्बेवाले चेहरे पर कितनी गहरी और कितनी शान्त दिखायी देती हैं और उसकी लम्बी-सी पीली मूँछ झुककर उसकी ठुड्डी के नीचे तक पहुँच गयी है। और वह गैनिकस है, उसका दोस्त, उसी के क़बीले का आदमी और उसी का गुलाम भाई। वह कैस्टस है और वह फ्रैक्सस और भारी-भारी कन्धोंवाला वह काला अफ्रीकन नॉर्डो और वह दुबला-पतला नाज़ुक-सा तेज़ अक़ल का मिस्री मोज़ार और वह यहूदी डेविड—और उनमें से किसी को देखने से ऐसा नहीं पता चलता कि उनके मन में कोई डर है। तब फिर वही क्यों डर रहा है?

(अब वह उनसे तेज़ स्वर में कहता है—अच्छा तो दोस्तो, अब हम लोग क्या करने जा रहे हैं? क्या हम लोग दिन भर यहीं पर खड़े पहेली बूझते रहेंगे कि घाटी के उस पार की फ़ौज में कितने लोग हैं?

(गैनिकस कहता है—बहुत बड़ी फ़ौज है। इतनी बड़ी फ़ौज न तो हमने पहले देखी और न हमें इतनी बडी फ़ौज का सामना ही करना पड़ा। उनको गिनना मुश्किल है मगर मैं तुमको बतला सकता हूँ कि हम लोगों ने दस लीजनों के झण्डे पहचान लिये हैं। सातवीं और आठवीं लीजन को वे

गॉल से ले आये हैं। तीन लीजनें वे अफ्रीका से और दो स्पेन से ले आये हैं। मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी में आज तक ऐसी कोई फ़ौज न देखी थी। घाटी के उस पार कम से कम सत्तर हज़ार सिपाही होंगे।

(क्रिक्सस भी हमेशा डर और हिचकिचाहट की तलाश में रहता है। अगर क्रिक्सस का बस चलता तो वे लोग अब तक सारी दुनिया फ़तह कर चुके होते। उसके पास बस एक नारा है, रोम पर धावा करो। इन चूहों को मारना बन्द करो और सीधे उनके घर में ही आग लगा दो। अब वह कहता है—मैं तो तुमसे हैरान हूँ गैनिकस, क्योंकि तुम्हारे लिए हमेशा सामने की फ़ौज सबसे बड़ी फ़ौज होती है और सामने का वक्त़ लड़ाई के लिए सबसे बुरा वक्त़ होता है। मैं तुम्हें बतलाता हूँ। मैं ख़ाक-धूल परवाह नहीं करता उनकी फ़ौज की। अगर फ़ैसला मुझे करना हो तो मैं तो उन पर हमला कर दूँगा और अभी इसी वक्त़ करूँगा, एक घण्टे या एक दिन या एक हफ्ते बाद नहीं।

(गैनिकस चाहता है अभी लड़ाई न लड़ी जाय। हो सकता है कि रोमन अपनी फ़ौज को टुकड़ों में बाँटें। उन्होंने पहले ऐसा किया भी है, इसलिए मुमकिन है फिर करें।

(स्पार्टकस कहता है—वह अपनी फ़ौज को बाँटेंगे नहीं, मैं तुमसे कहता हूँ। और क्या ज़रूरत है उनको ऐसा करने की? हम सब तो यहीं पर हैं। वे जानते हैं कि हम सभी यहाँ पर हैं। तब फिर फ़ौज को टुकड़ों में बाँटने की उन्हें क्या ज़रूरत?

(तब वह मिस्री मोज़ार कहता है—इस बार तो मैं क्रिक्सस से सहमत हूँ। यह एक बड़ी असाधारण घटना है मगर इस बार क्रिक्सस ठीक कह रहा है। घाटी के उस पार वह बहुत बड़ी फ़ौज है और आगे-पीछे, जल्दी या देर से हमें उनसे लड़ना ही होगा। तो जल्दी ही क्यों न लड़ लें। वे लोग हमसे ज़्यादा देर तक बैठे रह सकते हैं क्योंकि उनके पास खाने को है और हम तो थोड़ी देर बाद भूखों मरने लग जायँगे। और फिर जब हम अपनी जगह से हटेंगे तो उनको वह मौक़ा मिल जायगा जिसकी कि उनको तलाश है।

(—तुम्हारे ख़याल में कितने लोग होंगे? स्पार्टकस उससे पूछता है।

(—बहुत ज़्यादा—कम से कम सत्तर हजार।

(स्पार्टकस गम्भीरता से सिर हिलाता है—ओह, यह तो बहुत हुआ, बहुत ही ज़्यादा। मगर मेरा ख़्याल है तुम ठीक कहते हो। हमें उनसे यहीं पर लड़ना होगा।—वह बात ऐसे अन्दाज़ में कहता है कि हलकी-फुलकी मालूम हो मगर उसका दिल ज़रा भी हलका नहीं है।

(वे फ़ैसला करते हैं कि तीन घण्टे के अंदर बग़ल से रोमनों पर हमला

कर देंगे मगर लड़ाई उसके पहले ही शुरू हो जाती है। यह सब कमाण्डर अपनी रेजिमेण्टों में वापस पहुँचते ही हैं कि रोमन सैनिक गुलाम फ़ौज के मध्य भाग पर हल्ला बोल देते हैं। उसमें कोई पेचीदा दाँव-पेंच नहीं है ; एक लीजन आगे बढ़कर गुलामों के केन्द्रीय भाग पर हमला करता है, वैसे ही जैसे कमान चौकी पर भाला फेंका जाय और फिर वह सारी ज़बर्दस्त फ़ौज उस लीजन के पीछे-पीछे लड़ाई में आ जाती है। डेविड स्पार्टकस के संग रहता है मगर वे लोग अपनी कमान चौकी पर से सुसंगठित-सुसम्बद्ध आत्मरक्षा की लड़ाई एक घंटे से कम ही देर तक लड़ पाते हैं। इसके बाद लड़ाई उनके ऊपर आ जाती है और वह डरावना सपना शुरू होता है। स्पार्टकस का खेमा चकनाचूर कर दिया जाता है। लड़ाई उनको समुद्र की तरह अपने संग बहा ले जाती है और स्पार्टकस के चारों तरफ़ तूफ़ान चल रहा है।

(इसे लड़ाई कहते हैं! अब डेविड को मज़ा आयेगा कि हाँ कोई लड़ाई लड़ी। इसके मुक़ाबले में पहले की हर लड़ाई एक छोटी-मोटी झड़प थी। अब स्पार्टकस एक महान् सेना का सेनापति नहीं बल्कि एक साधारण सैनिक है जिसके हाथ में एक तलवार और एक चौकोर ढाल है और वह लड़ क्या रहा है बिलकुल क़यामत बरपा कर रहा है। यहूदी भी इसी तरह लड़ रहा है। वे दोनों एक चट्टान की तरह हैं और उनके चारों तरफ़ घनघोर लड़ाई हो रही है। एक बार वे अकेले पड़ जाते हैं और अपनी जान बचाने के लिए लड़ते हैं। तब एक सौ आदमी उनकी मदद के लिए आ जाते हैं। डेविड स्पार्टकस को देखता है और स्पार्टकस उस खून और पसीने के नीचे से मुस्करा रहा है।

(और चिल्लाता है—वाह, क्या खूब लड़ाई है! मज़ा आ गया डेविड! क्या ऐसी लड़ाई के बाद हम फिर सूरज को उगता हुआ देखने के लिए ज़िन्दा रहेंगे? कौन जानता है?

(डेविड सोचता है, कितना मज़ा आ रहा है इसको लड़ाई में। कैसा अजीब आदमी है यह! इसको लड़ाई में मज़ा आता है! और देखो लड़ कैसे रहा है, खूंख़ार वहशी की तरह सर पर कफ़न बाँध कर! वह गाना जो वह गाता है उसी के आदमियों की तरह वह भी लड़ रहा है!

(उसको नहीं मालूम कि वह खुद भी उसी तरह लड़ रहा है। कोई भाला स्पार्टकस को छुए इसके पहले उसकी लाश गिरेगी। वह एक बिल्ले की तरह है जो कभी नहीं थकता, एक बड़े भारी जंगली बिल्ले की तरह और उसकी तलवार ही उसके पंजे हैं। वह कभी स्पार्टकस से अलग नहीं होता और जिस तरह हर हालत में वह उसके बग़ल में ही रहा आता है उससे कोई भी यही ख़याल करेगा कि उसका शरीर स्पार्टकस के शरीर से जुड़ा हुआ है।

वह लड़ाई को समग्र रूप में बहुत थोड़ा ही देख पाता है। वह सिर्फ़ इतना देख रहा है कि उसके और स्पार्टकस के ठीक सामने क्या है, मगर इतना ही काफ़ी है। रोमनों को मालूम है कि स्पार्टकस यहाँ पर है और उसको जा पकड़ने की जल्दी में वे बरसों के अभ्यास से सीखी हुई अपनी व्यूह-रचना भूल जाते हैं। अपने अफ़सरों द्वारा ठेले हुए वे लोग एक भीड़ की तरह आगे बढ़ते हैं, लड़ते हैं और मार-काट करते हैं कि किसी तरह स्पार्टकस के पास पहुँचें ताकि उसे घसीटकर गिरायें, मारें, उस राक्षस का सिर काट लें। वे लोग इतने पास हैं कि डेविड उनके मुँह से निकली हुई उन तमाम गन्दी-गन्दी बातों को सुन सकता है। लड़ाई के शोर के ऊपर भी यह आवाज़ सुनी जा सकती है। मगर गुलाम भी जानते हैं कि स्पार्टकस यहीं पर है और दूसरी तरफ़ से वे भी लड़ाई के इस केन्द्रीय हिस्से में पहुँच जाते हैं। वे झण्डे की तरह स्पार्टकस के नाम को हवा में फहरा देते हैं और यह नाम लड़ाई के मैदान में यों ही झण्डे की तरह फहराता रहता है। स्पार्टकस! मीलों तक यह नाम सुना जा सकता है। वहाँ से पाँच मील दूर, चहारदीवारी से घिरे हुए एक शहर में वे लोग लड़ाई का शोर सुनते हैं।

(मगर डेविड सुनकर भी कुछ नहीं सुनता : उसे इसके अलावा कुछ नहीं मालूम कि वह किस चीज़ से लड़ रहा है और उसके सामने क्या है। उसकी ताक़त कम होती चली जाती है, उसके होंठ सूखते चले जाते हैं और लड़ाई भयानक से और भी भयानक होती जाती है। उसे नहीं मालूम कि लड़ाई दो मील तक फैली हुई है। उसे नहीं मालूम कि क्रिक्सस ने दो लीजनों का सफ़ाया कर दिया है और अब उनका पीछा कर रहा है। उसे मालूम है सिर्फ़ अपनी बाँह और अपनी तलवार और यह कि स्पार्टकस उसके बग़ल में है। उसे यह भी होश नहीं कि वे लड़ते-लड़ते पहाड़ के ढलवान से नीचे उतरकर घाटी में पहुँच गये हैं और जब उसके पैर उस नम घासवाली ज़मीन पर पड़ते हैं तभी उसको इसका एहसास होता है। फिर वे नदी के भीतर पहुँच जाते हैं और घुटने-घुटने भर पानी में खड़े होकर लड़ते रहते हैं और नदी का पानी खून की तरह सुर्ख हो जाता है। सूरज डूब जाता है और सारा आसमान लाल है, जैसे कि वह उन हज़ारों आदमियों को एक दर्द से भरी हुई सलामी दे रहा हो जो उस घाटी को अपनी नफ़रत और अपनी मार-काट से भर रहे हैं। अँधेरे में लड़ाई कम हो जाती है मगर रुकती नहीं और चाँद की ठण्डी रोशनी में गुलाम नदी के उस खूनी पानी में सिर डुबोते हैं और पीते हैं और पीते ही चले जाते हैं क्योंकि अगर अब वो पानी न पियेंगे तो मर जायँगे।

(पौ फटते-फटते रोमनों का हमला खत्म हो जाता है। इन गुलामों जैसे

आदमियों से कौन कभी लड़ा होगा ! तुम चाहे जितनों को मारो उनकी जगह लेने के लिए दूसरे लोग चीखते हुए पहुँच जाते हैं। वह जानवरों की तरह लड़ते हैं, आदमियों की तरह नहीं क्योंकि जब तुम्हारी तलवार उनके पेट को चाक कर देती है और वह ज़मीन पर गिर पड़ते हैं तब भी वह गिरते-गिरते तुम्हारे पैर को अपने दाँतों से पकड़ लेते हैं और तुम्हें अपनी टाँगों को छुड़ाने के लिए उनकी गर्दन काटनी पड़ती है। दूसरे होते हैं कि घायल होने पर लड़ाई से बाहर रेंग जाते हैं मगर ये गुलाम मरते दम तक लड़ते रहते हैं। दूसरे होते हैं कि सूरज डूबने पर लड़ाई बन्द कर देते हैं मगर ये गुलाम बिल्लियों की तरह अँधेरे में भी लड़ते हैं और कभी सुस्ताते नहीं।

(इस चीज़ को देखकर रोमन अब खौफ़ खाने लगते हैं। बहुत पहले जो बीज कभी उनके भीतर पड़ा था वह अब बढ़ने लगता है, अंकुरित होने लगता है—गुलामों का भय। तुम गुलामों के साथ रहते हो मगर उन पर विश्वास नहीं करते। वे भीतर हैं मगर बाहर भी हैं। वे तुमको देखकर हर रोज़ मुस्कराते हैं मगर उनकी मुस्कराहट के पीछे नफ़रत है। वह सिर्फ़ तुमको मार डालने की तदबीर सोचते हैं। वह नफ़रत पर पनपते हैं। वह इन्तजार करते हैं और करते रहते हैं और करते रहते हैं। उनके पास ऐसा धीरज है, ऐसी स्मृति है जिसका कहीं कोई अन्त नहीं है। रोमनों में जब से कुछ भी सोचने की ताक़त आयी तभी से उनके अन्दर यह बीज पड़ा और अब इस बीज में फल लग रहा था।

(वे थक गये हैं। उनमें अब इतनी भी ताक़त नहीं है कि अपनी ढालें ले चल सकें या अपनी तलवारें उठा सकें। मगर गुलामों को कहीं कोई थकन नहीं है। यहाँ पहुँचकर अक़्ल जवाब दे देती है। दस यहाँ टूटते हैं सौ वहाँ। फिर वह सौ एक हज़ार बन जाते हैं और वह हज़ार दस हज़ार बन जाते हैं और फिर एकाएक सारी फ़ौज पर आतंक छा जाता है और रोमन अपने हथियार फेंक-फेंककर भागने लगते हैं। उनके अफ़सर उनको रोकने की कोशिश करते हैं मगर वे अपने अफ़सरों को मार डालते हैं और घबराहट से चीखते हुए वे उन गुलामों से दूर भाग जाना चाहते हैं। और गुलाम उनका पीछा कर रहे हैं, उनके संग अपना पुराना हिसाब-किताब बराबर कर रहे हैं और मीलों तक ज़मीन पर रोमनों की लाशें बिछी हुई हैं जो मुँह के बल पड़ी हैं और जिनकी पीठों में ज़ख्म हैं।

(जब क्रिक्सस और दूसरों ने स्पार्टकस को पाया तो उस वक़्त भी वह यहूदी के बग़ल में ही था। स्पार्टकस ज़मीन पर इत्मीनान से फैलकर लेटा हुआ है और उन लाशों के बीच सो रहा है और वह यहूदी हाथ में तलवार लिये

उस पर पहरा दे रहा है। यहूदी कहता है—इसको सोने दो। यह एक बहुत बड़ी जीत रही। इसको सोने दो।

(मगर इस महान् विजय में दस हज़ार गुलाम खेत रहे। और रोमनों की दूसरी फ़ौजें, और भी बड़ी फ़ौजें आयेंगी।)

७

जब लोगों को यह बात मालूम हुई कि वह ग्लैडिएटर मर रहा है तो उनकी दिलचस्पी कम हो गयी। दोपहर होते-होते बस मुट्ठी भर लोग वहाँ पर रह गये थे जो कि लोगों को सलीब पर चढ़ाने के बड़े कट्टर समर्थक थे। बस वो और कुछ थोड़े से आवारा लड़के और भिखमंगे जिनको कापुआ के बहुत से मनोरंजन के स्थानों में कहीं कोई जगह न मिल सकती थी। यह बात सच है कि उस वक़्त कापुआ में कोई घुड़दौड़ न हो रही थी मगर इसमें तो शक नहीं कि उन दो अखाड़ों में से एक में ज़रूर कोई न कोई ऐसी लड़ाई हो रही होगी। चूँकि बाहर के बहुत से यात्री कापुआ आया करते थे इसलिए कापुआ के जो ज़रा ज़्यादा पैसेवाले नागरिक थे वे इसको अपनी प्रतिष्ठा की एक बात समझते थे कि साल में कम-से-कम तीन सौ दिन ग्लैडिएटरों की लड़ाई की व्यवस्था नगर में हो। कापुआ में एक बहुत अच्छा रंगमंच था और वेश्यावृत्ति के बहुत से बड़े-बड़े अड्डे थे जो कि इतने खुले रूप में काम करते थे जितना कि रोम में मुमकिन न था। इन जगहों में सभी जातियों और सभी देशों की स्त्रियाँ थीं और इनको इस बात की विशेष शिक्षा मिली हुई थी कि कैसे वे अपने नगर का सम्मान बढ़ायें। वहाँ पर बहुत अच्छी-अच्छी दूकानें भी थीं, इत्र का बाज़ार था, बड़े-बड़े स्नानागार थे और रमणीक सागर-तट पर जलक्रीड़ा के बहुत से अच्छे-अच्छे साधन थे।

इसलिए यह कोई अचम्भे की बात न थी कि सलीब पर चढ़ा हुआ मरता हुआ एक ग्लैडिएटर क्षणिक आकर्षण मात्र हो। अगर वह मुनेरा का वीर न होता तो किसी ने दुबारा उसको देखने की भी तकलीफ़ न उठायी होती। और अब यों भी लोगों को उसमें कुछ ख़ास दिलचस्पी न रह गयी थी। 'कापुआ में रहनेवाले रोम के नागरिकों' के नाम एक चिट्ठी में वहाँ के तीन धनाढ्य व्यापारियों ने, जो कि स्थानीय यहूदियों के चौधरी थे, यह लिख दिया था कि हम इस ग्लैडिएटर के बारे में कुछ भी नहीं जानते और किसी तरह इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। उन्होंने बतलाया था कि उनकी मातृभूमि में विद्रोह और असन्तोष के सभी तत्वों को जड़ से उखाड़ फेंका गया था और उन्होंने यह भी बतलाया था कि ख़तने का मतलब यह नहीं है कि कोई आदमी यहूदी ही है। मिस्रियों में, फ़िनीशियावालों में और यहाँ तक कि ईरानियों में

भी ख़तने का बहुत चलन है। यहूदियों के स्वभाव में यह बात नहीं है कि वे एक ऐसी शक्ति के ऊपर हमला करें जिसने दुनिया के बहुत बड़े हिस्से पर, लगभग पूरी दुनिया पर, शान्ति और व्यवस्था स्थापित की और समृद्धि की राह दिखलायी। इस तरह हर ओर से तिरस्कृत होकर वह ग्लैडिएटर अपनी पीड़ा और अपने कलंक में अकेला ही धीरे-धीरे मौत की तरफ़ बढ़ रहा था। सिपाहियों को उससे मनोरंजन न मिल रहा था और दर्शकों का भी कुछ ऐसा ही हाल था। एक बड़ी ज़लील-सी बुढ़िया थी जो अपने घुटनों को अपनी बाँहों में लिये बैठी थी और इस सलीब पर चढ़े हुए आदमी को घूर रही थी। सिपाही इस क़दर उकताये हुए थे कि उन्होंने उस बुढ़िया को चिढ़ाना शुरू कर दिया।

उनमें से एक ने कहा—अरे मेरी जान, अब उस आदमी को देख-देखकर क्या ख़्वाब देख रही हो?

दूसरे ने पूछा—कहो तो हम लोग उसे काटकर नीचे गिरा दें और तुम्हारे हवाले कर दें! ऐसे अच्छे नौजवान के संग सोये न जाने तुम्हें कितना ज़माना हो गया होगा?

उसने धीरे से बुदबुदाकर कहा—बहुत लम्बा ज़माना।

—अपने संग बिस्तर में तुम उसे बस एक साँड़ ही समझो। वह तुम्हारे ऊपर सवारी करेगा, वैसे ही जैसे घोड़ा घोड़ी पर सवारी करता है। कहो क्या राय है?

वह बोली—कैसे बोलते हो! कैसे अजीब हो तुम लोग! मुझसे इसी तरह बात करनी चाहिए तुमको, कुछ तो शरम खाओ!

—क्षमा कीजिए श्रीमती जी—कहकर सभी सिपाही एक के बाद एक बुढ़िया को बड़ा फ़र्शी सलाम करने लगे। जो थोड़े से तमाशबीन वहाँ पर खड़े थे, उनको भी अब इस खेल में मज़ा आने लगा और वे भी वहाँ पर घिर आये।

—भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा क्षमा कीजिए, बुढ़िया ने कहा, छीः! मैं गन्दी हूँ मगर तुम तो ग़लाज़त से भरे हो। मैं तो नहाकर अपनी धूल-मट्टी धो सकती हूँ। तुम नहीं धो सकते।

सिपाहियों को अब यह खेल पसन्द नहीं आया क्योंकि बुढ़िया भी जवाब देने लगी थी और अब उन्होंने उसके ऊपर अपनी हुकूमत का रोब जमाना चाहा। इसका क्या मतलब है कि यह गन्दी बुढ़िया इस तरह हमसे ज़बान लड़ाये। वे सख़्त हो गये और उनकी आँखें चमकने लगीं। उनमें से एक ने कहा—ज़रा ज़बान संभालकर बात कर बुढ़िया!

—मेरे मन में जो आयेगा कहूँगी।

—तो जाओ नहाकर आओ। ऐसी गन्दी हो रही हो और ठीक शहर के फाटक पर बैठी हो, कोई तुमको देखेगा तो क्या कहेगा?

बुढ़िया ने कहा—देखेगा तो कहेगा क्या? बड़ी भयानक दिखायी दे रही हूँ न? कैसे लोग हो तुम सब रोमन! दुनिया के सबसे साफ़ लोग। जो हर रोज़ नहाये नहीं वह रोमन कैसा, फिर भले वह आवारा हो, लुच्चा हो जैसे कि तुम लोग ज़्यादातर होते हो और उसकी सुबह जुए में और तीसरा पहर मैदान में लड़ाइयाँ देखने में ही क्यों न गुज़रता हो। वाह कितना साफ़-सुथरा आदमी है!

—अच्छा-अच्छा बहुत हुआ बुढ़िया। अब अपना मुँह बन्द करेगी भी कि नहीं।

—अभी बहुत कहाँ हुआ। मैं नहा नहीं सकती। मैं गुलाम हूँ। गुलाम तुम्हारे हम्मामों में नहीं जाते। मैं बुड्ढी हूँ और ढल चुकी हूँ, अब तुम मेरा क्या कर सकते हो। कुछ भी नहीं कर सकते। मैं यहाँ धूप में बैठी रहती हूँ और किसी को परेशान नहीं करती मगर वह भी तुम्हें अच्छा नहीं लगता? दिन में दो बार मैं अपने मालिक के घर जाती हूँ और वह मुझे मुट्ठी भर रोटी दे देता है। अच्छी रोटी। रोम की रोटी जिसे गुलाम ही बोते हैं और गुलाम ही काटते हैं और गुलाम ही पीसते हैं और गुलाम ही पकाते हैं। मैं सड़कों पर घूमती हूँ और वह कौन-सी चीज़ है जिस पर मेरी नज़र पड़ती हो और उसे गुलाम हाथों ने न बनाया हो? तुम सोचते हो मुझे तुमसे डर लगता है? मैं तुम्हारे मुँह पर थूकती हूँ।

अभी जब यह सब चल रहा था उसी बीच क्रैसस ऐपियन द्वार पर लौट आया। उसे नींद अच्छी तरह न आयी थी, जैसा कि उन लोगों के संग हमेशा होता है जो दिन के वक़्त अगली रात के आराम की कमी पूरी करना चाहते हैं। अगर किसी ने उससे पूछा होता कि वह फिर क्यों दुबारा सलीब की जगह पर लौट रहा था तो शायद उसने बस अपना कन्धा उचका दिया होता। मगर सच बात यह है कि वह ख़ूब अच्छी तरह जानता था कि वह क्यों वहाँ पर जा रहा है। क्रैसस की ज़िन्दगी का एक सम्पूर्ण महान् युग इस अन्तिम ग्लैडिएटर की मृत्यु के संग ख़तम हो रहा था। क्रैसस केवल एक बहुत धनाढ्य व्यक्ति के रूप में नहीं याद किया जायगा बल्कि गुलामों के विद्रोह को कुचलनेवाले के रूप में भी याद किया जायगा।

मगर यह बात कहनी जितनी आसान है, करनी उतनी आसान न थी। क्रैसस ताज़िन्दगी गुलाम युद्ध की स्मृतियों से अपने आपको जुदा न कर सकेगा। उन्हीं स्मृतियों के संग वह जियेगा, उन्हीं के संग जागेगा और उन्हीं

के संग सोयेगा। आख़िरी साँस तक वह, क्रैसस, स्पार्टकस को विदा न कर सकेगा।

तब स्पार्टकस और क्रैसस का संघर्ष समाप्त हो जायगा मगर तभी, उसके पहले नहीं। इसलिए अब क्रैसस दुबारा उस द्वार पर इसलिए लौटकर आया कि वह अपने शत्रु के उस जीवित अवशेष को देख सके।

एक नया कप्तान इस समय नायक का काम कर रहा था मगर वह सेनापति को जानता था—जैसे कि कापुआ के अधिकांश लोग जानते थे—और वह सेनापति को खुश करने के लिए ज़रूरत से ज़्यादा कोशिश कर रहा था। उसने इस बात के लिए भी माफ़ी मांगी कि ग्लैडिएटर की मौत को देखने के लिए इतने थोड़े से लोग क्यों बच गये।

उसने कहा—वह बड़ी तेज़ी से मर रहा है। बड़े ताज्जुब की बात है। देखने में तो बड़ा कड़ियल नज़र आता था, कि जैसे अभी कुछ दिन चलेगा। रहने को तो वह तीन दिन तक जिन्दा रह सकता था। मगर अब तो लगता है कि सबेरा होने के पहले ही मर जायगा।

—तुम्हें कैसे मालूम?—क्रैसस ने पूछा।

—मालूम हो जाता है। मैंने बहुत-सों को सलीब पर चढ़ाये जाते देखा है और वे सब के सब एक ही रास्ते पर जाते हैं। हाँ, अगर कीलें उनकी किसी बड़ी रग को काट देती हैं, तब तो बात और है क्योंकि तब तो खून बड़ी तेज़ी से बहने लगता है और जल्दी ही उनका काम तमाम हो जाता है। मगर इसके तो वैसा कुछ ख़ास खून भी नहीं बह रहा है। शायद अब वह जीना नहीं चाहता और फिर उस सूरत में उनकी मौत काफ़ी जल्दी हो जाती है। आपने न सोचा होगा कि ऐसा होता होगा?

—मुझे किसी बात पर आश्चर्य नहीं होता—क्रैसस ने कहा।

—आप ठीक फरमाते हैं। आपने जो जो कुछ देखा है, उसके बाद—

उसी वक्त सिपाहियों ने उस बुढ़िया को पकड़ा और वह उनसे लड़ने लगी और उसकी सीटी की तरह तेज़ चीख़ों ने सेनापति और द्वार के कप्तान का ध्यान अपनी ओर खींचा। क्रैसस टहलता हुआ उधर गया, मौके पर एक नज़र डाली और सिपाहियों को फटकारते हुए कहा—वाह, क्या खूब जवाँमर्दी दिखला रहे हो! छोड़ दो उस बुड्ढी को!

उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा गुण था कि उसने उन लोगों को आदेश-पालन पर मजबूर किया। उन्होंने बुढ़िया को छोड़ दिया। उनमें से एक ने क्रैसस को पहचाना और दूसरों से धीरे-धीरे बुदबुदाकर बतलाया और तब फिर कप्तान आया और उसने जानना चाहा कि क्या माजरा है और वे लोग

श्रौर कुछ क्यों नहीं कर रहे हैं, उनके पास इसके सिवा दूसरा काम नहीं है क्या ?

—वह हमसे बदतमीज़ी करती है और हमारे लिए गन्दी ज़बान का इस्तेमाल करती है।

पास खड़ा हुआ एक आदमी ठठाकर हँसा।

—तुम सब यहाँ से निकल जाओ, कप्तान ने उन आलसियों से कहा। वे लोग कुछ कदम पीछे हटे मगर ज़्यादा दूर नहीं और उस बुढ़िया ने बड़ी तेज़ और समझदार आँखों से क्रैसस को देखा।

वह बोली—अच्छा तो महान् सेनापति ही मेरे रक्षक हैं!

क्रैसस ने पूछा—तू कौन है बुढ़िया ?

—हुजूर, मैं आपके सामने घुटना टेकूँ या आपके मुँह पर थूक दूँ ?

—देखा आपने ? मैंने कहा था न ?—सिपाही चिल्लाया।

—हाँ—मगर कोई बात नहीं, सब ठीक है। बुढ़िया, तू बता चाहती क्या है ?—क्रैसस ने पूछा।

—मैं सिर्फ़ यह चाहती हूँ कि कोई मुझे न छेड़े। मैं एक नेक आदमी को मरता हुआ देखने के लिए आयी थी। उसको एकदम अकेले नहीं मरना चाहिए। वह मर रहा है और मैं उसके पास बैठी उसको देखती रहती हूँ। मैं उसे प्रेम की एक भेंट देती हूँ। मैं उसको बतलाती हूँ कि वह कभी नहीं मरेगा। स्पार्टकस नहीं मरा। स्पार्टकस ज़िन्दा है।

—तू यह सब क्या बक रही है बुढ़िया ?

—क्या तुम समझ नहीं पा रहे हो कि मैं क्या कह रही हूँ, मार्कस लिसिनियस क्रैसस ? मैं स्पार्टकस के बारे में बात कर रही हूँ। हाँ, मैं जानती हूँ कि तुम क्यों यहाँ आये हो। कोई और नहीं जानता। उन लोगों को कुछ भी नहीं मालूम। मगर तुमको और मुझको तो मालूम है, कि नहीं ?

कप्तान ने अपने सिपाहियों को हुकुम दिया कि बुढ़िया को पकड़कर वहाँ से घसीटकर दूर कर दें मगर क्रैसस ने काफ़ी गुस्से में उनको इशारे से वहाँ से दूर भगा दिया।

—मत छेड़ो उसको, मैंने तुमको कहा न! मेरे सामने अपनी जवांमर्दी मत दिखलाओ। अगर तुम ऐसे ही जवांमर्द हो तो शायद गर्मियों के आराम के लिए बनी हुई इस पहाड़ी जगह के बदले मोर्चों पर लड़नेवाली पल्टन में रहना पसन्द करोगे। मैं अपनी हिफ़ाज़त आप कर सकता हूँ। एक बुढ़िया से अपने आपको बचा सकने की ताक़त मेरे अन्दर है।

—तुम डरते हो—बुढ़िया मुस्करायी।

—किस चीज़ से डरता हूँ ?

—हमसे डरते हो। सच कहो कि नहीं डरते ? कितना डरते हो तुम लोग। इसीलिए तो तुम यहाँ पर आये। ताकि उसे मरता हुआ देख सको। ताकि इस बात का तुमको निश्चय हो जाय कि उनमें का वह आख़िरी आदमी भी मर गया। हे भगवान्, उन थोड़े से गुलामों ने तुम्हें कौन कौन-सा नाच नहीं नचाया ! और तुम अब भी उनसे डर रहे हो। और जब यह आदमी मर जाएगा, तब भी यहीं क्या इस चीज़ का अन्त हो जाएगा ? इस चीज़ का क्या कभी अन्त होगा, मार्कस लिसिनियस क्रैसस ?

—तू कौन है बुड्ढी ?

—मैं एक गुलाम हूँ—उसने जवाब दिया और अब ऐसा मालूम हुआ कि जैसे वह एकाएक बड़ी भोली और बचकानी-सी हो गयी हो, सठिया-सी गयी हो।—मैं अपनी क़ौम के इस आदमी के साथ होने के लिए यहाँ पर आयी ताकि मैं उसे थोड़ा-सा आराम पहुँचा सकूँ। मैं यहाँ पर उसके लिए रोने को आयी। दूसरों को आने में डर लगता है। कापुआ में मेरी क़ौम के लोग भरे हुए हैं मगर वे डरते हैं। स्पार्टकस ने हमसे कहा—उठो और आज़ाद हो जाओ ! मगर हम डरते थे। हम इतने मज़बूत हैं और तब भी हम डर के मारे दुबकते हैं और बिसूरते हैं और भाग जाते हैं।—अब उसकी उन बुड्ढी आँखों से आँसू बहने लगे।—तुम मुझे क्या सज़ा दोगे ?—उसने याचना के स्वर में पूछा।

—कुछ भी नहीं बुढ़िया। अगर तेरा ऐसा ही जी है तो वहीं पर बैठी रह और रो।— उसने एक मुद्रा उसकी ओर फेंकी और कुछ सोचता हुआ-सा वहाँ से चला गया। वहाँ से वह उस सलीब के पास पहुँचा। उसने उस मरते हुए ग्लैडिएटर को निगाह उठाकर देखा और उस बुढ़िया के शब्दों को दिमाग़ में उलटने-पलटने लगा।

८

उस ग्लैडिएटर की ज़िन्दगी में चार वक़्त आये थे। बचपन एक सुखी वक़्त था जब कि वह नादान था और सुखी था और जवानी वह वक़्त थी जब उसने बातों को जाना, समझा और दुःख से और नफ़रत से भर उठा। उम्मीद का वक़्त वह था जब कि वह स्पार्टकस के संग लड़ा था और निराशा का वक़्त वह था जब उसने जाना कि उन्हें सफलता न मिलेगी। यह निराशा के वक़्त की अन्तिम घड़ियाँ थीं। अब वह मर रहा था।

लड़ना-भिड़ना ही उसकी ज़िन्दगी थी, उसकी ज़िन्दगी का हवा पानी मगर अब वह लड़-भिड़ नहीं रहा था। उसके भीतर अब संघर्ष न बचा था। उसके भीतर ज़िन्दगी क्रोध और संघर्ष की एक उद्दाम हिंस्र शक्ति थी, एक

तेज़ चीख़ कि आदमी आदमी के आपसी सम्बन्ध में संगति हो। कुछ लोग इसी के लिए बने होते हैं कि जो कुछ जैसा है उसको स्वीकार करें और कुछ होते हैं जो स्वीकार नहीं कर पाते। वह कुछ भी स्वीकार नहीं कर पाता था जब तक कि स्पार्टकस से उसकी मुलाक़ात नहीं हुई। तब उसने इस ज्ञान को स्वीकार किया कि आदमी की ज़िन्दगी एक क़ीमती चीज़ है। स्पार्टकस की ज़िन्दगी एक क़ीमती चीज़ थी, पवित्र चीज़ थी और उसके संग के आदमी भले इन्सानों की ज़िन्दगी बसर करते थे—मगर तब भी वे नाकाम रहे और यही सवाल इस वक़्त भी जब कि वह सलीब पर चढ़ा हुआ था और मर रहा था वह पूछ रहा था, आख़िर क्यों हम नाकाम रहे। उसके दिमाग़ में अब सभी कुछ अस्त-व्यस्त था, गड़बड़ में था और उसी गड़बड़ी में वह सवाल अपना जवाब ढूँढ़ रहा था मगर जवाब उसको मिल नहीं रहा था।

(वह स्पार्टकस के संग है जब ख़बर आती है कि क्रिक्सस मर गया। क्रिक्सस की मृत्यु क्रिक्सस के जीवन की संगत परिणति थी। क्रिक्सस एक सपने को अपने सीने से चिपकाये हुए था। स्पार्टकस जान जाता था कि कब कोई सपना मर गया और असम्भव हो गया। क्रिक्सस का सपना था और क्रिक्सस के जीवन के प्रेरणा थी कि रोम का ध्वंस किया जाय। मगर एक क्षण आया जब स्पार्टकस ने समझा कि वे कभी रोम का ध्वंस नहीं कर सकेंगे, कि रोम ही उनका ध्वंस करेगा। वही आरम्भ था और उसका अन्त वह था जब क्रिक्सस के नेतृत्व में बीस हज़ार गुलाम अलग होकर चले गये। और अब क्रिक्सस मर चुका है और उसकी सेना नष्ट हो चुकी है। क्रिक्सस मर चुका है और उसके आदमी मर चुके हैं। वह लहीम-शहीम, मिज़ाज का तेज़, लाल सिर वाला गॉल अब फिर कभी न हँसेगा और कभी न चिल्लायेगा। वह मर गया है।

(डेविड स्पार्टकस के संग है जब यह ख़बर आती है। उस सेना का बचा हुआ एक सैनिक यह ख़बर लाता है। ऐसी ख़बर लानेवालों पर ऊपर से नीचे तक मौत छायी रहती है। स्पार्टकस सुनता है। तब वह डेविड की ओर मुड़ता है।

(वह डेविड से पूछता है—तुमने सुना ?

(—मैंने सुना।

(—तुमने सुना कि क्रिक्सस मर गया और उसकी समूची सेना मर गयी ?

(—मैंने सुना।

(—दुनिया में क्या इतनी मौत है ? सच कहो !

(—दुनिया में मौत भरी हुई है। तुमको जानने के पहले दुनिया में केवल मौत थी।

(—दुनिया में अब केवल मौत है—स्पार्टकस कहता है। वह बदल गया है। वह पहले से भिन्न हो गया है। अब वह फिर कभी पहले जैसा नहीं होगा। अब फिर कभी ज़िन्दगी के सङ्ग उसका वह अनमोल सम्बन्ध न होगा जो कि अब तक था, जो कि उस वक़्त भी उसको ज़िन्दगी के सङ्ग जोड़े हुए था जब कि वह नूबिया की सोने की खानों में काम करता था, जो कि उस वक़्त भी उसको ज़िन्दगी के संग जोड़े हुए था जब कि वह छुरा हाथ में लिये मैदान में नंगा खड़ा था। उसके लिए अब मौत ज़िन्दगी से जीत गयी थी। उसका चेहरा सूना है और उसकी आँखें सूनेपन से भरी हैं और फिर उसी सूनेपन में से आँसू निकलने लगते हैं और उसके उन चौड़े-चौड़े भूरे-भूरे गालों पर बहने लगते हैं। डेविड के लिए यह कितनी भयानक, कितनी दिलशिकन बात थी कि वह वहाँ पर खड़ा-खड़ा स्पार्टकस को रोते हुए देखे। यह रोता हुआ स्पार्टकस है। देखो, स्पार्टकस रो रहा है। उस यहूदी के दिमाग़ में ख़याल यों आता है: तुम्हें मैं स्पार्टकस के बारे में बतलाऊँ?

(—क्योंकि सिर्फ़ उसके ऊपर नज़र डालकर तुम कुछ भी नहीं देख सकोगे। उसके ऊपर नज़र डालकर तुम कुछ भी नहीं जान सकोगे। तुम सिर्फ़ उसकी टूटी हुई, सपाट नाक देखोगे और देखोगे उसका चौड़ा सा मुँह, उसकी भूरी चमड़ी और उसकी फैली-फैली आँखें। उसके बारे में तुम कैसे जान सकोगे। वह एक नया आदमी है। लोग कहते हैं कि वह पौराणिक काल के वीरों जैसा है: मगर पौराणिक काल के उन वीरों और स्पार्टकस में कौन सी चीज़ समान है, क्या कोई वीर ऐसा भी हो सकता है जिसके पिता का पिता भी गुलाम रहा हो? और यह आदमी कहाँ से आया? यह आदमी कैसे बिना घृणा और बिना ईर्ष्या के जी लेता है? आदमी की पहचान तो है उसके भीतर का तीखापन और द्वेष मगर यह एक आदमी है जिसमें कोई तीखापन नहीं और कोई द्वेष नहीं। यह एक नेक आदमी है। यह एक ऐसा आदमी है जिसने अपनी सारी ज़िन्दगी में कोई बुरा काम नहीं किया। वह तुमसे भिन्न है मगर हमसे भी भिन्न है। हम जो कुछ होना आरम्भ कर रहे हैं स्पार्टकस पहले से है; मगर वह जो कुछ है वह हममें से कोई नहीं है। वह हमारे आगे-आगे चलता था। और अब वह रो रहा है।

(डेविड पूछता है—तुम क्यों रो रहे हो। अब हमारे लिए और कितना कठिन हो जायगा—तुम क्यों रो रहे हो? वे लोग हमें चैन न लेने देंगे जब तक कि हम सब मर नहीं जायँगे।

(—क्या तुम कभी नहीं रोते?—स्पार्टकस पूछता है।

(—जब उन्होंने मेरे बाप को सलीब पर टाँगा था और उनके हाथों और पैरों में कीलें ठोंकी थीं, तब मैं रोया था। तब से फिर मैं कभी नहीं रोया।

(स्पार्टकस कहता है—तुम अपने बाप के लिए नहीं रोये थे और मैं भी क्रिक्सस के लिए नहीं रोता। मैं हम सब के लिए रोता हूँ। ऐसा क्यों हुआ? हम लोगों ने कहाँ पर भूल की? शुरू-शुरू में कभी मेरे मन में सन्देह न उठता था। मेरी सारी ज़िन्दगी उस क्षण के लिए थी जब कि गुलामों के भीतर ताक़त होगी और उनके हाथों में हथियार होंगे। और तब इस सम्बन्ध में मेरे मन में कोई संदेह न था। कोड़ों की मार का ज़माना चला गया था। सारी दुनिया में नयी सुबह के घण्टे बज रहे थे। तब फिर क्यों हम नाकाम रहे? क्यों नाकाम रहे हम? क्रिक्सस तुम क्यों मरे, मेरे साथी? तुम क्यों इतने हठीले और इतने भयानक थे? अब तुम मर चुके हो और तुम्हारे वे तमाम सजीले जवान मर चुके हैं!

(यहूदी कहता है—मरनेवाले चले गये। रोना बन्द करो!

मगर स्पार्टकस ज़मीन पर ढेर हो जाता है, उसका चेहरा धूल में जा पड़ता है और वहीं धूल में अपना चेहरा छिपाये-छिपाये वह चिल्लाता है—वारिनिया को मेरे पास भेज दो। उसको मेरे पास भेज दो, उससे कह दो कि मुझे डर लग रहा है और मौत मेरे ऊपर हावी है।)

६

ग्लैडिएटर के मरने के पहले एक क्षण ऐसा आया जब कि उसके दिमाग़ में हर चीज़ बिलकुल साफ़ थी। उसने अपनी आँखें खोलीं; दृष्टि का केन्द्र-बिन्दु साफ़ हो गया; और थोड़ी देर के लिए उसे दर्द की किसी प्रकार की कोई चेतना न रही। उसने अपने चारों ओर के दृश्य को साफ़ साफ़ देखा। वह ऐपियन मार्ग है, वह महान् रोमन मार्ग, रोम की कीर्ति, रोम के अंग-अंग को रक्त पहुँचानेवाली धमनी। वह उत्तर को न जाने कितनी दूर तक, रोम की नगरी तक फैली हुई। वह रही उसके दूसरी ओर शहर की दीवार और ऐपियन द्वार। एक दर्जन उकताये हुए शहरी सिपाही वहाँ पर थे। द्वार का कप्तान वहाँ पर था जो एक खूबसूरत लड़की से चुहलबाज़ी कर रहा था। वह सड़क के एक छोर पर मुट्ठी भर आलसी लोग बैठे हुए थे जिन्हें इन्हीं सब चीज़ों में मज़ा आता था और दूसरा कुछ करने को न था। खुद सड़क पर आमद-रफ़्त इस वक़्त कम थी क्योंकि काफ़ी देर हो चुकी थी और शहर की आज़ाद आबादी का बड़ा हिस्सा इस वक़्त स्नानागारों में था। ग्लैडिएटर ने आँख उठायी तो उसको लगा कि जैसे वह सड़क के पार समुद्र की एक झलक देख रहा हो, दुनिया की सबसे सुन्दर खाड़ी के बीच समुद्र

की। समुद्र की ओर से ठण्डी-ठण्डी हवा बह रही थी और चेहरे पर उसका ठण्डा स्पर्श वैसे ही था जैसा कि उस औरत के हाथों का स्पर्श जिसे आदमी प्यार करता है।

उसने उन हरी-हरी झाड़ियों को देखा जो शहर के छोर पर थीं और उनके भी परे सरो के गहरे हरे पेड़ों को देखा और उत्तर में दूर तक फैली हुई उन पहाड़ियों और उन सूने पहाड़ों के उभरे हुए हिस्सों को देखा जहाँ भागे हुए गुलाम छिपा करते थे। उसने तीसरे पहर के उस नीले आकाश को देखा, नीले और सुन्दर आकाश को और उसके मन में पीड़ा हुई कि उसकी कोई चाह पूरी न हो सकेगी। और उसने आँख नीची कर ली और एक अकेली बुढ़िया को देखा जो सलीब से कुछ ही गज़ की दूरी पर सिमटी हुई बैठी थी और उसे बराबर एकटक देख रही थी और रोती जा रही थी। ग्लैडिएटर ने अपने मन में कहा—अरे, यह तो मेरे लिए रो रही है! तू कौन है, बूढ़ी माँ, जो वहाँ बैठी मेरे लिए रो रही है?

वह जानता था कि वह मर रहा है। उसका दिमाग़ साफ़ था। वह जानता था कि वह मर रहा है और उसके मन में कृतज्ञता थी कि थोड़ी ही देर में कोई स्मृति और कोई पीड़ा न रह जायगी और बस वह नींद रह जायगी, वह अकेली नींद जो सबको एक-न-एक दिन आती ही है। अब उसके मन में मौत से लड़ने की, संघर्ष करने की कोई इच्छा न रह गयी। वह महसूस कर रहा था कि जब वह आँखें बन्द कर लेगा तो ज़िन्दगी बड़ी आसानी से और बड़ी तेजी से उसके भीतर से निकल जायगी।

और उसने क्रैसस को देखा। देखा और पहचान लिया। उनकी आँखें मिलीं। वह रोमन सेनापति मूर्ति के समान सीधा और निश्चल खड़ा था। उसके सफ़ेद चोगे की तहें सिर से पैर तक उसको ढँके हुए थीं। उसका वह खूबसूरत, सजीला, धूप में तपा हुआ सिर रोम की शक्ति और सत्ता और विजयश्री के प्रतीक के समान था।

ग्लैडिएटर ने सोचा—अच्छा तो तुम मुझे मरता हुआ देखने के लिए आये हो क्रैसस! तुम आख़िरी बाग़ी गुलाम को सलीब पर मरता हुआ देखने के लिए आये हो। इस तरह एक गुलाम मरता है और आख़िरी चीज़ जो वह देखता है वह दुनिया का सबसे अमीर आदमी है।

तभी ग्लैडिएटर को वह मौक़ा याद आया जब उसने क्रैसस को देखा था। तभी उसको स्पार्टकस याद आया। उसे याद आया कि स्पार्टकस कैसा था। वे जानते थे कि खेल अब ख़त्म हो गया, कि अब उसमें कुछ भी बाक़ी नहीं; वे जानते थे कि यही उनकी आख़िरी लड़ाई है। स्पार्टकस वारिनिया को अन्तिम बार विदा कर चुका था। उसने बड़ी याचना

की, पागलों की तरह याचना की कि स्पार्टकस उसे अपने पास रहने दे मगर स्पार्टकस ने उसको अन्तिम बार नमस्कार किया और उसे जाने पर विवश किया। तब वह गर्भवती थी और स्पार्टकस को आशा थी कि इसके पहले कि रोमन उन लोगों को परास्त कर सकें, वह अपने नवजात शिशु को देख लेगा। मगर अभी वह शिशु अजन्मा ही था जब कि वह वारिनिया से अलग हुआ और तब उसने डेविड से कहा—मैं अपने बच्चे को कभी न देख सकूंगा मेरे दोस्त, मेरे पुराने साथी। मुझे बस इसी एक चीज़ का दुःख है, और किसी चीज़ का दुःख नहीं, किसी चीज़ का।

लड़ाई के लिए सफ़ें बन गयी थीं और लड़ाई शुरू होने ही वाली थी जब उन लोगों ने स्पार्टकस को वह सफेद घोड़ा लाकर दिया। क्या खूब घोड़ा था वह! ख़ूबसूरत ईरानी घोड़ा था, बर्फ़ की तरह सफ़ेद और गर्वीला और जोश से भरा हुआ। वह सचमुच स्पार्टकस के योग्य घोड़ा था। स्पार्टकस के मन में अब कोई चिंता न थी, सारी चिन्ताएँ उसने अपने ऊपर से झाड़ दी थीं। वह कोई चेहरा नहीं था जो उसने ऊपर से लगा लिया था। वह सचमुच सुखी था और उसके भीतर तरुणाई का जोश और ज़िन्दगी और ताक़त और आग भरी हुई थी। इन पिछले छः महीनों में उसके बाल सफ़ेद हो गये थे मगर इस वक़्त उसके सफ़ेद बाल नहीं दिखायी देते थे, सिर्फ़ उसके चेहरे का जवान जोश दिखलायी देता था। वह कुरूप चेहरा सुन्दर हो रहा था। सब देख रहे थे कि वह कितना सुन्दर था। लोग उसको देखते थे और कुछ बोल न पाते थे। तब उन्होंने लाकर उसे वह ख़ूबसूरत सफ़ेद घोड़ा दिया।

उस वक़्त उसने कहा था—मेरे प्यारे दोस्तो, साथियो, मैं सबसे पहले तुमको इस सुन्दर भेंट के लिए धन्यवाद देता हूँ। सबसे पहले मैं तुम्हें धन्य-वाद देता हूँ। अपने सारे हृदय से धन्यवाद देता हूँ।—तब फिर उसने अपनी तलवार निकाली और बिजली की सी गति से उसको घोड़े की छाती में मूठ तक घुसा दिया और फिर तलवार पकड़कर लटक गया और घोड़े ने अपनी अगली टाँगें उठायीं और चीखा और घुटनों के बल गिर गया और लुढ़ककर मर गया और स्पार्टकस ने तलवार खींच ली। उसके हाथ में तलवार थी और तलवार से खून टपक रहा था और वह उनके सामने खड़ा था और वे उसको भय से और आश्चर्य से देख रहे थे। मगर उसके अन्दर कुछ भी नहीं बदला था।

उसने कहा—एक घोड़ा मर गया। क्या तुम रोना चाहते हो क्योंकि एक घोड़ा मर गया? हम आदमी की ज़िन्दगी के लिए लड़ते हैं जानवरों की ज़िन्दगी के लिए नहीं। रोमन घोड़ों को प्यार करते हैं मगर आदमी के लिए उनके दिल में सिर्फ़ नफ़रत है। अब हम देखेंगे कि इस मैदाने जंग से

कौन जाता है, हम या वे। मैंने तुमको तुम्हारी इस भेंट के लिए धन्यवाद दिया था। यह बड़ी ही सुन्दर भेंट थी। इससे पता चलता है कि तुम मुझको कितना प्यार करते हो। मगर यह जानने के लिए मुझको इस भेंट की ज़रूरत न थी। मैं जानता हूँ मेरे दिल में क्या है। मेरे दिल में तुम्हारे लिए प्यार ही प्यार है। सारी दुनिया में ऐसे शब्द नहीं हैं, मेरे प्यारे साथियो, जो उस प्यार को बतला सकें जो कि मेरे दिल में तुम्हारे लिए है। हमारी ज़िन्दगियाँ साथ-साथ गुज़री हैं। अगर आज हम नाकाम भी रहते हैं तो हमने एक ऐसा काम किया है जिसे आदमी हमेशा-हमेशा याद करेंगे। चार साल तक हम रोम से लड़े हैं—चार लम्बे साल। हमने कभी किसी रोमन सेना को पीठ नहीं दिखायी। हम कभी नहीं भागे। आज भी हम मैदान से भागेंगे नहीं। तुम यह चाहते थे कि मैं घोड़े पर सवार होकर लड़ूँ? घोड़े रोमनों को ही मुबारक हों। मैं पैदल, अपने भाइयों के बग़ल में खड़े होकर लड़ता हूँ। अगर हम आज की लड़ाई जीत जाते हैं तो हमारे पास तमाम घोड़े-ही-घोड़े हो जायेंगे और हम उन्हें हल में जोतेंगे, रथों में नहीं। और अगर हम हार जाते हैं—तब तो हमें घोड़ों की कोई ज़रूरत यों भी न होगी।

फिर उसने उन लोगों को गले लगाया। उसके पुराने साथियों में जो-जो बच रहे थे उन सब को उसने गले से लगाया और होंठों पर चूमा। और जब वह डेविड के पास आया तो उसने कहा—आह, मेरे दोस्त, महान् ग्लैडिएटर। क्या तुम आज भी मेरे पास रहोगे!

—हमेशा।

और इस वक़्त जब कि वह सलीब पर लटका हुआ था और क्रैसस को देख रहा था, डेविड के मन में ख़याल आया—आदमी कितना कर ही सकता है! उसकी बिसात ही कितनी! उसके मन में अब कोई खेद न था। वह स्पार्टकस के बग़ल में खड़े होकर लड़ा था। वह उस वक़्त वहाँ पर लड़ा था जब कि यह आदमी जो उसके सामने इस वक़्त खड़ा है, यह महान् सेनापति, इसने अपने घोड़े को दोनों अगली टाँगों पर खड़ा किया था और गुलामों की सफ़ों को चीरने की कोशिश की थी। उस वक़्त स्पार्टकस के साथ-ही-साथ डेविड भी चिल्लाया था—हमारे पास आओ क्रैसस। यहाँ आओ और स्वागत का मज़ा चखो।

वह तब तक लड़ा था जब तक कि गोफन से छूटे हुए एक पत्थर ने उसे ढेर नहीं कर दिया। वह अच्छी तरह लड़ा था। उसे खुशी थी कि उसने स्पार्टकस को मरते नहीं देखा। उसे खुशी थी कि सलीब पर चढ़ने का यह अन्तिम अपमान, यह ज़िल्लत उसी को उठानी पड़ी और स्पार्टकस को नहीं। इस वक़्त उसके मन में कोई खेद नहीं था, कोई चिन्ता न थी, और, कम-से-कम

इस क्षण, कोई दर्द न था। उसने स्पार्टकस के उस अन्तिम, तरुणाई-भरे उल्लास को समझा। पराजय कहीं न थी। अब वह स्पार्टकस के समान था क्योंकि अब वह भी जीवन के उस गहरे रहस्य को समझने लगा था जिसको स्पार्टकस समझता था। वह स्पार्टकस को भी वह चीज़ बतलाना चाहता था। उसके होंठ हिले और क्रैसस सलीब के पास आ गया। क्रैसस खड़ा था और उस मरते हुए आदमी को देख रहा था मगर ग्लैडिएटर की ओर से कोई आवाज़ न आयी। इसके बाद उस ग्लैडिएटर का सिर आगे को लुढ़क गया, उसके शरीर से शक्ति की अन्तिम बूँद भी निकल गयी और वह मर गया।

क्रैसस वहाँ खड़ा रहा जब तक कि वह बुढ़िया भी वहाँ न आ गयी। बुढ़िया ने कहा—अब वह मर गया है।

क्रैसस ने जवाब दिया—मैं जानता हूँ।

फिर वह द्वार पर आ गया और कापुआ की सड़कों पर निकल गया।

१०

उस रात क्रैसस ने अकेले ही खाना खाया। वह किसी से मिल नहीं रहा था और उसके गुलाम, उसके मन पर छाये इस अँधेरे को देखकर, जैसा कि अक्सर हो जाया करता था, बहुत हलके पैरों से और सहमे-सहमे से चल रहे थे। रात के खाने के पहले ही शराब की बोतल का ज़्यादा बड़ा हिस्सा वह ठिकाने लगा चुका था; एक और बोतल खाने के साथ लगी और खाने के बाद वह सर्वियस की एक बोतल लेकर बैठ गया। सर्वियस खजूर की एक तेज़ ब्राण्डी थी जो मिस्र में खींची जाती थी और वहीं से मँगायी जाती थी। अकेले और न जाने किस विचार में मग्न पीते-पीते वह नशे में बुरी तरह चूर हो गया और यह नशा ऐसा था जिसमें निराशा और आत्म-ग्लानि मिली हुई थी और जब वह इस हालत को पहुँचा कि किसी तरह बड़ी-बड़ी मुश्किल से चल भर पाता था तो वह लड़खड़ाता हुआ अपने शयन कक्ष में पहुँचा और उसके गुलामों ने रात के विश्राम के लिए उसे बिस्तर पर लिटा दिया।

मगर ख़ैर, वह सोया बहुत अच्छी तरह। उसे खूब ही गहरी नींद आयी। सबेरे जब वह उठा तो उसके अंग-अंग में रात के विश्राम की अनुभूति थी; उसके सिर में दर्द नहीं हो रहा था और उसे उन बुरे स्वप्नों की कोई स्मृति न थी जिन्होंने सम्भवतः उसकी नींद में विघ्न डाला हो। दिन में दो बार नहाने का उसको अभ्यास था, एक बार तो एकदम सबेरे नींद खुलते ही और दूसरी बार, तीसरे पहर खाने के पहले। बहुत से अमीर रोमनों की तरह उसने भी इसको एक राजनीतिक आवश्यकता बना लिया था कि हफ्ते में कम-से-कम दो बार सार्वजनिक स्नानागारों में ज़रूर जाता था मगर इस चीज़

के पीछे राजनीति थी और दूसरी कोई ज़रूरत नहीं। कापुआ तक में उसके पास अपना एक बड़ा सुन्दर निजी स्नानागार था, बारह वर्ग फुट का एक संगमरमर का टब जो फ़र्श की सतह से कुछ नीचे पर गड़ा हुआ था और जिसमें गर्म और ठण्डे पानी की कभी कोई कमी न होती थी। वह जहाँ भी रहता था, नहाने की सुविधाओं पर उसका ख़ास आग्रह होता था और जब वह अपने लिए कोई घर बनवाता था तो नल वगैरह हमेशा पीतल या चाँदी के लगवाता था ताकि वह गलें नहीं, कोई चीज़ उनकी धात को खा न सके।

नहाने के बाद हज्जाम उसकी हजामत बनाता था। उसे दिन का यह वक़्त बहुत ही प्यारा था, यह तेज़ उस्तरे के आगे गालों का आवश्यक समर्पण, वह नन्हें बच्चों की-सी अनुभूति जिसमें विश्वास के साथ ही भय भी मिला होता था, और फिर उसके बाद गर्म तौलिए, सुगन्धित अंगराग और फिर सबके अंत में सिर की मालिश जिसके बिना इतिश्री न होती थी। उसको अपने बालों का बहुत घमण्ड था और अब उसे परेशानी हो रही थी क्योंकि उसके बाल झड़ने लगे थे।

वह एक सादा-सा गहरे नीले रंग का कुर्ता पहने हुए था जिसमें चाँदी की गोट लगी हुई थी और अपनी आदत के अनुसार हिरन के चमड़े के नर्म-नर्म सफ़ेद जूते पहने था जो कि उसके घुटनों तक पहुँचते थे। चूँकि इन जूतों की सफ़ाई ठीक से न हो सकती थी और दो दिन पहनने से ही वे कीचड़ में लिथड़ जाते थे, इसलिए क्रैसस ने अपने जूते बनाने के लिए खुद एक जगह क़ायम कर दी थी जहाँ एक कारीगर के नीचे चार गुलाम काम करते थे। इसमें खर्चा तो था मगर फ़िज़ूलखर्ची उसको नहीं कह सकते क्योंकि उस गहरे नीले कुरते और सफ़ेद जूतों से उसकी जो तसवीर बनती थी वह बहुत ही आकर्षक थी। मौसम अब गर्म हो चला था इसलिए आज ही उसने निश्चय किया कि चोग़े को अब छुट्टी दे देगा और फलों और बिस्कुटों का हल्का सा नाश्ता करने के बाद उसने एक पालकी ली और उस घर पर गया जहाँ वे तीनों नौजवान ठहरे हुए थे। उसने हेलेना के साथ जैसा बर्ताव किया था उसकी वजह से वह कुछ-कुछ लज्जित और अस्थिर हो रहा था और, दूसरी कोई बात हो या न हो, उसने कापुआ में उन लोगों के मनोरंजन की व्यवस्था करने का वचन तो उनको दिया ही था।

इसके पहले भी एक या दो बार वह इस मकान पर आ चुका था और हेलेना के मामा को थोड़ा बहुत जानता था; इसलिए दरवाज़े पर तैनात गुलाम ने बहुत अच्छी तरह उसका स्वागत किया और तत्काल उसको लेकर सहन में पहुँचा जहाँ उस परिवार के लोग और उनके मेहमान बैठे अब भी नाश्ता कर रहे थे। उसको देखकर हेलेना के गाल रक्तिम हो उठे और उसने

अपना जो तरुणाई मिला हुआ संयत रूप यत्नपूर्वक बना रक्खा था उसमें थोड़ी कमी आ गयी। केयस उसको देखकर सचमुच खुश जान पड़ा और मामा-मामी को तो यह खुशी थी कि सेनापति ने उनके घर आकर उनको इतना बड़ा सम्मान दिया और इसलिए वे दोनों अपनी तरफ़ से ज़्यादा से ज़्यादा आतिथ्य-सत्कार कर रहे थे। केवल क्लौदिया एक ऐसी थी जो बड़ी सतर्क दृष्टि से उसको देख रही थी। उसकी आँखों में अविश्वास था और थी विद्वेष की एक हलकी-सी चमक।

क्रैसस ने कहा—अगर तुम लोगों ने आज के लिए अपनी कोई योजना न बनायी हो तो मैं चाहूँगा कि मैं तुमको इत्र का एक कारखाना दिखाऊँ। बड़े शर्म की बात होगी कि तुम कापुआ आकर इत्र का कारखाना भी न देखो, ख़ास करके तब जब कि हमारा यह बेचारा छोटा-सा शहर सिर्फ़ अपने ग्लैडिएटरों और इत्रों के लिए मशहूर हो।

—कैसी दो विचित्र चीज़ों का संयोग—क्लौदिया मुस्करायी।

—हमारी अपनी कोई योजना नहीं है—हेलेना ने जल्दी से कहा।

—उसका मतलब है कि हमारे पास अपनी योजना है तो लेकिन हम उसको एक तरफ़ रखकर बड़ी खुशी से तुम्हारे साथ जायेंगे।

केयस ने तेज़ निगाहों से, लगभग गुस्से में अपनी बहन को देखा। क्रैसस ने बताया कि घर के बड़े लोग तो जैसे इस योजना में सम्मिलित हैं ही मगर उन लोगों ने माफ़ी माँग ली और कहा कि वे न जायँगे। इत्र के कारखाने उनके लिए कोई नयी चीज़ न थे और गृह-स्वामिनी ने यह भी कहा कि इत्रों की ज़्यादा भाप सूँघने से उनके सिर में दर्द हो जाया करता है।

थोड़ी देर बाद वे लोग इत्र के कारखाने की तरफ़ रवाना हुए। उनकी पालकियाँ कापुआ के पुराने हिस्से में से होकर जा रही थीं। वहाँ पर सड़कें बराबर सँकरी और मकान ऊँचे होते चले जा रहे थे। ज़ाहिर था कि मकानों के बारे में जो थोड़े-बहुत क़ानून रोम में थे वे भी यहाँ पर नहीं लागू किये गये थे क्योंकि किराये पर उठाने के लिए बने हुए वे मकान ऐसे बेतहाशा ऊँचे होते चले गये थे जैसे कि बच्चे खेल में बनाया करते हैं। बहुत बार ऐसा मालूम होता था कि जैसे ऊपर पहुँचकर वे एक दूसरे से मिल जाते हों और एक की शहतीरें दूसरे से गले मिलती हों। यह सबेरे का वक़्त था और गो कि आसमान साफ़ और नीला था, तब भी ये सड़कें वैसी ही अँधेरी थीं जैसी कि झुटपुटे के वक़्त होती हैं। सड़कें गन्दी थीं; मकानों से निकला हुआ कूड़ा-करकट ढेर का ढेर वहाँ पर पड़ा हुआ था और पड़ा रहता था जब तक कि वह सड़ न जाता और तब उस गन्दगी के ढेर की सड़ाँध खुशबूदार तेलों और इत्रों की मीठी-मीठी और कुछ-कुछ मितली-सी पैदा करने वाली गन्ध

में मिल जाती थी और इसी तरह धीरे-धीरे सड़ाँध का अनुपात बढ़ता जाता था।

क्रैसस ने कहा—तुमने देखा हमारे ये कारखाने इस जगह पर क्यों हैं? यहाँ पर इस बदबू की अपनी उपयोगिता है।

इन सड़कों पर मकानों के अन्दर ख़िदमत करनेवाले वैसे साफ़-सुथरे, अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए गुलाम नहीं दिखायी देते थे जैसे कि शहर के दूसरे बेहतर हिस्सों में दिखायी देते थे। वहाँ पर पालकियाँ भी ज़्यादा न थीं। गन्दे-गन्दे अधनंगे बच्चे नालियों में फिर रहे थे। फटे-पुराने कपड़े पहने हुए औरतें गलियों की छोटी-मोटी दूकानों पर खाने की चीज़ों के लिए मोल-भाव कर रही थीं या अपनी कोठरियों पर बैठी हुई बच्चों को दूध पिला रही थीं। अजब-अजब बोलियाँ गडमड होकर हवा में घूम रही थीं और घर के अन्दर पकते हुए अजीब-अजीब खानों की गन्ध खिड़कियों से आ रही थी।

—कैसी वीभत्स जगह है!—हेलेना ने कहा—क्या आप सचमुच यह कहना चाहते हैं कि इस गन्दी तलैया में से वह सब खुशबूएँ आती हैं?

—हाँ, मेरी जान, बिलकुल यही बात है। और दुनिया के किसी भी शहर से ज़्यादा, और बेहतर, खुशबूएँ, इत्र-तेल। और जहाँ तक इन लोगों की बात है, इनमें से ज़्यादातर शाम और मिस्र के रहनेवाले हैं और कुछ यूनानी और यहूदी भी हैं। हमने गुलामों की मदद से अपने कारखाने चलाने की कोशिश की मगर काम बना नहीं। तुम गुलाम को काम करने के लिए मजबूर कर सकते हो मगर इसके लिए मजबूर नहीं कर सकते कि वह काम को बिगाड़े नहीं। उसको इस चीज़ की परवाह ही नहीं रहती। तुम उसको हल या हँसिया या फावड़ा या हथौड़ा पकड़ा दो और फिर देखो वह क्या-क्या कमाल दिखलाता है, और फिर यह भी तो है कि उन सब औज़ारों को ख़राब करना भी उतना आसान नहीं है। मगर तुम उसे बुनने के लिए रेशम या दूसरा कोई बारीक कपड़ा या नाज़ुक कलाबत्तू का काम या ऐसा कोई काम दे दो जिसमें ठीक-ठीक नाप-जोख और नपे-तुले ढग से हाथ चलाने की ज़रूरत हो या कारखाने में कोई काम दे दो और फिर देखो, यह हो नहीं सकता कि वह काम को न बिगाड़े। और तब फिर उसको तुम चाहे कितना ही कोड़ा मारो, कोई फ़ायदा नहीं, काम को तो वह बिगाड़ता ही है। जहाँ तक हमारे अपने ग़रीबों की बात है—काम करने के लिए भला उनको किस चीज़ से प्रेरणा मिले, हर काम के लिये एक की जगह दस लोग मौजूद रहते हैं। एक आदमी क्यों काम करे जब बाक़ी नौ सरकारी इमदाद के बल पर ज़्यादा अच्छी ज़िन्दगी बसर करते हैं और अपने दिन जुए में या खेल के मैदान में या सार्वजनिक स्नानागारों में गुजारते हैं! वे

सेना में इसलिए जाना पसन्द करते हैं कि अगर भाग्य साथ दे तो उसमें अमीर होने का मौका है मगर सेना में भी हमको ज़्यादा से ज़्यादा उन्हीं बर्बरों का सहारा लेना पड़ता है। मगर हम लोग उनको जो मज़दूरी देते हैं उसकी लालच में वे कारखाने में जाकर काम करने के लिए तैयार नहीं। हमने उनके दस्तकारों के संघ तोड़ दिये क्योंकि दूसरा चारा न था, हमें या तो उनके संघ तोड़ने थे या अपने कारखाने चलाने का ख़्याल छोड़ देना था। इसलिए अब हम शामवालों और मिस्रियों और यहूदियों और यूनानियों से भाड़े पर काम लेते हैं और वे तभी तक काम करते हैं जब तक कि उनके पास इतने पैसे नहीं हो जाते कि वे किसी नगरपालिका से नागरिकता के अधिकार खरीद सकें। मैं समझ नहीं पाता कि इसका अन्त क्या होगा। मगर फिल-हाल जो स्थिति है वह यही कि कारखाने बन्द हो रहे हैं, खुल नहीं रहे हैं।

तब तक वे लोग कारखाने पहुँच गये थे। वह एक नीची छत की लकड़ी की इमारत थी जो उन बड़ी-बड़ी चालों के बीच बहुत छोटी और कुरूप दिखायी दे रही थी। वह प्रायः डेढ़ सौ वर्ग फुट की रही होगी। वह बड़ी टूटी-फूटी हालत में थी, उसकी लकड़ी की दीवारें जगह-जगह सड़ी हुई थीं और पटरे यहाँ-वहाँ ग़ायब थे, छत में से धुआँ उगलती हुई चिमनियों का एक जंगल झाँक रहा था। एक ओर वह चबूतरा था जहाँ माल लादा जाता था और बहुत सी गाड़ियाँ उस चबूतरे के पास खड़ी हुई थीं। उन गाड़ियों पर छालों के ढेर, फलों की टोकरियाँ और मिट्टी के बर्तन ऊपर तक लदे हुए थे।

क्रैसस अपनी पालकियों को घुमाकर कारखाने के सामने की तरफ़ ले गया। उनके पहुँचने पर लकड़ी के वे बड़े-बड़े फाटक अन्दर को खुल गये और क्रैसस और हेलेना और क्लॉदिया ने इत्र खींचने के एक कारखाने के भीतरी हिस्से की पहली झलक पायी। वह इमारत एक बड़ा सा शेड थी जिसमें लकड़ी की शहतीरें छत को सहारा दिये हुए थीं और खुद छत के बहुत से हिस्से में जँगला लगा हुआ था ताकि हवा और रोशनी अन्दर आ सके। खुले हुए चूल्हों की गरमी और रोशनी से वह जगह भरी हुई थी। लम्बी-लम्बी मेज़ों पर मिट्टी के सैकड़ों बर्तन रक्खे थे। और भभके में लगे हुए, भाप को ठण्डा करनेवाले नलकों का जाल ऐसा था कि जैसे कोई विचित्र सपना हो। और उन सब के बीच से इत्रों के सत की वही भारी खुशबू निकल रही थी जिससे मितली मालूम होती थी।

उन लोगों ने सैकड़ों मज़दूरों को भी काम करते देखा। छोटे-छोटे, मटीले रंग के आदमी जिनमें से बहुतों के दाढ़ी थी और जो सिर्फ़ एक लँगोटी से अपनी नग्नता को ढँके हुए थे। वे खड़े भभकों की देख-भाल कर रहे थे, भट्ठियों में आग डाल रहे थे, काटने की मेज़ों पर खड़े पेड़ों की छालें और

फलों के छिलके काट रहे थे या चाँदी की छोटी-छोटी नलियों में सत भर रहे थे, बूँद-बूँद करके उस बेशक़ीमत चीज़ को उनके अन्दर डाल रहे थे और फिर हर नली को गर्म मोम से बन्द कर देते थे। कुछ और लोग थे जो फल छील रहे थे और सुअर के गोश्त की चर्बी के लम्बे-लम्बे सफ़ेद पतले टुकड़े काट रहे थे।

कारखाने के मैनेजर ने—जो कि एक रोमन था और जिसका क्रैसस ने ऐवलस के नाम से परिचय कराया और जिसे अपने वंश या गोत्र के नाम का सम्मान प्राप्त नहीं था—सेनापति और उसके मेहमानों का स्वागत एक ऐसे ढंग से किया जिसमें एक विचित्र स्निग्धता और लोभ और सतर्कता मिली हुई थी। क्रैसस ने उसको थोड़ी सी मुद्राएँ दीं जिससे कि वह उन लोगों को प्रसन्न करने के लिए और भी उत्सुक हो उठा और फिर वह उनको एक के बाद दूसरी जगह दिखाने लगा। मज़दूर अपना काम करते रहे। उनके चेहरे रूखे, कठोर, कटुता लिये हुए थे। वे जब इन लोगों को अपनी आँख की कोरों से एक झलक देख भी लेते थे तो भी उनके चेहरे का भाव किसी तरह नहीं बदलता था। वहाँ पर जितनी भी चीज़ें उन लोगों ने देखीं उनमें केयस और हेलेना और क्लॉदिया को सबसे विचित्र वे मज़दूर ही लगे। उन्होंने ऐसे आदमी इससे पहले नहीं देखे थे। वे दूसरों से भिन्न थे और उनमें कुछ ऐसी बात थी कि उन्हें देखकर डर मालूम होता था। वे गुलाम न थे और न वे रोमन ही थे। और न वे उन किसानों की ही तरह थे जिनकी तादाद बराबर कम होती जा रही थी मगर जो अब भी इटली में यहाँ-वहाँ अपनी ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों से चिपके हुए थे। वे भिन्न लोग थे और उनकी यह भिन्नता ही परेशान करनेवाली थी।

क्रैसस ने बतलाया—यहाँ हमारा काम है इत्र खींचना। इस चीज़ के लिए हमको मिस्रियों को धन्यवाद देना चाहिए। मगर वे लोग कभी भी इस इत्र खींचने की क्रिया को किसी बड़े पैमाने पर न चला सके। संगठन तो रोम ही कर सकता है।

—मगर क्या यह चीज़ कभी इससे भिन्न भी थी?—केयस ने पूछा।

—अरे हाँ, क्यों नहीं। पुराने ज़माने में लोग इत्रों की प्राकृतिक उपज पर निर्भर रहते थे—ख़ास तौर पर लोबान, मिर और कपूर। ये सब के सब गोंद हैं और पेड़ की छाल से निकलते हैं। मैंने सुना है कि पूरब के देशों में लोग ऐसे पेड़ों की खेती करते हैं। वे छालों में चाकू मार देते हैं और फिर बाक़ायदा फ़सल के तौर पर गोंद को इकट्ठा करते हैं। ज़्यादातर ये सुगन्धियाँ धूप जलाने के काम में आती थीं। इसके बाद मिस्रवालों ने भभके की ईजाद की जिसने हमको न सिर्फ़ शराब दी और नशे में चूर हो जाने का छोटा रास्ता दिखलाया बल्कि खुशबुएँ भी दीं, इत्र भी दिये।

वह उन लोगों को काटने की मेज़ पर ले गया जहाँ एक मज़दूर नीबू के कागज़ जैसे पतले छिलके उतार रहा था। क्रैसस ने एक छिलके को रोशनी के सामने करके देखा।

—अगर तुम ध्यान से देखो तो तुम्हें इसके नन्हें-नन्हें तैल-कोष दिखायी दे जायेंगे। और ख़ैर यह तो तुम जानते ही हो कि इस छिलके की खुशबू कितनी अच्छी होती है। सत निकालने के लिए आधार यही है—और नीबू ही नहीं और भी सैकड़ों फलों और छालों के लिए भी वही बात है। और अब अगर आप मेरे पीछे-पीछे आइए—

इसके बाद वह उन लोगों को एक भट्ठी के पास ले गया। वहाँ पर एक बहुत बड़े से बर्तन में छिलकों के टुकड़े पकने के लिए चढ़ाये जा रहे थे। जब वह बर्तन भट्ठी पर रक्खा गया तो उसके ऊपर धात का एक ढक्कन रखकर बर्तन का मुंह अच्छी तरह कसकर बन्द कर दिया गया। उस ढक्कन में से ताँबे का एक नलका निकला हुआ था जो चक्कर खाता हुआ उस जगह पर पहुँचता था जहाँ उसे ठंडा करने के लिए उस पर पानी की फुहार गिरती थी। इस नलके का दूसरा सिरा एक और बर्तन में था।

क्रैसस ने समझाया—यही भभका है। चाहे छाल हो या पत्ती या फल का छिलका, हम हर चीज़ को पकाते हैं जब तक कि उसके तैलकोष अलग नहीं हो जाते। इसके बाद वह चीज़ भाप बन जाती है और फिर हम पानी की फुहार से उस भाप को ठंडा कर देते हैं।—वह उन लोगों को एक दूसरी भट्ठी के पास ले गया जहाँ भभके में से द्रव गिर रहा था।—यह देखिए, यही वो पानी है। पात्र जब भर जाता है तो हम इस पानी को ठण्डा करते हैं और तेल ऊपर सतह पर आ जाता है। यह तेल ही सत है और उसे बड़ी होशियारी से अलग किया जाता है और उन चाँदी की नलियों में डालकर मुहरबन्द कर दिया जाता है। जो बच जाता है वही वह खुशबूदार पानी है जो आजकल जलपान के समय लोकप्रिय होता जा रहा है।

—आप का मतलब है हम लोग उसी को पीते हैं—क्लॉदिया ने ज़ोर से कहा।

—कमोबेश। उसमें भाप से इकट्ठा किया हुआ पानी मिला लिया जाता है लेकिन मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि स्वास्थ्य के लिए वह बहुत ही अच्छा होता है। इतना ही नहीं, स्वाद के लिए इन पानियों को आपस में मिला भी दिया जाता है उसी तरह जैसे सुगंध के लिए उन तेलों को एक दूसरे के संग मिला दिया जाता है। और फिर उस पानी को हाथ-मुँह धोने के काम में लाया जाता है।

उसने हेलेना को मुस्कराते देखा और पूछा—तुम समझती हो कि मैं झूठ कह रहा हूँ?

—नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं। मुझे सिर्फ़ हैरत हो रही है कि तुमको ये सब बातें कैसे मालूम हो गयीं। मुझे अपनी ज़िन्दगी के वह मौक़े याद हैं जब मैं यह सुनती थी कि कोई चीज़ कैसे बनायी जाती है। मेरा ख़याल है कि तब किसी को कुछ भी नहीं मालूम था कि कोई चीज़ कैसे बनती है।

क्रैसस ने बड़े शान्त भाव से उत्तर दिया—इन बातों को जानना, यही तो मेरा काम है। मैं बहुत अमीर आदमी हूँ। मुझे इस बात की कोई शर्म नहीं है जैसी कि बहुत से लोगों को होती है। तमाम लोग हैं जो मुझको सिर्फ़ इसीलिए नीची निगाह से देखते हैं कि मेरी दृष्टि पैसा बनाने पर रहती है। मुझे इससे बहस नहीं। मुझे सम्पत्ति बटोरना अच्छा लगता है। मगर अपने दूसरे साथियों की तरह मेरा यह ख़याल नहीं है कि सम्पत्ति जागीरदारी से आती है और उन लोगों ने जब मुझको लड़ने को कहा तो जीतने के लिए उन्होंने मुझको कोई शहर नहीं दिये जैसे कि पॉम्पी को दिये थे। उन्होंने मुझको गुलामों का युद्ध पकड़ाया जिसमें कोई आर्थिक लाभ न था। इसलिए मुझे विवश होकर अपनी अलग छोटी-मोटी भेदभरी चीज़ें खड़ी करनी पड़ीं और यह कारखाना उनमें से एक है। वह जो तुम चाँदी की नलियाँ देख रही हो जिनमें इत्रों का सत भरा हुआ है उनकी क़ीमत अपने वज़न से दस गुना ज़्यादा सोने के वज़न की क़ीमत के बराबर है। गुलाम तुम्हारा खाना खाता है और मर जाता है मगर यह मज़दूर अपने आपको सोने में बदल देते हैं। और फिर मुझे इसकी भी फ़िक्र नहीं करनी पड़ती कि उन्हें क्या खिलाऊँ और कहाँ रक्खूँ।

केयस ने अटकल लगाते हुए कहा—मगर वे लोग भी तो स्पार्टकस-जैसा ही कुछ कर सकते हैं—

—मज़दूर विद्रोह करें? क्रैसस मुस्कराया। उसने निषेध में सिर हिलाया और कहा—नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। देखो बात यह है कि ये लोग गुलाम नहीं हैं। ये आज़ाद लोग हैं। ये अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ आ-जा सकते हैं। उन्हें भला विद्रोह करने की क्या ज़रूरत? क्रैसस ने उस बड़े से शेड पर चारों तरफ़ निगाह दौड़ायी।—नहीं! सच बात यह है कि पूरे गुलाम युद्ध में हमने एक दिन के लिए भी अपनी भट्ठियाँ बन्द नहीं कीं। इन आदमियों और गुलामों के बीच एकता का कोई बन्धन नहीं।

मगर तब भी जब वे लोग वहाँ से चले तो केयस का मन उद्विग्न था। यह अजीबोग़रीब, ख़ामोश, दढ़ियल आदमी जो इतनी फ़ुर्ती से और इतनी दक्षता से अपना काम कर रहे थे, उनको देखकर उसका मन भय और आशंका से भर उठा। और वह समझ नहीं सका ऐसा क्यों।

भाग ७ । जिसमें सिसेरो और ग्रैकस के रोम वापस लौटने का वर्णन है, यानी उन्होंने रास्ते में क्या-क्या बातें कीं और फिर स्पार्टकस का सपना और फिर वह सपना कैसे ग्रैकस को बतलाया गया ।

जिस तरह केयस और क्रैसस और वे दोनों लड़कियाँ दक्खिन को ऐपियन मार्ग से कापुआ गयी थीं उसी तरह सिसेरो और ग्रैकस कुछ दिन पहले उत्तर रोम को गये थे। विला सलारिया शहर से एक दिन के फासले पर था और आगे चलकर उसे रोम का एक कस्बा ही समझा जायगा। इसलिए सिसेरो और ग्रैकस बहुत धीरे-धीरे चले जा रहे थे, उन्हें कोई जल्दी न थी और उनकी पालकियाँ अग़ल-बग़ल चल रही थीं। सिसेरो का अन्दाज़ सरपरस्ती का था और वह अपने को ख़ासा बड़ा आदमी समझता था मगर वह भी अपने आपको इसके लिए मजबूर कर रहा था कि इस आदमी के प्रति सम्मान दिखलाये जो नगर की एक इतनी बड़ी शक्ति था, और सच बात यह है कि ग्रैकस के अन्दर जो व्यवहार-कुशलता थी उसका असर दूसरे पर न पड़े, ऐसा संभव न था।

जब कोई आदमी अपनी ज़िन्दगी लोगों का समर्थन पाने और उनकी शत्रुता को बचाने में ही लगा देता है तो उसके अन्दर अनिवार्य रूप से सामाजिक व्यवहार के कुछ ख़ास गुण पैदा हो जाते हैं और ग्रैकस को शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिला हो जिसको उसने अपना समर्थक न बना लिया हो। मगर सिसेरो ऐसा नहीं था कि उसको बहुत पसन्द किया जाता; वह उन

चतुर नवयुवकों में था जो सिद्धान्तों को कभी अपनी सफलता के मार्ग में आड़े नहीं आने देते। जहाँ यह बात सच थी कि ग्रैकस भी उतना ही अवसरवादी था वहाँ इस बात में वह सिसेरो से भिन्न था कि वह सिद्धान्तों का आदर करता था; बस इतना था कि असुविधा होने पर वह स्वयं उन्हें त्याग देता था। सिसेरो जिसे अपने आपको भौतिकतावादी समझना अच्छा लगता था और जो इसीलिए किसी भी मनुष्य में सज्जनता के गुणों को स्वीकार करने से इनकार करता था, वास्तव में ग्रैकस से कम यथार्थवादी था। यही वजह थी कि कभी-कभी उसको इस मोटे थुलथुल बुड्ढे की ऊपरी सौजन्य से भरी हुई बदमाशी से बड़ा झटका-सा लगता था। सच्चाई यह थी कि ग्रैकस किसी और से ज़्यादा बदमाश न था, जैसे और थे वैसा ही वह भी था। बस इतनी बात थी कि उसने दूसरों की अपेक्षा कुछ ज़्यादा सख्ती से आत्मछलना के विरुद्ध लड़ाई लड़ी थी, क्योंकि वह उस चीज़ को अपनी महत्वाकांक्षा के रास्ते में एक रुकावट पाता था।

दूसरी ओर उसके मन में सिसेरो के लिए उतनी हिक़ारत न थी जितनी कि हो सकती थी। एक हद तक, सिसेरो उसके लिए एक पहेली था। दुनिया बदल रही थी; ग्रैकस जानता था कि उसकी अपनी ज़िन्दगी में ही, उसके देखते-देखते एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया था और वह सिर्फ़ रोम में ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में। सिसेरो उस परिवर्तन का अग्रदूत था। चतुर और निर्मम नवयुवकों की सम्पूर्ण पीढ़ी में सिसेरो भी एक था। ग्रैकस भी कठोर और निर्मम था मगर वह दुःख को पहचानता था, उसकी निर्ममता में करुणा का एक भाव ज़रूर था, भले उस करुणा के आधार पर वह कोई काम न करे। मगर इन नवयुवकों के पास न तो करुणा थी, न दुःख। ऐसा मालूम होता था कि उन्होंने एक ऐसा कवच पहन रक्खा है जिसमें कहीं कोई छेद नहीं है। सिसेरो बहुत ही अच्छा सुशिक्षित व्यक्ति था और उसके सम्बन्ध भी बहुत बड़े-बड़े लोगों से थे, इसलिए ग्रैकस के मन में उसके प्रति कुछ सामाजिक स्पर्द्धा का भाव था मगर यह स्पर्द्धा कुछ इसलिए भी थी कि सिसेरो के अन्दर एक विशेष हिमकठोर निर्ममता थी। किसी हद तक ग्रैकस सिसेरो के अन्दर शक्ति का एक ऐसा क्षेत्र पाता था जहाँ पर वह स्वयं कमज़ोर था और इसीलिए सिसेरो के प्रति उसके मन में स्पर्द्धा थी। और इसी चीज़ के बारे में वह सोचने लगा, उसके ख़याल इधर-उधर भटकने लगे।

—क्या तुम सो रहे हो?—सिसेरो ने धीरे से पूछा। पालकी के हिचकोले खुद उसके अन्दर भी नींद पैदा करते थे।

—नहीं, यों ही कुछ सोच रहा हूँ।

—राज्य संचालन के गंभीर प्रश्नों के बारे में?—सिसेरो ने हलके ढंग से

पूछा और अपने आपको मन ही मन आश्वस्त कर लिया कि यह बुड्ढा ठग किसी सीधे-सादे सेनेट सदस्य को नष्ट करने का कोई जाल रच रहा है।

—नहीं किसी बड़ी चीज़ के बारे में नहीं। केवल एक प्राचीन जनश्रुति के बारे में। बड़ी पुरानी कहानी है यह, कुछ कुछ बेवकूफ़ी से भरी हुई, जैसी कि पुरानी कहानियाँ हुआ करती हैं।

—मुझको बतलाइएगा?

—तुमको ख़ामख़ा ऊब मालूम होगी।

—यात्री को ऊब तो सिर्फ़ प्राकृतिक दृश्यों से मालूम होती है।

—जो भी हो, यह तो एक उपदेशात्मक कहानी है और उपदेशात्मक कहानी से ज्यादा थकानेवाली चीज़ दूसरी नहीं होती। सिसेरो, तुम्हारा क्या ख़याल है, आज हमारी ज़िन्दगी में उपदेशात्मक कहानियों की कोई जगह है?

—छोटे-छोटे बच्चों के लिए ऐसी कहानियाँ अच्छी पड़ती हैं। जो कहानी मुझे पसन्द थी उसका सम्बन्ध एक दूरदराज़ी रिश्तेदार से था। ग्राकी की माँ से।

—कोई सम्बन्ध नहीं।

—मैं तब छः साल का था। सात साल की उम्र में मैंने उसके बारे में सवाल किया।

—सात की उम्र में तुम इतने शैतान नहीं हो सकते थे, ग्रैकस मुस्कराया।

—मगर मैं था। मुझे जो चीज़ तुम्हारे अन्दर सबसे अच्छी मालूम होती है ग्रैकस, वह यह है कि तुमने अपने लिए उत्तम वंश-परम्परा जुटाने की परवाह नहीं की।

—वह मेरी भलमनसी नहीं मितव्ययिता थी।

—और वह कहानी?

—उसके लिए अब तुम बहुत बड़े हो गये हो।

—सुनाकर तो देखो, सिसेरो ने कहा, तुम्हारी कहानियों से मुझे कभी निराशा नहीं हुई।

—तब भी जब उनमें कुछ ख़ास तुक नहीं होती?

—ऐसा कभी नहीं होता कि तुम्हारी कहानियों में तुक न हो। उसकी तुक को समझ सकने की अक़्ल भर होनी चाहिए।

—तो फिर मैं अपनी कहानी कहता हूँ, ग्रैकस हँसा, यह एक ऐसी माँ की कहानी है जिसके सिर्फ़ एक बेटा था। वह लम्बा था और ख़ूबसूरत था और उसका एक-एक अंग साँचे में ढला हुआ था। और वह अपने बेटे को उतना ही प्यार करती थी जितना कि कोई माँ अपने बेटे को प्यार करती है।

—मेरा ख़याल है कि खुद मेरी माँ मुझको अपनी महत्वाकांक्षाओं के रास्ते में एक रुकावट समझती थी।

—आओ हम मान लें कि यह एक बहुत पुरानी कहानी है, जब कि लोगों में सद्गुण हुआ करते थे। यह माँ अपने बेटे को प्यार करती थी। उसकी ज़िन्दगी का सूरज उसी में उगता था और उसी में डूब जाता था। फिर उसे किसी से प्रेम हो गया। वह एक ऐसी औरत को अपना दिल दे बैठा जो कि उतनी ही बदमाश थी जितनी कि वह खूबसूरत थी। और चूँकि वह बहुत ही बदमाश थी इसलिए मानी हुई बात है कि वह बहुत ही खूबसूरत थी। बहरहाल, जहाँ तक इस लड़के की बात थी, इसकी तरफ़ वह नज़र उठा कर भी नहीं देखती थी, उसके लिए उस औरत की निगाहों में किसी तरह का हल्का-सा इशारा भी मुहब्बत का नहीं था। ज़रा भी नहीं।

—मैं ऐसी औरतों से मिला हूँ।—सिसेरो ने अपनी सहमति व्यक्त की।

—इस तरह वह लड़का उस औरत के लिए जान देने लगा, घुलने लगा। उसको जब मौक़ा मिला तो उसने उस औरत को बतलाया कि उसके लिए वह क्या-क्या करेगा, कैसे-कैसे क़िले बनवायेगा, कैसे-कैसे हीरे-जवाहरात इकट्ठा करेगा। यह बातें कुछ ठोस न थीं, कुछ हवाई-सी थीं और इसलिए उस औरत ने कहा कि उसको उन चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं है। उनके बदले उसने लड़के से एक ऐसा उपहार मांगा जिसको देना पूरी तरह उसके बस में था।

—सादा-सा उपहार?—सिसेरो ने पूछा।

ग्रैकस को कहानी कहने में बड़ा लुत्फ़ आता था। उसने उस सवाल पर ग़ौर किया और सिर हिलाया—बहुत ही सादा-सा उपहार। उस औरत ने नौजवान से कहा कि वह अपनी माँ का दिल उसको लाकर दे। और उसने लाकर दिया। उसने एक चाक़ू लिया और उससे अपनी मां की छाती चीर-कर उसका दिल निकाल लिया। और फिर उसने जो कुछ किया था उससे डरकर और घबराकर वह जंगल के बीच होकर उस जगह की ओर भागा जहाँ पर यह बदमाश मगर खूबसूरत जवान औरत रहती थी। और जब वह दौड़ रहा था तब उसका अँगूठा एक पेड़ की जड़ में फंस गया और वह गिर पड़ा और वह गिरा तो उसकी माँ का दिल उसके हाथ से छिटककर दूर जा पड़ा। वह उस अनमोल दिल को उठाने के लिए दौड़ा, जिसके बदले में उसे एक औरत की मुहब्बत मिल जायेगी, और जब वह उसको उठाने के लिए झुका तो उसने अपनी मां के दिल को कहते सुना—मेरे बेटे, मेरे बेटे, तुम्हें गिरने से चोट तो नहीं आयी?—ग्रैकस अपनी पालकी में लेट गया और अपने दोनों

हाथों की उंगलियों के छोरों को मिला लिया और किसी सोच में डूबे-डूबे उनको देखने लगा।

—फिर?—सिसेरो ने पूछा।

—बस इतनी ही तो कहानी है। मैंने तुमसे कहा था न कि यह एक उपदेशात्मक कहानी है जिसमें कोई तुक नहीं।

—क्षमा! यह रोमन कहानी नहीं है। हम रोमनों के अन्दर क्षमा का गुण नहीं है। कुछ भी हो, यह ग्राकी की माँ नहीं हो सकती।

—क्षमा नहीं, प्रेम।

—आह!

—तुमको प्रेम में आस्था नहीं है?

—जो सभी चीज़ों के ऊपर हो? हरगिज़ नहीं। और यह रोमन गुण भी नहीं है।

—हे भगवान्, तुम कैसे हो सिसेरो? क्या तुम दुनिया की हर चीज़ को रोमन और अ-रोमन की श्रेणियों में बाँट सकते हो?

—ज़्यादातर चीज़ों को, सिसेरो ने आत्मतुष्ट ढंग से कहा।

—और तुम उसमें विश्वास करते हो?

—सच पूछो तो मैं नहीं करता, सिसेरो हँसा।

ग्रैकस सोचने लगा, बड़ा बदमज़ाक़ आदमी है। यह हँसता इसलिए है कि वह समझता है कि किन्हीं ख़ास मौक़ों पर हँसना चाहिए। और उसने प्रकट कहा—मैं तुमको यह सलाह देनेवाला था कि तुम राजनीति छोड़ दो।

—सच?

—गो कि मैं समझता हूँ कि मेरी सलाह का तुम्हारे ऊपर कोई असर न होगा।

—मगर तब भी तुम्हारा यह ख़याल ज़रूर है कि मैं राजनीति के क्षेत्र में कभी सफल न होऊँगा? क्यों यही बात है न?

—नहीं, यह तो मैं न कहूँगा। तुमने कभी राजनीति के विषय में सोचा है, यह चीज़ क्या है?

—उसके अन्दर बहुत सी चीज़ें हैं। जहाँ तक मेरा ख़याल है वह बहुत-सी चीज़ों का एक सामूहिक नाम है और उनमें से कोई भी चीज़ बहुत साफ़ नहीं है।

—वह चीज़ उतनी ही साफ़ या गन्दी है जितनी कि कोई और चीज़। मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी राजनीतिज्ञ बनने में गुज़ारी है—ग्रैकस ने कहा, मगर वह सोच रहा था, यह आदमी मुझको पसन्द नहीं करता। मैं उस पर चोट करता हूँ, वह मुझ पर चोट करता है। मुझको यह स्वीकार करने में इतनी कठिनाई क्यों होती है कि कोई व्यक्ति मुझको पसन्द नहीं करता?

सिसेरो ने उस मोटे आदमी से कहा—मैंने सुना है कि तुम्हारी सबसे बड़ी सिफ़त यह है कि तुमको नाम बहुत याद रहते हैं। क्या यह बात सच है कि तुमको एक लाख लोगों के नाम याद हैं?

—राजनीति के बारे में यह दूसरा भ्रम है। मैं कुछ थोड़े से लोगों का नाम जानता हूँ। एक लाख लोगों का नहीं।

—मैंने सुना है कि हैनिबल को अपनी सेना के एक-एक आदमी का नाम याद रहता था।

—हाँ। कुछ वक़्त गुज़रने दो और हम स्पार्टकस के बारे में यही बात कहने लग जायँगे, कि उसकी भी स्मरण शक्ति ऐसी ही थी। हम इस बात को स्वीकार नहीं कर पाते कि कोई आदमी अगर जीतता है तो इसलिए कि वह हमसे बेहतर है। तुमको इतिहास के ये बड़े-बड़े और छोटे-छोटे झूठ क्यों इतने पसन्द हैं?

—क्या वे सब झूठ हैं?

ग्रैकस ने अपनी भारी आवाज़ में कहा—ज़्यादातर। इतिहास धूर्तता और लोभ की सफ़ाई देने की कोशिश का नाम है। मगर यह सफ़ाई कभी ईमानदार नहीं होती। इसीलिए मैंने तुमसे राजनीति के विषय में पूछा। किसी ने यहाँ विला सलारिया में यह बात कही थी कि स्पार्टकस की सेना में कोई राजनीति न थी। मगर ऐसा हो नहीं सकता।

सिसेरो मुस्कराया और बोला—तुम राजनीतिज्ञ हो इसलिए मुझे बतलाओ न कि राजनीतिज्ञ क्या होता है?

—चालबाज़, ग्रैकस ने संक्षेप में उत्तर दिया।

—तुम और कुछ हो न हो, स्पष्टवादी ज़रूर हो।

—मुझमें यही एक गुण है और यह एक बहुत मूल्यवान् गुण है। राजनीतिज्ञ के अन्दर इस चीज़ को देखकर लोग अक्सर इसको ईमानदारी समझने की भूल किया करते हैं। देखो हम लोग एक गणतन्त्र में रहते हैं। इसका मतलब है कि बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके पास कुछ भी नहीं है और मुठ्ठी भर लोग ऐसे हैं जिनके पास बहुत कुछ है। और जिनके पास बहुत कुछ है उनकी रक्षा, उनका बचाव उन्हीं को करना है जिनके पास कुछ भी नहीं। इतना ही नहीं बल्कि वे लोग जिनके पास बहुत कुछ है उनको अपनी सम्पत्ति की रक्षा करनी होती है और इसलिए वे जिनके पास कुछ भी नहीं है, उनको तुम्हारे और मेरे और हमारे अच्छे मेज़बान ऐण्टोनियस की सम्पत्ति के लिए जान देने को तैयार रहना चाहिए। इसके साथ-ही-साथ यह भी है कि हमारी तरह के लोगों के पास बहुत से गुलाम होते हैं। ये गुलाम हमको पसन्द नहीं करते। हमको इस भ्रम का शिकार न होना चाहिए कि

गुलाम अपने मालिकों को पसन्द करते हैं। वे नहीं करते और इसलिए गुलाम हमारी रक्षा गुलामों से नहीं कर सकते। इसलिए बहुत से लोग जिनके पास गुलाम नहीं हैं, उनको हमारे लिए जान देने को तैयार रहना चाहिए ताकि हम अपने गुलाम रख सकें। रोम के पास ढाई लाख सैनिक हैं। इन सैनिकों को विदेशों में जाने के लिए तैयार रहना चाहिए, इसके लिए तैयार रहना चाहिए कि मार्च करते-करते उनके पैर घिस जायँ, कि वे गन्दगी में और ग़लाज़त में रहें, कि वे खून में लोट लगायें—ताकि हम सुरक्षित रहें और आराम से ज़िन्दगी बितायें और अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति को बढ़ायें। जब ये सैनिक स्पार्टकस से लड़ने के लिए गये तो इनके पास ऐसी कोई चीज़ न थी जिसकी कि वे रक्षा करते जैसी कि गुलामों के पास थी। आख़िर क्या चीज़ उनके पास थी जिसकी रक्षा करने के लिए वे स्पार्टकस से लड़ने गये थे? मगर तब भी गुलामों से लड़ते हुए वे हज़ारों की संख्या में मारे गये। हम इसके आगे भी जा सकते हैं। वे किसान जो गुलामों से लड़ते हुए मारे गये, सेना में उनके होने का सबसे पहला कारण यह है कि जागीरदारों ने उनको उनके खेतों से खदेड़ दिया है। गुलामों को लेकर जो बड़ी-बड़ी जागीरें चलती थीं जिनमें बड़े पैमाने पर खेती होती थी उन्होंने उन किसानों को एकदम भिखमंगा बना दिया है, ऐसा भिखमंगा जिसके पास ज़मीन का एक टुकड़ा भी नहीं; और फिर मज़ा यह है कि इन्हीं जागीरों की हिफ़ाज़त के लिए वे किसान जान देते हैं। इसको देखकर कहने का जी होता है कि वाह, यह तो हद हो गयी! क्योंकि मेरे प्यारे दोस्त सिसेरो, ज़रा सोचो कि अगर गुलाम विजयी होते हैं तो इससे हमारे बहादुर रोमन सैनिक का क्या नुक़सान होता है? सच बात तो यह है कि उन गुलामों को हमारे इस रोमन सैनिक की बड़ी सख़्त ज़रूरत होगी क्योंकि ज़मीन की जुताई के लिए गुलाम खुद काफ़ी न होंगे। ज़मीन इतनी काफ़ी होगी कि सबको पूरी पड़ जाय और तब हमारे इस रोमन सैनिक के पास वह चीज़ होगी जिसका सपना वह सबसे ज़्यादा देखा करता है, ज़मीन का उसका अपना टुकड़ा और उसका निज का छोटा सा मकान। मगर तब भी वह अपने ही सपनों को नष्ट करने के लिए लड़ने के लिए चला जाता है। किसलिए? इसीलिए कि सोलह गुलाम मेरे जैसे एक मोटे थुलथुल बुड्ढे खूसट को गद्देदार पालकी में बिठालकर ढोते फिरें! क्या तुम कह सकते हो कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ झूठ कह रहा हूँ?

—मेरा ख़याल है कि जो कुछ तुम कह रहे हो अगर वह किसी साधारण आदमी ने बीच चौक में खड़े होकर कहा होता तो हमने उसे सलीब पर चढ़ा दिया होता।

—सिसेरो सिसेरो, ग्रैकस हँसा, मैं क्या इसे अपने लिए धमकी समझूँ? मैं

बहुत मोटा और भारी और बुड्ढा हूँ, मुझे सलीब पर चढ़ाना मुमकिन न होगा। और फिर यह तो बताओ कि सच बात को सुनकर तुम इतना घबरा क्यों जाते हो ? दूसरों से झूठ बोलना ज़रूरी है मगर क्या यह भी ज़रूरी है कि हम खुद अपने ही झूठ पर विश्वास करें ?

—यह तुम्हारा ख़याल है। मगर तुम इस बुनियादी सवाल को छोड़ जाते हो—क्या कोई आदमी किसी दूसरे आदमी जैसा ही होता है या उससे भिन्न होता है ? तुम्हारी इस छोटी सी वक्तृता में यही असंगति है। तुम पहले से यह मानकर चलते हो कि सब आदमी बिलकुल एक-से होते हैं। मैं इस बात को नहीं मानता। मैं मानता हूँ कि श्रेष्ठ लोगों का अपना एक वर्ग होता है, ऐसे लोग जो दूसरों से ऊँचे होते हैं। बहस की चीज़ यह नहीं है कि उनको ईश्वर ने ऐसा बनाया या परिस्थितियों ने। मगर इतना है कि उन लोगो में शासन करने की योग्यता होती है। और चूँकि उनमें शासन करने की योग्यता होती है इसीलिए वे शासन करते हैं। और चूँकि बाकी लोग भेड़-बकरियों के समान होते हैं इसलिए उनका आचरण भी भेड़-बकरियों के समान होता है। देखो न तुम एक सूत्र पेश करते हो ; असल मुश्किल तो उसकी व्याख्या करने में होती है। तुम समाज की एक तसवीर पेश करते हो, लेकिन अगर सच्चाई भी तुम्हारी तसवीर ही की तरह असंगत होती, तो समूचा ढाँचा एक ही दिन में भहरा पड़ा होता। तुम क्यों यह नहीं बतला पाते कि वह कौन-सी चीज़ है जो इस असंगत पहेली को समेटकर रक्खे हुए है और गिरने नहीं देती।

ग्रैकस ने सिर हिलाया और कहा—उसको समेटकर रखनेवाला, उसको न गिरने देनेवाला मैं हूँ।

—तुम ? अकेले तुम ?

—सिसेरो, क्या तुम सचमुच मुझे गधा समझते हो ? मैंने बहुत लम्बी और ख़तरों से भरी हुई ज़िन्दगी गुज़ारी है और मैं अब भी चोटी पर हूँ। तुमने थोड़ी देर पहले मुझसे पूछा था कि राजनीतिज्ञ क्या होता है ? राजनीतिज्ञ ही इस उलटे-सीधे मकान को खड़ा रखनेवाला सीमेण्ट है। उच्च वंशों वाले स्वयं इस काम को नहीं कर सकते। पहली बात तो यह कि उनका सोचने का ढंग तुम्हारे जैसा है और रोम के नागरिकों को यह बात पसन्द नहीं है कि कोई उनको भेड़-बकरी कहे। भेड़-बकरी वे नहीं हैं—जैसा कि एक न एक दिन तुम्हारी समझ में आयेगा। दूसरी बात यह कि इस उच्चवंशीय व्यक्ति को इस साधारण नागरिक के बारे में कुछ भी नहीं मालूम। अगर यह चीज़ बिलकुल उसी पर छोड़ दी जाय तो यह ढाँचा एक दिन में भहरा पड़े। इसीलिए वह मेरे जैसे लोगों के पास आता है। वह हमारे बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता

जो चीज़ नितान्त असंगत है हम उसके अन्दर संगति पैदा करते हैं। हम लोगों को यह बात समझा देते हैं कि जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता अमीरों के लिए मरने में है। हम अमीरों को समझा देते हैं कि उन्हें अपनी दौलत का कुछ हिस्सा छोड़ देना चाहिए ताकि बाक़ी को वे अपने पास रख सकें। हम जादूगर हैं। हम भ्रम की चादर फैला देते हैं और वह ऐसा भ्रम होता है जिससे कोई बच नहीं सकता। हम लोगों से कहते हैं, जनता से कहते हैं—तुम्हीं शक्ति हो। तुम्हारा वोट ही रोम की शक्ति और कीर्ति का स्रोत है। सारे संसार में केवल तुम्हीं स्वतन्त्र हो। तुम्हारी स्वतन्त्रता से बढ़कर मूल्यवान् कोई भी चीज़ नहीं है, तुम्हारी सभ्यता से अधिक प्रशंसनीय कुछ भी नहीं है। और तुम्हीं उसका नियन्त्रण करते हो; तुम्हीं शक्ति हो, तुम्हीं सत्ता हो। और तब वे हमारे उम्मीदवारों के लिए वोट दे देते हैं। वे हमारी हार पर आँसू बहाते हैं, हमारी जीत पर खुशी से हँसते हैं। और अपने ऊपर गर्व अनुभव करते हैं और अपने को दूसरों से बढ़ा-चढ़ा समझते हैं क्योंकि वे गुलाम नहीं हैं। चाहे उनकी हालत कितनी ही नीचे गिरी हुई क्यों न हो, चाहे वे नालियों में ही क्यों न सोते हों, चाहे वे तलवार के खेल और घुड़दौड़ के मैदानों में सारे-सारे दिन लकड़ी की सस्ती-सस्ती सीटों पर ही क्यों न बैठे रहते हों, चाहे वे अपने बच्चों के पैदा होते ही उनका गला क्यों न घोंट देते हों, चाहे उनकी बसर खैरात पर ही क्यों न होती हो और चाहे अपनी पैदाइश से लेकर मरने तक उन्होंने एक रोज़ काम करने के लिए हाथ न उठाया हो, यह सब चाहे जो हो मगर इतना इत्मीनान क्या कम है कि वे गुलाम नहीं हैं! वे धूल हैं मगर हर बार जब वे किसी गुलाम को देखते हैं तो उनका अहम् जागता है और वे अपने आपको गर्व से और शक्ति से भरा हुआ महसूस करते हैं। उस वक़्त उनकी समझ में बस यही आता है कि वे रोम के नागरिक हैं और सारी दुनिया के लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं। और, सिसेरो, यही मेरी विशेष कला है। राजनीति को कभी तुच्छ न समझना।

२

इस सबसे ग्रैकस सिसेरो का प्रीति-भाजन नहीं बना और जब वे लोग आख़िरकार उस पहले बड़े सलीब के पास आये जो रोम की दीवारों के बाहर कुछ ही मील पर खड़ा किया गया था, तो सिसेरो ने उस मोटे आदमी की तरफ़ इशारा किया जो अपने शामियाने के अन्दर बैठा हुआ ऊँघ रहा था और ग्रैकस से बोला—स्पष्ट है कि यह आदमी देखने में और अपने संस्कारों से राजनीतिज्ञ है।

—यह तो स्पष्ट ही है। सच तो यह है कि यह आदमी मेरा एक पुराना

दोस्त है।—ग्रैकस ने पालकियों को रोकने का इशारा किया और बड़ी मुश्किल से अपनी पालकी में से बाहर निकला। सिसेरो ने भी ऐसा ही किया। उसे खुशी हो रही थी कि टाँग सीधी करने का मौक़ा मिला। झुटपुटा हो रहा था और पानी से लदे हुए काले-काले बादल उत्तर की ओर से इधर बढ़े चले आ रहे थे। सिसेरो ने उनकी तरफ़ इशारा किया।

—अगर तुम चाहो तो चले जाओ, रुको मत, ग्रैकस ने कहा। अब सिसेरो को खुश करने की कोई इच्छा उसके मन में न थी। उसके स्नायु टूटने के बिन्दु पर पहुँच चुके थे। विला सलारिया में जो दिन उसने गुज़ारे थे उन्होंने उसके मुँह का स्वाद बिगाड़ दिया था। वह सोचने लगा कि यह चीज़ क्या है? वह क्या अब बुड्ढा होने लगा है और अपने आपको बेसहारा समझने लगा है?

—मैं रुकूँगा, सिसेरो ने कहा और अपनी पालकी की बग़ल में खड़ा हो गया और ग्रैकस को शामियाने के नीचे खड़े उस आदमी की तरफ़ जाते हुए देखने लगा। ज़ाहिर था कि वे दोनों एक दूसरे को जानते थे। मुहल्लों की राजनीति में, और स्वयं राजनीतिज्ञों के बीच यह सचमुच एक विलक्षण-सा जनतन्त्र था। यह अपने आप में एक दुनिया थी।

—आज रात, सिसेरो ने ग्रैकस को कहते सुना। शामियाने के नीचे खड़े उस आदमी ने अपना सिर हिलाया।

—सेक्सटस!—ग्रैकस ज़ोर से चिल्लाया—मैंने तुम्हारे सामने अपनी बात रख दी। मैं सेक्स्टस की ख़ाक-धूल परवाह नहीं करता! तुम या तो मेरे कहने के मुताबिक काम करोगे या फिर मैं न तो कभी तुमसे बोलूँगा और न तुमको देखूँगा, जब तक कि मैं ज़िन्दा हूँ—या जब तक कि तुम ज़िंदा हो, जो कि बहुत दिन नहीं चलेगा, जिस तरह तुम उस सड़ते हुए गोश्त के नीचे बैठे हो।

—मुझे अफ़सोस है, ग्रैकस।

—मैं यह नहीं सुनना चाहता कि तुम्हें अफ़सोस है। मैं जैसा कहता हूँ वैसा करो।

ग्रैकस बड़ी शान से अपनी पालकी के पास आ गया और उसके अन्दर बैठ गया। अभी जो कुछ हुआ था सिसेरो ने उसके बारे में कोई सवाल नहीं किया, मगर जब वे लोग नगर के सिंहद्वार के पास पहुँचने लगे तो उसने ग्रैकस को उस कहानी की याद दिलायी जो उसने उसी दिन पहले उसको सुनायी थी, उस माँ की कहानी जो अपने बेटे को ज़रूरत से ज़्यादा प्यार करती थी।

—वह कहानी बड़ी दिलचस्प थी मगर मुझको लगता है कि तुमने उसका सूत्र कहीं बीच ही में खो दिया।

—सचमुच क्या मैंने ऐसा ही किया है ? तुम्हें इस बात पर विश्वास है ? क्या तुमने कभी प्रेम किया है सिसेरो ?

—वैसे नहीं जैसे कि कवि लोग अपनी कविताओं में गाया करते हैं। मगर वह कहानी—

—कहानी ! देखो बात यह है कि मुझे याद ही नहीं आ रहा है कि मैंने यह कहानी क्यों कही। मैं सोचता हूँ कि उस कहानी को कहने में मेरा ज़रूर कोई उद्देश्य रहा होगा मगर मैं उसे भूल गया हूँ।

नगर के भीतर पहुँचकर वे दोनों अलग हो गये और ग्रैकस अपने घर चला गया। वह जब घर पहुँचा तब साँझ हो रही थी और उसने चिराग़ की रोशनी में स्नान किया। उसके बाद उसने अपने घर की देख-रेख करनेवाली से कहा कि वह कुछ रुक कर खाना खायेगा क्योंकि वह एक मेहमान के आने का इन्तज़ार कर रहा है। उस औरत ने बात को समझकर सिर हिलाया और फिर ग्रैकस अपने सोने के कमरे में चला गया और किसी विचार में डूबे-डूबे अँधेरे में आँख खोल कर बिस्तर पर पड़ा रहा। वह जब वहाँ पर लेटा हुआ था तब मौत ने हलके से उसकी पसली में अपनी उँगली गड़ायी। अँधेरे के बारे में एक पुरानी लैटिन कहावत थी, मौत के लिए जगह बनाओ। यानी कि अगर आदमी किसी ऐसी औरत के साथ न लेटा हो जिसे कि वह प्यार करता हो। मगर ग्रैकस ने कभी ऐसा न किया था। वह कभी ऐसी औरत के साथ न लेटा था जिसे वह प्यार करता हो। वह बदमाश बुड्ढा ग्रैकस अपने लिए बाज़ार से औरतें ख़रीद लेता था। कब ऐसा हुआ था कि कोई औरत अपनी मर्ज़ी से और खुशी-खुशी उसके पास आयी हो ? जिन औरतों को वह खेलों की तरह ख़रीदता था, उनके ऊपर एक अधिकार-भावना अनुभव करने के लिए वह अपने आपको विवश करता था; मगर यह चीज़ कभी उसे हासिल न हो पाती थी।

अब उसे ओडिसी के उस हिस्से का ख़याल आया जिसमें ओडिसियस झूठे प्रेमियों की हत्या करके अपना प्रतिशोध लेता है। ग्रैकस को बचपन में कोई यूनानी शिक्षक न मिला था जिसने उन महाकाव्यों का एक-एक पृष्ठ उसको अच्छी तरह से समझाया हो। वह स्वयं ही उनके पास पहुँचा था, स्वयं ही उनको पढ़ा था, उसी तरह जैसे एक स्वयं शिक्षित व्यक्ति ऐसी चीज़ों को पढ़ता है। लिहाज़ा ओडीसियस को अपने प्रेमियों के संग सोनेवाली उन गुलाम औरतों से जो हिंस्र, प्रायः अमानुषीय घृणा थी, वह चीज़ उसको हमेशा एक पहेली मालूम होती थी। उसने याद किया कि कैसे ओडीसियस ने उन बारह औरतों को मजबूर किया था कि वे अपने प्रेमियों की लाशों को उठाकर बाहर आँगन में लायें और खाने के हॉल के फ़र्श पर जमे हुए खून को

साफ़ करें। उसके बाद उसने उनको मौत की सज़ा दी और अपने लड़के को आदेश दिया कि सज़ा को अमल में लाये। बेटा बाप से भी आगे बढ़ जाता है। यह तेलीमाकस ही था जिसने एक ही रस्सी पर बारह फन्दों की बात सोची थी, जिनमें वो औरतें उसी तरह लटकायी गयी थीं जिस तरह पंख नुची हुई मुर्गियाँ लटकायी जाती हैं।

ग्रैकस सोचने लगा कि आख़िर इस घृणा का रहस्य क्या है? ऐसी वहशियाना भयानक नफ़रत क्यों? जब तक कि यह बात न हो—और यह ख़याल उसको अक्सर आया करता था—कि ओडिसियस अपने यहाँ की हर गुलाम औरत के संग सोता रहा हो। इस तरह उस घर में पचास गुलाम औरतें थीं यानी कि इथाका के उस सदाचारी व्यक्ति के लिए पचास रखैलें थीं। और वह बेचारी धैर्यवती पेनेलोपिया इसी चीज़ का इन्तज़ार कर रही थी! उसे किस चीज़ का इन्तज़ार था और क्या उसको मिला!

मगर ग्रैकस भी तो यही करता था। वह इतना सभ्य ज़रूर था कि दूसरे किसी के संग सोनेवाली अपनी गुलाम औरत की जान न ले सकता था, शायद उसे इसकी इतनी फ़िक्र भी न होती हो, मगर मूलतः स्त्रियों के संग उसका सम्बन्ध ऐसा ही था, कुछ विशेष भिन्न नहीं। अपनी पूरी लम्बी ज़िन्दगी में उसने इस चीज़ को लेकर कभी सिर न खपाया था कि औरत क्या होती है। वह सिसेरो से डींग हाँका करता था कि सच्चाई को सच्चाई कहकर स्वीकार करने में उसे डर नहीं मालूम होता—मगर जिस दुनिया में वह रहता था उसमें औरतों के बारे में जो सच्चाई जो सत्य उसके सामने आता था उसका सामना करने में उसे डर मालूम होता था। और अब, बड़े इन्तज़ार के बाद उसे एक औरत मिली थी जो कि मानवता के धरातल से नीचे गिरी हुई न थी। मगर मुश्किल यह थी कि अभी उसको पाना बाक़ी था।

एक गुलाम ने दरवाज़े पर दस्तक दी और जब उसने भीतर से जवाब दिया तो गुलाम ने उसको बतलाया कि जिन मेहमान को उसने खाने पर बुलाया था वे आ गये हैं।

—मैं अभी आता हूँ उन्हें आराम से बिठालो। वह गन्दे हैं और फटे-पुराने कपड़े पहने हैं लेकिन अगर उनको देखकर कोई मुँह बिचकायेगा या नाक-भौं सिकोड़ेगा तो मैं उसको कोड़े लगवाऊँगा। उनको मुँह-हाथ धोने के लिए गरम पानी दो और उसके बाद पहनने के लिए एक हल्का सा चोग़ा दो। उनका नाम फ्लैवियस मार्कस है। उनको नाम लेकर सम्बोधित करो मगर सौजन्य के साथ, शिष्टतापूर्वक।

आदेश के अनुसार ही काम हुआ क्योंकि जब ग्रैकस खाने के कमरे में आया तो उसने देखा कि वह मोटा आदमी जो पहले सलीब के पास

शामियाने के नीचे बैठा हुआ था वह एक गद्देदार कुर्सी पर लेटा हुआ है, काफ़ी साफ़-सुथरा और देखने में सम्भ्रान्त, सिवाय इसके कि उसकी हजामत बढ़ी हुई थी। जब ग्रैकस कमरे में दाख़िल हुआ तो उसने कुछ परेशानी-सी महसूस करते हुए अपनी दाढ़ी घिसी और कहा—अगर तुम इन चीज़ों के साथ एक हजामत का भी इन्तज़ाम कर सकते!

—मैं भूखा हूँ, फ्लैवियस, और मेरा ख़्याल है कि अब हम लोगों को खाना खाना चाहिए। तुम रात यहीं पर गुज़ार सकते हो और मैं अपने हज्जाम से कह दूँगा कि वह सबेरे तुम्हारी दाढ़ी बना दे। रात भर के आराम और स्नान के बाद वह चीज़ अच्छी रहेगी। मैं तुम्हें एक साफ़ कुर्ता और ढंग के जूते भी दे दूँगा। हम दोनों का शरीर एक-सा ही है इसलिए मेरे कपड़े तुम्हें अच्छी तरह आ जायँगे।

उन दोनों का शरीर सचमुच बहुत कुछ एक-सा ही था : उनको देखकर कोई उनको भाई-भाई समझने की भूल कर सकता था।

—यानी कि अगर तुम्हें इस बात का डर न हो कि सेक्स्टस तुम्हें डाँटेगा कि क्यों तुमने अपनी यह घटिया नौकरी छोड़ दी जिसमें तुमको कुछ काम नहीं करना पड़ता और इस नौकरी को छोड़कर तुमने क्यों मेरे हाथ से कोई टुकड़ा लिया।

—हाँ, बात करना बहुत आसान है, फ्लैवियस ने कहा। उसके स्वर में एक ख़ास तरह की गिड़गिड़ाहट थी, ज़िन्दगी तुम पर मेहरबान रही है ग्रैकस। धन-दौलत, आराम, इज़्ज़त, ओहदा, ताक़त। ज़िन्दगी तुम्हारे लिए दूध-भात का कटोरा है मगर मैं कभी इतना खुश-किस्मत नहीं रहा इसका मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ। मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि जब कोई आदमी एक सड़ती हुई लाश के नीचे बैठकर झूठ गढ़-गढ़कर लोगों को सुनाता है ताकि वे उसको थोड़े-से पैसे दे दें, तब उसको बहुत अच्छा नहीं मालूम होता और न वह अपने ऊपर गर्व ही अनुभव करता है। भिखमंगा होना बड़ी ही कड़वी, बड़ी ही ख़राब चीज़ है। मगर हाँ इतना जरूर है कि उस वक़्त जब मेरा दूसरा कोई सहारा न रह गया था तब सेक्स्टस ने मेरी थोड़ी-बहुत मदद की थी। अब जब मैं फिर उसके पास जाऊँगा तो वह कहेगा—अब तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं। अपने उस मेहरबान और दोस्त ग्रैकस के पास क्यों नहीं जाते! मैं जानता हूँ कि वह यही कहेगा। वह तुमसे नफ़रत करता है। वह मुझसे भी नफ़रत करेगा।

ग्रैकस ने कहा—करने दो उसे नफ़रत, तुम्हारा क्या बिगड़ता है। सेक्स्टस तो मेंढक है, झींगुर है, म्युनिसपिल्टी का दरोग़ा है! उसे करने न दो नफ़रत। मैं जैसा तुमसे कहता हूँ वैसा करो और मैं तुम्हें यहाँ शहर में ही

कोई न कोई काम दिला दूँगा, क्लर्की, या दारोग़ागीरी या इसी तरह का कोई काम जहाँ तुम मज़े में ज़िन्दगी भी बसर कर सकते हो और थोड़ा-बहुत पैसा भी जमा कर सकते हो। तुम्हें सेक्स्टस के सामने पेट के बल रेंगते हुए जाने की, उसकी चिरौरी-बिनती करने की कोई ज़रूरत नहीं होगी।

—कभी मेरे भी बहुत से दोस्त थे, उस वक़्त जब कि मैं उनका काम कर दिया करता था। अब तो मैं चाहे नाली में ही पड़ा-पड़ा मर जाऊँ—

—तुम मेरे लिए उपयोगी हो, ग्रैकस ने बात काटते हुए कहा, और मैं चाहता हूँ कि हम अपने सम्बन्ध को इसी आधार पर क़ायम करें। अच्छा अब खाना खाओ और रिरियाना बन्द करो। मैं तो कहता हूँ तुम भी अजीब आदमी हो, खुशनसीबी तुम्हारे ऊपर जैसे चारों तरफ़ से हमला कर रही है मगर तुम हो कि तुम्हें उसका स्वागत करते डर लग रहा है। मेरी समझ में नहीं आता तुम्हें किस चीज़ का डर है।

खाने और शराब ने फ्लैवियस के मिज़ाज को नरम कर दिया। ग्रैकस के बावर्चीख़ाने में मिस्र की एक औरत काम करती थी। कबूतर के गोश्त की एक बड़ी नफ़ीस चीज़ वह पकाती थी, हड्डियाँ निकाल डालती थी और फिर उसके पेट में चिलगोज़े और बहुत ही बारीक जौ भर देती थी। यह एक ख़ास चीज़ थी जो वह पकाया करती थी। यह चीज़ धीमी आँच पर पकायी जाती थी और फिर ब्रैण्डी और अंजीर के शर्बत में लपेटकर पेश की जाती थी। उसके साथ ही भेड़ के बच्चे की ज़बान को भूनकर और चकोतरे के छिलके के संग मिलाकर बनाये गये छोटे-छोटे सॉसेज भी पेश किये जाते थे जिन्हें फोलो कहते थे। वह चीज़ शहर भर में मशहूर थी और वाजिब ही मशहूर थी। खाना खरबूजे के साथ शुरू हुआ और उसके बाद ये दोनों चीज़ें आयीं। उसके बाद क़ीमा किये हुए झींगे का शोरबा आया जिसमें लहसुन की बड़ी हल्की-सी बघार थी।उसके बाद अंगूरों और खजूरों से तैयार किया हुआ मीठा हलुआ आया जिस पर सुअर के भुने हुए गोश्त के काग़ज़ की तरह पतले-पतले टुकड़े रक्खे हुए थे। इसके बाद ठण्डी की हुई हैडक मछली के ऊपर सीख़ पर भुने हुए कुकुरमुत्ते पेश किये गये और सबसे बाद में, मीठी चीज़ के तौर पर एक तश्तरी में पिसी हुई बादाम और तिल की बनी हुई एक मिठाई लायी गयी। गर्म-गर्म सफ़ेद रोटियाँ और अच्छी सुर्ख़ शराब बराबर इसके संग संग चल रही थी और जब उनका खाना ख़तम हुआ तो फ्लैवियस अधलेटा-सा होकर पीछे को टिक गया। वह मुस्करा रहा था। उसे बहुत आराम मिल रहा था। उसकी भारी-सी तोंद धीरे-धीरे उठ-गिर रही थी और उसने कहा—ग्रैकस, पिछले पाँच बरसों में एक रोज़ मैंने ऐसा खाना नहीं खाया। अच्छा खाना दुनिया की सारी तकलीफों के लिए

सबसे अच्छा मरहम है। हे भगवान, कैसा खाना! और तुम रोज़ रात को यही खाना खाते हो। मानना होगा, ग्रैकस, कि तुम तेज़ आदमी हो और मैं एक बेवकूफ़ खूसट। यह कहना ठीक होगा कि तुमको इस चीज़ का हक़ है, और मुझे इस बात को लेकर बुरा मानने का कोई हक़ नहीं है। अब बताओ मुझसे क्या काम है, मैं सुनने को तैयार हूँ। मैं अब भी कुछ लोगों को जानता हूँ, कुछ गुंडों को, कुछ खूनियों को, कुछ थोड़े से रंडियों के दलालों को और दो-चार श्रीमतियों को। मैं नहीं जानता कि ऐसा कौन सा काम है जिसे तुम मुझसे ज़्यादा अच्छी तरह नहीं कर सकते या जिसके लिए तुम किसी दूसरे आदमी को नहीं पा सकते जो इस काम को मुझसे बेहतर करे, मगर वह ख़ैर तुम्हारी बात है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं तैयार हूँ।

ग्रैकस ने कहा—हम लोग पीते-पीते बात करेंगे। उसने दोनों आदमियों के लिए गिलास में शराब ढाली और कहा—फ्लैवियस, मैं समझता हूँ कि तुम्हारे अन्दर बड़ी-बड़ी सिफ़तें हैं। मैं ऐसे किसी और आदमी को भी पा सकता था जो रोम के ऐसे तमाम लोगों को जानता हो जो शरीरों और आत्माओं और पीड़ाओं का व्यापार करते हैं मगर मैं इस काम में किसी ऐसे आदमी को नहीं लेना चाहता जिसका मेरे ऊपर दबाव हो। मैं चाहता हूँ कि यह काम बड़ी ख़ामोशी से और अच्छी तरह पूरा किया जाय।

—मुझे मुँह बन्द रखना आता है, फ्लैवियस ने कहा।

—मैं जानता हूँ। इसी लिए मैं तुमको यह काम सौंप रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए एक औरत को ढूँढ़ दो। एक गुलाम औरत को। मैं चाहता हूँ कि तुम उसको तलाश कर लो और ख़रीद लो, इसकी चिन्ता न करो कि उसके लिए तुमको कितनी क़ीमत देनी पड़ती है। और जहाँ तक उसको तलाश करने में खर्च लगने की बात है उसकी भी परवाह तुम न करो, जितना खर्च लगेगा तुम्हें दिया जायगा।

—किस तरह की औरत? किसे नहीं मालूम कि बाज़ार में तमाम गुलाम औरतें मिल रही हैं। गुलाम युद्ध के अन्त के बाद तो जैसे बाज़ार उनसे पट गया है और उनमें जो सबसे असाधारण हैं उन्हीं के लिए लोग थोड़ी-बहुत क़ीमत देते हैं। मेरा ख़याल है मैं तुम्हारे लिए जैसी भी औरत तुम चाहो तलाश कर दे सकता हूँ—काली, गोरी, पीली, भूरी, अक्षतयोनिका या बहुत से पुरुषों के संग रमण करनेवाली, बुड्ढी या जवान, खूबसूरत या बदसूरत, बर्फ़ की तरह सफ़ेद ताज़ी जिल्द और नीली आँखें और सुनहरे बालोंवाली या मद्धिम रंग की, कजरारी आँखों और भौंरे की तरह काले बालोंवाली या लाल बालोंवाली, कहने का मतलब कि जिस भी तरह की औरत तुमको चाहिए मैं तुम्हें ला दे सकता हूँ। मगर तुमको चाहिए कैसी औरत?

—किसी तरह की नहीं, ग्रैकस ने धीरे से कहा, मैं एक ख़ास औरत को चाहता हूँ।

—गुलाम औरत है?

—हाँ।

—वह कौन है?

—उसका नाम वारिनिया है और वह स्पार्टकस की बीबी थी।

—ओ, फ्लैवियस ने ग्रैकस को तेज़ निगाहों से देखा, कुछ ऐसे कि जैसे उसकी आँखें कुछ खोज रही हों। फिर उसने अपनी ब्रैण्डी की एक चुसकी ली और फिर ग्रैकस की ओर देखा। उसने धीमे से पूछा—वह है कहाँ?

—मुझे नहीं मालूम।

—मगर तुम उसको जानते तो हो?

—जानता भी हूँ और नहीं भी जानता। मैंने उसको पहले कभी नहीं देखा।

—ओ—

—यह बार-बार 'ओ' कहना बन्द करो, जैसे न जाने कहाँ के बड़े ज्योतिषी आये हैं!

—मैं कोशिश करता हूँ कि कोई अक़ल की बात कहूँ।

ग्रैकस ने गुर्राकर कहा—मैं तुम्हें एक दलाल के रूप में लगा रहा हूँ, विदूषक के रूप में नहीं, जिसका काम लोगों का मनोरंजन करना है। तुम जानते हो कि मैं तुमसे क्या काम लेना चाहता हूँ।

—तुम मुझसे यही काम लेना चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए एक औरत को तलाश कर दूँ मगर तुमको यह नहीं मालूम कि वह कहाँ है और न आज तक तुमने उसको देखा ही है। तुमको कुछ पता है कि वह देखने-सुनने में कैसी है?

—हाँ। वह काफ़ी लम्बी है, उसका अच्छा पुष्ट मगर छरहरा शरीर है। उन्नत पुष्ट वक्ष हैं। वह जर्मन है, उसके बालों का रंग सूखी घास के रंग जैसा है जैसा कि तमाम जर्मनों के बालों का होता है और उसकी आँखें नीली हैं। उसके कान छोटे-छोटे हैं, माथा चौड़ा है, नाक सीधी है मगर छोटी नहीं है। गहरी-गहरी आँखें हैं और भरा-भरा सा मुँह है जिसका निचला होंठ शायद थोड़ा भारी कहा जा सकता है। वह शायद टूटी-फूटी लैटिन बोलेगी और यह भी मुमकिन है कि वह कहे कि मुझको लैटिन ज़बान एकदम नहीं आती। वह थ्रेसियनों की शैली में ग्रीक ज़्यादा अच्छी तरह बोलती है। पिछले दो महीनों में उसने एक बच्चे को जन्म दिया है मगर यह हो

सकता है कि बच्चा मर चुका हो। अगर बच्चा मर भी चुका होगा तब भी उसकी छाती में दूध होगा न?

—कोई ज़रूरी नहीं। उसकी उम्र कितनी है?

—इसका मुझे ठीक पता नहीं। कम-से-कम तेईस और शायद ज़्यादा से ज़्यादा सत्ताईस। मैं ठीक नहीं कह सकता।

—हो सकता है वह मर चुकी हो।

—वह भी एक सम्भावना है। अगर यह बात भी हो तब भी मैं चाहता हूँ कि तुम उसका पता लगाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात का सबूत मेरे पास लाओ कि वह मर गयी। मगर मेरा ख़याल है कि वह मरी नहीं है। वह ऐसी नहीं है कि अपने हाथ से अपनी जान ले और इस तरह की औरत को जल्दी मौत की सज़ा भी नहीं दी जा सकती।

—तुमको यह कैसे मालूम कि वह आत्महत्या नहीं करेगी?

—मैं जानता हूँ। मैं यह नहीं बतला सकता कि क्यों मगर मैं जानता हूँ।

फ्लैवियस ने कहा—स्पार्टकस के हारने के बाद ऐसा नहीं हुआ था क्या कि रोमन फ़ौजों ने दस हज़ार औरतों और बच्चों समेत उनके ख़ेमे पर कब्ज़ा कर लिया था?

—उसमें तो बाईस हज़ार औरतें और बच्चे थे। उनमें से बारह हज़ार तो बतौर लूट के माल सिपाहियों के पास पहुँच गये। वह तो एक ऐसा भयानक काण्ड हुआ कि मैंने इसके पहले ऐसी चीज़ कभी सुनी ही न थी मगर मैं जानता हूँ कि उसके पीछे क्रैसस था और उसने लूट के अपने हिस्से को सरकारी ख़ज़ाने को दे दिया ताकि मामला दबा दिया जाय। यह कोई बड़ी उदारता उसने नहीं दिखलायी थी क्योंकि उसका हिस्सा बहुत थोड़ा ही था। उसने यह बात ज़रूर की थी कि अपने लिए कोई गुलाम नहीं रक्खे। वह जानता था कि आगे चलकर बाज़ार का क्या हाल होनेवाला है।

—और क्या वारिनिया भी इन्हीं औरतों में थी?

—हो सकता है कि रही हो। यह भी हो सकता है कि न रही हो। वह उनके सरदार की बीबी थी। हो सकता है कि उसकी हिफ़ाज़त के लिए उन्होंने कुछ ख़ास कार्रवाइयाँ की हों।

—इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता। गुलामों में यह सब की बराबरी वाली बात ज़रा हद को पहुँची हुई है न।

ग्रैकस ने एक घूँट में अपना गिलास खाली कर दिया और अपनी छोटी-छोटी मोटी-मोटी उँगलियों से उस दूसरे व्यक्ति की ओर इशारा किया—तुम यह काम करना चाहते हो या नहीं चाहते? फ्लैवियस, तुम महज़ बात करके

इस मसले को हल नहीं कर सकते। इसके लिए डटकर काम करना होगा।

—मैं इस बात को समझता हूँ। और यह तो बताओ कि इस बात के लिए तुम मुझे वक़्त कितना दोगे?

—तीन हफ्ते।

—बस! फ्लैवियस ने हवा में हाथ फेंक दिये—इतना वक़्त तो कुछ भी नहीं। इतने वक़्त में भला क्या हो सकता है। हो सकता है कि वह रोम में न हो। मुझे अपने आदमी कापुआ भेजने होंगे, सिराक्यूज़ भेजने होंगे, सिसिली भेजने होंगे। शायद स्पेन और अफ्रीका को भी भेजने पड़ें। इन्साफ़ की बात करो।

—मैं ज़्यादा से ज़्यादा इन्साफ़ की बात कर रहा हूँ। अगर तुम्हें मेरी बात मंजूर नहीं तो छोड़ो, जाओ सेक्स्टस के पास और उसकी ख़ैरात लो!

—बहुत अच्छा ग्रैकस। इतने गुस्सा मत हो। मगर मान लो इस चीज़ के लिए मुझे बहुत-सी औरतें खरीदनी पड़ें तो? तुम तो जानते ही हो कि उस औरत का जो हुलिया तुमने मुझको दिया है वह तो न जाने कितनी औरतों पर लागू हो जाएगा।

—मैं जानता हूँ वह हुलिया बहुतों पर लागू हो जाता है। मगर मुझे इस हुलिया की औरत नहीं चाहिए, मुझे वारिनिया चाहिए।

—और अगर वह मुझे मिल जाती है तो उसके लिए मैं कितनी क़ीमत दूँ?

—मुँह माँगी। मैं उसको मान लूँगा।

—बहुत अच्छा! मैं तुम्हारी बात मान गया ग्रैकस। मुझे अपनी इस बढ़िया ब्राण्डी का एक गिलास और दो!—शराब गिलास में ढाली गयी। फ्लैवियस अपने कोच पर लम्बा होकर शराब की चुसकियाँ लेने लगा और उस आदमी को ग़ौर से देखने लगा जो उसे अपनी नौकरी में लगा रहा था।

—मेरे अन्दर भी कुछ योग्यता है, है न ग्रैकस?

—इसमें क्या शक।

—मगर तब भी मैं ग़रीब का ग़रीब हूँ, नाकाम का नाकाम। ग्रैकस, इस बात को खतम करने से पहले मैं तुमसे एक सवाल पूछूँ? अगर तुम जवाब न देना चाहो तो मत देना। मगर गुस्सा मत होना।

—पूछो।

—तुम्हें इसी औरत की क्या ज़रूरत है ग्रैकस?

—मैं गुस्सा नहीं हूँ। मगर मेरा खयाल है कि अब हम दोनों को सो जाना चाहिए। अब हम पहले की तरह जवान नहीं रहे।

३

मगर उस ज़माने में दुनिया न तो इतनी बड़ी थी और न इतनी उलझी हुई जितनी कि आज है और इसलिए निर्दिष्ट तीन हफ्ते से कम समय में ही फ्लैवियस ग्रैकस के मकान पर आ पहुँचा और उसने अपने काम की सफल परिणति की सूचना दी। लोग कहते हैं कि पैसा छूने में चिकना होता है और जिन लोगों के हाथ में जाता है उनके अन्दर वही पैसे की चिकनाई आ जाती है। अब फ्लैवियस पहले से भिन्न था। वह अच्छे कपड़े पहने था, उसकी हजामत साफ़ बनी हुई थी और उसका मन आत्मविश्वास से भरा हुआ था क्योंकि उसने एक मुश्किल काम को पूरा किया था। वह शराब का प्याला लेकर ग्रैकस के संग बैठा हुआ था और जो कुछ उसको मालूम था उसको लेकर खिलवाड़ कर रहा था और ग्रैकस किसी तरह अपनी अधीरता को वश में किये हुए था।

फ्लैवियस ने बतलाया—मैंने एक बहुत ही मुश्किल काम शुरू किया। एक पहेली ही समझो उसको। वह काम था उन अफ़सरों के पास पहुँचना जिन्होंने लूट में हिस्सा लिया था। अगर वारिनिया सुन्दर थी और उसका शरीर पुष्ट था तो मैंने सोचा कि ज़रूर पहली ही टोली में उसको चुन लिया गया होगा। मगर जब तुम इस बात पर ग़ौर करो कि गुलामों की लूट का सारा सवाल ही गैर क़ानूनी था और फिर यह कि उसमें पाँच-छः सौ अफसर फंसे हुए थे और उनमें से कोई भी कुछ बतलाने के लिए तैयार न था तो फिर तुम समझ ही सकते हो कि यह काम कोई आसान काम न था। मगर खैर क़िस्मत हमारे साथ थी। लोगों को बातें याद थीं। वारिनिया को प्रसव वेदना हो रही थी जब उन लोगों को ख़बर हुई कि गुलाम सेनायें हार गयीं और लोगों को उस औरत की याद थी जो किसी तरह अपने नवजात शिशु से अलग न हो रही थी। उनको यह नहीं मालूम था कि वह स्पार्टकस की बीबी थी और न यही कि उसका नाम वारिनिया था। तुमको यह बात समझनी चाहिए कि क्रैसस ने उस गुलाम शहर या खेमे या गाँव या चाहे जिस नाम से भी तुम उसको पुकारो उसके ख़िलाफ़, लड़ाई के ठीक बाद, घुड़सवारों का एक दस्ता भेजा था। घुड़सवारों के पीछे-पीछे पैदल सेना गयी थी। वहाँ पर जो गुलाम औरतें थीं और बच्चे थे—उनमें कुछ तेरह-चौदह साल के लड़के थे—वे कुछ ख़ास लड़ नहीं सके। वे भौंचक से रह गये। उन्होंने अभी-अभी सुना था कि गुलाम फ़ौज का ख़ातमा हो गया था। मगर तुम तो जानते ही हो कि लड़ाई के बाद सिपाही कैसे हो जाते हैं और यह भी ठीक ही है कि गुलामों से लड़ना कोई हँसी-खेल नहीं था। वे—

ग्रैकस ने बात काटते हुए कहा—हमारे सैनिकों की मनोदशा कैसी थी

इसका विस्तृत उल्लेख मुझको नहीं चाहिए। अच्छा हो कि तुम मुझको तथ्य की बातें बतलाओ।

—मैं तो सिर्फ़ परिस्थिति को बयान करने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरा कहने का मतलब यह है कि शुरू-शुरू में फ़िज़ूल की मार-काट बहुत हुई क्योंकि उस वक्त हमारे सिपाही ग़ुस्से से पागल हो रहे थे। वारिनिया ने थोड़ी ही देर पहले बच्चे को जन्म दिया था। गुलाम का बच्चा इन दिनों कुछ ऐसा क़ीमती तो नहीं कि उसको सोने से तौला जाय और उस औरत का सुराग़ मुझको एक सिपाही की कहानी से लगा। इस सिपाही ने बच्चे को टाँग पकड़कर उठा लिया और उसको इस तरह घुमाना शुरू किया कि उसका सर तम्बू के बाँस से टकराकर चूर-चूर हो सकता था। खुद क्रैसस ने इस चीज़ को रोक दिया। क्रैसस ने बच्चे को बचा लिया और खुद अपने हाथों से उस सिपाही को मारते-मारते अधमरा कर दिया। भला कौन कहेगा कि क्रैसस भी ऐसा कर सकता है?

—मुझको इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है कि क्रैसस से किस बात की उम्मीद की जा सकती है और किस बात की नहीं की जा सकती। तुम कैसे अजीब आदमी हो फ्लैवियस कि ख़ामखा बकबक बकबक किये जा रहे हो और काम की बात नहीं बतलाते। वारिनिया तुमको मिली या नहीं? अब मैं उसका मालिक हूँ या नहीं? तुमने उसको ख़रीदा?

—मैं उसको ख़रीद नहीं सका।

—क्यों?—ग्रैकस एकाएक जोर से गरजा और क्रोध के आवेश में यकबयक खड़ा हो गया, क्रोध जो कि उतना ही डरावना था जितना कि अनहोना। वह जब फ्लैवियस की ओर बढ़ा तो फ्लैवियस अपनी कुर्सी में बैठा-बैठा दुबक गया और ग्रैकस ने उसके कुर्ते का गला पकड़ा, उमेठा और ज़ोर से चीख़ा—क्यों? तुमने उसको क्यों नहीं ख़रीदा, गधा कहीं का! क्या वह मर गयी है? अगर तुमने इस काम में गड़बड़ की होगी तो मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि तुमको वापस उसी गंदी नाली में भेज दूँगा जहाँ से तुम आये हो और सारी ज़िन्दगी तुम वहीं पर पड़े सड़ोगे।

—वह मरी नहीं है—

—अच्छा, मगर तुम कितनी बकवास करते हो! जैसे एक बड़ा-सा थैला हो जिसमें हवा भर दी गयी हो, जिसमें से बस हवा ही निकल सकती है और काम की बात एक नहीं! तुमने उसको क्यों नहीं ख़रीदा? उसने फ्लैवियस का कुर्ता छोड़ दिया मगर वहीं पर खड़ा रहा, उसके सर पर सवार।

फ्लैवियस ने एकाएक और ज़ोर से कहा—ज़रा शान्त हो जाओ! तुमने मुझे यह काम सौंपा और मैंने उसे किया। हो सकता है कि मेरे पास तुम्हारे

इतने पैसे न हों ग्रैकस। यह भी हो सकता है कि मेरी माकूल जगह वापस उसी गंदी नाली में हो मगर इसका मतलब यह नहीं है कि तुमको मुझसे इस तरह पेश आना चाहिए। मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूँ। मेरी ज़िन्दगी जैसी कुछ है यों ही काफ़ी ख़राब है, उसको ख़राब बनाने की ज़रूरत नहीं है।

—मुझे अफ़सोस है।

—मैंने उसको इसलिए नहीं ख़रीदा कि वह बिक्री के लिए नहीं थी। बस इतनी-सी बात है।

—बहुत ज़्यादा दाम था?

—दाम की बात नहीं। उसका कोई दाम नहीं है। वह क्रैसस की है, उसी के घर में रहती है। और बिक्री के लिए नहीं है। तुम्हारा ख़याल है कि मैंने कोशिश नहीं की? क्रैसस कापुआ में था और उन्हीं दिनों मैंने उसके दलालों के संग इस मसले को उठाया। मगर नहीं, कुछ नहीं—कोई नतीजा नहीं निकला। वे इसके बारे में बात करने को भी तैयार न थे। जैसे ही हमारी बातचीत उस गुलाम औरत तक पहुँचती थी वैसे ही उनके मुँह एकदम बन्द हो जाते थे। उन्हें ऐसे किसी भी गुलाम के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। वे उसके दाम की बात करने को तैयार न थे। वे उस सम्बन्ध में किसी तरह की बात नहीं करना चाहते थे। मैंने उनको घूस भी दी मगर इससे भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, रत्ती भर नहीं। अगर मुझको हजामत बनानेवाले की ज़रूरत होती या बावर्चिन की ज़रूरत होती या घर की देखरेख करनेवाली की ज़रूरत होती तो उनका बन्दोबस्त किया जा सकता था। इतना ही नहीं वे सिरिया की एक ख़ूबसूरत स्त्री का भी सौदा करने के लिए तैयार थे जिसको क्रैसस ने पिछले साल ख़रीदा था और उसको मुझे देने के लिए तैयार थे। मेरे लिए वह इतना सब करने को तैयार थे मगर वारनिया के बारे में वे कुछ भी नहीं कर सकते थे।

—तब फिर तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि वह वारिनिया ही है और तुमने यह कैसे जाना कि वह उस जगह पर है?

—यह जानकारी मैंने क्रैसस के एक बहुत निजी गुलाम से ख़रीदी। अरे यह मत समझना कि क्रैसस का घर कोई बड़ा सुखी परिवार है। उसके एक बेटा है जो अपने बाप से बुरी तरह नफ़रत करता है और एक बीबी है जो उससे अलग रहती है और उसका बस चले तो अपने पति का गला काट दे और हर वक़्त वहाँ पर जैसी-जैसी साज़िशें चलती रहती हैं उनको देखकर तो दमिश्क़ की याद हो आती है। कुछ न पूछो क्या हाल है। तो यह जानकारी तो मैं ख़रीद सका मगर वारिनिया को नहीं ख़रीद सका।

—क्या तुमने यह पता लगाया कि उसने वारिनिया को क्यों ख़रीदा और क्यों उसे अपने यहाँ रखता है ?

फ्लैवियस शरारत से भरी हुई मुस्कराहट के साथ बोला—हाँ, मैंने पता लगाया। क्रैसस को उससे प्रेम है।

—क्या कहा ?

—हाँ ! महान् क्रैसस को आख़िरकार किसी से प्रेम हो गया है।

इसके बाद ग्रैकस ने अपने शब्दों को चबा-चबाकर धीरे-धीरे कहा—शैतान तुमसे समझे फ्लैवियस ! अगर तुमने इस चीज़ के बारे में किसी से बात की, अगर यह बात फैली, अगर मैंने कहीं किसी के मुँह से दुबारा यह बात सुनी तो मैं सच कहता हूँ कि मैं तुमको सलीब पर चढ़वा दूँगा।

—यह कैसे बात कर रहे हो तुम ? तुम कोई भगवान् नहीं हो ग्रैकस।

—नहीं ! भगवान् से मेरा दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं है जैसा कि हमारे कुछ उच्च वंशों के सिरफिरे अपने बारे में कहा करते हैं। तो यह सच है कि भगवान् से मेरा कोई भी सम्बन्ध नहीं है मगर इतना जान लो कि मैं भगवान् के उतने ही पास हूँ जितने पास कि आज तक कोई भी रोमन राजनीतिज्ञ पहुँच सका है और इतनी ताक़त मेरे पास है फ्लैवियस, कि मैं तुम्हें फँसा सकता हूँ और सलीब पर चढ़वा सकता हूँ। और अगर इनमें से कोई भी बात बाहर फैली तो मैं यही करूँगा। कान खोलकर सुन लो।

४

उसके अगले रोज़ तीसरे पहर ग्रैकस स्नानागार को जाने के लिए निकला। यह एक राजनीतिक आवश्यकता थी जिसे पूरा करने पर उसका पुरस्कार भी मिलता था। रोज़बरोज़ ये सार्वजनिक स्नानागार राजनीतिक और सामाजिक जीवन के केन्द्र बनते जा रहे थे; इन्हीं स्नानागारों में सेनेट के सदस्य और न्यायाधीश बनते थे और बिगड़ते थे; इन्हीं स्नानागारों में न जाने कितना पैसा इस हाथ से उस हाथ पहुँच जाता था। ये स्नानागार स्टाक एक्सचेन्ज भी थे और राजनीतिक क्लब भी और कुछ समय बाद यह जरूरी हो गया कि राजनीतिक दुनिया के लोग और ऐसे सभी लोग जो समाज में महत्व पाना चाहते थे, इन सार्वजनिक स्नानागारों में समय-समय पर दिखायी पड़ते रहा करें। तीन बहुत अच्छे और बड़े-बड़े स्नानागार थे जहाँ ग्रैकस जाया करता था, एक का नाम था क्लोटम जो कि अभी निस्बतन् नया ही था और उसके अलावा दो और जो ज़्यादा पुराने थे मगर जिनकी शान-शौकत में अभी कोई कमी नहीं आयी थी। जहाँ यह सच था कि सभी नागरिक उसके अन्दर नहीं जा सकते थे वहाँ यह भी सच था कि उसके दाख़िले के पैसे

इतने कम लगते थे कि ग़रीब-से-ग़रीब आदमी भी केवल पैसे की मजबूरी के कारण अन्दर न जा सके, ऐसी बात न थी। पर तो भी वहाँ पर सामाजिक ऊँच नीच का कुछ ऐसा भाव था जो साधारण जनों को इन स्थानों से दूर रखता था।

अच्छे मौसम में सारा रोम तीसरे पहर मकानों से बाहर निकल आता था। यहाँ तक कि रोमन मज़दूर भी, जिनकी तादाद बराबर गिरती जा रही थी, एक बजे दिन तक अपना सारा काम ख़तम कर लेते थे। अगर उनसे और ज़्यादा देर तक काम लेने की बात की जाती तो मुमकिन था कि वे काम एकदम छोड़ देते और तब शायद सरकारी ख़ैरात पर बसर करना उनको ज़्यादा आसान मालूम होने लगता। तीसरा पहर आज़ाद आदमी का वक़्त था; गुलाम मेहनत करता था, रोम का नागरिक आराम करता था।

बहरहाल ग्रैकस को तलवार के खेलों में वैसी दिलचस्पी न थी और घुड़दौड़ में भी वह कभी-कभी ही जाता था। वह अपने साथियों से इस बात में थोड़ा भिन्न था कि उससे यह नाटक नहीं देखा जाता था कि दो नगे आदमी, एक-एक छुरा हाथ में लेकर एक दूसरे पर वार करते रहें जब तक कि उनका सारा शरीर कट-फट न जाय, मांस के लोथड़े झूलने न लगें और घड़ों खून न बहे। और न उसको इसी में मज़ा मिलता था कि वह एक आदमी को मछली जाल में फँसा हुआ, छटपटाता हुआ देखे और तभी मछली पकड़ने का एक लम्बा-सा काँटा उसकी आँखें निकाल ले और उसके पेट में छेद कर दे। कभी-कभी उसको तीसरे पहर घुड़दौड़ में मज़ा आता था मगर रथों की दौड़ में जो कि रोज़-बरोज़, अधिक-से-अधिक, दोनों रथों के चालकों के बीच एक शारीरिक प्रतियोगिता बनती जा रही थी और जिसके दर्शकों को तब तक सन्तोष न होता था जब तक कि किसी का सिर फूट न जाय या शरीर लहू-लुहान न हो जाय, इसमें उसको कुछ मज़ा न मिलता था। इससे तो उसको सिर्फ़ ऊब ही मालूम होती थी। बात यह नहीं थी कि उसका हृदय औरों से कोमल था; बात बस यह थी कि उसको जड़ता से घृणा थी और उसके नज़दीक यह सब बातें अत्यन्त जड़ता से भरी हुई थीं। रंगमंच उसकी समझ में बिलकुल न आता था और वह केवल औपचारिक उद्घाटनों में जाता था जिनमें कि नगरपालिका के सदस्य के रूप में उसका उपस्थित होना ज़रूरी होता था।

तीसरे पहर के उसके मनोरंजनों से सबसे बड़ा मनोरंजन था अपने प्यारे नगर की गन्दी-गन्दी टेढ़ी-मेढ़ी अनन्त गलियों में से होकर पैदल स्नानागारों की ओर जाना। रोम को उसने सदा प्यार किया था; रोम उसकी माँ थी। जैसा कि वह अपने आपसे कहा करता था, उसकी माँ एक रण्डी थी और वह

अपनी माँ के गर्भ में से निकलकर सड़क की ग़लाज़त में जा गिरा था। मगर अब तक वह अपनी इस माँ से प्यार करता था और इस माँ ने भी उसको प्यार किया था। वह सिसेरो को कैसे समझाता कि उस पुरानी दन्तकथा के कहने में उसका क्या अभिप्राय था? उसको समझने के लिए सिसेरो को पहले रोम से प्यार करना पड़ेगा और फिर इस प्यार का सम्बन्ध इस ज्ञान से जोड़ना होगा कि यह शहर कितना ख़राब और कितना पाप से भरा हुआ है।

यह ख़राबी और यह गन्दगी और यह उस शहर का पाप से भरा होना एक ऐसी चीज़ थी जिसे ग्रैकस समझता था। उसने एक बार अपने एक बुद्धिजीवी मित्र से पूछा था—मैं नाट्यशाला में क्यों जाऊँ? क्या वे रंगमंच पर वे तमाम चीज़ें दिखला सकते हैं जो मैं अपनी इस महान् नगरी की सड़कों पर देखता हूँ?

इसमें सन्देह नहीं कि यह सचमुच देखने की चीज़ थी। आज उसने यह चीज़ एक ख़ास रस्मी अन्दाज़ में की। जैसे कि वह अपने आपसे पूछ रहा हो—अब और फिर कितनी बार मैं ऐसा करूँगा?

वह पहले दिन के बाज़ार में गया जहाँ की दूकानें अब और एक घण्टा काम करेंगी और फिर बन्द हो जायेंगी। इस सड़क पर उन चीखती हुई औरतों के बीच से अपना रास्ता बनाने के लिए साधारण आदमी को ज़ोर लगाना पड़ता था मगर वह अपना भारी-सा सफ़ेद चोग़ा पहने, अपना भारी-भरकम शरीर लिये बड़े मज़े में बढ़ता चला जाता था, जैसे कोई बड़ा-सा युद्धपोत हलकी-हलकी हवा में आगे बढ़ा चला जा रहा हो। यहाँ पर वे तमाम चीज़ें मिलती थीं जो रोम खाता था। यहाँ पर पनीर के तमाम ढेर लगे थे, गोल पनीर, चौकोर पनीर, काला पनीर, लाल पनीर, सफ़ेद पनीर। यहाँ पर भुनी हुई मछलियाँ और बत्तख़े टंगी थीं और कटे हुए सुअर, गाय का गोश्त, भेड़ के नन्हें-नन्हें बच्चों का नर्म गोश्त, नमक डालकर पीपे में रक्खी हुई ईल और हेरिन मछलियाँ, अचारों के पीपे जिनकी खुशबू इतनी तेज़ और इतनी अच्छी थी—ये तमाम चीज़ें वहाँ पर रक्खी थीं। यहाँ पर साबीन के पहाड़ों और पिसेनम से आए हुए तेल के बर्तन रक्खे थे, गॉल से आनेवाली, सुअर की लज़ीज़ रान रक्खी थी और यहाँ-वहाँ सब जगह जानवरों की अँतड़ियाँ टंगी हुई थीं और लकड़ी के बड़े-बड़े कटोरों में छोटी-छोटी चिड़ियाँ बन्द थीं।

सब्जीवाले के यहाँ वह थोड़ी देर को रुका। उसकी याददाश्त में एक ज़माना ऐसा भी था जबकि आस-पास बीस मील की दूरी तक हर किसान के पास अपना बाग़ था और रोम वह तरह-तरह की, एक-से-एक अच्छी सब्जियाँ खाता था जो कि उस बाज़ार में पहुँचती थीं। मगर अब जागीरदारों को सिर्फ़ उन फ़सलों में दिलचस्पी थी जिनमें कि ज़्यादा पैसा मिलता था, फिर चाहे

वह गेहूँ हो या जौ और सब्जियों का दाम इसीलिए इतना ज़्यादा चढ़ गया था कि सिर्फ़ शासक वर्ग उसको खा सकता था। तब भी वहाँ पर मूली और शलजम के ढेर लगे थे, पाँच तरह की सलाद की पत्तियाँ, मसूर और सेम और पातगोभी, कद्दू और ख़रबूजे और ऐस्परैगस, तरफ़ाश और कुकुरमुत्ते—बहुत तरह की रंग-बिरंगी सब्जियाँ और फल भी वहाँ पर थे, अफ्रीका के नीबुओं और अनारों के ढेर जो इतने पीले और सुर्ख़ और ऐसे चमकदार और चिकने दिखायी देते थे, सेब और नाशपाती और अंजीरें, अरब से आये हुए खजूर, मिस्र से आये हुए अंगूर और ख़रबूजे।

—इनको देखकर ही कितना आनन्द मिलता है।—उसने सोचा।

वह आगे बढ़ता गया और शहर के यहूदी मुहल्ले के एक छोर से गुज़रकर आगे निकल गया। एक राजनीतिज्ञ के रूप में उसे जब-तब यहूदियों से काम पड़ता था। कैसे अजीब लोग थे ये जो इतने ज़माने तक रोम में रहे थे मगर तक भी अब तक अपनी ही ज़बान बोलते थे और अपने ही भगवान की पूजा करते थे और अब भी उसी तरह दाढ़ी रक्खे हुए थे और, चाहे जैसा भी मौसम हो, अब भी अपने वही लम्बे-लम्बे धारीदार लबादे पहनते थे। वे कभी तलवार के उन खेलों में या घुड़दौड़ के मैदानों में दिखायी नहीं देते थे। वे कभी अदालत में दिखायी न देते थे। उनकी तो अक्सर शक्ल ही नज़र नहीं आती थी। उनको अगर देखना हो तो आप बस उनके अपने मुहल्ले में देख सकते थे। विनयशील, शिष्ट, गर्वीले, सबसे अलग, उनको देखकर ग्रैकस अक्सर सोचा करता था—अपना वक्त आने पर वे रोम का इतना खून बहायेंगे जितना कि कार्थेज ने भी नहीं बहाया होगा।

वह एक बड़ी सड़क पर निकल आया और थमकर एक दूकान के सामने एक ओर को खड़ा हो गया और उसी वक्त नगर का सैन्य-दल उधर से निकला। नगाड़े और तुरहियां बज रही थीं। जैसा कि हमेशा होता है बच्चे उनके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे और हमेशा की तरह वह सिर्फ़ इधर-से-उधर तक एक झलक देख सका और उसने एक अरब, एक सीरियन और एक साबियन को परेड देखते हुए पाया।

वह उस जगह पर पहुँच गया जहाँ पर बड़ी-बड़ी ऊँची-ऊँची चालें ख़त्म होती थीं और बाग़ीचे और हल्के-हल्के सफ़ेद संगमरमर के पोर्टिको और लताओं से बनी हुई ठंडी ढँकी हुई राहें और चौड़े कशादा रास्ते शुरू होते थे। फोरम में, पांसे का खेल खेलनेवाले अपने खेल में जुटे हुए थे। रोम में यह जुआ भी एक तरह का रोग ही था और इस जुए की सबसे ख़राब शक्ल यही पाँसा था। हर रोज़ तीसरे पहर जुआड़ियों की टोलियाँ फोरम-घर में फैल जाती थीं, पाँसे फेंकती थीं, पाँसों से अनुनय-विनय करती थीं, पाँसों से बात करती थीं। उनके

पास अपनी एक ज़बान थी। तमाम आवारे, फ़ौज से छुट्टी पाये हुए सिपाही और चौदह-पन्द्रह साल की लड़कियाँ जो कि शहर में हर जगह दिखायी देती थीं, जो कोई काम न करती थीं, छोटी-छोटी गन्दी गन्दी कोठरियों में ही जो पली थीं और जो अपने माँ-बाप की ही तरह सरकारी ख़ैरात पर और यहाँ-वहाँ अपना शरीर बेच कर ज़िन्दगी बसर करती थीं। उसने सुना था कि इनमें से बहुत-सी लड़कियाँ सिर्फ़ एक प्याली शराब और एक टुकड़े के लिए किसी आदमी के सङ्ग सो सकती हैं। कभी ऐसा वक्त़ था कि उसने और उसके जैसे और बहुत से लोगों ने इस बात को बहुत ही भयानक समझा था मगर इन दिनों जब कि एक ऐसे आदमी को ज़रा भी नीची निगाह से न देखा जाता था जो कि विवाहित और सद्-गृहस्थ होते हुए भी अपने शयनकाल को चटपटा बनाने के लिए एक दर्जन गुलाम लड़कियों को रखता था, तो ज़ाहिर है कि इस वक्त़ यह चीज़ अब बहस की न रह गयी थी और न किसी का ध्यान ही इस बात पर जाता था।

ग्रैकस ने सोचा—धीरे-धीरे एक पूरी दुनिया ख़त्म हुई जा रही है मगर तब भी हम अचरज किये ही जाते हैं। मगर क्यों? यह चीज़ इतने धीरे-धीरे होती है और आदमी की ज़िन्दगी इतनी छोटी है!

वह यहाँ-वहाँ रुककर चौपड़ का एकाध खेल देख लेता था। जब वह लड़का था तब का अपना पांसा फेंकना उसको याद था। तब सरकारी ख़ैरात पर बसर करना बहुत मुमकिन न था और नैतिकता के ऐसे मानदण्ड थे जो एक स्वाभिमानी व्यक्ति को इसके लिए प्रेरित करते थे कि वह सरकारी मदद लेने से इनकार कर दे, चाहे इसका मतलब भूखों मरना ही क्यों न हो।

वह स्नानागारों की ओर बढ़ा चला जा रहा था। उसने बहुत होशियारी से सब कुछ समझ बूझकर योजना बनायी थी। इस बात की पूरी संभावना थी कि क्रैसस आज वहाँ पर होगा और ठीक इसी समय वह भी वहाँ पहुँचेगा। और बात भी ठीक निकली क्योंकि जब ग्रैकस कपड़ा बदलने के कमरे में दाख़िल हुआ तो उसने क्रैसस को वहाँ पहले ही से पाया। उसके कपड़े उतारे जा चुके थे और वह सामने के लम्बे-लम्बे शीशे में अपने आपको देख रहा था और अपने लम्बे दुबले-पतले शरीर पर मन ही मन मगन हो रहा था। कमरे बराबर भरते चले जा रहे थे। यहाँ पर शहर की ज़िन्दगी का एक दिलचस्प टुकड़ा देखने को मिलता था। यह एक तरह का सियासी बर्तन था जिसमें तरह-तरह की चीज़ें आपस में मिलती थीं—उच्च वंशों के कुछ थोड़े से आलसी लोग मगर ऐसे लोग जिनके पास इतनी काफ़ी राजनीतिक शक्ति थी कि वे नगर की नींव तक हिलाकर रख दे सकते थे, बैंकर और शक्ति-सम्पन्न व्यापारी, नगरपालिका के बड़े-बड़े लोग, अपने-अपने मुहल्लों के सरदार,

गुलामों का आयात करनेवाले, वोट इधर-उधर करनेवाले, गुण्डों के कुछ चौधरी और शहर के आवारे, सेनेट के कुछ महत्वपूर्ण सदस्य, एक-दो लानिस्ता, तीन भूतपूर्व राजदूत, एक न्यायाधीश, एक-दो अभिनेता और पूरे एक दर्जन सेना के महत्वपूर्ण पदाधिकारी—ये सभी वहाँ पर मिलते थे। उनके सिवा ऐसे भी काफ़ी लोग थे जिनका कोई ख़ास महत्व नहीं था और जो इस बात का प्रमाण थे कि स्नानागारों में सब बराबर होते हैं—और यह चीज़ ऐसी थी जिसका रोम को बड़ा घमण्ड था। पूर्वी देशों के राजे और जागीरदार इस चीज़ को कभी आँख से ओझल न कर पाते थे कि रोम के शासक—जिसका मतलब था संसार के शासक—शहर के साधारण जनों से कितने सहज रूप में मिलते जुलते हैं और शहर की सड़कों पर कैसे निरपेक्ष भाव से टहलते रहते हैं।

क्रैसस पर बराबर आँख जमाये हुए ग्रैकस एक बेंच पर बैठ गया और एक गुलाम उसका जूता खोलने लगा। इसी बीच उसने लोगों की सलाम-बन्दगी को क़बूल किया, सिर हिलाया और मुस्कराया, यहाँ किसी से एक शब्द कहा वहाँ किसी से एक शब्द कहा। उससे जब कोई सलाह माँगता था तो वह संक्षेप में और निश्चयात्मक ढंग से सलाह देता था। इसके अलावा अगर कोई उससे पूछता था तो वह दूसरे भी बहुत से मसलों पर अपनी संक्षिप्त और निश्चित राय देता था जैसे स्पेन के झगड़े के बारे में, अफ्रीका की स्थिति के बारे में, मिस्र के तटस्थ रहने की आवश्यकता के बारे में—और यह चीज़ ऐसी थी जिसकी शहर में सदा गर्म चर्चा रहती थी—और इस समस्या के बारे में कि फिलस्तीन में यहूदी जो हमेशा गड़बड़ मचाया करते हैं उसके बारे में क्या किया जाय। गुलामों के व्यापारी जो उसके सामने अपना यह रोना रो रहे थे कि गुलामों के दाम इसी तरह बराबर गिरते जायँगे तो उनकी पूरी अर्थ-व्यवस्था ही नष्ट हो जायगी, उनको ग्रैकस ने आश्वस्त किया और इस अफ़वाह को भी कुचल दिया कि गॉल की सेना बग़ावत करने की साज़िश कर रही है। मगर इस बीच पूरे वक्त वह क्रैसस को देखता रहा और आख़िरकार क्रैसस, जो अब भी नंगा था और अपने दुबले-पतले मगर स्वस्थ शरीर का प्रदर्शन कर रहा था, फुर्ती से चलकर उसके पास आ गया। क्रैसस का जी नहीं माना कि जब ग्रैकस के कपड़े उतर रहे हों तब वह भी कैसे न उसके पास जाकर खड़ा हो जाय ताकि देखनेवाले दोनों के नंगे शरीर का मिलान कर सकें। जब गुलामों ने उस राजनीतिज्ञ का चोग़ा उतारा तो उसके भीतर से वह पहाड़-जैसा आदमी दिखायी दिया। मगर अब तक तो देखने में वह प्रभावशाली था। लेकिन उसके बाद जब कुर्ता उतारा गया तो उसके भीतर से एक बहुत ही मोटे आदमी का जो थुलथुल शरीर दिखायी दिया

वह साधारण नग्नता से कहीं अधिक करुण था। बड़ी अजीब बात थी कि इसके पहले ग्रैकस को कभी अपने शरीर के ऊपर शर्म नहीं आयी थी।

वे दोनों साथ-साथ स्नानागार के बड़े कमरे में गये जहाँ लोग बैठकर बातें किया करते थे। यहाँ पर बेंचें थीं और चटाइयाँ थीं जिन पर लेटकर आप आराम कर सकते थे।।मगर आम क़ायदा यह था कि एक बार पानी में कूदने और दूसरी बार पानी में कूदने के दर्मियान लोग वहाँ पर टहला करते थे। संगमर्मर के फ़र्श की, मोज़ेक और तरह-तरह की मूर्तियों से अलंकृत इस चौड़ी और खूबसूरत गैलरी से आदमी बाहर ठण्डे पानी के तालाब में जा सकता था, गरम पानी के तालाब में जा सकता था, गरम पानीवाले स्नानागारों में जा सकता था, भाप के कमरों में जा सकता था और उन सब में से होकर कसरत और मालिश के उन तमाम कमरों में जा सकता था। उसके बाद एक ठण्डी चादर लपेटकर वह बाग़ीचे में टहल सकता था, पुस्तकालय में जा सकता था—जो कि स्नानागार का एक हिस्सा था—और उन कमरों में जा सकता था जहाँ बैठकर लोग धूप सेंका करते थे। यह सारी दिनचर्या उन लोगों की थी जिनके पास स्नानागार में बिताने को बहुत समय होता था। ग्रैकस अक्सर ठण्डे पानी की एक डुबकी और फिर भाप के कमरे में आधे घण्टे और फिर मालिश से ही सन्तुष्ट हो जाया करता था।

मगर आज उसने क्रैसस के संग अपने मन का मेल मिलाया। कठोर शब्द और कठोर भाव तो जैसे भूल ही गये। नंगा, मोटा, ढीला-ढाला ग्रैकस सेनापति के बग़ल में आगे बढ़ा जा रहा था और सेनापति के संग बड़े प्यार से बातें कर रहा था और सेनापति की बातों में बड़ा रस ले रहा था। इस चीज़ में वह बहुत निपुण था।

जो लोग उन दोनों को देख रहे थे वे कहते थे कि दोनों मिलकर पुल बना रहे हैं, और सोच रहे थे कि अब पता नहीं कौन से नये राजनीतिक सम्बन्ध बन रहे हैं क्योंकि क्रैसस और ग्रैकस में इस तरह की मैत्री और भाईचारा पहले कभी देखा नहीं गया था। मगर ख़ैर, क्रैसस धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। उसने अपने मन में कहा—जो कुछ इसके मन में होगा वह अभी सामने आ जायगा, आये बिना थोड़े ही रहेगा। राजनीतिज्ञ की ओर उसका रवैया कुछ-कुछ अपमानजनक हो गया और उसने पूछा—यह तुम मिस्र के बारे में और दूसरा तमाम चीज़ों के बारे में कब से इतने अधिकारपूर्वक बात करने लगे?

—तुम्हारा मतलब उस चीज़ से है जो मैंने अभी थोड़ी देर पहले कही थी। देखो, तुम जानते हो कि यों ही कुछ मोटी-मोटी बातें कह देने से बीच की खाली जगहें भर जाती हैं। अपने नाम की रक्षा भी तो करनी ही पड़ती है। प्रतिष्ठा की बात है।—यह निश्चय ही एक नया ग्रैकस था।

—प्रतिष्ठा यह कि तुम हर चीज़ जानते हो, क्यों ?

ग्रैकस हँसा—तुम मिस्र गये हो न ?

—नहीं। और मैं ऐसा दिखलाता भी नहीं कि गया हूँ।

—अच्छा-अच्छा, छोड़ो इस बात को। पता नहीं क्रैसस, क्यों हम दोनों एक दूसरे को देखकर इस तरह गुर्राया करते हैं और चोट किया करते हैं जब कि हम दोनों दोस्त भी हो सकते थे। मेरा ख़याल है हम दोनों एक दूसरे के के लिए ऐसे दोस्त बन सकते हैं जिनकी दोस्ती कुछ क़ीमत रखती है।

—मेरा भी यही ख़याल है। तुम शायद ठीक कहते हो। मगर मुझे भी इस ओर से कुछ निराशा ही है। दोस्ती की कुछ न कुछ क़ीमत होगी।

—हाँ ?

—हाँ, मैं जानता हूँ। मेरे पास ऐसी कौन सी चीज़ है जो मेरी दोस्ती को इतना क़ीमती बना देती है ? दौलत ? वह तो तुम्हारे पास भी लगभग इतनी ही है।

—दौलत की मुझे परवाह नहीं है।

—मुझे है। तब फिर ?

—मैं तुमसे एक गुलाम को ख़रीदना चाहता हूँ, ग्रैकस ने कोशिश करके अपनी बात उगल दी। चलो हुआ। बात ख़त्म हुई।

—यक़ीनन् तुम मेरे बावर्ची को चाहते होगे। अगर तुम्हारे बाल होते ग्रैकस, तो मैं सोचता कि तुम मेरे हज्जाम को चाहते होगे। पालकी ढोनेवाले चाहिए ? या कोई औरत चाहिए, शायद औरत ही चाहिए तुमको। मैंने सुना है कि तुम्हारे यहाँ बस औरतें ही औरतें हैं।

ग्रैकस चिल्लाया—अनजान न बनो क्रैसस, तुम भी जानते हो कि मैं किसको चाहता हूँ ! मैं वारिनिया को चाहता हूँ।

—कौन ?

—वारिनिया। आओ अब हम यह मज़ाक़ बन्द करें।

—मेरे प्यारे ग्रैकस, मज़ाक़ तो तुम कर रहे हो। यह दुनिया भर की ख़बरें तुमको कौन पहुँचाता रहता है ?

—ख़बर मुझको पहुँच ही जाती है। सब बातों की ख़बर रखना मुझको अच्छा मालूम होता है।—वह मोटा आदमी रुक गया और क्रैसस की आँख में आँख डालकर बोला—देखो क्रैसस, इधर-उधर की बात करने से क्या फ़ायदा, सीधे-सीधे काम की बात की जाय। कोई झगड़ा नहीं, कोई मोल-तोल नहीं। किसी तरह का कोई मोल-तोल नहीं। मैं अपना प्रस्ताव सीधे-सीधे तुम्हारे सामने रखता हूँ। आज तक रोम में किसी भी गुलाम के लिए जो ऊँची-से-ऊँची क़ीमत दी गयी हो ऐसी क़ीमत मैं तुमको दूँगा। मैं तुमको

दस लाख सेस्टर्स दूँगा। यह रक़म मैं तुमको सोने की मुद्राओं में दूँगा और अभी इसी वक्त कौड़ी-कौड़ी चुका दूँगा, अगर तुम वारिनिया को मुझे दे दो।

क्रैसस ने अपनी बाँहें समेट लीं और धीरे-धीरे सीटी बजाने लगा। फिर बोला—हाँ, यह तो कुछ क़ीमत है। बहुत अच्छा दाम लगाया है तुमने। इस दाम के बारे में तो कवि लोग कविताएँ लिख सकते हैं। जब कि आज के दिन कोई भी आदमी बाज़ार में जाकर एक अच्छी, तनदुरुस्त, जवान, उन्नत वक्ष की सुन्दरी को एक हज़ार सेस्टर्स में ख़रीद सकता है तब तुम एक दुबली-पतली मरियल-सी जर्मन लड़की के लिए उसकी एक हज़ार गुना ज़्यादा क़ीमत देने को तैयार हो। तो यह बात तो कुछ हुई। मगर मैं यह रक़म लूँ भी तो कैसे? लोग क्या कहेंगे? लोग कहेंगे कि क्रैसस चोर है।

—देखो मुझसे दिल्लगी मत करो!

—मैं और तुमसे दिल्लगी करूँ? मेरे प्यारे ग्रैकस, दिल्लगी तो तुम कर रहे हो। मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो तुम ख़रीद सको।

—मैंने समझ-बूझकर प्रस्ताव तुम्हारे सामने रक्खा है।

—और मैं समझ-बूझकर तुमको जवाब दे रहा हूँ।

—मैं इसकी दुगनी क़ीमत तुमको दूँगा! बीस लाख!—ग्रैकस गुर्राया।

—मुझे नहीं मालूम था कि राजनीति में इतनी दौलत है।

—बीस लाख। चाहो तो लो न चाहो न लो।

—तुम्हारी बात से मुझे ऊब मालूम होती है। मुझको अब और परेशान न करो, क्रैसस ने कहा, और वहाँ से चल दिया।

५

—वारिनिया, वारिनिया, अब तुम तैयार हो जाओ। अब तुम तैयार हो जाओ वारिनिया, क्योंकि स्वामी घर आ रहे हैं और तुमको उनके सङ्ग बैठना है और खाना खाना है। तुम हमारे लिए क्यों मुश्किलें पैदा कर रही हो वारिनिया?

—मैं तुम्हारे लिए कोई मुश्किल नहीं पैदा करना चाहती।

—मगर कर तो रही हो। ज़रा देखो वारिनिया कि तुमने हमको कैसी मुसीबत में डाल दिया है। तुम कहती हो कि तुम गुलाम हो। तुम नहीं चाहतीं कि चार गुलाम हर वक्त हाथ बाँधे तुम्हारी सेवा में खड़े रहें। नहीं, तुम भी हमारी ही तरह एक गुलाम हो। तुम हमको बतलाती हो कि तुम कितनी ज़िल्लत महसूस करती हो। तुम जानती हो गुलाम होना किस चीज़ को कहते हैं या कहीं यह बात तो नहीं है कि स्पार्टकस के संग रहते-रहते, जब

कि वह सारी दुनिया को फतह कर रहा था, तुम भूल गयी हो कि गुलाम होना किस चीज़ को कहते हैं। तब तो तुम रानी थीं न वारिनिया ? इसलिए—

—मुझसे फिर कभी ऐसी बात न कहना ! तुम ऐसा क्यों कह रही हो ! क्या मैंने कभी अपने आपको तुम लोगों से अलग और ऊपर दिखाने की कोशिश की है ?

—यह करने की ज़रूरत नहीं पड़ती वारिनिया। स्वामी ही तुमको हम सबसे अलग करके रखते हैं। हम तो इस काम के लिए हैं कि जब वे थके हुए हों, उकताए हुए हों तो हमको अपने साथ बिस्तर में सुला लें। एक-दो-तीन। मगर तुमसे तो उनको प्रेम है वारिनिया। तभी तो तुम हमारे लिए मुश्किल पैदा कर रही हो। अगर तुम अपना शृंगार नहीं करवातीं तो कोड़े हमको पड़ते हैं। तुमको कोड़े नहीं पड़ते। हमको कोड़े पड़ते हैं।

—मुझको कोड़ा मारें न !

—मारें भी तो। हम भी ज़रा देखें उनके हाथ से तुमको कोड़ा पड़ते !

—अच्छा-अच्छा, उसने उन सबों से कहा—अभी मैं अपने बच्चों को दूध पिला रही हूँ। पहले दूध पिला लेने दो। इसके बाद तुम मुझे कपड़ा पहना लेना, सिंगार कर लेना। जैसा भी तुम्हारा जी चाहे। मैं सीधे से सब काम करवा लूँगी, कोई झगड़ा नहीं करूँगी। लेकिन पहले मुझे अपने बच्चे को दूध पिला लेने दो।

—कितनी देर ?

—वह ज़्यादा देर तक नहीं पीता। देखो न, अभी से धीमा पड़ गया है। आधे घण्टे में तैयार हो जाऊँगी। तब तक वह सो गया रहेगा। मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि तुम जो कुछ कहोगी मैं सब करूँगी। तुम मुझको जो कुछ पहनाओगी सब पहन लूँगी।

उन सबों ने वारिनिया को थोड़ी देर के लिए छोड़ दिया। उनमें से तीन स्पेन की लड़कियाँ थीं। चौथी साबीन की स्त्री थी और उसे यह बात हमेशा नासूर की तरह सालती रहती थी कि उसकी माँ ने क़र्ज़ के कारण उसको बेच दिया था। वारिनिया इस बात को समझती थी। यह बड़ी तल्ख़ बात थी कि तुम्हारे अपने घर के लोग तुम्हें देख लें। इससे मुँह कड़ुवा हो ही जाता है। इस घर में स्पर्द्धा, ईर्ष्या, कटुता का राज था। ये बीमारियाँ नासूर की तरह सारे घर में फैली हुई थीं।

वह बच्चे को दूध पिला रही थी और बड़ी नर्म और मद्धिम आवाज़ में गाती जा रही थी—

सो मेरे मुन्ना, सो मेरे प्यारे
बन को तेरे पिता सिधारे

खोज रहे हैं ऊदबिलाव
बर्छी से करते हैं घाव
लायेंगे फिर उसकी खाल
कर देंगे वे तुझे निहाल
तब न तुझे जाड़े का शीत
कभी कर सकेगा भयभीत
सो मेरे मुन्ना, सो मेरे लाल....

बच्चे ने दूध खींचना बन्द कर दिया। बच्चा जब दूध खींचता था तो वह अपनी छाती की घुण्डियों पर उसके दबाव को महसूस करती थी। वह जब भूखा होकर ज़ोर से, ताक़त लगाकर दूध खींचता था तो वारिनिया के सारे शरीर में एक बिजली-सी दौड़ जाती थी। और फिर धीरे-धीरे जैसे बच्चे का पेट भरता जाता था वैसे-वैसे यह सनसनी कम होती जाती थी। बच्चा दूध खींचता है तो कैसा लगता है!

यह सोचकर कि शायद उसको और दूध की ज़रूरत हो उसने अपनी दूसरी छाती उसके मुँह में दे दी और उसके गाल को ठुनकी देने लगी ताकि वह फिर दूध पीना शुरू कर दे मगर वह भरपेट दूध पी चुका था। उसकी आँखें बन्द थीं और इस समय उसके भीतर वही विराट् उपेक्षा भाव था जो कि एक बच्चे के अन्दर ही हो सकता है जब कि उसका पेट भरा हुआ हो। थोड़ी देर तक उसने बच्चे को अपनी गर्म-गर्म नंगी छाती से लगाकर दुलराया, फिर उसे पालने में डाल दिया और अपनी कुर्ती के बटन बन्द करने लगी।

उसके पास खड़े-खड़े वह सोचने लगी, कितना खूबसूरत है यह लड़का। मोटा, ताक़तवर, गोलगुथना, कितना प्यारा बच्चा है। इसके बाल काले रेशम जैसे हैं और इसकी आँखें गहरी नीली हैं। ये आँखें तो आगे चलकर अपने बाप जैसी काली-काली हो जायँगी मगर बालों के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। अब ये काले-काले पेट के बाल झड़ेंगे तो फिर नये बाल जो निकलेंगे वे काले-काले घुंघराले बाल भी हो सकते हैं और सुनहरे और सीधे बाल भी हो सकते हैं।

बच्चा बड़ी जल्दी और बड़ी आसानी से सो गया। उसकी दुनिया अपनी जगह पर बिलकुल ठीक थी। उसकी दुनिया ज़िन्दगी की दुनिया थी, जो ज़िन्दगी के अपने सीधे-सादे क़ायदों से चलती थी जिसमें कहीं कोई गड़बड़ी या उलझाव न था। उसकी दुनिया वह दुनिया थी जो सबसे ज़्यादा दिनों तक चलेगी...

अब उसने बच्चे को वहीं छोड़ दिया और उस जगह पर गयी जहाँ वे औरतें उसको कपड़ा पहनाने के लिए, उसका सिंगार करने के लिए इन्तजार कर रही थीं। चार गुलाम औरतें क्रैसस के संग बैठकर खाना खाने के लिए

वारिनिया का सिंगार करने को, क्रैसस जो वारिनिया का मालिक है। वह एकदम शान्त होकर खड़ी रही और उन स्त्रियों ने उसके सब कपड़े उतार दिये और उसके नंगे शरीर को स्पंज करने लगीं। यह शरीर अब भी बड़ा सुन्दर था, लम्बा और और भी सुन्दर अपनी उन छातियों के कारण जिनमें दूध भरा था। उन्होंने उसके चारों ओर एक चादर लपेट दी और वह एक कोच पर लेट गयी जिसमें प्रसाधिका उसके चेहरे और उसकी बाँहों को बनाकर ठीक कर सके।

सबसे पहले उसकी बाँहों और माथे पर खड़िये का बहुत ही बारीक चूर मला गया जो कि गाल तक आते-आते त्वचा के रंग में ही मिल गया। उसके बाद लाली जो कि गालों पर हलकी थी और होंठों पर गहरी। इसके बाद आँखों में अंजन। और फिर भवों की रेखा ठीक करने के लिए काजल।

जब यह सब हो गया तो वह उठ बैठी और अपने बाल ठीक करवाने लगी। उसके नर्म सीधे और सुनहरे बालों को घूंघरवाले गुच्छे की शकल दे दी गयी थी और पोमेड और छोटे-छोटे फीतों की मदद से अपनी जगह पर जमा दिया गया था।

इसके बाद हीरे-मोती। वह नंगी खड़ी थी, चादर भी उसके शरीर में लिपटी न थी। वह निश्चल और शान्त खड़ी थी और मुकुट उसके बालों में लगा दिया गया। इसके बाद सोने के ऐरन और फिर सोने और नीलम का एक गुलूबन्द जिसका नाम मोनील था। उसी से मिलते-जुलते पट्टे उसके टखनों और कलाइयों पर पहना दिये गये और एक-एक हीरे की अँगूठी दोनों हाथों की छिंगुली में पहना दी गयी। बहुत ही ठाठ-बाट से उसका सिंगार किया जा रहा था, उसी तरह जैसे कि रोम का सबसे अमीर आदमी अपनी प्रेमिका का सिंगार करना चाहेगा, अपनी गुलाम का नहीं। यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि ये बेचारी गुलाम औरतें जो उसका सिंगार करने के लिए तैनात की गयी थीं उसके ऊपर तरस न खा पाती थीं। ज़रा देखो, कैसे यह अपने इन हीरों-जवाहरात की शकल में ही एक पूरे साम्राज्य के वैभव को पहने हुए है। उस पर कोई तरस खाये भी तो कैसे?

उस वक़्त रोम में कपड़ों में सबसे क़ीमती कपड़ा रेशम नहीं बल्कि हिन्दोस्तान का वह बहुत ही महीन और हैरतअंगेज़ मलमल समझा जाता था जो कि होता तो था सूती मगर जिसके रेशम जैसे चिकनेपन का मुक़ाबला कोई रेशम भी नहीं कर सकता था। अब उन्होंने वारिनिया के सिर पर मलमल का एक स्टोला डालकर नीचे खींच दिया। यह एक लम्बी सी, सीधी-सादी काट की पोशाक थी जो कि कमर पर आकर जमा हो जाती थी और ज़ोना नाम की एक पेटी से कस दी जाती थी। इस वस्त्र पर अकेली सजावट जो थी वह

उसके दामन पर की एक सुनहरी पट्टी और सच बात यह है कि इस वस्त्र को किसी सजावट की ज़रूरत न थी क्योंकि उसकी रेखाएं बहुत ही सीधी और सुन्दर थीं। मगर वारिनिया कभी इस बात को भूल न पाती थी कि उस कपड़े के बीच से उसके शरीर की एक-एक रेखा आर-पार दिखलायी देती है, यह नग्नता ही वह चीज़ थी जिससे कि उसको डर मालूम होता था और अपमान अनुभव होता था और उसको अच्छा मालूम हो रहा था कि उसकी छाती से थोड़ा-थोड़ा दूध निकल रहा था जो कि उस वस्त्र को गीला कर रहा था और उसके रूप को बिगाड़ रहा था।

इस सब के ऊपर, रेशम का एक बड़ा-सा हल्का पीला शाल डाला गया; वारिनिया उसको लबादे की तरह पहने हुए थी। उसने अपने वस्त्रों को उस लबादे से ढँक रक्खा था। हर बार जब वह खाने के लिए जाती थी तो क्रैसस कहता था—प्रिये, तुम क्यों अपने इस सुन्दर शरीर को इस तरह से छिपाये रहती हो? अपने सपारम को आज़ादी के साथ ठीक से गिरने दो। उसके नीचे के वस्त्र का मूल्य दस हज़ार सेस्टर्स है। अगर किसी और को नहीं तो कम-से-कम मुझको तो उसको देखने का सुख मिलने दो।—वारिनिया आज भी जब खाने के कमरे में दाख़िल हुई तो क्रैसस ने फिर यही बात कही और आज रात फिर उसने आज्ञाकारिणी की भाँति शाल को इस तरह से गिर जाने दिया कि उसके शरीर का सामने का भाग खुल जाय।

क्रैसस ने कहा—वारिनिया, तुम मेरे लिए एक पहेली हो। मैं तुमको बिलकुल नहीं समझ पाता। मेरा ख़याल है मैंने तुमको एक बार बतलाया था कि मुझको सिस्-ऐल्पाइन गॉल में अपने ख़ेमे में एक शाम उस मर्दूद लानिस्ता बाटियाटस के संग गुज़ारने का सौभाग्य—या दुर्भाग्य—मिल चुका है। उसने तुम्हारे बारे में मुझको बतलाया था। उसके बयान से ऐसा मालूम होता था कि जैसे तुम एक जंगली बिल्ली हो। उसने एक ऐसी औरत का बहुत ही सजीव चित्रण किया था जो किसी भी तरह वश में न की जा सकती हो। मगर तुम्हारे अन्दर तो मैं उस चीज़ का कोई चिन्ह नहीं देखता। तुम तो असाधारण रूप से शान्त और आज्ञाकारिणी हो।

—हाँ।

—पता नहीं वह कौन-सी चीज़ है जिसने तुम्हारे अन्दर यह परिवतन ला दिया है। शायद तुम मुझको बतलाना न चाहोगी।

—मैं नहीं जानती। मैं आपको कुछ नहीं बतला सकती।

—मेरा ख़याल है कि तुम जानती हो मगर छोड़ो इस बात को। आज रात तो तुम बहुत ही सुन्दर दिखायी दे रही हो। खूब अच्छी तरह नहायी-धोयी हो, अच्छी तरह तुम्हारा सिंगार हुआ है—वारिनिया, इस तरह कब तक

चलेगा ? मैं तुम्हारे संग बड़ी शराफ़त से पेश आया हूँ, कि झूठ कहता हूँ ? शोक तो जैसे होता ही है, उस पर किसी का क्या बस मगर इस चीज़ को ज़रा नमक की खानों के मुकाबिले में रखकर देखो। मैं तुम्हारे बच्चे को तुमसे छीन सकता हूँ और उसको तीन सौ सेस्टर्स में बाज़ार में बेच सकता हूँ और फिर तुमको खान में भेज दे सकता हूँ। तुम्हीं बताओ कि क्या तुमको यह अच्छा लगेगा ?

—यह मुझको अच्छा नहीं लगेगा।

—मुझे इस तरह बात करने से नफ़रत है, क्रैसस ने कहा।

—जैसी आपकी मर्जी। आप जैसे चाहें बात करें। मैं आपकी गुलाम हूँ। आप मेरे मालिक हैं।

—मैं तुम्हें अपना गुलाम नहीं बनाना चाहता वारिनिया। सच बात यह है कि उससे भी ज़्यादा या उतना ही मैं तुम्हारा गुलाम हूँ। मैं तुम्हें उसी तरह पाना चाहता हूँ जिस तरह एक मर्द एक औरत को पाता है।

—मैं आपको रोक तो सकती नहीं—उसी तरह जैसे घर की कोई दूसरी गुलाम औरत नहीं रोक सकती।

—कैसी भयानक बात तुम कह रही हो !

—क्यों यह बात ऐसी भयानक क्यों है ? क्या रोम में लोग ऐसी चीज़ों के बारे में बात नहीं करते ?

—मैं तुम्हारे संग बलात्कार नहीं करना चाहता वारिनिया। मैं उस तरह तुमको नहीं पाना चाहता जिस तरह कि मैं एक गुलाम औरत को पाता हूँ। हाँ—यहाँ पर गुलाम औरतें रही हैं। मैं ठीक नहीं कह सकता कि कितनी औरतों के संग मैं सोया हूँगा। औरतों के संग और आदमियों के संग। मैं तुमसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझको मेरे असली रूप में जानो। क्योंकि अगर तुम मुझको प्यार करोगी तो मैं कुछ और हो जाऊँगा। एक नया आदमी, और अच्छा आदमी। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि लोग मुझको दुनिया का सबसे दौलतमन्द आदमी कहते हैं ? हो सकता है कि मैं न होऊँ लेकिन अगर तुम मेरे साथ हो तो हम दोनों सारी दुनिया पर राज्य कर सकते हैं।

—मैं दुनिया पर राज नहीं करना चाहती, वारिनिया ने कहा। उसकी आवाज़ वैसी ही सपाट आवाज़ थी, उसमें कहीं कोई उतार-चढ़ाव न था, वह एक मुर्दा आवाज़ थी जैसी कि हमेशा क्रैसस के संग बोलते वक़्त होती थी।

—क्या तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं है कि मैं बदल जाऊँगा अगर तुम मुझे अपना प्यार दोगी ?

—मुझे नहीं मालूम। मुझे इसकी परवाह भी नहीं।

—मगर तुमको परवाह होगी अगर बात तुम्हारे बच्चे पर आकर गिरे। तुम ऐसी कोई दाई क्यों नहीं ले लेतीं जो बच्चे को दूध पिला दिया करे? यह क्या कि बैठी हो और छाती से दूध बह रहा है—

—आप हर वक्त हमेशा बच्चे की धमकी क्यों दिया करते हैं? बच्चा आपका है और मैं आपकी हूँ। क्या आपका यह ख़याल है कि मेरे बच्चे को मारने की धमकी देकर आप मेरा प्यार जीत लेंगे?

—मैंने तुम्हारे बच्चे को मारने की धमकी नहीं दी।

—आपने—

—मुझे अफ़सोस है वारिनिया। हम लोग हमेशा इसी तरह इसी चक्कर में घूम-घूमकर बात किया करते हैं। खाना तो खाओ। मुझसे जो कुछ बन पड़ता है मैं करता हूँ। मैं तुम्हारे सामने ऐसा खाना पेश करता हूँ। यह मत कहो कि तुमको इस चीज़ की परवाह नहीं है। ऐसे एक खाने की जितनी क़ीमत होती है उसमें एक मकान ख़रीदा जा सकता है। तो कम-से-कम इसको खाओ तो, एकाध टुकड़ा तो खाओ। देखो मैं तुमको आज का एक बड़ा दिलचस्प वाक़या सुनाता हूँ। हो सकता है कि तुम्हारा जी इससे कुछ बहल जाय और तुम थोड़ा-बहुत खा सको।

—मुझको जितना खाना चाहिए मैं खा लेती हूँ, वारिनिया ने कहा।

एक गुलाम दाख़िल हुआ और उसने चाँदी के एक तश्त में एक बत्तख़ लाकर रक्खी। दूसरा गुलाम उसको तराशने लगा। क्रैसस की मेज़ गोल थी—आजकल ऐसी ही मेज़ों का चलन था—और एक ही लम्बी-सी गद्देदार कुर्सी मेज़ के दो तिहाई हिस्से तक फैली हुई थी। खानेवाले पैर समेटकर और बहुत से रेशमी तकियों के सहारे बैठकर खाना खाते थे।

—मिसाल के लिए इस बत्तख़ को ही देखो। यह सीख पर भूनी गयी है और इसके अन्दर तरफ़ास भरी हुई है और इसे शराब में भिगोये हुए आड़ुओं के संग पकाया गया है।

—बड़ा स्वादिष्ट है, वारिनिया ने कहा।

—हाँ तो मैं आज तुमको का एक बड़ा दिलचस्प वाक़या सुना रहा हूँ। स्नानागार में ग्रैकस भी आया हुआ था। वह मुझसे इतनी सख़्त नफ़रत करता है कि अब उसके छिपाये यह बात नहीं छिपती। अजीब बात है कि मैं उससे नफ़रत नहीं करता। अरे, मैं भूल गया, तुम उस आदमी को नहीं जानतीं। वह सेनेट का एक सदस्य है और रोम की राजनीतिक दुनिया में वह एक बड़ी ताक़त है—या था। उसकी ताक़त अब हिलने लगी है। वह उन नीचे कुल के लोगों में है जो गंदी नाली में से निकलकर ऊपर उठे हैं और जिन्होंने चालबाज़ी से और चुनाव के तिकड़मों से दौलत इकट्ठा की है।

बड़ा मोटा थुलथुल आदमी है। एक मोटा सुअर ही समझो। जब तक आदमी के पास आत्मगौरव न हो, स्वाभिमान न हो, उसका शरीर भी योंही सा रहता है। आम तौर पर यह बात देखी गयी है। और न ऐसे आदमियों में कोई संवेदनशीलता ही होती है। इसलिए वह तब तक उस गद्दी पर बैठा रहेगा जब तक कि वह गद्दी ही उसके नीचे से खिसक नहीं जाती। हाँ तो मैं फ़ौरन ताड़ गया कि इस आदमी को मुझसे किसी चीज़ की ज़रूरत है। वहाँ के गलियारे में घूम घूमकर उसने अपने मोटे थुलथुल शरीर की खूब नुमाइश की और फिर अन्त में अपनी बात उगल दी। वह तुमको ख़रीदना चाहता है। तुम्हारे लिए उसने दाम भी काफ़ी ऊँचे लगाये और जब मैंने कोई ध्यान नहीं दिया तो उसने उस रक़म को दूना कर दिया। इरादा करके आया था कि तुमको ख़रीदेगा ही। मैंने उसका अपमान भी किया मगर कोई चीज़ उसकी चमड़ी को भेद कर अन्दर जैसे पहुँचती ही नहीं।

—आपने मुझको बेच क्यों नहीं दिया?—वारिनिया ने पूछा।

—उसके हाथ? मेरी जान, एक बार ज़रा तुम उसको देख तो लो, जब वह अपना थुलथुल शरीर लेकर चलता है। क्या तुम्हारे नज़दीक इस चीज़ का भी कोई महत्व नहीं है?

—मेरे नज़दीक इस चीज़ का कोई महत्व नहीं है, वारिनिया ने कहा।

क्रैसस ने अपने सामने की रकाबी हटा दी और वारिनिया को एकटक देखने लगा। उसने एक घूंट में शराब की अपनी प्याली खाली कर दी, फिर दुबारा शराब ढाली और फिर एकाएक गुस्से में आकर प्याली कमरे के पार दूर फेंक दी। अब वह अपने आपको संयत करके बोल रहा था।

—क्यों तुमको मुझसे इतनी घृणा है?

—क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमसे प्यार करूँ क्रैसस?

—हाँ। क्योंकि मैंने तुमको इतना कुछ दिया है जो तुमको स्पार्टकस से भी कभी नहीं मिला था।

—तुमने मुझको ऐसा कुछ भी नहीं दिया, उसने कहा।

—क्यों? ऐसा तुम क्यों कहती हो? वह क्या था? क्या वह ईश्वर था?

वारिनिया ने कहा—वह ईश्वर नहीं था। वह एक बहुत साधारण आदमी था। वह एक सीधा-सादा आदमी था। वह एक गुलाम था। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इसका क्या मतलब होता है? तुम्हारी तो सारी ज़िन्दगी गुलामों के बीच गुज़री है।

—और अगर मान लो मैं तुमको देहात में ले जाऊँ और वहाँ कहीं पर किसी खेतिहर को दे दूँ तो क्या तुम उसके साथ रह सकोगी और उसको प्यार कर सकोगी?

--मैं सिर्फ़ स्पार्टकस से प्यार कर सकती हूँ। मैंने कभी किसी दूसरे आदमी को प्यार नहीं किया। मैं कभी किसी दूसरे आदमी को प्यार नहीं करूंगी। मगर मैं एक खेत में काम करनेवाले गुलाम के संग रह सकती हूँ। वह कुछ-कुछ स्पार्टकस के समान होगा। गो कि यह बात सच है कि स्पार्टकस खान में काम करनेवाला गुलाम था, खेत पर काम करनेवाला गुलाम नहीं। वह बस इतना ही था। तुम सोचते होगे कि मैं बहुत नाराज़ हूँ और तुम ठीक ही सोचते हो, मैं नादान हूँ और बेवकूफ भी हूँ। कभी-कभी मैं समझ ही नहीं पाती कि तुम कह क्या रहे हो। मगर स्पार्टकस मुझसे भी ज़्यादा सीधा था। तुम्हारे मुकाबले में वह एक बच्चा था, भोला बच्चा। वह पवित्र आदमी था, निष्कलंक आदमी था।

क्रैसस ने अपने आपको संयत करते हुए पूछा—निष्कलंक से तुम्हारा क्या मतलब? मैंने तुम्हारी बहुत सी बकवास ख़ामोशी से सुनी है! स्पार्टकस बाग़ी था, समाज का दुश्मन था। वह एक पेशेवर बूचड़ था जो बाद में एक बाग़ी खूनी बन गया और जो रोम की बनायी हुई हर खूबसूरत और अच्छी चीज़ का दुश्मन था। रोम ने सारी दुनिया को शान्ति दी और सभ्यता दी मगर इस ग़लीज़ गुलाम को सिर्फ़ एक काम आता था, आग लगाना और बर्बाद करना। देखो कितने मकान खँडहर हुए पड़े हैं क्योंकि वे गुलाम न तो सभ्यता को जानते थे और न समझते थे। उन्होंने क्या किया? चार साल तक जो वे रोम से लड़े उन चार सालों में उन्होंने कौन सी कामयाबी हासिल की? कितने हज़ारों लोग मर गये, सिर्फ इसीलिए न कि उन गुलामों ने बग़ावत की थी? दुनिया में कितना दुःख-दर्द और कितनी तकलीफ़ आयी और सिर्फ़ इसलिए कि इस ग़लीज़ गुलाम ने आज़ादी का सपना देखा—चीज़ों को बर्बाद करने की आज़ादी!

वह ख़ामोश बैठी थी, उसका सिर झुका हुआ था, उसकी आँखें नीची थीं।

—तुम मुझको जवाब क्यों नहीं देतीं?

—मैं समझ नहीं पाती कि आपको क्या जवाब दूँ, उसने धीरे से कहा, मैं नहीं जानती कि इन सवालों का क्या मतलब होता है।

—मैंने तुम्हारी कही हुई ऐसी-ऐसी बातें सुनी हैं जैसी बातें मैंने दुनिया में किसी के मुँह से न सुनी होतीं। तुम मुझको जवाब क्यों नहीं देतीं? तुम्हारा क्या मतलब था जो तुमने कहा कि स्पार्टकस पवित्र था!? क्या मैं उससे कम पवित्र हूँ?

वारिनिया ने कहा—मैं आपको नहीं जानती। मैं आपको नहीं समझती। मैं रोमनों को नहीं समझ पाती। मैं तो सिर्फ़ स्पार्टकस को जानती हूँ।

—और यह तो बतलाओ कि वह किस अर्थ में पवित्र था?

—यह मुझे नहीं मालूम। क्या आप यह नहीं सोचते कि मैंने खुद अपने आपसे कई बार सवाल किया है? वजह शायद यह हो कि वह एक गुलाम था। या शायद इसलिए कि उसने बहुत तकलीफ़ सही थी। आप गुलाम की तकलीफ़ को भला कैसे समझ सकते हैं? आप खुद तो कभी गुलाम नहीं रहे।

—मगर पवित्र? तुमने पवित्र कहा था?

—मेरे लिए वह पवित्र था। वह एक भी बुरा काम नहीं कर सकता था।

—और यह तो बताओ, क्या वह बग़ावत और इस तरह आधी दुनिया में आग लगा देना भी अच्छी बात थी?

—हमने दुनिया में आग नहीं लगायी। हम सिर्फ़ अपनी आज़ादी चाहते थे। हम सिर्फ़ यह चाहते थे कि शान्ति से ज़िन्दगी बिता सकें। मुझे आप लोगों की तरह बात करना नहीं आता। मैं शिक्षित नहीं हूँ। मैं आपकी भाषा भी ठीक से नहीं बोल पाती। जब आप मुझसे बात करते हैं तो मेरा दिमाग़ गड़बड़ में पड़ जाता है। जब मैं स्पाटकस के संग रहती थी तो इस तरह की कोई गड़बड़ी मेरे दिमाग़ में कभी पैदा नहीं हुई। मैं जानती थी कि हम क्या चाहते हैं। हम आज़ाद होना चाहते थे।

—मगर भूलो मत कि तुम लोग गुलाम थे।

—हाँ। मगर सवाल यह उठता है कि क्या ज़रूरी है कि कुछ लोग गुलाम हों और कुछ लोग आज़ाद?

क्रैसस ने पहले से भी अधिक कोमल स्वर में कहा—तुम अब काफ़ी दिनों से रोम में रह रही हो वारिनिया। मैं अपनी पालकी में तुम्हें शहर के बीच होकर ले गया हूँ। तुमने रोम की शक्ति देखी है, रोम की अनन्त असीम शक्ति। रोम की सड़कें सारी दुनिया में फैली हुई हैं। रोम की सेनाएँ सभ्यता के सभी सीमांतों पर खड़ी हैं और अन्धकार की शक्तियों को आगे बढ़ने से रोक रही हैं। रोम के दूत के राजदण्ड को देखकर राष्ट्र काँपते हैं और जहाँ-जहाँ समुद्र है वहाँ-वहाँ रोमन नौसेना का राज है। तुमने गुलामों को हमारी कुछ सेनाओं को तहस-नहस करते देखा। मगर यहाँ इस शहर में उस चीज़ की कोई हल्की सी लहर भी नहीं दिखायी दी। अगर किसी की अक़्ल ठीक हो तो सोचने की बात है कि क्या सचमुच तुम यह समझती थीं कि कुछ थोड़े से बाग़ी गुलाम दुनिया की सबसे प्रबल शक्ति को उलट देंगे, एक ऐसी शक्ति को जिससे अधिक प्रबल शक्ति संसार ने आज तक नहीं देखी, एक ऐसी शक्ति जिसके मुक़ाबले में पुराने ज़माने के सभी साम्राज्य कुछ भी नहीं थे? क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती? रोम अनश्वर है, शाश्वत है। रोमन प्रणाली ही मानवता की निकाली हुई आज तक की सबसे अच्छी प्रणाली है और वह चिर काल तक यों ही चलेगी। मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात को

समझो। स्पार्टकस के लिए रोओ मत। इतिहास ने स्पार्टकस के संग न्याय किया। उसका जो प्राप्य था वह उसको मिला। तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारी अपनी ज़िन्दगी है जिसे तुमको जीना है।

—मैं स्पार्टकस के लिए नहीं रोती। कोई भी कभी भी स्पार्टकस के लिए नहीं रोयेगा। मगर स्पार्टकस को भूला भी नहीं जा सकेगा।

—आह! वारिनिया वारिनिया—तुम कितनी बेवकूफ़ हो! स्पार्टकस अब केवल एक प्रेत है और कल वह प्रेत भी हवा के सङ्ग उड़ जायगा। आज से दस बरस बाद कोई उसका नाम भी याद नहीं करेगा। और क्यों याद करे कोई? क्या गुलाम युद्ध का कोई इतिहास है? स्पार्टकस ने निर्माण नहीं किया; उसने केवल ध्वंस किया। और दुनिया सिर्फ़ उनको याद करती है जो निर्माण करते हैं।

—उसने आशा का निर्माण किया।

—वारिनिया, तुम क्यों नादान लड़की की तरह ऐसी फ़िज़ूल बातें दुहराती रहती हो। उसने आशा का निर्माण किया। आशा किसके लिए? और कहाँ हैं आज वे आशाएँ? वे राख बन चुकी हैं, धूल हो चुकी हैं और हवा उनको उड़ाकर ले जा चुकी है। क्या तुम यह नहीं देखतीं कि दुनिया में कोई दूसरा तरीक़ा इसके अलावा नहीं है और न कभी होगा—कि मज़बूत कमज़ोर पर राज करे? वारिनिया, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। इसलिए नहीं कि तुम गुलाम हो बल्कि इसके बावजूद कि तुम गुलाम हो।

—हाँ—

—मगर स्पार्टकस पवित्र था!—उसने व्यंग के तीखे स्वर में कहा।

—हाँ, स्पार्टकस पवित्र था।

—वही तो मुझको बतलाओ। मुझको बतलाओ कि वह किस अर्थ में पवित्र था।

—मैं आपको बतला नहीं सकती। जो बात आपकी समझ में नहीं आ सकती उसे मैं आपको कैसे समझाऊँ।

—मैं उसको समझना चाहता हूँ। मैं उससे लड़ना चाहता हूँ। मैं उससे तब लड़ा जब कि वह ज़िन्दा था और मैं उससे आज भी लड़ूँगा जब कि वह मर चुका है।

वारिनिया ने सिर हिलाया—आप क्यों इस तरह मेरे पीछे पड़े रहते हैं। आप मुझे बेच क्यों नहीं देते? आप मेरे सङ्ग जो कुछ करना चाहते हैं करते क्यों नहीं? आप मुझे हर वक़्त तङ्ग क्यों किया करते हैं?

—वारिनिया, मैं तुमसे सिर्फ़ एक सीधी-सी बात पूछना चाहता हूँ। क्या

स्पार्टकस नाम का कोई आदमी सचमुच था ? कोई मुझे उसके बारे में नहीं बतला सकता ?

—मैंने आपको बतलाया—वह रुक गयी और अब क्रैसस ने नरम स्वर में कहा—कहो वारिनिया, कहो। मैं तुम्हारा दोस्त होना चाहता हूँ मैं नहीं चाहता कि तुमको मुझसे बात करने में डर मालूम हो।

—मुझे कोई डर नहीं है। स्पार्टकस को जानने के बाद मैं फिर कभी नहीं डरी मगर उसके बारे में बतलाना कठिन है। आप उसको खूनी और बूचड़ कहते हैं। मगर वह एक ऐसा आदमी था जिससे ज़्यादा नेक, जिससे ज़्यादा पवित्र आदमी कभी न रहा होगा।

—हाँ, मगर यही तो मुझको बतलाओ कि कैसे ? मैं चाहता हूँ कि तुम मुझको बतलाओ कि वह किस माने में इतना नेक और इतना पवित्र था। मैं समझना चाहता हूँ कि उसने ऐसा क्या किया जो तुम उसके बारे में ऐसा ख़्याल रखती हो। हो सकता है कि अगर मैं उसको समझ सकूँ तो शायद मैं भी स्पार्टकस की तरह बन सकूँ। वह खाने को चख भी नहीं रहा था और बस शराब की प्यालियों पर प्यालियाँ ढालता चला जा रहा था। उसके स्वर में अब व्यंग न था।—शायद मैं भी स्पार्टकस की तरह हो सकूँ।

—आप मुझको मजबूर कर रहे हैं कि मैं इस चीज़ के बारे में बोलूँ मगर मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे आपको अपनी बात समझाऊँ ? हम गुलामों में औरतों और मर्दों का सम्बन्ध वैसा नहीं होता जैसा कि आप लोगों के यहाँ होता है। हमारे यहाँ औरत और मर्द बराबर होते हैं। हम एक जैसे काम करते हैं, एक जैसे कोड़े खाते हैं, एक जैसे मरते हैं और एक जैसी गुमनाम कब्र में सो जाते हैं और शुरू-शुरू में हम गुलाम औरतों ने नेज़े और तलवारें भी उठायी थीं और अपने मर्दों के सङ्ग कन्धे से कन्धा मिलाकर हम लड़ी भी थीं। स्पार्टकस मेरा साथी था। हम एक थे। हम दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए थे। उसको जब कोई घाव लगता था तो उस घाव को छूने मात्र से मुझको भी दर्द होने लगता था और उसका घाव मेरा घाव हो जाता था। और हमेशा, हर हालत में, हम बराबर थे। जब उसका सबसे अच्छा दोस्त, क्रिक्सस, मरा तो स्पार्टकस ने अपना सिर मेरी गोद में रख लिया और नन्हें से लड़के की तरह रोने और सुबकने लगा। और जब मेरा पहला, छठवांसा, बच्चा मरा पैदा हुआ तो मैं भी उसी तरह रोयी थी और स्पार्टकस ने मेरी देखभाल की थी। अपनी सारी ज़िन्दगी में उसने कभी किसी दूसरी औरत को नहीं लिया था और चाहे जो हो जाय मैं भी कोई दूसरा आदमी नहीं लूंगी। पहली बार जब मैं उसकी बाँहों में लेटी थी तो मुझे डर मालूम हुआ। मगर फिर मुझको एक विलक्षण अनुभूति हुई। मैंने जाना कि मैं मरूँगी नहीं। मेरा प्रेम अमर है।

अब कोई चीज़ मुझे चोट न पहुँचा सकेगी। मैं उसके जैसी हो गयी और मेरा ख़याल है कि वह भी कुछ कुछ मेरे जैसा हो गया। हम दोनों के बीच हमारी कोई बात एक दूसरे से छिपी हुई न थी। पहले मैं डरा करती थी कि वह मेरे शरीर के दाग़ देख लेगा। मगर फिर मैंने जाना कि दाग़ में और एकदम स्वच्छ चमड़ी में कोई अन्तर नहीं होता। वह उन दाग़ों के बावजूद मुझको इसी तरह प्यार करता था। मगर मैं आपको उसके बारे में क्या बतला सकती हूँ? लोग उसका कुछ ऐसा ख़ाका खींचते हैं कि जैसे वह कोई देव हो, मगर वह देव न था। वह एक साधारण आदमी था। वह सज्जन था और नेक था और उसके अन्दर दूसरों के लिए प्यार भरा हुआ था। वह अपने साथियों को प्यार करता था। वे जब आपस में मिलते थे तो एक दूसरे को गले लगाते थे और होंठों पर चूमते थे। मैंने तुम रोमनों को कभी एक दूसरे को गले लगाते या चूमते नहीं देखा गो कि दूसरी तरफ़ तुम्हारे यहाँ यह तक होता है कि मर्द वैसे ही मज़े से दूसरे मर्द के साथ सोते हैं जैसे कि औरत के साथ। स्पार्टकस जब कभी मुझसे कुछ कहता था तो मैं समझ जाती थी कि उसका क्या मतलब है। मगर तुम्हारा क्या मतलब है मैं नहीं समझ पाती। रोमन जब बोलते हैं तो उनका क्या मतलब होता है वह भी मैं नहीं समझ पाती। गुलाम लोग जब आपस में लड़ते थे और तू तू मैं मैं करते थे तो स्पार्टकस उनको अपने पास बुलाता था और वे सब अपनी-अपनी बातें कहते थे और तब स्पार्टकस उनसे बात करता था और वे लोग सुनते थे। वे बुरी-बुरी हरकतें भी करते थे मगर हमेशा बेहतर बनना चाहते थे। वे अकेले न थे। वे एक बड़ी चीज़ के हिस्से थे; वे एक दूसरे के हिस्से भी थे। पहले वे लूट के माल में से चुरा लिया करते थे। स्पार्टकस ने मुझको बतलाया था कि ऐसा करने में दोष उनका नहीं उनके संस्कारों का है; वे ऐसी जगहों से आते थे जहाँ वे हमेशा चोरियां देखा करते थे। मगर हमारा जो मिला-जुला भण्डार घर था उसमें कभी ताला नहीं लगता था और न कभी कोई उस पर पहरा ही देता था और जब उन लोगों ने देखा कि वे चोरी किये बिना भी अपनी ज़रूरत की हर चीज़ ले सकते हैं और चोरी के माल के उपयोग का भी कोई ढङ्ग उनके पास नहीं है तो उन्होंने चोरी करना बन्द कर दिया। भूख और ग़रीबी का उनका डर छूट गया। और स्पार्टकस ने यह बात मुझको सिखलायी थी कि जितनी भी बुरी हरकतें आदमी करते हैं, उन सब की जड़ में उनका डर होता है। उसने मुझको दिखलाया कि आदमी कैसे बदल जाते हैं और भीतर-बाहर से नेक और ख़ूबसूरत हो जाते हैं अगर वे सिर्फ़ इतना करें कि भाई-भाई की तरह मिल कर रहें और अपनी तमाम चीज़ें आपस में बाँट लिया करें। मैंने इस चीज़ को देखा। मैं इसके बीच रही। मगर एक ख़ास तरीक़े से मेरा आदमी हमेशा

से ऐसा ही था। वह इसीलिए उनका नेता बन सका। इसीलिए वे लोग उसकी बात सुनते थे। वे लोग महज़ खूनी और बूचड़ नहीं थे। वे ऐसे लोग थे जैसे कि दुनिया ने उनके पहले देखे नहीं थे। वे भविष्य की सूचना थे कि लोग कैसे हो सकते हैं। इसीलिए तुम मुझको कोई चोट नहीं पहुँचा सकते। इसीलिए मैं तुमको प्यार नहीं कर सकती।

—निकल जाओ यहाँ से, क्रैसस ने कहा, दूर हो जाओ मेरे सामने से !

६

ग्रैकस ने फिर से फ्लैवियस को बुलवाया। वे दोनों इस समय एक ही नियति के समभागी थे। वे लोग पहले से भी ज्यादा अब भाई-भाई नज़र आते थे, वे दोनों मोटे, थुलथुल, बुढ़ापे की तरफ़ बढ़ते हुए आदमी। वे दोनों बैठे एक दूसरे को समझती-बूझती आँखों से देखते रहते थे। ग्रैकस को फ्लैवियस की ज़िन्दगी के नाटक का दर्द मालूम था। फ्लैवियस ने हमेशा उन लोगों की तरह बनने की कोशिश की थी जो जीवन में सफल रहे थे, मगर स्वयं उसे कभी सफलता नहीं मिली। वह उन लोगों की एक-एक भाव-भंगिमा की नक़ल करता था मगर आख़िरकार वह बस नक़ल बनकर रह जाता था। वह मक्कार भी न था; वह महज़ एक मक्कार आदमी की नक़ल था। और फ्लैवियस ग्रैकस को देखता था और समझता था कि पुराना ग्रैकस अब चला गया, हमेशा के लिए चला गया और अब कभी लौटकर न आयेगा। यह कैसी भयानक बात ग्रैकस के संग हुई थी, इसका केवल एक हलका-सा संकेत उसके पास था मगर वह संकेत ही काफ़ी था। ग्रैकस के रूप में उसको अपना एक रक्षक मिला हुआ था और अब उसका यही रक्षक उसकी रक्षा करने में असमर्थ था। शायद यह चीज़ होनी ही थी, तो हो !

फ्लैवियस ने पूछा—क्या है ? मुझको फिर से तङ्ग मत करो। वह वारिनिया ही है। मैंने पक्का पता लगा लिया है, अगर उस चीज़ की तुमको ज़रूरत हो। वह वारिनिया ही है, स्पार्टकस की बीबी। अब तुमको मुझसे क्या चाहिए ?

ग्रैकस ने पूछा—तुमको किस बात का डर है ? जो लोग मेरी मदद करते हैं मैं कभी उनके सङ्ग दग़ा नहीं करता। तुमको आख़िर किस बात का डर है ज़रा मैं भी तो सुनूँ ?

फ्लैवियस ने बड़े सताये हुए अन्दाज़ में कहा—मुझे तुमसे डर लगता है। मुझे इस बात से डर लगता है कि अब तुम मुझसे वह काम करने के लिए कहनेवाले हो। अगर तुम चाहो तो नगर के सैन्य-दल को बुला सकते हो। तुम्हारे पास अपने गुण्डे हैं और उन गुण्डों के गिरोह हैं और मुहल्ले के

मुहल्ले हैं जिनके एक-एक नागरिक को तुम अपने काम के लिए बुला सकते हो। तब तुम उनको क्यों नहीं बुलाते ? तब तुम मेरे जैसे एक बुड्ढे खूसट के पास क्यों आते हो जो कभी शायद कुछ कर सकता था ? और मैं तो शायद कभी कुछ नहीं कर सकता था। मैं तो ज़िन्दगी भर एड़ियाँ ही घिसता रहा हूँ, दूसरा कुछ मैंने नहीं किया। तुम अपने दोस्तों के पास क्यों नहीं जाते ?

ग्रैकस ने कहा—उनके पास मैं नहीं जा सकता। इस काम के लिए तो हरगिज़ नहीं जा सकता।

—क्यों ?

—तुम नहीं जानते क्यों ? मैं उस औरत को पाना चाहता हूँ। मैं वारिनिया को पाना चाहता हूँ। मैंने उसको ख़रीदने की कोशिश की। मैंने उसके लिए क्रैसस को दस लाख सिक्के देने चाहे और फिर इस रक़म को दूना भी कर दिया। क्रैसस ने मेरा अपमान किया और मेरी हँसी उड़ायी।

—अरे नहीं नहीं, बीस लाख ! बीस लाख !—फ्लैवियस इस बात को सोचकर ही काँपने लगा। वह अपने मोटे-मोटे होंठों को चाटने लगा और उसके हाथ की मुट्ठियाँ मानसिक आवेग के कारण रह-रहकर खुलने और बन्द होने लगीं।—बीस लाख ! इसका तो मतलब हुआ पूरी दुनिया। पूरी दुनिया एक छोटे से थैले में। तुम उस थैले को अपने साथ-साथ रख सकते हो और पूरी दुनिया तुम्हारे उस थैले के भीतर बन्द है। और तुमने एक औरत के लिए इतनी बड़ी रक़म देनी चाही ? हे ईश्वर। ग्रैकस—तुम आख़िर क्यों उसको पाना चाहते हो ? मैं तुम्हारे किसी भेद को मालूम नहीं करना चाहता। तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए एक काम करूँ। लेकिन अगर तुमु मझको यह नहीं बतलाओगे कि तुम क्यों उसको पाना चाहते हो तो मैं अभी इसी वक़्त यहाँ से चला जाऊँगा। मुझको यह जानना ही है कि तुम्हें उस औरत की ऐसी क्या ज़रूरत है।

—मुझे उससे प्रेम है, ग्रैकस ने थके हुए सपाट स्वर में कहा।

—क्या !

ग्रैकस ने सिर हिलाया। अब उसके भीतर कोई स्वाभिमान बाक़ी न बचा था। उसने सिर हिलाया और उसकी आँखें लाल हो गयीं और उनमें पानी भर आया।

—मैं समझा नहीं। प्रेम ? प्रेम किस चीज़ को कहते हैं ? तुमने कभी शादी नहीं की। किसी औरत का जाल कभी तुम्हारे ऊपर नहीं पड़ा। और अब तुम कहते हो कि तुम्हें इस गुलाम लड़की से प्रेम है और इतना प्रेम है कि तुम उसके लिए बीस लाख सिक्के देने के लिए तैयार हो। यह बात मेरी समझ में नहीं आती।

राजनीतिज्ञ ने गुर्राकर कहा—ज़रूरी है कि तुम इस बात को समझो ? तुम इसको नहीं समझ सकते। तुम इसको नहीं समझ सकते। तुम मेरी तरफ़ देखते हो और पाते हो कि मैं बुड्ढा हूँ और मोटा हूँ और नामर्द तो जैसे तुमने मुझको हमेशा समझा ही। अब इसका चाहे तुम जो भी मतलब लगाओ, जो कुछ चाहो समझो या न समझो। मुझे कभी ऐसी औरत नहीं मिली जो कि इन्सान हो, जिसमें कि इन्सानियत हो; हमारी कितनी औरतों में वह चीज़ मिलती है ? मुझे उनसे डर मालूम होता है और नफ़रत होती है। मैं कह नहीं सकता, मुमकिन है कि हमीं ने उनको ऐसा बनाया हो। अब मैं घुटनों के बल घिसटकर इस औरत के पास जाना चाहता हूँ। मैं बस यह चाहता हूँ कि वह एक बार मुझको नज़र उठाकर देखे और मुझसे कहे कि उसकी नज़रों में मेरी कुछ वक़त है। मैं यह नहीं जानता कि उसके लिए क्रैसस क्या है—मगर वह क्रैसस के लिए क्या है यह मैं समझ सकता हूँ। उसे मैं खूब अच्छी तरह समझ सकता हूँ। मगर क्रैसस की उसकी नज़रों में भला क्या वक़त हो सकती है ? वही तो है जिसने उसके पति का ध्वंस किया, जिसने स्पार्टकस को तोड़कर गिरा दिया। यह कैसे मुमकिन है कि वह क्रैसस को देखे और उसका मन घृणा से भर न उठे ?

—औरतें कर सकती हैं, फ्लैवियस ने सिर हिला कर कहा—क्रैसस दाम को चढ़ाता चला जा सकता है, इतना कि कहीं उसका अन्त न हो। तुमको आश्चर्य होगा।

—ओह, तुम बिलकुल ग़लत बात कह रहे हो ! तुम बिलकुल गधे हो ! मोटा थुलथुल गधा कहीं का।

—अब फिर वह चीज़ मत शुरू करो ग्रैकस।

—तो फिर ऐसे उल्लू की तरह बात मत करो। मुझे उस औरत की ज़रूरत है। तुम जानते हो कि उसका दाम मैंने कितना लगाया है।

—तुम्हारा मतलब है कि तुम उतना दाम दोगे—

—हाँ।

—तुम इस चीज़ के नतीजों से वाकिफ़ हो ? फ्लैवियस ने सँभल-सँभलकर सतर्कता से कहा—मैं अपने लिए नहीं पूछता। अगर मैं यह सौदा पटा देता हूँ तो मैं तुमसे पैसे ले लूँगा और मिस्र चला जाऊँगा और सिकन्दरिया में एक मकान और कुछ गुलाम लड़कियाँ खरीद लूँगा और अपनी बाक़ी ज़िन्दगी एक सामंत की तरह गुज़ारूँगा। मैं ऐसा कर सकता हूँ, अगर तुम नहीं कर सकते ग्रैकस। तुम ग्रैकस हो, तुम सेनेट के सदस्य हो, तुम इस वक्त़ रोम की सबसे बड़ी ताक़त हो। तुम हार नहीं सकते। तुम उसको लेकर क्या करोगे ?

—मुझे इस वक्त उस चीज़ से कोई बहस नहीं है।

—नहीं ? तुमको मालूम है कि क्रैसस क्या करेगा। आज तक कोई क्रैसस को हरा नहीं सका। आज तक क्रैसस से कोई उसकी चीज़ नहीं ले सका। तुम क्रैसस से लड़ सकते हो ? तुम उतनी दौलत से लड़ सकते हो ? वह तुम्हें तबाह कर देगा ग्रैकस। मौत में ही तुम्हें नजात मिलेगी। वह तुम्हें बर्बाद कर डालेगा, मार डालेगा।

—तुम्हारा ख़याल है कि उसमें इसकी ताक़त है ? ग्रैकस ने धीरे से पूछा।

—क्या तुम सच बात जानना चाहते हो ? बीस लाख इतनी बड़ी रक़म है कि मैंने सपने में भी नहीं देखी थी मगर सच बात यह है कि हाँ, उसमें इतनी ताक़त है कि वह तुम्हें बर्बाद कर सकता है। कर सकता है और ज़रूर करेगा।

—मैं अपनी क़िस्मत आज़माने के लिए तैयार हूँ, ग्रैकस ने कहा।

—और क़िस्मत आज़माने के बाद फिर तुम्हारे पास क्या बचेगा ? बीस लाख बहुत होता है। मैं इतनी रक़म में से उन लोगों को भी दे सकता हूँ जो उस औरत को घर में से निकालकर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे। वह बहुत मुश्किल नहीं है। मगर तुमको क्या मालूम कि वह तुम्हारे मुँह पर थूक नहीं देगी ? और क्यों न थूके वह ? यह ठीक है कि क्रैसस ने स्पार्टकस का ख़ातमा किया। मगर इस काम पर क्रैसस को लगाया किसने ? किसने तिकड़म करके क्रैसस को उस जगह पर पहुँचाया ? किसने उस को फ़ौज दी और यह काम सौंपा ?

ग्रैकस ने सिर हिलाकर जवाब दिया—मैंने।

—बिलकुल ठीक। तब फिर ?

—मैं उसे रख सकता हूँ —

—तुम उसे क्या दे सकते हो ? क्या ? गुलाम को सिर्फ़ एक चीज़ की ज़रूरत होती है। क्या तुम वह चीज़ उस औरत को दे सकोगे ?

—क्या ?

फ्लैवियस ने कहा—अरे तुम जानते हो क्या। तुम उस चीज़ से आँख क्यों चुरा रहे हो ?

—तुम्हारा मतलब उसकी आज़ादी से है ?—ग्रैकस ने शान्त भाव से कहा।

—हाँ आज़ादी, मगर तुम्हारे संग नहीं, तुम्हारे बिना, तुमको छोड़कर। इसका मतलब है रोम से चले जाने की आज़ादी। इसका मतलब है क्रैसस की पहुँच के बाहर चले जाने की आज़ादी।

—तुम्हारा ख़्याल है कि अपनी आज़ादी के लिए वह मुझको अपनी एक रात दे सकेगी ?

—काहे की एक रात ?

—प्यार की—नहीं प्यार की नहीं। आदर की, सम्मान की, सेवा की। नहीं-नहीं, वह भी नहीं, कृतज्ञता। इसी तरह इस बात को कहना ज़्यादा ठीक होगा। कृतज्ञता की एक रात।

—तुम कैसे बेवकूफ़ हो! फ्लैवियस ने कहा।

—बेवकूफ़ हूँ तभी तो यहाँ बैठा हूँ और तुम इस तरह की बात मुझसे कह रहे हो, ग्रैकस ने सिर हिलाकर कहा, शायद मैं बेवकूफ़ हूँ—शायद नहीं हूँ। क्रैसस के संग मैं अपनी क़िस्मत आज़माऊँगा। तुम्हें उसको इस बात का विश्वास दिलाना होगा कि मैं कभी अपने वचन को नहीं तोड़ता। मैं अपने वचन पर ही जिया हूँ, रोम इस बात को जानता है। मगर क्या तुम उसको इसका विश्वास दिला सकोगे?

फ्लैवियस ने सिर हिलाया।

—तुमको इस बात की व्यवस्था करनी होगी कि वह बाद में रोम के बाहर निकल जा सके। क्या तुम ऐसा कर सकोगे?

फ्लैवियस ने दुबारा सिर हिलाया।

—कहाँ?

—कम-से कम सिस्-ऐल्पाइन गॉल तक। वहाँ पर वह सुरक्षित रहेगी। बन्दरगाहों और दक्षिण को जानेवाली सड़कों पर पहरा रहेगा। अगर वह उत्तर में गॉल की ओर जाती है तो मेरा ख़्याल है कि वह सुरक्षित रहेगी। वह जर्मन है। मेरा ख़्याल है कि अगर वह चाहेगी तो जर्मनी भी जा सकती है।

—और तुम उसको क्रैसस के मकान से बाहर कैसे लाओगे?

—वह कोई समस्या नहीं है। वह हफ़्ते में तीन दिन के लिए देहात जाता है। थोड़ा सा पैसा अगर होशियारी से खर्च किया जाय तो यह काम बड़े मज़े में हो सकता है।

—बशर्ते वह आने के लिए तैयार हो।

—मैं इस बात को समझता हूँ, फ्लैवियस ने सिर हिलाया।

—और मेरा ख़्याल है कि वह शायद अपने बच्चे को भी लाना चाहेगी। वह बात बिलकुल ठीक होगी। मैं बच्चे को यहाँ पर बड़े आराम से रख सकूँगा।

—हाँ।

—तुमको बीस लाख पेशगी तो नहीं चाहिए?

—पेशगी ही ठीक होगा, फ्लैवियस ने कुछ उदास ढंग से कहा।

—तुम अभी ले सकते हो। सारी रक़म यहाँ मौजूद है। तुम चाहो तो

नक़द ले सकते हो और चाहो तो सिकन्दरिया में अपने बैंक के लिए मैं तुमको ड्राफ्ट दे सकता हूँ।

—मैं नक़द ही लूँगा, फ़्लैवियस ने कहा।

—हाँ—मेरा भी यही ख़्याल है, तुम ठीक ही कह रहे हो। मगर देखो फ्लैवियस, मुझको चरका देने की कोशिश मत करना। अगर तुमने ऐसा किया तो मैं तुम्हें ज़रूर ढूँढ निकालूँगा।

—कैसी बात करते हो ग्रैकस! मेरा क़ौल तुम्हारे क़ौल से कम पक्का नहीं है।

—अच्छा, तो ठीक है।

—गो कि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो! मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कह सकता हूँ कि मैं ज़रा भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो! तुम क्रैसस को नहीं जानते अगर तुम्हारा ख़याल है कि वह इस चीज़ को यों ही हो जाने देगा और कुछ नहीं करेगा।

—मैं क्रैसस को जानता हूँ।

—तो भगवान तुम्हारी सहायता करे, ग्रैकस। मैं बहुत चाहता हूँ कि इस चीज़ के बारे में इस तरह से न सोचूँ। मगर मैं मजबूर हूँ।

७

वारिनिया ने यह स्वप्न देखा। वारिनिया ने स्वप्न देखा कि वह सेनेट के सामने अभियोगों का जवाब देने के लिए खड़ी हुई है। वहाँ बैठे थे वे लोग जो सारी दुनिया पर राज करते थे। वे अपनी बड़ी-बड़ी कुर्सियों पर अपने सफ़ेद-सफ़ेद चोग़े पहने बैठे थे। और उनमें से एक-एक का चेहरा क्रैसस जैसा था—लम्बा, सुन्दर, कठोर। जिस तरह वे बैठे थे, जिस तरह ठुड्ढी को हथेली पर टिकाये वे आगे को झुके हुए थे, उनके चेहरों पर जो रूखा और डरावना भाव था, उनका आत्म-विश्वास, उनका आत्म-संतोष—ये सारी की सारी चीज़ें मिलकर उनको शक्ति का वह पुंज बना देती थीं जो कि वास्तव में वे थे। वे मूर्तिमान् शक्ति थे, सत्ता थे और दुनिया की कोई चीज़ उनके आगे खड़ी न हो सकती थी। वे सेनेट के विशाल, पत्थर के बने कक्ष में अपनी सफेद संगमरमर की कुर्सियों पर बैठे थे और उनको वहाँ पर बैठे देखकर ही डर मालूम होता था।

वारिनिया ने स्वप्न देखा कि वह उनके सामने खड़ी है और उसको स्पार्टकस के ख़िलाफ़ गवाही देनी है। वह उनके सामने बस अपनी वह पतली मलमल की पोशाक पहने खड़ी है और उसको इस बात की तीक्ष्ण और दर्द से भरी हुई चेतना है कि उसका दूध उसके कपड़े को भिगो रहा है। उन्होंने उससे सवाल पूछना शुरू किया।

—स्पार्टकस कौन था ?

उसने जवाब देना शुरू किया मगर इसके पहले कि वह जवाब दे सके, दूसरा सवाल आ गया।

—उसने रोम का ध्वंस करने की कोशिश क्यों की ?

उसने फिर जवाब देने की कोशिश की और फिर अगला सवाल आ गया।

—उसने उन सब लोगों की हत्या क्यों की जो उसके हाथ में पड़े ? क्या उसे मालूम नहीं था कि हमारे कानून में हत्या की मनाही है ?

उसने इस चीज़ से इनकार करने की कोशिश की मगर इसके पहले कि इनकार के दो शब्द उसके होठों के बाहर आयें, अगला सवाल फिर आ गया।

—वह क्यों सभी अच्छी चीज़ों से नफ़रत और बुरी चीज़ों से प्यार करता था ?

उसने फिर बोलने की कोशिश की मगर तभी सेनेट के एक सदस्य ने वारिनिया की छाती की ओर इशारा करके पूछा—वह क्या है ?

—दूध।

अब सबके चेहरे पर गुस्सा था, भयानक गुस्सा और अब उसे इतना डर मालूम हो रहा था जितना पहले कभी नहीं मालूम हुआ था। और तब पता नहीं कैसे, स्वप्न में वह उसका कोई कारण न समझ सकी, उसका डर ख़त्म हो गया। अपने स्वप्न में ही उसने अपने आपसे कहा—ऐसा इसीलिए हो रहा है कि स्पार्टकस मेरे साथ है।

और उसने अपना सिर घुमाया, और सचमुच वह उसके बग़ल में खड़ा था। वह वैसे ही कपड़े पहने था जैसे कि अपने लड़ाई के दिनों में अक्सर पहना करता था—ऊँचे-ऊँचे चमड़े के जूते, बदन पर एक सादी-सी ख़ाकी रङ्ग की ट्यूनिक और काले घुंघराले बालों पर एक छोटी-सी .फेल्ट की टोपी। वह कोई हथियार नहीं लगाये था क्योंकि उसने अपने लिए यह नियम बना रक्खा था कि केवल लड़ाई के समय हथियार बाँधूँगा, वैसे नहीं। वह कोई हीरे-जवाहरात न पहने था, न अंगूठी न ब्रेसलेट। उसकी हजामत ख़ूब साफ़ थी और घुंघराले बाल ख़ूब ही छोटे कटे हुए थे।

वह कितने आराम के साथ और कैसे विश्वास से खड़ा था। वारिनिया को अपने स्वप्न में ही ख़याल आया कि स्पार्टकस हमेशा उसी तरह खड़ा होता था। स्पार्टकस जिस भी टोली में शरीक हो जाता था उस टोली के लोगों में यही इत्मीनान दिखाई देने लगता था। मगर खुद वारिनिया के अन्दर इसकी कुछ और ही प्रतिक्रिया होती थी। वह जब कभी स्पार्टकस को देखती थी तो

उसका मन उल्लास से भर उठता था। जैसे कोई घेरा टूटे। वह जब आता था तो वह घेरा फिर बन्द हो जाता था और अपने आप में सम्पूर्ण हो जाता था। वह एक बार स्पार्टकस के ख़ेमे में रही थी। उसमें कम-से-कम पचास लोग थे जो स्पार्टकस का इन्तज़ार कर रहे थे। आख़िरकार वह आया। वारिनिया एक ओर को हट गयी ताकि स्पार्टकस उन लोगों से बात कर सके जो उसका इन्तज़ार कर रहे थे। वह केवल स्पार्टकस को देख रही थी मगर उसका सुख बराबर बढ़ता ही जा रहा था और हर शब्द जो वह बोलता था और उसके अङ्गों की हर गति वारिनिया के आनन्द की इस प्रक्रिया का ही अंश थी। एक बिन्दु ऐसा आया जब कि वह अपने इस निरन्तर बढ़ते हुए सुख को और सह न सकी और उसे ख़ेमे से बाहर निकल जाना पड़ा ताकि वह कोई ऐसी जगह पा ले जहाँ बस वह हो और दूसरा कोई न हो।

इस वक़्त अपने स्वप्न में भी उसको कुछ-कुछ वही अनुभूति हो रही थी।

—तुम यहाँ क्या कर रही हो, प्राण?—स्पार्टकस ने उससे पूछा।

—ये लोग मुझसे सवाल कर रहे हैं।

—कौन लोग?

—वे, उसने उन सेनेट के सदस्यों की ओर इशारा किया, उनसे मुझको डर लगता है। और तब उसने लक्ष्य किया कि वे सेनेट के सदस्य बिलकुल निश्चल-निस्पन्द हो रहे थे कि जैसे अपनी जगह पर जम गये हों।

—मगर तुम देखतीं नहीं कि वे तो तुमसे भी ज़्यादा डरे हुए हैं, स्पार्टकस ने कहा। स्पार्टकस हमेशा इसी तरह बात करता था! वह जो भी चीज़ देखता था उसको बहुत सीधे-सादे साफ़ ढङ्ग से बयान कर देता था। और तब वारिनिया को भी आश्चर्य होता था कि इतनी सीधी-सी बात उसकी समझ में क्यों नहीं आयी थी। देखो न, साफ़ तो है कि वे लोग डरे हुए हैं।

—आओ चलें वारिनिया, स्पार्टकस मुस्कराया। उसने अपनी बाँह वारिनिया की कमर में डाल ली और वारिनिया ने अपनी बाँह उसकी कमर में डाल ली और वे दोनों सेनेट के कक्ष से टहलते हुए बाहर रोम की सड़कों पर निकल आये। वे प्रेमी-प्रेमिका थे। वे रोम की सड़कों पर होकर चलते ही गये, चलते ही गये और किसी ने उनका देखा नहीं और किसी ने उनको रोका नहीं।

वारिनिया के स्वप्न में स्पार्टकस ने उससे कहा—हर बार जब मैं तुम्हारे साथ होता हूँ तो वही बात होती है। हर बार जब मैं तुम्हारे साथ होता हूँ तो मुझे अपने अन्दर तुम्हारे लिए भूख मालूम होती है। हर बार मुझको ऐसी ही भूख मालूम होती है—इतनी ही तेज़।

—और हर बार जब तुम्हें मेरी भूख मालूम हो तो तुम मुझे ले सकते हो।

—मैं जानता हूँ—जानता हूँ। मगर इसको याद रखना मुश्किल है। मेरा ख़याल है कि जो चीज़ तुम्हें मिल सकती हो उसकी चाह तुमको न होनी चाहिए। मगर मेरे अन्दर तुम्हारी चाह कभी ख़त्म नहीं होती, तुम्हारे लिए मेरी भूख कभी कम नहीं होती बल्कि बढ़ती ही चली जाती है। क्या तुमको भी मेरे लिए ऐसी ही भूख मालूम होती है?

—हाँ, ऐसी ही।

—जब भी तुम मुझको देखती हो?

—हाँ।

—मुझे तो ऐसा ही मालूम होता है। जब भी मैं तुमको देखता हूँ।—वे दोनों और थोड़ी देर तक इसी तरह टहलते रहे और तब स्पार्टकस ने कहा—मुझे कहीं-न-कहीं जाना होगा। चलो हम दोनों कहीं चलें और साथ-साथ लेटें।

—मैं एक जगह जानती हूँ जहाँ हम लोग जा सकते हैं, वारिनिया ने अपने स्वप्न में ही कहा।

—कहाँ?

—यह क्रैसस नाम के आदमी का मकान है और मैं वहीं रहती हूँ।

स्पार्टकस रुक गया और वारिनिया की कमर में से उसने अपनी बाँह निकाल ली। उसने वारिनिया को घुमाकर अपने ठीक सामने कर लिया और उसकी आँखों में कुछ ढूँढ़ने लगा। तब उसने उसके कपड़े पर दूध का धब्बा देखा।

—यह क्या है?—उसने पूछा और ज़ाहिर है कि वह उस बात को भूल गया था जो वारिनिया ने उसको क्रैसस के बारे में बतलायी थी।

—यह वो दूध है जो मैं अपने बच्चे को पिलाती हूँ।

—मेरा कोई बच्चा नहीं है, उसने कहा। स्पार्टकस को एकाएक डर मालूम हुआ और वह ठिठककर वारिनिया से अलग हो गया—और फिर चला गया। इसके बाद सपना ख़त्म हो गया और वारिनिया जगी और उसके चारों तरफ़ अँधेरा था, केवल अँधेरा।

८

अगले रोज़ क्रैसस देहात चला गया और जब शाम हुई तो फ़्लैवियस वारिनिया को ग्रैकस के यहाँ ले आया, जैसा कि उसने वादा किया था। वे लोग उस वक़्त आये जब ग्रैकस अकेले बैठा खाना खा रहा था। एक गुलाम ने ग्रैकस को आकर बतलाया कि बाहर दो लोग हैं, फ़्लैवियस और एक कोई औरत। और औरत की गोद में एक बच्चा है।

ग्रैकस ने कहा—हाँ-हाँ मैं जानता हूँ। बच्चे के लिए जगह तैयार है। उन लोगों को भीतर ले आओ, मगर फिर उसने कहा, नहीं नहीं, मैं खुद ही कर लूँगा।—वह लगभग दौड़ता हुआ खाने के कमरे से बाहर के दरवाज़े की तरफ़ गया। उसने खुद ही उन लोगों को अन्दर बुलाया। वह बहुत नम्र था और उसने उन लोगों का वैसे ही स्वागत किया जैसे कि सम्मानित अतिथियों का किया जाता है।

वह स्त्री एक लम्बे लबादे में लिपटी हुई थी। दरवाजे के पास कुछ अँधेरा था इसलिए ग्रैकस उसके चेहरे को ठीक से नहीं देख पाया। मगर अब उसको देखने के लिए वह इन्तज़ार कर सकता था। वह उन लोगों को अन्दर ले गया और उस स्त्री से उसने कहा कि वह चाहे तो बच्चे को उसे दे दे या खुद ले जाकर बच्चे के कमरे में सुला दे। बच्चा उसकी बाँहों के झूले में पड़ा हुआ था। बच्चा बड़े आराम से अपनी माँ की गोद में था और ग्रैकस डर रहा था कि वह कहीं कोई ऐसी बात न कह दे या इशारे से कोई ऐसी बात न दरसा दे कि उससे माँ के मन में अपने बच्चे के सम्बन्ध में कोई आशंका पैदा हो जाय।

उसने कहा—बच्चे के लिए मैंने बाक़ायदा एक कमरा बना दिया है। उसमें एक छोटा-सा पालना है और दूसरी भी तमाम चीज़ें हैं जिनकी उसे ज़रूरत पड़ सकती है। वहाँ पर वह बड़े आराम और बड़ी हिफ़ाज़त से रहेगा और उसको किसी तरह का कोई नुक़सान नहीं पहुँच सकता।

—इसे ऐसी किन्हीं ख़ास चीज़ों की ज़रूरत नहीं है, वारिनिया ने जवाब दिया। यह पहली बार ग्रैकस ने उसकी आवाज़ सुनी थी। यह एक मुलायम आवाज़ थी। मगर उसमें एक गहराई थी और वह कानों को बहुत भाती थी। अब उसने अपना लबादा सिर पर से हटा दिया और उसने वारिनिया का चेहरा देखा। उसके लम्बे-लम्बे सुनहरे पीले बाल पीछे उसकी गर्दन पर बँधे हुए थे। उसके चेहरे पर कोई रंग-रौग़न नहीं था—जिससे कि, गो कि यह बात कुछ अजीब ही थी, उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव, उसकी रेखाएँ और ज्यादा अच्छी तरह दिखायी देती थीं और वह चेहरा और भी खूबसूरत नज़र आता था।

जिस वक्त ग्रैकस वारिनिया को देख रहा था उस वक्त फ्लैवियस ग्रैकस को देख रहा था। फ्लैवियस एक ओर को हटकर खड़ा था। वह ख़ामोश था। उसे इस चीज़ में दिलचस्पी मालूम हो रही थी और किसी क़दर हैरानी भी। उसे वहाँ पर कुछ आराम-सा नहीं मिल रहा था और जैसे ही वह बीच में कुछ बोल सका, उसने कहा—ग्रैकस, मुझे अभी दूसरी भी बहुत सी तैयारियाँ करनी हैं। मैं सबेरा होते-होते लौटूँगा। मुझे यकीन है कि तब तुम तैयार मिलोगे।

—मैं तैयार रहूँगा, ग्रैकस ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

इसके बाद फ्लैवियस चला गया और ग्रैकस वारिनिया को उस कमरे में ले गया जो उसने बच्चे के लिए ठीक किया था। एक गुलाम औरत वहाँ पर बैठी हुई थी और ग्रैकस ने अपने सिर से उसकी तरफ़ इशारा करते हुए बात समझायी—यह रात भर यहीं बैठी रहेगी। उसकी आँखें हर वक्त बच्चे पर लगी रहेंगी। एक मिनट को भी वह बच्चे पर से नज़र नहीं हटाएगी। इसलिए तुम बिलकुल मत डरो कि तुम्हारे बच्चे को ज़रा सा भी नुक़सान पहुँचेगा। अगर बच्चा रोएगा तो यह औरत तुम्हें फ़ौरन बुला लेगी। इसलिए परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं।

वारिनिया ने कहा—बच्चा सोता रहेगा। आप बड़े भले हैं मगर बच्चा सोता रहेगा।

—मगर तुमको बच्चे के रोने पर कान लगाये रहने की ज़रूरत न होगी। बच्चा जैसे ही रोएगा यह औरत तुमको बुला लेगी। तुम भूखी तो नहीं हो? तुमने खाना खा लिया है?

वारिनिया ने बच्चे को पालने में रखकर जवाब दिया—मैंने खाया तो नहीं है मगर मुझे भूख नहीं है। मैं इस समय इतनी उत्तेजित हो रही हूँ कि मुझे ज़रा भी भूख नहीं मालूम हो रही है। मुझे लगता है कि जैसे मैं कोई सपना देख रही हूँ। पहले मुझे उस आदमी पर विश्वास करने में डर मालूम होता था मगर अब मुझे उस पर विश्वास हो रहा है। मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि क्यों आप मेरे लिए यह सब कर रहे हैं। मुझे डर लग रहा है कि मैं सपना देख रही हूँ और किसी भी क्षण मैं जाग पड़ूँगी और सपना टूट जायगा।

—मगर जब तक मैं अपना खाना ख़तम करता हूँ तब तक तुम मेरे संग यहाँ पर बैठोगी तो? और शायद थोड़ा-बहुत कुछ खाना भी चाहो।

—हाँ, मैं बैठूँगी।

वे दोनों खाने के कमरे में लौट आये और वारिनिया ग्रैकस की कुर्सी से लगी हुई एक कुर्सी पर बैठ गयी। वह झुक नहीं सकता था। वह कुछ अकड़ा हुआ-सा वहाँ पर बैठा था और उसकी आँखें वारिनिया पर ऐसी जमी हुई थीं कि जैसे वह उनको अलग ही न कर पा रहा हो। उसे कुछ आश्चर्य हो रहा था यह देखकर कि उसके मन में कोई उथल-पुथल न थी, कोई आशंका न थी बल्कि यही कहना चाहिए कि उसका मन एक ऐसे सुख से भरा हुआ था जिससे बड़ा सुख उसने अपनी ज़िन्दगी में पहले नहीं जाना था। यह एक सन्तोष की अनुभूति थी। अब से पहले अपनी तमाम ज़िन्दगी में उसको कभी सन्तोष की ऐसी अनुभूति न हुई थी। उसको लग रहा था कि दुनिया में सब कुछ हरा ही हरा है। दुनिया की ये तमाम पीड़ा पहुँचानेवाली असंगतियाँ

ग़ायब हो गयी थीं। अपने प्यारे शहर, अपने इस अनोखे रोम में वह इस समय अपने मकान में था और उसे अपने मकान में होने का सुख मिल रहा था और उसका मन अपने सामने बैठी हुई इस स्त्री के लिए बड़े गहरे प्रेम से भरा हुआ था। उसने अपने मन के इस भाग का विश्लेषण करने की कोई कोशिश नहीं की कि जिस स्त्री ने उसकी ज़िन्दगी में पहली बार प्रेम की अनुभूति जगायी थी, वह स्पार्टकस की बीवी थी। उसने सोचा कि वह उस चीज़ को समझता है मगर उसके मन में कोई इच्छा न थी कि वह अपने मन को टटोले और उस चीज़ का पता लगाये।

वह खाने के बारे में बात करने लगा—मुझे डर है कि क्रैसस के दस्तर-ख़ान के बाद तुमको मेरे यहाँ का खाना बहुत सादा मालूम होगा। मैं ज़्यादातर फल और सादा गोश्त और मछली खाता हूँ और कभी-कभी कोई ख़ास चीज़ खाता हूँ। आज मेरे यहाँ भरा हुआ झींगा पका है जो कि बड़ा अच्छा है। और एक अच्छी-सी सफ़ेद शराब है जिसे मैं पानी मिलाकर पीता हूँ—

वारिनिया उसकी बात नहीं सुन रही थी और ग्रैकस ने असाधारण समझ-दारी दिखलाते हुए कहा—हम रोमन लोग जब खाने के बारे में बात करते हैं तो शायद सचमुच तुम हमारी बात नहीं समझ पातीं। क्यों?

—नहीं, वारिनिया ने स्वीकार किया।

—मैं समझ सकता हूँ कि क्यों। हम लोग कभी इसके बारे में बात नहीं करते कि हमारी ज़िन्दगी कितनी खोखली है। वह इसलिए कि हम अपना बहुत-सा वक़्त अपनी ज़िन्दगी को भरते रहने में खर्च करते हैं। बर्बर लोगों के नज़दीक जो सीधे-सादे स्वाभाविक कर्म हैं जैसे खाना, पीना, प्यार करना, हँसना, हम लोगों ने उन सब को एक रस्म का रूप दे दिया है। अब हमें कभी भी सच्ची भूख नहीं लगती। हम लोग भूख की बात करते हैं मगर कभी उसे अनुभव नहीं करते। हम प्यास की बात करते हैं मगर कभी प्यासे नहीं होते। हम प्रेम की बात करते हैं मगर कभी प्रेम नहीं करते और हमारे यहाँ जो हमेशा नये-नये आविष्कार और नयी-नयी विकृतियाँ निकलती रहती हैं उनसे हम उन चीज़ों की कमी को पूरा करते हैं। हमारे यहाँ मनोरंजन ने सुख का स्थान ले लिया है और चूंकि हर मनोरंजन, हर खिलवाड़ धीरे-धीरे बासी पड़ जाता है इसलिए हमको हमेशा किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है जो और ज़्यादा मनोरंजक हो, और ज़्यादा उत्तेजक हो—और और और। हमने अपने आपको इस हद तक जानवर बना लिया है, कि हम जो कुछ करते हैं उसकी भी कोई अनुभूति हमको नहीं होती और हमारी

यह अनुभूतिशून्यता बढ़ती जाती है। तुम समझ रही हो कि मैं क्या कह रहा हूँ ?

—कुछ-कुछ समझ रही हूँ, वारिनिया ने जवाब दिया।

—वारिनिया, तुमको समझे बिना मैं न रह सकूंगा। मुझे समझना ही होगा कि क्यों तुमको डर लग रहा है कि यह चीज़ केवल एक सपना है। क्रैसस तुम पर जान छिड़कता है। अगर तुम ज़ोर दो तो मैं समझता हूँ कि वह तुमसे शादी भी कर लेगा। क्रैसस एक महान् व्यक्ति है। वह रोम के महान्तम व्यक्तियों में से है और उसकी शक्ति और उसका प्रभाव इतना ज्यादा है कि एकाएक यक़ीन नहीं होता। तुम जानती हो कि मिस्र का फ़रऊन किसे कहते हैं ?

—हाँ मैं जानती हूँ।

—तो यह समझो कि क्रैसस की ताक़त मिस्र के फ़रऊन से भी ज़्यादा है। और तुम मिस्र की मलका से भी बड़ी चीज़ हो सकती हो। क्या इससे तुमको कुछ भी सुख नहीं होगा ?

—उस आदमी के संग जिसने स्पार्टकस को मारा ?

—वह बड़े दुःख की बात है—मगर ज़रा सोचो उसने निजी तौर पर तो ऐसा किया नहीं। वह स्पार्टकस को नहीं जानता था और न उसको व्यक्ति के रूप में उससे कोई घृणा ही थी। मैं भी उतना ही अपराधी हूँ। स्पार्टकस को नष्ट किया रोम ने। मगर स्पार्टकस मर चुका है और तुम ज़िन्दा हो। क्रैसस जो कुछ तुमको दे सकता है क्या तुम उसे लेना नहीं चाहतीं ?

—मैं उसे नहीं लेना चाहती, वारिनिया ने जवाब दिया।

—तब फिर तुम क्या चाहती हो मेरी प्यारी वारिनिया ?

वारिनिया ने कहा—मैं आज़ाद होना चाहती हूँ। मैं रोम से चली जाना चाहती हूँ और चाहती हूँ कि फिर कभी जीते जी रोम का मुँह न देखूँ। मैं अपने बेटे को आज़ादी की हवा में पलते और बढ़ते देखना चाहती हूँ.।

ग्रैकस ने वास्तव में हैरान होते हुए पूछा—क्या सचमुच आज़ादी इतनी बड़ी चीज़ है ? आज़ादी किस बात की ? आज़ादी भूखों मरने की ? क़त्ल किये जाने की ? बिना घर के दर-दर मारे-मारे फिरने की ? आज़ादी खेत में काम करने की, उसी तरह जैसे कि एक किसान करता है ?

वारिनिया न कहा—मैं तुमको इस चीज़ के बारे में नहीं बतला सकती। मैंने क्रैसस को बतलाने की कोशिश की मगर मैं नहीं जानती कि कैसे उसको यह बात समझाऊँ। मैं नहीं जानती कि तुमको भी यह बात कैसे समझाऊँ।

—और तुम रोम से नफ़रत करती हो। मैं रोम से मुहब्बत करता हूँ

वारिनिया। रोम मेरा ख़ून है और मेरी ज़िन्दगी, मेरी माँ और मेरा बाप। रोम एक हरजाई है मगर मैं मर जाऊँगा अगर मुझे रोम छोड़ना पड़े। मैं अब इस बात को महसूस कर रहा हूँ। चूँकि तुम वहाँ पर बैठी हुई हो, मैं अपने शहर से भर उठा हूँ। मगर तुम उससे नफ़रत करती हो। मैं नहीं जानता क्यों। क्या स्पार्टकस रोम से नफ़रत करता था ?

—वह रोम के ख़िलाफ़ था और रोम उसके ख़िलाफ़ था। आप इस बात को जानते हैं।

—मगर रोम की दीवारें गिराने के बाद वह रोम की जगह पर क्या बनाने को सोचता था ?

—वह एक ऐसी दुनिया बनाना चाहता था जहाँ पर कोई गुलाम और कोई मालिक न होगा, सब बस साधारण जन होंगे जो शान्ति-पूर्वक भाई-भाई की तरह साथ-साथ रहेंगे। वह कहता था कि हम रोम से वो सब चीज़ें ले लेंगे जो अच्छी हैं और खूबसूरत हैं। हम ऐसे शहर बनायेंगे जिनमें दीवारें नहीं होंगी। और सब आदमी शान्ति और भाई चारे के साथ रहेंगे और फिर कभी युद्ध नहीं होंगे और तबाही और बर्बादी और दुख-दर्द न होंगे।

ग्रैकस बड़ी देर से ख़ामोश था और वारिनिया उसको कुतूहल से और बिना डरे देख रही थी। वह बाहर से देखने में बड़ा मोटा और भद्दा था मगर तब भी वह उन तमाम लोगों से भिन्न था जिनको अब से पहले वारिनिया ने जाना था और उसका जी कर रहा था कि इस आदमी पर विश्वास करे। उसके अन्दर एक अजीब-सी अन्तर्विरोधों से भरी हुई ईमानदारी थी। उसके अन्दर कोई ऐसा गुण था जो वारिनिया को स्पार्टकस की याद दिलाता था। वह गुण क्या था यह वारिनिया ठीक से बतला न सकती थी। यह कोई शारीरिक चीज़ न थी, कोई भाव-भंगिमा भी नहीं। यह शायद उसके सोचने का ढंग था और कभी-कभी—कभी-ही-कभी—वह बात को उस ढंग से कहता था जैसे स्पार्टकस ने कहा होता।

काफ़ी देर की ख़ामोशी के बाद वह फिर बोला और तब उसने उस बात पर टिप्पणी की जो वारिनिया ने पहले कही थी, कुछ इस तरह कि जैसे उस बात को अभी एक पल भी न गुज़रा हो।

उसने कहा—तो यह था स्पार्टकस का सपना, एक ऐसी दुनिया बनाना जिसमें कोड़े न होंगे और किसी को कोड़े न लगेंगे—जिसमें न तो महल होंगे और न कच्चे झोंपड़े। कौन जाने ! तुमने अपने बेटे का नाम क्या रक्खा है वारिनिया ?

—स्पार्टकस ।.यह भी कोई पूछने की बात है !

—बहुत ठीक नाम रक्खा, स्पार्टकस । ज़रूर-ज़रूर, क्यों नहीं । और बड़ा होकर वह भी ऊँचा पूरा मर्द बनेगा, गर्वीला और ताक़तवर । और तुम उसको उसके बाप के बारे में बतलाओगी ?

—हाँ मैं उसको उसके बाप के बारे में बतलाऊँगी ।

—कैसे बतलाओगी ? कैसे तुम उसको अपनी बात समझाओगी ? वह एक ऐसी दुनिया में बड़ा होगा जिसमें स्पार्टकस जैसे आदमी नहीं हैं । तुम कैसे उसको बतलाओगी कि वह कौन सी चीज़ थी जो उसके बाप को इतना पाक और नेक बनाती थी ?

—आपको कैसे मालूम कि स्पार्टकस पाक था और नेक था ?—वारिनिया ने उससे पूछा ।

—क्या इस बात को जानना इतना मुश्किल है ?—ग्रैकस ने सोच में डूबे-डूबे कहा ।

—कुछ लोगों के लिए ज़रूर मुश्किल है । आप जानते हैं कि मैं अपने बेटे से क्या कहूँगी ? मेरा ख़्याल है कि आप मेरी बात को समझ सकेंगे । मैं उसको एक बहुत सीधी-सी बात कहूँगी । मैं उसको बतलाऊँगी कि स्पार्टकस पाक और नेक इसलिए था कि उसने पाप का विरोध किया, वह पाप से लड़ा। और ज़िन्दगी भर उसने कभी किसी ग़लत चीज़ से समझौता नहीं किया ।

—और इसी चीज़ ने उसको पवित्र बनाया ?

—मैं बहुत बुद्धिमान नहीं हूँ मगर मैं सोचती हूँ कि यह चीज़ किसी आदमी को भी पवित्र बना सकती है, वारिनिया ने कहा ।

—और स्पार्टकस यह कैसे जान जाता था कि कौन-सी चीज़ ठीक है और कौन सी ग़लत ?—ग्रैकस ने पूछा ।

—जो चीज़ उसके आदमियों के लिए अच्छी हो वह ठीक और जिस चीज़ से उनको चोट पहुँचती हो वह ग़लत ।

—अच्छा, अब समझा, ग्रैकस ने सिर हिलाते हुए कहा, यह था स्पार्टकस का सपना और स्पार्टकस का ढंग । मैं सपनों के लिए बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, वारिनिया । नहीं तो मैं भी इस चीज़ के बारे में बहुत सपने देखता कि मैं अपनी इस ज़िन्दगी को कैसे बिताऊँगा, इस ज़िन्दगी को जो आदमी को एक ही बार मिलती है । एक ज़िन्दगी—और वह भी कितनी छोटी कितनी बेमतलब कितनी निरुद्देश्य । बस एक पल के समान आदमी पैदा होता है और मर जाता है, किसी क़िस्म की कोई तुक नहीं । और मुझको देखो मैं अपना यह मोटा थुलथुल भोंडा बदसूरत शरीर लिये बैठा हूँ । क्या स्पार्टकस बहुत ख़ूबसूरत आदमी था ?

इस घर में दाख़िल होने के बाद से अब यह पहली बार वह मुस्करायी। वह मुस्करायी और फिर हँसने लगी और फिर हँसी आँसुओं में बदल गयी और उसने अपना चेहरा मेज़ पर रख लिया और रोने लगी।

—वारिनिया, वारिनिया, मैंने ऐसी कौन-सी बात कह दी?

—कुछ भी नहीं। वह सीधी होकर बैठ गयी और रुमाल से मुँह पोंछने लगी।—आपकी किसी बात से नहीं। मैं स्पार्टकस को कितना प्यार करती थी। वह आप रोमनों की तरह नहीं था। वह मेरे अपने क़बीले के लोगों जैसा भी नहीं था। वह थ्रेसियन था, उसका चौड़ा सा सपाट चेहरा था और एक बार जब कोई दारोग़ा उसे पीट रहा था तो उसकी नाक टूट गयी थी। लोग कहते थे कि अपनी उस टूटी हुई नाक के कारण उसका चेहरा भेड़ जैसा नज़र आता था मगर मेरे नज़दीक तो वह वैसा ही था जैसा कि उसको होना चाहिए था। बस।

उनके बीच की दीवारें ग़ायब हो गयी थीं। ग्रैकस ने हाथ बढ़ाकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने अपनी सारी ज़िन्दगी में अपने आपको किसी औरत के इतना क़रीब नहीं महसूस किया था, कभी किसी औरत का इतना विश्वास नहीं किया था। उसने कहा—प्रिये, प्रिये, तुम्हें मालूम है कि मैंने अपने आपसे क्या कहा था? सबसे पहले मैंने अपने आपसे कहा था कि मैं तुमसे तुम्हारे प्रेम की एक रात चाहता हूँ। मगर फिर मैंने खुद ही उसको रद कर दिया। इसके बाद मैं आदर और सम्मान की एक रात चाहने लगा। मगर फिर उसको भी मैंने रद कर दिया। तब फिर मुझे सिर्फ़ एक चीज़ की ज़रूरत रह गयी, कृतज्ञता की। मगर कृतज्ञता से भी बड़ी कोई चीज़ हो सकती है, ठीक कहता हूँ न वारिनिया?

—हाँ होती है, उसने ईमानदारी से कहा। उस वक़्त ग्रैकस ने महसूस किया कि वारिनिया में किसी तरह की बनावट या धोखा-धड़ी नहीं है। उसके मन में जो कुछ है उसको सीधे-सीधे कह देना ही उसको आता है। बात कहने का और कोई ढंग उसको नहीं आता। उसने उसका हाथ उठाया और चूम लिया। और वारिनिया ने अपना हाथ हटाया नहीं।

उसने कहा—यही चीज़ मैं चाहता हूँ। पौ फटने तक मुझको यही चीज़ चाहिए। क्या तुम मेरे साथ बैठोगी और बात करोगी और थोड़ी-सी शराब पियोगी और थोड़ा-सा खाना खाओगी? कितनी बातें हैं जो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ और कितना कुछ है जो मुझे तुमसे सुनना ही है। क्या तुम सबेरा होने तक मेरे साथ बैठोगी—और तब फ्लैवियस घोड़े लेकर आयेगा और तुम सदा के लिए रोम से चली जाओगी। क्या तुम मेरे ऊपर इतना एहसान करोगी वारिनिया?

वारिनिया ने कहा—मैं खुद ही ऐसा करना चाहूँगी। केवल आपके लिए नहीं, स्वयं अपने सन्तोष के लिए।

—मैं तुमको धन्यवाद देने की कोशिश नहीं करूँगा क्योंकि मैं नहीं जानता कि कैसे तुमको धन्यवाद दूँ।

वारिनिया ने कहा—मुझको किस बात के लिए धन्यवाद दीजिएगा। आपके द्वारा मुझको आज इतना सुख मिल रहा है, सुख की ऐसी अनुभूति हो रही है जिसकी अब मैं कल्पना भी न कर सकती थी। मैं सोचती थी कि स्पार्टकस के मरने के बाद मैं फिर कभी मुस्करा नहीं सकूंगी। मैं सोचती थी कि ज़िंदगी अब मेरे लिए हमेशा एक रेगिस्तान के मानिन्द रहेगी। मगर तब भी मुझको स्पार्टकस की यह बात नहीं भूलती जो वह मुझसे कहा करता था कि हर चीज़ के ऊपर ज़िन्दगी होती है, उससे ऊँची कोई चीज़ नहीं। ऐसा कहने में उसका क्या मतलब था, उसको आज मैं जितनी अच्छी तरह समझ रही हूँ उतनी अच्छी तरह पहले कभी नहीं समझी थी। आज मैं हँसना चाह रही हूँ। मेरी समझ में यह बात खुद नहीं आ रही है मगर मैं हँसना चाहती हूँ।

६

फ्लैवियस जब लौटा तब प्रत्यूष की वेला थी। वह भूरी-भूरी सी, उदास, एकाकी घड़ी जब ज़िन्दगी के ज्वार में भाटा आता है और सभी चीज़ें अपने निम्नतम बिन्दु पर पहुँच जाती हैं और फिर उसके बाद नये सिरे से शुरुआत होती है। घर की देखरेख करनेवाली बिना कुछ कहे फ्लैवियस को अन्दर ग्रैकस और वारिनिया के पास ले गयी। ग्रैकस एक कुर्सी पर खूब फैलकर बैठा हुआ था, खूब थका हुआ, उसका चेहरा पीला मगर उदास नहीं। वारिनिया एक कोच पर बैठी अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। वह भी थकी हुई नज़र आती थी मगर अपने उस गोलमटोल गुलाबी रंग के बच्चे को दूध पिलाती हुई वह जैसी बैठी थी वैसी बड़ी सुन्दर दिखायी दे रही थी। जब ग्रैकस ने फ्लैवियस को देखा तो उसने एक उँगली अपने होंठों पर रक्खी और फ्लैवियस चुपचाप खड़ा हो गया। उस स्त्री के सौन्दर्य को देखकर वह मन्त्र-मुग्ध-सा खड़ा रह गया। चिराग़ की रोशनी में बैठी हुई, अपने बच्चे को दूध पिलाती हुई वह ऐसी नज़र आती थी जैसी रोम की बड़ी प्राचीन स्मृति की कोई चीज़ हो।

बच्चे को दूध पिलाकर उसने अपनी छाती ढँक ली और सोते हुए बच्चे को एक कम्बल में लपेट लिया। ग्रैकस उठा और उसके सामने जाकर खड़ा हो गया और वारिनिया बड़ी देर तक उसकी ओर देखती रही।

फ्लैवियस ने उनको बतलाया—मैंने फिर यही तय किया कि रथ ही ठीक

होंगे। इस तरह हम लोग वक्त का सबसे अच्छा इस्तेमाल कर सकेंगे और हम चाहे कामयाब हों या न हों मगर सवाल तो यही होगा कि हम अपने पीछे कितने मील छोड़कर आगे निकल जाते हैं। एक रथ में मैंने कम्बल और तकिये भर दिये हैं ताकि तुमको काफ़ी आराम रहे—मगर अब हम दोनों को फ़ौरन चल देना चाहिए। यों ही बहुत देर हो चुकी है। बहुत ही ज़्यादा देर।

उन दोनों ने जैसे उसकी बात ही नहीं सुनी। वे दोनों एक दूसरे को देख रहे थे—स्पार्टकस की वह ख़ूबसूरत बीवी और रोम का वह मोटा, बूढ़ा हो रहा राजनीतिज्ञ। इसके बाद वारिनिया घर की देख-भाल करनेवाली की ओर मुड़ी और उससे बोली—तुम ज़रा देर बच्चे को संभालोगी?

उस औरत ने बच्चे को ले लिया और वारिनिया ग्रैकस के पास गयी। उसने ग्रैकस की बाँहों को प्यार से सहलाया और फिर हाथ बढ़ाकर उसके चेहरे को छू लिया। वह उसकी ओर झुक गया और वारिनिया ने उसको चूम लिया।

वारिनिया ने उससे कहा—तुमको यह बात मुझे बतलानी ही होगी। मैं तुम्हारी ऋणी हूँ क्योंकि तुमने मेरे संग इतनी शराफ़त बरती है। अगर तुम मेरे साथ आओ तो मैं भी तुम्हारे लिए उतनी ही अच्छी होऊँगी जितने अच्छे कि तुम मेरे लिए हो और जितनी अच्छी मैं किसी भी आदमी के लिए हो सकती हूँ।

—मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ, प्रिये।

—तुम मेरे साथ चलोगे ग्रैकस?

—मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ और तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ। मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ मगर रोम के बाहर मैं किसी काम का न रह जाऊँगा। रोम मेरी माँ है। मेरी माँ एक बाज़ारू औरत है मगर तुम्हारे अलावा वही वह औरत है जिसे मैंने कभी प्यार किया। मैं दग़ाबाज़ नहीं हूँ। और मैं एक बुड्ढा मोटा आदमी हूँ। फ्लैवियस को पूरा शहर छानना पड़ेगा अगर उसको ऐसे रथ की तलाश हो जो मुझे ढो सके। जाओ, जाओ, प्रियतमे।

फ्लैवियस ने अधीर होते हुए कहा—मैंने तुमसे कहा कि वक्त बहुत कम रह गया है। अब तक इस चीज़ के बारे में पचास आदमी जान गये होंगे। क्या सोचते हो कि कोई बतला न देगा?

ग्रैकस ने कहा—इसके आराम का पूरा ख़्याल रखना। अब तुम एक अमीर आदमी होगे फ्लैवियस। अब तुम आराम से ज़िन्दगी बसर करोगे। इसलिए मेरे संग अब यह आख़िरी नेकी करो। इसको और इसके बच्चे को ख़ूब संभालकर ले जाना। उत्तर में तुम इनको वहाँ तक ले जाना जहाँ आल्प्स के पहाड़ शुरू होते हैं। वहाँ की नन्हीं-नन्हीं घाटियों में रहनेवाले गॉल किसान

बड़े सीधे, सच्चे, मेहनती लोग हैं। उनके बीच इसको जगह मिल जायगी। मगर तब तक तुम इसका साथ न छोड़ना जब तक कि तुमको आसमान से बात करता हुआ आल्प्स साफ़-साफ़ दिखलायी न दे। और देखो, तेज़ जाना। घोड़ों को बेतहाशा चाबुक लगाना। अगर ज़रूरत हो तो उनको तेज़ चला-चलाकर मार डालना और नये घोड़े ख़रीद लेना मगर रुकना मत। क्या तुम मेरे संग यह नेकी करोगे फ्लैवियस?

—मैंने अब तक तुमको दिया हुआ अपना कोई वचन तोड़ा नहीं है।

—नहीं, तुमने नहीं तोड़ा है। मैं इस बात को कहूँगा। अच्छा, अलविदा।

वह दरवाज़े तक उन लोगों के संग गया। वारिनिया ने बच्चे को अपनी बाँहों में ले लिया। सुबह का भूरा धुँधलका छँट रहा था और रोशनी फैल रही थी और वह दरवाज़े में खड़ा उन लोगों को रथों में सवार होते देख रहा था। घोड़े चौकन्ने थे और चल पड़ने की तेज़ी में थे। वे पक्के चबूतरे पर पैर पटक रहे थे और अपने मुँह की लगाम चबा रहे थे।

—विदा वारिनिया, विदा।—उसने वारिनिया को पुकारकर कहा।

वारिनिया ने हाथ हिलाया। उसके बाद रथ चल पड़े और उन सँकरी वीरान सड़कों पर उनकी खड़खड़ाहट गूँज उठी और उस शोर से आसपास के सभी लोग जाग पड़े....

इसके बाद ग्रैकस अपने दफ्तर में गया। वह अपना बड़ी-सी कुर्सी में बैठ गया। अब वह बहुत थक गया था और थोड़ी देर के लिए उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। मगर वह सोया नहीं। उसके मन का सन्तोष अभी गया नहीं था। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और अपने विचारों को यों ही भटकने दिया और बहुत-सी चीज़ों के बारे में सोचने लगा। उसको अपने बाप का ख़याल आया जो एक ग़रीब जूता बनानेवाला था, उस गुज़रे ज़माने में जो कि अब फिर लौट कर नहीं आएगा जब कि रोमन मेहनत करते थे और इस बात पर गर्व करते थे कि वे मेहनत करते हैं। उसे रोम की सड़कों पर की अपनी वह राजनीतिक अपरेंटिसी याद आयी, वह शुरू शुरू के दिन जब वह राजनीति के सबक सीख रहा था, रोम की सड़कों पर, गुण्डों के गिरोहों की वह आपसी खूनी लड़ाइयाँ, वोटों का वह ख़रीदना और बेचना; भीड़ का इस्तेमाल, शक्ति की सीढ़ी पर चढ़ते हुए उसका सत्ता के पद पर पहुँचना। और वह सत्ता ऐसी कि कभी पर्याप्त न होती थी और पैसा भी इतना कि कभी काफ़ी न पड़ता था, हमेशा ताकत और पैसे की भूख। उन दिनों अब भी ऐसे ईमानदार रोमन लोग थे जो प्रजातन्त्र के लिए लड़े थे, जो जनता के अधिकारों के लिए लड़े थे, 'जिन्होंने साहस के साथ मंच से उस अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी थी कि किसान की ज़मीन छीनी जा रही थी और

उन छोटी-छोटी काश्तकारियों की जगह गुलामों की मेहनत से चलनेवाली बड़ी-बड़ी जागीरदारियाँ खड़ी हो रही थीं। वे चेतावनी देते थे! वे गरजते थे! वे अत्याचार का विरोध करते थे! ग्रैकस उनको समझता था। यही उसका बड़ा गुण था—कि वह उन लोगों को समझता था और इस बात को स्वीकार करता था कि उनका उद्देश्य, उनका लक्ष्य न्यायपूर्ण था। मगर वह यह भी जानता था कि उनके लक्ष्य का कोई भविष्य नहीं है, कि उसकी हार अवश्यम्भावी है। इतिहास की घड़ी को कोई पीछे नहीं फेर सकता। वह आगे बढ़ती है और उसने उन लोगों के संग हाथ मिला लिया जिनको साम्राज्य में आस्था थी। उसने अपने गिरोहों को उन लोगों को नष्ट करने के लिए भेजा जो उन पुरानी आज़ादियों की बात करते थे। उसने अपने सिद्धान्तों को ज़िन्दगी में बरतनेवाले न्यायपूर्ण लोगों की हत्या की थी।

आज वह इस चीज़ के बारे में सोच रहा था, उसके मन में कोई खेद या ग्लानि न थी, वह तो केवल इस चीज़ को समझना चाहता था। उसके आरंभिक दिनों के वे दुश्मन पुरानी आज़ादियों के लिए लड़ रहे थे। मगर क्या कहीं वह पुरानी आज़ादियाँ थीं? अभी यह एक औरत उसके घर से चली गयी थी और उसकी वह आज़ादी उसके भीतर आग की तरह सुलग रही थी। उसने अपने बेटे का नाम स्पार्टकस रक्खा था और जब वह बड़ा होगा तो वह भी अपने बेटे का नाम स्पार्टकस रक्खेगा और आख़िर कब ये गुलाम अपने गुलाम होने से सन्तुष्ट होंगे? इस चीज़ का उसके पास कोई जवाब न न था। इस पहेली का उसके पास कोई हल न था मगर तब भी उसके मन में कोई खेद न था। उसकी ज़िन्दगी भरी-पूरी थी और उसे अपने ऊपर कोई खेद न था। उस वक़्त उसको इतिहास का कुछ बोध हुआ, समय की गति का कुछ बोध, उस समय की गति का जिसमें वह स्वयं बस एक क्षण था—और उस चीज़ से उसके मन को आराम मिला। उसका प्यारा नगर रहेगा। वह चिरकाल तक रहेगा। अगर स्पार्टकस कभी लौटा और उसने इस नगर की दीवारें गिरायीं ताकि लोग निर्भय होकर जी सकें तब वे समझेंगे कि कभी इस नगर में ग्रैकस जैसे लोग भी थे जो इस नगर को प्यार करते थे यद्यपि वे यह भी मानते थे कि इस नगर में पाप है।

अब उसे स्पार्टकस के सपने का ख़याल आया। क्या वह सपना जियेगा? क्या वह क़ायम रहेगा? क्या वह अजीब बात जो वारिनिया ने कही थी सच थी कि पाप के ख़िलाफ़ लड़कर सभी लोग पवित्र और निःस्वार्थ हो सकते हैं। उसको कभी ऐसे आदमी नहीं मिले थे; मगर उसने कभी स्पार्टकस को नहीं जाना था। मगर तो भी वारिनिया को तो उसने जाना था। अब स्पार्टकस चला गया था और वारिनिया चली गयी थी। अब यह एक सपना था। उसने

वारिनिया के उस विचित्र ज्ञान के केवल छोर को ही छुआ था मगर उसके लिए इस ज्ञान का कोई अस्तित्व न था और न हो सकता था।

उसके घर की देखभाल करनेवाली अन्दर आ गयी। उसने बड़े विचित्र ढंग से उसको देखा और बड़े कोमल स्वर में उससे पूछा—तू क्या चाहती है, बुढ़िया ?

—मालिक, आपका नहाने का सामान तैयार है।

—मगर आज मैं नहीं नहाऊँगा, उसने कहा और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह औरत उसकी बात सुनकर कुछ अचम्भे में आ गयी और घबरा उठी। वह बोला—आज सब कुछ बदल गया है बुढ़िया। देखो उस मेज़ पर बहुत से थैले रक्खे हैं। हर थैले में मेरे हर गुलाम के लिए गुलामी से उसकी रिहाई का पर्चा और बीस हज़ार सिक्के हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम वे थैले सब गुलामों को दे दो और उनसे कह दो कि मेरा घर छोड़कर चले जायँ। मैं तुमको अब यही आदेश देता हूँ, बुड्ढी।

बुढ़िया ने कहा—मैं आपकी बात नहीं समझी।

—नहीं। नहीं समझीं ! क्यों नहीं समझीं ? मैंने तो बहुत साफ़-सी बात कही। मैं चाहता हूँ कि तुम सब चली जाओ। तुम अब आज़ाद हो और तुम्हारे पास थोड़ा पैसा भी है। क्या इसके पहले मैंने कभी तुमको अपने आदेश का उल्लंघन करने दिया है ?

—मगर आपके लिए खाना कौन पकाएगा ? आपकी देख-भाल कौन करेगा ?

—यह सब सवाल मत पूछ बुढ़िया। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, कर।

जब तक वे सब घर के बाहर चले नहीं गये ग्रैकस को लगता रहा कि जैसे वक़्त की चाल रुक गयी है और जब वे चले गये तो घर एक अजीब ढंग से, एक नये ही तरीक़े से ख़ामोश हो गया। सवेरे का सूरज उग रहा था। सड़कों पर ज़िन्दगी थी और शोर था और खड़खड़ाहट थी मगर ग्रैकस का घर ख़ामोश था।

वह लौटकर अपने दफ्तर गया, एक आलमारी के पास जाकर उसका ताला खोला। आलमारी में से उसने एक तलवार निकाली, स्पेनवाली वह छोटी तलवार जैसी कि सिपाही लेकर चला करते थे मगर बड़ी खूबसूरत बनी हुई और बड़ी ही सुन्दर अलंकृत म्यान में रक्खी हुई। अब से बरसों पहले किसी बड़े औपचारिक अवसर पर वह उसको दी गयी थी मगर लाख कोशिश करने पर भी वह याद न कर सका कि वह अवसर कौन-सा था। कैसी अजीब बात थी कि वह इन हथियारों को इतना तुच्छ समझता था ! मगर जब उसको

यह ख़याल आया कि वह अकेला हथियार जिस पर वह भरोसा करता था उसकी अपनी बुद्धि थी तब फिर उसको आश्चर्य न रह गया।

उसने म्यान में से तलवार निकाली और उसकी धार और उसकी नोक को परखा। काफ़ी तेज़ थी। इसके बाद वह फिर अपनी कुर्सी पर गया और बैठ गया और अपनी बड़ी-सी तोंद को देखने लगा। उसको इस विचार पर ही हँसी आने लगी कि वह आत्महत्या करने की सोच रहा था। इसमें कोई गरिमा न थी। यह एक बिलकुल ही उपहासास्पद चीज़ थी और उसे सचमुच ही सन्देह होने लगा कि क्या उसके अन्दर इतनी शक्ति होगी कि वह प्राचीन काल से चले आते हुए रोमन तरीक़े से वह तलवार अपने पेट में भोंक ले। उसे कैसे मालूम कि सिर्फ़ चर्बी कटकर न रह जायगी और फिर उसकी हिम्मत छूट जायगी और फिर वह अपने ही ख़ून में पड़ा मदद के लिए चिल्लाने नहीं लगेगा, गिड़गिड़ाने नहीं लगेगा? किसी भी आदमी की ज़िन्दगी में यह ख़ून करने की शुरुआत के लिए कैसा अजीब वक़्त है! उसने अपनी सारी ज़िन्दगी में किसी चीज़ का ख़ून नहीं किया था यहाँ तक कि एक मुर्गी भी उसने न हलाल की थी।

तब उसने समझा कि सवाल हिम्मत का नहीं था। उसे कभी-ही-कभी मौत से डर लगता था। अपने बचपन के दिनों से ही वह देवताओं की उन उपहासास्पद कहानियों की खिल्ली उड़ाया करता था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने बहुत आसानी से अपने वर्ग के सुशिक्षित लोगों के दृष्टिकोण को अपना लिया कि ईश्वर कहीं नहीं है और पुनर्जन्म भी कुछ नहीं होता। उसने अपने मन में स्थिर कर लिया था कि वह क्या करना चाहता था। उसे बस इस बात का डर था कि वह उस काम को आन-बान के साथ कर सकेगा या नहीं।

उसके दिमाग़ में यही सब विचार आ-जा रहे थे और इसी बीच शायद उसे नींद आ गयी। वह जागा तब जब बाहर के दरवाज़े को किसी ने ज़ोर-ज़ोर से पीटा। उसने नींद के आलस्य को दूर किया और सुनने लगा।

उसने सोचा—वाह रे गुस्सा! कैसा अजीब गुस्सा है तुम्हारा क्रैसस। कैसा उचित क्रोध! इस मोटे बुड्ढे खूसट की मजाल कि तुमको चकमा देकर युद्ध के तुम्हारे सबसे बड़े पुरस्कार को तुमसे छीन ले जाय। मगर तुम उससे प्यार नहीं करते थे क्रैसस। तुम स्पार्टकस को सलीब पर चढ़ाना चाहते थे और जब तुम उसको नहीं पा सके, तो तुमको वारिनिया की ज़रूरत हुई। तुम चाहते थे कि वह तुमको प्यार करे, तुम्हारे सामने अपने आपको ज़लील करे। ओह क्रैसस, तुम कैसे बेवकूफ़ हो—कितने बड़े गधे हो! मगर तुम्हारे जैसे लोग ही तो आज ज़माने के बादशाह हैं। इसमें भला क्या सन्देह।

उसने तलवार को तलाश किया मगर वह मिली नहीं। तब वह घुटने के बल बैठ गया और कुर्सी के नीचे वह तलवार उसको दिखायी दी। तलवार हाथ में लेकर वह झुक गया और फिर अपनी सारी ताक़त लगाकर उसने तलवार को अपने सीने में भोंक लिया। वह दर्द ऐसा था कि वह तड़पकर चिल्ला उठा मगर तलवार अन्दर चली गयी और फिर वह मुँह के बल उसी तलवार पर गिरा और तलवार उसके शरीर के बोझ से और भी अन्दर चली गयी।

दरवाज़ा तोड़कर अन्दर आने पर क्रैसस ने ग्रैकस को इसी हालत में पाया। ग्रैकस के मुर्दा शरीर को पलटने में सेनापति को अपनी पूरी ताक़त लगानी पड़ी। तब सेनापति ने देखा कि राजनीतिज्ञ के चेहरे पर एक अजीब मुस्कराहट है, संभवतः विद्रूप की....

इसके बाद क्रैसस अपने घर लौट आया। गुस्से और नफ़रत से उसका बुरा हाल हो रहा था। अपनी सारी ज़िन्दगी में उसने किसी आदमी या किसी चीज़ से ऐसी नफ़रत न की थी जैसी कि आज उसे इस मुर्दा ग्रैकस से हो रही थी। मगर ग्रैकस मर चुका था और क्रैसस बेबस था।

क्रैसस जब अपने घर में दाख़िल हुआ तो उसको पता चला कि एक अतिथि आया हुआ है। नौजवान केयस उसका इन्तज़ार कर रहा था। जो कुछ हुआ था उसकी कोई भी जानकारी केयस को न थी। उसने क्रैसस से मिलते ही उसको बतलाया कि वह अभी-अभी कापुआ में छुट्टियाँ बिताकर लौट रहा है और सबसे पहले सीधे अपने प्रिय क्रैसस से मिलने आया है। वह क्रैसस के पास पहुँचा और उसके सीने को बड़े प्यार से थपथपाने लगा। और तब क्रैसस ने उसको धक्का देकर गिरा दिया।

गुस्से से पागल होकर वह बग़लवाले कमरे में गया और वहाँ से एक कोड़ा लेकर आ गया। केयस अभी फ़र्श पर से उठ ही रहा था, उसकी नाक से खून बह रहा था और उसके चेहरे पर आश्चर्य था और पीड़ा थी और आक्रोश था। क्रैसस ने कोड़े से उसे पीटना शुरू कर दिया।

केयस दर्द से चिल्लाया। वह बार-बार चिल्ला रहा था मगर क्रैसस उसे मारे ही जा रहा था और वह तो ख़ैर हुई कि खुद उसके गुलामों ने आख़िरकार क्रैसस को पकड़ लिया और तब केयस कोड़े के दर्द से एक छोटे से लड़के की तरह रोता हुआ गिरता-पड़ता घर के बाहर निकल गया।

भाग ८ । जिसमें वारिनिया आज़ाद होती है ।

फ्लैवियस ने ग्रैकस के संग अपने इक़रारनामे को पूरा किया । अच्छे से अच्छे प्रमाणपत्रों को लेकर, जिन पर स्वयं ग्रैकस के हस्ताक्षर थे, रथ तूफ़ान की तरह पहले उत्तर को और फिर पूरब की ओर बढ़े । वारिनिया को यात्रा की बहुत बातें याद न थीं । पहले दिन तो लगभग सारे दिन वह बच्चे को अपनी छाती से चिपकाये सोती रही । कासिया मार्ग एक बहुत ही अच्छी, चिकनी और पक्की सड़क थी और उसके ऊपर रथ बड़ी आसानी से दौड़ रहे थे । दिन के पहले हिस्से में तो रथ चलानेवाले ने बड़ी बेदर्दी से घोड़ों को हाँका, दोपहर होने पर नये घोड़े जोते गये और फिर बाक़ी सारे दिन वे एक बँधी हुई, तेज़ दुलकी चाल से चलते रहे । शाम होते-होते वे लोग रोम से सौ मील उत्तर पहुँच चुके थे । उन्होंने अँधेरे में फिर नये घोड़े जोते और फिर सारी रात चाँद की रोशनी में वे रथ अपनी बँधी हुई तेज़ चाल से मील पर मील पार करते चले जा रहे थे ।

फ़ौजी चौकियों पर कई बार उनको रोका गया मगर सेनेट की ओर से मिला हुआ वह अनुमति पत्र जो ग्रैकस ने फ्लैवियस को दिया था, हर बार उनको छुटकारा दिलाने में सहायक हुआ । उस रात वारिनिया अपने हिलते हुए रथ में घण्टों खड़ी रही । उसका बच्चा कम्बलों में लिपटा, तकिये लगाये बड़े इतमीनान से उसके पैरों के पास सो रहा था । रथ में खड़े-खड़े उसने चाँदनी में नहाये हुए उस ग्रामांचल को पीछे छूटते देखा । उनका रथ जब उन शानदार रोमन पुलों पर से गुज़रा तो उन्होंने नीचे तेज़ बहती पहाड़ी नदियों को देखा । दुनिया सो रही थी मगर वे चले जा रहे थे ।

जब भोर से कुछ घण्टे पहले चाँद डूबा तो वे सड़क से हटकर एक छोटी सी चरागाह पर निकल गये, घोड़ों को खोल दिया, थोड़ी-सी रोटी खायी और शराब पी और फिर आराम करने के लिए कम्बलों पर लेट गये । वारिनिया

को नींद मुश्किल से आयी मगर थके हुए रथ-चालक फ़ौरन सो गये। वारिनिया को ऐसा लगा कि जैसे उसने अभी-अभी अपनी आँख बन्द की ही थी कि फ्लैवियस उसे जगाने लगा। जिस वक़्त घोड़े रथ में जोते जा रहे थे, वारिनिया अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। रथ में घोड़े जोतने का काम धीरे-धीरे और कुछ खिझे हुए ढंग से हो रहा था, जैसा कि होता ही है जबकि काम करनेवालों को आराम न मिला हो और उनकी थकान अभी चल ही रही हो, और तब भोर के उस मद्धिम-से आलोक में वे लोग फिर से सड़क पर आ गये और फिर उत्तर की ओर बढ़ चले। जब वे एक मील-पड़ाव पर हाथ-पैर सीधा करने और घोड़ों को बदलने के लिए रुके तब सूरज उग रहा था। थोड़ी देर बाद वे परकोटे से घिरे हुए एक शहर के बगल से गुज़रे और उस दिन पूरी सुबह कोचवान घोड़ों को बराबर चाबुक मारते रहे और रथ घड़-घड़ाते हुए आगे बढ़ते गये। अब रथ की यह अनन्त गति वारिनिया को खलने लगी थी। अब वह उससे सही न जा रही थी। उसने कई बार कै की और उसे बराबर डर बना हुआ था कि उसकी छाती का दूध सूख जायगा। मगर शाम के वक़्त फ्लैवियस ने एक किसान से ताज़ा दूध और बकरी के दूध का पनीर ख़रीदा। यह खाना ऐसा था जो वारिनिया के पेट में टिक सकता था। चूँकि आसमान में बादल थे इसलिए उन्होंने अधिकांश रात विश्राम में ही गुज़ारी।

सबेरा होने के पहले वे लोग उठ गये और फिर सड़क पर चल पड़े और दोपहर होते-होते वे एक ऐसी जगह पर आये जहाँ एक दूसरी बड़ी सड़क सामने से आकर मिलती और उनकी सड़क को काटती थी। अब वे लोग उत्तर और पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे और जिस वक़्त सूरज डूब रहा था वारिनिया ने पहली बार दूर पर आल्प्स के हिमाच्छादित शिखर देखे। उस रात चाँद था और वे लोग घोड़ों को ज़्यादा सताये बग़ैर काफ़ी आराम से आगे बढ़ते रहे। रात को वे एक बार रुके, घोड़ों को आख़िरी बार बदलने के लिए, और फिर सुबह होने के पहले ही बड़ी सड़क से मुड़कर एक कच्ची सड़क पर निकल गये जो पूरब को जाती थी। यह सड़क चक्कर खाती हुई नीचे एक घाटी में जाती थी और जब सूरज उगा तब वारिनिया ने दूर पर कुहरे में ढँकी हुई वह पूरी घाटी देखी, एक ख़ूबसूरत-सी नदी उसके बीच में होकर बहती थी और उसके दोनों ओर पहाड़ियाँ थीं। आल्प्स अब और भी पास था।

वे लोग अब बहुत तेज़ न चल पा रहे थे क्योंकि रथ उस कच्ची सड़क में, जिसमें घट्टे पड़े हुए थे, फँस-फँसकर इधर-उधर हिचकोले खा रहे थे। वारिनिया अपने बच्चे को गोद में लिये गद्दियों के बीच बैठी थी। उन्होंने एक लकड़ी के पुल पर से नदी पार की और फिर धीरे-धीरे पहाड़ियों पर चढ़ने लगे। सारा दिन घोड़े उस चक्करदार पहाड़ी रास्ते पर रास तुड़ाकर भागने की

कोशिश करते रहे। गॉल किसान उनको देखकर अपना काम बन्द कर देते थे और इन दो बड़े-बड़े रथों और तगड़े-तगड़े सजीले घोड़ों को देखने लग जाते थे और गाँव के बच्चे भी सिर उठाये भागते हुए सड़क पर आ जाते थे और आँखें फाड़-फाड़कर इस असाधारण दृश्य को देखने लगते थे।

तीसरे पहर जब कि रास्ता पगडंडी की तरह सँकरा हो गया, वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे और वहाँ से उन्होंने अपने सामने एक चौड़ी सी ख़ूबसूरत घाटी फैली हुई देखी। इस चौड़ी घाटी में यहाँ-वहाँ वारिनिया को एक छोटा-सा क़स्बा फैला हुआ दिखायी दिया, कुछ थोड़े से पक्के मकान और कहीं-कहीं किसानों की झोपड़ियाँ। उस घाटी में काफ़ी दूर तक जंगल फैले हुए दिखायी दे रहे थे, कई छोटी-छोटी नदियाँ और नाले थे और दूर पर किसी बड़े और परकोटे से घिरे हुए शहर का भी आभास मिलता था। वह शहर उनके पच्छिम में था; वे लोग अपनी सड़क पकड़कर नीचे उत्तर की ओर, आल्प्स की दिशा में बढ़े। आल्प्स अब भी काफ़ी दूर नज़र आ रहा था।

नीचे उतरना भी उतना ही मुश्किल था जितना कि ऊपर चढ़ना क्योंकि रास खींचकर घोड़ों को रोकना पड़ता था और सड़क चक्करदार थी। अँधेरा हो चुका था जब वे लोग नीचे घाटी में पहुँचे और रुककर आराम और चाँद के निकलने का इन्तज़ार करने लगे। उस रात चाँद की रोशनी में उन्होंने थोड़ी देर सफ़र किया, फिर रुक गये और फिर अगले रोज़ भोर के प्रथम आलोक में वे लोग आगे बढ़े। यहाँ के सारे रास्ते कच्चे थे। वे आगे बढ़ते गये, बढते गये—और आख़िरकार उन पहाड़ियों के पास पहुँचे जहाँ से आल्प्स शुरू होता था।

यहाँ पहुँचकर फ्लैवियस ने वारिनिया से विदा ली और सुबह के वक़्त उसको वहाँ की एक सड़क पर छोड़ दिया जहाँ से सिर्फ़ खेत और जंगल दिखायी देते थे।

उसने वारिनिया से कहा—अच्छा अब मुझे आज्ञा दो वारिनिया, विदा। मैंने ग्रैकस से जो कुछ वादा किया था उसको मैंने पूरा कर दिया है और मेरा ख़याल है कि उसने जो पैसे मुझको दिये हैं उनमें से कुछ का अब मैं अपने श्रम के कारण अधिकारी भी हूँ। मेरा ख़याल है कि अब हम दोनों फिर कभी रोम न देखेंगे, न तुम न मैं, क्योंकि अब रोम हम दोनों के स्वास्थ्य के लिए ठीक न होगा। मैं तुम्हारे लिए सौभाग्य और सुख की कामना करता हूँ—तुम्हारे लिए और तुम्हारे इस नन्हें बच्चे के लिए। यहाँ से करीब एक मील की दूरी पर एक छोटा सा किसान गाँव है। अच्छा हो कि वे लोग तुमको रथ पर आते हुए न देखें।

—यह लो इस थैली में एक हज़ार सिक्के हैं जिनसे तुम इन इलाकों में

अगर ज़रूरत पड़े तो एक बरस गुजर-बसर कर सकती हो। ये किसान सीधे-सादे लोग हैं और अगर तुम पहाड़ पार करके अपने देश जाना चाहो तो इसमें भी तुमको उनसे सहायता मिलेगी। मगर मैं तुमको सलाह दूँगा कि तुम इसकी कोशिश न करना। पहाड़ों में जंगली लोग रहते हैं और उन्हें अजनबियों से नफ़रत है। और फिर यह भी तो है, वारिनिया, कि तुम्हें अपने लोग नहीं मिलेंगे। जर्मनों के क़बीले जंगलों में यहाँ से वहाँ घूमा करते हैं और कोई नहीं कह सकता कि कोई क़बीला इस साल यहाँ है तो अगले साल कहाँ होगा। फिर, मैंने जो कुछ सुना है वह तो यही है कि आल्प्स के उस पार के जंगल बहुत नम हैं और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए ठीक न होंगे। अगर मैं तुम्हारी जगह पर होता वारिनिया, तो मैं यहीं कहीं आस-पास रहने का निश्चय करता। मैं मानता हूँ कि मुझे यह चीज़ बहुत अच्छी न लगती मगर तुम यही तो चाहती थीं !

वारिनिया ने अपनी सहमति जतलाते हुए कहा—हाँ, मैं यही चाहती थी। मैं तुम्हारी बड़ी कृतज्ञ हूँ फ्लैवियस।

और फिर तब उन्होंने अपने रथों को घुमाया और वारिनिया वहाँ पर अपने बच्चे को गोद में लिये खड़ी रही और देखती रही और देखते-देखते वे रथ धूल का एक बादल अपने पीछे छोड़ते हुए वहाँ से चले गये और वारिनिया उनको तब तक देखती रही जब तक कि वे एक मोड़ के पीछे आँख से ओझल न हो गये।

फिर वह वहीं सड़क के किनारे बैठ गयी और अपने बच्चे को दूध पिलाने लगी। बच्चे को दूध पिलाकर वह सड़क पर चलने लगी। गर्मी का महीना था। सवेरे का बड़ा ही प्यारा ठण्डा वक़्त था। आसमान बिलकुल साफ़ नीला था और सूरज निकलता चला आ रहा था और चिड़ियाँ गा रही थीं और मधु-मक्खियाँ इस फूल से उस फूल पर जाती अमृत पी रही थीं और हवा को अपने गाने से भर रही थीं।

वारिनिया सुखी थी। यह सुख वह तो न था जो उसने स्पार्टकस के संग जाना था; मगर स्पार्टकस ने उसको जीवन के बारे में एक ज्ञान दिया था और बतलाया था कि अस्तित्व से बड़ी सम्पदा दूसरी नहीं है। वह ज़िन्दा थी और आज़ाद थी और उसका बच्चा ज़िन्दा था और आज़ाद था; इसलिए एक तरह से वह सन्तुष्ट थी और भविष्य को आशा और अनुराग से देख रही थी।

२

वारिनिया की बाद की कहानी यह है। औरत अकेले नहीं रह सकती और जिस गाँव में वह आयी थी वह सीधे-सादे गॉल के किसानों का गाँव था और वहाँ उसको एक ऐसे आदमी ने आश्रय दिया जिसकी पत्नी प्रसूति में

मर गयी थी। शायद लोग जानते थे कि वह एक भागी हुई गुलाम औरत है। मगर उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है। उसकी अच्छी, दूध से भरी हुई छातियाँ थीं और उसने उनके एक बच्चे को जीवनदान दिया। वह एक अच्छी स्त्री थी और लोग उसको उसकी शक्ति और सबको अपना बना लेनेवाली सादगी के कारण प्यार करते थे।

जिस आदमी के घर में वह आयी थी वह एक सीधा-सादा किसान था। वह लिख-पढ़ न सकता था और उसने सिर्फ़ जी तोड़ मेहनत के सबक़ सीखे थे। वह स्पार्टकस नहीं था मगर स्पार्टकस से बहुत भिन्न भी न था। जीवन के प्रति उसमें भी वही धैर्य था। उसे गुस्सा देर में आता था और वह अपने बच्चों को बहुत प्यार करता था—खुद अपने बच्चे को और उसको भी जिसे वारिनिया अपने संग लायी थी।

वारिनिया की तो वह पूजा ही करता था—क्योंकि वह उसके पास बाहर से आयी थी और अपने संग जीवन लायी थी। धीरे-धीरे वारिनिया भी उसको जानने लगी और कुछ-कुछ प्यार करने लगी। उनकी ज़बान को उसने काफ़ी आसानी से सीख लिया, उनकी ज़बान का आधार लैटिन था और उसमें बहुत से गॉलिश ज़बान के शब्द मिले हुए थे। उसने उनके तौर-तरीके सीख लिये जो उसके अपने क़बीले के तौर-तरीक़ों से बहुत भिन्न न थे। वे खेत जोतते थे और फ़सल उगाते थे। वे अपनी फ़सल का कुछ हिस्सा ग्राम देवताओं को और कुछ हिस्सा टैक्स जमा करनेवाले को और रोम को दे देते थे। वे जीते थे और मरते थे; नाचते थे और गाते थे और रोते थे और शादी करते थे और उनकी ज़िन्दगी ऋतुओं के साधारण चक्र की तरह चलती रहती थी।

दुनिया में बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे थे मगन उन लोगों को इस परिवर्तन की चेतना इतने धीमे हो रही थी कि अब तक सचमुच कोई उथल-पुथल न हुई थी।

वारिनिया फलवती थी। हर साल एक बच्चा उसकी कोख से पैदा होता था और जिस आदमी से उसने विवाह किया था उससे उसको सात बच्चे हुए। उसका बच्चा स्पार्टकस उन लोगों के साथ-साथ पला और बढ़ा और एक तन्दुरुस्त दरख़्त की तरह सीधा और लम्बा और मज़बूत निकल आया और जब वह सात बरस का हुआ तो वारिनिया ने पहली बार उसे बतलाया कि उसका बाप कौन था और उसके बाप ने जो कुछ किया था उसकी कहानी उसको सुनायी। उसको यह देखकर हैरत हुई कि वह उन बातों को इतनी अच्छी तरह समझ रहा था। उस गाँव में कभी किसी ने स्पार्टकस का नाम नहीं सुना था। दुनिया में इससे भी बड़े-बड़े भूडोल आये थे और इस गाँव को बिना छुए ही चले गये थे। और जैसे-जैसे वे बच्चे बड़े होते गये, वे तीन

लड़कियाँ और पाँच लड़के, वारिनिया ने उन्हें यह कहानी बहुत बार सुनायी। उसने उनको बतलाया कि कैसे एक साधारण आदमी ने जो कि गुलाम था अत्याचार और उत्पीड़न का विरोध किया और कैसे चार साल तक महान् शक्तिशाली रोम उसके नाम से काँपता था। उसने उन लोगों को उस मनहूस खान के बारे में बतलाया जिसमें स्पार्टकस काम करता था और उसने उनको बतलाया कि कैसे वह रोम के मैदान में छुरा हाथ में लेकर लड़ता था। उसने उनको बतलाया कि वह कितना नेक और भला और उदार था और उसकी कहानी सुनाते समय वह कभी भी स्पार्टकस को उन सीधे-सादे लोगों से अलग करके न देखती थी जिनके बीच वह रह रही थी। सच बात यह है कि जब वह स्पार्टकस के साथियों के बारे में बतलाती थी तो अपनी बात को समझाने के लिए गाँव के इस-उस आदमी का उदाहरण भी देती जाती थी। और जब वह ये कहानियाँ कहती थी तो उसका पति आश्चर्य और स्पर्द्धा से उनको सुना करता था।

वारिनिया की ज़िन्दगी आसान ज़िन्दगी नहीं थी। पौ फटने से लेकर रात होने तक वह मेहनत करती थी—घास छीलना, गोड़ाई करना और फिर मकान की सफ़ाई, कताई-बुनाई। सारे दिन वह काम करती थी। धूप में उसकी जिल्द का गोरा रंग कुछ स्याह पड़ गया और उसकी खूबसूरती गायब हो गयी, मगर अपनी खूबसूरती को उसने कभी कोई ख़ास अहमियत भी तो न दी थी। वह जब कभी रुककर अपने अतीत के बारे में सोचती तो जीवन ने उसको जो कुछ दिया था उसके लिए मन-ही-मन कृतज्ञता अनुभव करती। अब वह स्पार्टकस के लिए शोक न करती थी। स्पार्टकस के संग उसकी ज़िन्दगी अब एक सपने जैसी हो गयी थी।

उसका पहला बेटा जब बीस साल का हुआ तो उसको बुखार आ गया और वह तीन दिन बाद मर गयी। उसको मौत तेज़ी से आयी और उसे बहुत तकलीफ भी नहीं हुई और रोने-धोने के बाद उसके पति और उसके बेटों और उसकी बेटियों ने उसको एक कफ़न में लपेटकर कब्र में गाड़ दिया।

उसके मरने के बाद ही इस जगह पर भी परिवर्तन दिखायी देने लगे। टैक्स बढ़ाये जाने लगे और बराबर बढ़ते ही जा रहे थे, उनका कोई अन्त न दिखायी देता था। एक ऐसी खुश्क गर्मी आयी जिसमें पानी नहीं बरसा और बहुत-सी फसल बर्बाद हो गयी और फिर उसके बाद रोमन सैनिक आये। वे परिवार जो टैक्स नहीं दे सकते थे उनको भेड़-बकरियों की तरह उनके मकानों और उनकी ज़मीन से खदेड़कर बाहर कर दिया गया और फिर उन सबके गले में एक ही जंजीर डालकर उन्हें रोम ले जाया गया ताकि उनको बेचकर रक़म अदा की जा सके।

मगर वे जिनकी फ़सलें बर्बाद हो रही थीं उन सब ने इस चीज़ को इतनी आसानी से बिना कान-पूँछ हिलाये स्वीकार नहीं कर लिया। स्पार्टकस और उसके भाई-बहन और गाँव के और भी बहुत से लोग भागकर जंगलों में चले गये जो कि गाँव के उत्तर में थे और जो कि बढ़ते-बढ़ते आल्प्स के जंगलों में जाकर मिल जाते थे। वहाँ पर वे ग़रीबी और मुसीबत से भरी हुई ज़िन्दगी गुज़ारते थे और जो कुछ भी कन्द-मूल मिल जाय या जो थोड़ा-बहुत शिकार हाथ लग जाय वही उनका आहार था; मगर जब उन खेतों पर, जो कभी उनके थे, कोई हवेली खड़ी होती तो वे आते और उस हवेली को जला डालते और उसकी तमाम चीज़ों को हथिया लेते।

इसके बाद सिपाही जंगलों में आते थे और गाँव के किसान सिपाहियों से लड़ने के लिए पहाड़ी क़बीलों के संग मिल जाते थे। भागे हुए गुलाम भी उनके संग मिल जाते थे और इस तरह उन वंचितों का युद्ध सालहासाल चलता रहा। कभी सैनिक उनकी ताक़त को तोड़ देते थे और कभी इन विद्रोहियों की ताक़त इतनी होती थी कि वे अपनी पूरी शक्ति लेकर मैदानों में आ जाते थे और जलाते थे और लूटते थे और उन सैनिकों को हैरान करते थे।

इसी तरह की ज़िन्दगी स्पार्टकस का बेटा जिया और मर गया, उसी तरह लड़ते-लड़ते, जिस तरह उसका बाप मरा था। उसने अपने बेटों को जो कहानियाँ सुनायीं वे अब उतनी स्पष्ट न रह गयी थीं, उनमें घटनाओं का [illegible] उतना न था, तथ्य कम हो गये थे। कथाएँ लोककथाएँ बन गयीं और लोक-कथाओं ने प्रतीकों का रूप ले लिया मगर उत्पीड़कों के विरुद्ध उत्पीड़ितों का युद्ध बराबर चलता रहा। यह एक ऐसी लौ थी जो कभी तेज़ जलती और कभी मद्धिम मगर बुझी कभी नहीं—और स्पार्टकस का नाम मरा नहीं। यह रक्त की परम्परा नहीं, मिले-जुले संघर्ष की परम्परा थी।

एक समय आयेगा जब रोम को तोड़कर गिरा दिया जायगा—और उसको तोड़नेवाले सिर्फ़ गुलाम नहीं होंगे बल्कि गुलाम होंगे और कम्मी होंगे और किसान होंगे और स्वतन्त्र बर्बर जातियाँ होंगी, जो सब मिलकर रोम की दीवारों को चकनाचूर करेंगी।

और जब तक आदमी मेहनत करेगा और कुछ थोड़े से लोग उसकी मेहनत का फल उससे छीनकर हड़प जायँगे, तब तक स्पार्टकस के नाम को लोग याद करेंगे—हाँ, कभी धीरे से, मुँह-ही-मुँह में बोलेंगे और कभी खूब ज़ोर से और साफ़-साफ़ ताकि सभी उस स्पार्टकस के नाम को सुन सकें जो कि गुलाम था और जिसने बग़ावत की थी।

———



बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना

सम्पूर्ण सूचीपत्र
2018

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिनगारी।
घर–घर तक चिनगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन–जन तक पहुँचाना होगा।

दो दशक पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी–सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी–सी दुकान और फ़ुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी–छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर–घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। एक बड़े और एक छोटे प्रदर्शनी वाहन के माध्यम से जनचेतना हिन्दी और पंजाबी क्षेत्र के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला–सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन–संघर्ष–सृजन–प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

हिन्दी क्षेत्र में यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइये, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिये।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

1.	**तरुणाई का तराना**/याङ मो		...
2.	**तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट		...
3.	**माँ**/मक्सिम गोर्की		...
4.	**वे तीन**/मक्सिम गोर्की		75.00
5.	**मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की		...
6.	**जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की		...
7.	**मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की		...
8.	**फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की		55.00
9.	**अभागा**/मक्सिम गोर्की		40.00
10.	**बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की		25.00
11.	**असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई		...
12.	**तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव	(दो खण्डों में)	160.00
13.	**गोदान**/प्रेमचन्द		...
14.	**निर्मला**/प्रेमचन्द		...
15.	**पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र		...
16.	**चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र		...
17.	**गृहदाह**/शरत्चन्द्र		70.00
18.	**शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र		...
19.	**इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का		65.00
20.	**इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव		20.00
21.	**दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव		70.00

22. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
23. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
24. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/व्सेवोलोद इवानोव 30.00
25. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
26. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
27. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
28. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00
29. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 30.00
30. **Mother/***Maxim Gorky* 250.00
31. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00
2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया**
(मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

मक्सिम गोर्की

3. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) ...
4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) ...
5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) ...
6. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 10.00
7. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** ...

अन्तोन चेख़व

8. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) ...
9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) ...
10. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...
11. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00
12. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...
13. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00
14. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00
15. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00
16. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00

17. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
18. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
19. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
20. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
21. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
22. **समय के पंख**/कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
23. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
24. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
25. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
26. **दोन की कहानियाँ**/मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
27. **अब इन्साफ़ होने वाला है** ...
(भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन)
(ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/स. **शकील सिद्दीक़ी**
28. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
29. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/मदन मोहन 35.00

कविताएँ

1. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/पाब्लो नेरूदा 60.00
2. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/लैंग्स्टन ह्यूज 60.00
3. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) 160.00
4. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00
5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ – बेर्टोल्ट ब्रेष्ट**
(मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल)
(ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित) 150.00
6. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00
7. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00
8. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00
9. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/होसे मारिया सिसों 25.00

10.	**इन्तिफ़ादा :** फ़लस्तीनी कविताएँ/स. रामकृष्ण पाण्डेय	...
11.	**लहू है कि तब भी गाता है**/पाश	...
12.	**लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़लस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन) **A Rose Breaking Out of Steel and Blood** (Palestinian Poems)	60.00
13.	**पाठान्तर**/विष्णु खरे	50.00
14.	**लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/विष्णु खरे	60.00
15.	**ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ	60.00
16.	**बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी	50.00
17.	**सामान की तलाश**/असद ज़ैदी	50.00
18.	**कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/शशिप्रकाश	50.00
19.	**पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश	75.00
20.	**सात भाइयों के बीच चम्पा**/कात्यायनी (पेपरबैक)	...
	(हार्डबाउंड)	125.00
21.	**इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी	60.00
22.	**जादू नहीं कविता**/कात्यायनी (पेपरबैक)	...
	(हार्डबाउंड)	200.00
23.	**फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी	80.00
24.	**राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी	15.00
25.	**यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार	50.00
26.	**यह जो वक्त है**/कपिलेश भोज	60.00
27.	**देश एक राग है**/भगवत रावत	...
28.	**बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/नरेश चन्द्रकर	60.00
29.	**दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय	120.00
30.	**देखते न देखते**/मलय	65.00
31.	**असम्भव की आँच**/मलय	100.00
32.	**इच्छा की दूब**/मलय	90.00
33.	**इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार	90.00
34.	**तो**/शैलेय	75.00

नाटक

1.	**करवट**/मक्सिम गोर्की	40.00
2.	**दुश्मन**/मक्सिम गोर्की	35.00

3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री-विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी (पेपरबैक) 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यन्त्ररत मृतात्माओं के बीच**
(साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य-विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/
गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/
बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00

5.	**मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन	20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1.	**एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको	...
2.	**मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुखोम्लीन्स्की	...

आह्वान पुस्तिका श्रृंखला

1.	**प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी	50.00

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका श्रृंखला

1.	**एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**/कात्यायनी, सत्यम	25.00

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1. **नौजवानों से दो बातें**/पीटर क्रोपोटकिन 15.00
2. **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/भगतसिंह 15.00
3. **मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह 15.00
4. **बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह 15.00
5. **जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह 15.00
6. **भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह 15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1. **भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़**/स. सत्यम 350.00
2. **शहीदेआज़म की जेल नोटबुक**/भगतसिंह 100.00
3. **विचारों की सान पर**/भगतसिंह 50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1. **बहरों को सुनाने के लिए**/एस. इरफ़ान हबीब (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम) ...
2. **क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा 15.00
3. **भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र 20.00
4. **यश की धरोहर**/ भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर 50.00
5. **संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा 80.00
6. **शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/स. डॉ. हरदीप सिंह 40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है**
   ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 60.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 60.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 10.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 15.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 15.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 15.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 15.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 10.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00

3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की 5.00
4. **मई दिवस का इतिहास**/अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 5.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** 30.00
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 10.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 75.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 100.00

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स 100.00
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/मार्क्स-एंगेल्स 25.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स-एंगेल्स 150.00
4. **फ्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ्रेडरिक एंगेल्स 20.00

11.	**जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/फ़्रेडरिक एंगेल्स	30.00
12.	**समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स	...
13.	**पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन	15.00
14.	**एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन	60.00
15.	**जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन	25.00
16.	**समाजवाद और युद्ध**/लेनिन	20.00
17.	**साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन	30.00
18.	**राज्य और क्रान्ति**/लेनिन	40.00
19.	**सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन	15.00
20.	**दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन	15.00
21.	**गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन	...
22.	**मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन	20.00
23.	**कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन	20.00
24.	**क्या करें?**/लेनिन	...
25.	**"वामपन्थी" कम्युनिज़्म – एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन	...
26.	**पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन	15.00
27.	**जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन	70.00
28.	**धर्म के बारे में**/लेनिन	20.00
29.	**तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन	10.00
30.	**मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ**/जी. प्लेख़ानोव	30.00
31.	**जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव	35.00
32.	**लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन	50.00
33.	**सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास**	90.00
34.	**माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में)	...
35.	**कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ	...
36.	**सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/माओ त्से-तुङ	35.00
37.	**दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/माओ त्से-तुङ	70.00
38.	**कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़** / माओ त्से-तुङ	15.00
39.	**माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण**	50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

1.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** नयी	300.00
2.	**ख्रुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र	300.00
3.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी)	160.00
4.	**पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग	10.00
5.	**कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/डी. रियाज़ानोव (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)	100.00
6.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/डेविड गेस्ट	...
7.	**महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति : चुने हुए दस्तावेज़ और लेख** (खण्ड 1)	35.00
8.	**इतिहास ने जब करवट बदली**/विलियम हिण्टन	25.00
9.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/वी. अदोरात्स्की	50.00
10.	**अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन**/अल्बर्ट रीस विलियम्स (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)	90.00
11.	**सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस	50.00

राहुल साहित्य

1.	**तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन	40.00
2.	**दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन	...
3.	**वैज्ञानिक भौतिकवाद**/राहुल सांकृत्यायन	65.00
4.	**राहुल निबन्धावली**/राहुल सांकृत्यायन	50.00
5.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

परम्परा का स्मरण

1.	**चुनी हुई रचनाएँ**/गणेशशंकर विद्यार्थी	100.00
2.	**सलाखों के पीछे से**/गणेशशंकर विद्यार्थी	30.00
3.	**ईश्वर का बहिष्कार**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
4.	**लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी	20.00
5.	**धर्म का ढकोसला**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
6.	**स्त्रियों की स्वाधीनता**/राधामोहन गोकुलजी	30.00

जीवनी और संस्मरण

1. **कार्ल मार्क्स जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स 25.00
2. **फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स ...
3. **कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख** ...
4. **अदम्य बोल्शेविक नताशा**
   (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/एल. काताशेवा 30.00
5. **लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा 70.00
6. **लेनिन विषयक कहानियाँ** 75.00
7. **लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/लीदिया फ़ोतियेवा ...
8. **स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन 150.00

विविध

1. **फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ्यूचिक 30.00
2. **पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर 100.00
3. **सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर ....

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1.	**A Contribution to the Critique of Political Economy**	100.00
2.	**The Civil War in France**	80.00
3.	**The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte**	40.00
4.	**Critique of the Gotha Programme**	25.00
5.	**Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy**	25.00
6.	**The Poverty of Philosophy**	80.00
7.	**Wages, Price and Profit**	35.00
8.	**Class Struggles in France**	50.00

FREDERICK ENGELS

9.	**The Peasant War in Germany**	70.00
10.	**Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy**	65.00
11.	**On Capital**	55.00
12.	**The Origin of the Family, Private Property and the State**	100.00
13.	**Socialism: Utopian and Scientific**	60.00
14.	**On Marx**	20.00
15.	**Principles of Communism**	5.00

MARX and ENGELS

16.	**Historical Writings** (Set of 2 Vols.)	700.00
17.	**Manifesto of the Communist Party**	50.00
18.	**Selected Letters**	40.00

V. I. LENIN

19.	**Theory of Agrarian Question**	160.00
20.	**The Collapse of the Second International**	25.00
21.	**Imperialism, the Highest Stage of Capitalism**	80.00
22.	**Materialism and Empirio-Criticism**	150.00

23.	**Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution**	55.00
24.	**Capitalism and Agriculture**	30.00
25.	**A Characterisation of Economic Romanticism**	50.00
26.	**On Marx and Engels**	35.00
27.	**“Left-Wing” Communism, An Infantile Disorder**	40.00
28.	**Party Work in the Masses**	55.00
29.	**The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky**	40.00
30.	**One Step Forward, Two Steps Back**	…
31.	**The State and Revolution**	…

MARX, ENGELS and LENIN

32.	**On the Dictatorship of Proletariat, *Questions and Answers***	50.00
33.	**On the Dictatorship of the Proletariat: *Selected Expositions***	10.00

PLEKHANOV

34.	**Fundamental Problems of Marxism**	35.00

J. STALIN

35.	**Marxism and Problems of Linguistics**	25.00
36.	**Anarchism or Socialism?**	25.00
37.	**Economic Problems of Socialism in the USSR**	30.00
38.	**On Organisation**	15.00
39.	**The Foundations of Leninism**	40.00
40.	**The Essential Stalin** *Major Theoretical Writings 1905–52* (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)	175.00

LENIN and STALIN

41.	**On the Party**	…

MAO TSE-TUNG

42.	**Five Essays on Philosophy**	50.00
43.	**A Critique of Soviet Economics**	70.00
44.	**On Literature and Art**	80.00

45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** …

46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** …

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 275.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 160.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/ *Howard Selsam & Harry Martel* …
4. **Socialism and Ethics**/*Howard Selsam* …
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)**/** *Howard Selsam* 75.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics/***Maurice Cornforth* 70.00
7. **From Marx to Mao Tse-tung /**George Thomson …
8. **Capitalism and After/**George Thomson …
9. **The Human Essence/**George Thomson 65.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions/***Bob Avakian* 125.00
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00
12. **The Lessons of the Paris Commune/** *Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) …
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov …
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* …

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle (Red Papers 7)** 175.00

2. **Preface of Class Struggles in the USSR** / *Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University / *William Hinton* ...
2. **The Cultural Revolution at Peking University** / *Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** / *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** / *William Hinton* ...
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** / *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution /** *Iris Hunter* ...

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969 */ Joshua S. Horn* ...
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China /*Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* ...
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) 35.00

CONTEMPORARY ISSUES

1. **Caste and Class: A Marxist Viewpoint /** Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 15.00

2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism?** / *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?**
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality** / *Alok Ranjan* 15.00

BIGUL REPRINT SERIES

1. **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** 20.00
2. **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00

WOMEN QUESTION

1. **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* ...
2. **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** /*Mary Lou Greenberg*...

MISCELLANEOUS

1. **Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin* ...
2. **An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin* 15.00

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
   (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
   (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद**
   (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना

एक वैचारिक मुहिम है
भविष्य-निर्माण का एक प्रोजेक्ट है
वैकल्पिक मीडिया की एक सशक्त धारा है।

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फ़ाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास, शहीद भगतसिंह यादगारी प्रकाशन, दस्तक प्रकाशन और प्रांजल आर्ट पब्लिशर्स की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्त्रोतों - सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अनुराग ट्रस्ट

1.	**बच्चों के लेनिन**	35.00
2	**Stories About Lenin**	35.00
3.	**सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
4.	**औज़ारों की कहानियाँ**	20.00
5.	**गुड़ की डली**/कात्यायनी	20.00
6.	**फूल कुंडलाकार क्यों होते हैं**/सनी	20.00
7.	**धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव	120.00
8.	**कजाकी**/प्रेमचन्द	35.00
9.	**नीला प्याला**/अरकादी गैदार	40.00
10.	**गड़रिये की कहानियाँ**/क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
11.	**चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/अ. मित्यायेव	35.00
12.	**अन्धविश्वासी शेकी टेल**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
13.	**चलता-फिरता हैट**/एन. नोसोव, होल्कर पुक्क	20.00
14.	**चालाक लोमड़ी** (लोककथा)	20.00
15.	**दियांका-टॉमचिक**	20.00
16.	**गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
17.	**गुफा मानवों की कहानियाँ**/मैरी मार्स	...
18.	**हम सूरज को देख सकते हैं**/मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
19.	**मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
20.	**नन्हे आर्थर का सूरज**/हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा	20.00
22.	**आकाश में मौज-मस्ती**/चिनुआ अचेबे	20.00
23.	**ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन	40.00
24.	**एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की	20.00
25.	**बहादुर**/अमरकान्त	15.00
26.	**बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/शस्या हर्ष	...

27.	**दान्को का जलता हुआ हृदय**/मक्सिम गोर्की	15.00
28.	**नन्हा राजकुमार**/आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी	40.00
29.	**दादा आर्खिप और ल्योंका**/मक्सिम गोर्की	30.00
30.	**सेमागा कैसे पकड़ा गया**/मक्सिम गोर्की	15.00
31.	**बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की	15.00
32.	**वांका**/अन्तोन चेख़व	15.00
33.	**तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
34.	**पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर	...
35.	**काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर	20.00
36.	**अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र	15.00
37.	**दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर	25.00
38.	**रामलीला**/प्रेमचन्द	15.00
39.	**दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द	25.00
40.	**ईदगाह**/प्रेमचन्द	...
41.	**लॉटरी**/प्रेमचन्द	20.00
42.	**गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द	...
43.	**बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द	20.00
44.	**मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द	...
45.	**हार की जीत**/सुदर्शन	...
46.	**इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव	40.00
47.	**चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन	55.00
48.	**उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर	35.00
49.	**हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव	25.00
50.	**दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी)	...
51.	**आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी)	30.00
52.	**झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी)	35.00
53.	**नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन	...
54.	**लाखी**/अन्तोन चेख़व	25.00
55.	**बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव	12.00

56.	**हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक	25.00
57.	**घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव	10.00
58.	**बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव	20.00
59.	**मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन	35.00
60.	**पराये घोंसले में**/फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की	20.00
61.	**कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय	30.00
62.	**मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव	30.00
63.	**सदानन्द की छोटी दुनिया**/सत्यजीत राय	15.00
64.	**छत पर फँस गया बिल्ला**/विताउते जिलिन्सकाइते	35.00
65.	**गोलू के कारनामे**/रामबाबू	25.00
66.	**दो साहसिक कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	15.00
67.	**आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
68.	**कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क	20.00
69.	**रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
70.	**अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क	...
71.	**नये ज़माने की परीकथाएँ**/होल्गर पुक्क	25.00
72.	**किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन	15.00
73.	**पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन)/ कमला पाण्डेय	30.00
74.	**यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण)/ कमला पाण्डेय	100.00
75.	**हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ)/ कमला पाण्डेय	60.00
76.	**कालमन्थन** (उपन्यास)/ कमला पाण्डेय	60.00

ਪੰਜਾਬੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਦਸਤਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ ਦਾ ਸਵੈ-ਜੀਵਨੀ ਨਾਵਲ (ਤਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ)

1. ਮੇਰਾ ਬਚਪਨ	130.00
2. ਮੇਰੇ ਵਿਸ਼ਵ-ਵਿਦਿਆਲੇ	100.00
3. ਮੇਰੇ ਸ਼ਗਿਰਦੀ ਦੇ ਦਿਨ	200.00

4. ਪ੍ਰੇਮ, ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹ / ਕਾਤਿਆਈਨੀ	20.00
5. ਥੀਏਟਰ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਤਰਕਸ਼ਾਸਤਰ / ਬ੍ਰੈਖ਼ਤ	15.00
6. ਆਈਜੇਂਸਤਾਈਨ ਦਾ ਫਿਲਮ ਸਿਧਾਂਤ	15.00
7. ਮਜ਼ਦੂਰ ਜਮਾਤੀ ਸੰਗੀਤ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ	10.00
8. ਪਹਿਲਾ ਅਧਿਆਪਕ / ਚੰਗੇਜ਼ ਆਇਤਮਾਤੋਵ (ਨਾਵਲ)	25.00
9. ਸ਼ਾਂਤ ਸਰਘੀ ਵੇਲਾ / ਬੋਰਿਸ ਵਾਸੀਲਿਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
10. ਭਾਂਜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਫ਼ਦੇਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	100.00
11. ਫੌਲਾਦੀ ਹੜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਸਰਾਫ਼ੀਮੋਵਿਚ (ਨਾਵਲ)	100.00
12. ਇਕਤਾਲ਼ੀਵਾਂ / ਬੋਰਿਸ ਲਵਰੇਨਿਓਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
13. ਮਾਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ (ਨਾਵਲ)	180.00
14. ਪੀਲ਼ੇ ਦੈਂਤ ਦਾ ਸ਼ਹਿਰ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	80.00
15. ਸਾਹਿਤ ਬਾਰੇ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	200.00
16. ਅਸਲੀ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕਹਾਣੀ / ਬੋਰਿਸ ਪੋਲੇਵਾਈ (ਨਾਵਲ)	200.00
17. ਅੱਠੇ ਪਹਿਰ (ਕਹਾਣੀਆਂ)	125.00
18. ਬਘਿਆੜਾਂ ਦੇ ਵੱਸ / ਬਰੂਨੋ ਅਪਿਤਜ (ਨਾਵਲ)	100.00
19. ਮੀਤ੍ਰਿਆ ਕੋਕੋਰ / ਮੀਹਾਇਲ ਸਾਦੋਵਿਆਨੋ (ਨਾਵਲ)	100.00
20. ਇਨਕਲਾਬ ਲਈ ਜੂਝੀ ਜਵਾਨੀ	150.00
21. ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿਆਂ ਦਿਲ ਆਪਣਾ ਮੈਂ / ਵ. ਸੁਖੋਮਲਿੰਸਕੀ	150.00
22. ਫਾਸੀ ਦੇ ਤਖ਼ਤੇ ਤੋਂ / ਜੂਲੀਅਸ ਫੂਚਿਕ (ਨਾਵਲ)	50.00
23. ਭੁੱਬਲ / ਫ਼ਰੰਜ਼ਦ ਅਲੀ (ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਨਾਵਲ)	200.00
24. ਸਭ ਤੋਂ ਖਤਰਨਾਕ... (ਪਾਸ਼ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਉਪਲੱਬਧ ਸ਼ਾਇਰੀ)	200.00
25. ਧਰਤੀ ਧਨ ਨਾ ਆਪਣਾ / ਜਗਦੀਸ਼ ਚੰਦਰ	250.00

ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਯਾਦਗਾਰੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

1.	ਉਜਰਤ, ਕੀਮਤ ਅਤੇ ਮੁਨਾਫਾ / ਮਾਰਕਸ	30.00
2.	ਉਜਰਤੀ ਕਿਰਤ ਅਤੇ ਸਰਮਾਇਆ / ਮਾਰਕਸ	20.00
3.	ਸਿਆਸੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ ਵਿੱਚ ਯੋਗਦਾਨ / ਮਾਰਕਸ	125.00
4.	ਲੂਈ ਬੋਨਾਪਾਰਟ ਦੀ ਅਠਾਰਵੀਂ ਬਰੂਮੇਰ / ਮਾਰਕਸ	50.00
5.	ਪੂੰਜੀ ਦੀ ਉਤਪਤੀ / ਮਾਰਕਸ	45.00
6.	ਰਿਹਾਇਸ਼ੀ ਘਰਾਂ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
7.	ਫਿਊਰਬਾਖ : ਪਾਦਰਥਵਾਦੀ ਅਤੇ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ / ਮਾਰਕਸ-ਏਂਗਲਜ਼	60.00
8.	ਜਰਮਨੀ ਵਿੱਚ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ / ਏਂਗਲਜ਼	50.00
9.	ਮਾਰਕਸ ਦੇ "ਸਰਮਾਇਆ" ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	60.00
10.	ਫਰਾਂਸ ਅਤੇ ਜਰਮਨੀ 'ਚ ਕਿਸਾਨੀ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	20.00
11.	ਸੋਸ਼ਲਿਜ਼ਮ : ਵਿਗਿਆਨਕ ਅਤੇ ਯੂਟੋਪੀਆਈ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
12.	ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	10.00
13.	ਲੁਡਵਿਗ ਫਿਉਰਬਾਖ ਅਤੇ ਕਲਾਸੀਕੀ ਜਰਮਨ ਦਰਸ਼ਨ ਦਾ ਅੰਤ / ਏਂਗਲਜ਼	30.00
14.	ਟੱਬਰ, ਨਿੱਜੀ ਜਾਇਦਾਦ ਅਤੇ ਰਾਜ ਦੀ ਉੱਤਪਤੀ / ਏਂਗਲਜ਼	65.00
15.	ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ / ਲੈਨਿਨ	35.00
16.	ਰਾਜ ਅਤੇ ਇਨਕਲਾਬ / ਲੈਨਿਨ	50.00
17.	ਦੂਜੀ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਦਾ ਪਤਣ / ਲੈਨਿਨ	45.00
18.	ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦ / ਲੈਨਿਨ	15.00
19.	ਰਾਜ / ਲੈਨਿਨ	10.00
20.	ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ, ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ ਦਾ ਸਰਵਉੱਚ ਪੜਾਅ / ਲੈਨਿਨ	70.00
21.	ਇੱਕ ਕਦਮ ਅੱਗੇ ਦੋ ਕਦਮ ਪਿੱਛੇ / ਲੈਨਿਨ	125.00
22.	ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਿਵੇਂ ਕਰੀਏ / ਲੈਨਿਨ	65.00
23.	ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਕਲਾ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ	150.00
24.	ਸਮਾਜਵਾਦ ਅਤੇ ਜੰਗ / ਲੈਨਿਨ	45.00
25.	ਖੱਬੇ ਪੱਖੀ ਕਮਿਊਨਿਜ਼ਮ ਇੱਕ ਬਚਗਾਨਾ ਰੋਗ / ਲੈਨਿਨ	65.00
26.	ਅਸੀਂ ਜਿਹੜਾ ਵਿਰਸਾ ਤਿਆਗਦੇ ਹਾਂ / ਲੈਨਿਨ	25.00
27.	ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਭਗੌੜਾ ਕਾਊਤਸਕੀ / ਲੈਨਿਨ	70.00
28.	ਆਰਥਕ ਰੋਮਾਂਚਵਾਦ ਦਾ ਚਰਿੱਤਰ ਚਿੱਤਰਣ / ਲੈਨਿਨ	50.00

29. ਸੁਤੰਤਰ ਵਪਾਰ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਮਾਰਕਸ, ਏਂਗਲਜ਼, ਲੈਨਿਨ 10.00
30. ਲੈਨਿਨਵਾਦ ਦੀਆਂ ਨੀਹਾਂ / ਸਟਾਲਿਨ 20.00
31. ਫ਼ਲਸਫਾਨਾ ਲਿਖਤਾਂ / ਮਾਓ-ਜ਼ੇ-ਤੁੰਗ 25.00
32. ਸੋਵੀਅਤ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ / ਮਾਓ-ਜ਼ੇ-ਤੁੰਗ 60.00
33. ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਮਸਲੇ / ਪਲੈਖਾਨੋਵ 40.00
34. ਰਾਜਨੀਤਕ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਮੂਲ ਸਿਧਾਂਤ 60.00
35. ਫਿਲਾਸਫੀ ਕੋਈ ਗੋਰਖਧੰਦਾ ਨਹੀਂ 10.00
36. ਦਵੰਦਵਾਦ ਜ਼ਰੀਏ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ 10.00
37. ਇਤਿਹਾਸ ਨੇ ਜਦ ਕਰਵਟ ਬਦਲੀ 40.00
38. ਇਨਕਲਾਬ ਅੰਦਰ ਇਨਕਲਾਬ 20.00
39. ਮਾਓ-ਜ਼ੇ-ਤੁੰਗ ਦੀ ਅਮਿੱਟ ਦੇਣ 125.00
40. ਚੀਨ ਵਿੱਚ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ
ਅਤੇ ਮਾਓ ਦਾ ਇਨਕਲਾਬੀ ਵਿਰਸਾ 60.00
41. ਮਾਓਵਾਦੀ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜਵਾਦ ਦਾ ਭਵਿੱਖ 60.00
42. ਲੈਨਿਨ ਦੀ ਜੀਵਨ ਕਹਾਣੀ 100.00
43. ਅਡੋਲ ਬਾਲਸ਼ਵਿਕ ਨਤਾਸ਼ਾ 30.00
44. ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਏਂਗਲਜ਼
ਆਪਣੇ ਸਮਕਾਲੀਆਂ ਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਵਿੱਚ 75.00
45. ਪੈਰਿਸ ਕਮਿਊਨ ਦੀ ਅਮਰ ਕਹਾਣੀ 10.00
46. ਬੁਝ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਅਕਤੂਬਰ ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਮਸ਼ਾਲ 10.00
47. ਦਹਿਸ਼ਤਗਰਦੀ ਬਾਰੇ ਭਰਮ ਅਤੇ ਯਥਾਰਥ 10.00
48. ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਅਤੇ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਲਹਿਰ 10.00
49. ਜੰਗਲਨਾਮਾ : ਇੱਕ ਰਾਜਨੀਤਕ ਪੜਚੋਲ 10.00
50. ਭਾਰਤੀ ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਵਿਕਾਸ 20.00
51. ਅਮਿੱਟ ਹਨ ਮਜ਼ਦੂਰ ਸੰਗਰਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਚਿਣਗਾਂ 10.00
52. ਸਮਾਜਵਾਦ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ, ਪੂੰਜੀਵਾਦ ਦੀ ਮੁੜ ਬਹਾਲੀ
ਅਤੇ ਮਹਾਨ ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਇਨਕਲਾਬ 20.00
53. ਕਿਉਂ ਮਾਓਵਾਦ ? 10.00
54. ਸੋਵੀਅਤ ਯੂਨੀਅਨ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਚਾਰੇ ਜਾਂਦੇ ਝੂਠ 10.00
55. ਰਿਜ਼ਰਵੇਸ਼ਨ : ਪੱਖ, ਵਿਪੱਖ ਅਤੇ ਤੀਸਰਾ ਪੱਖ 5.00
56. ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਅਤੇ ਜਾਤ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 20.00

57.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਬਾਰੇ ਅੰਬੇਡਕਰ ਦੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ	15.00
58.	ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦਾ ਸੰਵਿਧਾਨ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ	15.00
59.	ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ : ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ	10.00
60.	ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਜਾਤ-ਪਾਤ / ਪ੍ਰੋ. ਇਰਫ਼ਾਨ ਹਬੀਬ	10.00
61.	ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਨੀਤੀਆਂ ਦੇ 18 ਸਾਲ	5.00
62.	ਚੋਰ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਅਤੇ ਅਯਾਸ਼ ਨੇਤਾਸ਼ਾਹੀ	5.00
63.	ਪਾਪ ਅਤੇ ਵਿਗਿਆਨ / ਡਾਈਸਨ ਕਾਰਟਰ	60.00
64.	ਫਾਸੀਵਾਦ ਕੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ਼ ਕਿਵੇਂ ਲੜੀਏ ?	15.00
65.	ਆਈਨਸਟੀਨ ਦੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਰੋਕਾਰ	10.00
66.	ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨਾਲ਼ ਦੋ ਗੱਲਾਂ / ਪੀਟਰ ਕ੍ਰੋਪੋਟਕਿਨ	10.00
67.	ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ (ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸਾਥੀਆਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ)	30.00
68.	ਅਜਿਹਾ ਸੀ ਸਾਡਾ ਭਗਤ ਸਿੰਘ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ	10.00
69.	ਮੈਂ ਨਾਸਤਿਕ ਕਿਉਂ ਹਾਂ ? / ਭਗਤ ਸਿੰਘ	10.00
70.	ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਿਹਾ... / ਭਗਤ ਸਿੰਘ	5.00
71.	ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਤੇ ਉਸਦੇ ਸਾਥੀਆਂ ਦਾ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਵਿਕਾਸ / ਪ੍ਰੋ. ਬਿਪਨ ਚੰਦਰਾ	10.00
72.	ਇਨਕਲਾਬੀ ਲਹਿਰ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤਕ ਵਿਕਾਸ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ	10.00
73.	ਸ਼ਹੀਦ ਚੰਦਰ ਸ਼ੇਖਰ ਆਜ਼ਾਦ / ਭਗਵਾਨ ਦਾਸ ਮਹੌਰ	10.00
74.	ਗਦਰੀ ਸੂਰਬੀਰ / ਪ੍ਰੋ. ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ	10.00
75.	ਸ਼ਹੀਦ ਸੁਖਦੇਵ	20.00
76.	ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਰਾਭਾ	5.00
77.	ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੌਜਵਾਨ ਨਵੀਂ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕਿੱਥੋਂ ਕਰਨ ?	10.00
78.	ਸੋਧਵਾਦ ਬਾਰੇ	5.00
79.	ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਸਾਰ ਦੀ ਲੋੜ ਕਿਉਂ ? / ਸੁਖਵਿੰਦਰ	15.00
80.	ਵਧਦੀ ਅਬਾਦੀ	15.00
81.	ਯੁੱਗ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੇ ਹਨ ? / ਡਾ. ਅੰਮ੍ਰਿਤ	10.00
82.	ਧਰਮ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ	30.00
83.	ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਮਹੱਤਵ	20.00
84.	ਇੱਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਦਾ ਜਨਮ / ਗੈਨਰਿਖ ਵੋਲਕੋਵ	100.00
85.	ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਨਵਉਦਾਰਵਾਦ ਦੇ ਦੋ ਦਹਾਕੇ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ	20.00

86.	ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਦਾ ਕਲਾ ਦਰਸ਼ਨ	200.00
87.	ਸਤਾਲਿਨ - ਇੱਕ ਜੀਵਨੀ / ਰਾਹੁਲ ਸਾਂਕਰਤਾਇਨ	150.00
88.	ਪੋਰਨੋਗ੍ਰਾਫੀ : ਇਕ ਸਰਮਾਏਦਾਰਾ ਕੋਹੜ / ਅਜੇ ਪਾਲ	10.00
89.	ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦਾ ਆਰਥਿਕ ਅਧਾਰ / ਸੀਤਾ	10.00

ਅਨੁਰਾਗ ਟਰੱਸਟ (ਬੱਚਿਆਂ ਲਈ)

1.	ਇਵਾਨ / ਵਲਾਦੀਮੀ ਬਗਾਮਲੋਵ	35.00
2.	ਵਾਂਕਾ / ਅਨਤੋਨ ਚੈਖੋਵ	10.00
3.	ਕਿਸਮਤ ਆਪੋ-ਆਪਣੀ / ਜੈਨੇਂਦਰ	20.00
4.	ਕੋਹੇਕਾਫ਼ ਦਾ ਕੈਦੀ / ਤਾਲਸਤਾਏ	30.00
5.	ਛੱਤ ’ਤੇ ਫਸ ਗਿਆ ਬਿੱਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਹਾਣੀਆਂ	20.00
6.	ਅਜੀਬੋ-ਗਰੀਬ ਕਿੱਸੇ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ	20.00
7.	ਦੋ ਹਿੰਮਤੀ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ	15.00
8.	ਨਵੇਂ ਜ਼ਮਾਨੇ ਦੀਆਂ ਪਰੀ-ਕਥਾਵਾਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ	20.00
9.	ਅਸੀਂ ਸੂਰਜ ਨੂੰ ਵੇਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ / ਮਿਕੋਲ ਗਿੱਲ	10.00
10.	ਗੁਫਾ ਮਾਨਵਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਮੈਰੀ ਮਾਰਸ	20.00
11.	ਕਿੱਸਾ ਇਹ ਕਿ ਇੱਕ ਪੇਂਡੂ ਨੇ ਦੋ ਅਫ਼ਸਰ ਸ਼ਹਿਰੀ ਅਫਸਰਾਂ ਦਾ ਢਿੱਡ ਕਿਵੇਂ ਭਰਿਆ / ਮਿਖਾਈਲ ਸ਼ਚੇਦ੍ਰਿਨ	15.00
12.	ਸਦਾਨੰਦ ਦੀ ਛੋਟੀ ਦੁਨੀਆਂ / ਸੱਤਿਆਜੀਤ ਰਾਏ	10.00
13.	ਬਾਜ਼ ਦਾ ਗੀਤ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	10.00
14.	ਬੱਸ ਇੱਕ ਯਾਦ / ਲਿਓਨਿਦ ਆਂਦਰੇਯੇਵ	10.00
15.	ਦਾਦਾ ਅਰਖ਼ੀਪ ਅਤੇ ਲਿਓਨਕਾ / ਗੋਰਕੀ	20.00
16.	ਦਾਨਕੋ ਦਾ ਬਲ਼ਦਾ ਹੋਇਆ ਦਿਲ / ਗੋਰਕੀ	10.00
17.	ਘਰ ਦੀ ਲਲਕ / ਨਿਕੋਲਾਈ ਤੇਲੇਸ਼ੋਵ	20.00
18.	ਗੁੱਲੀ-ਡੰਡਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ	10.00
19.	ਹਾਰ ਦੀ ਜਿੱਤ / ਸ਼ੁਦਰਸ਼ਨ	10.00
20.	ਹਰਾਮੀ / ਮਿਖ਼ਾਇਲ ਸ਼ੋਲੋਖ਼ੋਵ	20.00
21.	ਕਾਬੁਲੀਵਾਲ਼ਾ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ	10.00
22.	ਮੁਸੀਬਤ ਦਾ ਸਾਥੀ / ਸੇਰੇਗਈ ਮਿਖਾਲਕੋਵ	10.00
23.	ਪੋਸਟਮਾਸਟਰ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ	10.00

24. ਰਾਮਲੀਲਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
25. ਸੇਮਾਗਾ ਕਿਵੇਂ ਫੜਿਆ ਗਿਆ / ਗੋਰਕੀ 10.00
26. ਤੁਰਦਾ-ਫਿਰਦਾ ਟੋਪ / ਐੱਨ. ਨੋਸੋਵ 10.00
27. ਬੇਜਿਨ ਚਰਾਗਾਹ / ਇਵਾਨ ਤੁਰਗੇਨੇਵ 20.00
28. ਉਲਟਾ ਰੁੱਖ / ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਚੰਦਰ 35.00
29. ਵੱਡੇ ਭਾਈ ਸਾਹਬ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
30. ਇੱਕ ਛੋਟੇ ਮੁੰਡੇ ਅਤੇ ਕੁੜੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਜਿਹੜੇ ਬਰਫ਼ੀਲੀ ਠੰਡ 'ਚ ਕਾਂਬੇ ਨਾਲ਼ ਮਰੇ ਨਹੀਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00
31. ਬਹਾਦਰ / ਅਮਰਕਾਂਤ 10.00
32. ਹਿਰਨੌਟਾ / ਦਮਿਤਰੀ ਮਾਮਿਨ ਸਿਬਿਰੇਆਕ 10.00

——::——

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि ...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह

जनचेतना

मुख्य केन्द्र : डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

फ़ोन : 0522-4108495

अन्य केन्द्र :

- 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड, गोरखपुर-273001, फ़ोन : 7398783835
- दिल्ली : 9999750940
- नियमित स्टॉल : कॉफ़ी हाउस के पास, हज़रतगंज, लखनऊ
  शाम 5 से 8 बजे तक

सहयोगी केन्द्र

- जनचेतना पुस्तक विक्रय केन्द्र, दुकान नं. 8, पंजाबी भवन, लुधियाना (पंजाब) फ़ोन : 09815587807

ईमेल : **info@janchetnabooks.org**

वेबसाइट : **www.janchetnabooks.org**

हमारी बुकशॉप और प्रदर्शनियों से पुस्तकें लेने के अलावा आप हमसे डाक से भी किताबें मँगा सकते हैं। हमारी वेबसाइट पर जाकर पुस्तक सूची से पुस्तकें चुनें और ईमेल या फोन से हमें ऑर्डर भेज दें। आप मनीऑर्डर या चेक से या सीधे हमारे बैंक खाते में भुगतान कर सकते हैं। आप वेबसाइट पर दिये **Instamojo** के लिंक से भी भुगतान कर सकते हैं। हमारी किताबें आप **Amazon** और **Flipkart** से भी ऑनलाइन मँगा सकते हैं।

बैंक खाते का विवरणः

ACC. NAME: JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI

Acc. No. 0762002109003796

Bank: Punjab National Bank



यदि आपको महज़ मनोरंजन चाहिए,
महज़ नशे की एक ख़ुराक,
दिल को बहलाने के लिए एक ख़याल
तो नहीं हैं ऐसी किताबें हमारे पास।
हम ऐसी किताबें लेकर आये हैं
जो आपकी मोहनिद्रा झकझोरकर तोड़ दें,
जो आज के हालात पर
आपको सोचने के लिए मजबूर कर दें।
हम किताबें नहीं
लड़ने की ज़िद
और हालात की बेहतरी की उम्मीदें
लेकर आये हैं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं।
हम लेकर आये हैं
एक सार्थक, स्वाभिमानी, मुक्त जीवन की तड़प।
किताबें नहीं
हम असली इंसान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं।

जनचेतना

एक सांस्कृतिक मुहिम
एक वैचारिक प्रोजेक्ट
वैकल्पिक मीडिया का एक मॉडल